[illegible]

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार
द्वारा
बम्बई
अक्षरों में मुद्रित

10-2

२५/

ANILBHAI CHINUBHAI

श्री राधा कृष्णायै नमः

वैष्णव बाबा ब्रजवासी दास जी कृत

ब्रज विलास

बम्बई अक्षरों में मुद्रित

श्रीराधाकृष्णायै नमः

वैष्णव बाबा ब्रजवासी दास जी कृत

ब्रज बिलास

जिसमें
वैष्णव भक्तों के हृदय को आनन्दित करने वाली भगवान श्रीकृष्ण
की सम्पूर्ण ब्रज-लीलाओं का ब्रज भाषा में अति सरस
अमृतमई वाणी में दोहा, सोरठा, छन्द,
चौपाई में वर्णन किया गया है।

⁂

रचयिता--

वैष्णव बाबा ब्रजवासी दास जी

⁂

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार
द्वारा
बम्बई
अक्षरों में मुद्रित

⁂

मूल्य रुपया ६०-००

Published by,
Sri Durga Pustak Bhandar,
Kakkar Nagar, Allahabad.
Br. Johnstonganj, Allahabad.

Price- Rs.60/=

Printed by,
Kitab Mahal (W.D.) Pvt. Ltd.
15, Thornhill Road, Allahabad.

अथ ब्रजविलासकी विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	मंगलाचरण	
१	सूचनिका	१
२	कथा प्रसंग वर्णन	३
३	देवकी वित्राह एवं कंस को आकाशवाणी	१२
४	देवताओं द्वारा गर्भस्तुति	१५
५	श्रीकृष्णजन्म तथा वसुदेव का गोकुल पहुँचानाएवं कन्या लेकर आना	१७
६	कंस का देवकी से अपराध क्षमा मांगना	२०
७	नन्दगृहमें श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बर्णन	२१
८	जातकर्म बणन	२२
९	छटीबर्णन	२५
१०	कुरता टोपी बर्णन	२६

पूर्वार्द्ध लीला वर्णन

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१	पूतना वध लीला	२९
२	कागासुर वध लीला	३१
३	शकटासुर वध लीला	३२
४	तृणावत वध लीला	३४
५	अन्नप्राशन लीला	३७
६	नाम करण लीला	४०
७	बरसगांठ लीला	४३
८	ब्राह्मण लीला	४५
९	चंद्रप्रस्ताव लीला	४७
१०	पुरातन कथा लीला	४९
११	कर्णछेदन लीला	५०
१२	माटीखान लीला	५२
१३	शालिग्राम लीला	५५
१४	अन्हवावन लीला	५५
१५	भोजन लीला एवं	५९
	दूधछुटावन लीला	६०
१६	कन्दुक खेलन लीला	६१
१७	माखन चोरी लीला	६३
१८	दांवरीबंधन लीला	७८
१९	आँखमिचौनी लीला	८७
२०	वृन्दावन गमन लीला	८९
२१	वत्सासुर बध लीला	९२
२२	धेनु दुहन लीला	९६
२३	मोती बोनेकी लीला	९७
२४	बकासुर बध लीला	९८
२५	चकई भौंरा खेलन लीला	१०२
२६	राधाजूकी प्रथम मिलन लीला	१०३
	गीत गोविन्द श्लोक	१०६
२७	अघासुर वध लीला	११३
२८	ब्रह्माके मोहकी लीला	११६
२९	गो दोहन लीला	१२३
३०	धेनुक बध लीला	१३३
३१	कालिय दमन लीला	१३८
३२	दावानल लीला	१५६
३३	प्रलम्बासुर वध लीला	१५९
३४	पनघट लीला	१६०
३५	चीरहरण लीला	१७३
३६	वृन्दावन वर्णन लीला	१८१
३७	द्विजपत्नी याचन लीला	१८७
३८	गोवर्द्धन लीला	१९५
३९	नंद एकादशी वरुण लीला	२१६
४०	वैकुंठ दर्शन लीला	२२०
४१	दान लीला	२२२

उत्तरार्द्ध लीला वर्णन

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
४२	गोपि प्रेम लीला	२५१
४३	स्नानलीला	२६९
४४	बाटके मिलनकी लीला	२८८
४५	संकेतके मिलनको लीला	२९३
४६	प्यारीके घर मिलनकी लीला	३००
४७	गर्वव्याज विरह लीला	३०९
४८	परस्पर अभिलाष लीला	३१४
४९	श्रृंगार भूषण बर्णन लीला	३२१
५०	नयन अनुराग लीला	३२७
५१	मुरली लीला	३३१
५२	रास लीला	३४०
५३	अंतर्धान लीला	३५२
५४	महामंगल रासलीला	३६०
५५	मान चरित्र लीला	३६८
५६	मध्यम मान लीला	३८३
५७	गुरुमान लीला	३९२
५८	हिंडोरा बर्णन लीला	३९८
५९	फाल्गुन वर्णन लीला	४०१
६०	सुदर्शन शाप मोचन लीला	४१२
६१	शंखचूड वध लीला	४१५
६२	वृषभासुर वध लीला	४१७

विषयानुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
६३	केशी वध लीला	.... ४१९
६४	व्योमासुर वध लीला	.... ४२१
६५	अक्रूर आगमन लीला	.... ४२९
६६	मथुरा गमन लीला	.... ४३५
६७	रजक वध लीला	.... ४४५
६८	दर्जी मिलन लीला	.... ४४६
६९	सुदामा माली मिलन लीला	.... ४४७
७०	कूबरी मिलन लीला	.... ४४७
७१	धनुषभंग लीला	.... ४४८
७२	कुवलयापीड लीला	.... ४५०
७३	मल्लयुद्ध लीला	.... ४५२
७४	चाणूर मुष्टिक आदि मल्ल बध लीला	४५५
७५	कंसासुर वध लीला	.... ४५६
७६	उग्रसेनको राज्य प्राप्ति बर्णन लीला	.... ४५८
७७	वसुदेव गृह उत्सव लीला ...	.... ४६१
७८	कुब्जागृह प्रवेश लीला	.... ४६३
७९	नंदबिदा लीला	.... ४६५
८०	ब्रज की विरह लीला	.... ४६९
८१	श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीत लीला	.... ४८०
८२	विद्याध्ययन लीला	.... ४८१
८३	गुरुके मरे हुए दो पुत्रोंका ला देना पुनि गुरु बरदान बर्णन लीला	.... ४८१
८४	उद्धवजीकी प्रेषण लीला	.... ४८२
८५	उद्धवजीकी ब्रजगमन लीला	.... ४८८
८६	उद्धवजीका बिदा तथा मथुरा गमन लीला	.... ५१७

◆

❊ राधाजी की आरती ❊

जय राधे, जय राधे, राधे, जय राधे, जय श्री राधे ।
श्यामा गौरी, नित्य किशोरी, प्रीतम जोरी श्री राधे ॥ १ ॥
प्राण पियारी, रूप उजारी, अति सुकुमारी श्री राधे ॥ २ ॥
रास विलासिनि, रस विस्तारिनि, पिय उरधारिनी श्री राधे ॥ ३ ॥
शोभा श्रेनी, मोहामैनी, कोकिल बैनी श्री राधे ॥ ४ ॥
कंचन वेली, रतिरस रेली, अति अलबेली श्री राधे ॥ ५ ॥
हंसागवनि, राजत रमणि, शोभा सदनि श्री राधे ॥ ६ ॥
रमणी रम्या, तरुतर तम्या, सगुण अगम्या श्री राधे ॥ ७ ॥
शक्त्याह्लादिनि, हे प्रियवादिनि, उर उन्मादिनि श्री राधे ॥ ८ ॥

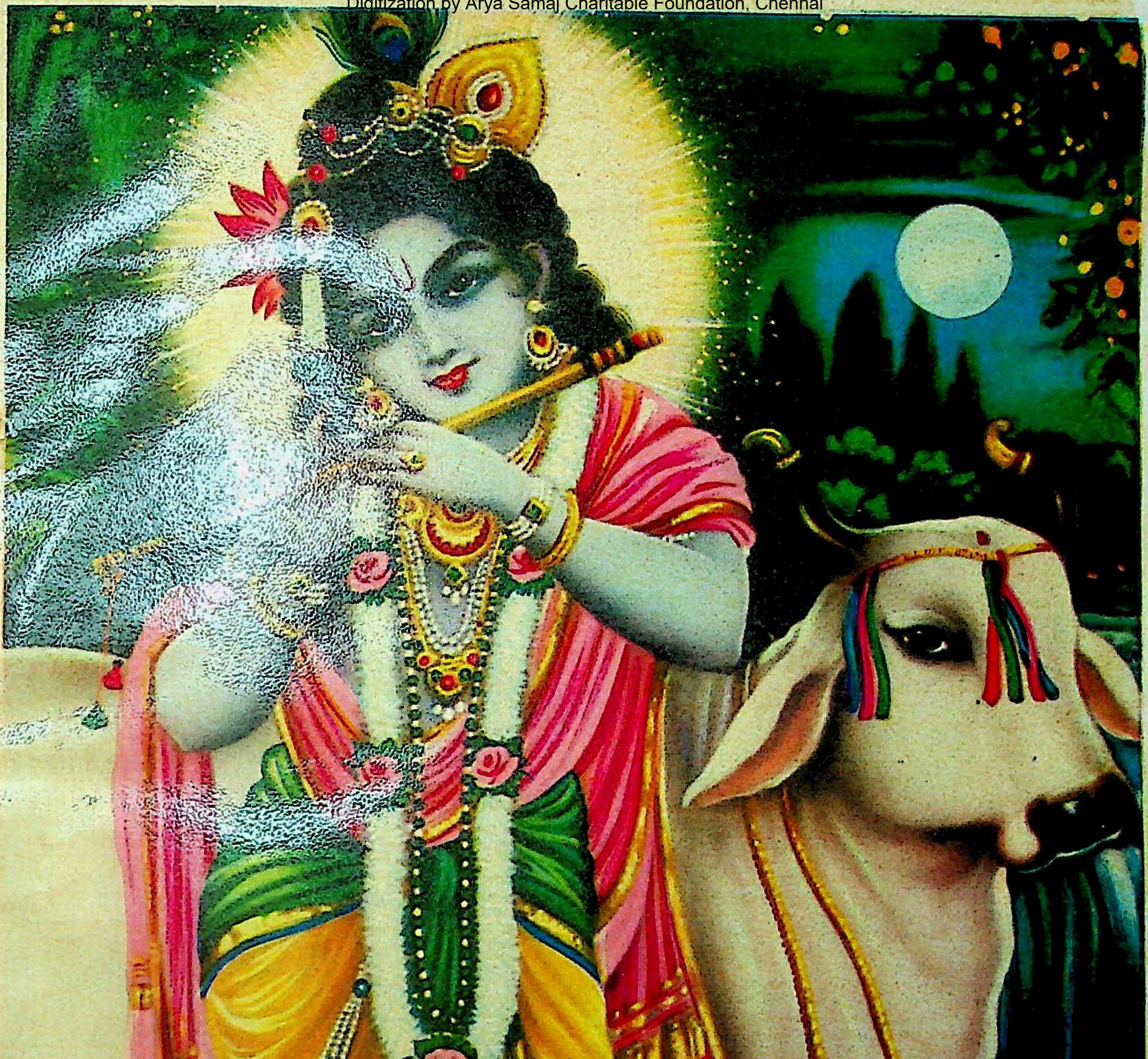

1096

KRISHNA WITH COW

Hem Chander Bhargava & Co.,
Delhi-6.

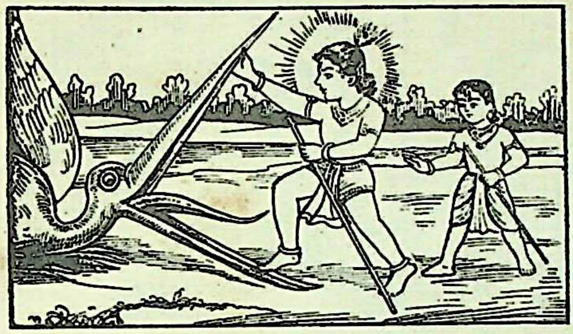
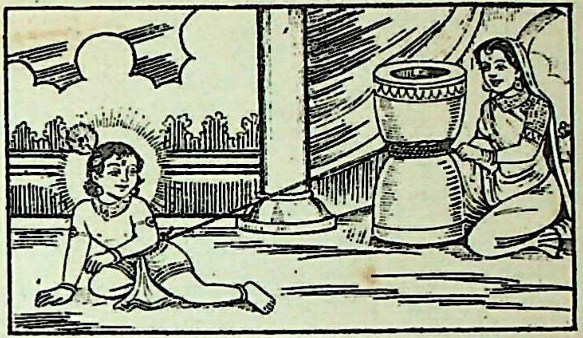
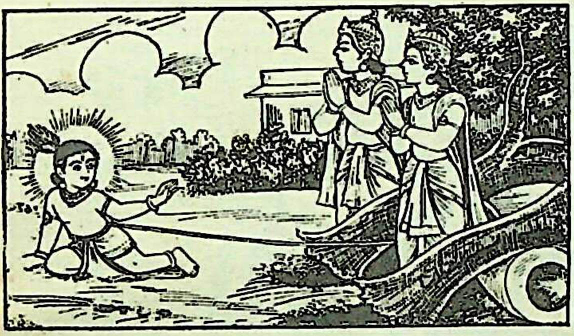
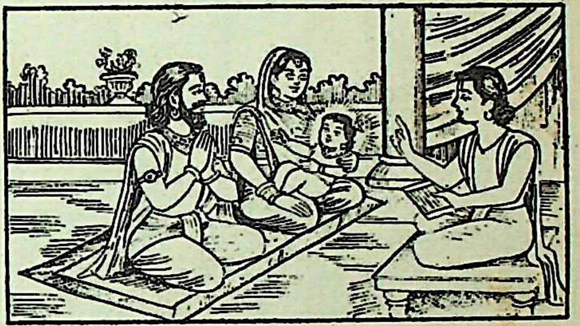
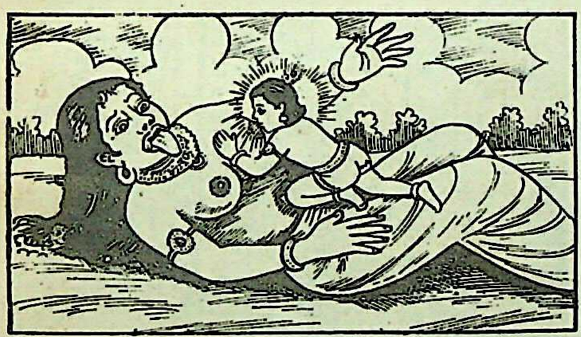
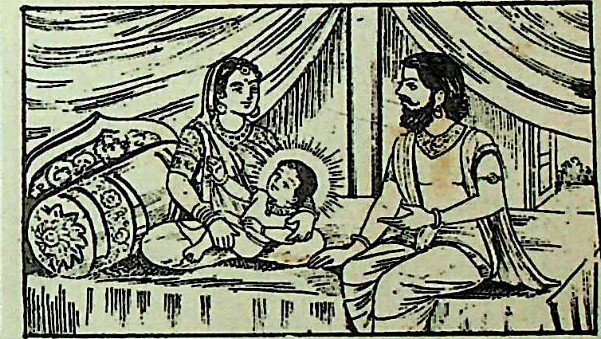
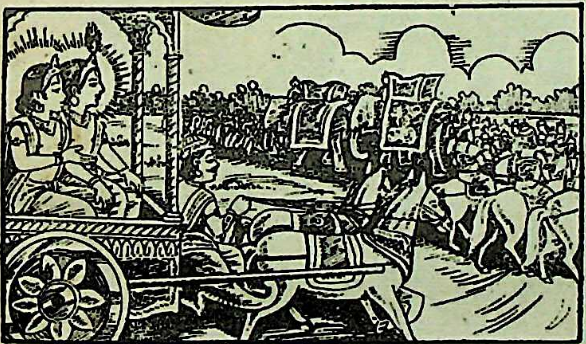
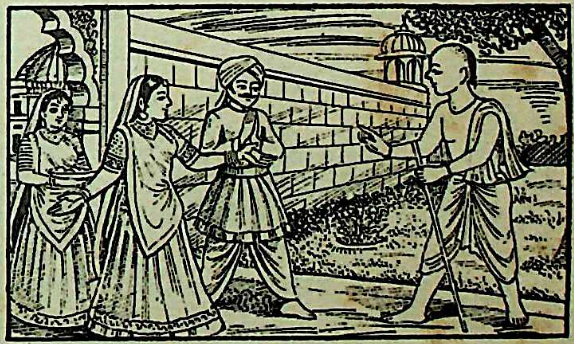
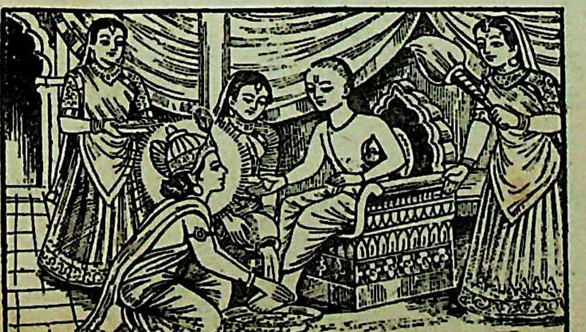
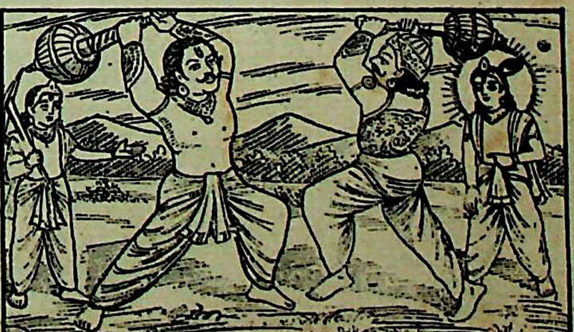

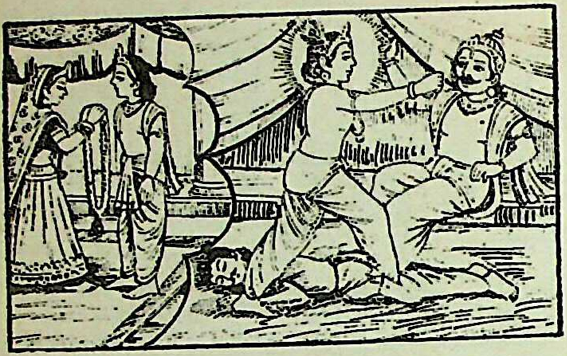

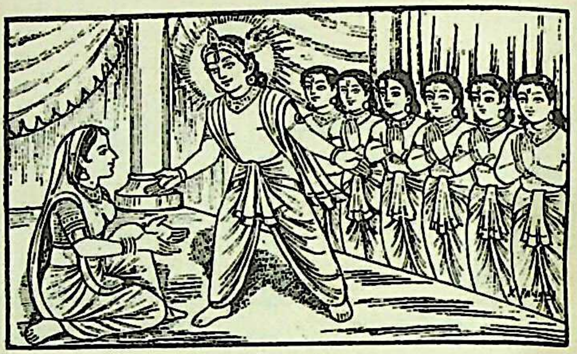

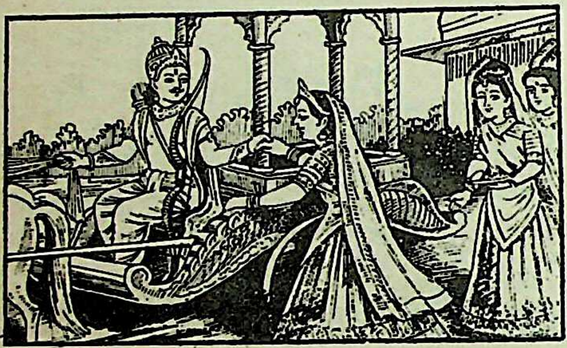

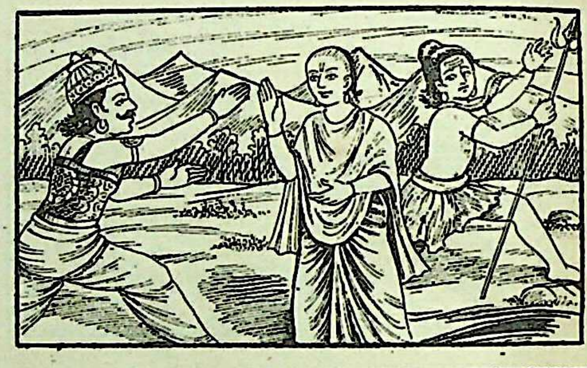

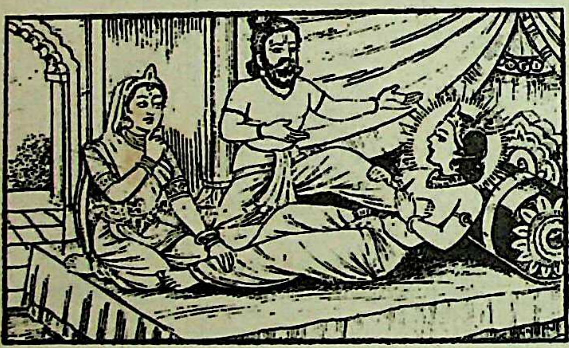

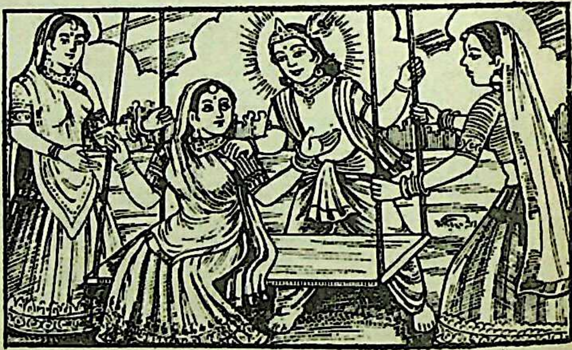

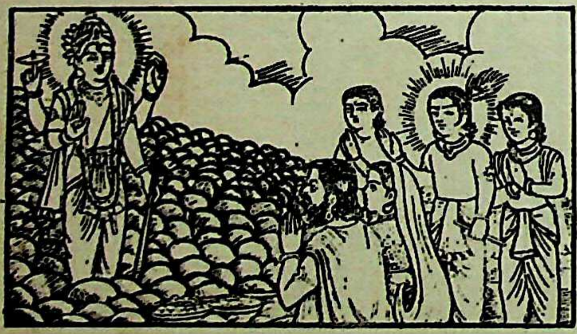

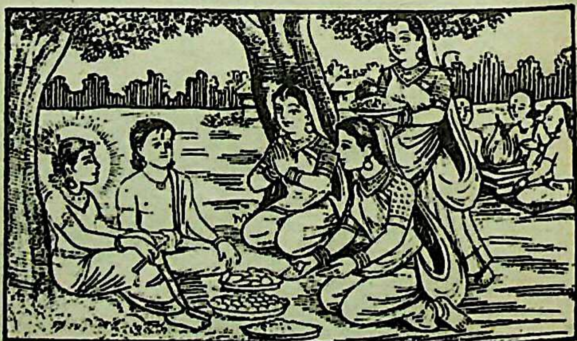

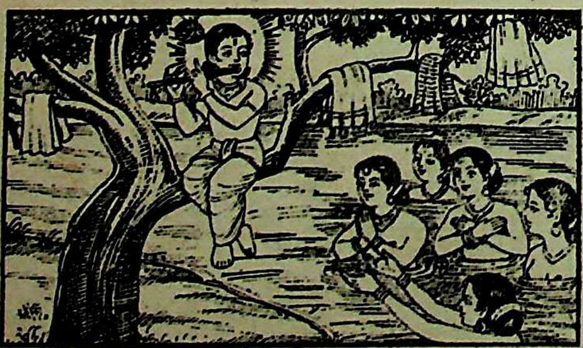

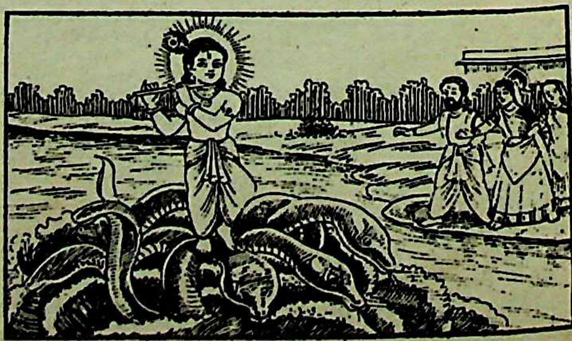

श्री बृन्दावन विहारिणे नमः ।

ब्रजविलास

सूचनिका वर्णन

सो०—होत गुणनकी खान, जाके गुण उर गनतही ॥
द्रवों सु दयानिधान, वासुदेव भगवंत हरि ॥ १ ॥
मिटत तापत्रयफाँसि, जासु नाम मुखते कहत ॥
बंदौं सो शुभराशि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमलदल नैन, गोपवृन्द मण्डन सुभग ॥
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्बर वर बेणुधर ॥ ३ ॥
बन्दौं जग आधार, कृष्णाग्रज बलदेव पद ॥
अभिमत फल दातार, नीलाम्बर रेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कृपा निधान, बन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु बचन जलयान, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥ ५ ॥
बन्दौं सन्त कृपाल, पदसरोज रज राखि शिर ॥
जगहितरत शुभमाल, जिन निज गुण हरि बश करे ॥ ६ ॥
पुनि बन्दौं ब्रजदेश, परमरम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुदेश, राधानाथ बिहार थल ॥ ७ ॥

प्रथम कृष्ण को तात मनाऊँ * श्री बसुदेव चरण शिर नाऊँ ॥
बहुरि देवकी पद जल जाता * बन्दन करों कृष्ण को माता ॥
इनते और कौन बड़ भागी * ब्रह्म धरयोनरतनु जिन लागी ॥
बन्दौं नन्द महर के चरणा * सहित यशोमति मंगल करणा ॥
जिनकी महिमा भाग्य बड़ाई * निगमागम शिव सादर गाई ॥
बन्दौं रोहिणि पद जलजाता * कृष्णाग्रज बलदेवको माता ॥
कीरति युत बृषभानु गोपबर * बन्दौं चरणकमल रज शिरधर ॥
तात मात राधा रानी के * त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानी के ॥
कृष्ण कमल दृगकी कमला के * कलुषविभंजनि सब बिमलाके ॥
बन्दौं श्रीराधा पद अम्बुज * जिनकेध्यान मिटतभवभयरुज ॥
होत कृष्ण सहजहि बश ताके * प्रेमसहित गुण गावत जाके ॥
बन्दौं सो बृषभानु दुलारी * कृष्ण प्राण जीवन धन प्यारी ॥
दो०-राधा कृष्ण पदांबुजन, बन्दौं महि शिर टेक ॥
ब्रजबिलास हित दोय तनु, प्रगट कियो है एक ॥ १ ॥
सो०-बन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनन्द घन ॥
दोऊ चन्द्रचकोर, प्रीति रीति रस बश सदा ॥ ८ ॥
अपर गोप गोपी गोपाला * जिनकेसंगबिचरहिं नन्दलाला ॥
गाय बच्छ बालक ब्रजवासी * जिनके सखा कृष्ण अविनासी ॥
और जाति जो ब्रजहि निवासी * बन्दौं सकल सुकृतको रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर * गोकुलादि जे ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुना सरि परम पुनीता * जासु दर्श नहिं यमपुर भीता ॥
पर्वत बापी कूप तड़ागा * श्रीबृन्दावनादि बन बागा ॥
खग मृग जलचर जीव विभागा * बन्दौं सकल सहित अनुरागा ॥
बन्दौं गिरि गोवर्द्धन देवा * अपर देव तिनसम नहिं केवा ॥
सुरपति मेटि जाहि हरि पूजा * आन देव तिनसम को दूजा ॥
अतिरमणीय रेत यमुनातट * उपबन अमित सुभग बंसीवट ॥
जहाँ जहाँ हरि धेनु चराई * सुन्दर श्यामल कुंवर कन्हाई ॥
रासबिलास जहाँ हरि कीन्हा * भक्तबतसल भक्तनसुख दीन्हा ॥

दो०-जड़ चेतन ब्रजदेश के, तृण तरु महिरज जेत ॥
बन्दौं कीट पतंग सब, पुनि पुनि प्रीति समेत ॥ २ ॥
सो०-ब्रजजन पद शिरराख, विनय करौं कर जोरि पुनि ॥
सो मनको अभिलाष, पूरण करिये जानि जन ॥ ६ ॥
ब्रजविलास कछु कहौं बखानी * करन पुनीत हेतु निजबानी ॥
सो तबलौं नहिं उरमें आवे * जबलग तुम्हरी कृपा न पावे ॥
मैं मन बचक्रम तुम्हरो दासा * तातें पुरवहु मेरो आसा ॥
यद्यपि मति इतनी मुहिं नाहीं * करोंउक्तिकछु निज तेहिमाहीं ॥
तहाँ एक मैं कियो बिचारा * याबिधि बल अपने उर धारा ॥
श्रीशुकदेव कही हरि लीला * सुनो परिक्षित सबगुणशीला ॥
सूरदास सोइ हरि रस सागर * गायो बहु बिधिपरम उजागर ॥
फैल रह्यो सो त्रिभुवन माहीं * गावत सुनत सुजन हर्षाहीं ॥
बिबिध प्रकार चरित हरिकेरे * नामहिं बर्णे सूर घनेरे ॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई * मेरे मन अतिशयकरि भाई ॥
सो तो कथा असित बिस्तारा * सोपै पायो जात न पारा ॥
तामें ब्रजविलास सुखदाई * सो कछु कहिहौं करिचौपाई ॥
दो०-भाषाकी भाषा करौं, क्षमियो कवि अपराध ॥
जिहिं तिहिं बिधि हरि गाइये,कहतसकल श्रुति साध ॥ ३ ॥
सो०-हरि पद प्रीति न होय, बिन हरिगुण गाये सुने ॥
भवते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरि पद भये ॥ १० ॥
तातें मैं सन्तन शिर नाई * गावौं हरियश जन सुखदाई ॥
जो ब्रजमें हरि कियो बिलासा * सो कछु कहिहों सहित हुलासा ॥
यामहँ इतनी कथा बखानौं * ताकी सूचनिका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी ब्याही * चल्यो कंस पहुँचावन ताही ॥
तहाँ भई नभबाणी वाही * सुनिकै कंस डरयो पुनि जाई ॥
अष्टम गर्भ होगयो याके * तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तबै देवकीहतन बिचारयो * करि बिनती बसुदेव उबारयो ॥
सब सुत ताहि देनको भाखे * नृप तब दुहूँ बंदि में राखे ॥

षट् बालक तिनके नृप मारे ❊ पातक भये भूमिपर भारे ।।
दुखित गयी सो हरिके पासा ❊ हरि ताको जिमि दई दिलासा।।
पुनि संकर्षण गर्भहि आये ❊ तिनको बहुरि रोहिणी जाये ।।
सो सब कहिहौं मतिअनुमाना ❊ जैसी भांतिन्ह सुन्यों पुराना ।।
दो०-पुनि भगवान अनादि अज, ब्रह्म सच्चिदानन्द ।।
प्रगट भये बसुदेव गृह, निज इच्छा सुखकन्द ।। ४ ।।
सो०-तात मात सुखदेन, सुन्दर रूप दिखाय के ।।
कियो परम उर चैन, दूरि किये दुख द्वन्द्व सब ।। ११।।
तात मातु पुनि जिमि समुझाये ❊ लै गोकुल बसुदेव सिधाये ।।
यशुदा गोद राखि घनश्यामहिं ❊ कन्या तासु गये लै धामहिं ।।
कंसासुर सो कन्या पाई ❊ सो जैसे आकाश सिधाई ।।
तासु बचन सुनि अतिभय माना ❊ बालकहतन मंत्र तब ठाना ।।
बजे नन्द घर अनँद बधाये ❊ ब्रज युवतिन मिलि मंगल गाये ।।
भयो नन्द घर अति उत्साहू ❊ ब्रजबासिन के परम उछाहू ।।
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं ❊ जितनो निज मतिको बल पैहौं।।
बहुरि कंस पूतना पठाई ❊ सो जैसे हरि के ढिग आई ।।
ताहि मारि जननी गति दीन्ही ❊ प्राणपान करि पावन कीन्ही ।।
कागासुर पुनि जाबिधि आयो ❊ ताको हरि पुनि मारि बहायो ।।
बहुरयो शकट चरणतैं टारयो ❊ तृणावर्त को जाविधि मारयो ।।
अन्न प्राशनादि जे कर्मा ❊ किये नंदजिमि निजकुलधर्मा ।।
दो०-बालचरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीन्हे अभिराम ।।
जानु पाणि चलि सुख दियो, तात मातुको श्याम ।। ५ ।।
सो०-ब्रजजन मन के मोद, चले बहुरि पाँयन कछुक ।।
कीन्हें बालविनोद, नंदयशोमति के अजिर ।। १२।।
गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे ❊ सुनि सब ब्रजबासी अभिलाषे।।
पुनि बालन संग खेलन लागे ❊ बाल खेल लीला अनुरागे ।।
विप्र पाँक जैसे छुइ लीनो ❊ चन्दा हेतु बहुरि हठ कीनो ।।
कनछेदन—लीला सुखदाई ❊ कहिहौं सब आनन्द बधाई ।।

पुनि हरि खेलत माटी खाई * यशुमति लै साँटी उठि धाई ।।
माता आगे जिमि मुख बायो * ताहीं में त्रिभुवन दिखरायो ।।
शालग्राम मेलि मुख लीनो * नन्दहि पूजा में सुख दीनो ।।
अन्हवावनहित जिमि मचलाये * बहुतभाँति यशुमति फुसलाये ।।
ग्वालन संग बहुरि अनुरागे * माखन चोरी के रस पागे ।।
बहुरौ माता क्रोध उपायो * भक्त हेतु दांवरी बँधायो ।।
यमलार्जुन वृक्ष ढहाये * धनदसुतनके पाप नसाये ।।
पुनि बनगोचारन मन आन्यो * ग्वालन संग जान हठ ठान्यो ।।
दो०-बहुरि जाय बनमें हन्यो, बत्सासुर नँदनन्द ।।
ग्वालन सँग आनन्द सहित, घर आये सुखकन्द ।। ६ ।।
सो०-सो करिकैं बिस्तार, प्रेम सहित सब बर्णिहौं ।।
निज मतिके अनुसार, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ।। १३ ।।
गोदोहन जैसे पुनि कीनों * तात मात ब्रज जन सुख दीनो ।।
मोती बये नन्द के धामें * सुरनर निरखिचकितभये जामें ।।
बहुरि जाय बन नन्दकुमारा * बका- असुर को बदन बिदारा ।।
बहुरौ बालचरित चित दीने * भौंरा चकई खेलन लीने ।।
श्रीराधासों प्रीति दृढ़ाई * कीन्हें चरित ललित सुखदाई ।।
अघाअसुर मारयो पुनि जाई * ग्वालन संग छाक बन खाई ।।
भयो मोह जिमि बिधि के मनमें * बालक बत्स हरे तिन बनमें ।।
तिनको रूप आपु प्रभु कीनो * ब्रज के बासिनको सुख दीनों ।।
सो सब कहिहौं करि बिस्तारा * अघनाशन प्रभु चरित उदारा ।।
श्री वृषभानुलली पुनि आई * जैसे हरिसों गाय दुहाई ।।
करिहौं सो रसकथा सुहाई * अति विचित्र जनमनसुखदाई ।।
बहुरौ धेनुकको बध कीनों * विषजलते ग्वालन रखि लीनों ।।
दो०-पुनि नाथ्यो कालिय उरग, जलमें पैठि मुरारि ।।
यमुना जल निर्मल कियो, ब्रजते दियो निकारि ।। ७ ।।
सो०-कियो दवानल पान, राखि लिये व्रजलोग सब ।।
जनके कृपानिधान, सदा भक्त संकट हरण ।। १४ ।।

बहुरि प्रलंब असुर ब्रज आयो * खेलत में हरि ताहि नशायो ॥
पनघटि यमुनातट पुनि जाई * गोपिनसों रस कियो कन्हाई ॥
चोरहरण लीला पुनि कीनो * कहिहौ सकल प्रेमरस भीनो ॥
पुनि वृन्दावन में सुखशीला * ग्वालन संग करी जो लीला ॥
बृन्दाबन की महत बड़ाई * श्रीमुख श्रीबल जू सों गाई ॥
ऋषि पत्निनसों भोजन लीनों * भक्तिदान तिनको प्रभु दीनों ॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरिराई * ब्रज थापेउ सुरपतिहिं मिटाई ॥
सुरपति कोप कियो यह जानी * बर्ष्यो प्रलय कालको पानी ॥
तबप्रभुगिरिकरधरि ब्रजराख्यो * जय २ सब ब्रजबासिन भाख्यो ॥
सो सब अनुपम कथा सुहाई * कृष्ण कृपाते कहिहौं गाई ॥
नन्दहि पकरि वरुण के दासा * जिमि लै गये बरुण के पासा ॥
ल्याये श्याम तहाँते जाई * ब्रजमें भई आनन्द बधाई ॥
दो०-बहुरो पुर बैकुण्ठ जो, अति पुनीत निजधाम ॥
ब्रजबासिनको करि कृपा, दिखरायो घनश्याम ॥ ८ ॥
सो०-सो सब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम ॥
कहिहौं मति अनुरूप, सन्त जनन मन भावनी ॥ १५ ॥
पुनि जो करो श्याम सुखशीला * अति अद्भुत ब्रजमें रसलीला ॥
श्रीराधा बृषभानु दुलारी * और सकल ब्रजगोप कुमारी ॥
तिनसों मिलि श्री कुन्जबिहारी * रस सिंगार लीला विस्तारी ॥
आनन्द मई सकल सुखकारी * गाय तरत भव सब नर नारी ॥
जिन गोपिन हरिसों मन लायो * प्रेम पथ दृढ़ करि दिखरायो ॥
गोरस लै निकसीं ब्रजनारी * जिमि दधिदानलियो बनवारी ॥
भईं प्रेम उन्मत्त गुवारी * लोकलाज तनुदशा बिसारी ॥
बहुरि चरित्र कुवँरि राधा के * परम पवित्र हरण बाधा के ॥
जैसे मिली श्यामसों जाई * बहुरो जैसे प्रीति दुराई ॥
पुनि संकेत चरित्र बिबिध बर * किये प्रियाप्रियतम अति सुन्दर ॥
गर्व बिरह अभिलाष परस्पर * अति रहस्य लीला सुन्दर बर ॥
कहिहौं सकल कथा सुखदाई * भक्ति रसज्ञन के मन भाई ॥

दो०-देखि मुकुर में लाड़िलो, पुनि जैसो निजरूप ॥
बिबश भई सो गाय हो, लीला परम अनूप ॥ ९ ॥
सो०-पुनि नयनन अनुराग, अरु मुरली की प्रिय कथा ॥
कहिहौं सहित बिभाग, प्रेम सुधारस सों भरी ॥ १६ ॥
बहुरौ शरदरैनि अति पावन * श्रीबृन्दावन परम सुहावन ॥
तहाँ श्याम बाँसुरी बजाई * घर घरते ब्रजनारि बुलाई ॥
कियो रासरस रसिक बिहारी * भईं प्रेम गर्बित तहँ नारी ॥
अन्तर्धान चरित तब कीनो * गर्व गोपिकन को हरि लीनो ॥
कियो महा मंगल पुनि रासा * बाढ्यो परमानन्द हुलासा ॥
पुनि जलकेलि करी मन भावन * कहिहौं चरितसकलअतिपावन ॥
मानचरित लीला सुखदाई * करी बहुरि जिमिकुँवर कन्हाई ॥
बिस्तरसहित कही सो बरणी * भई प्रेमरस आनद करणी ॥
बहुरौ जाय हिंडोरा झूले * भये सकल गोपिन अनुकूले ॥
ऋतु बसन्त फागुन जब आयो * कियो फागुरंग तब मन भायो ॥
सो रस कथा सकल सुखदानी * मतिसमान सब कहौं बखानी ॥
पुनि विद्याधर शाप नशायो * अजगर तनुते ताहि छुड़ायो ॥
दो०-शंखचूड़ मारयो बहुरि, अधम निशाचर नीच ॥
पुनि मारयो वृषभा असुर, हरि ब्रजवासिन बीच ॥ १० ॥
सो०-बध्यो बहुरि गोपाल, केशी व्योमा असुर जिमि ॥
दुष्टदलन नंदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब ॥ १७ ॥
बहुरि आय नारद यश गायो * सुनि कै श्याम बहुत सुखपायो ॥
तबहिं कंस अक्रूर पठायो * लेन कृष्णको सो ब्रज आयो ॥
भये सुनत ब्रजलोग उदासी * मधुपुरि चले बहुरि सुखरासी ॥
जब अक्रूर हृदय दुख पायो * तब हरि जलमें दर्श दिखायो ॥
भये सुखी लखि जो प्रभुताई * सो सब चरित कहौं सुखदाई ॥
गये बहुरि मथुरा दधि दानी * मारयोप्रथम रजक अभिमानी ॥
वसन लुटाय सखन पहराये * बहुरि सुदामा के घर आये ॥
कुब्जाते चन्दन हरि लीनो * ताको रूप अनूपम दीनो ॥

तोरयो धनुष असुर बहु मारे * द्विरद जीति पुनि दंत उखारे ॥
भिरे बहुरि मल्लनसों जाई * किये युद्ध तिनसों दोउ भाई ॥
जीति मल्ल सब असुर संहारे * डरयो कंस लखि अतिबलभारे ॥
गये नृपति पहँ तब दोउ भाई * दियो मंचते भूमि गिराई ॥
दो०-मारि कंस पुनि केश धरि, दियो यमुन जल डारि ॥
उग्रसेन राजा कियो, चमर छत्र शिर ढारि ॥ ११ ॥
सो०-बहुरि दियो सुख जाय, बंदि काटि पितु मात की ॥
सुन्दर दर्श दिखाय, भयो तहाँ मंगल परम ॥ १८ ॥
कहिहौं चरित सकल बिस्तारो * भव भय भंजन मंगल कारो ॥
करि मधुपुरि के लोग सनाथा * कुब्जा सदन बसे ब्रजनाथा ॥
नंद बिदा करि ब्रजहिं पठाये * बिछुरत ब्रजबासिन दुख पाये ॥
हरि तजि नन्द आये ब्रज जबहीं * भई यशोदा व्याकुल तबही ॥
गोपिन सुनि हित कुब्जा हरिको * कियो परेखो अति गिरिधरको ॥
भई बिरह बश पुनि ब्रजबाला * कहिहौं सो सब प्रेम विशाला ॥
पुनि कुलरीति जानि वसुदेऊ * हरि हलधर को कियो जनेऊ ॥
बिद्यानिधि पुनि जानन राई * बिद्या पढ़न गये दोउ भाई ॥
पूरण काम गुरू के कीने * मरे पुत्र प्रभु तिनके दीने ॥
ज्ञान गर्व उद्धव मन जानो * पठये ब्रजहिं श्याम सुख मानो ॥
सो उद्धव—गोपी—संबादा * प्रेम भक्ति-रसकी मर्यादा ॥
कहौं सु कथा विचित्र सुहाई * भक्त जनन को अति सुखदाई ॥
दो०-पुनि उद्धव जैसे गये, प्रेम भक्ति को पाय ॥
ब्रजवासिन की सब कथा, कही श्यामसों जाय ॥ १२ ॥
सो०-ब्रजहिं रहे ब्रजराज, ब्रजबासिन के प्रेम वश ॥
किये सुरन के काज, धरयो चतुर्भुज रूप पुनि ॥ १९ ॥
सो द्वारिका चरित्र सुहाये * प्रगट पुराणन में सब गाये ॥
अतिविचित्र हरिचरित अपारा * काहू गाय लह्यो नहिं पारा ॥
मति समान बुधजन सब गावैं * गाय गाय तनु पाप नशावैं ॥
हरि पद पंकज प्रीति बढ़ावैं * चंचल मनको तहाँ रमावैं ॥

ब्रजबिलास हरिको अतिपावन * रसमाधुर्य चरित्र सुहावन ॥
ताते कछुक कहत हौं गाई * सब संतन के पद शिर नाई ॥
यामैं कछू बुद्धि नहिं मेरी * उक्ति युक्ति सब सूरहिकेरी ॥
कियो सूर रससिंधु उदारा * तामें प्रेम तरंग अपारा ॥
हरिके चरित रत्न निधि माना * ब्रजबिलास सो सुधासमाना ॥
पदरचना करि सूर बखान्यो * कोमलबिमल मधुररस सान्यो ॥
समय समय के राग सुहाये * अति विस्तार भाव मन भाये ॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई * कहत सुनत श्रवणन सुखदाई ॥
दो०-अतिशय करि मोहत मनहिं, गँधरव गुण के संग ॥
कहत बनै तामें नहीं, क्रमसों कथा प्रसंग ॥ १३ ॥
सो०-मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसो भयो ॥
कहिहौं यह रस भाष, क्रमसों कथा प्रसंग सब ॥ २० ॥
ताते निजमनकी रुचि जानी * इहि बिधि करौं प्रबंध सुबानी ॥
द्वादश चौपाई प्रति दोहा * तहँ पुनि एक सोरठा सोहा ॥
कहूँ कहूँ शुभ छन्द सुहाये * भाषा सरल न अर्थ दुराये ॥
कहत सुनत समुझत मन भाई * ध्यान रूप महँ कथा सुहाई ॥
कर्म धर्म नहिं नीति बखानी * केवल भक्ति प्रेम सुखदानी ॥
जानि कृष्ण के चरित पुनीता * कहिहैं सुनिहैं सन्त सुप्रीता ॥
बहुरि कहत दोऊ कर जोरी * सुनियो बिनय कृपाकरि मोरी ॥
चूक परो जो मोतन होई * सुजन सुधारि लीजियो सोई ॥
मैं नहिं कबि न सुजान कहाऊँ * कृष्ण बिलास प्रीति करि गाऊँ ॥
सो बिचारिकै श्रवणनि कीजे * काव्यदोषगुण मन नहिं दीजे ॥
ऐसे सबको बिनय सुनाई * कृष्णचरित बर्णौं सुखदाई ॥
कृष्णचरित्र आनन्द की रासा * मंगलकरण हरण भव त्रासा ॥
दो०-बिघ्नबिनाशन शुभकरण, हरण तापत्रय शूल ॥
चरित ललित नँदनंद के, सकल सुखनके मूल ॥ १४ ॥
सो०-चरण कमल उर धार, श्रीराधा नन्दलाल के ॥
सुन्दर रस आगार, ब्रजबिलास अब बर्णिहौं ॥ २१ ॥

संबत शुभ पुराण शत जानौ * तापर और नक्षत्रन आनौ ॥
माघ सु मास पक्ष उजियारा * तिथि पंचमी सुभग शशिबारा ॥
श्री बसन्त उत्सवदिन जानो * सकल विश्व मन आनँद दानो ॥
मनमें करि आनंद हुलाशा * ब्रजविलास को करौं प्रकाशा ॥
बन्दौं प्रथम कमलपद नीके * श्रीबल्लभ आचारजजी के ॥
श्रीलक्ष्मणभट कुँवर उदारा * जन उद्धारणहित अवतारा ॥
माया बाद मिटाय अनेका * कियो प्रेम मारग दृढ़ एका ॥
श्रीगोकुल बसि सुख उपजायो * कृष्ण नाम को दान चलायो ॥
बिरहानल में सुभग शरीरा * बाणी प्रेम सिंधु गंभीरा ॥
हरि प्रापति की रीति बताई * विरह रूप करि प्रगट दिखाई ॥
बिरहभयो जिनको सब नेमा * विरह रूप करि जिनको प्रेमा ॥
बिरहै भरी भक्ति बिस्तारी * तातें गोकुल गैल नियारी ॥
दो०-द्वापर तनु धरि सुरनहित, कृष्ण संहारे दुष्ट ॥
श्रीबल्लभ ब्रपु धरि कियो, प्रेम पंथ कलि पुष्ट ॥ १५ ॥
सो०-मन बच कर्म सुचित्त, श्रीबल्लभ चरणन लग्यो ॥
वही आश वहि वित्त, वहि साधन वहि युक्ति बल ॥ २२ ॥
पुनि श्रीबल्लभ कुलहि मनाऊं * चरण कमल तिनके शिर नाऊं ॥
श्रीगोकुल में जिनको धामा * विश्व बिदित सुन्दर गुणग्रामा ॥
प्रेम भक्तिकी ज्योति बिराजै * तेज प्रताप जगत पर राजै ॥
जिनके सदन देखिये ऐसे * नन्द महर के सुनियत जैसे ॥
जहाँ कृष्णकी नित नवलीला * बाल विनोद भरी सुख शीला ॥
तिनकी शरण जीव जे आवैं * ते दृढ़ भक्ति कृष्णकी पावैं ॥
देत श्रवण मग अति सुखदाई * कृष्ण नाम रस सुधा पियाई ॥
भक्ति दान को परम उदारा * जगत बिदित श्रीगोकुल द्वारा ॥
तामहँ मंगल–बंश मँझारी * परम कृपालु दीन दुखहारी ॥
श्रीमोहनजी–नाम गुसाँई * सुन्दर श्याम श्याम की नाई ॥
परम बिशाल कमलदललोचन * दया दृष्टि उर ताप बिमोचन ॥
मधुर मनोहर शीतल बानी * प्रेम सुधारस सों लपटानी ॥

दो०-तिन तीरथ पति मधि दियो, कृष्ण नाम मोहिंदान ॥
दीन जानि राख्यो शरण, लगि कै मेरे कान ॥ १६ ॥
सो०-तिनके पद उर राखि, ब्रजबिलास वर्णन करौं ॥
मोमन को अभिलाष, पूरण करिहैं जानि जन ॥ २३ ॥
बन्दत हो अब सूर सुजानैं * जिन्हैं सूरसम सब कोउ मानैं ॥
प्रेमरूप — वाणी — परकासा * प्रफुलित अम्बुज सुनि हरिदासा ॥
कृष्णरूप बिन और न देख्यो * जगत बिषय तृणसमहरिलेख्यो ॥
राखे नयन सदा करि ध्याना * दिव्य दृष्टि हरि सुयश बखाना ॥
लीला श्याम जन्मभरि गाई * रहसि केलि सब प्रगट जनाई ॥
बाणी भाँति अनेक बखानी * कृष्ण प्रेम रससों लपटानी ॥
बड़े कठोर मोहबश जेऊ * होत प्रेमबश सुनिकै सोऊ ॥
कीन्हों अति उपकार जगत को * मारग दियो चलाय भगत को ॥
मोहिं बड़ाई करि नहिं आवै * जिनको गायो सब कोउ गावै ॥
चरणशीर्षधरि तिन्हहिं मनाऊं * यह अपराध क्षमा करि पाऊं ॥
मोते यह अति होत ढिठाई * करत विष्णु पदकी चौपाई ॥
सो मम दोष न उरमें धरिये * सफल मनोरथ मेरी करिये ॥
दो०-अब संतन की मंडली, बन्दत हौं शिर नाय ॥
बिना कृपा जिनको भये, हरियश गाय न जाय ॥ १७ ॥
सो०-करिहैं मोहिं सहाय, गुणग्राहक परहित करण ॥
तिनको सहज सुभाय, सन्तत सन्त कृपालु चित ॥ २४ ॥
सन्त मंडलीको शिर नाऊं * जिनकी कृपा बिमलमति पाऊं ॥
जिनकी कृपा बिघ्न सब नासैं * जिनको कृपा गुण भासैं ॥
जिनकी कृपा प्रेम फल पाई * जिनकी कृपा कुमति मिटि जाई ॥
जिनकी कृपा होंय गुण नाना * जिनकी कृपा सर्व कल्याणा ॥
जिनकी कृपा मोहतम नाशै * जिनकी कृपा ज्ञान परकाशै ॥
जिनकी कृपा सकल सुख मूला * होहु सु सन्त मोहि अनुकूला ॥
जय जय जय श्रीकुन्ज-बिहारी * नन्द नन्दन बृषभानु दुलारी ॥
मंगल मूरति आनन्द कारी * लीला ललित भक्त भयहारी ॥

रूपनिधान प्रेम रासी * श्रीबृन्दाव–धाम–निबासी ॥
अखिलनाम गुण सुखकोधाम। * पूरण काम श्याम अरु श्यामा ॥
युगलकिशोर ध्यानउर धरिकै * सुभग कमल पदवंदन करिकै ॥
ब्रजबिलास रस परम हुलासा * गावत है ब्रजबासीदासा ॥

* इति श्रीसूचनिका समाप्त । *

अथ कथा प्रसंग वर्णन ।

दो०-तन्नमामि पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश ॥
कृष्ण कमल लोचन सुखद, सकल देव मणि शीश ॥ १८ ॥
सो०-बन्दौं नन्द किशोर, बृन्दावन बासी सदा ॥
श्रीराधा चित चोर, आनन्द घन भव भय हरण ॥ २५ ॥
कहौं कथा सुन्दर सुखदेनी * अघहरणी बैकुण्ठ निसेनी ॥
कृष्ण चरण पंकज रतिदेनी * जन पावन करती जिमि बेनी ॥
श्रीकलिंद तनया तट पावन * बसत मधुपुरी परम सुहावन ॥
जाको महिमा सुर मुनि गावैं * तीन लोक पर बेद बतावैं ॥
दर्शन ते नर पावन होई * कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई ॥
उग्रसेन तहँ बसैं नरेशा * नीति निपुण सह धर्म सुबेशा ॥
ताको सुवन कंस अति पापी * असुर बुद्धि भो जग संतापी ॥
कियो तात गहि बन्दीशाला * आपन भयो कंस भूपाला ॥
तात अनुज तहँ देवक नामा * सुता तासु देवकी ललामा ॥
दई कंस वसुदेवहिं ताही * लोक बेदकरि रीति बिबाही ॥
दायज दियो अनेक बिधाना * हय गज रथ पट भूषण नाना ॥
दासी दास बहुत संग दीने * दान मान परिपूरण कीने ॥
दो०-तब चढ़ाय रथ देवकी, आप भयो रथवान ॥
पहुँचावन अति हेत सों, चल्यो सहित अभिमान ॥ १९ ॥
सो०-तेहि क्षण गिरा विशाल, होत भई आकाशते ॥
होय कंसको काल, देवकिको सुत आठवौं ॥ २६ ॥
कंसासुर सुनि बचन अकाशा * भयो चकितमनमिट्यो हुलाशा ॥
शत्रु समान देव किहिं मानी * रथते उतरि परयो अभिमानी ॥

खंग निकासि हाथ में लीन्हो * यह बिचार अपने मन कीन्हों ।।
अबहीं याहि मारि दुख मेटों * पुनि कलेश काहेको भेटों ।।
केश पकरि देवकि गहिलीन्हो * नहिं कछु कानः बहिनकी कीन्हो।।
तब वसुदेव दीन ह्वै कहहीं * तिय बधि नहीं भूप यश लहहीं ।।
बहुसे यह पुनि स्वसा तिहारी * राजन कीजे काज बिचारी ।।
सुनु बसुदेव भई नभबानी * तुमहुँ सुनी कछु नाहिं छिपानी ।।
ताते अग्रशोच किन करिये * पाछे काहेको दुख भरिये ।।
बृक्ष फलै जौ बिषफल आगे * ताहि बनै पहले ही त्यागे ।।
जो नहिं हतों आज यह बाला * मिटै न उरते शोच बिशाला ।।
कन्या और ब्याहि तोहि दैहौं * याहि मारि उर शोच नशैहौं ।।
दो०-मुनिजन गुरुजन संगजे, तिन्हनि कह्यो तिहिं काल ।।
बृथा होतु है यज्ञ फल, यह न उचित महिपाल ।। २० ।।
सो०-यहै तुम्हारे मान, आनकदुंदुभि देबकी ।।
इन्हैं न हतिये जान, बेदबिरोध न कीजिये ।। २७ ।।
पुनि वसुदेव कह्यो कर जोरी * राजन सुनिये बिनय कछु मोरी ।।
वृथा देवकी को जनि मारो * याको सुत है शत्रु तुम्हारो ।।
सब सुत याके हमपै लीजै * जीवदान याको प्रभु दीजै ।।
यह बाचा हम तुमते भाखैं * चन्द्र सूर साखी दै राखैं ।।
भली बात यह सबहिन जानी * भावी बिवश कंसहू मानी ।।
हरि कीनो चाहैं सो होई * ताहि मिटावन हार न कोई ।।
तिन्हैंसहित नृपघर फिरिआये * करि अगोट दोऊ रखवाये ।।
प्रथम पुत्र जब देबकि जायो * लै बसुदेव कंस पै आयो ।।
बालक देखि कंस हंसि दीनो * इन तो कछु अपराध न कीनो ।।
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो * सो दीजो तुम मोहिं सबेरो ।।
यह कहि अपनो पाप क्षमायो * तब बसुदेव हर्ष को पातो ।।
ऐसे बालक फेर सु दीनो * तब बसुदेव गमन घर कीनो ।।
दो०-तब ऋषि नारद कंस पहँ, लिये हस्ततल बीर्ण ।।
गुण गावत गोविंद के, आये परम प्रबीण ।। २१ ।।

सो०-उठ्यो देखि कै कंस, सीस नाय पद बन्दि करि ॥
बैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहिं ॥ २८ ॥
समाचार जो कछु ह्वै आये * सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनि नृपवचन बिहँसिऋषि बोले * तुम कत रहत शत्रु सों भोले ॥
जाके भय तुम अतिभय मान्यो * अठयों कौन सु तुमकब जान्यो ॥
जो वह प्रथमहिं आयो होई * दैवचरित्र जान कछु कोई ॥
आठ लकीर खैंच दिखराई * गिनती में सब आठों आँई ॥
यह समझाय गये ऋषि ज्ञानी * कंसासुर उर अतिभय मानी ॥
तिहिं क्षण बालक फेर मंगायो * लै बसुदेव तुरत ही आयो ॥
लियो मूढ गहि करमें ताही * पटकत,भयो शिलापर वाही ॥
याही बिधि षट बालक मारे * मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी * तुम बिन कासों करहिं पुकारी ॥
यह संताप मिटे कब भारी * बेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी ॥
केहि बिधि नाथ राखिये प्राना * करत कंस निर्वंश निदाना ॥
दो०-बिपति बिनाशन दुख-दमन, जनरंजन सुरराय ॥
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय ॥ २२ ॥
सो०-बिनती प्रभुहिं सुनाय, मन मन दंपतिदुखितअति ॥
होत न प्रगट जनाय, कंस असुर के त्रासते ॥ २९ ॥
भई भूमि जब अधिक दुखारी * बढ़्यो पाप असुरनको भारी ॥
सहि न सकी तब गोतनु धारो * शिवविरंचिपहँ जाय पुकारी ॥
सकल सुरनमिलिकियो बिचारा * हमते नहिं उतरै भुवभारा ॥
बिनय करिय चलि श्रीपतिपाहीं * कृपा करैं तब सब दुख जाहीं ॥
भूमि सहित सुर सकल सिधारे * क्षीरसिंधुतट जाय पुकारे ॥
जहँ श्रीपति श्रीसहित बिलासी * पुरुषोत्तम अबिगत अविनाशी ॥
धेनु अग्र करि बिनय सुनाई * जय जय जय त्रिभुवनके साईं ॥
जय सुखकन्द संतहितकारी * जय जगबन्द भूमि भयहारी ॥
जय जय असुर समूहनिकंदन * जय जय भक्त के उर चन्दन ॥
जय जय जय प्रणतातिमोचन * दैत्यदलन सुरशोचविमोचन ॥

जय जय जय प्रभु अन्तर्यामी * सुनिय बिनय सचराचरस्वामी ।।
करिये प्रभु सो बेगि उपाई * हरिये नाथ भूमि गरुवाई ।।
दो०-धरिय मनुजतनु दनुज हति, करिय धरणि उद्धार ।।
परसत पद पंकज मिटहिं, सकल भूमि अघभार ।। २३ ।।
सो०-पाहि पाहि भगवन्त, शरणागत वत्सल हरे ।।
रक्षा करहु अनन्त, दीन दुखित जन जानि हरि ।। ३० ।।
दीन वचन जब धेनु पुकारी * भई गिरा नभ मंगलकारी ।।
जाहुसकल सुरघर भय त्यागी * धरिहौं नरतनु तुम हितलागी ।।
प्रथम जन्म देबकि बसुदेवा * मोसन माँग लियो करि सेवा ।।
तुम सम पुत्र हमारे होई * मैं तिनको बर दीन्हों सोई ।।
तैसे नन्द–यशोदा जानो * दूध पियावन उन हित मानो ।।
गर्भ देवकी के अवतरिहौं * बालचरित गोकुल में करिहौं ।।
तुमहूँ गोपबेष व्रज होऊ * मम सँग सुख पावो सब कोऊ ।।
यहकहिसुरनिबिदा हरिकीन्हों * आयसु योगशक्ति कहँ दीन्हों ।।
सप्तम गर्भ देवकी केरा * तहाँ शेष मम अंश बसेरा ।।
सो आकर्षण करि क्षणमाहीं * राखौ गर्भ रोहिणी पाहीं ।।
शक्ति जबहिं हरि आयसुपायो * तत्क्षण ताहि तहां पहुंचायो ।।
हरि चरित्र कछु जान न कोई * जो कछु करन चहैं सो होई ।।
दो०-तब कृपालु जनके सुखद, अविगत कमलाकन्त ।।
निज आगम देवकि उदर, दिय जनाय भगवन्त ।। २४ ।।
सो०-तनुद्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब ।।
आनन मुकुर निहारि, अति प्रसन्न मन देवकी ।। ३१ ।।
निज मुख मुकुर देवकी देख्यो * शरद चन्द पूरणसम लेख्यो ।।
मिट्योतिमिरश्रमअतिसुखपायो * जान्यो कंसकाल हरि आयो ।।
प्रभु आगमन जानकर देवा * आये सकल जनावन सेवा ।।
नभते गर्भ स्तुति सब करहीं * जयजय जय जय जय उच्चरहीं ।।
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई * जय बेदान्त वेद्य सुरसाँई ।।
जय तीरथ पति भवनिधिवोहित * प्रणतपाल जयदीननकेहित ।।

जय संकल्प सत्य गुण धामा * जय जन वाँछित पूरणकामा ॥
जय गोद्विजहित नरतनुधारी * जय संतनपति गति अघहारी ॥
जय कृपालु आनन्द बरूथा * बंदत चरण सकल सुरयूथा ॥
जय परमारथ अमित अनूपा * महापुरुष सचराचर–भूपा ॥
जय अहीश नित तव गुण गावैं * तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं ॥
जो मुनि जनमन ध्यान न आवैं * भक्त अधीन बेद यश गावैं ॥
दो०-अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि ॥
गर्भवास सो देवकी, कौतुक निधि सर्बादि ॥ २५ ॥
सो०-किनहु न पायो भेव, शेष महेश गणेश बिधि ॥
नमो नमो तिहिं देव, परम विचित्र चरित्र शुभ ॥ ३२ ॥
करि बिनती सुर सदन सिधारे * परमानन्द मगन मन भारे ॥
तब देवकि पति पास बखाने * कोमल बचन प्रेमते साने ॥
हे पिय सो उपाय कछु कीजै * अबकै यह बालक रखिलीजै ॥
बुधिबल छल पिय कीजै सोई * जामें कुलको नाश न होई ॥
मैं मन बच अबकै यह जाना * हैं मम उदर देव भगवाना ॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं * कौन भाँति यह गर्भ दुराऊं ॥
सत्य धर्म बरु जाय तौ जाऊ * पति यह सुतहित करिय उपाऊ ॥
कर्म धर्म सब हरिहित भाखैं * सो हरि तजि कहुँ धर्महिं राखैं ॥
सुनहु पिया अस को हितकारी * जो यह बालक लेहि उबारी ॥
शिर—ऊपर बैठे रखवारे * पाँयन पड़े निगंड अति भारे ॥
कंस असुर उत बंश विनाशन * केहिबिधिसों उबरे तियतासन ॥
ऐसो को समरथ जग पाई * जो इहि अबसर होय सहाई ॥
दो०-षट बालक बध सुरति करि, दम्पति दुखित बिचार ॥
अति आकुल भय कंसके, दृगन चलो बहि धार ॥ २६ ॥
सो०-करुणा सिंधु दयाल, तात मात अति दुखित लखि ॥
प्रगट भये तिहि काल, दुख मोचन लोचन सुखद ॥ ३३ ॥
योग शक्ति हरि आयसु पाई * प्रगटी नन्दभवन सो जाई ॥
ताके प्रगटतही नर नारी * भये नीदबश देह बिसारी ॥

भादौं कारी निशि अति पावन ※ आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिल लोकपतिजनसुखदायक ※ आके जन्म लियो सुरनायक ॥
शीस मुकुट कल कुण्डल कानन ※ शरदमयंक सरस शुभ आनन ॥
चारु चरण पंकज दल लोचन ※ चितवन सुखद तापत्रयमोचन ॥
कुटिल अलक भृमेचकताई ※ जनमन हरण परम सुखदाई ॥
पीतबसन तनु श्यामत माला ※ उर श्री वत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी ※ शंख-चक्र-गद-अम्बुज-धारी ॥
अंग अंग भूषण सब नीके ※ परम बिचित्र भावते जीके ॥
चरण-सरोजउदित नखज्योती ※ कमल दलन राखे जनु मोती ॥
परम प्रताप सुभग शिशु वेषा ※ अद्भुत रूप देवकी देषा ॥
दो०-देखि अमित छबि चकित मति, पति ढिगलिये बुलाय ॥
दम्पति परमानन्दमन, परे हर्षि सुत पाय ॥ २७ ॥
सो०-भरे प्रेमजल नैन, अति सनेह आकुल शिथिल ॥
बोले गद्गदबैन, जोरि पाणि बिनती करत ॥ ३४ ॥
प्रभुकिहिबिधितवगुणनबखानौं ※ तव मायावश तुमहिं न जानौं ॥
सहसानँन जाके गुण गावैं ※ नेति नेति जिहि निगम बतावैं ॥
जाकी भ्रू बिलास अनयासा ※ अखिल लोक उपजे अरु नासा ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं ※ कृपा करहु तब दर्शन पावैं ॥
जो सबते पर अज अबिनासी ※ सोकिमिकहिय उदरममबासी ॥
परम बिचित्र चरित्र तुम्हारे ※ मोहत हैं प्रभु मनहिं हमारे ॥
तात मात के बचन सुहाये ※ सुने प्रेमबश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी ※ मधुर मनोहर अमृत बानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं ※ प्रथम जन्मको कथा बताऊं ॥
तुम जाँच्यो मोहिं करितपभारे ※ तुम समान सुत होय हमारे ॥
जनहित बिरद भोर श्रुति गायो ※ सो कैसे करि जात लजायो ॥
ताते मैं बर तुमको दीन्हों ※ सो हम आप सत्य अबकीन्हों ॥
दो०-शिव ब्रह्मासनकादि मुनि, ध्यान सकत नहिं पाय ॥
सो मैं तुम्हरे प्रेमबश, दियो दर्श निज आय ॥ २८ ॥

सो०-कौतुकनिधि सुरराय, करत चरित मुनिमनहरण ॥
महामोह उरझाय, दियो बहुरि पितु मातु मन ॥ ३५ ॥
करहु तात अब बेगि उपाई * हमहिं कंसते लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई * तहाँ यशोदा कन्या जाई ॥
मोहिं राखि यशुदाके पासा * कन्या ले आवहु अनयासा ॥
सो कन्या ले कंसहि दीजै * तात हमारो नाम न लीजै ॥
ऐसहि मातपितहिं समुझाई * भये तुरत शिशु यदुकुलराई ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता * विस्मय हर्षबिबश पितुमाता ॥
सुत उठाय उरसों लपटायो * प्रेमबिबश लोचन जल छायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजै * गमन बेग गोकुलको कीजै ॥
जबलग सुनहि न वह हत्यारो * मनबचक्रम नृपको न पत्यारो ॥
बनै नाथ उर धीरज धारे * नाहिंन इतनो भाग्य हमारे ॥
जो यह सुख नयननपुट पीजै * ऐसे सुतको यश सुनि लीजै ॥
दर्शनसुखित दुखित महतारी * सोचत बिकल कंसभय भारी ॥
दोहा-अति अँधियारी अर्धनिशि, भट घेरे चहुँ ओर ॥
कौनभांति जैहैं दई, पाँयन निगड अघोर ॥ २९ ॥
सो०-बरषत अतिजलघोर, घन गरजत चमकत चपल ॥
बिच यमुना अतिघोर, पाक कवनबिधि पाइहैं ॥ ३६ ॥
कहा करौं अब काहि पुकारौं * कौनभांति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहिं किनमारी * बिनती करि पतिव्रता उबारी ॥
ऐसो सुत बिछुरत महतारी * कौनभाँति जीवै दुख भारी ॥
कृपासमुद्र भक्त—सुखदानी * सुनत मातुकी आरतबानी ॥
कृपा करी सब श्रमभय टारे * गिरे निगंड पाँयनते भारे ॥
तब बसुदेव हरषि तेहि ठाहीं * लक्षधेनु अर्पी मनमाहीं ॥
पुत्र गोद लै तुरत सिधाये * द्वारकपाट खुले सब पाये ॥
रखवारे सब सोवत देषे * सपदि चले उर हर्ष विशेषे ॥
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी * मंद समीर भयो श्रमहारी ॥
हरि—मुखचंद्र—प्रभा तम नाशै * क्षणक्षण तडित पंथ परकाशै ॥

प्रभुपर शेष छाँह फन छाई * आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो बसुदेव न जानत भेवा * पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥
दो०--सरित देखि गंभीर अति, मनमहँ सोच बिचारि ॥
गोकुलके सन्मुखधर्‌यो, प्रभुप्रताप उरधारि ॥ ३० ॥
सो०--यमुना पति पहिचानि, मन अनंद हुलस्यो हियो ॥
परसनहित पद पानि, अतिप्रवाह ऊंचो उठ्‌यो ॥ ३७ ॥
गुल्फजंघकटिलौं जल आयो * तब हरिको कछु ऊर्ध्व उठायो ॥
ज्यों ज्यों बसुदेव सुतहि उठावैं * त्यों त्यों जल ऊपर चढ़ि आवैं ॥
नाकप्रयंत नीर जब आयो * तब हरि पद अपनो लटकायो ॥
परसि नीर हुँकारहि दीनो * तुरतहिं भयो गुल्फते हीनो ॥
भये पार लैके घनश्यामहिं * गये बसुदेव नंदके धामहिं ॥
तहाँ सकलजन सोवत पाये * सुत लै यशुमतिपास सिधाये ॥
कन्या तहाँ पुनीत निहारी * लई उठाय राखि दैत्यारी ॥
फिरफिरि सुतको बदन निहारी * चले तुरत भय कंस बिचारी ॥
जो संपति निगमागम गाई * योगीजनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरबस बिधिप्राना * शंकर जासु धरतु हैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं * सहसबदनहूँ पार न पावैं ॥
अहो बिलोकहु भाग्यबड़ाई * सोई सोवत यशुमति पाई ॥
दो०--वहाँ देवको प्रेमबश, अतिव्याकुल अकुलात ॥
बालक अरु बसुदेव कहँ, पठय बहुत पछितात ॥ ३१ ॥
सो०-बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोई सेजपर ॥
मोचत नयनन नीर, बोलसक़त नहिं कंसभय ॥ ३८ ॥
मनमन सुर मनाय सन्मानै * मत यह भेद दई कोउ जानै ॥
रखवारे कहुँ जानि न जाहीं * मत कोउ दुष्ट मिलै मगमाहीं ॥
याते अधिक सोच मोहिं भारी * क्यों दुरिहै शशिमुखउजियारी ॥
मगमहँ यमुना अतिगंभीरा * केहिबिधि पहुँचहिं गे वहितीरा ॥
गोकुल पहुंचे धौं मगमाहीं * भई बेर पति आये नाहीं ॥
यहिविधि सोचबिबश अकुलाई * क्षणइक कलपसमान बिहाई ॥

पहुँचे बसुदेव तिहिक्षण जाई * बूझत उठी पुत्रकुशलाई ॥
केहिबिधि पुत्र राखि पति आये * समाचार वसुदेव सुनाये ॥
कन्या दई देवकिहि जबहीं * द्वार कपाट गये लगि तबहीं ॥
बेड़ी ह्वैगँइ पग तत्काला * कन्या रोयउठी तिहिकाला ॥
चहुँदिशि जागि परे रखवारे * तुरत कंसपहिं जाय पुकारे ॥
सुनतहि उठि अतिआतुर धायो * लीन्हें खंग तहाँ चलि आयो ॥
दोहा—कन्या लै तब देवकी, आगे राखी आय ॥
दीन बचन आधीन ह्वै, कंसहि कहै सुनाय ॥ ३७ ॥
सो०—अहो भ्रात यह दान, तुम हम कहँ अब दीजिये ॥
है कन्या जिय जान, याते भय तुमको नहीं ॥ ३८ ॥
सुनत कंस भगिनीकी बानी * मृत्युत्रासते शठ रिस मानी ॥
यामें कछू होय छल कोई * को जानै बिधनागति गोई ॥
यह विचार कन्या गहि लीनी * पटकनकी मनसा तिहि कीनी ॥
करते छूटि गई आकाशा * दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलतिभई गगनते बानी * अरे मंदमति अधम अज्ञानी ॥
मम हत्या तैं लई वृथाहीं * तेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥
सर्पग्रसित जिमि दादुर होई * माखी खान चहत शठ सोई ॥
तैसे तू चह मारन मोहीं * आयो काल निकट शठ तोहीं ॥
ऐसे कहिके स्वर्ग सिधारी * कंसहि शोच भयो सुनि भारी ॥
पर्‍यो देवकी—चरणनमाहीं * मैं मारे तव पुत्र वृथाहीं ॥
क्षमा करो मेरे अपराधा * है बिधिकी गति अलख अगाधा ॥
बसुदेवहि मन क्षमा कराई * निगड़ दिये पगते कढ़वाई ॥
दो०—गयो शोकव्याकुल सदन, पर्‍यो सेजपर जाहि ॥
जागतही बीती निशा, नींदपरीं नहिं ताहि ॥ ३९ ॥
सो०—हरिके चरित अनूप, असुर बिमोहन सुरसुखद ॥
नर न परहिं भवकूप, सहज प्रेम गावहिं सुनहिं ॥ ४० ॥
यशुदा जब सोवतते जागी * सुतमुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अंग उर आनँद भारी * देखिरही मुख शशिउजियारी ॥

गद्गदकंठ न कछु कहि आयो * हर्षवंत भै नंद बुलायो ॥
आवहु कंत पुत्रमुख देखो * बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा * सफल भई सबहिनको सेवा ॥
सुनत नंद प्रिय ताकी बानी * प्रेममगन तनुदशा भुलानी ॥
हर्षित उठि अतिआतुर आयो * यशुमति सुतको बदन दिखायो ॥
देखत मुख उर सुख भयो जैसो * कहि न सकहिं श्रुति शारद तैसो ॥
कहा कहौं तिहिक्षणकी शोभा * मनहुँ महाछबि तरुके गोभा ॥
आनँदमगन नंद मनमाहीं * जानत नहिं हम को किहिठाहीं ॥
रोय उठे तब नंदके लाला * जागिपरे सब ग्वालनिग्वाला ॥
जिततितते हर्षित उठि आये * मनहुँ रंक धन लूटन धाये ॥
दो०—दई बधाई नंदको, परैं यशोदा पाँय ॥
कहैं पियारे लालको, नेक हमहिं दिखराय ॥ ३४ ॥
सो०—अतिहर्षित नँदराय, कह्यो बजावन सोहिलो ॥
दौरि उठीं सब गाय, लाग्यो बजन बधावनो ॥ ४१ ॥
छं०—सुर सिद्ध मुनिंदा परम अनंदा सुनि गोकुल हरि आये ॥
दुंदुभी बजावत मंगल गावत तियन सहित उठि धाये ॥
बिद्याधर किन्नर सुघर कंठवर करत गान सचुपाये ॥
गरजत तिहिकाला मधुररसाला घनगति जनन जनाये ॥
बाजत करताला बरसत माला सुरतरुसुमन सुहाये ॥
सब करैं कलोलैं हर्षित बोलैं जय जय जय सुखपाये ॥
नभमहँ धुनिहोई सुनि सब कोई भये सबन मन भाये ॥
संतनहितकारी असुर सँहारी आवत क्षिति सुख छाये ॥
शिवब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता ॥
गुणगण सब गावैं प्रभुहिं सुनावैं आनंद उर न समाता ॥
भये मनके चीते सब भय बीते प्रगटे दनुज निपाता ॥
अति मन महँहरषे पुनि पुनि बरषे सुमनजो सुरतरुव्राता ॥
सुरतिय मनमाहीं निरखि सिहाहीं यशुमतिके बड़भागा ॥
इन सम हम नाहीं पुण्यन माहीं कहैं सहित अनुरागा ॥

योगीजेहि ध्यावैं ध्यान न आव करि करि योग बिरागा ।।
जो बेद न जानैं नेति बखानैं सो सुत ह्वै उर लागा ।।
दो०-भरे परम आनंद सुर, उपजावत अनुराग ।।
बार बार वर्णन करैं, नंद यशोमति भाग ।। ३५ ।।
सो०-रहे सदन सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि ।।
जन्मे मंगल मूल, व्रजवासी हर्षित सबै ।। ४२ ।।
व्रजबासिन सबहिन सुनि पायो * नंदमहर घर ढोटा जायो ।।
परमानंद लोग सब धाये * नंदराय तब विप्र बुलाये ।।
काढि लग्न ग्रह योग सुधायो * अतिबिचित्र सबद्विजन सुनायो ।।
करत बेदधुनि अतिसुख पाई * देहिं नंदको सकल बधाई ।।
तब अस्नान महर उठि कीन्हो * भाल तिलक चंदन लै दीन्हो ।।
जातकर्म करि पितर पुजाये * भूषण बसन द्विजन पहिराये ।।
गैयां लक्ष सबत्स सुहाई * बाढ़ी दूध नवीन मंगाई ।।
सबविधि सकल अलंकृत कीनी * करि संकल्प द्विजनको दीनी ।।
मुदित बिप्र सब देयँ अशीसा * चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा ।।
हँसिहँसि बहुरि महरि नँदराई * हितकुटुंब सब निकट बुलाई ।।
बहु सुगंध मथि तिलक बनाये * भूषणबसन बिबिध पहिराये ।।
हुते जु कुलमें वृद्ध जठेरे * हितसों पाँय परे सबकेरे ।।
दो०-बंदी मागध सूत गण, भरे भवन बहु आय ।।
लै लै नाम बुलाय सब, परितोषे नंदराय ।। ३६ ।।
सोरठा-मन बांछित सब लेहिं, जो जाके भावै मनहिं ।।
नंदमहर सब देहिं, किये अयाची याचकनि ।। ४३ ।।
सुनि आई सब व्रजकी नारी * लै कर कमलन कंचनथारी ।।
मंगल साज साज सब लीन्हें * सहज सिंगार सुभगतनु कीन्हें ।।
चारु चीर तन दृग कजरारे * भालतिलककचशिथिलसँवारे ।।
माँग सिंदूर तरोना कानन * रोरी रंग किये कछु आनन ।।
अँगिया अंग कसे छबि छाजैं * बिबिधभांति उर हार बिराजैं ।।
अति आनंद मगन मन फूलीं * अंचल उड़त सँभारन भूलीं ।।

निज निज मेलमिली सब गावै * बिहँसत नंदधामको आवै ॥
इक भीतर इक आँगन माहीं * इक द्वारे मग पावत नाहीं ॥
सबको यशुमति निकट बुलावै * मुख उघारि सुतको दिखरावै ॥
देहिं अशीस परै शिशु पायन * जीवहु जबलगि नभतारागन ॥
पूरणकाम भयो ब्रज सारो * धन्य यशोदा भाग तिहारो ॥
धनि सो कोख जहाँ सुत राख्यो * पुण्य तिहारो जात न भाख्यो ॥
दो०-धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथि बार ॥
जहँ जायो ऐसो सुवन, थिर थाप्यो परिवार ॥ ३७ ॥
सो०-पुनि २ शीस नवाय, देहिं अशीस मनाय सुर ॥
जियहु सुवन नंदराय, रूप अचल कुलकी थुनी ॥ ४४ ॥
परमानंद नंद अनुरागे * चित्रबिचित्र बस्त्र बहु माँगे ॥
सुरख रंगके सबके लहँगे * अतिचटकीले मोलन महँगे ॥
सिगरी बधू मिलीं पहिराई * जो जैसी जाके मन भाई ॥
देहिं अशीस मुदित ब्रजनारी * फूलीं कमल कलीसी सारी ॥
एक रहसि निजनिज गृह जाहीं * इक हुलसी आवैं गृहमाहीं ॥
एक कहैं एकनसों धाई * हौं यह बात भली सुनि आई ॥
महरि यशोदा ढोटो जायो * नंदद्वार सखि बजत बधायो ॥
चलहु बेगि सखि देखिये सोई * बिधनासों चाहत ही जोई ॥
इक नाचैं इक ढोल बजावैं * एक नंदको गारी गावैं ॥
एक साथिये द्वार बनावै * एकै बंदनवार बँधावै ॥
ध्वज पताक तोरण छबि छाई * घर घर होत अनंद बधाई ॥
पुनि पुनि सुमन देव बरषावैं * फूलनसों सब गोकुल छावैं ॥
दो०-ध्वज पताक तोरण कलश, बंदनवार दुवार ॥
गोपनके घर घर बँधे, घर घर मंगलचार ॥ ३८ ॥
सो०-नंदसदनछबि चारु, बरणि सकै सो कौन कवि ॥
लियो जहाँ अवतारु, छबिसागर त्रिभुवनधनी ॥ ४५ ॥
ग्वालवृंद सब सुनि उठि धाये * बालवृंद सब निकट बुलाये ॥
घसि बनधातु चित्र सब कीन्हे * गुंजाभूषित भूषण लीन्हे ॥

यद्यपि अरु भूषण तनमाहीं * तद्यपि अहिरन गुंज सुहाहीं ॥
एक कहैं एकन समुझाई * आज बनहिं कोऊ नहिं जाई ॥
गैयां लेपनसहित बनावो * चित्रबिचित्र बेग लै आवो ॥
पूत नंदके घर है जायो * भयो सबनके मनको भायो ॥
कत हो गहर करत बिनकाजा * बेग चलो सब सहित समाजा ॥
दधि माखनके माठ भराये * कछु इक हरदो रंग मिलाये ॥
लिये शीसपर केतिक गावैं * केतिक ताल मृदंग बजावैं ॥
मिलिमिलि निजनिज यूथनमाहीं * नंदसदन निरतत सब जाहीं ॥
देखि नंद अतिआनँद पावैं * हँसिहँसि सबको निकट बुलावैं ॥
छुइ छुइ चरण भेट धरि आगे * देंहि बधाई अति अनुरागे ॥
दो०—नाचत गावत मगनमन, भई सदन अतिभीर ॥
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोपशरीर ॥ ३९ ॥
सो०—देह धरे आनंद, मनहुं नंद तिनमधि लसैं ॥
जन्मे आनंदकंद, कहि न सकहिं सुख सहसमुख ॥ ४६ ॥
इक नाचत इक गावत ठाढ़े * इक कूदत अति आनंदबाढ़े ॥
छिरकत एक दूध दधि डोलैं * एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नंदघर दधिको कादौं * बरषत दूत दही जनु भादौं ॥
एक धाय एकनपै जाहीं * एकै मिलत डारि गलबाहीं ॥
एक एक के पाँयन परहीं * इक दधि दूर्वाक्षत शिर धरहीं ॥
अति उछाह सबके मनमाहीं * राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुलमध्य देखिये जितहीं * करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नंदको लेहीं * एकै एकनको धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावैं * पट भूषण तिनको पहिरावैं ॥
एक कहैं हम तब कछु लैहैं * जब लालनमुख देखन दैहैं ॥
एक जो एकनते कछु लेहीं * ते निशंक एकनको देहीं ॥
अति--आनंद-मगन पशुपालक * नाचत तरुण वृद्ध बालक ॥
दो०--गोकुलको आनंद सब, कापै बरण्यो जाय ॥
जहाँ परम आनंदमय, लियो जन्म हरि आय ॥ ४० ॥

सो०-नित नव होय बिलास, हरि मुकुन्द के जन्मते ॥
ब्रज संपदा सुपास, सुर भूलहिं कौतुक निरखि ॥४७॥
जबते जन्म लियो हरि आई * सुखसंपति ब्रज घरघर छाई ॥
सब उदार सब परम प्रबीना * सब सुन्दर सब रोग बिहीना ॥
मुदित जहाँ तहं सब ब्रजबासी * सब यशुमति–सुतप्रेमउपासी ॥
नन्दसदन बरण्यो किमि जाहीं * शत सुरेश लखि बिभ्रम जाहीं ॥
अति प्रकाश मन्दिर के माहीं * फैलि रही हरि छबिकी छाहीं ॥
ग्वाल--गाय गोपन की भीरा * कहुँ दधि कहुं माखनकहूंक्षीरा ॥
भूमि बाग बन गिरि रमणीया * खग मृग सर सरिता कमनीया ॥
बिटपबेलि सब सहित फूलफल * दिशाप्रकाशितनिर्मल जलथल ॥
सुरभी सुर-सुरभी समतूला * भयो सकल ब्रज मंगल मूला ॥
बिभवभेद यह कोउ न जाने * आदि हिते हम ऐसे माने ॥
कृष्ण—जन्म आनन्द बधाई * सुर नर नाग तिहूं पुर गाई ॥
ब्रजबासिन मन अधिक उछाहू * कहिनहिंसकहिंसहसमुख जाहू ॥
दो०-ब्रजको सुख को कहि सकै, सुषमा बढ़ी अपार ॥
सुख निधान भगवान जहं, लियो मनुज अवतार ॥४१॥
सो०-प्रगटे गोकुल चन्द, सन्त कुमुदबन मोदकर ॥
तमकुल-असुर-निकन्द, ब्रजजन चारु चकोर हित ॥४८॥
नित नव भीर नन्द के द्वारे * याचक जन सब होयँ सुखारे ॥
गाँव गाँवते सुनि सुनि आवैं * मन भायो सब कोऊ पावै ॥
पाँचदिवसइहिबिधिसुख पायो * छठयों दिवस छठीको आयो ॥
मन्दिर सकल सुबास लिपायो * जहाँ तहाँ चित्रित करवायो ॥
बाथी चारु सुगन्ध सिंचाई * द्वारन बन्दनबार सुहाई ॥
जाति कुटुम्ब मित्र हित जेते * नन्दराय न्योते सब तेते ॥
ठौर ठौर बहु व्यंजन होई * रोहिण्यादि सब करहिं रसोई ॥
गोप वधू सब बनि ठनि आवैं * लालन को पहिरावन ल्यावैं ॥
जरकसि कुरता भूषण टोपी * रत्नसमेत प्रेमरंग ओपी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई * धरि धरि कंचन थारिनल्याई ॥

गावहिं मंगल कोकिल बानी * नन्द भवन आवहिं हरषानी ॥
करि आदर यशुदा बैठावैं * देखि श्यामघन सब सुख पावैं ॥
दो०-वृषभानादिक गोपबर, ब्रजवासी समुदाय ॥
आये सब नन्दराय गृह, भूषण बसन बनाय ॥४२ ॥
सो०-अति आदर करि नन्द, शुभ आसन दीन्हे सबन ॥
सबके मन आनन्द, बजत दुन्दुभी नचत नट ॥ ४६ ॥
कहूँ ग्वाल गावत हैं हेरी * कहूं खिलावत गाय घनेरीं ॥
बंश प्रशंसा भाट सुनावैं * कितहूं ढाढ़ी ढाढ़िनि गावैं ॥
देहिं गोपगण तिनको दाना * भूषण बसन धेनु मणि नाना ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं * अति अद्भुत कापै कहि आवै ॥
धरहिं नन्द के आगे आनी * राखहिंसब अतिशयसुखमानी ॥
तिनहिं देहिंनिबछावरि हरिकी * कोमल श्यामल सुन्दर बरकी ॥
विश्वकर्मा पलना गढ़ि लायो * रत्नजटित सुरंग सुहायो ॥
लागे बिबिध खिलौना तामैं * देखत भूलि रहै मन जामैं ॥
पालन हितसों नन्द रखायो * विश्वकर्मा मनवांछित पायो ॥
ऐसे दिवस यामयुग आयो * तब सब गोपन नन्द जिमायो ॥
छिरकि सुगन्ध पान कर दीन्हो * तब सब गोपन भोजन कीन्हो ॥
मंगलमय–रजनी जब आई * गाय उठीं सब नारि सुहाई ॥

अथ कुरता टोपी वर्णन।

दो०-कुरता टोपी पीतरंग, लालन को पहिराय ॥
लै उछंग पूजन छठी, बैठी हर्षित माय ॥ ४३ ॥
सो०-करि कुलको व्यवहार, करी आरती श्याम की ॥
करत निछावर नारि, तन मन धन शशि मुख निरखि ॥
नेग जोग सब नेगिन पायो * दियो सबनि यशुदा मन भायो ॥
प्रातहि उठि लालन अन्हबायो * सुदिन शोधि पलना पहुढ़ायो ॥
निरखिनिरखि यशुदा बलिजाई * अरुण चरण कर कोमलताई ॥
ब्रजवासी जीवन नन्दलाला * मातुसुकृतफल मदनगोपाला ॥
नित नव मंगला होहिं सुहाये * मंगलनिधि जबते हरि आये ॥

नंद सुकृत वर्षाऋतु सोई * यशुमति सुकृत अकाश बनोई ॥
तहँ घनश्याम श्यामतनु उनये * मंदहँसनि दामिनिद्युति जुनये ॥
गरजन मंद मधुर किलकारी * ब्रजजन मोरन आनँद कारी ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा * परम प्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पँचरग मणि छबिछाई * इंदधनुष उपमा तिन पाई ॥
गजमुक्तनकी लर लटकाई * सोई मानो खगपाँति सुहाई ॥
ब्रज घर घर सुखसंपति छाई * सोई मनहुँ भूमि हरि आई ॥
दो०-बरषत परमानंद जल, नंद सदन जग माहिं ॥
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जनउरसिंधुसमाहिं ॥ ४४ ॥
सो०-पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशिबासर भरत ॥
बढतलहरि पुलकाहिं, हरिसुख शशिराकानिरखि ॥ ५१ ॥
कंसहि वहाँ नींद निशि नाहीं * अतिचिंता व्याकुल मनमाहीं ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठि प्राता * मंत्री बोलि कही सब बाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं * कौनभाँति पहिचानों ताहीं ॥
जाते जाय बेग वह मारो * ऐसो तुम कछु मंत्र बिचारो ॥
दिनदिन बड़ो होय अब सोई * को जानै फिर कैसी होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा * क्यों डरपत इतनेके काजा ॥
मोपै एक मंत्र सुनि लीजै * धर्मकाज कछु होन न दीजै ॥
जप तप होम होन नहिं पावैं * बिप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो बह देव होयगो कोई * सहि नहिं सकहि प्रगट ह्वै सोई ॥
तब तेहि असुर जाय संहारैं * याविधि शत्रु तुम्हारो मारैं ॥
बोलो एक बात यह नीकी * औरौ सुनहुँ हमारे जीकी ॥
देशदेशको असुर पठावो * बालक मासकके जे पावो ॥
दो०-तिन सबहिनको वध करैं, बचन न पावै कोय ॥
इनहीं में वह होयगो, मार्यो जैहै सोय ॥ ४५ ॥
सो०-कह्यो कंस हरषाय, कहे मंत्र दोऊ भले ॥
पठवहु असुर निकाय, जाय करैं कारज सँभारि ॥ ५२ ॥
याविधि असुर बिदा बहु कीन्हो * बालबधनको आयसु दीन्हो ॥

कह्यो जाय ब्रज बेगहि कोई * तहां के बालक मारैं सोई ॥
कह्यो पूतना आयसु पाऊं * तो यह कारज मैं करिल्याऊँ ॥
सकल घोष शिशु जाय नसाऊं * जो कहिये तौ जीवत ल्याऊं ॥
क्षण में रूप मोहिनी धारौं * बशोकरण पढ़ि सब पर डारौं ॥
घसि कंकोला उरोजन लाऊं * ब्रजवासिन के बाल पियाऊं ॥
तौ पूतना नाम कहवाऊं * जो नृपको कारज करि आऊं ॥
तुरत कंस तेहि आयुस दीन्हो * सुनतहिबचनगवन तिनकिन्हो ॥
तादिन नन्द मधुपुरी आये * राज अंश कछु नृप कहं ल्याये ॥
नृप दरबार ताहि पहुंचायो * समाचार वसुदेव को पायो ॥
छोड़ि बन्दिते नृपने राखे * हृते मित्र सुनिकैं अभिलाखे ॥
मिलन गृये तिनको नन्दराई * उठि बसुदेव मिले हरषाई ॥
दो०-कुशल पूँछि करि परसपर, बारम्बार सप्रीति ॥
बैठारे नन्दराय ढिग, करिकै आदर रीति ॥ ४६ ॥
सो०-तब बोले नन्दराय, सुनिय दैव भावी प्रबल ॥
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके बिवश ॥ ५३ ॥
तुम अति कष्ट कंसते पायो * सुनि सुनिबहुतभयो पछतायो ॥
आजु देखिकै चरण तिहारे * भये हमारे नयन सुखारे ॥
तब बसुदेव कही मृदुबानी * अहो नन्द तुम सत्य बखानी ॥
कर्म रेख नहिं जात मिटाई * बिधिकी गति कछु जान न पाई ॥
सुन्यो नन्द सुत भयो तुम्हारे * तबते अतिसुख भयो हमारे ॥
तुमको जरा आय नियराई * बड़ी बैस विधि भयो सहाई ॥
तब नन्द हलधर जन्म सुनायो * प्रथमहि तिन्है रोहिणी जायो ॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनो * कंसत्रास अपने उर लीनो ॥
सुनि बसुदेव बहुत सुख पायो * तब ऐसे कहि बचन सुनायो ॥
सुनहु नन्द तुम नीके जानो * कंस नृपतिकृत नाहिं छिपानो ॥
ताते अब वे दोऊ बालक * अपने मानि करौ प्रतिपालक ॥
अब तुम बेगि गोकुलहि जाहू * बालकहित पतियाहिन काहू ॥

अथ पूतना वध लीला ।

दो०-जित तित पठये कंसके, करत असुर अनरीति ॥
प्रजा लोक के बालकन, ताते है अति भीति ॥ १ ॥
सो०-गई पूतना आज, ब्रजको बालक घातिनी ॥
करिहै कछू अकाज, बेगि धाम सुधि लीजिये ॥ १ ॥
सुनि बसुदेव वचन नन्दराई * भये बिदा तुरतै भय पाई ॥
निकसत शकुन अशुभ मग पाये * ताते अधिक शोच उर छाये ॥
क्षिप्र चले कछु सुधि तन नाहीं * बालककी चिंता मन माहीं ॥
इहाँ पूतना ब्रजमें आई * रूप मोहिनी प्रगट बनाई ॥
गरल बाँटि कुचसों लपटायो * ऊपर सुभग शृङ्गार बनायो ॥
अतिहो कपट छबीलो सोहै * जो देखै ताको मन मोहै ॥
इत उत ह्वै नन्दधामहिं आई * देखि रूप यशुदा मन भाई ॥
देखि रहो मुख-सुन्दरताई * कै यह नर कैं सुरकी जाई ॥
काको बधू कौनकी बेटी * अबलौं ब्रजमें कबहुं न भेटी ॥
बिन पहिचाने आदर कीन्हों * बैठन को शुभ आसन दीन्हों ॥
अहो महरि पालागन मेरो * हौं आई सुत देखन तेरो ॥
हरि पलनापर मन मुसकाई * यशुमति कछु गृहकाज सिधाईं ॥
दो०-तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पलनाके ढिग जाय ॥
निरखि बदन मुख चूमिकै, लीन्ह उछंग उठाय ॥ २ ॥
सा०-दियो कमल मुख माहिं, विषलपट्यो अस्तन तुरत ॥
पकरि दुहूं करमाहिं, लगे करन पयपान हरि ॥ २ ॥
पयसँग प्राण खिचे जब वाके * ह्वै गये शिथिल अङ्ग तब ताके ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक * सो क्यों छुटे दुष्टकुल घालक ॥
पयसँग प्राथ खैंचि हरि लीन्हा * पठै स्वर्ग जननी गति दीन्हा ॥
परी मृतक ह्वै असुर सु नारी * योजनलों निजतनु बिस्तारी ॥
यशुमति धाय देखि गुहरायो * पलना पर बालक नहिं पायो ॥
त्राहि त्राहि करि ब्रजजन धाये * व्याकुल विपुल नन्दगृह आये ॥
अति व्याकुल यशुमति महतारी * ढूढ़हि श्यामहिं रोवत भारी ॥
हरि ताको छाती लपटाने * करत चरित जो अचरजसाने ॥

ढूँढ़त ढूँढ़त उर पर पाये * ले उठाय माता उर लाये ॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई * जिमि मणि गई भुजगने पाई ॥
सुखित भई सब व्रजकी बाला * कहति बच्यो अतिनँदकोलाला ॥
नंदयशोमति भाग बड़े री * सुतको करबर टरी करेरी ॥
दो०-आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुनार ॥
कपट हेतु नहिं सहिसक्यो, तेहि मारयो करतार ॥ ३ ॥
सो०-कहत यशोमति माइ, पुनि पुनि सबके पाँय परि ॥
उबरयो आजु कन्हाइ, तुम पंचन के पुण्यते ॥ ३ ॥
बड़ो कष्ट यह सुत मैं पायो * आज बिधाता बहुत बचायो ॥
कोउ कहे भागवंत नंदराई * कुलके देवन करी सहाई ॥
कोउ कहैं नेकु मोहिं सुत दे री * देखहुँ मुख मैं पुनि तू ले री ॥
कोउ मुख चूमि बलैया लेई * ले उछंग पुनि यशुदहिं देई ॥
बच्यो कान्ह सब ब्रज सुधि पाई * घरघर बजो अनंद बधाई ॥
तबहिं नन्द गोकुल में आये * देखि पूतनहिं अति भय पाये ॥
जो वसुदेव कहीहो बानी * सो सब मनमें सांची जानी ॥
तहँ सब ब्रजवासी जुरि आये * समाचार सब प्रगट सुनाये ॥
तब सुख पाय गये नंद धामहिं * देख्यो जाय सुवन घनश्यामहिं ॥
बदन विलोकि हरषि उरलाये * बहुत दान दै देव मनाये ॥
तब ब्रजवासी सकल बुलाये * अङ्ग पूतना के कटवाये ॥
बाहर एक ठौर सब कीन्हें * अग्नि लगाय फूंकि तिन्ह दीन्हें ॥
दो०-अति सुगन्ध ता अङ्गते, कीन्हो अग्नि प्रकाश ॥
हरि–अस्पर्श प्रतापते, ब्रज सब भयो सुबास ॥ ४ ॥
सो०-रहे अचंभौ पाय, ब्रजवासी चक्रित सबै ॥
चरण कमल चित लाय, नंद सुवन महिमा गुनत ॥ ४ ॥
हरि रोये माता को कनियाँ * दूध पियायो तब नंदरनियाँ ॥
पुनि पलना पौढ़ाय झुलावै * हुलरावै हुलराय मल्हावै ॥
लालन के हित नींद बुलावै * मधुरे सुरकछु जोइ सोइ गावै ॥
रे लालन को आव निदरिया * तोहिं बुलावतश्याम सुंदरिया ॥

जो करि कपट लालको आवै * ताहि बकीलौं बिधि बिनशावै ।।
अहो देवता या कुल केरे * मैं पूजिहौं कमलपद तेरे ।।
बेगि बड़ा करदे यह बालक * ब्रज जन प्राण पूतना धालक ।।
दुर्नियाके शशिलौं शिशु बाढै * आँवालौं अरिउर नित डाढै ।।
सोवै मेरो बाल कन्हाई * माता मुखकी बलि बलि जाई ।।
सोवत देखि मौन गहि रहई * जागत देखि बहुरि कछु कहई ।।
अंग फरकाय अल्प मुसुकानें * ता छबिकी उपमा को जाने ।।
बार बार शिशुवदन निहारै * यशुमति अपनौ भाग्य विचारै ।।
दो०-हुलरावत गावत मधुर, हरिके बालबिनोद ।।
जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुख लेय यशोद ।। ५ ।।
सो०-कबहूँ लेत उछंग, उर लगाय चूँमत मुखहि ।।
निरखि मनोहर अंग, कबहुँ झुलावत पालनें ।। ५ ।।
दर्शनको नित सुर मुनि आवैं * बालबिनोद निरखि सुख पावैं ।।
कहैं परस्पर सुर नर नारी * हरिके अद्भुत चरित निहारी ।।
अलख अगोचर अज अबिनाशो * पुरुष पुरातन विश्वनिवासी ।।
जाको भेद भाव मुनि जानैं * ब्रह्मा पढि पढि बेद बखानैं ।।
सो हुलरावत नंदकी घरनी * पूरण भई पुरातन करनी ।।
मन अभिलाष बढावति भारी * हुलसत हँसत देत किलकारी ।।
बरषि प्रसून हरषि मनमाहीं * धन्यधन्य कहि ब्रज घर जाहीं ।।
नितनव कौतुक होहिं अकासा * ब्रजवासिनमन अमित हुलासा ।।
यशुदा नित नव लाड लडावैं * निरखिनिरखिब्रजजन सुख पावैं ।।
नित नव मंगल नंदके धामा * नित नव रूप श्याम अभिरामा ।।
भक्तवत्सल भक्तन हितकारी * भक्तन हित नाना तनुधारी ।।
भजत संत यह हृदय बिचारी * जन ब्रजवासी है बलिहारी ।।
दो०-जब हरि मारी पूतना, सुनिडरप्यो नृप कंस ।।
प्रगट भयो व्रज शत्रु मम, यह जानो निःशंस ।। ६ ।।
सो०-बसे तासु उरमाँहि, ताही क्षणते अचल हरि ।।
भूलत इक क्षण नाहिं, शत्रुभाव लाग्यो भजन ।। ६ ।।

अथ कागासुर बधलीला २.

कागासुर नृप निकट बुलायो * ताहि मतो सब कहि समुझायो ॥
आवहु बेगि नंदसुत मारी * करियहु कारज बुद्धि बिचारी ॥
आयसु धरि शिर गर्व बढायो * कागरूप तेहिं असुर बनायो ॥
बेगवंत उठि गोकुल आयो * प्रेरित काल मृत्यु नियरायो ॥
बैठ्यो नंदधामपर आई * पलना पौढे बाल कन्हाई ॥
ताको आवतही हरि जान्यों * काग न होय असुर पहिंचान्यों ॥
यशुदा हरिको सोवत जानी * कछु गृहकारजमें लपटानो ॥
तबहिं असुर पलनापर आयो * चाहत हरिको चौंच चलायो ॥
कंठ पकरि हरि करसों लीन्हो * नेक मरोरि फेंक तेहिं दीन्हो ॥
पर्‌यो जाय नृपपास उतान्यो * यह ब्रजबासी काहु न जान्यो ॥
तुरत कंस तिहिं बूझन धायो * बीते याम बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस यह बाल न होई * है अवतार महाबलि कोई ॥
दो०-एक हातसों पकरि मोहिं, फेंकि दियो तुम पास ॥
ह्वैहै तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हों विश्वास ॥ १ ॥
सो०-अति डरप्यो महिपाल, कागासुरके बचन सुनि ॥
बढ़ सो गयो बिशाल, जम्योजु उरमें शोकतरु ॥ १ ॥

अध शकटासुर वधलीला ३.

सभामध्य सब असुर सुनाई * बार बार शिर धुनि पछिताई ।
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला * ताको अबहोंते यह हाला ।
दनुजसुता पूतना पठाई * ताको इकक्षणमाँझ नशाई ।
कागासुरके ऐसे हाला * सो तो दिनदिन होत बिशाला ।
है कोउ बीर जु ताहि नशावैं * मम कारज करि आप बचावैं ।
ऐसो कौन कहौं मैं जासों * अबको जाय भिरे जो तासों ।
असुरनको यों नृपति सुनायो * शकटासुर मन गर्ब बढायो
उठिकै पान नृपतिसों माँगे * कहा काम यह मेरे आगे
तुम प्रताप तेहि बल मैं मारौं * कहौ तौ सब ब्रजको संहारौं
अंग मर्दि पुनि बीरा दीन्हो * शूर सराहि बिदा पुनि कीन्हो

इहाँ श्याम पलनापर खेलैं * कर गहि पग अँगुठा मुख मेलैं ॥
अपने मन यह करत बिचारा * इह मम पद संतन आधारा ॥
दो०–ये पदपंकज राखि उर, निरखत शंभु सुजान ॥
इनको रस मनमधुप करि, करत निरंतर पान ॥ १ ॥
सो०–पुनि इन पदके ध्यान, मगन ब्रह्मसनकादिमुनि ॥
लक्ष्मी अतिसुख मान, उरते क्षण टारैं नहीं ॥ १ ॥
इन पद–पंकज–रस अनुरागा * मगन सकल सुरनर मुनिनागा ॥
ऐसो धौं का रस इनमाहीं * सो तौ मोहिं बिदित कछु नाहीं ॥
मोकौं यह रस दुर्लभ भारो * देखौं धौं मैं ताहि बिचारो ॥
ताते पदअँगुठा मुख मेलैं * लैलै स्वाद मगन रस खेलैं ॥
ताअंतर शकटासुर आयो * पवनरूप काहु न लखि पायो ॥
भारे शकट नंद गृह केरे * पलनाके ढिग हते घनेरे ॥
तिनमें सो शठ आय समान्यो * नंदसुवन तबहीं यह जान्यो ॥
ताको हरि इक लात चलाई * गिर्‌यो शकट तब अतिघहराई ॥
दनुज निधन काहू नहिं जान्यो * गिर्‌यो शकटयहसबहिन मान्यो ॥
सुनत शब्द अति व्याकुल धाये * नंदादिक सब जुरि तहँ आये ॥
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ * सबके मन अति विस्मय भयऊ ॥
कारण कहा कहैं नर नारी * गिर्‌यो शकट आपुहिते भारी ॥
दो०–पलनाढिग खेलत हते, कछुक गोपके बाल ॥
तिन्हन कह्यो डार्‌यो शकट, पलनाते नंदलाल ॥ २ ॥
सो०–सो नहिं करी प्रतीति, काहूबाल न को कह्यौ ॥
यह तो कछु बिपरीति, भई कुशल अतिश्यामकी ॥ २ ॥
यशुमति अतिमनमन पछिताई * भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई * निरखि नंद पुनिपुनि बलिजाई ॥
मेरे निधनोके धन छैया * लगै मोहि तेरी रोगबलैया ॥
ऐसे बहुविधि लाड़ लड़ाये * पय पियाय पलना पौढाये ॥
मंदमंद कर ठोंकि सुनावै * कछु यक मधुर मधुर सुर गावै ॥
सोवत श्याम सुभग सुन्दर बर * चौंकिचौंकि शिशूदशा प्रगटकर ॥

लिये मात छतियाँ लपटाई * मनु फणिमणि उरमांझदुराई ॥
प्रातनिरखि मुख आनन्द कीनो * चूमि बदन सुतको पय दीनो ॥
कोमलधाम अजिर जब आयो * तब सुत पलनापर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी * नन्दहि सुतके ढिग बैठारी ॥
निरखि नन्द सुत आनन्द भारी * कमलबदन छबि रहे निहारी ॥
चुटकी दै दै सुतहिं खिलावैं * निरखिनिरखिमुखअतिसुखपावैं ॥
दो०-किलकि उठे लखि तात मुख, करपद दृग अतुराय ॥
झपट झटकि उलटे परे, सुख निधि त्रिभुवन राय ॥ ३ ॥
सो०-सो छबि कहिय न जाय, निरखि नन्द टेरत महरि ॥
आपन सकत उठाय, अति कोमल लखि सकुचमन ॥ ३ ॥
नंदहिं टेरत सुनि नन्दरानी * तजी तुरत दधिमथन मथानी ॥
जाने भुहरि गिरे सुखदाई * ताते अति आतुर उठि धाई ॥
नंदहिं देखि हँसत सुतपासा * तब धीरजधरि कियोहुलासा ॥
उलटि पर्यो सुत देख्यो आई * उठि न सकत कर सेज लगाई ॥
सो छबि निरखि मातुसुखपायो * तुरत मुदित उलटाय उठायो ॥
उर लगाय मुख चूँबन लागी * कहत आज मैं भई सभागी ॥
पिठ करोंठ हरि उलटन लागे * डेढमास के भये सभागे ॥
चिरजीबहु मेरे कुँवर कन्हाई * आन करौं मैं अनंद बधाई ॥
नन्दरानी ब्रजनारि बुलाई * यहसुनि सब आनंदकरिधाई ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो * हर्षित सबही मंगल गायो ॥
बांटी घर घर पान मिठाई * नंद सुवन ब्रजजन सुखदाई ॥
धनिधनि ब्रजकी बाल सभागी * हरिके बालचरित अनुरागी ॥
दो०-जननी अति आनन्द भरि, निरखत श्यामल गात ॥
जैसे निधनी पाय धन, मुदित रहत दिन रात ॥ ४ ॥
सो०-धनि धनि ब्रज को बास, धन्य यशोदा धन्य नन्द ॥
धनि ब्रजवासी दास, जिनको मन या रसमगन ॥ ४ ॥

अथ तृणावर्त बध लीला ४

धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई * बाल–चरित-लीला सुखदाई ॥

यशुदा भाग्य न जात बखाने * त्रिभुवनपतिकोसुत करि माने ॥
हरिको गोद लिये पय प्यावै * विविध भाँतिकरिलाड़ लड़ावै ॥
कबहूं हरि-मुखसों मुख लावै * कबहूँ हर्षित कंठ लगावै ॥
मो निधर्नाका धन सुत नान्हा * खेलत हँसत रहौ नित कान्हा ॥
कब धौं मधुरैं बचन कछु कैहैं * कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं ॥
कब नन्दहि बाबा कहि बोलैं * खेलत इत उत आंगन डोलैं ॥
कबधौं तनक तनक कछु खैहैं * अपने कर लै मुखमें नैहैं ॥
कब विधि यह अभिलाष पुरावै * मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकत हरि जननीकीकनियाँ * करत चरित्र मातु सुखदनियाँ ॥
तृणावर्त हरि आवत जाना * पठयो कंस सहित अभिमाना ॥
भये गरुव जननी भर पायो * सहि न सकी तब भुव बैठायो ॥

दो०-आय लगी गृहकाज कछु, राखि अजिर गोपाल ॥
अति प्रचंड बौंडर उठो, गोकुल पुर तिहिं काल ॥ १ ॥
सो०-बात चक्रमिस आय, तृणावर्त पापी असुर ॥
हरिको लियो उठाय, अन्धधुंध गोकुल कियो ॥ १ ॥

हरिको लैके गयो आकासा * धूरि धुन्ध गोकुल चहुंपासा ॥
जहां तहां नर नारि छिपाने * प्रलयकालसम करि सब माने ॥
यशुमति दौरि अजिर में आई * तहां न पाये कुंवर कन्हाई ॥
नंदनंद करि शोर लगायो * तेरो सुत अँध वायु उड़ायो ॥
दौरौ बेगि गुहार लगावो * ब्रजवासिनको टेरि बुलाबो ॥
अति व्याकुल खोजत नन्दरानी * जिततितफिरतभवनबिलखानी ॥
तृणावर्त को हरि यों कीन्हो * ग्रीव लपटि तिहिं नीचे लीन्हो ॥
कठिन शिलापर ताहि गिरायो * ताके उरपर आपुन आयो ॥
चूर चूर करि ताके गाता * कीन्हो भुक्ति-मुक्ति के दाता ॥
धूरि धुन्ध सब तुरत बिनासी * खोजत हरिहिंबिकलब्रजबासी ॥
ब्रजबनितन उपवन में पाये * लिये उठाय कंठ लपटाये ॥
अति आतुर यशुमति पै ल्याई * ह्वै गइ घरघर अनँद बधाई ॥

दो०-लिये धाय कै मायनै, छतियां रही लगाय ॥

नन्द निरखि सुख पायके, अर्पो बहुतिक गाय ॥ २ ॥
सो०-बार बार ब्रजनारि, देंहिं बसन भूषण मगन ॥
जिततित कहैं बिचारि, नयो जन्म हरिको भयो ॥ २ ॥
उबरे श्याम महरि बड़भागी * देखहु धौं कहुँ चोटन लागी ॥
रोग लेउँ बलि जाऊँ कन्हाई * हरि हैं ब्रजके जीवन माई ॥
भली न प्रकृति यशोदा तेरी * इकलो हरिको छांडति है रीं ॥
घरको काज इनहुंते प्यारो * बौरी आजहुं सुरति संभारो ॥
बहुत बचो री आज कन्हाई * भयो पूर्वलो पुण्य सहाई ॥
यशुमति सबसो कहत लजानी * अब मैं सीख तिहारी मानी ॥
मोहि कहाँ हो यह सुख माई * मैं तो रंक परी निधि पाई ॥
अब मैं अपनो लाल चितैहौं * एकौ क्षण काहू न पत्यैहौं ॥
ऐसे कहि सबसों नन्दरानी * कोन्ही बिदा सकल सनमानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै * देखि देखि मुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी * बार बार पछतात बिशेखी ॥
कैंसे बच्यो जाउं बलिहारी * तृणाबर्त्तकी घात निवारी ॥
दो०-ना जानौं किहि पुण्यते, को करिलेत सहाय ॥
कियो काम वह पूतना, तृणावर्त यह आय ॥ ३ ॥
सो०-मातु दुखितजिय जानि, कृपासिंधु बतसल भगत ॥
बाल चरित सुखदानि, करन लगे सुन्दर परम ॥ ३ ॥
खेलत मातु उछंग कन्हाई * करत बाल-लीला सुखदाई ॥
जननी बेसर लटकत देखी * चितवत ताहि बिसारि निमेखी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो * तब जननी कछु बदन उठायो ॥
नहि पहुंचे तब अति उकताई * सो छबिनिरखि मातु बलिजाई ॥
जननो बदन निकट करि लीनो * तबहरिहुलसि किलकहंसिदीनो ॥
बिहंसतचमकि परीं दुध दंतियाँ * जनु युग बिज्जु बीजकीपंतियाँ ॥
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली * प्रेममग्न तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नन्द बुलाए * परमानंद सहित उठि धाए ॥
हो पति सुफल करौ दृग आई * देखहु सुतमुख दंतुलि सुहाई ॥

हर्षित हरिहिं गोद नंद लीन्हो * निरखितातमुखहरिहँसिदीन्हो।।
देखत बदन नयन सियराने * दूधदाँत धौं छबिके दाने ।।
अहो महरि बड़ भाग तुम्हारे * सुफल फले मनकाज हमारे ।।
दो०-कछु दिन घट षट मास के, भये श्याम सुखदान ।।
अन्न पराशन को दिवस, बूझहु बिप्र बिहान ।। ४ ।।
सो०-सुनि बिहँसे नँदराय, भये पराशन योग हरि ।।
प्रेम रह्यो उर छाय, सो सुख कापै जाय कहि ।। ४ ।।

अथ अन्न प्राशन लीला ५

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो * राशि बूझिशुभदिवसधरायो ।।
यशुमति सो दिन आछो पायो * सखिन बोलि शुभगानकरायो।।
युवति महरि को गारी गावैं * और महरको नाम सुनावैं ।।
मणि कंचन के थार मंगाये * भाँति भाँति के बासन आये ।।
नंद घरनि व्रज वधू बुलाई * जे सब अपनी जाति सुधाई ।।
कोउ जिवनार कोउ पकवाना * षटरस के बहु करत बिधाना ।।
बहु प्रकार के व्यंजन ठाने * जिनके स्वाद न जायँ बखाने ।।
अति उज्वल कोमल शुभ नीके * कियोबिबिधबिधिमनहुँअमीके।।
यशुमति नंदहिं बोलि कह्योतब * बोलहु महर जाति अपनी सब।।
आप गये नँद सकल महर घर * ल्याये बोलि सबन आदर कर ।।
बैठारे सब आनि अथाई * भीतर गये आप नंदराई ।।
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये * सुन्दर पट भूषण पहिराये ।।
दो०-तन झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहुं पायं ।।
बार बार मुख निरखि कै, यशुमति लेत बलायँ ।। १ ।।
सो०-लै बैठे नंदराय, जानि शुभ घरो गोद हरि ।।
लोने सदन बुलाय, गोप सकल आनंद भरे ।। १ ।।
बैठे सकल गोपराण आई * अति आनंद मगन नँदराई ।।
कनकथारि भरि खीर धराई * मिसरी घृतमधुडारिमिलाई ।।
लगे नन्द हरि मुख जुठरावन * गोप वधू लागीं सब गावन ।।
आँगन बाजो ब्रिबिध बधाई * शंख निशान भरि सहनाई ।।

षटरस के व्यंजन हैं जेते * हरिके अधर छुवाये तेते ॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये * हरिको यशुमतिपै पहुँचाये ॥
हर्षवंत युवती सचुपाये * लै लै मुख चुम्बति उर लाये ॥
बिप्रन बोलि दक्षिणा दीन्ही * नाना वस्तु निछावरि कीन्ही ॥
गोपन-संग महर नंदराई * बैठे पनवारे परसाई ॥
अतिरुचिसबहिनभोजन कीन्हो * बीरा बदुरि सबनको दीन्हो ॥
गोप बधू सब महरि जिमाई * देकरि पान सुगंध सिंचाई ॥
इहि बिधिसुखबिलसैंब्रजबासी * निरखैं श्याम सुभग शुभराशी ॥
दो०-सुर सिहाहिं ललचाहिं मुनि, लखि ब्रजजनके भाग ॥
धन्य धन्य कहि सुमन झरि, करहिं सहित अनुराग ॥ २ ॥
सो०-नित नव मंगलचार, नितनव लीला श्याम की ॥
को कवि बरणै पार, शेष न पावैं पार जिहिं ॥ २ ॥
नेति नेति जिनको श्रुति गावैं * तिनको ब्रजजन गोद खिलावैं ॥
जो सुख नंद-भवन के माहीं * तीनि लोक महँ सो कहुं नाहीं ॥
नित्य नयो सुख यशुमति पावै * नये नये नित लाड लड़ावै ॥
नयन ओट हरि करत न कैसे * जुगवत रहै फणिक मणि जैसे ॥
निंदत निमिष होत पल ओटा * निरखतही सुख पावत ढोटा ॥
तनक कपोल अधर अरुणारे * तनक तनक कच घूँघर वारे ॥
कुटिल भृकुटि को रेख सुहाई * मसि बिंदुक तापर सुखदाई ॥
नयन नासिका भाल विशाला * कलबल बोलन परम रसाला ॥
अल्प दशन सु चिबुक दरग्रीवा * तनुघनश्याम मृदुल छविसींवा ॥
मातु निरखि नयनन सुख पावै * प्रेमबिबश मतिगति बिसरावै ॥
निरखि रूप जब मन अनुरागै * कहत कहूं मम दीठ न लागै ॥
तब अँचरातर लेत छिपाई * डारत बारि लोन अरु राई ॥
दो०-कबहुं झुलावति पालने, कबहुँ खिलावति गोद ॥
कबहुं सुलावति पलँग पर, यशुदा सहित विनोद ॥ ३ ॥
सो०-नित प्रति ब्रजकी बाम, आवैं यशुमति के सदन ॥
मुदित निरखि घनश्याम, लै लै गोद खिलावहीं ॥ ३ ॥

इहिबिधि बिहरत बाल कन्हाई * कछु दिनमें संतान-सुखदाई ॥
लागे चलन घुटरुवन आँगन * लगे मातुसों माखन माँगन ॥
खेलत मणिमय आँगन माहीं * देखि रहत लखि निजपर छाहीं ॥
कबहुँ तात कहि पकरन धावैं * जानु पाणि विचरत छबि पावैं ॥
कबहूँ किलकि तातमुख पेखें * कबहूँ हँसि जननीतन देखें ॥
कबहुँ बुलाय लेत नँदराई * कबहुँ जननि ढिग आवत धाई ॥
कबहूँ किलकि अनत उठि भाजैं * गिरत परत घुटुवन छबि छाजैं ॥
कबहुँक जात जहाँ बलभाई * खेलत गोपबाल समुदाई ॥
कबहुँ कहत कछु खंडित बाता * सुनत होत सुख पूरण गाता ॥
कहन चहत कछु प्रगट न आवै * माखन माँगत सैन बतावैं ॥
मातु समुझि मथनीते लेई * कछु खवाय कछु कर धरि देई ॥
खेलत खात कान्ह मणि अँगना * इत उत करत घुटरुवन रिंगना ॥
दोहा-कर चूरा पग पैंजनी, तनु रंजित रज पोत ॥
उर हरिनखकटि किंकिणी, मुखमंडित नवनीत ॥ ४ ॥
सो०--होत चकित चितचाय, बजन पैंजनी शब्द सुनि ॥
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि ॥ ४ ॥
खेलत आंगन बालगोविंदा * तात मात उर करत अनंदा ॥
चलत पाणि पगकी परछाँहीं * प्रतिबिंबित मणिआँगनमाँही ॥
मनहुँ सुभगछबि महि तट पाई * जल जलभाजन लेत भराई ॥
किधौं जानि पद कोमल तासन * धरि धरि देत कमलके आसन ॥
निरखि सुभग शोभा सुखदनियाँ * लिये हरषि सादर नँदकनियाँ ॥
नीलजलज तनु सुन्दर श्यामा * सुभग अंग सब छबिके धामा ॥
अरुणतरणि नखज्योति सुहाई * कोमल कमल चरण सुखदाई ॥
रुनुझुनु पैंजनी पाँयन बाजैं * मनसिजयंत्र सुनत सुर लाजैं ॥
कटि किंकिणी जटित खकारी * पीत झुँगलिया सुभग सँवारी ॥
करकमलनि चूरा छबि छाजै * रुचिर बाहु भूषण अतिराजै ॥
कठुला हरिनख कंठ सुहाये * बिचबिच पदिक प्रवाल गुहाये ॥
चारु चिबुकद्युति बर्णि न जाई * गोल कपोल परम छबि छाई ॥

दो०-अरुण अधरमधि दशनद्युति, प्रगट हँसनमें होति ॥
मानहुं सुन्दर तासदन, रूपरत्नकी ज्योति ॥ ५ ॥
सो०-मधुर तोतरे बैन, श्रवण सुखद मति मन हरत ॥
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं ॥ ५ ॥
नासा सुभग कमल दललोचन ※ भाल विशाल तिलक गोरोचन ॥
भ्रुकुटिनिकट मसिबिंदुक लाग्यो ※ जनु अलिशावक सोयहु जाग्यो ॥
लाल चौतनी शीस सुहाई ※ बिबिधरंग मणिगण लटकाई ॥
बालदशाके कच घुंघरारे ※ छिटकि रहे कछु धूमघुसारे ॥
मंजुल तारनकी चपलाई ※ बालदशाको ललित सुहाई ॥
चंद्रबदन सुखसदन कन्हाई ※ निरखि नंद आनँद अधिकाई ॥
बदन चूमि उरसों लपटायो ※ सो सुख कापै जात बतायो ॥
ब्रजयुवती सब चितवत ठाढ़ीं ※ मनहुँ चित्र पुतरी लिख काढ़ीं ॥
प्रेम मगन नँदसुवन निहारैं ※ गृहकारजकी सुरति बिसारैं ॥
ब्रजयुवती हरिसों मन लावें ※ नंदसुवन सबके मन भावें ॥
ब्रजवासी प्रभु सबके नायक ※ प्रेमबिबश जनके सुखदायक ॥
बालचरित लखि सुर सुख पावैं ※ योगदशा सनकादि भुलावैं ॥
दो०-करत बाललीला ललित, परम पुनीत उदार ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरि, संतनके आधार ॥ ६ ॥
सो०-कापै बरन्यो जाय, बालचरित नँदलालको ॥
अल्पहु सकहिं न गाय, शेष कोटि शारद सहस ॥ ६ ॥

अथ नामकरणलीला ६.

इकदिन श्रीबसुदेव बिज्ञानी ※ पठये बोलि गर्गमुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा बिधिवत बैठायो ※ युगपदकमल शीश तब नायो ॥
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई ※ जबसे भयो कंस दुखदाई ॥
तबते गोकुल नंद अवासा ※ जाय रोहिणी कियो निवासा ॥
ताके गर्भ जन्म सुत लीन्हो ※ कंसत्राससों प्रगट न कीन्हों ॥
नाम करण ताको अब ताईं ※ भयो नाहिं तुम बिना गुसाँईं ॥
करिके कृपा तहाँ प्रभु जइये ※ ताको नाम राखिकै ऐये ॥

सुनि बसुदेव वचन सुख पायो * हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो ।।
नंदराय ऋषि आगम जान्यो * अपनो बड़ो भाग्यकरि मान्यो ।।
चरण धोय चरणोदक लीन्हो * अर्घासन अतिहितकरि दीन्हो ।।
बड़ो कृपा कीन्हो ऋषि राजू * मोसम धन्य आन नहिं आजू ।।
अति पुनीत भोजन बनवायो * बिबिधभांतिऋषिरायजिमायो ।।
दो०-बहुरि महर ऋषिरायसों, कह्यो जोरि कर दोय ।।
किहिकारज प्रभु आगमन, कहो कृपा करि सोय ।। १ ।।
सो०-तब बोले ऋषिराज, पठयो है बसुदेव मोहिं ।।
नामकरण के काज, सुभग रोहिणी सुवन को ।। १ ।।
सुनत नन्द अति भये सुखारे * लै आये कनियाँ दोउ बारे ।।
मुनिचरणन मेले दोउ भाई * दई मुदित अशीस ऋषिराई ।।
हरिको छबि अति आनंदकारी * देखि रहे मुनि पलक बिसारी ।।
प्रथम नन्द बलहाथ दिखायो * जन्मदिवस मुनिपास सुनायो ।।
देखि गर्ग उठि कियो विचारा * है यह शिशु सब जगत अधारा ।।
अति शुभ लक्षण बलके धामा * धरयो नाम तिनको बलरामा ।।
बहुरि नन्द चरणन शिर नायौ * कह्यो कि ऋषिमम भागनआयौ ।।
तुम सर्वज्ञ अहो मुनि नाथा * देखिय यह बालकको हाथा ।।
मुनिवर देखत चिह्न भुलाने * प्रेममगन सब तनु पुलकाने ।।
पुनि पुनि हरिको बदननिहारी * बोले मुनिवर सुरति सँभारी ।।
धन्य नन्द धनि महरि यशोदा * धनिधनिधन्यखिलावत गोदा ।।
सुनहु नंद मैं सत्य बखानों * इनकौ तुम सुतकरिमत मानों ।।
दो०-रूप रेखा जाके नहीं, अलख अनादि अनूप ।।
सो भक्त हित अवतर्यो, निज इच्छा अनुरूप ।। २ ।।
सो०-इनते बड़ो न कोय, ये करता सब जगत के ।।
जो ये करैं सो होय, तुमसों हम साँची कहें ।। २ ।।
इनके नाम असित जगमाहीं * तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं ।।
इन कबहूं वसुदेव के धामा * लियो जन्म सुन्दर बर श्यामा ।।
ताते वासुदेव इक नामा * सो सुमिरत नर पावहिंकामा ।।

कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं * जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरु ये जैसे कर्मनि करिहैं * तैसे नाम जगत विस्तरिहैं ॥
दुष्टदलन संतन सुखदाता * भूमिभार हरिहैं दोउ भ्राता ॥
तुम कबहूं तप करि यह मांगा * तुमहिं खिलावैं अतिअनुरागा ॥
ताते सुत करि तुम ये पाये * मतजानों इनको निजजाये ॥
ये अति सुखदाता व्रज केरे * करिहैं ये आनद घनेरे ॥
सुनि ऋषिमुखहरियशसुखराशी * आनंदे सब व्रजके बासी ॥
सुनत नंद यशुमति सुख पायो * मुनि-चरणनको शीश नवायो ॥
बहुत भेट लै आगे राखो * अस्तुति बहुत भाँतिसो भाखो ॥
दो०-बिदा भये ऋषिराज तब, नंदभाग्य बड़ भाखि ॥
चले मधुपुरी को हरषि, हरि मूरति उर राखि ॥ ३ ॥
सो०-कह्यो हरषि ऋषिराय, सब वृत्ताँत बसुदेव को ॥
सुनत बहुत सुख पाय ऋषिहिं पूजि कीन्हे बिदा ॥ ३ ॥
यशुमति समुझि गर्गकी बानी * आपुहिंअतिबड़भागिनिजानी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो * प्रमुदित अस्तनपान करायो ॥
श्याम राम मुख निरखत मोदा * मातु रोहिणी और यशोदा ॥
खंकि खंकि हरि बैठत गोदा * भावत हरिके बाल विनोदा ॥
हरिको गोद लिये हुलरावैं * पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावैं ॥
कबहुँक गावत दै कर तारी * कबहुँ सिखावत चलन मुरारी ॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं * क्रम क्रम ठाढ़े होन सिखावैं ॥
पुनि गहि भुज पग द्वैक चलावैं * लरखरात लखि मनसुख पावैं ॥
मनहीं मन यों बिधिहि मनावैं * कब धौं अपने पांयन धावैं ॥
कबहुंक छोड़ि देत अंगनैया * खेलत मुदित तहाँ दोउ भैया ॥
गौर श्याम बलराम कन्हैया * संगहि संग फिरत दोउ भैया ॥
जिमि बछराके पाछे गैया * ब्रजवासी जन लेत बलैया ॥
दो०-धवल धूरि धूसरित तनु, बाल विभूषण अङ्ग ॥
अंजन रंजित दृग चपल, निरखतजत अनँग ॥ ४ ॥
सो०-बिहरत आनन्दकन्द, मणिमय आंगन नन्द के ॥

यदुकुल कैरबचचंद, दहन दनुज कुलवन्न अनल ॥ ४ ॥
कबहूँ ठाढ़ि होत गहि मैया * कबहूँ डोलत चलत कन्हैया ॥
कुलही चित्र विचित्र झँगुलिया * दमकिउठतद्वै ललितदँतुलिया॥
मुनि मन हरण मंजु मसिबिंदा * सुखद चारु लोचन अरविंदा ॥
कलख बचन तोतरे बोलैं * गहि मणिखंभ डगत डगडोलैं ॥
निरखत झुक झुकात प्रति बिंबै * देत परम सुख पितु अरु अंबै ॥
मथति जहां दधि नन्दकि रानी * होत खरे तहँ ढेकि मथानी ॥
मात तनक दधि देत खवाई * लेत प्रीतिसों सो मुख नाई ॥
क्षीर समुद्र जासु रजधानी * तनक दहीसों तिन रुचि मानी ॥
तनकसो बदन तनकसो दँतियां * तनकसे अधर तनकसी बतिया ॥
तनक बदन दधि तनककपोलनि * तनक हँसन मनहरन अमोलनि ॥
तनक तनक कर तनकै माखन * तनक अँगुरियां तनकै चाखन ॥
तनक तनक भुज चरण सुहाए * तनक रूपही काम लजाए ॥
दो०-तनक बिलोकन जासुकी, सकल भुवन बिस्तार ॥
तनक सुने यश होत है, तनक सिधु संसार ॥ ५ ॥
सो०-तनक रहत नहिं पाप, तनक नाम जाको लियो ॥
मिटत सकल भवताप, तनक कृपा जापै करहिं ॥ ५ ॥

अथ बरस गाँठ लीला ७

बरस गांठि लालन की आई * द्विषट मासके भये कन्हाई ॥
फूली फिरति यशोमति माई * घर घरते सब बधू बुलाई ॥
प्रमुदित मंगल गान करायो * आनन्द उमंगे तूर बजायो ॥
आंगन सकल सुगंध लिपायो * रचि रचि मोतिनचौंक पुरायो ॥
फूले फिरत नन्द सुख भारी * लियो गोपगण सकल हंकारी ॥
द्वारन बन्दनवार बंधाये * ध्वज पताकरचिबिबिध बनाये ॥
पान फूल फल डार रसाला * हरदि दूब दधि अक्षत माला ॥
मंगल द्रव्य सकल मंगाई * बहु मेवा बहुभांति मिठाई ॥
यशुमति कान्ह उबटि अन्हवाये * अंग पोंछि भूषण पहिराये ॥
टोपी जरकसि पीत झंगुलिया * दमकत द्वै द्वै चारु दंतुलिया ॥

कठुला कंठ बघनखा नीको * कियो भाल केसरको टीको ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी * बरणि न जाय बदनछबि रूरी ॥
दो०-नयन आंजि भृकुटी निकट, कियो मातु मसिबिंद ॥
कर शृङ्गार हरिमुख निरखि, चूम्यो मुख अरबिंद ॥ १ ॥
सो०-लिये गोद सुखकंद, नंद बोलि यशुमति कह्यो ॥
बोलहु भूसुर वृंद, लग्नघरी आवत चली ॥ १ ॥
काहेको अब गहरु लगाबत * बिप्र बेग काहे न बुलावत ॥
नन्द क्षिप्र बर बिप्र बुलाये * पद पखारि आसन बैठाये ॥
लै उछंग लालन नँदराई * बैठे हरषि चौकपर जाई ॥
बेद मंत्र विधि सहित पढ़ावत * बरसगाँठि सुखसहित जुरावत ॥
ब्रजनारी सब बनि बनि आवैं * मंगल तिलक श्याम को ल्यावैं ॥
गावैं मंगल कोकिल बैंनी * हरि दर्शन प्यासी मृग नैनी ॥
तिलक सबनि मोहनको दीन्हो * देखि देखि मुख अतिसुख लीन्हो ॥
बिप्र बहुत दक्षिणा पाई * बाँटी सबको पान मिठाई ॥
धन मणि चीरनिछावरि कीन्हे * बार बार नेगिनको दीन्हे ॥
तब सारीं पँच रंग मंगाई * हर्षित महरि बधुनि पहिराई ॥
देत अशीस सकल अति मोदा * लेति यशोमति भरिभरि गोदा ॥
नित नव गोकुल होति बधाई * सदा श्याम जनके सुखदाई ॥
दो०-धन्य यशोमति धन्य नंद, धनि धनि बाल विनोद ॥
धन्य सुमन जिन जननके, रहत सुधारस ओद ॥ २ ॥
सो०-धनि धनि ब्रजकी बाल, कहिकहि सुरबर्षहिं सुमन ॥
धन्य धन्य नँदलाल, दैत्यदलन सज्जन सुखद ॥ २ ॥
कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी * होति मुदित लखिनंद किघरनी ॥
करत हुती अभिलाषा जोई * निरखत अपने नयनन सोई ॥
रुनक झुनक नूपर वर बाजैं * डगमगात डोलत छबि छाजैं ॥
बैठि जात पुनि उठत तुरतहीं * देहरिलौं चलि जात फुरतहीं ॥
कम अब ये राखत अटकाई * गिरि २ परत नाँघि नहिं जाई ॥
कीन्ही तीन पैंड़ जिन वसुधा * देहरि ताहि नँघावत यशुधा ॥

करि पाणि क्रम २ उतरावै * लखिसुर मुनिमनबिस्मयआवै ॥
कोटि ब्रह्माण्ड रचे पलमाहीं * पलमें बहुरि मिटावै ताहीं ॥
गहि खिलाबत यशुमति ग्वारी * नाना बिधिसुख करि २ भारी ॥
कबहूं दै करतारि नचावै * कबहूँ मधुर मधुर सुर गावै ॥
देखि श्याम जननीकी ताई * आपुन गावत तार बजाई ॥
पग नूपुर कटि किंकिणि कूजै * लखिछबिमनअभिलाषा पूजै ॥
दो०-शोभित कठुला कण्ठ कल, उर हरिनख छबिराश ॥
मनहुं श्याम घनमें कियो, नव राशि बिमल प्रकाश ॥ ३ ॥
सो०-जननि कहत बलि जाउं, नचहु लेहु नवनीत सत ॥
धरत रुनक झुन पाउँ, त्रिभुवन पति नवनीतहित ॥ ३ ॥
बोलन लगे श्याम कलबानी * कछुक तोतरी कछुक समानी ॥
नन्दहिं तात यशोदहिं मैया * बलसों दाऊ कहत कन्हैया ॥
प्रातहिं उठि माँगत दोउ सैया * माखन रोटी दे री मैया ॥
अँचरा गहैं न मानत बाता * अति आतुर ठुनकतदोउभ्राता ॥
सुनि सुनि मधुर बचन सुख पावैं * ताते जननी गहरु लगावैं ॥
जननि मध्य सन्मुख संकर्षन * पाछैं ठाढ़े सुभग श्याम तन ॥
मनौं सरस्वति सँग युग पक्षी * राजहंस अरु मोर बिचक्षी ॥
कबरी गही श्याम खिजलाई * मुक्ता माँग गहे बलभाई ॥
मनहुँ दुहुंन निजनिज भख लीनो * जननीसों झगरो यह कीनो ॥
नंद देखि हँसि हँसि गये लोटी * यशुमति मुदित कर्मकी मोटी ॥
कत हौ आरि करत गहि चोटी * यहै बात मोहन तेरि खोटी ॥
जो चाहौ सो लेउ दोउ भैया * करहु कलेऊ मैं बलि जैया ॥
दो०-दियो कलेऊ मात उठि, माखन रोटी हाथ ॥
खात खवावत बालकन, सकल विश्वके नाथ ॥ ४ ॥
सो०-जिहिं ध्यावै योगीश, सनक सनंदन आदि मुनि ॥
कौतुक निधिजगदीश, करत चरित संतन सुखद ॥ ४ ॥

अथ ब्राह्मण लीला ८

चलत लाल पैंजनिके चायन * पुनि २ हर्षित लखि २ पायन ॥

बिबिध ग्वालबालन सँग लीने * डगमगात डोलत रँग भीने
कबहूं दौरि द्वारलौं जाहीं * कबहूं भजि आवै घर माहीं
ब्राह्मण एक नंद के आयो * महा भाग्य हरि भक्त सुहायो
गोपन को सो पूज्य कहायो * पुत्र जन्म सुनिकै उठि धायो
यशुमति देखि अनंद बढ़ायो * आदर करि भीतर बैठायो
पाँय धोय जल शीश चढ़ायो * पाक करन को भवन लिपायो
अहो विप्र बिनती सुनि लीजै * जो भावै सो भोजन कीजै
धेनु दुहाय दूध ले आई * पाँडे रुचिकरि खीर बनाई
घृत मिष्टान्न क्षीर मिश्रित कर * कृष्ण भोगहित थारपर सिधर
वेद मंत्र पढ़िकै हरि ध्यायौ * नयन मूँदिकै ध्यान लगायो
नयन उघारि विप्र जो देख्यो * श्यामहिं आगे जेंवत पेख्यो
दो०-अहो यशोदा आपने, सुत कृत देखौ आय ॥
सिद्ध पाक सब आयकै, डार्‌यो कान्ह जुठाय ॥ १
सो०-महरि जोरि युगपानि, बिनय करी द्विजराजसन ॥
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक बिधि कीजिये ॥ १
बहुरि दूध मिष्टान मँगायो * ब्राह्मण जोफिरि पाक बनायो
जबहीं ध्यान धर्‌यो मन लाई * तबहीं लागे खान कन्हाई
ऐसेहि विप्र न जेंवन पावै * बार बार हरि छूछू आवैं
तब यशुमति हरिसों रिसियाई * कतहि अंचगरी करत कन्हाई
मैं इच्छा करि बिप्र जिमाऊं * बार बार भोजन बनवाऊं
यह अपने ठाकुरहि जिमावै * ताको तू गोपाल खिजावै
मैया मोहि जनि दोष लगावै * बार बार यह मोहि बुलावैं
नयन मूंदि कर जोरि मनावै * बहुत भाँतिकरि विनय सुनावैं
लै लै नाम कहत प्रभु ऐसे * खीर खाँड़ यह भोग लगैये
तब मैं रहिन सकौं उठि धाऊं * याको दीनो भोजन पाऊं
प्रेमसहित जब मोहिं बुलावैं * तब नहिं रहत मोहिं बनि आवैं
सुनत गूढ़ मृदु हरिके बयना * खुलि गये विप्र हृदयके नयना
दो०-धनि धनि गोकुल नंद धनि, धन्य यशोदा माय ॥

धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, जहँ प्रगटे हरि आय ॥ २ ॥
सो०-सफल जन्म प्रभु आज, प्रगट भयो सब सुकृत फल ॥
दीन बन्धु ब्रजराज, दियो दर्श मोहि कृपा करि ॥ २ ॥
बार बार कहि नन्दके आंगन * लोटत द्विज आनंदमगन मन ॥
मैं अपराध कियो बिनजाने * को जानै किहि बेष समाने ॥
भक्त हेतु बश रहत सदाई * यहै नाथ तुम्हरी बड़ियाई ॥
जे जे शरण तुम्हारी आये * ते ते भये पुनीत सुहाये ॥
पतित उधारन यश विस्तारा * अघजारन इक नाम तुम्हारा ॥
देह धरत गोद्विज हित लागी * पायों दरश भयो बड़ भागी ॥
हितकी चितकी मानन हारे * सबके जियकी जानन हारे ॥
शरणशरणप्रभु शरण तुम्हारी * दीनदयालु कृपालु मुरारी ॥
हँसत श्याम यशुमतिढिग ठाढ़े * प्रेम मगन आनन्द बाढ़े ॥
निजजनजानि कृपा अति कीन्ही * प्रेम भक्ति हरि ताको दीन्ही ॥
प्रेम मगन द्विज बारहिं बारा * कहि जय जय जय नंदकुमारा ॥
पुनि पुनि पुलकित देत अशीशा * बिदा भयो धरको द्विजईशा ॥
दो०-देखि चरित यशुमति चकित, परी बिप्रके पाँय ॥
दिये रत्न बहु दक्षिणा, चले हर्षि द्विजराय ॥ ३ ॥
सो०-यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्ह कौ ॥
चितै बन्दन बलिजाय, आनन्द निधि सुखके सदन ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रप्रस्ताव लीला ६

शोभा मेरे हरिपै सोहै * मैं बलि बलि पटतरको को है ॥
मेरो श्याम मनोहर जीवन * बिहँसिश्याम लागे पय पीवन ॥
ठाढ़ी अजिर यशोदा रानी * गोदी लिये श्याम सुखदानी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन * लगी तात को मात दिखावन ॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत * अतिशीत दृगताप नशावत ॥
चितै रहे हरि इकटक ताही * करते निकट बुलावत वाही ॥
मैया यह मीठो कै खारो * देखत लगत मोहि अतिप्यारो ॥
देखि मँगाय निकट मैं लैहौं * लागी भूख चंद्र मैं खैहौं ॥

देहि बेग मैं बहुत भुखानो * माँगतही माँगत बिरुझानो
यशुमति हँसति करत पछतायो * काहेको मैं चन्द्र दिखायो
रोवत है हरि बिनही जानै * अबधौं कैसे करिकै मानै
बिबिधभाँतिकर हरिहिंभुलावै * आन बतावै आन दिखावै
दो०-कहति यशोदा कौन बिधि, समझाऊं अब कान्ह ॥
भूलि दिखायो चन्द्र मैं, ताहि कहत हरिखान ॥ १
सो०-अनहोनी क्यों होय तात, सुनिय यह बात कहुं ॥
याहि खात नहिं कोय, चन्द्र खिलौना जगतको ॥ १
यहै देत नित माखन मोको * क्षण क्षण तात देत सो तोको
जो तुम श्याम चन्द्रको खैहौ * बहुरौ फिर माखन कहँ पैहौ
देखत रहौ खिलौना चन्दा * अरि नहिं कीजै बालगोविंदा
मधु मेवा पकवान मिठाई * जो भावै सो लेहु कन्हाई
पालागों हठ अधिक न कीजै * मैं बलि रिसही रिस तन छीजै
खसिखसि कान्ह परत कनियाँते * दे शशि कहत नंदरनियांते
यशुमति कहति कहाधौं कीजै * मांगत चन्द्र कहांते दीजै
तब यशुमति इक जलपुट लीनो * करमें लै तोंहि ऊंचो कीनो
ऐसे कहि श्यामहि बहंकावै * आव चंद्र तोंहि लाल बुलावै
याही में तू तनु धरि आवै * तोंहि देखि लालन सुख पावै
हाथ लिये तोंहि खेलत रहि है * नेक नहीं धरणीपर धरि है
जलपुट आनि धरणिपर राख्यो * गहिआन्योशशिजननीभाख्यो
दो०-लहि लाल यह चन्द्र मैं, लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतने के लिये, तेरो श्याम बलाय ॥ २
सो०-देखहु श्याम निहारि, या भाजन में निकट शशि ॥
करी इतो तुम आरि, जाकारण सुन्दर सुवन ॥ २
ताहि देखिमुसक्यात मनोहर * बारबार डारत दोऊ कर
चन्दा पकरत जलके माहीं * आवत कछुक हाथमें नाहीं
तब जलपुट के नीचे देखे * तहाँ चंद्र प्रति बिंब न पेखे
देखत हँसो सकल ब्रजनारी * मगन बालछबिलखि महतारी

तबहिं श्यामकछु हँसि मुसुकाने * बहुरो मातासों बिरुझाने ।।
ल्योंगो री मा चन्दा ल्योंगो * वाहो अपने हाथ गहौंगो ।।
यह तौ कलमलात जल माहीं * मेरे करमें आवत नाहीं ।।
बाहिर निकट देखियत वाही * कहो तौ मैं गहिल्यावौं ताही ।।
कहत यशोमति सुनहु कन्हाई * तब मुखलखि सकुचत उडुराई ।।
तुम तेहि पकरन चहत गुपाला * ताते शशि भजि गयो पताला ।।
अब तुमते शशि डरपत भारी * कहतअहो हरि शरण तुम्हारी ।।
बिरुझाने सोये दै तारी * लिये लाय छतियाँ महतारी ।।
दो०-लै पौढाये शेजपर, हरिको यशुमति माय ।।
अति बिरुझाने आज हरि, यह कहि कहि पछिताय ।। ३ ।।
सो०-करसो ठोकि सुवाय, मधुरे सुर गावत कछुक ।।
उठि बैठे अतुराय, चट पटाय हरि चौंकिकै ।। ३ ।।

अथ पुरातन कथा लीला १०

पौढ़ौ लाल कहत महतारी * कहौं कथा इक श्रवणन प्यारी ।।
हर्षे यह सुनि मन बनवारी * पौढि गये हंसि देत हुँकारी ।।
नगर एक रमणीक सुहावन * नाम अवध अतिसुन्दर पाबन ।।
बड़े महल तहँ अगम अटारी * सुन्दरबिशद चारुगच ढारीं ।।
बहुत गली पुर बीच सुहाई * रहैं सदा सब सुगन्ध सिंचाई ।।
भाँति भाँति बहु हाट बजारू * अति सुन्दर जनुविश्व भृङ्गारू ।।
तहाँ नृपति दशरथ रजधानी * तिनके नारि तीन पटरानी ।।
कौशल्या केकई सुमित्रा * तिन जन्मे सुत चारि पवित्रा ।।
राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता * चारों अति सुन्दर गुणवन्ता ।।
तिनमें एक राम ब्रतधारी * अति सुन्दर जनके हितकारी ।।
विश्वा मित्र एक ऋषिराई * तिनहिं सतावैं निशिचर आई ।।
तिन नृपसों द्वै सुत लिये माँगी * अपनी रक्षाके हित लागी ।।
दो०-राम लषण ऋषि लै गये, दनुज हते तिन जाय ।।
ऋषि दीनी बिद्या बहुत, तिनको अति सुख पाय ।। १ ।।
सो०-तहाँ जनक इक भूप, धनुष यज्ञ ताने रच्यो ।।

कन्या तासु अनूप, जुरे तहाँ भूपति अमित ।। १
ऋषि लैंगये कुँवर तंह दोऊ * जनकराय सनमाने सोऊ।
धनुष तोरि भूपन मुख मारी * राम बिबाही जनककुमारी।
चारहु कुंबर ब्याह तहँ आये * भये अवधपुर अनन्द बधाये।
रामहि देन लगे नृप राजू * सज्यो सकल अभिषेक समाजू।
ताही समय कैकयी रानी *चेरी की मतिसों बौरानी।
बचन माँगि राजासों लीनो *बनको बास रामको दीनो।
सुनि पितु बचन धर्म हितकारी * नारी सहित भये बनचारी।
तिन्है चलत भ्राता संग लाग्यो * उनके जात पिता तनु त्याग्यो।
चित्रकूट गये भरत मिलन जब * दैं पदपांवरि कृपा करी तब।
युबती हेतु कपट मृग मारा * राजिव लोचन राम उदारा।
रावण हरण कियो तब नारी * सुनत श्यामघन नींद बिसारी।
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनु देहू *देख भयो यशुदहिं सन्देहू।
छंद—संदेह जननीं मन भयो हरि चौंकि धौं काहे पर्‍यो ।।
कहुँ दीठ खेलन में लगी धौं स्वपन में कान्हर डर्‍यो ।।
बहु भाँति देव मनाय पछि पढ़ि मंत्र दोष निबारई ।।
लै पियति पानी बारि पुनि पुनि राइ लौन उतारई ।। १।
दो०-साँझ हिते बिरुझाय हरि, करी चन्द्रहित आरि ।।
झझक उठ्यो धौ तांहिते, रह्यो सुरत उर धारि ।। २।
सो०-बड़ भागिनी नंदनारि, महिमा बेद न कहि सकैं ।।
हरिको बदन निहारि, बिसरावति त्रयताप दुख ।। २।

अथ कर्ण छेदन लीला ११

प्रात नन्द उठि हरि पहँ आये * मुख छबि देखन को अतुराये।
निशि के द्वन्द्व नयन अतिआरत* हरुवैं करि मुखते पट टारत।
स्वच्छ सेजते बदन प्रकाश्यो * द्वन्द्वतिमिर नयननिको नाश्यो।
मनहुँ मथत पयोनिधि उड़ुराई * फेन फोरिकैं दई दिखाई।
धाये ब्रजजन चतुर चकोरा * इकटक रहे बदन शशि ओरा।
फूलि कुमुदनासी महतारी * कहत उठहु सुत मैं बलिहारी।

माखन रोटी अरु मधु मेवा * जो भावै सो करहु कलेबा ॥
सद माखन मिसरी तब आनो * कछु खवाय धोयो मुख पानी ॥
देखि बदन छबि महरि सिहानो * कहति नंदसों यशुमति रानो ॥
कर्ण छेद अब हरिको कोजै * कुण्डल सहित देखि मुख लीजै ॥
बोलि बिप्र शुभ दिवस मनायो * जातिकुटुम्बसब न्यौतिबुलायो ॥
कुल व्यवहार कियो सब साजा * बिबिधभाँति बहु बाजन बाजा ॥

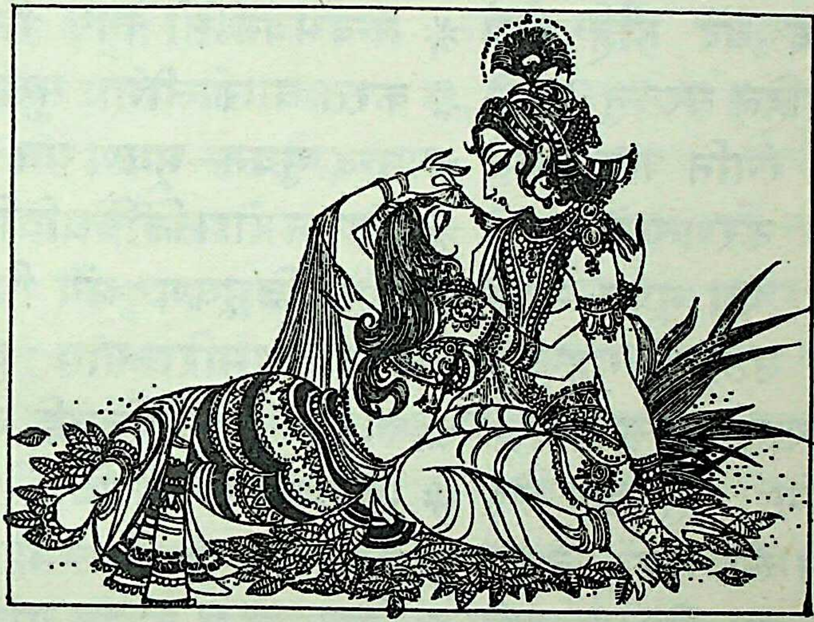

छंद—बाजी बधाई बिबिध आँगन नारि मंगल गावहीं ॥
सुर निरखि अति हर्षि सुमननबर्षि गोकुल छावहीं ॥
करिप्रथममुण्डन श्यामको, पुनि कर्ण बेधनबिधि लई॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुड भेली दई ॥ २ ॥
हँसतसुरगणसहितबिधिहरि मातउर अतिधुकधुकी ॥
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकल नहिं सनमुखतकी ॥
भरिसीं करो चनदेतश्रवणनिनिकटकरिअतिचातुरी ॥
द्वे दुर मँगाये कनक के कह कहौं छेदन आतुरी ॥ ३ ॥
देखि रोवत जननि लीन्हों बिहंसि तबही झुकि अली ॥
हंसत नन्द सब युवति गावत झमकि भीतर लेचली ॥
कहति सुरबनिता परस्पर धन्य धनि ब्रज भामिनी ॥
नहिन इनकी किंकरीसम हम सकल सुर कामिनी ॥ ४ ॥

दो०-करति निछावर व्रज बधू, धन मणि भूषण चीर ॥
सकल अशीसत नन्दसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥ १ ॥
सो०-पहिरावत नन्दराय, ब्रज युवतिन भूषण बसन ॥
आनन्द उर न समाय, मनहुं उमँगि चहुंदिशि चल्यो ॥ १ ॥
नितही नव मुद मङ्गल ताके * मङ्गल मूरति हरि सुत जाके ॥
जिहि बिधि तात मात सुख पावैं * सुखनिधान सोई चरित उपावैं ॥
जाको भेद बेद नहिं पावै * नन्दभवन सो कान छिदावै ॥
निज भक्तनहित नरतनु धारी * करत बाल लीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंगनि कछु गावैं * नन्द भुवन–भूषण मन भावैं ॥
तनक तनक चरणनसो नाचैं * मनमन रीझ बिबिधबिधिराचैं ॥
मन्द मन्द पग नूपुर बाजैं * बाल विभूषण अंग बिराजैं ॥
कबहूँ भुज उठाय गुहरावैं * धौरी धूमरि गाय बुलावैं ॥
कबहूं माखन लै मुख नावैं * कबहुं खंब प्रतिबिंबहि खवावैं ॥
माखन मांगि दुहूँ कर लेई * एक भाग प्रतिबिंबहि देई ॥
तासों कहत लेत क्यों नाहीं * डारिदेत काहें महिमाहीं ॥
दुरि देखत यशुमति महतारी * उर आनन्द करति अतिभारी ॥
दो०-हरखि जननि मुख चुम्बिकै, लीनो गोद उठाय ॥
परमानन्द सुमगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥ २ ॥
सो०-कौतुक निधि भगवान, करत चरित नितनित नये ॥
सुन्दर श्याम सुजान, ब्रजवासिन के प्रेम बश ॥ २ ॥

अथ माटी खान लीला १२

खेलत श्याम धाम के द्वारे * सोहत व्रजलरिका सँगवारे ॥
अति अज्ञान सबनि मति भोरी * सबको प्रीति श्याम सँग जोरी ॥
एक बैस सब परम सुहाये * करत बाललीला सचुपाये ॥
गावत हँसत देत किलकारी * लखि लखि सुख पावत महतारी ॥
निरखि रूप सब व्रजजन मोहैं * कोटि काम नहिं पटतर सोहैं ॥
तनु पुलकि अतिगद्‌गद्‌बानी * निरखिमनहिंमनम्हहरिसिहानी ॥
तबहिं श्याम घन माटी खाई * यशुमति देखि सांटि लै धाई ॥

पकरी भुजा श्यामकी जाई * कहति कहा यह करत कन्हाई ।।
उगिलहु बेगि बदनते माटी * नाहों तो मारति हौं सांटी ।।
सब दिन झुंठवत हौ सब ग्वालन * मोसों अब कह कहिहौ लालन।।
तब मोहन कीनी लँगराई * कहत कि मैं माटी नहिं खाई ।।
झुंठहि मोकों लोग लगावै * माटी मोको नेक न भावै ।।
दो०-झुंठ कहत तोसों सबै, माटी मोहिं न सुहाय ।।
नहिं माने जो मात तू, दिखरावूं मुँह बाय ।। १ ।।
सो०-दीनो बदन उघारि, नयन मूँदि माता निकट ।।
देखि चकित नन्दनारि, तनुकी सुरत रही नहीं ।। १ ।।
दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं * नभ शशि रवि तारा इकठाही ।।
सर सागर सरिता गिरि कानन * सुर सुरनायक शिव चतुरानन ।।
सकल लोक लोकप यम काला * महि मंडल सब अगजबजाला ।।
देखि चरित यशुमति अकुलानी * करते साँटिगिरति नहिं जानी।।
बदन मूंदि तब हरि दृग खोले * डरसमेत मातासों बोले ।।
मैया मैं माटी नहिं खाई * यशुमति चकित रही अरगाई ।।
कहति नन्दसों यशुदा रानी * हरिको कथा न जात बखानी ।।
माटी मिस हरि मुख वायो * तीन लोक तामहिं दिखरायो ।।
स्वर्ग पताल धरणि बन बागा * सुरनर असुर बिपुल खगनागा।।
अपर सृष्टि कहि जात सु नाहीं * देखी सकल बदनके माहीं ।।
मोको परत साँच सब जानी * जो कछु कही गर्ग-मुख-बानी ।।
चकित नन्द सुनि अचरज बानी * मम मन करत बिचारबिनानी।।
दो०-नन्द कहत सुनि बावरी, हरि अति कोमल गात ।।
लै साँटी धावत बृथा, पुनि पाछे पछतात ।। २ ।।
सो०-अचरज तेरी बात, को जाने देख्यो कहा ।।
कुशल रहौ दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत ।। २ ।।
कहति श्याम सों यशुमति मैया * मैं तेरी बलि हारि कन्हैया ।।
मैं अजान रिस बीच न जानी * वृथा श्याम तुमको रिसियानी।।
जरहु हाथ जिन साँटि उठाई * बरहु आँखि जिन दीठ दिखाई ।।

मधु मेबा दधि माखन छाटी * खात लाल तुम काहे माटी ॥
सिगरोइ दूध पियो तुम न्यारे * बलको बाँटि न देहु पियारे ॥
कहत नन्दसों यशुमति मैया * दुहो लालको मोटी गैया ॥
कजरी को पय पियो गुपाला * जो तेरी चोटी बढ़हि विशाला ॥
सब लरकन में तो तनुमाहीं * बेगबैंस बल श्री अधिकाहीं ॥
मात–बचन सुनिकै अनुरागे * ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे ॥
खिन पीबत खिन चोटी टोवैं * देखि देखि मुखहँसति यशोवैं ॥
मैया कब गढ़ँगी चोटी * यह तो है अबहींलौं छोटी ॥
तू जो कहतिहि बलिलौं व्हैहै * छोडत गुहत गोडलौं जैहै ॥
दो०-किती बार भय पय पियत, चोटी बड़ी न होहि ॥
कहि कहि झूठी बात नित दूध पियावति मोहिं ॥ ३ ॥
सो०-सुनि सुनि भोरी वात, सुन्दर श्याम सुजानकी ॥
यशुमति मन न अघात, हँसि लीने उर लाय उर ॥ ३ ॥

अथ शालिग्राम लीला १३

भोरहि महर यमुना तट धाये * दर्शन करि अतिही सुख पाये ॥
करि असनान नन्द घर आये * पूजाहित यमुना जल लाये ॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता * प्रभु निमित्त आने अति प्रीता ॥
पाँय धोय प्रभु मन्दिर आये * करी दण्डवत प्रेम बढ़ाये ॥
अस्थल लोपि पात्र सब धोये * पूजा के सब साज संजोये ॥
छाप तिलक सब अंग सवांरे * प्रभु पूजा बिधि करन संभारे ॥
कुंवर कान्ह खेलत ते आये * देखत पूजा बिधि चित लाये ॥
बिधिवत देव नन्द अन्हवाये * चन्दन तुलसी फूल चढ़ाये ॥
पट अन्तर दै भोग लगायो * आरतिकरिचरणन शिरनायो ॥
तबहींश्याम बिहंसिउठि बोले * कहत तातासों वचन अमोले ॥
बाबा तुम जो भोग लगायो * सो तो देव कछू नहिं खायो ॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई * चितै रहे मुख हंसि नन्दराई ॥
दो०-कहत नन्द सुख पायके, यों नहिं कहिये तात ॥
देवन को कर जोरिये, कुशल रहै जिहिं मात ॥ १ ॥

सो०-हंसत श्याम सुखदानि, नन्द स्वरूप न जानही ।।
रह्यो तिनहिं सुत मानि, करत ब्रह्मलीला सगुण ।। १ ।।
देखत जननी तह दुरि ठाढ़ी * मगन प्रेमरस आनन्द बाढ़ी ।।
बैठे नन्द समाधि लगाई * तब यह लीला रची कन्हाई ।।
शालिग्राम मेलि मुख माही * बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ।।
ध्यान बिसर्जन करि नन्द जागे * शालिग्राम न देखे आगे ।।
खोजत चकित चित नन्दराई * इष्टदेव किन लिये चुराई ।।
इत उत खोंजत पावत नाहीं * भयो बड़ो अचरज मन माहीं ।।
बिहंसत हरिके मुखमें जाने * देखत महरि महर मुसकाने ।।
सुनहु तात जननी बलिजाई * उगिलहु शालिग्राम कन्हाई ।।
मुखते तबहिं काढ़ि ब्रज नाथा * दियो देवता नन्द के हाथा ।।
हरिके चरित कहत नहिं आवैं * बालविनोद मोद उपजावैं ।।
लखि लखि मातपिता पुलकाहीं * देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ।।
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी * बिहरत जहां ब्रह्म अबिनासी ।।
दो०-परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप ।।
सो ब्रज भक्तन प्रेमबश बिहरत बालक रूप ।। २ ।।
सो०-प्रेम मगन पितु मातु, निशिदिन जात न जानहीं ।।
क्यों हूं मन न अघात, सुनत बचन देखत दरश ।। २ ।।

अथ अन्हवावन लीला १४

यशुमतिश्यामहिंकह्योन्हवावन * सुनतहि मचलिपरे मनभावन ।।
उबटन लै आगे गहि बाहीं * लोटि गये हरि मानत नाहीं ।।
तब यशुमति बहुभाँति दुलारे * मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे ।।
उबटन पाछे धरे चुराई * फुसलावत सुतश्याम कन्हाई ।।
मैं बलि ऐसी आरि न कीजै * जो चाहे सो मोपै लीजै ।।
कताहु लाल रोवै दुख पावै * ऐसो को जो तोहिं खिजावै ।।
अतिरिसते मैं बलि तनु छीजै * सुन्दर कोमल अंग पसीजै ।।
बरजतही बरजत बिरुझाने * करिकरि क्रोध मनहिं अकुलाने ।।
धरत धरत धरणी पर लोटैं * गहि माताके चोर नझोटैं ।।

गहि गहि अंगके भूषण तोरैं * दधिमाखनके भाजन फोरैं ॥
धर्‌यो तपत जल जननी पासै * मानत नाहिं ताहि लखि त्रासै ॥
महरि बाँह धरिकै तब आने * जबहीं तेल उबटने साने ॥
दो०-तब दुचितो करि मातुको, गिरत परत गये भाज ॥
नेक निकट लागे नहीं, मनमोहन व्रजराज ॥ १ ॥
सो०-तब चुचकारे मात, साम भेद कहि बचन ॥
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवहु तौ जानिहौं ॥ १ ॥
तुम मेरी रिसको हरि जानौ * मोको नोकी बिधि पहिचानौ ॥
जो नहिं आवहु मदनगोपाला * आज तुम्हें तो बाँधौं लाला ॥
तबहिं नंद उतते चलि आये * कहत हरिहिकिन अतिहिखिजाये
लै कनियाँ उरसो लपटाये * बदन चूमि यशुमतिपहिं ल्याये ॥
कत खिजवत मोहनहिं अयानी * लै हिय लाय लिये नँदरानी ॥
क्यौंहूँ यत्न न करि जब पाये * तब उबटन हरिके अँग लाये ॥
पुनि तातै जल न्हान समोयो * दियो न्हवाय बदनशशि धोयो ॥
सरस बसन लैकै तनु पोंछ्‌यो * बहुरौ बदनसरोज अँगोछ्‌यो ॥
अंजन दोऊ दृग भर दीनो * भ्रू पर चारु चखोड़ा कीनो ॥
सब अँगके भूषण मँगवाये * क्रम क्रम लालनको पहिराये ॥
ऐसी रिस नहिं कीजै कान्हा * अब कछु खाउ जाउँ बलिनान्हा ॥
तब तुतरात कह्यो का है री * जो मोकों भावै सो दै री ॥
दो०-कहत जननि या बचनपर, मैया बलिबलि जाय ॥
जोइ जोइ भावे लालको, सोइ सोइ लालै खाय ॥ २ ॥
सो०-किये अमित पकवान, मैं अपने सुतके लिये ॥
सो सब कहौं बखान, जो भावै सो लीजिये ॥ २ ॥
सदमाखन अरु दही सजायो * तुम्हरेहित मैं औटि जमायो ॥
खोवा औट्‌यौ मधुर मलाई * तापर मिसरी पीस मिलाई ॥
अरप्योसर अतिसरस सँवारी * तामनिं सौंठ मिरच रुचकारी ॥
खीर बरा करिकै दधि बोरे * मानहुँ चंद्र अमीमधु खोरे ॥
खुरमा और जलेबी बोरी * जिहिं जेंवत रुचि होति न थोरी ॥

अरु लडुवा बहु भाँति सवाँरे * जे मुख मेलत कोमल प्यारे ॥
अरु गुंझा बहु पूरन पूरे * अति सुवास उज्ज्वल अतिरूरे ॥
पापर घेवर घीउ चभोरे * मिश्री पीस तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधुसाने * तप्त तुरत करि रोहिणि आने ॥
अतिही सुन्दर सरस अन्दर से * घृत दधि मधुमिल स्वादनसरसे॥
सरस सँवारी दाल मसूरी * अरु कीन्हो सीरा घनपूरी ॥
पूरी सुनिकै हिय हरि हरषे * तव जेंवन पर मन करि करषे ॥
दो०-सुनत यशोदा तुरतही, लै आई हरषाय ॥
बलदाऊ को टेरिकै, लीन्हो नन्द बुलाय ॥ ३ ॥
सो०-षटरस के परकार, जे बरणे यशुदा प्रथम ॥
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलवीर दोउ ॥ ३ ॥
जेंवत एक थार दोउ बीरा * हरषि श्याम रुच राख्यो सीरा॥
तब शीतल जल लियो मँगाई * भरि झारी यशुमति लै आई ॥
जल अंचवावै नयन जुड़ाने * दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हंसि चूर भराये * तनक तनक कछु मुख पखराये॥
रचि रचि उजरे पान खवाये * अतिहो अधर अरुण ह्वै आये ॥
ठाढ़े तहां सकल ब्रज दासा * लागि रहे जूंठन की आसा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो * उबरयो सो ब्रजदासनन पायो॥
सखा बृन्द प्रिय द्वार पुकारे * खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश जस चात्रिकदासा * हरिय बरषिनवघनछबि पासा॥
त्रिनय बचन सुनि हर्षि कृपाला * चले मनोहर चाल रसाला ॥
लघुलघुललितचरन करलाला * कमल नयन उर बाहु बिशाला॥
चन्द्रबदन तन छबि घनश्यामा * अङ्ग अङ्ग भूषण अभिरामा ॥
दो०-निरखत छबि नन्दलाल की, थकित सकल सुर बृन्द ॥
निहचल चखन चकोर जनु, तकत शरद कों चन्द ॥ ४ ॥
सो०-अति आनन्द उमंग, मिले सखन को जाय हरि ॥
ब्रीडत कोटि अनंग, क्रीडत बातक छंद संग ॥ ४ ॥
खेलन दूरि गये कहुँ कान्हा * सखन संग धावत हैं नान्हा ॥

बहुत अबेर भई घनश्यामहिं * खेलतते आये नहिं धामहिं ॥
नन्दहिं तात मातु मोहिं कानन * योंही सुनत सुहात जु आनन ॥
मन अवसेर करत महतारी * पलकओट रहिसकत न न्यारो ॥
देखत द्वार गली में ठाढ़ी * सुत मुख दरश लालसा बाढ़ी ॥
ततक्षण हरि खेलनते आये * दौरि मातु लै कण्ठ लगाये ॥
खेलन दूर जात कत कान्हा * मैं बलि तुम अबहीं अतिनान्हा ॥
आज एक बन हाऊ आयो * तुम नहिं जानत मैं सुनि पायो ॥
इक लरिका भजि आयो तबहीं * सो वह मोसोंकहि गयो अबहीं ॥
वह तौ पकरि लेत है तिनको * लरिका करि जानत है जिनको ॥
चलहु भाजि चलिये निजधामहिं * यहसुनि टेरिलियेबलिरामहिं ॥
कनियाँ कर लै आई धामहिं * बड़भागिनियशुमति सुतश्यामहिं

दो०-रूपरेख जाको नहीं, बिधि हर अन्त न पाय ॥
हाऊसों डरपाय तिहिं, यशुमति स्वाय ॥ ५ ॥

सो०-भाववश्य भगवान, भावहि हरिको पाइये ॥
भक्तन के सुखदान, तिहिं तैंसे जैसे भजै ॥ ५ ॥

व्रजबीथिन खेलत मनमोहन * हलधर सुबल सुदामा गोहन ॥
और गोप बालक बहु बारे * एक बैस सब हरिके प्यारे ॥
बालबिनोद मोद मन दीने * नाना रंग करत रस भीने ॥
तारी हाथ मारि सब भाजैं * धावन धरत होड़ करि बाजैं ॥
बरजत बलि हरि तू मत दौरे * लगिहै चोट गोड कहुँ तोरै ॥
तब हरि कह्यो दौरि मैं जानौं * मेरो गात बहुत बलबानौं ।
है श्रीदामा जोड़ हमारी * तासों मारि भजौं मैं तारी ।
बोलि उठो तबहीं श्रीदामा * तारी मारि भजहु तुम श्यामा ।
तबही श्याम भजे दै तारी * धर्‌यो धाम श्रीदाम हँकारी ।
तबहरि कह्यो बदौं नहिं तोहीं * ठाढ़ो भयो छुयो तब मोहीं ।
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने * कहत सखा सबश्य मखिझाने ।
तब तौ कह्यो दौरि मैं जानौं * हारे श्याम बुरो अब मानौ ।

दो०-बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप ॥

हार जीत जानें नहीं, लरिकन लावत पाप ॥ ६ ॥
सो०-एहैं तनुके श्याम, झूँठहिं झगरत सखन सँग ॥
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास छत जननि ॥ ६ ॥
मैं बलि क्यौं उदास घर आयो * कौने मेरो लाल खिझायो ॥
मैया मोंहि दाऊ दुख दीन्हो * मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहा करो या रिसके मारे * मैं नहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनि पुनि कहत कौन तेरी माता * को तेरो तात कौन तेरोभ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी * तुम तौ कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये * लै वसुदेब इहाँ निशि आये ॥
मोल कछू बसुदेबहिं दीन्हो * ताके पलटे तुमको लीन्हो ॥
ऐसेकहि कहि मोंहि खिझावैं * अरूसब लरिकन यहो सिखावैं ॥
मोहो को तू मारन धावै * दाउहिं कबहुँन खीज डरावै ॥
रोष सहित सुनि बतियां भोरी * बढत मात उर प्रीति न थोरी ॥
सुनहु श्याम बलराम चबाई * झूठहि तोंहिं खिझावत जाई ॥
मोंहि गोधन की सोंह कन्हैया * तू मेरो सुत मैं तेरी मैया ॥
दो०-पाछे ठाढ़ सुनत सब, नन्द श्याम की बात ॥
लीन्हे गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्याम लगात ॥ ७ ॥
सो०-बलको धरियो नन्द, सुनि मन हरषे श्याम तन ॥
लीलानट ब्रजचन्द, करत चरित जनमन हरन ॥ ७ ॥

अथ भोजन लीला १५

भोजन समय तहां नन्दराई * करे सुरत बलराम कन्हाई ॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया * मो संग जेवैं आय कन्हैया ॥
खेलत बहुत बेर भइ आजू * उन बिन भोजन कौने काज़ू ॥
यशुमति सुनत चली अतुराई * ब्रज घर घर टेरत दोउ भाई ॥
कहत बोलिलावहुकोउश्यामहिं * खेलत हैं धौं काके धामहिं ॥
जेंबन सिद्ध सिरात धरोई * उन बिन नन्द न जेंवत सोई ॥
ऐसे जननी के सुन बैना * आये खेलन–ते सुखदैना ॥
चलहु तात मैया बलिजाई * जेंवन को बैठे नन्दराई ॥

परस्यो थाल धरयो मग हेरति * मैं तब हौंते तुमको टेरति ॥
दौरि चलहु आगे गोपाला * छांड़ि देहु गति मन्द मराला ॥
चलहु बेगि दौरौ दोउ भाई * सो राजा जो आगे जाई ॥
जो जैहैं पहिले बलिभाई * तौहँसिह तोहिं ग्वाल कन्हाई ॥
दो०-आये दौरे श्याम तब, तुरतहिं पाँय पखार ॥
बैठे जेंवन नन्द के, संग दोउ सुकुमार ॥ १ ॥
सो०-कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाँणि दुहुँ ॥
सुभग सांवरे गात, बाल केलि रस वश खरे ॥ १ ॥
बड़ौ कौर मेलत मुख भीतर * आय गई तब मिरच दशनतर ॥
तीक्षण लगी नयन भरि आये * रोवत बाहरको उठि धाये ॥
रोहिणि फूंक देत मुखमाहीं * लिय लगाय उरसों गहि बाहीं ॥
मधुर ग्रास लै तात निहौरै * लै बैठे फुसलाय अँकोरै ॥
जेंवत कान्ह नन्दको कनियां * छबिनिरखत ठाढ़ीनंदरनियां ॥
बेसन के व्यंजन बिधि नाना * बरा बरी बहु शाक बिधाना ॥
मूंग ठरहरी हींग लगाई * दाल चनाको पीत सुहाई ॥
राज भोग को भात पसायो * उज्ज्वल कोमल सुगंधसुहायो ॥
बेसन मिली कनक की रोटी * सद घृत बोरी पतरी छोटी ॥
आँब आदि बहु भांति संधाने * दोउ भैया जेंवत रुचि माने ॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रित कर * लेत श्याम सुन्दर अपने कर ॥
आपुन खात नन्द मुख नावैं * सो छबि कहत कौनपै आवैं ॥
दो०-भोजन कर अचमन कियो, ले झारी नन्दराय ॥
अपने करसों श्याम को, दीनो बदन धुवाय ॥ २ ॥
सो०-को करि सकै बखान, भाग्य यशोमति नन्द के ॥
ब्रह्म रह्यो रूचिमान, बालरूप जिनके सदन ॥ २ ॥
बैठे श्याम मातकी कनियां * पियत दूध सुन्दर सुखदनियां ॥
बार बार यशुमति समुझावै * हरिसों अस्तनपान छुड़ावै ॥
कहति श्याम तू भयो सयानो * मेरो कह्यो लाल अब मानो ॥
दूध पियत देखत लरिका सब * हंसततोहिं नहि लाजलगतअब ।

जैहैं दाँत बिगरि सब तेरे * अजहूं छाँड़ि कह्यो करि मेरे ।।
सुनत बचन मुसकाय कन्हाई * अँचरातर मुख लियो छिपाई ।।
आये तबहीं सखा बुलावन * मात कह्यो खेलहु मनभावन ।।
यह सुनि हर्षि उठे बनवारी * मांगत दे चौगान कहाँ री ।।
मथनी के पाछे कहि दीन्हो * हर्षित श्याम तहाँ ते लीन्हो ।।
ले चौगान बढ़ा करि आगे * चले सखन देखत अनुरागे ।।
कहत सखनसों हरि हर्षाई * खेलहुगे किहिं ठौहर भाई ।।
खेलत बनिहैं घोष निकासू * हरषि चले सब सहित हुलासू ।।
दो०-कान्हर हलधर बीर दोउ, भये भुजाबर जोर ।।
श्रीदामा अरुसुबल मिलि, जुरे सखा इकठौर ।। ३ ।।
सो०-और सखन के वृन्द, बाँटि लिये जुरि जोट जुट ।।
अति आनन्द नन्दनन्द, दियो बटा ढरकाय महिं ।। ३ ।।

अथ कन्दुक खेलन लीला १६

आप अपनि बातनि लै जाहीं * एक एकसन पावत नाहीं ।।
इतते उत उतते इत घेरैं * बटा मारि चौगाननि फेरैं ।।
दौरत हँसत लसत उठि मारैं * आप आपनी जोत बिचारैं ।।
जम्यो खेल अतिमगन कन्हाई * देखत सुरगण रहे भुलाई ।।
जीतत सखा श्याम जब जाने * करत खेल कछु तब मचलाने ।।
कहत सखा सब सुनहु गुपाला * रुँगटैयाकों कौन खियाला ।।
श्रीदामासों हौ तुम हारे * झूठी सौंहैं खात ललारे ।।
खेलत में को काहि भुलैयां * कहा भयो जो नन्द गुसैयां ।।
ताते तुम गर्वित मन महियां * तनकबसत हमतुम्हरी छहियाँ ।।
अति अधिकार जनावत ताते * तुम्हरे अधिक गाय कछु जाते ।।
अब नहिं खेलहिं संग तुम्हारे * भये सखा सबरिस करि न्यारे ।।
खेल्यो चाहत त्रिभुवन राई * दियो दाँव तब पाठ चढ़ाई ।।
दो०-जाके गुणगण अगम अति, निगम न पावत ओर ।।
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग, बंधे प्रेमकी डोर ।। ३ ।।
सो०-खेलत भई अबेर, जननी टेरति श्याम को ।।

आवत धाम सबेर, साँझसमय नहिं खेलिये ।। १ ।।
साँझ भई घर अवहु प्यारे * बहुरि खेलियो होत सबारे ।।
आपहि जाय बाँह गहि आने * सुभग श्यामतनु रज लपटाने ।।
बोलिलिये यशुमति बलरामहिं * लै आई दोऊ सुत धामहिं ।।
धूरि झारि तातो जल ल्याई * तेल परसि दीन्हे अन्हवाई ।।
सरस बसन तनु पोंछि सँवारे * लै गोदी भीतर पगधारे ।
करहु बियारू कछु दोउ भाई * पुनि तुमको राखौं पौढाई ।।
सोरा पूरी सरस सँवारी * और धरी मेवा बहु न्यारी ।।
दीन्हो परसि कनकको थारी * बल मोहन दोउकरत त्रियारी ।।
मिसरी मिलै दूध औटाई * लै आई तब रोहिणि माई ।।
प्रेमसहितदोउ जननि जिमावत * देखि देखि छबि नयन जुडावत ।।
खात खात मोहन अलसाने * बारहिंबार श्याम जमुहाने ।।
आरससों कर कौर उठावत * नयननींद झमकिझुकिआवत ।।
दो०-उठउ लाल तब मात कहि, धोये मुख अरबिंद ।।
पौढाये लै सेजपर, बल अरु बालगोविंद ।। २ ।।
सो०-सोये बालमुकुन्द, दोउ भैया सुख सेजपर ।।
जननी अति आनन्द, सोचति गुण गोपाल के ।। २ ।।
माखन मोहन को प्रिय लागै * भूख्यो क्षण न रहत जब जागै ।।
ताहि बधौं जो गहरु लगावै * नहिं माने जो इन्द्र मनावै ।।
मैं इह जानति बात श्याम की * दृग मोचै नवनीत खानकी ।।
ले मथनी दधि धर्‍यो बिलोई * जब लगिलालन उठहिं न सोई ।।
भोर भयो जागहु नन्दनन्दन * संग सखा ठाढे जगबंदन ।।
सुरभी पै हित बच्छ पियाये * पक्षी तरु तजि चहुं दिशि धाये ।।
चन्द्र मलिन उडुगणद्युतिनाशी * निशिनिवड़ोरबिकिरणप्रकाशी ।।
कुमुदनि सकुची बारिज फूले * गुंजत मधुप लता लगि झूले ।।
दरशन देहु मुदित नरनारी * ब्रजबासी प्रभु जनसुखकारी ।।
सुनि जननी के वचन रसाला * खोले दृगराजीव विशाला ।।
हँसत उठे संतन सुखदाई * मुखछबि देखि मातु बलि जाई ।।

हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे * मैं माखन मथि धर्यो सबारे ।।
दो०-रोटी अरु माखन तनक, दै री मा मोहिं हाथ ।।
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ ।। ३ ।।
सो०-करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि ।।
त्रिभुवन पति सुखधाम, चारि पदारथ हाथ जिहि ।। ३ ।।

अथ माखन चोरी लीला १७

मैया री मोहिं माखन भावै * और कछू अति रूचि नहिं आवै ।।
मधु मेवा पकवान मिठाई * सो मोकों नेकहु न सुहाई ।।
ब्रज युवती इक पाछे ठाढ़ी * हरिके वचन सुनत रति बाढ़ी ।।
मनमन कहत कबहुं अपने घर * माखन खात लखौं सुन्दर बर ।।
बैठे जाय मथनियाँ पाहीं * अपने कर लै काढिके खाही ।।
मैं बर देखहुँ कहूँ छपाई * कैसे मोघर जाहिं कन्हाई ।।
हरि अन्तरयामी सब जानैं * ग्वालिन मनकी प्रीति पिछानैं ।।
गये श्याम ता ग्वालिनि के घर * ठाढ़े भये जाय द्वारे पर ।।
इत उत देखत कोऊ नाहीं * तब पैठे ताके घर माहीं ।।
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो * परममुदित अतिही सुखमान्यो ।।
रही दबकि दुरि दीठ लगाई * हरि बैठे मथनी ढिग जाई ।।
देखी माखन भरी कटोरी * खान लगे करि अति मति भोरी ।।
दो०-चितैरहे मणि खंभमें, हरि अपनी प्रतिछाँहि ।।
जानि तीसरों ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाँहि ।। १ ।।
सो०-तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ।।
हम तुम एक समान, भलो बन्यो हैं संग अब ।। १ ।।
प्रथम आज मैं चोरी आयो * तुमको देखि बहुत सुख पायो ।।
अब तुम मेरे सँग नित आवो * यह काहूसों मतहि जनावो ।।
सुनि सुनि हरिके मुखकी बानी * उमँगि हँसीब्रजयुवतिसयानी ।।
श्याम चोंकि सुख तासु निहारी * भाजि चले व्रजखोर मुरारी ।।
अति आनन्द ग्वालिन मनमाहीं * पूँछत सखी परस्पर ताहीं ।।
पायो आज पर्यो कछु तैं री * कहा तोहिं अति आनन्द है री ।।

गद्गद् कण्ठ पुलकतनु तेरो * सो किन कहै कहा सुख हेरो ॥
तनु न्यारो जिय एक हमारो * हमें तुम्हें कछु भेद न न्यारो ॥
सुनहु सुखो मैं तोहि बताऊँ * जो सुख भयो सो तोहिं सुनाऊँ ॥
यशुमति सुत सुन्दर सुन गोरी * आयो आज हमारे चोरी ॥
खंभ निकट मथनो को माखन * लियोनिकासलग्योतिहिं चाखन ॥
मैं भीतर दुरि देखन लागी * वा मोहन छबिपर अनुरागी ॥
दो०-देखि खंभ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे श्याम ॥
अर्ध भाग तिहिं देन कहिं, प्रगट करो जिन नाम ॥ २ ॥
सो०-तब न रह्यो मोहिं धीर, हँसी मनोहर बचन सुन ॥
कहा कहौं तुहिं बीर, मन हरि लीन्हो सांवरे ॥ २ ॥
मोहिं देखि तब गयो पराई * सखिसोंछबिकछु बरणि नजाई ॥
सुनि हरिचरित सखी अनुरागी * अति सुख पाय प्रेमरस पागी ॥
कहति कि मैं देखन नहिं पायो * सोइ अभिलाष तासु उर छायो ।
हरि अन्तरयामी सब जानैं * सबके मनकी रुचि पहिचानैं ।
इहि बिधि माखन प्रथम चुरायो * कीन्हो ग्वालिन को मन भायो ।
भक्त बत्सल सन्तन सुखकारी * पुनि मनमहँ यह बात विचारी ।
अब सब व्रजघर माखन खाऊँ * माखन चोर नाम कहबाऊँ ।
बालरूप मोहिं यशुमति जाने * ग्वालिनि प्रेम भक्ति करिमाने ।
मित्र भाव करि ग्वाल वखानैं * प्रीति रीति सब मोसों मानैं ।
इनहीं के हित गोकुल आयो * करौं सबन के मनको भायो ।
यह विचारिहरि निजउरठाना * भक्त कृपा अंबुधि भगवाना ।
बालसखा सब निकट बुलाई * तनसों हँसि २ कहत कन्हाई ।
दो०-माखन खैये चोरिकै, सब व्रज घर घर जाय ॥
कीजे बाल विहार यों, मेरे मन यह आय ॥ ३
सो०-सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब ॥
भली कहीं नन्दलाल, तुम बिन यह बुधि को करै ॥ ३
चले सखन लै माखन चोरी * एक बयस सबहिन मति भोरी
देख्यो झांकि झरोखा ओरी * मथति एक ग्वालनि दधि गोरी

धर्‌यो मठा मथनी मैं जानो * ऊपर माखन है लपटानो ॥
ग्वालनि गई कमोरी मांगन * पाई घात तबहिं सुन्दर घन ॥
सखन समेत ताहि घर आये * दधि माखन सबहिन मिलखाये॥
छूछो मटकी छाँड़ि सिधाये * हँसत हँसत सब बाहर आये ॥
आय गई द्वारे सोई बाला * घरसों निकसत देखे ग्वाला ॥
माखन कर मुख दधि लपटान्यो * ग्वालनियहकछुभेद न जान्यो ॥
देखि रही हँसि मुखको शोभा * निरखि रूप लाग्यो मन लोभा॥
चमकि गये हरि सखन समेता * तबही ग्वालनि गई निकेता ॥
देखी जाय मथनियां खाली * चकितविलोकतइतउत ग्वाली॥
मन हर लीनो मदन गुपाला * जान्यो ग्वालनि हरिके ख्याला॥
दो०-घर घर प्रगटी बात यह, सखा बृन्द लै साथ॥
चोरी माखन खात हैं, नन्द सुवन व्रजनाथ ॥ ४ ॥
सो०-सबके मन अभिलाख, चोरी करन न पाइये ॥
धरिये माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये ॥ ४ ॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी * सब मोहनके रूप भुलानी ॥
माखन खाने देहु गोपालहिं * मतिबरजोकोउश्यामतमालहिं॥
तुम जानत हरि कछू न जाने * वे मोहन हैं परम सयाने ॥
कोऊ कहत पकरि जो पाऊं * तो अपने गहि कण्ठ लगाऊं ॥
एक कहत जो मेरे आवैं * तो माखन हम हरिहि खवावैं ॥
कहत एक जो मैं गहि पाऊं * तो हरि को बहु नाच नचाऊं ॥
कोउ कहति जो हरिको पैये * तो गहि यशुमति पै लै जैये ॥
इक कह आज हमारे आये * द्वारहिते मोहिं देखि पराये ॥
इहिबिधिप्रेममगन सब ग्वाला * सबके हृदय ध्यान नन्दलाला ॥
निशिबासर नहिं नेक बिसारैं * मिलिबे कारण बुद्धि बिचारैं ॥
गये श्याम सूने ग्वालनि घर * सखा सबै ठाढ़े द्वारे पर ॥
देखो भीतर जाय कन्हाई * दधि अरु माखन धर्‌यो बनाई ॥
दो०-सद माखन देख्यो धरो, हरषे श्याम सुजान ॥
सखा बुलाये सैन दै, लै लै लागे खान ॥ ५ ॥

सो०-इत उत चितवत जात, कछु डरसो मनमें किये ।।
बांटत दधि अरु खात, उठि उठि झाँकत द्वारतन ।। ५
देखत सो ग्वालनि अन्तर करि * मगनभईउरआनन्द भरि भरि
लीन्ही बोलि सखी ढिगबासी * तिन्हैं दिखावत हरि सुखरासी
देखि सखी शोभा अति बाढी * उठि अवलोक ओट ह्वै ठाढी
किहिबिधिसों दधि लेत कन्हाई * सखन देत करु आपुन खाई
बदन समीप पाणि अति राजै * माखन सहित महाछबि छाजै
लै उपहार जलज मनु आई * मिलत चन्द्रसों बैर बिहाई
गिरि गिरि परत बदनते ऊपर * द्रव दधि सुतके बुन्द सुभगतर
मनौ प्रलयजल आगम हरषत * इन्दु सुधाके कणका बरषत
मुख छबि देखि थकित ब्रजनारी * कहत न बनै रहीं उर धारी
बालबिनोद मोद मद फूलीं * भई शिथिल सबतनुसुधिभूलीं
बरजनको अस्फुरत न बानी * रही बिचारि बिचारि सयानी
गये ठगौरी लाय कन्हाई * रही ठगीसी सब सुख पाई
दो०-विश्व भरण पोषण करन, कल्पतरोवर नाम ।।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम बिबश सुखधाम ।। ६
सो०-नित उठि करत बिहार, ब्रज में घरघर सांवरो ।।
ब्रजजन प्राण अधार, माखन चोरी ब्याज करि ।। ६
श्याम एक ग्वालिनि घर आये * चोरी करत पकरि तिन पाये
कहति बहुत तुम करी ढिठाई * अब तो घात परे हो आई
निशिबासर मोहिंबहुतखिजायो * दधि माखन सब मेरो खायो
दोउ भुजपकरि कह्यो कितजैहौ * दधि माखन दै छूटन पैहौ
ताके मुख तनु चितै कन्हाई * बोले मधुर बचन मुसकाई
तेरो सौं मैं छियो न राई * सखा खाय सब गये पराई
चारु चितौन चित उरझान्यो * उरते रोष जात नहिं जान्यो
सुनत मनोहर हरिकी बतियां * लिये लगाय ग्वालिनी छतियां
बैठौ श्याम जाउँ बलिहारी * मैं ल्याऊं दधि खाहु बिहारी
हरिकों लेन चली दधि गोरी * हरि हंसि निकसिगयेब्रजखोरी

रहो ठगोसी ग्वालिनि भोरी * मन लै गये साँवरे चोरी ॥
हरि गये और ग्वालिनीके घर * देख्यो जाय न कोऊ भीतर ॥
दो०-माखन काढ़ि निशंक ह्वै, लागे खान कन्हाइ ॥
ग्वालिनि आवत जानि घर, तब उठि रहे छिपाइ ॥ ७ ॥
सो०-ग्वालिनि घरमें आय, मथनी ढिग ठाढी भई ॥
भाजन रीतो पाय, चकित बिलोकत चहुँदिशा ॥ ७ ॥
अबहीं गई आइ इन पाँयन * आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहाँ हरि पाये * पकरो भुजा भये मन भाये ॥
तब हरि कहि निजनाम लजाये * नयन सरोज कछुक भरि आये ॥
देखि बदन छबि आनन्द हीके * दीन्हे जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालि मन परम हुलासा * कहन चली यशुमतिके पासा ॥
जो तुम सुनहु यशोमति माई * हँसिहौ सुनि हरिकी लरिकाई ॥
आज गये हरि मो घर चोरी * देखा माखन भरी कमोरी ॥
मैं गइ आय अचानक जबहीं * रहे छिपाय सकुचिकै तबहीं ॥
जब मैं कह्यो भवन में चोरी * तबमोंहिकहिनिजनामनिहोरी ॥
लगे लेन लोचन भरि आँसू * तब मैं कानन तोरी सासू ॥
सुनत श्यामसबरोहिणि कनियां * सकुचत हंसत मंद मुसकनियां ॥
ग्वालिनिहंसिहरितन डरवायो * माखनचोर पकरि मैं पायो ॥
दो०-करौं नोयकी दाँवरी, बांधौं अपने धाम ॥
लायलिये उर रोहिणीं, बाँध सकै को श्याम ॥ ८ ॥
सो०-यशुमति उर आनन्द, वाल चरित सुनि श्याम के ॥
कहति सुनौ नन्दनन्दन, ऐसो काम न करहु सुत ॥ ८ ॥
पुनि इक गृह गये नन्द दुलारे * देखि फिरे तह ग्वाल दुबारे ॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई * फाँदि परे पिछवारे जाई ॥
सूनो भवन कहूँ कोउ नाहीं * मानहुँ इनको राज सदाहीं ॥
भांड़े मूंदत धरत उतारत * दधि अरु माखन दूध निहारत ॥
रैन जमायो गोरस पायो * लगे खान मनो आप जमायो ॥
आहट सुनि युवती घर आई * झलकत देखे कुँवर कन्हाई ॥

अँधियारे घर श्याम गये दुरि * दधि मटकी ढिग बैठि रहे मुरि।
सकल जीव-उर-अंतरबासी * तहां कछुक चेटक परकासी।
ग्वालनि हरिको इत उत हेरै * पावत नाहीं धाम अन्धेरै।
कहत अबहिं देख्यो नन्दनन्दन * कितहि गयो पछितात मनहिमन।
परि गये दीठ ओट मथनी के * सुन्दर श्याम प्राणनाथ नीके।
तबहीं ग्वालिनि भुज गहिलीन्हो * कहत तुम्हैं अब तौ मैं चीन्हो।
दो०-कहौ कहा चाहत फिरत, धाम अन्धेरे माहिं ॥
बूझे बदन दुरावत, सूधे चितवत नाहिं ॥ ९।
सो०-दधि मथनी में हाथ, कह उतर बनायहो ॥
सखा नहीं कोउ साथ, कहिये अब कैसो बनै ॥ ९।
मैं जान्यो यह घर है मेरो * ता धोखे हित ह्वै गयो फेरो।
दृष्टि परी चींटी दधि माहीं * काढ़न लग्यो तिन्हैं इहिं ठाहीं।
सुनि मृदुबचन ग्वालि मुसकानी * तुम हौ अतिनागर हम जानी।
उर लगाय मुख चुम्बन कीन्हो * बिधिहि मनाय बिदा करि दीन्हो।
हरिदर्शन बिन क्षण न सुहाई * उरहन मिस यशुमति पहँ आई।
सुनहु महरि निजसुत की करनी * करत अचकरी जात न बरनी।
नितप्रति करत दूध-दधि-हानी * कहँ लगि करैं कान नन्दरानी।
मैं अपने मन्दिर अन्धियारे * माखन धरो दुराय सवारे।
सोई ढूंढ़ि लियो हरि आई * अतिनिशंक नहिं नेक डराई।
बूझे उत्तर तुरत बनायो * चींटी काढ़न को कर नायो।
सुनि ग्वालनि के वचन सयानो * हंसिकैं बोध कियो नन्दरानी।
यशुमति कहति श्यामसों प्यारे * पर घर काहे जात ललारे।
दो०-मम लोचन आगे सदा, खेलहु सखन बुलाय ॥
तुम्हरो बाल बिनोद लखि, मेरो हियो सिराय ॥ १०।
सो०-मोपै लीजै श्याम, दधि माखन मेवा मधुर ॥
सब कछु तेरे धाम, परघर जाय बलाय तब ॥ १०।
माखन मांग्यो कुँवर कन्हाई * मुदित मात तुरतहि लै आई।
लगी खवावन हिय हरषानी * श्याम कह्यो खैहैं निजपानी।

दियो हाथ धरि भरिके दोना * चले खात खेलत हरि लोना ॥
सखन संग खेलत बनमाली * यमुना जाति लखी इक ग्वाली ॥
आप चले ताके घरमाहीं * पूँछत बात कौन है काहीं ॥
लखे तहाँ शिशु दोय अयाने * भोर देखते रोय डराने ॥
इत उत देखो गोरस नाहीं * ऊँचे धर्‌यो सिकहरन माहीं ॥
तब मनमोहन रचो उपाई * आनि तहाँ ऊखल औंधाई ॥
तापर एक सखा बैठारी * ताके कंध चढ़े बनवारी ॥
ऐसी बिधि करि गोरस पायो * दधिमाखन सबही मिल खायो ॥
दूध डारि बछरू सब छोरे * दिये निकासि बनहिकी ओरे ॥
मही छिरकि लरिकन डरपाई * चले अग्र करि सखा कन्हाई ॥
दो०-ग्वालनि आवति देखिकै, सखा गये सब दौरि ॥
फँसि भीतर मोहन परे, रोकि लई तिन पौरि ॥ ११ ॥
सो०-रोषभरी मुख बात, प्रेम भर्‌यो अंतरहियो ॥
कहत महरिके तात, जात कहाँ दधि चोरि अब ॥ ११ ॥
तब हरि ताके मुखतन देखो * कीन्हे उर नखघात बिशेखो ॥
अतिरिस ग्वालनि मन उपजाई * दोउ भुज पकरि महरिपै ल्याई ॥
मानौ महरि कह्यो तुम मेरो * अति उत्पात करत सुत तेरो ॥
राख्यो गोरस छिके चढ़ाई * ग्वालकंध चढ़ि लिये कन्हाई ॥
माखन खाय दूध ढरकायो * मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
और कहत सकुचतहौं बाता * कहा दिखाऊँ तुमको गाता ॥
हैं गुण बड़े श्यामके माई * इहाँ सकुचि लरिका ह्वै जाई ॥
बरजति क्यों नहिं सुतहि पनेरो * कहा कहौं नितप्रतिको झेरो ॥
जो कछु राखैं दूर दुराई * तहाँ तहाँते लेत चुराई ॥
तापर देत बछरुअन छोरी * बन बन फिरत बही चहुँओरी ॥
चोरी अधिक चतुर बनवारी * सुनहु महरि हम इनते हारी ॥
कहँलग इनके गुणन बखानौं * तुम इनको सूधो मति जानौ ॥
दो०-सुनत ग्वालिनीके बचन, यशुमति हरितन देखि ॥
भयसकोचयुत मुखनिरखि, कोमलललित बिशेखि ॥ १२ ॥

सो०-कहत लगावत लोग, झूठहि सब मेरे सुतहि ।।
कब भये चोरीयोग, पांच वर्षके तनयसे ।। १२ ।।
इहि मिस देखनको सब आवैं * चोरी मेरे सुतहि लगावैं ।।
ऐसो तौ मेरो न अन्याई * अतिहो बालक कुँवर कन्हाई ।।
छींके बँधे भवन अतिऊँचे * तहँ कैसे ये भुजन पहुंचे ।।
कौन बेग इतनो ह्वै आयो * तेरो गोरस कैसे खायो ।।
हाथ नचावति आवति दौरी * जीभ न करहि समुझिकैं बोरी ।।
घरही माखनभरी कमोरी * कबहूँ लेत न अँगुरिन बोरी ।।
इतनी सुनतनिरखि घनश्यार्माहिं*बिहँसिचलीग्वालिनि निजधार्माह
हरिसों कहति महरि समुझाई * मैं बलि कहुं जिनजाहु कन्हाई ।।
तुम्हरेइ कारण षटरस नाना * करि करि राखे बिबिध बिधाना ।।
इतौ उपाय करत कित जाई * परघर दधि माखनहि लगाई ।।
ब्रजको बाढी ग्वालि गँवारी * हाटबाट दधि बेचनहारी ।।
नहिं कछु लाज न कानि बिचारैं * बोलति बचन कटुक मुँह फारैं ।।
दो०-झूठो दोष लगायके, नित उठि आवति प्रात ।।
सन्मुख बादति शंकतजि, बिकट बनावत बात ।। १३ ।।
सो०-नौलख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घनो ।।
तू कित चोरी जाय, बुरो मानिहै नंद सुनि ।। १३ ।।
हरि माखन चोरी रस गोधे * कैसे रहें प्रेमके—नोधे ।।
एक ग्वालि—घरमाँझ अँधेरे * अति श्यामल तनु परत न हेरे ।।
कछुक धरो गोरस तहँ पायो * प्रथम सुरुचि करि भोग लगायो ।।
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली * लहँ देखे भीतर बनमाली ।।
भुजा चारि धरि दरश दिखायो * ग्वालिनि लखिअति अचरजपायौ
दधि—माखनके बूँद सुहाये * सुभग श्याम उर अतिछवि छाये ।।
मानहुं यमुना जलके माहीं * देखि परत उडुगन परछाहीं ।।
इहिछबिनिरखि रही छकि ग्वाली * बहुरो भये द्विभुज बनमाली ।।
देखि चरित हरिके ब्रजबाला * चकित बिलौकति हरषबिशाला ।।
मनमन कहति कहा मैं देख्यो * यह जागत कै स्वपन बिशेख्यो ।।

प्रेममगन तनुकी सुधि भूली * गद्गदकंठ रोमावलि फूली ।।
मन हरलीनो रूप दिखाई * चले वहाँते कुँवर कन्हाई ।।
दो०-देखि श्यामके चरित बर, ब्रजनारी सुख पाय ।।
होंहिं हमारे पुरुषहरि, माँगतबिधिहि मनाय ।। १४ ।।
सो०-घरघर करत बिलास, नानावेष दिखाय हरि ।।
ब्रज जन परमहुलास, देखि चरित गोपालके ।। १४ ।।
देखी श्याम ग्वालि इक ठाढी * गोरस मथति प्रात छबि बाढी ।।
डोलत तनु उघर्यो शिर अंचल * बेनी चलत पीठपर चंचल ।।
जोबन मदमाती इठलानी * करषत रजु दुहुँ करन मथानी ।।
इतउत अंग मोरति झकझोरी * गोरे अंग दिननकी थोरी ।।
मढ़ी उरोजनि अँगिया गाढ़ी * मनहुं काम साँचे भरि काढ़ी ।।
रीझि रही लखि नंददुलारे * लागे खेलन तासु दुआरे ।।
फिर चितई ग्वालिनि द्वारेतन * परि गये दृष्टि श्याम सुंदरघन ।।
बोलिलिये हरुवे सूने घर * लिये लाय उरसों सुंदरबर ।।
उमँग अंग अँगिया उर दरकी * तिहिं अवसर सुधिरही न घरकी ।।
तबहीं सुंदर श्याम सुजाना * भये बरष द्वादश अनुमाना ।।
सो छबि देखि छकी ब्रजनारी * बहुरि भये शिशुरूप मुरारी ।।
हरिके कौतुक अतिसुखदाई * देखि रही मतिगति बिसराई ।।
दो०-माखन लै तब श्याममुख, धरति आपने पानि ।।
अति आनन्द उमँग उर, बिसरी ग्वालि सुजानि ।। १५ ।।
सो०-रसिकशिरोमणि श्याम, माखनखाय रिझायतिय ।।
आये अपने धाम, छबिसागर नागर नवल ।। १५ ।।
मन हर लीनो कुँवर कन्हाई * बिन देखे क्षण रह्यो न जाई ।।
उरहनके मिस ग्वालि सयानी * आई देखन हरि सुखदानी ।।
सुनहु महरि सुतके गुण जैसे * कहा कहौं कहे जात न तैसे ।।
माखन खाय मही ढरकायो * चोली फारि अबहिं भजि आयो ।।
गोरसहानि सही लै माई * अब कैसे सहि जात खुटाई ।।
बीचहिं बोल उठे बनवारी * झूँठहि मोहिं लगावति ग्वारी ।।

खेलतते मोहिं लियो बुलाई * दोउ भुज भरि लीनो उर लाई ॥
मेरे कर अपने उर धारो * आपुनही चोली पुनि फारो ॥
माखन आपहि मोहिं खवायो * मैं कब दहो महो ढरकायो ॥
अतिभोरी सुनि हरिकी बानी * यशुमति ग्वालनिसों रिस ठानी ॥
जानतिहौं जु कटाक्ष तिहारो * अतिभोरो सुत मेरो बारो ॥
दै दै हला बुलावति ताही * सोइसोइ करत जो भावत जाही ॥
दो०-बोलि २ निजनिज भवन, भेटति भरि भरि अंक ॥
मेरे भोरे बालको, ग्वालनि निलज निशंक ॥ १६ ॥
सो०-तापर उन नख लाय, फिरति दिखावति लाज तजि ॥
कान्है दोष लगाय, आपुन अतिभोरी भई ॥ १६ ॥
नित उठि उरहन लै हठि धावै * बिना भीतही चित्र बनावै ॥
मिस करि करि मेरे गृह आई * रहति श्यामतन दीठ लगाई ॥
मेरो पाँच वरषको कान्हा * अजहुँ रोय पय माँगत नान्हा ॥
कहँ तू जोबनकी मदमाती * हरिके संग फिरति इठलाती ॥
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना * मन हर लीनो राजिवनैना ॥
आनन रोष प्रीति मनमाहीं * उत्तर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछु अनउत्तर कहि रिस पाई * चली भवन उर राखि कन्हाई ॥
यशुमति यहै सिखावति श्यामहिं * कत हौ जात पराये धामहिं ॥
ये सब गोरसकी मदमाती * फिरति ढीठ ग्वालनि इतराती ॥
नित उठि उरहन देति बिहाने * मुख सँभारि नहिं बात बखाने ॥
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई * मोपै माँगिलेहु किन सोई ॥
कहि कहि मधुरबचन निजताता * सुख उपजावहु मेरे गाता ॥
दो०-अपनेहि आँगन खेलिये, सखन सहित दोउ भाय ॥
मुहिं सुख दीजै आपने, बालबिनोद दिखाय ॥ १७ ॥
सो०-सुन्दरघन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभा हरण ॥
गोपबाल लै साथ, करत बाललीला ललित ॥ १७ ॥
मथुरा जात लखी इक ग्वाली * चरचि लई ताको बनमाली ॥
बैठी रहे ताके पिछवारे * सखा संग लै नंददुलारे ॥

कहति परोसनसों समुझाई * सुनलीन्हो सो कुँवर कन्हाई ॥
बेचन जाति सखी हौं दहियो * तौलौं मेरे गृहतन चहियो ॥
सदमाखन है माट धरोई * सौंपि जाति हौं तौको सोई ॥
डर तो और कछू ब्रज नाहीं * नंदसुवन सखि आय न जाहीं ॥
यों कहि चली ग्वालिनि जबहीं * सखन सहित हरि पैठे तबहीं ॥
कछु ग्वालनको आहट पाई * सो पुनि फेरि घरहि फिरि आई ॥
देखि सखा सब चले पराई * पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हे * तुम कित जात अचकरी कीन्हे ॥
बाँह पकरि लै चली लिवाई * कहति यशोमति देखहु आई ॥
उरहन देत सदा रिस मानो * अब अपनो सुत आय पिछानौ ॥

दो०-वहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज ॥
मैं गहिल्याई श्यामको, बाँह पकरिकै आज ॥ १८ ॥

सो०-हरि बैठे निजधाम, खेलत जननीके निकट ॥
कौतुकनिधि घनश्याम, करत चरित संतन सुखद ॥ १८ ॥

यशुमतिसुनिग्वालिनिमुखबानी * देखन चली सुतहिं अकुलानी ॥
गये तहाँ ह्वै सुता पराई * देखि यशोमति अति रिसियाई ॥
तेरे आँखि न मति हियमाहीं * बदन देखि पहिचानति नाहीं ॥
देखहुरी याको गति माई * या कन्याको कहत कन्हाई ॥
तैं जो मेरे सुतको नाम * सूधो करि पायो है श्याम ॥
तू गहि बाँह कौनको ल्याई * खेलत मेरे धाम कन्हाई ॥
रही बाल हरिको मुख चाही * समुझि समुझि मनमन पछताही ॥
बाँह पकरि मैं घरते ल्याई * कीन्हे कैसे चरित कन्हाई ॥
जात बनै ना कछु कहि जाई * रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई ॥
महरि कहति चलि जाइ इहाँतें * मैं जानति सब तुम्हारी बातें ॥
हरिके चरित कहा कोउ जानै * ग्वालिनितन दुरि मुरिमुसकानै ॥
हरिते हारि चली गृह ग्वाली * बुधिकर जीते श्याम तमाली ॥

दो०-बहुरि गये इक ग्वालिघर, मनमोहन घनश्याम ॥
सखन सहित हर्षितभये, सूनो पायो धाम ॥ १९ ॥

सो०-सब घर लियो ढँढोरि, मखान खायो चोरि हरि ।।
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुटाय महि ।। १९ ।।
सोवत लरिकनि चुटकि जगाए * मही छिरकि डरपाय रुवाए ।।
बड़ो माट इक घीको फोर्‌यो * बहुत दिननको चिकनो चोर्‌यो ।।
सोऊ फोरि कियो बहु टूका * चले हँसत सब मिल दै कूका ।।
आय गई ग्वालिनि तिहिं काला * निकसत धरि पाये नन्दलाला ।।
देख्यो घर बासन सब फौरे * रोवत बाल महीसों बोरे ।।
दोऊ भुज गाढ़े गहि लीन्हे * जाय महरि ढिग ठाढे कीन्हे ।।
कहति सरोष यशोमति आगे * अब पति रहिहै या ब्रज त्यागे ।।
ऐसे हाल किये गृह मेरे * सुनहु महरि लक्षण सुत केरे ।।
माखन खाय दही ढरकायो * मही छिरकि बालकन रुवायो ।।
बासन फोरि धरे सब घरके * उपज्यो पूत सपूत महरके ।।
घीको माठ युगनिको राख्यो * सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ।।
चलहु दिखाऊं घरको हाला * राखहु बांधि आपनो लाला ।।
दो०-जननी खोजति कान्हको, करत फिरत उतपात ।।
नित उठि उरहन सहत हौं, तू नहिं मानत तात ।। २० ।।
सो०-बड़े बाप के पूत, चोर नाम प्रगट्यो जगत ।।
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तात को ।। २० ।।
जननी के खीजत हरि रोये * भरि आये नयनन्न के कोये ।।
झूँठहि मोहिं लगावत धगरी * मेरे ख्याल परी हैं सगरी ।।
यशुमटि रोवत देखि कन्हाई * वदन पोंछि लीने उर लाई ।।
कहति सबै युवतिन यह भावैं * नितही नित उठि भोरहि आवैं ।।
मेरे बारहिं दोष लगावैं * जूठहि उरहन मोहिं सुनावैं ।।
कबहिं गयो तेरे दरवाजे * दूध दही माखन के काजे ।।
धनमाती इतराती डोलै * सकुचति नाहिं संभारि न बोलै ।।
मेरो कान्ह तनकसो माई * ताई रुवावति झूठ लगाई ।।
कब हरि तेरो माखन लीनो * मेरे बहुत दई को दीनो ।।
कहा भयो घर गयो तिहारे * छियो तनक दधि बालक बारे ।।

ग्वालिनिसुनियशुमतिकी बानी * कहतिमहरितुमउलटिरिसानी॥
नित उठि होय जासुकी हानी * सो क्यों आन कहो नन्दरानी॥
दो०-तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ ॥
जहां बसे नहिं पति रहै, तजन कह्यो सो ठाउं ॥२१॥
सो०-पूतहिं देति पठाय, भण्डहाई घर घर करत ॥
उरहन देत रिसाय, को बसिहैं ऐसे नगर ॥२१॥
सखा भोर लै पैठत धाई * आप खाय तौ सहिये माई ॥
जो कछु गोरस घरमें पावै * कुछु डारै कछु सखन लुटावै॥
कहँलौ सहैं नित्य की हानी * कबलौं करैं नन्दकी कानी ॥
इक दिन मेरे मन्दिर आयो * मोको देखत बदन दुरायो ॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई * तबके गुण कहा कहौं सुनाई ॥
भाजि रह्यो दुरि देखत जाई * मैं पौढो अपने गृह आई ॥
हरैं हरैं आये सिरहाने * चोटी पाटी बांधि पराने ॥
सुन मैया याके गुण मोसों * यह सब झूँठि कहतिहै तोसों॥
खेलतते मोहिं लियो बुलाई * मोपै दधिको चैंटि कढाई ॥
टहल करौं मैं याके घरकी * यह सोवै पतिसंगनिधरकी ॥
सुनत बचन यशुमति मुसकानी *ग्वालिनिहँसिमुखमोरिलजानी॥
सुनहु महरि सुतके गुण काने * समुझहि हैं भोरे कै स्याने ॥
दो०-करत फिरत उत्पात अति, सब व्रज घर घर जाय ॥
नित उठि खेलत फागसी, गरियावत न लजाय ॥२२॥
सो०-बाहर तरुण किशोर, बोलत बचन विचित्र बर ॥
इहाँ होत शिशुभोर, तुम अचरज मानत नहीं ॥२२॥
यौं कहि गई ग्वालिनी धामहिं *यशुमतिपुनि२सिखवतश्यामहिं॥
घर गोरस जनि जाहु पराये * तात रिसात उरहनो लाये ॥
घु-दीरघता कछु नहिं जानै * झगरो आय झूँठ सब ठानै ॥
ौ लख धेनु दूध की तेरे * और बहुत बन चरैं अनेरे ॥
ू कत माखन खात चुराई * छांड़ि देहु अब यह लरिकाई॥
ों कहि जननी कण्ठ लगायो * सुन्दर श्याम हरष तब पायो ॥

खेलन गये बहुरि नन्दलाला * किये जाय पुनि सोई ख्याला॥
अपर ग्वालि उरहन लै धाई * आई यशुमति पहँ रिसियाई॥
तेरे कान्ह मेरो माखन खायो * सखनसहित अबहीं भजि आयो॥
मैं गइ यमुन भरन को पानी * दुपहर द्योस सुन घर जानी॥
गयो भवन में खोलि किवारी * छींकनिते दधि लियो उतारी॥
खाय लुटाय बहाय पराने * बारक द्वै बरजो नहि माने॥
दो०-कीन्हो अतिही लाडलौ, लाड़लडाय बहूत ॥
अबहींते ये ढँग करत, जायो नोखो पूत ॥ २३॥
सो०-सुनि ग्वालिनिके बैन, कहति यशोमति कान्हसें ॥
सिखयो मानत नैन, लै सँटिया डाटति भई ॥ २३॥
माखन खात पराये घरको * मेरे रहत जहाँ तहँ ढरको॥
नितप्रति मथियत सहस मथानी * तेरे कौन वस्तुकी हानी॥
कितने अहिर जियत घर मेरे * बेचत खात मही बहुतेरे।
पूत कहावत नन्द महर को * चोरी करत उघारत फरको।
मैया मैं नहिं माखन खायो * मेरे बदन सखन लपटायो।
भाजन ऊँचे छींके चढायो * समुझि देखु मैं कैसे पायो।
मैं ये नान्हे हाथ पसारी * किहिबिधि माखनलियोउतारी।
मुख दधि पोंछत कहत कन्हाई * दोनों पाछे पीठ दुराई।
डारि सांटि यशुमति मुसकानी * गहि उर लाय लिए सुखदानी।
बाल विनोद मोद मन मोह्यो * निरखत बदन त्रासयुत सोह्यो।
भक्ताधीन बेद यश गावै * सो हरि भक्त प्रताप दिखावै।
यशुमतिको सुखनिरखिअगाधा * बिसरे शिव मुनि ब्रह्म समाधा।
दो०-धनिब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रज की गाय ॥
जिनको माखन चोरि हरि, नित उठि घरघर खाय ॥ २४
सो०-रहे सकल सुर भूल, ब्रजबिलास हरिको निरखि ॥
हर्षहिं हर्षहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥२४
आई कहति और इक ग्वाली * सु हु यशोमति सुतकी चाली
भाज गये मेरे भाजन फोरी * माखन खाय मही महि ढोरी

हाँक देत पैठत घरमाहीं * काहू बिधि कर मानत नाहीं ॥
सखा संग काने इक ठोरी * नाचत फिरत साँकरी खोरी ॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै * गारी दै दै सबन बुलावै ॥
गोरसहानि करत है सगरो * कहंलग कीजै नित उठि झगरो ॥
घर घर करत फिरत सुत चोरी * ऐसो बिधि बसिहैं ब्रज कोरी ॥
सुनत गोपिकाको रिसबानी * कहत श्यामसों नन्दकि रानी ॥
तू नहिं मोहिं डरात मुरारी * बकत बकत तोसों पचिहारी ॥
षटरस भरे धरे घरमाहीं * ताते तू लै खात क्यों नाहीं ॥
परघर चोरी को नित जाई * देति उरहनो ग्वालि सदाई ॥
मोको कृपण कहत सब आई * तेरे घर ढोटहु न अघाई ॥
दो०-सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तू नहिं मानत बात ॥
अब तोहिं राखों बांधिकै, जानो तेरो घात ॥२५॥
सो०-सुनरी ग्वालनि बात, कहे देत अब तोहिं मैं ॥
जबहीं पावहु घात, मेरो सौं यहि मारियौ ॥२५॥
अबते मोकहँ बहुत खिझाई * सांटिन मारि करौ पहुनाई ॥
अजहूं मान कह्यो करि मेरो * तू घर घर मति फिरै अनेरो ॥
जननी रिस लखि श्याम डराने * अब नहिं जैहौं धाम बिराने ॥
यौं कहि निकरि गये हरि द्वारे * खेलत सखन संग मिलि प्यारे ॥
तबहीं ग्वालि और इक आई * सो यशुमतिसों कहत सुनाई ॥
नन्द महरि सुत भलौ पढायो * व्रज घर बीथिन शोर मचायो ॥
मारि भजत काहू के लरिका * खोलत है काहूको भरिका ॥
काहूकों दधि माखन खाई * काहूके घर करत भँडाई ॥
गारी देत सकुच नहिं मानै * गैल चलत हठि झगरो ठानै ॥
कह कह हरिके गुणन बतैये * तोसों उरहन देत लजैये ॥
कछु टोनासो पढ़िकरि आई * जोइ भावत सोइ करत कन्हाई ॥
पीताम्बर ओढ़त शिर नाई * अंचल दै दै मुरि मुसकाई ॥
दो०-तेरी सौं तोंसौं कहति, मैं सकुचति यह बात ॥

तेरो मुख हरि लखतही, सकुचि तनक ह्वैजात ॥ २६॥
सो०-नेक दिखावहु आँखि, नहिं अबते ये ढँग भले ॥
कबलग कहिये राखि, करत अचकरोश्याम अति ॥ २६॥

अथ दाँवरीबंधनलीला १८.

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा * रिस करि उठी साँटि ले हाथा॥
कहति जो ऐसो रिस मैं पाऊँ * तौ हरिको गति तुमहिं दिखाऊँ॥
कैसे हाल करों हरिकेरे * लागे तात आज ह्वै मेरे॥
छाँड़ों नहीं आजु बिनमारे * भये श्याम अब बहुत दुलारे॥
इहिं अंतर आई इक गोपी * बाँह गहे हरिको मुख कोपी॥
भलो महरि सूधो सुत जायो * चोलो हार खोलि दिखरायो॥
किन नहिं सुतको लाढ़ लड़ायो * कौने नहीं कठिन करि जायो॥
तेरो कछुक अधिक री माई * बरजत नाहिंन नैक कन्हाई॥
यशुमति हरिको भुज गहिलीन्हो * कहति बहुरि अपनो ढँग कीन्हो॥
हरुवै सँटियाँ द्वैक लगाई * आजु बाँधि मेटों लँगराई॥
गहे भुजा सुतकी बिततानी * इतउत रजु खोजति नँदरानी॥
हरि जननी उर कोप निहारी * मनमन बिहँसत कौतुककारी॥
दो०-अग्नि प्रेरि त्रिभुवनधनी, दियो क्षीर उफनाय॥
यशुमति लखितजिहरिभुजा, लगी सँभारन जाय॥ १॥
सो०-इहिबिधि भुजहि छुडाय दधिभाजन फोरन लगे॥
माखन मुहँ लपटाय, गोरस दियो लुटाय सब॥ १॥
रिसमें रिस औरौ उपजाई * जानि जननिअभिलाष कन्हाई॥
देखि यशोमति अतिरिस पागी * पकरि श्यामको बाँधन लागी॥
गर्ब जान नहिं दाम समाई * सब रजु द्वै अँगुरी घटिजाई॥
पुनि पुनि यशुमति और मँगावै * हरिके तन सब ओछो आवै॥
देखि यशोमति अतिरिस बाढ़ी * मन पछिताति ग्वालिनी ठाढ़ी॥
देख सखी यशुमति बौरानी * हरिको बाँधन चहति अयानी॥
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जानै * जिनते सकल कलेश नशानै॥
अखिल ब्रह्मांड उदरमें जाके * बाँधित महरि उदर रजु ताके॥

ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी * इनहूं जिनकी गति नहिं जानी ।।
जलथल जिनकी जोति समानी * कही गर्ग सब प्रगट बखानी ।।
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई * तिन्हैं परम परतीति न आई ।।
तिनहिं देख बाँधति नँदरानी * अचरजकथा न जाति बखानी ।।
दो०-आप बँधावत प्रेमबश, भक्तन छोरत फंद ।।
बदत बेदबाणी बिदित, भक्तबछल नँदनंद ।। २ ।।
सो०-जननिहिं अतिरिसजान, यमलाअर्जुनसुरतिकरि ।।
दीनबंधु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ।। २ ।।
जननीके मनकी रुचि जानी * आप बँधायो शारँगपानी ।।
कहति यशोमति लै कर डोरी * बाँधों तोहिं सकै को छोरी ।।
लैलै रजु ऊखलसों जोरै * हरि लखि बदन नयन जल ढोरै ।।
यह सुन ब्रजयुवती उठि धांई * देखि श्यामको सब मुसकांई ।।
कहति इन्हें कोऊ मत छोरो * बहुत श्याम अब माखन चोरो ।।
ऊखल बाँधि यशोमति जोरी * मारनको सँटियां कर तोरी ।।
साँटी देखि ग्वालि पछतानी * विकल भई मन अति अकुलानी ।।
कहत यशोमतिसों सब गोपी * ऐसी कहा पूतपै कोपी ।।
कहा भयो जो बालक पाहीं * ढरक गई मथनी महिमाहीं ।।
घरघर गोकुल दई दिवारी * तू बाँधत हरिको भुजकारी ।।
ऐसो तोहिं बूझियत नाहीं * गोरसलगि बाँधति सुन बाहीं ।।
चूक परी हमते इहि भोरे * उरहत दियो बकस कर जोरे ।।
दो०-बारबार जोवत बदन, हुचकिन रोवत श्याम ।।
बज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नँदबाम ।। ३ ।।
सो०-कत रिस करति अचेत, छोर उदरते दाँवरी ।।
धार कठिन कर बेंत, लोचन भरि भरि लेत हरि ।। ३ ।।
जाहु चली अपने अपने घर * तुमहिं सबै मिलि ढीठ कियो बर ।।
बंधन छोरनको अब आई * मोको मति बरजो कोउ माई ।।
मोहिं आपने बाबाकी सौं * अब न पत्याउँ श्यामको बांसौं ।।
देखि चुकी मैं इनके ख्याला * उपजे बड़े नंदके लाला ।।

मैं देवनहित पय औटायो * कोरी मटुकी दही जमायो ॥
जावन दियो न पूजन पायो * सो सब फोरि भूमि ढरकायो ॥
तिहिं घर देव पितर कहु काके * भयो कान्हसो सुत घर जाके ॥
कहति एक सुन यशुमति बौरी * दधिकारण सुत बांधति दौरी ॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्ही * इतनी रिस बालकपर कीन्ही ॥
जो अतिही अचकरौ कन्हाई * तऊ कोखको जायो माई ॥
नेक देख धौं हरिहि निहारी * कैसे डरत लकुट डर भारी ॥
शोभित सजल साँवरे लोचन * नीरजदल अतिओस भरे जन ॥
दो०–नमित बदन सूखत अधर, कछुक सकुचमें रोस ॥
साँझ होति जिमि बात बश, शोभित पंकजकोश ॥ ४ ॥
सो०–निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वस वारिये ॥
प्रगटे नंदनिकेत, को जाने किहिं पुण्यवश ॥ ४ ॥
एक कहति जो आयसु पाऊँ * तौ माखन निजघरते लाऊँ ॥
जिहिकारण कीनी रिस हरिते * अजहुँ न डारति सँटिया करते ॥
देखि डरात तोहिं हरि कैसे * सकुचत जलज शीतभय जैसे ॥
बेगि छोर बंधन हठ त्यागी * लै लगाय उर श्याम सभागी ॥
कहन लगी अब बड़ि बड़ि बानी * माखन मोहिं देतिहै आनी ॥
मानों मेरे घर कछु नाहीं * तब नहिं उरहन देत लजाहीं ॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो * उरहन दै दै मंड पिरायो ॥
रिसहोमें मोको गहि दीनो * सबको ज्ञान जानि मैं लीनो ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी * देखहु यशुमति सुतहि निहारी ॥
मुखछबि कोटिचंद बलिहारी * ये हैं साह कि चोर बिहारी ॥
नाहीं तरुण किशोर कन्हाई * कतहि करत इनसों रिस माई ॥
कहा भयो जो उरहन आने * बालक हरि अबहीं कहजाने ॥
दो०–अमित भ्रमित तो त्रासते, चपल सजलदृगकोर ॥
मनहुँ मीन बंसीबिधे, करत सलिल झकझोर ॥ ५ ॥
सो०-लै उठाय उर धारि, छोर उदरते दाँवरी ॥
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदन गुपालपर ॥ ५ ॥

तेरो कठिन हियो है माई * कहति एक ग्वालिनि समुझाई ।।
ऐसो माखन दधि बहिजाई * बाँधे कमल नयन जिहिं लाई ।।
जो मूरति शिव ध्यान लगावैं * सपनेहुँ सुर नहिं देखन पावैं ।।
निगमनहूँ खोजत नहिं पाई * सो तैं दैं करतारि चनाई ।।
याही ते तू गर्ब भुलाई * घर बैठे तेरे निधि आई ।।
काहू को सुत रोवत देखो * लेति धाय उर लाय विशेखो ।।
अब यह कत सीखो चतुराई * निज सुतसों इतनो कठिनाई ।।
कहति एक देखहु नन्दरानी * कबके ऊखल बँधे मुरारी ।।
गयो क्षुधाते मुख कुम्हलाई * अति कोमल तन श्याम कन्हाई ।।
भई बेर बीते युग यामा * हरिके निकट आय गइ घामा ।।
तू लागी गृह कारज माहीं * है निरदई दया कछु नाहीं ।।
घरको काज इनहुँते प्यारो * यशुमति नेक न हृदय विचारो ।।
दो०-जल जलोल लोचन सजल, भये त्रासते दीन ।।
चितवत तेरे बदनतन, मनमोहन आधीन ।। ६ ।।
सो०-केतिक गोरसहान, जाको तोरत कान तू ।।
वारि दीजिये प्रान, रोम रोम पर श्याम के ।। ६ ।।
हरिको देखि सखा इक धायो * तिन हल धरसों जाय सुनायो ।।
अहो राम तुम्हरो लघु भैया * बांध्यो आज यशोदा मैया ।।
काहू के लरिकहिं हरि मार्‌यो * यशुमति पैं नित जाय पुकार्‌यो ।।
नबते हरिहिं बाँधि वैठायो * छोड़ति नाहिंन सबन छुड़ायो ।।
सो हम तुमहिं जनावन आये * हलधर सुनत तुरत उठि धाये ।।
माता डर तन अतिहि बसाये * हरिहि देखि लोचन भरि आये ।।
कहत भले दोउ भुजा बँधाये * ऊखलसों बाँधे हरि पाये ।।
मैं बरजे कइबार कन्हाई * अजहूँ छोड़ देहु लंगराई ।।
दोउ कर जोरि कहत री मैया * काहेको बाँध्यो मेरो भैया ।।
श्यामहिं छोड़ बांध बरु मोहीं * और कहा कहिये अब तोहीं ।।
मेरो प्राण अधार कन्हाई * ताकी भुज मोहिं बंधी दिखाई ।।
कौन काज गोरस धन धामा * जिहिकारण बांध्यो घनश्यामा ।।

दो०-छुवत और जो तन कोऊ, आज देखतो सोय ॥
तू जननी कछु बश नहीं, जो कछु करै सो होय ॥ ७ ॥
सो०-तेरे बश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते ॥
तू पहिंचानत नाहिं, गोरस हित बाँधत हरिहिं ॥ ७ ॥
सुनहु बात हलधर तुम मेरी * करन देहु सेवा इन केरी ॥
माखन खात परायो जाई * प्रगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुमहीं कहौ कमो किहिकेरी * नौनिधि की मेरे घर ढेरी ॥
हौं हारी बरजत दिन राता * मानत नाहिंन मेरी बाता ॥
कहा करों हरि अतिहिं खिझाई * भयो बहुतही ढीठ कन्हाई ॥
मेरो कह्यो तनक नहिं माने * नित उठि टेक आपनी ठाने ॥
भोर होत उरहन लै आवैं * व्रज युवतिनते मोहिं लजावैं ॥
जहँ तहँ धूम मचावत जाई * घर नहिं रहत क्षणेक कन्हाई ॥
तुमहूं दोष देतहौ मोहीं * कान्हरते प्यारो दधि तोहीं ॥
तोहि तजि औरकहौं किहिंमैया * और को मेरो मान रखैया ॥
तेरी सों जननी सुन मोहीं * उरहन देति झूंठ सब तोहीं ॥
है सब ब्रजको श्याम पियारो * श्याम सकल ब्रजको रखवारो ॥
दो०-दधि माखन पय कान्हको, कान्हहिकी सब गाय ॥
मोहूको बल कान्हको, तू नहिं जानति माय ॥ ८ ॥
सो०-बलदाऊकी बात, सुनि यशुमति हंसिकै कह्यो ॥
तुम इकमत दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥ ८ ॥
हरिहिं देखि हलधर मुसकाने * यह तुम गति तुमबिनको जाने ॥
को तुम छोरन बांधन हारा * तुम छोरत बांधत संसारा ॥
कारण करण करत मनमाने * अतिहितयशुमतिहाथ बिकाने ॥
असुर संहारन जनदुख मोचन * कमलापति राजीव विलोचन ॥
भक्तन के वश रहत सदाई * ताही ते कछुऔ न बसाई ॥
हरि यमलार्जुन तरुतन हेरे * मन मन कहत दास ये मेरे ॥
अबहीं आजु इन्हैं उद्धारौं * दुसह शाप मुनिबरको टारौं ॥
इनही के हित भुजा बँधाई * परसि विटप अब देहुं गिराई ॥

दारुण दुख इनको सब टारौं * इहिमिस करि बन्धन निरवारौं ॥
भक्त बत्सल हरि दीनदयाला * करुणासिंधु अगाध कृपाला ॥
भक्ताधीन बेद यश गावै * पावन पतित नाम कहवावैं ॥
भक्त हेतु नाना तनु धारी * करत चरित भक्तनसुखकारी ॥
दो०-ब्रजबासी प्रभु भक्तहित, आप बँधायो दाम ॥
ताही दिन ते प्रगट है, दामोदरसो नाम ॥ ९ ॥
सो०-नन्दनन्दन घनश्याम, जनरंजन भंजन बिपति ॥
मेटत जिनको नाम, पाय शाप त्रयताप दुख ॥ ९ ॥
यशुदा बाहर छाँड़ि कन्हाई * लगो मथन दधि भीतर जाई ॥
कहत बचन रसरिस लपटाने * खात फिरत दधि धाम बिराने ॥
षटरस छाँड़ि आपने धामा * चोरी प्रगट करत हैं श्यामा ॥
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई * जहाँ तहाँ ब्रज धूम मचाई ॥
रहौ तुमहु हलधर चुपसाधी * इनको मेटन देहु उपाधी ॥
ऊखलसो बांधे बनवारी * कहति यशोमतिसों ब्रजनारी ॥
कान्हहुते तोहिं माखन प्यारो * अरी देखु तरसत हरि बारो ॥
डारि देहि मथनी नन्दरानी * टूटै है हरिकी भूजा पिरानी ॥
दूध दही हरिपै सब बारौ * मोहन जीवन प्राण हमारौ ॥
हरुवै बोलि कह्यो नन्दरानी * जाहु सबैं तुम युवति सयानी ॥
मैं खीझति लरिकहिं गुण काजे * तुम कत झुरत दई बिनकाजे ॥
लरिकहिं त्रास दिखावत रहिये * अवहीते अवगुण नहिं चहिये ॥
दो०-युवति चलीं बिरुझाय सब, कहति यशोदहिं पोच ॥
मूरखसों कहिये कहा, करत प्रेम बश सोच ॥१०॥
सो०-कहा करैं बलिजाउं, कहति चलीं सब श्यामसों ॥
धरत यशोदहि नाउं अति कठोर मानत नहीं ॥१०॥
तबहिं श्याम सुन्दर यह ठानी * युवती घरनि गई सब जानी ॥
गृहकारज जननिहिं अटकायो * आप यमलअर्जुन पहं आयो ॥
परसत पात उठे झहराई * परे शब्द आघात सुनाई ॥
उखरे मूल सहित अरराई * दिये धरणि दोउ तरुन गिराई ॥

भये चकित सब ब्रज के वासी * रहे सकुचि तनसुधिबुधि नासी ॥
कोउ भूमि कोउ तकत अकासा * रहे घरिक लौं जकि मनत्रासा ॥
याही अन्तर युगल कुमारा * प्रगटे धनदतनय सुकुमारा ॥
नारद शाप पाय दोउ भाई * भये हुते ब्रजमें तरु आई ॥
हरिके परसत निजगति पाई * भये पुनीत मिटी जडताई ॥
तिन्हैं कृपालु अनुग्रह कीन्हो * चारि भुजा धरि दर्शन दीन्हो ॥
देखि दरश अतिपुलक शरीरा * परे चरण दोउ बन्धु अधीरा ॥
बार बार पदरज शिर धारी * जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी ॥

छंद—अनुसारि अस्तुति युगल प्रेमानन्द मगन सन्मुखखरे ॥
जै जै भगतहित सगुण सुन्दर देह धरि धावत हरे ॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन बाणीपरे ॥
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे ॥१॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन महीं ॥
धन्य गोविन्द बाललीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनौदेत नित उठि धन्य अनखबढावहीं ॥
धनि सो जननी बाँधि राखत जाहि बेद न पावहीं ॥ २ ॥
धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजनगढि ल्याइयो ॥
धन्य सो तृण जासुकी रजु श्याम भुजन्न बंधाइयो ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दोनो अति अनुग्रह सो कियो ॥
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो ॥ ३ ॥
अब कृपा करि देहु बर प्रभु चरण पंकज मति रहै ॥
जहां जन्महिं कर्म बश तहं एक तुम्हरी रति रहै ॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीब्रजनाथजू ॥
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥ ४ ॥

दो०-बार बार पद नाय शिर, बिनती प्रभुहिं सुनाय ॥
प्रेम मगन निरखत बदन, हर्ष सहित दोउ भाय ॥११॥

सो०-साधु साधु कहि नाम, भक्तिदान तिनको दियो ॥
बिदा किये घनश्याम, हर्षि गये निजपुर युगल ॥११॥

वृक्षशब्द सुनि यशुमति धाई * देखे अजिर न कुँवर कन्हाई ।।
परे बिटप महि लखि अकुलानो * श्याम चपे तरुतर यह जानो ।।
आरत महरि पुकारन लागी * बाँधे हरि मैं परम अभागी ।।
सुनत शोर ब्रजजन उठि धाये * नंदद्वार सब आतुर आये ।।
देखि गिरे तरु मनहिं डराने * ढूढ़त श्यामहिं अतिहि सकाने ।।
बारबार सब करहिं बिचारा * गिरे कवनबिधि बिटप अपारा ।।
देखे दुहुं तरुबीच कन्हाई * रहे त्रसित ऊखल लपटाई ।।
धायलिये भुज छोर उठाई * ब्रजयुवतिन लीने उर लाई ।।
कहत सबै नंदहिं बड़भागी * बचे श्याम कहुँ चोट न लागी ।।
कबहूँ बाँधति मारति कबहूँ * देति दोष यशुमतिको सबहूं ।।
नयन नीर भरि दौरि यशोदा * लियो लगाय कंठ सुत गोदा ।।
जरहु सो रिसजिन तुमको बाँध्यो * जरहु हाथ जिन जेवरि साँध्यो ।।
दो०-नंद मोहिं कहि हैं कहा, देखि तरुवरन आय ।।
कुशल रहौ तुमभ्रातदोउ, मैं लै मरहुँ बलाय ।। १२ ।।
सो०-श्याम रहे लपटाय, अतिसभीत उर मातके ।।
बारबार बलिजाय, यशुमति मन पछितात अति ।। १२ ।।
ब्रजयुवती लै लै उर लावैं * निरखि बदनतन मन सुख पावैं ।।
मुख चूमत यह कहि पछिताहीं * कैसे बचे अगम ,तरुमाहीं ।।
बड़ी आयु हरिकी है माई * जहाँ तहाँ बिधि होत सहाई ।।
प्रथम पूतना मारन आई * पय पीवत वह तहाँ नशाई ।।
तृणावर्त लै गयो उड़ाई * आपहि गिर्यो सिलापर आई ।।
कागासुर आवत नहिं जान्यो * सुनी कहति जिय लेत परान्यो ।।
शकटासुर पलनाढिग आयो * को जाने तिहि काहि गिरायो ।।
कौन कौन करबर बिधि टारी * ऊखलसों बाँधे महतारी ।।
बहुतै उबर्यो आजु कन्हाई * ऊपर वृक्ष परे भहराई ।।
सबहिन पेलि करत मनभाई * पुण्य नंदके बच्यो कन्हाई ।।
भुजपर बंधनचिन्ह निहारी * कहत यशोमतिसों ब्रजनारी ।।
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे * सकुची महरि निरखि हरि प्यारे ।।

दो०—तबहिं नंद आये घरहिं, दोउ तरुगिरे निहारि ॥
श्याम चपल बाँधेसुने, देत महरिको गारि ॥ १३ ॥
सो०-बाँधतिहै बिनकाज, मेरे हरि बारे सुतहि ॥
कुशल करी बिधि आज, सोचतनँदलखितरुवरन ॥ १३ ॥
तबहिं जात कहि धाय कन्हाई * लिये नंद कनियाँ सुख पाई ॥
चूमि बदन उरसों लपटाये * प्रेम पुलकि लोचन भरि आये ॥
मेरे लाल मैं तुमपर वारी * काहेको बाँधे महतारी ॥
कैसे गिरे वृक्ष अतिभारी * चली नहीं कहुँ तनक बयारी ॥
बारबार सोचत नँदराई * पूँछत ते कछु लख्यो कन्हाई ॥
श्याम कही मैं कछू न जानों * ऊखलढिग मैं रह्यो छिपानों ॥
कहत नंद हरिबदन निहारी * बड़ो आज बिधि करबर टारी ॥
बहुत दान हरिहाथ दिवायो * द्विजचरणन लै लै सुत नायो ॥
देंहिं अशीस बिप्र सुख मानी * भये प्रसन्न नंद सुनि बानी ॥
तबहीं श्याम जननिपहँ आये * हर्षि यशोमति कंठ लगाये ॥
भूखो भयो आज मेरो बारो * काको धौं मुख प्रात निहारो ॥
ल्याई उरहन ग्वालिनि भिनहीं * यहसब कियो पसारो तिनहीं ॥
दो०—पहिले रोहिणिसों कह्यो, तुरत करौ जिवनार ॥
ग्वाल बाल सब बोलिकै, बैठे नंदकुमार ॥ १४ ॥
सो०-बेग ल्याव री मात, भूख लगी मोको बहुत ॥
आज न खायो प्रात, सुनत बचन यशुमतिहँसी ॥ १४ ॥
रोहिणि रही चितै यशुमतितन *शिर धुनि २ पछितात मनहिंमन ॥
परसहु हरिहि बिलंब न लावहु * भूखे हरि किन बेग जिमावहु ॥
बहु व्यंजन बहुभाँति रसोई * कहँलगि बरणि कहै कबि कोई ॥
परसत जाति यशोमति मैया * जेंवत श्याम सखा बल भैया ॥
जो जो व्यंजन यशुमति राखे * तनक तनक मोहन सब चाखे ॥
श्याम कही अब मात अघानो * अब मोको शीतल जल आनो ॥
अचवन करि अँचये दोउ भैया * अतिसुख पायो लखि दोउ मैया ॥
सहित सुगंध पान कर लीन्हे * बाँटि सकल ग्वालनको दीन्हे ॥

भ्रातासहित आप हरि खाये * अधिक सुअधर अरुण ह्वै आये ॥
निरखत बदन मुकुरके माहीं * ब्रजवासी जन बलि २ जाहीं ॥
भोजन करत भयो सुख जेतो * बरणि सकै नहिं शारद तेतो ॥
जो सुख नंदभवनके माहीं * सो सुख तीनि लोकमें नाहीं ॥
दो०-सुख यशुमति अरुनंदको, कोकरि सकै बखान ॥
सकल सुखनको खानि हरि, जहाँ रहे सुखमान ॥ १५ ॥
सो०-कोटि कोटि ब्रह्माण्ड, इक इक रोमबिराटतन ॥
सो अपने भुजदंड, लिय उछंग यशुमतिहरषि ॥ १५ ॥
यशुमति कहति कान्हसों प्यारे * सुनो बात मेरि नंददुलारे ॥
अपनेही आँगन तुम खेलौ * मेरो कह्यो कबहुँ जनि पेलौ ॥
कहति चोर ब्रजबनिता तोहीं * सुनि सुनि लाज लगतिहै मोहीं ॥
ताते रोष होत मन मेरे * तब बाँधति मारति जिमि चेरे ॥
हलधर आजु कहत हैं मोही * झूँठहि नाम धरत सब तोहीं ॥
ग्वालिनि हँसति कहति इक ऐसे * चोरी नाम फिरत अब कैसे ॥
चोर कहति युवती सब मोको * झूंठहि आय कहति सब तोको ॥
मैं खेलौं बाहर जहँ जाई * चितै रहैं सब मेरो घाँई ॥
अपने घर सब मोहिं बुलावैं * मुख चूमति गहि गहि उर लावैं ॥
माखन मुँहि निजकरन खवावैं * हाथ जोरि कछु बिधिहि मनावैं ॥
देखति जबहिं लेति मुँहि टेरी * मैं नहिं जाउँ सोंह मोहिं तेरी ॥
यशुमतिनिरखि बदनमुसकानी * उनकी बात सबै मैं जानी ॥

अथ आँखमिचौनीलीला १९.

दो०-टेरि लेहु सब निजसखन, अरु भैया बलराम ॥
सुख दीजै मेरे दृगन, खेलहु अपने धाम ॥ १ ॥
सो०-यह सुनि हर्ष बढाय, बोलिलिये हलधर सखा ॥
खेलहिं आँखि मुँदाय, कहत सबनसों मुदित हरि ॥ १ ॥
हलधर कह्यो आँखि को मूँदै * हर्षि कह्यो हरि जननि यशोदै ॥
हरि अपनी तब आँखि मुँदाई * जहाँ तहाँ सब रहे लुकाई ॥
कान लागि जननी समुझाये * हैं घरमें बलराम छपाये ॥

बलदाऊको आवन दैहौं * श्रीदामाको चोर बनै हौं ॥
इतउतते सब बालक आई * यशुमतिगात छुवत सब धाई ॥
श्याम छुवनके कारण धावत * अतिअकुलात छुवन नहिं पावत ॥
धाये सुबल छुवन तब श्यामा * गह्यो जाय तिरछै श्रीदामा ॥
कहत नंदकी सोंह जनाये * जननीढिग भुज गहि ले आये ॥
हँसि हँसि कहत सखा बलरामा * अब तौ चोर भयो श्रीदामा ॥
हर्षित कहति यशोदा मैया * जीत्यो है मेरो पूत कन्हैया ॥
जाकी माया जगत खिलावै * ब्रह्मा जाको अन्त न पावै ॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै * बालक जिमि वचनन फुसलावै ॥
दो०-जाके उर त्रयलोक थल, पंचतत्त्व चौखान ॥
सो बालक ह्वै खेलई, यशुदाके गृह आन ॥ २ ॥
सो०-दुर्लभ जपतप योग, जोतिरूप जगधाम हरि ॥
धन्य सो ब्रजके लोग, बालक करि मानत तिन्हैं ॥ २ ॥
कहति भई यशुमति महतारी * भई रात अब सुनहु मुरारी ॥
करहु बियारू अब कछु प्यारे * बहुरि खेलियहु होत सबारे ॥
मोको तौ कछु रुचि नहिं आवै * तू कहि भोजन कहा बतावै ॥
बेसन मिले कनिककी पूरी * कोमल उज्ज्वल है अतिरूरी ॥
अबहीं तातो तुरत बनाई * रोहिणि तुम्हरे हेतु कन्हाई ॥
निंबुआ आँब करील सँधानो * जासों तुम अतिहो रुचि मानो ॥
बलके संग बियारू कीजै * मेरे नयननको सुख दीजै ॥
तनक तनक धरि कचनथारी * लै आई रोहिणि महतारी ॥
श्याम राम मिलि करत बियारी * अतिआनँद दोऊ जननिनिहारी ॥
खात खात दोऊ अलसाने * मुख जँभात जननी पहिंचाने ॥
जल अँचवाय कमलमुख धोये * बाँह पकरि पलका पौढ़ाये ॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया * हरुवे पाँय पलोटत मैया ॥
दो०-सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात ॥
बहुरि कलेऊके समय, जननि जगाये प्रात ॥ ३ ॥
सो०-दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्यामको ॥

मुदित निरखि दिनरात, यशुमतिहरिकेचरितबर ॥ ३ ॥

अथ वृन्दावनगमनलीला २०.

महरि महर यह मनहिं बिचारी * गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जबते जन्म भयो हरिकेरो * नितहिं होत उत्पात घनेरो ॥
आकस्मात गिरे तरु भारी * बच्यो बड़निके पुण्य मुरारी ॥
ताते अब तजिये यह गाऊँ * बसिये चलि कहुँ उत्तम ठाऊँ ॥
नंदराय तब गोप बुलाये * समाचार ये सबनि सुनाये ॥
सबहिनके मनमें यह आई * बसिये अनत कहूं अब जाई ॥
नितहि उपाधि नई जिहिठाहीं * बसबो भलो तहाँको नाहीं ॥
नंद कही मैं मनहिं बिचारी * है इक ठाउँ बहुत सुखकारी ॥
वृन्दावन गोवर्धन पासा * तहँ सबको सबभांति सुवासा ॥
तहाँ गोपगण सब सुख पैहैं * बनमें गोधनवृन्द चरैहैं ॥
यह बिचार सबके मन भायो * चलबेको शुभ-दिवस धरायो ॥
वृन्दावन सब चले गुवाला * पाँच वरषके मदनगुपाला ॥
दो०-शकट साज सब साजिकै, गोधन दिये हँकाय ॥
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दावन समुदाय ॥ १ ॥
सो०-निरखि अनूपमठाम, शकट दिये सब छोरिकै ॥
सबके मन बस श्याम, सकल बृन्दाबिपिन ॥ १ ॥
बसे सकल बृन्दाबनपाहीं * अतिआनंद गोप मनमाहीं ॥
गोप बच्छ सबहो सुख पायो * चरत निकट तृण हरितसुहायो ॥
हलधर धेनु चरावन जाहीं * मनमोहन लखि मनहिं सिहाहीं ॥
प्रात चले सब गाय चरावन * जननोसों बोले मनभावन ॥
मैंहूं गाय चरावन जैहौं * बड़ो भयो अब नाहिं डरैहौं ॥
मना मनसुखा हलधर भैया * इनके संग चरैहैं गैया ॥
बालनसँग यमुनातट माहीं * खेलहिंगे सब बटको छाहीं ॥
अपनी रुचि बनके फल खैहौं * तेरी सों यमुना नहिं न्हैहौं ॥
ऐसी अबहिं कहौ जिन बारे * देखहु अपनो भाँति ललारे ॥
तनक पाँय चलिहौ किहिभाँती * गैयन आवत ह्वैहै राती ॥

प्रात जात गैयन लै चारन * आवत सांझ लखौ सब ग्वालन ।।
तुम्हरो कमल—बदन मुरझैहै * रेंगत घाम माँझ दुख पैहै ।।
दो०-तेरी सों मुँहि घाम नँहि, लागति भूख न नेक ।।
कह्यो कान्ह मानत नहीं, परे आपनी टेक ।। २ ।।
सो०-चले चरावन गाय, ग्वालबाल बलदेव बन ।।
हेरी टेर सुनाय, गोधन करि आगे लियो ।। २ ।।
हेरी टेर सुनत लरिकनकी * गये दौरिहरि अतिरुचि मनको ।।
इतउत यशुमति जबहिं निहारी * दृष्टि न परे श्याम बनवारी ।।
बनतन जान्यो जात कन्हाई * टेरति यशुमति पाछे धाई ।।
जात गले गैयनसँग धावत * बलदाऊको टेरि बुलावत ।।
पाछे जननी आवति जानी * फेरि फेरि चितवत भय मानी ।।
हलधर आवत देखि कन्हाई * ठाढ़े किये सखन समुदाई ।।
पहुँचो जननि भये जब ठाढे * रिस करि दोउ भुज पकरे गाढे ।।
बल कह जान देहु सँग मेरे * बनते ऐहैं आज सबेरे ।।
कह्यो यशोमति बलहिं निहारी * देखत रखियो मैं बलिहारी ।।
भ्रातसंग गये बनहिं कन्हाई * यशुमति थहै कहति घर आई ।।
देखो हरि कैसी ढँग लीन्हो * अपनी टेक पर्‌यो सोइ कीन्हो ।।
आज जाय देखहु बनमाहीं * कहा परोसि धर्‌यो तिहिंठाहीं ।।
दो०-माखन रोटी और जल, शीतल छाक बनाय ।।
दई बेगही ग्वालसँग, यशुमति बनहिं पठाय ।। ३ ।।
सो०-चिंतामणि सुरधेनु, पंच सुधारस कल्पतरु ।।
अनधन जाके ऐनु, खात छाक सो ग्वालसँग ।। ३ ।।
वृन्दावन खेलत नँदलाला * भयो हिये आनंद बिशाला ।।
जहँजहँ ग्वाल गाय सँग जाहीं * तहँ तहँ आप फिरत बनमाहीं ।।
बलदाऊसों कहत कन्हाई * नित ल्यावहु मोहिं संग लिवाई ।।
आज मरुकरि आवन पायो * जननी तुम्हरे कहे पठायो ।।
कालिह कवनबिधि करि बनऐहौं * यशुमति आपन नँहि पैहौं ।।
सोवत बोलि लीजियो मोकों * सौंह नंद बाबाकी तोकों ।।

पुनि २ बिनय करत सुखदाई * बलसों सखनसमेत सुनाई ॥
संध्या समय निकट जब आई * घरकहँ चलौ कह्यो बलभाई ॥
गैयन घेरि करो इक ठौरी * चले सदल सब गावत गौरी ॥
आवत बनते धेनु चराई * ग्वालनि मध्य श्याम सुखदाई ॥
जिहि २ भाँति ग्वाल मुख भाखैं * सुनि २ मनमोहन उर राखैं ॥
नान्हे सुर पुनि आपुनि गावैं * तारी देत हँसत सुख पावैं ॥
दो०-मोरमुकुट बनमाल उर, पीतांबर फहराय ॥
गोपदरज छबि बदनपर, आवत गाय चराय ॥ ४ ॥
सो०-छूटि अलकछबिदेत, जलजबदन परमधुपजनु ॥
आवत सखनसमेत, नंदसुवन ब्रजप्राणधन ॥ ४ ॥
देखत नंद यशोदा ठाढे * रोहिणि अरु ब्रजजन सुख बाढे ॥
गायनसंग श्याम जब आये * लै बलाय जननी उर लाये ॥
आज गयो हरि गाय चरावन * मैं बलिजाउँ तनकसे पाँवन ॥
मोकारण कछु बनफल लाये * तुम्हैं मिलो मैं अतिसुख पाये ॥
आँचरसों सब अँग अँग झारे * बदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥
खाउ कछू जो भावै मोहन * दै री माखन रोटी गोहन ॥
दिये जिमाय तुरत दोउ भैया * अतिआनंद मगन मन मैया ॥
कहत जननिसों श्रीब्रजनाथा * प्रात नितहि जैहौं बलसाथा ॥
मैं अपनो सब गाय चरैहौं * तेरे कहे घरहि नहिं रैहौं ॥
ग्वालबाल गायनके माहीं * नेकहु डर लागत मोहिं नाहीं ॥
आज न सोवों नंददुहाई * रहिहौं जागत कहत कन्हाई ॥
सब मिलि गाय चरावन जाहीं * मैं क्यों रहौं बैठि घरमाहीं ॥
दो०-सोय रहो अब श्यामतुम, जननिकहै पुचकारि ॥
प्रात जान कहिहौं तुम्हैं, बनको मैं बलिहारि ॥ ५ ॥
सो०-ज्यों त्यों राखे स्वाय, प्रातदेब बनजान कहि ॥
जननी दाबत पाँय, श्रमित जानि बनगमनके ॥ ५ ॥
बहुते दुख हरि सोय गयो है * ज्यों त्यों करि मनबोध लयो है ॥
साँझहिते लाग्यो इहि बातैं * जान कहत बन उठि पुनि प्रातैं ॥

यह तौ सँग लागहि बलरामहिं * गये लिवाय आज बन श्यामहिं ॥
अब तौ सोय रह्यो लहि ऐसे * प्रात बिचार करै धौं कैसे ॥
कहत नंद बलके सँग जाई * इतउत आवत दै फिर धाई ॥
भोर भयो यशुमति कह प्यारे * जागहु मोहन नन्ददुलारे ॥
बीतो निशि रवि किरण प्रकाशी * शशि मलीन उडुगणद्युतिनासी ॥
सुनहु शब्द बोलति खगमाला * खोलहु अंबुजनयन बिशाला ॥
सुनत श्याम जननीकी बानी * जागि उठे संतन सुखदानी ॥
ल्याई तुरत कलेऊ मैया * माखन रोटी खाउ कन्हैया ॥
टेरत बाल सखा सब द्वारे * आये करके होत सबारे ॥
खेलहु ब्रजभीतरही प्यारे * दूर कहूँ मति जाहु ललारे ॥
दो०-टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय ॥
जात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय ॥ ६ ॥
सो०-श्याम जोरि दोउ हाथ, जननीसों हाहाकरत ॥
जैहौं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दाबिपिन ॥ ६ ॥
टेरत मुँहि दाऊ री मैया * जैहौं बनहिं चरावन गैया ॥
बनफल तोरि देत मोहिं जाई * आपन घेरत गयन धाई ॥
जैहौं अरु ग्वालन सँग नाहीं * मोहिं खिझावत वे बनमाहीं ॥
मैं अपने दाऊसँग रहिहौं * देखत वृन्दाबन सुख पैहौं ॥
आगे कै ल्यावत मगमाहीं * तू क्यौं जान देत मोहिं नाहीं ॥
लीन्हो यशुमति बलहिं बुलाई * सुनहु लाल हरिके गुण आई ॥
कहत यशोमतिसों बल भैया * जान देहि मोहिं संग कन्हैया ॥
अपने ढिगते नेकु न टारौं * जिय परतीति नेक नहिं धारौं ॥
तू काहे डरपति मनमाहीं * जानदेति हरिको क्यौं नाहीं ॥
हँसी महरि सुनि बलकी बानी * जाहु लिवाय कहत नँदरानी ॥
मैं बलिहारि तुम्हारे मुखकी * तुमहूँ कहत बोरके रुखकी ॥
अतिआनंद भयो हरि धाये * दोऊ संग खरकमें आये ॥
दो०-धाय धाय भेंटत सखन, उर अतिहर्ष बढाय ॥
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय ॥ ७ ॥

सो०-कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखहु बनहिं ॥
बनमाला पहिराय, करत चित्र बन धातु तन ॥ ७ ॥
चले बनहिं सब गाय चरावन * सखन संग सोहत मन भावन ॥
ग्वालबाल सब कछुक सयाने * नन्द सुवन तिन्हमें कछू नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बलभाई * तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों सखा कहत समुझाई * छांड़ि कहूं जनि जाहु कन्हाई ॥
वृन्दावन अति सघन विशाला * जैहौ भूलि कहूँ नन्दलाला ॥
सुनत श्याम घन तिनकी बाता * मनमन हँसत कहत जगत्राता ॥
तुम्हरो संग न छांड़त राई * बनहिं डरात बहुत मैं भाई ॥
जात चले सब हर्ष बढाये * खेलत श्याम संग सुख पाये ॥
कोउ गावत कोउ बेणु बजावैं * कोउ नाचत कोउ कूदत आवैं ॥
देखि देखि हरि अति हर्षाहीं * कहत सखनसों दै गलबाहीं ॥
भलो करो तुम मोको ल्याये * आज यशोमति हर्षि उठाये ॥
इहिबिधि गोधन लै सब ग्वाला * यमुनातट पहुंचे नन्दलाला ॥
दो०-दई धेनु बगराय सब, चरन आपने रंग ॥
गाय चरावत नन्दसुत, मिलि ग्वालन के संग ॥ ८ ॥
सो०-उर मुक्तनकी माल, शोस मुकुट कटि पीतपट ॥
हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन संग प्रभु ॥ ८ ॥

अथ वत्सासुर वध लीला २१

खेलत श्याम सखन के माहीं * यमुना के तट तरुकी छाहीं ॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो * पठयो कंस काल नियरायो ॥
वत्सरूप धरि आप समान्यो * कृष्ण ताहि आवतही जान्यो ॥
बलतन चितै कहा मुसकाई * तुम याको जातन हौ भाई ॥
यह तौ असुर वत्स ह्वै आयो * हमको मारन कंस पठायो ॥
हलधरहूं देख्यो धरि ध्याना * कहत सांच तुम श्याम सुजाना ॥
ग्वालन हंसिह सिकहत कन्हाई * बछरा घेरि करौ इकठाई ॥
ल्याये घेरि वत्स सब ग्वाला * वहनहिंघिरहिचपलबिकराला ॥
बार बार हरि ओर निहारै * दांव घात मनमाहिं विचारै ॥

तब हरि कह्यो याहि मैं ख्यावत * तुम तो याकौ छुवन न पावत।।
हाथ लकुटिया लै हरि धाये * वत्सासुर के सन्मुख आये ।।
हरिको जबहिं जुदो करि पायो * असुर कोप करि मारन धायो।।
छंद–धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामके सन्मुखगयो ।।
ह्वै गयौ निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुर के भयो ।।
धायकै हरि चरण ताको पकरि पाँय फिराइयो ।।
पटक्यो धरणितनुअसुर प्रगट्योफेरिसाँस न आइयो ।।
दो०-वत्सासुर सुरपुर गयो, अधम असुर तनु त्याग ।।
सुर हर्षत बर्षत सुमन, गगन सहित अनुराग ।। १ ।।
सो०-धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्णबल देखिकै ।।
धन्य धन्य नन्दलाल, कहत परम आनन्द भरे ।। १ ।।
असुर देखि सब अचरज पायो * कहत हमैं हरि आज बचायो ।।
बछरा करि हम जान्यो याही * यह तौ असुर भयानक आही।।
आज सबनि धरिकै यह खातो * और कौनपै जात निपातो ।।
हरषि हरषि हरिको उर लायो * असुर निकन्दन नाम सुनायो ।।
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई * धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई ।।
यह ऐसो तुम अतिसुकुमारा * किहिबिधि भुजनफिराय पछारा।।
सबही के देखत पलमाहीं * मारयौ असुर डरयो तुम नाहीं।।
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यो * हौ तुम बड़े सबनते जान्यो ।।
कोउ बनमाल आनि पहिरावै * कोउ बनधातु रगरि तनु लावै।।
कोउ कुण्डल शिरमुकुट सवाँरैं * अलकावलिकोउतिलक सुधारैं।।
जात भुजनपर कोउ बलिहारैं * तन देखत कोउ बदन निहारैं ।।
बनफल तोरि धरत कोउ आगे * कहत खाउ मीठे अति लागे ।।
दो०-इहि बिधि हरिको पूजिकैं, ग्वालबाल हरषाय ।।
साँझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ।। २ ।।
सो०-परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं ।।
गावैं शबद रसाल, ब्रजबासी प्रभु के गुणन ।। २ ।।
सखन मध्य सोहत नन्दनन्दन * जलद श्याम तनु चित्रित चंदन।।

मोरमुकट पट पीत सुहावन * इन्द्र धनुष दामिनिहि लजावत ॥
मुक्तमाल बनमाल बिराजै * बक शुक अवलि मनहुंछबिछाजै॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन * कोटिकामछबि शोभित आनन ॥
कुटिल अलक भ्रुवनैन विशाला* गोपदरजकन युत छबिजाला ॥
बल मोहन बनते बनि आवैं * निरखिनिरखि ब्रजजन सुखपावैं॥
सखन सहित हरि धामहिंआये* हरषि यशोमति कण्ठ लगाये ॥
कहत ग्वाल सुन यशुमति मैया * है तेरो रणबीर कन्हैया ॥
बत्सरूप इक दावन बनमें * आप समान्यो बछरागणमें ॥
हम ताको कछु जानि न पायो * सो वह हरिको मारन धायो ॥
क्षणहीं माँझ ताहि हरि मारयो * हम देखत महि पटकि पछारयो॥
यह कोइ बड़ो पूत तैं जायो * भाग हमारे ब्रजमें आयो ॥
दो०-सुनि ग्वालन के बदनते, बत्सासुर को घात ॥
यशुमति सबके पाँय परि, बार बार पछितात ॥ ३ ॥
सो०.भयो महरि उर त्रास, बचे आजु हरि असुरते ॥
मैं न बिगारयो कास, भयो सहायक आनि बिधि॥ ३ ॥
यशुदा सोच करत तू जाये * यह तो ख्याल कान्हके भाये॥
परबत तुल्य बिकट तनु जाही * कियो प्राणबिन क्षणमें ताही ॥
तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं * हम सबको रक्षक यह आहीं ॥
याके चरण कमल चित लैये * बार बार याकी बलि जैये ॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने * ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने ॥
लीलासागर हरि सुखदानी * मोहे सब नर नारि सुबानी ॥
हँसि जननीसों कहत कन्हाई * देख्यो मैं वृन्दावन जाई ॥
अतिरमणीक भूमि द्रुम नीके * कुंज सघन निरखत सुख जीके॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये * यमुना के तट बच्छ चराये ॥
बनफल मधुर मिष्ट अति नीके * भूख मिटी खाये तिनही के ॥
सखन संग खेलत बटछाहीं * बनमें मोहिं लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता * मुदित सुनत हरिकी मृदुबात ॥
दो०-मोहि लियो मन जननिको, मधुरे बचन सुनाय ॥

क्षण में दियो मिटाय ॥ ४ ॥
बतसासुर को सोच डर,
सो०-लगे दुहन सब गाय, जहं तहं हर्षित गोपगन ॥
गये तहां हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥ ४ ॥

अथ धेनु दुहन लीला २२

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन * कहत मोंहि सिखबो गोपालन ॥
मैं दुहिहौं मोंहिं देहु सिखाई * बैठि गये तिन संग कन्हाई ॥
कैसें गैया थर्नाहि लगावत * कैसे नोय पगन अटकावत ॥
घुटरुन गहन दोहनी कैसे * मोंहि बताय देहु तुम तैसे ॥
कैसे धार दूध की होई * देहु दिखाय मोंहिं सब सोई ॥
कहत ग्वाल तुम सुनौ कन्हैया * भई अबार आज अति भैया ॥
तुमको सिखवैं दुहन सबारे * अब कहुं लगिहै चोट तुम्हारे ॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई * भोर दुहौ जिन नन्द दुहाई ॥
दुष्ट दलन सन्तन सुखदाई * ठाढ़े गैय्यन मांझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह साँझकी बिरियां * कहत जननि यह बड़ीकुबरियां॥
लरिकाई कछु छांड़ति नाहीं * सोवहु लाल आय घरमाहीं ॥
दो०-आये हरि यह सुनतही, जर्ननि लिये अंकवार ॥
लै पोढ़ाये सेजपर, अजिर चाँदनो चार ॥ १ ॥
सो०-कहत कहत कछु बात, होय गये बशनींद के ॥
कहत यशोमति मात, होय गयो हरि अजिरपों ॥ १ ॥
दोउ जननो हरुवैके हरिको * सेज सहित लीन्हे भीतर को।
बहुत आज हरि सोय गयो है * अतिहि नींदके बशपि भयो है॥
नेक न बैठत थिर घरमाहों * खेलहिमें मन रहत सदापों ॥
रोहिणी कहत देहु किन सोवन * खेलत हारि गयो मनमोहन ॥
माता हरुवै पवन ढुरावति * निरखि वदन सुन्दरसुखपावति॥
प्रात जगावति नन्दकि रानी * उठहु श्याम सुन्दर सुखदानी॥
नापिन इती सोइयत लाला * सुन सुन प्रातसमय शुचिकाला॥
उग्यो अरुण कुमुदिनि सकुचानो* घरघर ग्वालिनिमथत मथानी॥
बार बार टेरत सब ग्वाला * साँझ कह्यो तुम दुहन गुमाला॥

होइ अबार गाय सब ठाढ़ो * भरि भरि क्षीर भार थन बाढ़ो ॥
वत्स पुकारत आरतताई * दोहत नँहि तुम सोंह दिवाई ॥
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढे * देखत बाट प्रेम उर बाढे ॥
दो०-यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशि मुखते पट टार ॥
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नंदकुमार ॥ २ ॥
सो०-ल्याव रोहिणी मात, बेग तनकसी दोहनी ॥
कह्यो सिखावन तात, आज मोंहिं गैया दुहन ॥ २ ॥
रोहिणी तुरत दोहनी ल्यांई * घरघरते देखन सब धाई ॥
अटपट आसन बैठि कन्हाई * गोथन कर लीन्हो सुखदाई ॥
धार अनतही जात निहारी * हँसे नंद यशुमति महतारी ॥
चितैचोरि चितहरि हँसि लीन्हो * ब्रजबासी जन बलिबलिकीन्हो ॥
कियो यशोमति आनँदभारी * दियो दान बहु बिप्र हँकारी ॥
गावति मंगल ब्रजकी नारी * दुही गाय संतन हितकारी ॥
अति आनंदमगन नँदराई * बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लियो गोद सुन्दर घनश्यामँहि * ब्रजके जीवन धन सुख धामँहि ॥
आयो तहाँ एक बनिजारो * मूंगा मोती बेचनहारो ॥
तिहि लखि अरगे नंदकुमारा * देहि देहि कह बारंबारा ॥
दीरघ मोल कह्यो व्योपारी * रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती * देत नहीं लखि सुंदर जोती ॥

अथ मोतीबोनेकी लीला २३.

दो०-मुक्ता लै हरि घर गये, बये अजिर बलबीर ॥
आलबालथल रोपिकै, पुनि पुनि सींचत नीर ॥ १ ॥
सो०-हँसति यशोमति मात, कहति करत मोहन कहा ॥
यह नँहि जानति बात, ये करता सब जगतके ॥ १ ॥
भये तुरत शाखादल तामैं * यशुमति अजिर मुक्तफल जामैं ॥
फूलत फलत न लागी बारा * ब्रह्मादिक नित करत बिचारा ॥
सुर नर मुनि कोउ मर्म न जानै * देखि देखि अतिअचरज मानै ॥
नंदभवन हरि मुक्त जमाये * ब्रजबनितन गुहि हार बनाये ॥

ब्रजबासी यह प्रभुकी लीला * सबगुण—समरथ सबगुणशीला ॥
क्षणमहँ जासु रजायसु माया * प्रगट करत ब्रह्माण्डनिकाया ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावैं * नंदअजिर सो ख्याल बनावैं ॥
जाको महिमा लखै न कोई * निर्गुण सगुण धरै बपु सोई ॥
लोक रचै नाशै प्रतिपारै * सो ग्वालन संग लीला धारै ॥
शिव बिरंचि मुनि ध्यान न आवै * ताहि यशोमति गोद खिलावै ॥
अगम अगोचर लीलाधारी * सो वृन्दावन कुंजबिहारी ॥
बडे भाग्य सब ब्रजके वासी * जिनके संग बिहरत अविनासी ॥
दो०-धनिधनि ब्रजके नारिनर, धनि यशुदा धनि नंद ॥
बिहरत जिनके सदनमें, ब्रह्म सच्चिदानंद ॥ २ ॥
सो०-कहि कहि देव सिहाय, धन्यधन्य ब्रजबाग बन ॥
जहां चरावत गाय, सकलसुरन शिरमुकुटमणि ॥ २ ॥

अथ बकासुरबधलीला २४.

प्रात चले उठि गाय चरावन * हलधर सुन्दर श्याम सुहावन ॥
देख छबी व्रजसुन्दरि ठाढी * कहत परस्पर आनंदबाढी ॥
देख सखी ब्रजते बन जाहीं * बल मोहन ग्वालनके माहीं ॥
रोहिणिसुत छबि गौर सुहाई * यशुमतिसुवन श्याम सुखदाई ॥
ओढे नील पीत पट सोहैं * सो छबि निरखि वदन मन मोहैं ॥
युगलजलद युगदामिनि जानौ * जोरति नाथ परस्पर मानौ ॥
शीस मुकुट कलकुंडल कानन * झलकै बिंब कपोलन आनन ॥
सखन मध्य सोहत नंदलाला * मंद हँसन दृगकमल विशाला ॥
कटि किंकिणि करि लकुट सुहाये * जात चले बन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि छबि ब्रजनारी * गये बनहिं विहरन बनवारी ॥
बनबन फिरत चरावत गैयाँ * हलधर श्याम सखा इक दैयाँ ॥
करत बिहार बिबिध बनमाहीं * बालकेलि रस बर्णि न जाहीं ॥
दो०-कबहूँ गावत सखन संग, कबहुँ बजावत बेनु ॥
धौरी धूमरि नाम लै, कबहुँ बुलावत धेनु ॥ १ ॥
सो०-कबहुँ नचावतमोर, सुन्दर श्यामलजलदतन ॥

गरजि मुरलिधुनि घोर, बरषत परमानंदजल ॥ १ ॥
खेलत बिबिध खेल मनभावन * श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नंदलाला * कह्यो चलहु जल देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सरगिना टेरो * सुनत ग्वाल सब लाये घेरो ॥
गोधनवृन्द हाँकि सब लीन्हो * ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हो ॥
तहाँ बकासुर छल करि आयो * मायारचित सुरूप बनायो ॥
एक चोंच भूतलमहँ लाई * एक रही आकाश समाई ॥
मगमहँ बैठो बदन पसारी * ग्वालन देखि भयो भय भारी ॥
बालक जात हुते जे आगे * ताहि देखि सो पाछे भागे ॥
कहत भये सब हरिसों आई * आगे एक बलाय कन्हाई ॥
आवत नितहि ग्वाल इहि ठाहीं * ऐसो कबहुं लख्यो हम नाहीं ॥
तबहिं कृष्ण ताको पहिंचान्यो-* यहै बकासुर मैं यह जान्यो ॥
पलमें आज याहि मैं मारौं * असुर चोंच धरि बदन बिदारौं ॥
दो०-निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास ॥
कहत सखा सब श्यामसों, नहिं जीवनकी आस ॥ २ ॥
सो०-अजहूँ नाहिं डरात, बचे कितिक उत्पातते ॥
चले जहाँ हरि जात, हम बरजत मानत नहीं ॥ २ ॥
तबहरि कह्योचलहु तिहिपासा*सबमिलि मारिकरहिं बकनासा ॥
जब हरिसंग चले सब ग्वाला * देख्यो जाय बकहिं बिकराला ॥
ताके निकट गये सब जबहीं * लियो गील हरिको बक तबहीं ॥
जान्यो असुर काज मैं कीन्यो * तबहीं बदन मूँदिकै लीन्यो ॥
ग्वाल पुकारत आरत भागे * बलसों आय कहन सब लागे ॥
हम बरजत हठि गये कन्हाई * लीन्हे लील असुर बक धाई ॥
हरिचरित्र कछू जानि न जाहीं * उपजी आगि असुरतनुमाहीं ॥
लाग्यो जरन भयोअति व्याकुल*हरिकोउगलिदियोअतिआकुल ॥
बहुरो पकरनको मुख बायो * चोंच पकरि हरि चीर बहायो ॥
मरत चिकार असुर अतिपारी * व्याकुल भये ग्वाल भय भारी ॥
ग्वालन बिकल देखि बलिरामा * कहत असुर मार्यो घनश्यामा ॥

टेरि उठे उत कुँवर कन्हाई * आवहु सखावृंद सब धाई ॥
दो०-वक बिदारि हरि सखनकों, टेरत आवहु धाय ॥
चोच फारि मारो असुर, तुमहूं करौ सहाय ॥ ३ ॥
सो०-गये सखा सब धाय, सुनत श्यामके बचन बर ॥
निरखि नयनसुख पाय, पुनिपुनि भेटत पुलकि तन ॥ ३ ॥
कहत परस्पर सखा सयाने * ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने ॥
इन्हैं नाहिं कोउ घात करैया * यै हैं असुरनके दलवैया ॥
जबते इन्हें यशोमति जाये * तबते असुर कितेकउ आये ॥
तृणा पूतना शकटा मारे * तब ये रहे बहुतही बारे ॥
हम देखत बत्सासुर मारयो * कितिक बातयह बका बिदार्यो ॥
इनके गुण कछु जानि न जाहीं * हम अपने जिय डर वृथाहीं ॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये * धनि हम इनके सखा कहाये ॥
बकहिं मारि सुन्दर घनश्यामा * यमुनातट आये सुखधामा ॥
सुरभीगण सब नीर पियाये * सखनसमेत आप प्रभु न्हाये ॥
घसि बनधातु चित्र तन कीन्हो * मोरमुकुट माथे धरि लीन्हो ॥
बनमाला रचि सखन बनाई * प्रेमसहित हरिको पहिराई ॥
बनफल मधुर गोप लै आये * सखनसहित हरि भोग लगाये ॥
दो०-बल मोहन घरको चले, जानि साँझकी बेर ॥
लीनी गैयाँ घेरि सब, मुरलीकी धुनि टेर ॥ ४ ॥
सो०चले बजावत बेन, ग्वालवृंदके मध्य हरि ॥
अँग अँग छबिको ऐन, ब्रजजन मोहन साँवरो ॥ ४ ॥
सुनि मुरलीकी टेर रसाला * देखनको धाई ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अतिसुख पावत * देख सखी बनते हरि आवत ॥
नाना रंग सुमनकी माला * श्यामहिये छबि देति बिशाला ॥
मोरपक्ष शिर मुकुट बिराजै * मधुर मधुर मुख मुरली बाजै ॥
भ्रकुटी बिकट निकट सुखदाई * तिलकरेख छबि बरणि न जाई ॥
कुंडल लोल अलक घुंघरारी * निरखि सखी लागति अतिप्यारी ॥
नासानिकट अधर अरुणाई * जनु शुकबिंबहिं चोंच चलाई ॥

मंद हँसिन घनदामिनि जैसे * दुरि दुरि प्रगट होत हैं तैसे ॥
तनु घनश्याम कमलदल नैना * बोलत मधुर मनोहर बैंना ॥
मुख अरबिंद मन्द सुर गावत * नटबर रूप सबन मन भावत॥
सब अङ्ग चन्दन खौरि बनाये * गुंजमाल मन लेत चुराये ॥
या मोहन छबिपर बलिजैये * नन्दनन्दन देखत सुख पैये ॥
दो०-ग्वालबाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय ॥
साँझ समय बनते बने, आये धेनु चराय ॥ ५ ॥
सो०-रँभति धाई गाय, बत्स सुरति करि पय स्त्रवत ॥
हरखि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहि ॥ ५ ॥
इतनीं कहत श्याम घर आये * जननी दौरि हरषि उर लाये ॥
ब्रजलरिका सब तुरतहिं धाये * महरिमहर–पद शीश नबाये ॥
ऐसो पूत धन्य तुम जायो * इनको गुण कछू जात न गायो॥
आज गये बन गाय चरावन * चले यमुनतट जलहि पियावन ॥
तहाँ असुर इक खग तनुधारी * रह्यो यमुनतट बदन पसारी ॥
एक चोंच महिसों लपटाई * एक रह्यो आकाश लगाई ॥
हम बरजत पहिले हरि धायो * ताके मुखमें जाय समायो ॥
हम सब डरपि भजे बलपासा * अति ब्याकुल तनु भये निरासा॥
कैसे धौं हरि बाहिर आयो * चोंच फारि तेहि मारि गिरायो॥
सुनत नन्द यशुमति ब्रजनारी * चकितचित्त रहेहरिहिं निहारी॥
यशुदा कहति कहा कोउ जानै * नित प्रति होत आनकी आनै ॥
भयो आज कोउ सुकृत सहाई * बिधिकीगति कछुजानि न जाई॥
दो०-जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि ॥
कहा सरयो हमरे जतन, विधिघति अगम अगाधि ॥ ६ ॥
सो०-किनधौं करी सहाय, को जाने भावी प्रबल ॥
को मेरे पछताय, करी अयानी बूझबिन ॥ ६ ॥
ले बलाय छतियाँ हरि लाये * प्रेम सलिल लोचन भरि आये ॥
मैं बलिजाऊँ कहति कछु खाहू * तुम कत गाय चरावन जाहू ॥
नन्द महर से पिता तुम्हारे * मोसी मात जाय बलिहारे ॥

खेलत खात रहौ अपने घर * दधिमाखनपकवानबिबिधबर ॥
निरखि बदन सुनि बचनतुम्हारे * लोचन श्रवण सिरात हमारे ॥
दुष्ट दलन भक्तन सुखदानी * बोलें मधुर मातुसो बानी ॥
मैया मैं न चरैं हौं गैया * अब बन मेरो ज़ात बलैया ॥
मोसों सबै ग्वाल न जाई * गाय घिरावत हैं बरि आई ॥
दौरत मेरे पाँय पिराहीं * जब मैं बैठ रहौं तरु छाहीं ॥
जो न पत्याय बूझ बलभाई * देहि अपनी सोंह दिवाई ॥
यह सुनतहि यशुमतिरिसियानी * गारि देति ग्वालन दुख मानी ॥
मैं पठवति लरिकहिं बन जाई * आवहि तनक मनहि बहराई ॥
दो०-जानहिं कहा चराय कै, अबही मोहन गाय ॥
अतिबारो मेरो सुवन, मारत ताहि रिंगाय ॥ ७ ॥
सो०हरि जनके सुखदाय, को जाने तिनके चरित ॥
मधुरे बचन सुनाय, मोहि लियो मन मात के ॥ ७ ॥

अथ चकई भौरा खेलन लीला २५.

कछुक खाय हरि निशिको सोये * प्रात जगाय जननि मुख धोये ॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई * जननीसों बोले हरषाई ॥
दे मैया भौंरा चक डोरी * खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी ॥
हरषि जननि आरे पर भाखे * तुमहित नये मोल लै राखे ॥
लै आये हरि तुरत निकारी * भये मगन अति रंग निहारी ॥
बार बार हर्षित मुख भाखे * मैया बिन अरु को लै राखै ॥
बिहँसि चले फेरत चक डोरी * खेलन सखन संग ब्रजखोरी ॥
जैसेई आप सखा सब तैसे * सुन्दर कोटी मनोभव जैसे ॥
निरखि २ छबि गोप किशोरी * बार बार डारति तृण तोरी ॥
सबहीको मन मोहन भावैं * सब व्रजतिय हरिसों मन लावैं ॥
यह बासना करैं ब्रजबाला * होंहि हमारे पति नन्दलाला ॥
हरि अन्तरयामी सब जानै * सबके मनकी रुचि पहिचानैं ॥
दो०-चितदै जो हरिको भजै, कोउ कौनहूं भाव ॥
ताको तैसेई सदा, प्रगटत त्रिभुवनराव ॥ १ ॥

सो०-भक्तन के सुखदान, भक्त बछल भगवान हरि ॥
नारि पुरुष नहिं, भान प्रेम भाव के वश सदा ॥ १ ॥
गोपिन के यह ध्यान सदाई * नेक न अन्तर होहिं कन्हाई ॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी * करहि बात उनके मनमानी ॥
मारग चलत तिन्हें हठि रोकैं * खेलत साँझ जहाँ तहँ टोकैं ॥
चकरी भौंरा डोरि फिरावैं * तिनके भूषणसों अरुझावैं ॥
काहूसों हँसि बदन सकोरैं * काहूसों दृग भौंह मरोरैं ॥
काहूसों अँखियाँ मटकावैं * आप हँसै अरु तिन्हैं हँसावैं ॥
युवतिन के मन बसे कन्हाई * देखे बिन इक पलन सुहाई ॥
हरिको खेलत माँझ खिजावैं * खटखौंरी दै गारी गावैं ॥
गेंद उरोजनमाँहि दुरावैं * इहि बिधि हरिसों अंग छुवावैं ॥
कुंचुकि फारि आपही लेहीं * यशुदहिं जाय उरहनो देहीं ॥
अन्तर भुज गहि हरिहि दुरावैं * कहैं चलो नन्दरानि बुलावै ॥
यशुमति पै तुमको लै जैहैं * कुटिल भौंह किय हम न डरै हैं ॥
दो०-यौं व्रजबनितन नेहबश, आनन्द छबिघनरास ॥
रसिकपुरन्दर साँवरो, ब्रजमें करत बिलास ॥ २ ॥
सो०-अब बरणों सुखखान, हरि वृषभानु कुमारि को ॥
प्राण एकही जान, प्रथम मिलन दोउ देहको ॥ २ ॥

अथ राधाजू की प्रथम मिलन लीला २६

खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी * मेघश्याम तन पीत पिछोरी ॥
श्रवणन कुण्डल की छबि छाजै * मोर पँखनको मुकुट बिराजै ॥
दशन दमक दामिनिद्युति ठौरी * हाथ लिये फेरैं चक डोरी ॥
गये यमुनाके तट मनमोहन * नाहीं तहाँ सखा कोउ गोहन ॥
औचक दृष्टिपरी तहँ राधा * प्रेमराशि गुण रूप अगाधा ॥
नयन बिशाल भाल दिये रोरी * नीलबसन तनकी छबि गोरी ॥
बेनी पीठ ढरत झकझोरी * अति छबि पुंज दिननकी थोरी ॥
संग लरकिनी आवति देखीं * चितै रहे मुख रोक निमेखी ॥
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई * अनुपम छबि लखि रहे भुलाई ॥

नयननयन मिलि परी ठगोरी * बूजत श्याम कौन तैं गोरी ॥
रहत कहाँ काकी है बेटी * अबलौं नहिं कहुँ ब्रजमें भेंटी ॥
काहे को हम ब्रजतन आवैं * खेलत रहत आपने गावैं ॥
दो०-सुनत रहत श्रवणन सदा, नन्दढोटा ब्रजमाँहि ॥
घर घरते नित चोरकै, माखन दधि ले खाँहि ॥ १ ॥
सो०-बिहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुराय हैं ॥
आवहु किन ब्रजधाम, नितहि खेलिये संगमिलि ॥ १ ॥
रसिक शिरोमणि नागर दोऊ * प्रीति पुरातन जान न कोऊ ॥
ब्रजवासी प्रभु कुंजबिहारो * बातन भुरै लई हरि प्यारो ॥
प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो * गुप्त प्रेम शिशुता प्रगटारयो ॥
कहतश्याममन कत सकुचावहु * खेलन कबहुँ हमारे आवहु ॥
दूर नहीं कछु सदन हमारो * श्रवणन सुनियत बोल पुकारो ॥
लोज्यो मोंहि टेरि नन्दपौरो * कान्ह नाम मेरो सुन गौरी ॥
सूधी बहुत देखियत तुमहूँ * ताते साथ कीजियत हमहूँ ॥
तुम्है बबा वृषभानु दुहाई * घरो पहर खेलौ इत आई ॥
गैया गिनन नन्द जब जैहैं * तिनके संग हमहु उत ऐहैं ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहौ * खरक माँझ तौ मोकौ पैहौ ॥
रसिक शिरोमणि जानन राई * इमि प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ़ हरिकी मृदु बानी * मनही मन प्यारी मुसकानी ॥
दो०-गुप्त प्रोति प्रगटो नहीं, दोउअन हृदय छिपाय ॥
मनमोहन प्यारी चली, घरको, नयन चलाय ॥ २
सो०-चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो साँवरो ॥
जानी बड़ी अबार, मात त्रास उर आनिकै ॥ १
कहतिसखिनसोंचलोकुंवरिबर * को जैहै खेलन इनके घर
चलौ बेगि अपने घर जाहीं * भइ अबार यमुना तट माहीं
बचन कहत ऊपर मुखमाहीं * हृदय प्रेम दुख मन हरिपाहीं
गई भवन बृषभानु कुमारी * जननी कहति कहाँ हुति प्यारी
अबलौं कहा अबार लगाई * गैया खरक देखि मैं आई

ऐसो कहि मातहि बहिराई * अन्तरगति बसिरहे कन्हाई ॥
बिरह बिकल तनु गृह न सुहाई * सुन्दर श्याम मोहनी लाई ॥
खान पान कछु नेकु न भावै * कंचल चित्त पुलकि तनु जावै॥
मात पिता को मानति त्रासा * नयनन हरि दर्शनकि प्यासा ॥
कहति दोहनो दै मोहि मैया * जैहौं खरक दुहावन गैया ॥
अहिर दुहत तब गाय हमारो * जब अपनो दुहि लेत सबारो॥
घरि इक मोंहि लगीं तहँ जाई * तू मति आउ खरक अतुराई॥
दो०-लई मातसों दोहनो, चलो दुहावन गाय ॥
मन अटक्यो नन्दलालसों, गई खरक समुहाय ॥ २ ॥
सो०-मगमग सोचति जाय, कब देखौं वह साँवरो ॥
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो ॥ ३ ॥
देखे जाय तहाँ हरि नाहीं * भई चकित प्यारो मनमाहीं ॥
कबहूं इत कबहूं उत डोलै * प्रेम बिकल कछु मुख नहिं बोलै॥
देखे नन्द संग हरि आवत * ललकि लगे लोचन सुख पावत॥
देखो श्याम राधिका ठाढ़ो * लई बुलाय प्रोति अति बाढ़ो॥
कह्यो महर लखि लेखहु दोऊ * दूर कहूँ मति जैयो कोऊ ॥
सुनि बृषभानु सुता इत आई * अपने संग खिलाव कन्हाई ॥
हरितन रहियो नेक निहारै * कोई कहूँ गाय जनि मारै ॥
नन्दबबाको बात सुनौं हरि * जाहु न मोढिगते कतहूं टरि ॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हे * राधे हरिहिं बाँह गँहि लीन्हे ॥
तुमको कहूँ जान नहिं देहौं * जो जैहौ तौ पकरि लै ऐहौं ॥
मेरी बाँह छोड़ि दे राधा * कहत श्याम ऊपर मन साधा ॥
तुम्हरी बांह न तजों कन्हाई * महर खीझिहै हमको आई ॥
दो०-परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द ॥
करत आपनी घात दोउ बँधे प्रेम के फन्द ॥ ४ ॥
सो०-समुझि पुरातन नेह, ब्रजविलास हित तनु धरे ॥
चलन चहत बन गेह, युगल बिहारी कुंजके ॥ ४ ॥
तबहिं श्याम घन घटा उटाई * गरजि मेघ महि चहुँदिशि छाई॥

पवन झकोर चली झकझोरी * चपला चपल चमक चहुं ओरी ।।
ह्वैगइ भूमि सकल अँधियारी * तैसिय तरुतमाल द्युतिकारी ।।
डरे देखिकै कुँवर कन्हाई * कह्यो राधिकासों नन्दराई ।।
कान्है संग लिये घर जा री * भई आकाश घटा अतिभारी ।।
लिये बांह गहि कुंवर कन्हाई * चले युगल बन घर हर्षाई ।।
नवल राधिका नवल बिहारी * पुलक अंग मन आनन्द भारी ।।
नवल नेह नवरँग मन भायो * नवल कुंजबन सुभग सुहायो ।।
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले * गुंजत भ्रमर मत्त रसभूले ।।
सुभग यमुनजल पवन झकोरै * उठत श्याम छबि कुंजहिलोरै ।।
बनज बिपुल बहु रंग सुहावन * चारुबिचित्र पुलिन अतिपावन ।।
गये युगल तहँ रसिक रसीले * नागर नवल प्रेमरस गीले ।।
दो०-बिहरत विविध बिलासबन, युगलरूपकी रास ।।
गुण गावत मुनि वेद विधि, अहिपति पति कैलास ।। ५ ।।
सो०-अति रहस्य सुखदाय, बनबिहार नन्दलाल को ।।
क्यों सु कहै कवि गाय, वेद भेद पावैं नहीं ।। ५ ।।

गीतगोविंदे श्लोकः ।

"मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्व कुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः,, ।। १ ।।

चले सदन प्रभु कुंजबिहारी * गृह पठई अंकम दै प्यारी ।।
प्यारी की सारी हरि लीन्ही * पीत पिछौरी प्यारिही दीन्ही ।।
बादर जहँ तहँ दिये उड़ाई * आये सदन श्याम सुखदाई ।।
रही यशोमति हरिहिं निहारी * ओढ़े देखि शीसपर सारी ।।
मनधौं कहत कहाँ यह पाई * पीत पिछौरी कहाँ गँवाई ।।
यशुमति तूरत आँखि पहिचानी * ब्रजयुवतिन भुरये यह जानी ।।
पूँछत हरिहिं विहँसि नँदरानी * तरुणिनकी सिखई बुद्धि ठानी ।।
पीत पिछौरी कितहि बिसारी * इह तौ लाल तियनकी सारी ।।

जान लई जननी हरि जानो * तब इक बुद्धी तुरत उर आनो ॥
मैं लै गाय गयो यमुना री * तहँ बहु भरति हुति पनिहारी ॥
बिडरी गाय भजीं सब नारी * बची बँसुरिया बहुत सँभारी ॥
हौं लै भजो औरको सारी * सो लै चादर गई हमारी ॥
दो०-पीत पिछौरी लेभजो, मैं पहिंचानत वाहिं ॥
मैया री मैं जायकै, धरि लै आवत ताहिं ॥ ६ ॥
सो०-हरिमायाको जानि, पीतांबर ताको कियो ॥
जननि दिखायो आनि, कहि लै आयो ताहिसों ॥ ६ ॥
राधा गई सदन समुहाई * हाथ दोहनी दूध भराई ॥
परम प्रीति हरि बसना दुरायो * जननी द्वारहिते गुहरायो ॥
और कि और कहत मुखबानी * जननी दौरि देखि भय मानी ॥
कहत दोठि लागी कहुँ वारी * उर लगाय पछितात निहारी ॥
बूझति नेह बिकल महतारी * कहा भयो राधा तोहिं प्यारी ॥
अबहीं खरक गई तू नीके * आवत कौन बिथा भइ जीके ॥
इक लरकनी संगही मेरे * कारे डसी आय तोहिं नेरे ॥
श्यामबरण इक ढोटा आयो * कहत सुन्यो बह नंदको जायो ॥
कछु पढ़िकै उन तुरतहि झारी * जानति नहीं कौनकी बारी ॥
मेरे मन भरि त्रास गयो री * अब कछु नीको नेकु भयो री ॥
अतिप्रबीण वृषभानु दुलारी * यह कहि समझाई महतारी ॥
दो०-सुनि जननी राधाबचन, उरसों लीन्ही लाय ॥
कहत टरी करबर बड़ी, बार बार पछिताय ॥ ७ ॥
सो०-कहै सुता द्वै तात, पाये देवन द्वार परि ॥
भइ आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली ॥ ७ ॥
खीझो कछू कुँवरिपै जननी * घर नहिं रहति फिरति भइहरनी ॥
कितनो कहति तोहिं मैं हारी * दूरि कहूँ बाहर जनि जा री ॥
हैं लरिकनी सबन घरमाहीं * तोसी निडर कहूं कोउ नाहीं ॥
कबहुँ खरक कबहूं बन जाई * कबहुं फिरति यमुनातट धाई ॥
चितै अकाश धरति पग धरनी * बात कहत लागति तोहिं जरनी ॥

सात बर्ष की भई कुमारी * बहुत महर बृषभान दुलारी ॥
आज कुशल कुलदेवन कीनो * बिधि बचाय बिष धरते लीनो ॥
शीतल जल लै तुरत न्हावाई * अङ्ग अङ्गोछ बसन पहिराई ॥
बारहि बार कहति कछु खा री * अब कहुँ खेलन दूरि न जा री ॥
यह सुनि हँसै मनहिं मन प्यारी * हृदय ध्यान हरि कुंजबिहारी ॥
कहत दूरि अब कतहुँ न जैहौं * गाँव घरहि खेलति नित रैहौं ॥
जिनके गुणनि बिरंचि भुलाने * तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥
दो०-जनरंजन भंजन कलुष, राधा नन्दकुमार ॥
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रज में युगल बिहार ॥ ८ ॥
सो०-देखि अनूपम बाल, मात पिता गुरुजन हरिहिं ॥
असुर लखत बिकराल, नव किशोर चितचोर तिय ॥ ८ ॥
सर्वरूप सब घटके बासी * सबबिधिकरन सकल सुखरासी ॥
सर्व भाव सब फलके दायक * सर्वोपरि सब गुणके लायक ॥
सर्व-आदि सब-अन्तरजामी * सबते परे सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा * प्रेम प्रीति दोउ अगम अगाधा ॥
छबि शृङ्गार मनहुं शुभ जोरी * करत विहार श्याम अरु गोरी ॥
बसे श्याम श्यामा उर माहीं * देखे बिन भावत क्षण नाहीं ॥
खेलन मिस वृषभानुकिशोरी * आई नन्द महरिको पौरी ॥
टेरत मधुर बचन सकुचाई * घर भीतर हैं कुँवर कन्हाई ॥
सुनत श्याम कोकिल सम बानी * अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत घरि * तुरतहिसो बिसरायदियो हरि ॥
तू पहिचानति इनको मैया * कहत बारही बार कन्हैया ॥
मैं यमुना तट कालिह भुलान्यो * बाँह पकरि मोको इन आन्यो ॥
दो०-तुहि सकुचति आवति इहाँ, मैं दै सोह बुलाय ॥
अतिनागर जननो हृदय, दियो प्रेम उपजाय ॥ ९ ॥
सो०-भीतर लेहु बुलाय, कहति मात हरिसों हरषि ॥
चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनन्द भयो ॥ ९ ॥
नैन सैन मिलि दोउ सुख पायो * बिरहताप दुख द्वन्द्व नसायो ॥

मनहीं मन आनंद अतिभारी * भये मगन दोउ रूप निहारी ॥
कहत श्याम राधा किन आवै * तुमको यशुमति माय बुलावै ॥
बाँह पकरि ल्याये बनवारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ॥
देखि रूप मनमाँझ सिहानी * बूझति नंदमहरकी रानी ॥
ब्रजको तोहिं न कबहुं निहारी * कौन गाँव है तेरो प्यारी ॥
को तेरो तात कौन मतहारी * कहा नाम तेरो है प्यारी ॥
भूलिगयो हौ काल्हि कन्हाई * भलो करी तू कर गहि ल्याई ॥
धन्य कोखि जिन तोकहँ धारी * धन्य घरी जिंहि तू अवतारी ॥
देखि रूप यशुदा अभिलाषी * सवितासों बिनती कछु भाषी ॥
नयन बिशाल बदन शुभ छोटी * भलो बनो है सुन्दर जोटी ॥
बारबार बूझति हरषाई * है तू कौन महरको जाई ॥
दो०-मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानति माय ॥
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय ॥ १० ॥
सो०-अब मैं लीन्हो जान, वे तो कुलटा हैं बड़ी ॥
हैं लंगर वृषभान, गारि देति हँसि नंदघरनि ॥ १० ॥
राधा बोलि उठी इत आई * करी कछू बाबा लँगराई ॥
ऐसी समरथ कबहुं न पाई * हँसि यशुमति राधा उर लाई ॥
कहति महरि कीरति हम जोटी * अब कीजत है तेरी चोटी ॥
यशुमति राधा कुँवरि सँवारे * प्रेमसहित बारनि निरवारे ॥
बड़े बार कोमल अंतिकारे * लै सुमनासुत औंछ सँवारे ॥
माँग पारि बेनी रचि गूथी * मानहुँ सुन्दर छबिकी यूथी ॥
गोरे बदन बिंदु करि वंदन * मानौ इंदुमध्य भुवनंदन ॥
सारी नई सुरंग निकारी * यशुमति अपने हाथ सँवारी ॥
बदन पोंछि अंचरसों दीन्हो * उर आनंद निरखि छबि कीन्हो ॥
तिल चाँवरी बतासे मेवा * कुँवरि गोद भरि बिनवति देवा ॥
कह्यो कान्ह सँग खेलौ जाई * यह सुनि कुँवरि मनहिं हरषाई ॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा * खेलत दोउ छबिसिंधु अगाधा ॥
छंद–छबिसिंधु परम अगाध दोऊ नंदसदन बिराजहीं ॥

लखिरूप कोटिककामरति घनदामिनीद्युति लाजहीं ।।
यशुमति बिलोकति चकितदंपतिरूपमन आनंदभरी ।।
सोइ भाव देख्योदुहुँनके उर जोइ अभिलाषा करी ।। ६ ।।
दो०-खेलत दोउ झगरन लगे, भरे परम अह्लाद ।।
मानौ घन अरु दामिनी, करत परस्पर बाद ।। ११ ।।
सो०-अमिय बचन रसमूल, अकथनीय छबिअमितगुण ।।
रहो यशोमति भूल, युगलकिशोर बिहार लखि ।। ११ ।।
चलीं महरिसों कहि सुकुमारी * सदन आपने जानि अबारी ।।
यशुमति निरखि कह्यो हरषाई * खेल्योकरि हरिसँग नित आई ।।
बोलि उठे मोहन सुनु राधा * तू कत सकुच करै जिय बाधा ।।
मैं बोलत तू आवति नाहीं * जननीसों ड़रपति मनमाहीं ।।
तोको लखि मैया सुख पावै * देखि कितो करि छोह बुलावै ।।
सुनि मोहनके बचन सयानी * चितैरही मुख मन मुसकानी ।।
विहँसि चली वृषभानुदुलारी * हरिमूरति उर टरत न टारी ।।
गई सदन बूझति महतारी * कहाँ हुती अबलौं री प्यारी ।।
बेनी गूंथ माँग किन कीन्ही * बेंदी माँग लाल किन दीन्ही ।।
खेलत रही नंदके द्वारी * यशुमति बोलि निकट बैठारी ।।
बूझन नाम लगी पुनि मेरो * बाबाको पूँछयो अरु तेरो ।।
मोहिं चितै पुनि सुतहिं निहारी * कछु सवितासों गोद पसारी ।।
दो०-मेरी शिरबेनी गुही, बेंदी लाल बनाय ।।
पहिराई निजहाथसों, सारी नई मँगाय ।। १२ ।।
सो०-तिलचाँवरि दै गोद, बिधनासो बिनती करी ।।
उर करिकै अतिमोद, तोहिं बिहँसि गारी दई ।। १२ ।।
बिहँसि कह्यो तोको नंदरानी * वह जसी तैसी मैं जानी ।।
तोहि नाँव धरि धर्यो बबाको * कह्यो धूर्त वृषभानु सदाको ।।
तब मैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं * हँसि लपटानि लगी तब हमहीं ।।
सुनि कीरति राधाकी बातैं * सरलसुभाव भरी शिशुतातैं ।।
कहति ज्वाब तैं नीको दीनो * बेटी दाँव आपनो लीनो ।।

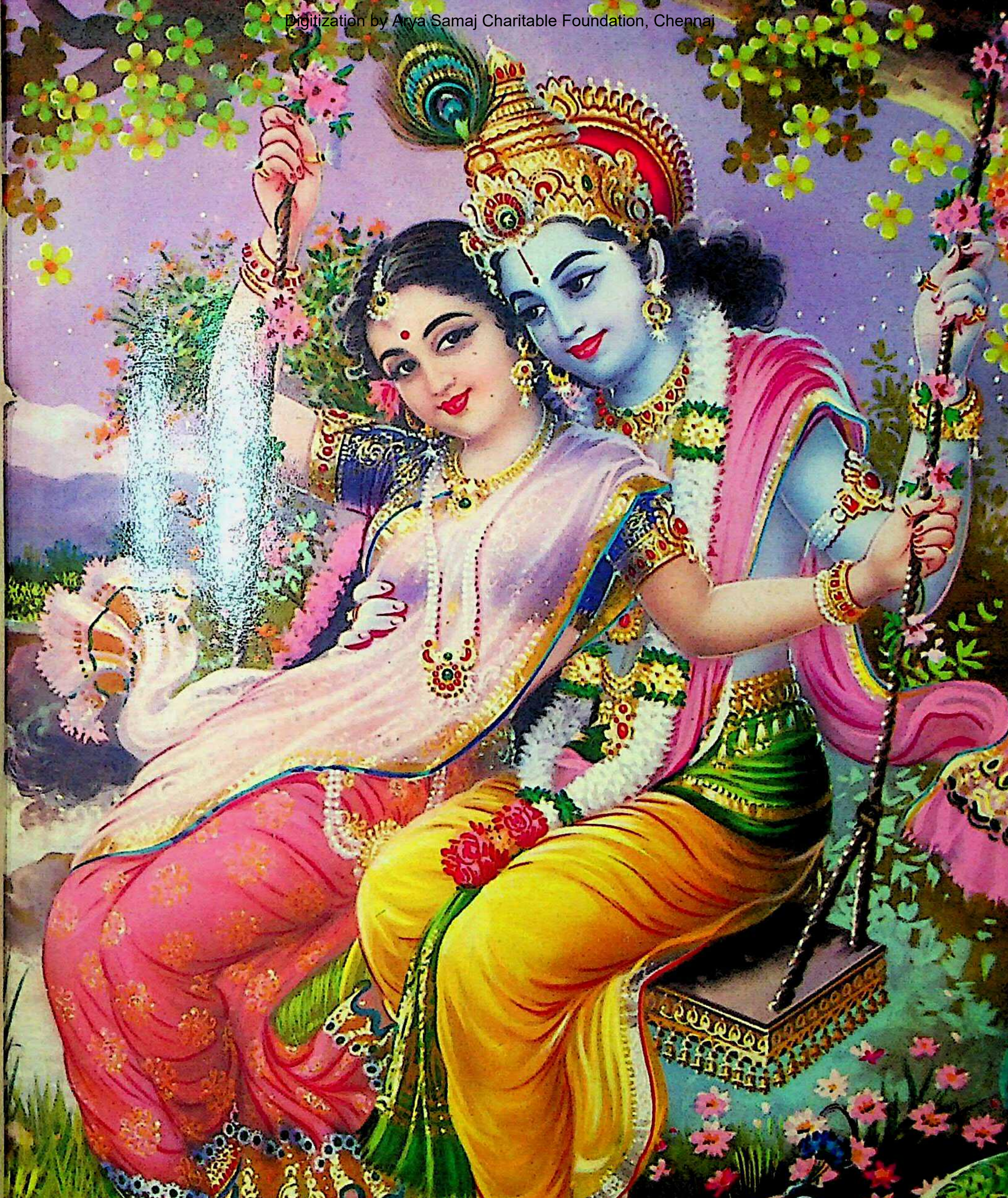
Ramalingkum

1056

RADHA KRISHNA JHULA

HEM CHANDER BHARGAVA & CO.
DELHI-6.

जो कछु मोहिं कह्यो नंदघरनी * सो सब है उनहीकी करनी ॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये * मनमें अति आनंद बढ़ाये ॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातैं * बूझति है जननी राधातैं ॥
सुनि सुनि बरसानेकी नारी * गावति यशुमतिको हितगारी ॥
सुनि बातैं कीरति मुसक्यानी * नंदरानीके जियकी जानी ॥
मेरी सुता बिमल चपलासी * वे हरि मेघश्याम छबिरासी ॥
बाढ्यो उर आनंद हुलासी * कीरित गई समुझि पतिपासी ॥
छं०—समुझि पतिके पास कीरति गई अति आनंदभरी ॥
प्रीति रीति जनाय हितसों बात सब परगट करी ॥
भयो अति उत्साह दंपति हरषि मन आनंद भरे ॥
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुणगावत खरे ॥ ७ ॥
दो०-युगल किशोर स्वरूप बर, वृन्दाबन रसखान ॥
नव दुलहिनि दूलह सदा, राधा श्याम सुजान ॥ १३ ॥
सो०-दूलह दुलहिनि चार, माँडव वृन्दाबिपिनके ॥
गावत नित्य बिहार, शेष महेश गणेश बिधि ॥ १३ ॥
कहति यशोमतिसों हरि प्यारे * जहँ तहँ रहत खिलौना डारे ॥
राधा जिन लै जाय चुराई * आवत साँझ सबार सदाई ॥
चितै रहति मुरलीको घाहीं * मेरो प्राण बसत इहिमाहीं ॥
तेरे भाये नेक न माता * राखि उठाय मान मो बाता ॥
बलहूको पतियाहि न राई * राखु खिलौना सबहि छिपाई ॥
कहति जननि हँसि लालन मेरे * को लै जाय खिलौना तेरे ॥
नेक सुनन जाको जो पाऊं * वाको ब्रजते बास नशाऊं ॥
बिन देखे तू काको कैहै * सो कहुँ कैसे कै प्रगटैहै ॥
आवतही राधा लै जैहै * फिरि तैं पाछे री पछितैहै ॥
अजहूं राखि उठाय सबारी * माँगेते पुनि दैहै गारी ॥
जननी हरिकी बतियाँ भोरी * श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जानै * बिरुझाने क्योंहूँ नहिं मानै ॥
दो०-सैंततिहै हरिके हरषि, महरि खिलौना जान ॥

भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान ॥ १४ ॥
सो०-यशुमति सुखकी रास, नंदभवन भूषण परम ॥
व्रजमें करत विलास, व्रजबासी जन जांहि बलि ॥ १४ ॥
कहति श्यामसों यशुमति मैया * पियहु दूध कछु लेहुँ बलैया ॥
आज सबार दुही मैं गैया * सोई दूध प्याव मुँहि मैया ॥
और दूध रुचि मोंहि न आवै * जो तू कोटि यत्न करि ल्यावै ॥
जननी तबहिं सौंह करि ल्याई * यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोंहि प्यारो * औटि धर्यो तुम्हरे हित न्यारो ॥
तातो जानि बदन नहिं ल्यावै * फूँकि फूँकि पय जननी प्यावै ॥
पय पीवत मोहन अलसाये * सुन्दर सेज जननि पौढ़ाये ॥
प्रात जगावति नंदकि रानी * उठहु लाड़ले शारंगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे * ठाढे ग्वाल बाल सब द्वारे ॥
हरहु ताप मुखकमल दिखाई * करहु कलेऊ मिलि दोउ भाई ॥
सदमाखन दधि रैन जमायो * माँगि लेहु अरु जो मन भायो ॥
सखावृंद सब लेहु बुलाई * उठहु लाल जननी बलिजाई ॥
दो०-तब हँसि चितये सेजते, उठे श्याम सुखदानि ॥
यशुमति जलझारी लिये, मुख धोये निजपानि ॥ १५ ॥
सो०-बोलि उठे बलराम, उठे सबारे आज हरि ॥
हर्षि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि भ्रातसों ॥ १५ ॥
द्वारेते सब सखन बुलायो * देखि बदन सबहिन सुख पायो ॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई * कियो कलेऊ कछु दोऊ भाई ॥
गैयन लै बन चले गुवाला * संग चले मोहन नंदलाला ॥
टेर सुनत बालक सब धाये * घरघरके बछरन लै आये ॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया * चलहु आज वृंदावन भैया ॥
यमुनातट सब बच्छ चरैहैं * बंसीबट खेलत सुख पैहैं ॥
भली कही हँसी कह्यो गुपाला * चले सकल वृन्दावन ग्वाला ॥
कोउ टेरत कोउ घेर लै आवैं * कोउ सुरभीगण जोरि चलावैं ॥
कोउ भृंगी कोउ वेणु बजावैं * कोउ परस्पर होरी गावैं ॥

हेरी टेर सुनत मनमोहन * कहत मोहिंसिखवहुनिजगोहन ।।
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई * हँस सकल पूरी नहिं आई ।।
कहत श्याम अबकैं फिर लीज्यो * अबकैं जाय तबे हँसि दीज्यो ।।
दोहा—गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द गौ साथ ।।
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावन के नाथ ।। १६ ।।
सोरठा—फिरत चरावत धैन, दीनबंधु दुष्टनदलन ।।
कृष्ण कमलदलनैन, सर्व अङ्ग सुन्दर सुखद ।।१६।।

अथ अघासुरबध लीला २७

तहाँ अघासुर बनमें आयो * कंसराज करि कोप पठायो ।।
ताकी एक बहिनि द्वै भैया * मारे प्रथमहि कुँवर कन्हैया ।।
एक पूतना जो ब्रज आई * *वत्सासुर अरु बक दो भाई ।।
तिनको बैर असुर उर धारी * कियो गर्व मनमें अतिभारी ।।
आजु राजको कारज कीजै * और बैर भाइनको लीजै ।।
गिरिसमान अजगर तनु धारी * परचोअसुर मग बदन पसारी ।।
तनघन नदी रची मुखमाहीं * मायाकृत पहिंचानि न जाहीं ।।
वाही मग निकसे नँदलाला * गाय बच्छ लीन्हे सब ग्वाला ।।
हरि अंतरयामी सब जानी * कपटरूप यह लख अभिमानी ।।
याको आज तुरन्त संहारौं * असुर मारि भूभार उतारौं ।।
ग्वालन अहि पर्वत करि जान्यो * तासु बदन गिरिकंदर मान्यो ।।
देखि सुहावन तृण अरि आई * गाय वत्स पैठे सब धाई ।।
दोहा—गाय बत्स ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय ।
कहत परस्पर आजु बन, सुरभी चरैं अघाय ।।१।।
सो०—सब मुख गये समाय, असुर सकोरचो बदन सब ।
अंधकार गयो छाय, मानों घर घेरो निशा ।।१।।
अतिअकुलाय उठे तहँ ग्वाला * गाय बच्छ तब बिकल बिहाला ।।
कहत परे धौं हम कहँ आई * त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई ।।
सबके प्राण गये इहिबारा * तुमबिन कौन उबारनहारा ।।
श्रवण सुनत प्रभु आरतबानी * भये दुखित चिंता उर आनी ।।

दीनबंधु भक्तन सुखदाई * बैठे आप अघामुख जाई ॥
अघाअसुर उर अति हरषाई * लियो ओठसों ओठ लगाई ॥
विद्याधर मुनिवर गंधर्वा * अतिभयबिकल गगन सुरसर्वा ॥
तबहिं कृष्ण मन बुद्धि उपाई * अबिगत गति भक्तन सुखदाई ॥
मुखते देह दुगुण बिस्तारी * रूंधे श्वास त्रास दै भारी ॥
सक्यो नहीं तब असुर सँभारी * कियो शब्द आघात धुकारी ॥
फूटि गयो शिर दशन दुवारी * निकसि प्राण ज्योती उजियारी ॥
सो वह ज्योति स्वर्गको धाई * बहुरि आय हरिमाँझ समाई ॥
दोहा—वाही मग अघबदनते, निकसे गोकुलराय ।
कहत सखन आवहुनिकसि, मैं करिलई सहाय ॥२॥
सो०—अति हिंसकाने ग्वाल, गाय बच्छव्याकुलसकल ।
मिटचो तिमिर तिहिंकाल, जहँतहँ हर्षे बचनसुनि ॥२॥
बच्छसहित बाहर सब आये * हरिको देखि परम सुख पाये ॥
हम अज्ञान वृथा भय पाई * श्याम हमारे साथ सहाई ॥
धन्य कान्ह धनि २ पितुमाता * जिन जायो तुमको ब्रजत्राता ॥
गिरसम असुर सर्पतनुधारी * ताहि बध्यो तुम हौ असुरारी ॥
कहत कान्ह तुम करी सहाई * तब मारचो मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे संग न होते * तौ यह मारचो जात न मोते ॥
देखि अघासुरबध सुर ज्ञानी * बर्षि सुमन कहि जै जै बानी ॥
विद्याधर किन्नर गंधर्वा * अति आनँद गुण गावत सर्वा ॥
अघाअसुरकी करत बड़ाई * हरिमधि जाकी ज्योति समाई ॥
करत अनेक यत्न मुनिग्रामा * अंतकाल दुर्लभ हरिनामा ॥
सो हरि अंतकाल जगपावन * बसे आय अघमुख दुखदावन ॥
इहिसम और कौन बड़भागा * कहत देव सब अति अनुरागा ॥
दो०—जय जय जय प्रभु जगतहित, जगत्राता जगदीश ॥
जाको मारनहूँ प्रगट, तारन विश्वाबीस ॥३
सोरठा—हर्षि सुमन वर्षाय, जै जै ध्वनि नभ करत सुर ॥
ग्वाल गाय सुख पाय, अति आनँद निरखत हरिहिं ॥

तबहिं सखनसों बिहँसि कृपाला * बोले करुणासिंधु गोपाला ॥
चलहु सकल बंसीबटछाहीं * आई व्हैहै छाक तहाँहीं ॥
भोजन करिये सब मिलिजाई * बछरा हाँकि लेहु अगुवाई ॥
हर्षि चले तहँते बलबीरा * आये सब बंसीबटतीरा ॥
बंशीबट अति सुभग सुहावन * और चहूँदिशि बहु द्रुम पावन ॥
चरत बच्छ सब व नके माहीं * बैठे आइ श्याम बटछाहीं ॥
आस पास गोपनके बालक * भव्य श्याम सुन्दरजगपालक ॥
मोरमुकुट कल कुण्डल कानन * कोटि कामछबि सोहत आनन ॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा * पीतबसन बनमाल ललामा ॥
बाहु विशाल लकुट कर लीन्हें * गुञ्जनके आभूषण कीन्हें ॥
सखावृन्द सब सुन्दर सोहैं * निरखत रूप मदन मन मोहैं ॥
प्रेममगन मन परम हुलासा * करत परस्पर हास बिलासा ॥

दोहा-तहाँ छाक घरघरनते, आई भरि भरि भार ॥
यशुमति पठये कान्हको, व्यंजन बहुत प्रकार ॥४॥

सोरठा-छाक पठाई मात, हर्षि कहत हरिसखनसों ॥
दधि लवनी बहुभाँत, सब मिलि भोजन कीजिये ।४॥

बनभोजन बिधि करत कन्हाई * छाक सबै इकठाँव रखाई ॥
जलते पुरइन पात मँगाये * दोना बहु पलाशके लाये ॥
कछु फल वृन्दाबनके नीके * लिये मँगाय भावते जीके ॥
बैठे मंडल जोरि गुवाला * मध्य श्यामसुन्दर नँदलाला ॥
भाँतिभाँति व्यञ्जन रस पागे * परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुक हथेरिनपर धर लीन्हों * शाकखोलिअँगुरिनबिचकीन्हों ॥
मुरली मुकुट काँखतर लीने * भोजन करन लगे रस भीने ॥
मधुमंगल परसैन सुदामा * सुबल सुखमना अरु श्रीदामा ॥
उपर अनेक गोपसुत लीने * जेंवतमिलि सङ्ग श्याम सलोने ॥
लेत परस्पर कौर छिड़ाई * कबहुँक तिनको देत कन्हाई ॥
कबहूँ काहू देन बुलाबैं * डहकि ताहि अपने मुख नावैं ॥
मीठे खाठे स्वाद बखाने * हास बिलास करत सुखसाने ॥

दोहा-देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े बिमान अकास॥
लखि कौतुक चक्रित सबै, गये कमलभव पास ॥५॥
सोरठा-कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि परब्रह्म तुम॥
सो ग्वालनसँग खाय, छोरि छोरि करते कवर ॥५॥

अथ ब्रह्मा के मोह की लीला २८

हरिमाया मोहे सब प्रानी * कहँ ब्रह्मा कहँ सुर मुनि ज्ञानी॥
सुनि बिरंचि सुरगणकी बानी * भयो मोह उरमहँ यह आनी॥
गोकुल जन्म कौन इह आयो * मैं कछु वाके भेद न पायो॥
परचौ लै देखौं प्रभुताई * बाल बच्छ हरि ल्यावों जाई॥
जो सर्वज्ञ ईश भगवाना * लैहैं तुरत मँगाय सुजाना॥
यह विचार विधि ठहरायो * चल्यो तुरत वृन्दाबन आयो॥
देखि सरित बनमें अतिपावन * पुहुपलताद्रुम परम सुहावन॥
अति रमणीक कदम चहुँपासा * बंसीबटमधि सुखद निवासा॥
गोपमंडलीमंडन मोहन * भोजन करत सखनके गोहन॥
देखि विरंचि चकित भ्रमभारी * बछरा हरि लीन्हें बनझारी॥
हरि अंतरयामी सब जानी * बिधिकेमन कोरुचि पहिचानी॥
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई * ल्यावहुबत्स घेरि सब जाई॥
दोहा-ग्वाल सकल बन ढूँढ़िकै, फिर आये हरिपाहिं॥
कहत बत्स गये दूरि कहुँ, खोज पइयतनाहिं॥१
सोरठा-तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहो॥
मैं धौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब॥१
जब गये दूरि बनहिं जनत्राता * तबहीं बालक कहे बिधाता॥
प्रभुलीलाकी गम कछु नाहीं * गर्वित गयो लोक निजमहीं॥
निजमायासों करि मति भोरी * राखे बाल बच्छ इकठोरी॥
गुणसागर नागर नँदनंदन * बंसीबट आये जगबंदन॥
दीनबंधु भक्तन हितकारी * यह अपने उरमाँझ विचारी॥
बालबच्छ जो ब्रज नहिं जैहैं * मातपिता इनके दुख पैहैं॥
ताते रूप सबनको धारौं * याबिधि तिनको दुःख निवारौं॥

बाल बच्छ बिधि लै गये जेते * भये श्याम तब आपुन तेते ।।
वैसोइ रूप वैस गुण शीला * वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला ।।
रंग रेख जैसो जिहिं माहीं * अङ्ग-चिन्ह अन्तर कछु नाहीं ।।
बोलन हँसन चलन चतुराई * हेरन टेरन फेरन राई ।।
भूषन बसन लकुट कर जैसे * भये श्याम तब आपुन तैसे ।।
दोहा-मारन उद्धारन यदपि, है समर्थ भगवान ।।
तदपि जानि निजदासविधि, करी तासु की कान ।।२।।
सोरठा-अपनो करि बिधि ज्ञान, अन जानत ढीठोकरी ।।
ताते कीन्हें आन, मन भायो बिधिकोकियो ।।२।।
कह्योश्याम सब सखन बुलाई * ल्यावहु घेरि बत्स सब जाई ।।
ब्रजको चलहु साँझ नियराई * हरषि चले बालक-समुदाई ।।
चहूँपास सब सखा सुहाये * मध्य श्याम बछरन अगुवाये ।।
वेणु विशाल रसाल बजाबत * अपने अपने रँग सब गावत ।।
राँभति गाय बत्सहितलागी * देखत ब्रजयुवती अनुरागी ।।
मोरमुकुट कुण्डल बनमाला * हँसन मनोहर नयन विशाला ।।
गो-पदरज मुखपर छबि छाई * मनहुँ चंदकण अमिय निकाई ।।
ब्रजबनिता सबतनमन वारत * निरखि रूप-भेंटत चित आरत ।।
पहुँचे ब्रजहिं श्याम सुन्दरबर * गये वत्स बालक निजनिज घर ।।
गोसुत ग्वाल-बाल हरषाई * लीन्हे तात मात उर लाई ।।
प्ररमप्रीति करि भोजन दीन्हो * कृष्णचरित काहू नहिं चीन्हो ।।
यशुमतिकहतिसुतहिंमिलिप्यारे * बनहि राति कत करत ललारे ।।
दोहा-मैं सबरे घरको चल्यो, सखा करत सब रात ।।
देखि अगम बन मैं डरच्यो, वे डरपावत जात ।।३।।
सोरठा-बारबार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहति ।।
ल्यावहिं गाय चराय, कालि जाँइ वेई साबै ।।३।।
यह सुनिकै हँसि कहत कन्हैया * कालि चरावन जात बलैया ।।
लागी भूख बहुत मोहिं हैरी * भोजनको तुरतहिं कछु देरी ।।
सुनत तुरत माखन लै आई * तबलौं खाहु जननि बलिजाई ।।

है जल तप्त घामको प्यारे ❋ तेल परसि तनु न्हाहु ललारे ।।
जाते वनको श्रम मिटि जाई ❋ भोजन करहु बहुरि दोउ भाई ।।
तब जननी गहि बाँह न्हवाये ❋ जेंवनको बलराम बुलाये ।।
अतिरुचिसों जेंवत दोउ भाई ❋ परम प्रीति परसत है माई ।।
जेइँ उठे अचमन तब कीन्हो ❋ बीरा दुहुँन रोहिणी दीन्हो ।।
जानि उनींदे सेज बिछाई ❋ जननी पौढ़ाये दोउ भाई ।।
श्याम राम सोवत दोउ भैया ❋ सुख पावत निरखत दोउ मैया ।।
अधम रह्यो बिधि गर्व नवायो ❋ ब्रजवासिन कछु भेद न पायो ।।
बाल वत्स हरि नये उपाये ❋ सब ज्ञानत वेई है आये ।।
दोहा-बाल बत्स नवकृततिन्हैं, ब्रजबनिता अरुधेनु ।।
पूरबप्रीतिहुते अधिक, करत रहत उर चैनु ।।४।।
सोरठा-ब्रजमंगल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानंद प्रभु ।।
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर ।।४।।
तब बिरंचि के मन यह आई ❋ ब्रजके लोगन देखों जाई ।।
व्हैहैं करत बिलाप-कलापू ❋ बिन बच्छन गैयन संतापू ।।
आय बिरंचि तुरत तहँ देख्यो ❋ घरही घर सब कौतुक पेख्यो ।।
जहँ तहँ दुहत गाय पशुपालक ❋ खेलत निजघर २ सब बालक ।।
देखि बिरंचि चकित मनमाहीं ❋ हैं यह ब्रज कैधौं वह नाहीं ।।
मैं बिधिना सब सृष्टि उपाई ❋ यह रचना धौं किनहिं बनाई ।।
कैधौं हौं इहि भ्रमहि भुलानौ ❋ हैं हरि अबिनाशी नहिं जानौं ।।
अन्तरयामी जानत सबहीं ❋ बाल बत्स धौं ल्याये तबहीं ।।
अतिसंभ्रम विधि ज्ञान भुलाओ ❋ गयो फेरि निजलोकहि धायो ।।
देखे वत्स बाल जहँ राखे ❋ चकितबहुरि ब्रजको अभिलाखे ।।
क्षण भूतल क्षण लोक सिधारै ❋ बाल वत्स दुहुँ ठौर निहारै ।।
बरष दिवस इहिभाँति बितायो ❋ भयो थकित भ्रम उरछायो ।।
दोहा-मोहबिकल अति देखिकै, सुन्दर श्याम सुजान ।।
प्रगट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान ।।५।।
सोरठा-हृदय भई तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु ।।

धिक धिक मेरी बुद्धि, बैर बढायो कृष्णसों ॥५॥
मैं मतिहीन भेद नहिं जान्यो * मोहबिवश प्रभुसों छल ठान्यो ॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्हो * निज अज्ञान प्रभुको चीन्हो ॥
भई गलानि बहुत मनमाहीं * सन्मुख होइ सकत विधिनाहीं ॥
भयो सोच उरमाँझ विशेषा * प्रभुप्रभाव तब परगट देषा ॥
बलक वत्स सहित सब साजू * कृष्णरूप सब लख्यो समाजू ॥
शिब-ब्रह्मादिक देव अनेका * देखे अधिक एकते एका ॥
चरणकमल वंदत प्रभुकेरे * गावत गुण गंधर्व घनेरे ॥
देखि चकितचित भर्म नसान्यो * पूरणब्रह्म कृष्ण पहिंचान्यो ।
शरण २ कहि अति अतुराई * परचो चरणकमलनपर जाई ॥
अनजानत मैं करी ढिठाई * क्षमा करहु त्रिभुवन के राई ॥
मैं प्रभु तव प्रताप नहिं जान्यो * तुम्हरी मायामाँझ भुलान्यो ॥
चूक परी मोंते निज भोरे * नाथ न बनै तुम्हैं मुख मोरे ॥
दोहा-मैं अपराधी हीनमति, परचो मोहके जाल ॥
मम कृत दोष न मानिये, तुम प्रभुदीनदयाल ॥६॥
सोरठा-कह जानौं तुव भेव, मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ॥
तुम देवन के देव, आदि सनातन अजित अज ॥६॥
जो जनते बिगरै बिन जाने * सो अपराध न प्रभु कछु माने ॥
जो शिशु अज्ञ दोष उरमाहीं * माता कबहूँ मानति नाहीं ॥
तोष-पोष ताको बहु करई * बिकसित चित्त अङ्क लै भरई ॥
रद रसना दलि जो रिस होई * कहौ कौनपर कीजै सोई ॥
निजतन व्याधि पीर जन पावैं * यदपि यत्न करि नहीं बचावैं ॥
तैसेही प्रभु मोकों कीजै * क्षमि मम दोष शरणगहि लीजै ॥
तुम जाने बिन जीब सदाहीं * उतपति प्रलयहि माँझसमाहीं ॥
तुम करि कृपा जनावहु जाको * सो जानै तुम्हरी प्रभुताको ॥
मैं बिधि एक लोकको साँई * जिमि कृमि गूलरमाँझ गुसाँई ॥
तुम्हरे रोम रोम प्रतिगाता * कोटि कोटि ब्रह्मांड बिधाता ॥
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं * रविसम क्यौं हूँ होहिं सुनाहीं ॥

अब प्रभु बन संभारे तोहीं * राखिय चरणशरण निजमोही ।।
दो०--अतिही अगम अगाधहरि, तुव अविगतिको जान ।
तासु पार चाहौं लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान ।।७।।
सोरठा-करिय बिरदकी लाज, ममकृत दोष न मानिये ।
दीनबंधु ब्रजराज, शरणागत पालन हरे ।।७।।
जब विधि कही दीन बहु बानी * शरण २ कहि अतिभय मानी ।।
तब नहिं बाल बच्छ कछु देखे * एकै रूप कृष्ण विधि पेखे ।।
कृपा करी तब श्रीब्रजनाथा * हस्तकमल परस्यो विधि-माथा ।।
अभय कियो विधिसोच मिटायो * चरणकमलते सीस उठायो ।।
बारबार पदकमल निहोरी * अस्तुति करत दुहूँ कर जोरी ।।
जय जगधाम श्याम सुखरासी * ज्योतिरूप शिवउरपुरबासी ।।
गुणगण अगमँनिमग नहिं पावै * ताहि यशोदा गोद खिलावै ।।
धरजल अनल अनिल नभछाया * पाँच तत्व मिलि जगत उपाया ।।
काल डरै जाके भय भारी * सो ऊखल बाँधे महतारी ।।
जगकरता पालन संहरता * विश्वंभर सब जगके भरता ।।
ते गैयनसँग बालनमाहीं * ब्रजमें हँसि हँसि जूँठनि खाहीं ।।
बड़े भाग्य ब्रजवासिनकेरे * तिनके प्रेम रहत तुम घेरे ।।
छन्द– रहत जिनके प्रेम घेरे धन्य ब्रजवासी सबै ।।
ब्रह्म एक अनीह अविगत घरन घर जिनके फबै ।।
धन्य श्रीबसुदेव देवकि पुत्र करि जिन पाइयो ।।
धन्य यशुमति नंदजिन पय प्याय गोप खिलायो ।।
धन्य ब्रज के गोप जिनसँग धन्य गाय चरावहीं ।।
चारि मुखसे कहा बरनौं सहसमुख नित गावहीं ।।
धन्य बालक बच्छ जितने नाथ यह दर्शन लियो ।।
परसि चरणसरोज मस्तक पाप तजि पावन भयो ।।
अब देहु ब्रजको बास मुहिं प्रभु आस यह मेरे हिये ।।
रेणु तृण द्रुम लता खग मृग होहुँ जो तुम्हरे किये ।।
यह नित्य ब्रजलीला तुम्हारी तुम अनुग्रहतेल ही ।।

महत श्रीवृन्दाबिपिनको अमित मित सक को कहो ।।
लोकमोहिं न सुहात अबप्रभु आनविधिकोउकीजिये ।।
मोहिं ग्वालनको करौ भृत खाव जूँठनि जीजिये ।।
बारबार मनाय युगपद नाथ यह वर माँगहूँ ।।
ह्वै रहौं वृंदाविपिनकोरज चरणपंकज लागहूँ ।।११।।
दोहा–करि अस्तुति गदगद बचन, दृगजलपुलक शरीर ।।
परचो चरणपंकज बहुरि, विधि अति प्रेम अधीर ।।८।।
सोरठा–तब हँसि बोले श्याम, गर्वप्रहारी भक्तहित ।।
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब ।।८।।
और काहि अब करों विधाता * तुम हौ कर्मधर्म के दाता ।।
तुमते है यह सब संसारा * मम माया को नाहिंन पारा ।।
ताते अब मम आयुस कीजै * ब्रजकी जाय प्रदक्षिण दीजै ।।
जाते तनुके पाप नशाहीं * बहुरि जाहु लोकहि सुखमाहीं ।।
हरि उरहार विधिहि पहिरायो * बिदा कियो सब सोच नशायो ।।
प्रभु आयसु माथेपर धारी * पाय प्रसाद हरषि सुखचारी ।।
ब्रज दाहिन फिर पाप नसाये * बाल वत्स प्रभुहिं पहुँचाये ।।
बारबार चरणन शिर नाई * विधि निजलोक गयो सुख पाई ।।
ग्वालन यह कछु मरम न जान्यो * वाहिसमय सबहिन मनमान्यो ।।
हरिसों कहत बिलँब कह लाई * हम तुम बिना छाक नहिंखाई ।।
तुम सब भोजनमाँझ भुलाने * बच्छ जाय बन दूर हिराने ।।
खोजत खोजत क्योंहूँ पाये * सो मैं लै तुमपहँ पहुचाये ।।
दोहा-अब राखौ सब घेरि कै, दूरि निकसि नहीं जाहिं ।।
तब सुचते ह्वैकै सबै, रुचिसों भोजन खाहिं ।।९।।
सोरठा-ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो ।।
बहुरि यमुनतट जाय, जल अँचयो धोयो बदन ।।९।।
संध्या समै चले घर ग्वाला * मध्य श्यामसुन्दर नंदलाला ।।
बच्छ घेरि आगे करि नीके * काँधन पर धरि लीन्हे छीके ।।
जन जन श्रृङ्ग बजावत गावत * बनते बने ब्रजहि हरि आवत ।।

घर आये ब्रजमोहन लाला * कहत यशोमतिसों सब ग्वाला ॥
अहो महरि बन आजु कन्हाई * महादुष्ट मार्‌यो इक जाई ॥
पन्नगरूप गिले शिशु बच्छा * करी आजु सबकी हरि रच्छा ॥
गिरकंदरसम तिन मुख बायो * पैठि श्याम तिंहि तुरत नशायो ॥
याके बल हम वदत काहू * फिरत सकल बन सहित उछाहु ॥
जीते सबै असुर बनमाहीं * यह काहूते हार्‌यो नाहीं ॥
बीते बरष कहत सब ग्वाला * आज अघा मार्‌यो नंदलाला ॥
यह प्रभुलीला अपरंपारा * कौनकौनको भरै न पारा ॥
यशुमति सुनीचकित पछिताई * मैं बरजत बन जात कन्हाई ॥
दोहा-केती करबरते बच्यो, तऊ न नेक डरात ॥
अतिबिचित्रगति ईशकी, जानी जात न बात ॥१०॥
सोरठा-खोझति यशुमति मात, मानत नहिं मेरो कह्यो ॥
श्याम मनहिं मुसकात, कहत अब न वन जायहौं ॥१०॥
हरिकी लीला कहत न आवै * सुर नर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नशाई * पटक्यो तृणा शिला पर आई ॥
तीन लोक मुखमें दिखराये * यमलाअर्जुन वृक्ष ढहाये ॥
वत्सासुर बक बहुरि नशायो * अघा मार विधिगर्व नवायो ॥
यशुमति यह पुरुषारथ देषी * तापर खिज पछितात विशेषी ॥
अघा मारि आये नँदलाला * घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि २ ब्रजयुवती उठि धाई * चकित विलोकत हरिमुख आई ॥
मनमन करति यहै अनुमाना * इनकी सर कोऊ नहिं आना ॥
येई हैं ब्रज के रखवारे * येई हैं पतिप्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी * हैं ये जगतीपति यह जानी ॥
प्रेममगन ब्रज के नर नारी * लहत परम सुख हरिहि निहारी ॥
ब्रजमोहन सुन्दर सुखरासा * भोजन माँगत यशुमतिपासा ॥
दोहा-खाहु लाल जो भावई, रुचिसों सखन समेत ॥
सदमाखन व्यंजन छरस, करि राखे तुमहेत ॥११॥
सोरठा—दै रोटी नवनीत, और मोहिं भावै नहीं ॥

दियो मात अतिप्रीत, खात हँसत मिलिसखनसङ्ग ॥११॥

अथ गोदोहनलीला २९

हँसि जननी सों कहत कन्हैया * दुहनी दै दुहिहौं मैं गैया ॥
नंदबबा मोंहि दुहन सिखायो * ग्वालनकी सैर दुहन चढ़ायो ॥
धौरि धूमरी कारि गैया * तुरतहि दुहि ल्याऊँ दे मैया ॥
भयो मोंहि बल माखन खाई * अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोंहि नहीं पतियारो आवै * बैठी उठि कर भाव बतावै ॥
अँगुरी भाव देखि हँसि माता * उर लगाय लिये साँवलगाता ॥
कहत कहाँ इतनी बुधि पाई * हर्षि निरखि मुख बलि २ जाई ॥
लै दोहनी दई कर माता * हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो * मात दुहत लखि हर्ष बढायो ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई * हमहूँते तुम करत बड़ाई ॥
दुहन देहु कछु दिन मुँहि गैया * तब करियो मेरी सर भैया ॥
जबलगि एक दुहौ तुम गाई * दस न दुहौं तो नंददुहाई ॥
दोहा—सखा कहत सब झूँठहीं, नंद दुहाई खात ॥
प्रात साथ हम दुहहिंगे, देखहिं को अधिकात ॥१॥
सोरठा—कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही यह बात तुम ॥
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड लगायकै ॥१॥
श्रीवृषभानुकुँवरि मनमाहीं * श्याम सुरतिक्षणबिसरित नाहीं ॥
दर्श लालसा दृगन न थोरी * देख्योइ चहति बहोरि बहोरी ॥
उठी प्रभात दोहनी लीन्ही * सुतर श्यामदर्शनकी कीन्ही ॥
जननी देखि कह्यो दुलराई * जाति कितै राधा अतुराई ॥
खरकहि जात दुहावन मैया * दुहत सबेरे ग्वाल सब गैया ॥
काल्हि तनक मैं बिलँब लगाई * उठे अहिर सब मोंहि रिसाई ॥
गई गाय सब बच्छ पियाई * रीती दुहनी ले फिर आई ॥
तुमहूँ खीजन लगि तब मोहीं * जात सवेर आज कह तोहीं ॥
ऐसे कहि जननी समुझाई * घरते चली ब्रजहि समुहाई ॥
नंदसदन आई हरिप्यारी * दुहन गये गृहद्वार विहारी ॥

दुहत परस्पर लखि सुख पायो * निरखि बदनछबि हर्ष बढ़ायो ।।
राधहिं देखि महरि नंदरानी * लई बुलाय निकट हर्षानी ।।
दोहा—दंपतिको मुख देखिकै, मुदित यशोमति माय ।।
बारबार लखि युगलछबि, मनहां मन बलिजाय ।।२।।
सोरठा—महरिमुदित मुसकाय, मथनकह्योदधि कुँवरिसों ।।
भान दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढी भई ।।२।।
नेति पाणि मन अति अनुरागी * रीतोइ माट बिलोवन लागी ।।
तैसिय भई श्याम मति भोरी * मन लाग्यो जहँ कुँवरिकिशोरी ।।
वृषभहिसों लोई लै लैया * बिसर गये ठाढी कित गैया ।।
दंपतिदशा देखि नँदरानी * रही चकित नहिं जात बखानी ।।
राधासों कहि प्रगट जनायो * किन यह तोको मथन सिखायो ।।
निजघर मथति ऐसहीं जानी * कै मेरे घर आय भुलानी ।।
मैं नहिं मथन कबहुँ दधि कीनों * तुम मोहिं सोंह बबाकी दीनी ।।
ताते मथन करन मैं लागी * तुह्मरो वचन सकैं नहिं त्यागी ।।
तब नंदघरनी मथन बताओ * राधे हरि तन ध्यान लगायो ।।
दुहन श्याम गैया बिसराई * लैया बृषभपाँय कटकाई ।।
दुहनी श्याम माँग तब लीनी * तुरत सखा इक लै कर दीनीं ।।
कहत दुहौ हरि करौ चढ़ाई * हँसत गोपबालक—समुदाई ।।
दो०—हसत कहत हरिसों सबै, कहँ तुम रहे भुलाय ।।
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारीसों चितलाय ।।३।।
सो०—प्रियाबदन दृगलाय, रहे श्यामइकटक निरखि ।।
देहदशा विसराय, भूलि गई सब चतुरता ।।३।।
यशुमति कहत राधिकाहिं टेरे * ये ढङ्ग है री प्यारी तेरे ।।
ऐसो हाल मथत दधि तेरो * हरि भयो मानहुँ चित्र चितेरो ।।
तेरे मुखसम शशि नहिं भ्राजै * नयनन लखि खंजनगति लाजै ।।
चपलाहू ते चमकत है री * करि है कहा श्यामको तैं री ।।
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं * है धौं कहा गुनत मनमाहीं ।।
इकटक दीठ तबहिंते लाई * तनकी सुरत सबै बिसराई ।।

तबहींते ऐसे ढङ्ग योहीं * अबहीं बहुत होन है तोहीं ।।
ऐसे ढङ्ग लगायो श्यामहिं * काज नहीं कछु तेरे धामहिं ।।
चितयो महरि करै टक लाई * हिलमिल खेल श्यामसङ्ग आई ।।
कै रह्यो बठि आपने धामहिं * धेनु दुहन दे मेरे श्यामहिं ।।
देखत तोहिं श्याम सुधि आई * तू चितवति तनसुधि बिसराई ।।
सूधे रहि जो इहाँ तु आवै * ऐसो ढङ्ग मोको नहिं भावै ।।
दोहा—करति अचकरी आय तू, यह नहिं मोहिं सुहाय ।।
सूधे खेलहिं श्यामसंग, कै तू इत मत आय ।।४।।
सोरठा—ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरिभाव तिहिं ।।
तब कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन ।।४।।
मुहिं खीझति वरजति सुत नाहीं * नित उठि मोहिं बुलावन जाँहीं ।।
मोहिं कहतबिन तोहिं निहारे * रहत न मेरे प्राण सुखारे ।।
छोह लगत मोको सुनि बानी * तब आवति मैं ह्याँ घर जानी ।।
सुख पावति आवति मैं तातें * तुम कछु लावति औरहि बातें ।।
यशुमति सुनि प्यारीकी बानी * भोर भाय समुझी सकुचानी ।।
बाँह पकरि उरसों लै लाबति * प्यारीमनते रोष मिटावति ।।
हँसत कहत मैं तोसों प्यारी * मनमें कछू बिलग जनि लारी ।।
सिखवति तोहिं सीख गुणकारी * मैं तेरी जैसी महतारी ।।
सुनियत महरि सुघर अधिकाई * गृहकारज कछु तोहिं सिखाई ।।
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती * बोली अतिनागरि शिशुरीती ।।
मैया मोसों टहल करावै * खीझत तात देखि जो पावै ।।
सुनि यशुमति राधा की बानी * श्रीवृषभानु—लाड़ली जानी ।।
दोहा—अतिसप्रेम दुलराय के, लई बहुरि उर लाय ।।
श्रीराधाके चित्तते, दीनो क्षोभ मिटाय ।।५।।
सोरठा—कापै बरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता ।।
लीनो सहज सुभाय, बातनहीं यशुमति भुरै ।।५।।
कहत सखा हरिसों मुसकाई * दुहत कहा तुम आज कन्हाई ।।
काल्हि दुहत रहे होड़ लगाई * बिसरि गई सब आज बड़ाई ।।

गिरति दोहनी कंपित हाथा * नोवत वृषभ बत्स लै साथा ॥
सुनि ग्वालन के वचन गुपाला * कछुकसकुचि बिहँसे नँदलाला ॥
बच्छ छोर दियो खरक चलाई * आप जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो * सुनि आऊँ दाऊ मोहिं टेरो ॥
जननी हरषि तुरत सब दीनो * लै हरि मुकुट सीसधरिलीनो ॥
चारु पीतपट कटि लपटाई * कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरली में कहे प्यारी प्यारी * गये बुलाय खरक सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई * कहति यशोमतिसों अतुराई ॥
जाति घरहि प्रातहि मैं आई * खरक दुहावनको निज गाई ॥
पायो ग्वाल खरक कोउ नाहीं * खोजति मैं आई इतमाहीं ॥
दोहा—इहाँ अजिर गैया दुहत, देखे आय कन्हाय ॥
तनक दोहनी तनक कर, देखि रही चित लाय ॥६॥
सोरठा-सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी बचन ॥
यशुमति मन सुख पाय, कहति कुँवरिसों जान घर ॥६॥
जा प्यारी घर आबति रहियो * हमरो मिलन महरिसों कहियो ॥
यह सुनि कुँबरि चली हरषाई * मन हर लीन्हो कुँवर कन्हाई ॥
गई खरक कर दोहनि लीने * चितवत मग जहँ श्याम प्रवीने ॥
तहाँ मिली बहु सखी सहेली * बूझति राधहिं कहाँ अकेली ॥
प्रात दुहावन मात पठायो * तहाँ खरिक कोउ अहिरन पायो ॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन * जाति खरक अब गाय दुहावन ॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो * हम दुहि देइँ दोहनी ल्यावो ॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई * सुनत गई प्यारी सुख पाई ॥
कहति सखीं सब मन मुसकाई * कहाँ प्रीति इन आप लगाई ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया * आई कहाँ दुहावन गैया ॥
हरिमुखलखि वृषभानुकिशोरी * प्रेम बिवश भइ तनुसुधि भोरी ॥
मोहन लई दोहनी करते * प्रिया प्रीतिरसबश भइ बरते ॥
दोहा—धेनु दुहावत लाडली, दुहत नंदको लाल ॥
सो सुख कापै जाय कहि, देखति ब्रजकी बाल ॥७॥

सोरठा-बछरा पद अटकाय, गोथन लीनो हाथ हरि ॥
प्रिया बदन दृग लाय, दूध धार छाँडत छलन ॥७॥
दुहत धेनु अतिही छबि बाढ़ी * प्यारी पास दुहावत ठाढी ॥
एक धार दुहनीमें डारें * प्यारी तन इक धार पखारें ॥
हरिकरते पयधार छुटाहीं * लसत छीट प्यारी मुखमाहीं ॥
मनहुँ मयंक कलंक दुखारी * शोभित जहँ तहँ चंद्र सुधारी ॥
कैंधौं पयनिधि खोरि मयंका * लसत सुधासह खोय कलंका ॥
लसत नीलपट कनक-किनारी * मोरत मुखहि मुदित मनप्यारी ॥
मनहुँ शरदशशिसुधा उदारा * घनदामिनि घेरचो इकबारा ॥
इहिविधि रहसत बिलसत दोऊ * हेत हिये थोरे नहिं कोऊ ॥
मनहुँ उभय आनंदरस भारी * मिलन चहत मर्याद बिसारी ॥
हाव-भाव रस दंपति पूरे * निरखति ललितादिक दुरदूरे ॥
इहिविधि श्रीवृषभानु-दुलारी * हरिपै धेनु दुहावति प्यारी ॥
बिलसत ब्रजबिलास ब्रज प्यारे * ये सुख तीनि भुवनते न्यारे ॥
दोहा-दुही कुँवर नँदलाडले, श्रीराधा की गाय ॥
दुहनी देत न हँसि प्रिया, माँगत हा हा खाय ॥८॥
सोरठा-त्यों त्यों हँसत कन्हाइ, ज्यों ज्यों प्रिय हाहा करत ॥
सो सुख बरणि न जाइ, अरुझे दोऊ प्रेमरस ॥८॥
फिरि हाहा कर कहत कन्हाई * अब कै दैहौं नंददुहाई ॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी * दई दोहनी बिहँसि बिहारी ॥
हावभाव करि मन हरि लीन्हो * कुँवरी कान्ह बिदा तब कीन्हो ॥
यह छबि निरखि सखीहरषानी * चली अग्र ह्वै कछुक सयानी ॥
प्यारी निरखि श्याम सुन्दरको * चलन चहत पग चलत न घरको
अंतर नेक न हरिसो भावै * पुरजन सकुच बहुरि सकुचावै ॥
धिक यह लाज कहत मनमाहीं * निरखन देत श्याम जो नाहीं ॥
कछुदिन ज्यों त्यों और बिताई * दूरि करौं पुनि इति दुखदाई ॥
यह विचार मनमें ठहराई * चली सदन उर राखि कन्हाई ॥
मुरिमुरि नंद-नंदन-तन हेरे * आवति बिरहबिथा तन घेरे ॥

आगे धरत धरत पग नाहीं * मन फेरत मनमोहन-पाहीं ।।
चितवत श्याम खरिकमहँढाढ़े * प्यारी तन मन आनंद बाढ़े ।।
दोहा—भये दृगनते ओट दोउ, गये सदन सुखरास ।।
विरह विकल प्यारी गई, त्यों त्यों सखियन पास ।।८।।
सोरठा—सखियन आवति देखि, श्रीवृषभानु कुमारिको ।।
उर आनंद विशेखि, हरखि सबै ठाढ भईं ।।८।।
बूझत सखी सबै मुसकानी * कहहुराधिका कुँवरि सयानी ।।
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी * हरि दुहि दीन्ही गाय तुम्हारी।।
यह सुनि चकित भई मति भोरी* गिरी धरणि मुरझाय किशोरी।।
देखि सखी सब आतुर धाई * लई उठाय कुँवरि उर लाई ।।
क्यों नागरी गिरी मुरझाई * दूध दोहनी दई गिराई ।।
यह बानी कहि सखिन सुनाई * कारे मोहिं डसी री माई ।।
भई विकल कछु तनुसुधि नाहीं * कहति सखी सब आप समाहीं ।।
अबहीं देखति नीके आई * कहा भयो कारे कित खाई ।।
यह तौ कारो कुँवर कन्हाई * हमहूँको निज फूँक लगाई ।।
जाकी मृदु मुसकनि बिष बाँको * याके रोम रोम बिष ताको ।।
तन मन दृगन साँवरो छायो * देह गेह मब सब नेह भुलायो ।।
सब सखियनमन यह ठहराई * लै राधिकहिं सदन पहुँचाई ।।
दोहा—लेहुमहरि कीरति सुता, आपमी देखहु आय ।।
कहुँ कारे याको डसी, गिरी धरणि मुरछाय ।।१०।।
सोरठा-ल्यावहु गुणी बुलाय, बेगि यत्न याको करहु ।।
गयो वदन कुम्हिलाय, जों त्यों हम ल्याई इहाँ ।।१०।।
जननी सुनत उठी अकुलाई * रोवति धाय कंठ लपटाई ।।
प्रात गई नीके उठि बरते * मैं बरजी मान्यो नहिं अरते ।।
अतिहि हठीली कह्यो न मानै * सोई करति जु मनमह आनै ।।
डरी मात लखि अङ्ग सब जूड़े * अतिहो शिथिल देखि जल बूड़े ।।
महरि नगरतैं गुणी बुलाये * सुनत सकल आतुर उठि धाये ।।
मंत्र यंत्र बहुभाँति जगावैं * थके सकल कछु भेद न पावैं ।।

गारुड हारि रहे मनमाहीं * महरि विकल अति मनपछिताहीं ॥
फिरि २ बूझति सखिन बुलाई * कह त्यारो कहि तुमहिं सुनाई ॥
कहैं सखी सब परम सयानी * सुनहु महरि इतनी हम जानी ॥
हम आगे यह पाछे आई * गिरी धरणि दुहनी कर ढाई ॥
यही कह्यो कारे मुहिं खाई * तब हम आतुर लई उठाई ॥
सो कारो हमहुँ पुनि देषो * लग्यो सबन बिष याहि विशेषो ॥
दोहा—सो अब हम तुमसों कहैं, मानि लेहु यह बात ॥
बडो गारुडू गाय है, नंदमहरको तात ॥११॥
सोरठा—ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो ॥
तुरतहि दैहिं जिवाय, हम नीके यह जानहीं ॥११॥
देखहुंधौं यह बात हमारी * एकहि मंत्र जियावहि झारी ॥
त्रिभुवन गुणी और नहिं ऐसो * है वह नंदमहरको जैसो ॥
कीरति महरि सुनी यह बानी * अपने मनहिं सोच करि मानी ॥
इकदिन राधाहू यह बानी * मोसों कही हुती यह जानी ॥
कीरति चली नंदके धामहिं * बोलन आतुर गारुड श्यामहिं ॥
महरि यशोदहिं जाय पुकारो * अहो गारुडो सुवन तुम्हारो ॥
मेरी सुता लाडिली गौरी * बिह्वलबिकल परीमति भोरी ॥
प्रातहि खरक दुहावन आई * तहाँ कहूँ कारे डसि खाई ॥
नेक पठै सुत काज बिचारो * यह यश ह्वैहै बडो तुम्हारो ॥
सुनि यशुमति कीरतिकी बानी * कहत महरि तुम हुई अयानी ॥
मंत्र यंत्र कह जाने मेरो * अतिही बाल बरष पटकेरो ॥
किन तुमको दीनो बहँकाई * यह तुम बूझौ गुणिन बुलाई ॥
दोहा—मैं चकित तुम बचन सुनि, यह अचरजकी बात ॥
श्याम भयो कह गारुडू, तुम आई अतुरात ॥११॥
सोरठा—अबलौं सुनो न कान, भयो कान्ह कह गारुडू ॥
बालक अति अज्ञान, यंत्र मंत्र जाने कहा ॥१२॥
महरि गारुडू कुँवर कन्हाई * इकदिन राधा मोहिं सुनाई ॥
एक लरकिनी कारे खाई * ताको तुरतहि श्याम जिआई ॥

तातै मैं आई अतुरानी * पठवहु सुतहिं नेक नँदरानी॥
है मम कुँवरि बिकल अधिकाई * प्रात खरक कारे कहुँ खाई॥
बड़ो धर्म यशुमति यह लीजै * बेगि बुलाय कान्हको दीजै॥
यह सुनि यशुमति मन मुसकाई * अबहिं हतीं मेरे घर आई॥
है राधा मोहन कछु कारन * चुप ह्वै मनमें लगी बिचारन॥
उहाँ सखी ललितादि सयानी * प्यारीहिं देखि हृदय अनुमानी॥
याहि डसी बंशीधर कारे * चितवन फण मुसकन बिषयारे॥
प्रेमप्रीतिदवडारत जारे * लगै न मंत्र गुणी सब हारे॥
थके सकल करि बिबिध उपाई * यह बिष मोहनबिन नहिं जाई॥
सखी एक हरिपास पठाई * तिन मोहनसों जाय जनाई॥
दो०--अहो महरके लाडले, मोहन श्याम सुजान॥
कित सीखे यह गोदुहन, हमसों कहौ बखान॥१३॥
सो०--दुहि दीनी जिहिं गाय, आज भोरही खरक मैं॥
बेगि बिलोकौ जाय, निजनयनन ताकी दशा॥१३
जब ते दुहि दीनी तुम गैया * अहो अनोखे गाय दुहैया।
घरलों कुँवरि जान नहिं पाई * बीचहि गिरी धरणि मुरझाई।
देखत संग सखी सब धाई * जैसे तैसे गृह पहुँचाई।
सो अब तनुकी सुधि न सम्हारै * परी बिकल नहिं दृगन उघारै।
सकसकात तनु श्वेद बहाई * उलटि पलटि भर लेत जँभाई।
कहति मोहिं कारे अहि खाई * कियो यत्न बहु गारुड आई।
ताहि कछुक उपचार न लागै * तुम्हरो नाम लेत कछु जागै।
हौं पठई इक सखी सयानी * यह बिष तुह्मारोनिहचै जानी
यह कारो अहिरूप तुह्मारो * मुसकनिविषउता ऊपर डारो
अब जो चाहौ ताहि जिवावौ * बेग चलो जिन गहर लगावौ
अतिहिबिकल वहबिरहअधीरा * दरश दिखाय हरौ तनुपीरा
तुम अश्विनीकुमार कन्हाई * बेग चलौ हरि लेहुजिवाई
दो०--नजर दीठ इह रावरी, टेर कहत हम कान॥
नहिं जागति लौ देहिगी, नंदद्वार सब प्रान॥१४

सो०—व्याकुल जननी तास, घरनि महर वृषभानकी ।।
गई यशोमतिपास, बेगि जाय सुधि लीजिये ।।१४।।
कीरति आगम सुनत कन्हाई * कीन्हीं बिदा सखी मुसकाई ।।
जो कहुँ डसी भुजंगम प्यारी * तौ हम आय देहिंगे झारी ।।
ऐसे कहि हरि सदनहिं आये * देखि यशोमति निकट बुलाये ।।
तू हरि कछुजानत मंत्र कन्हैया * बूझति बिहँसि यशोमति मैया ।।
कीरति महरि बुलावन आई * कुँवरि राधिका कारे खाई ।।
आवहु झारि बेगि सँग जाई * कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई ।।
गारुड़ु भयो भलै सुत जानी * आजु सुनी श्रवणन यह बानी ।।
मैया एक मंत्र मैं जानौं * तेरी सौं कहि सत्य बखानौं ।।
अहि काटचो मो दृष्टि जुआवै * मोपै क्यौं हूँ मरन न पावै ।।
जननी कह्यो सुत जाहु कन्हाई * देधि राधिकहिं जाय जिवाई ।।
जननीवचन सुनत ब्रजनाथा * चले हर्षि कीरतिके साथा ।।
चली महरि हरि सङ्ग लिवाई * गइ वृषभानुपुरा समुहाई ।।
दो०—रुदितमहरिलखि कुँवरिको, अतिहिगई कुम्हिलाय ।।
शिथिलअङ्गबानी निरखि, लीनी कण्ठ लगाय ।।१५।।
सो०—तबहि श्यामके पाँय, परी कुँवरि लैके महरि ।।
मोहन देहु जिवाय, अतिव्याकुल मेरी सुता ।।१५।।
आये गारुड़ु कुँवर कन्हाई * कुँवरि कान में यह सुनि पाई ।।
धन्य धन्य आपुनको जानी * हृदय हर्ष दृग आनँद बानी ।।
प्रगट रोम तनु स्वेद बढ़ाई * बिह्वल देखि जननि अकुलाई ।।
अंतरभाव भेद हरि जाने * रसिकशिरोमणि मन मुसकाने ।।
तब कछु पढिकै कुँवर कन्हाई * मुरली अङ्गसों दई छुवाई ।।
तत्क्षण लोचन कुंवरि उघारे * सन्मुख सुंदर श्याम निहारे ।।
देखत दृगन परम सुख लीनो * सकुचिसंभारि बसनसम कीनो ।।
बूझत बात जननिसों प्यारी * आज कहा यह है महतारी ।।
जननी कहति हरखि उर लाई * तोहिं मरततैं कान्ह जिवाई ।।
करत लाज तू कारी प्यारी * करबर बड़ी आज बिधि टारी ।।

यों कहि महरि हृदय अनुरागी * नंदसुवनके पाँयन लागी॥
बड़ो मंत्र तुम कियो कन्हाई * सुता हमारी मरति जिवाई॥
दोहा–उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेति बलाय॥
धन्य कोखि यशुमतिमरि, जहाँ औतरे आय॥१६॥
सोरठा–कछु मेवा पकबान, कह्यो खान घनश्यामसों॥
विदा किये दै पान, कीरति श्याम सुजानको॥१६॥
महरि मनहि मनमें अनुमानी * जोरी भली बिधाता बानी॥
ब्रज घर घर यह घेर चलाई * बड़ो गारुडू कुँवर कन्हाई॥
सखी कहति हरिसों मुसकाई * भले भले हो गारुडूराई॥
प्रगटचो गारुडू नाम तुम्हारो * भले आज तुम बिषहि उतारो॥
जननि कहति मेरो अतिबारो * अबधौं कौन करै निरबारो॥
जान्यो कठिन बसत ब्रजकारो * अब इह मंत्रहिं मर्तहिं बिसारो॥
फिर कारो कहुँ करहि पसारो * हम तब ले हैं नाम तुम्हारो॥
यह गारुड़ी कहाँ तुम पाई * प्यारी एकहि टेर जिवाई॥
अब हम जानी बात तुम्हारी * जाहु आपने सदन बिहारी॥
रसिकमुकुट मणि कुंजबिहारी * हँसि बश कीनी घोषकुमारी॥
विवश भई सब ब्रजकी बाला * गये सदन मोहन नँदलाला॥
ब्रजबिलास बिलसत ब्रजप्यारो * ब्रजबासी जनको रखवारो॥
दोहा–कारो सुत नंदरायको, जाकी लीला नित्त॥
तिनहीकी हठिडसत है, जिनको उज्ज्वल चित्त॥१७
सोरठा–धन्य धन्य ब्रजबाल, धनिधनिब्रजकेग्वाल सब॥
जिनके सङ्ग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित॥१७
प्रात होत बल मोहनलाला * गाय बच्छ सङ्ग लै सब ग्वाला॥
चले चरावत बन घन माहीं * क्रीड़ा करत सकल मग जाहीं॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला * वृन्दाबन गये मदनगुपाला॥
गैयाँ बगरि गई बनमाहीं * बैठे कान्ह कदम की छाहीं॥
सखा लिये संग सुबल सुदामा * क्रीडा करत सहित बलरामा॥
ग्वाल जहाँ तहँ गाय चरावै * आनँद भरे कृष्णगुण गावैं

करतबिहार बिबिध सब ग्वाला * गये दूरि बन सघनविशाला ।।
कोऊ गैयन घेरन धायो * कोऊ बछरन लै बिलगायो ।।
हलधर रहे कहूँ बन जाई * आप अकेले रहे कन्हाई ।।
मनमन कहत श्याम सुखदाई * सखा रहे कत बन बिरमाई ।।
गौराँभन कहुँ सुनियत नाहीं * गये निकसिधौंकित बनमाहीं ।।
आलसगात जानि मनमाहीं * बैठे बंसीबटके छाँहीं ।।
दो०–सखावृन्द हलधरसहित, लियो बच्छ अरु गाय ।।
वृन्दावन घन छाँडिकै, रहे तालबन जाय ।।१८।।
सो०–मन हर्षे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ।।
फरे बिपुल तरु ताल, अति रसमय मीठे मधुर ।।१८।।

अथ धेनुकवधलीला ३०

गोधन--वृन्द दिये बगराई * लगे खान फल मन हरखाई ।।
अँचयो बल रस ताल रसाला * बाढ्यो उर आनंद बिशाला ।।
सुरत नंद--नंदनकी आई * कह्यो सखनसों कहाँ कन्हाई ।।
ल्यावहु घेरि जाय सब गैया * चलहु बेगि जहँ कुँवर कन्हैया ।।
सुनत सखा हलधरकी बानी * बनमें श्याम अकेले जानी ।।
आतुर गैयन घेरन धाये * टेरदई सब ग्वाल बुलाये ।।
तहाँ असुर इक धेनुकनामा * खरके रूप रहैं बनधामा ।।
सोयो हुतो बिटपकी छाया * सुनत शोर कर तामस धाया ।।
अति बलवान बिशाल कराला * परम भयंकर मानहुँ काला ।।
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे * भागे जिततित भयके मारे ।।
असुर महाबल कर्ष बढाई * बलके सन्मुख गरजो आई ।।
मत्त तालके रस बलराई * देखि असुर मन रिस उपजाई ।।
दो०–बल सँभारि उठि कोप करि, असुर प्रचार्यो जाय ।।
अग्रज भ्राता श्यामको, तिहुँ पुरजासु बडाय ।।१।।
सो०–बलको आबत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण ।।
चपरि चलाई आनि, बहुरौ हठि ठाढो भयो ।।१।।
बहुरो फिर मारन को धायो * बलजूको तामस अति आयो ।।

जबहि असुर फिरि चरण चलायो * गहि लीनो करि कोप फिरायो॥
पटक्यो लै तरु ताल हिलाई * भयो प्राणबिन तर्रुहि गिराई॥
तरुसों तरु टूटे भहराई * उटयो सकल बन गन घहराई॥
और बहुत धेनुकपरिवारा * कीन्हो बल सबको संहारा॥
मोरयो असुर महादुखदाई * ग्वालबाल सब करत बड़ाई॥
आये सब बृन्दाबनमाहीं * जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं॥
चढि२ द्रुमन पुकारत ग्वाला * आवहु हो मोहन नँदलाला॥
ल्याये घेरि मिली सब धेनू * आवहु मधुर बजाबहु बेनू॥
कोमल चरण कहूँ मति धावहु * कंटक कठिन मही इत आवहु॥
ऐसे हरिको टेरत जाहीं * तृषित भये सब बनके माहीं॥
ग्वाल बाल सब यमुनहिं आये * बल रसमत्त न पहुँचन पाये॥
दो०—गोप गाय अँचवत भये, कालीदहको नीर ॥
निकसत अब अकुलायके, बैठ गये जलतीर ॥२॥
सो०—परे सकल मुरझाय, जहाँ तहाँ विषझारते ॥
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनो बिन प्राण सब ॥२॥
हरि ठाढ़े बंशीबटछाँहीं * बारहिं बार कहत मनमाहीं॥
अबहि रहे सब संग चरावत * निकसि गये धौंकित बनधावत॥
गौराँभन ग्वालनके बैना * अनकत कछुन सुनत बन ऐना॥
तरु चढि इतउत गैयन हेरत * लै लै नाम सखनको टेरत।
कालीदह तन आहट पाई * सोध लेत चले कन्हाई।
बनघन ढूंढत हरि तहँ आये * ग्वाल गाय सब मूर्छित पाये।
मनमें ध्यान करत ही जान्यो * काली अहि ह्याँ आय समान्यो।
रहत इहँ स्वगपति-भय मानी * अँचयो इन ताको विषपानी।
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारे * तुरत उठे सब भये सुखारे।
देखि कृष्णको अतिसुख पाई * मिले सकल प्रेमातुर धाई।
बोले हरि मृदु बचन सुहाये * तुम सब मोहिं छाँडिकै आये।
कितते कित इत निकसे आई * मैं बन ढूँढि रह्यो पछिताई।
दो०—खोज लेत आयो इहाँ, देखे सब बेहाल ॥

मुरछिपरे काहे धरणि, भयो कहा जंजाल ॥३॥
सो०—गायबच्छ अरुग्वाल, उठे एकहीं बार पुनि ॥
कहा कियो इह ख्याल, देखिमोहिं अचरज भयो ॥३॥
सुनि हरिबचन परम सुखदाई * कहत सखा सब सुनहु कन्हाई ॥
अँचयो तृषित यमुनजल आई * तबहिं गिरे सब तट अकुलाई ॥
कारण कछु हम जान्यो नाहीं * भये प्राण बिन सब क्षणमाहीं ॥
इह हम जानी कुँवर कन्हाई * तुमहीं हमहिं जिवायो आई ॥
हौ तुम ब्रजजनके रखवारे * जहाँ तहाँ तुम हमहि उबारे ॥
तब हरि बलदाऊको हेरो * कह्यो चलहु बल होत अँधेरो ॥
सखा बोलिल्याये बलरामहिं * हँसे देखि सुन्दर घमश्यामहिं ॥
बड़ी बेर भइ तुम्है कन्हैया * रहे अकेले बनमें भैया ॥
चलहु बेगि अब घरको जाहीं * लेहु लिवाय गाय बनमाहीं ॥
हेरी देत चले सब ग्वाला * गावत गुण सुंदर गोपाला ॥
गोधन आगे दये चलाई * सखनमध्य मोहन बल भाई ॥
चले ब्रजहि ब्रजजनन सुखदाई * निरखि बदनछबि मदन जलाई ॥
दो०—सुनि ब्रजसुन्दरि परसपर, कहति मुरलिसुर घोर ॥
आवत बन बसि अहर निशि, आगम नंदकिशोर ॥४॥
सो०—धाई तजि गृहकाज, निरखनको मन भावतो ॥
सुंदर सुत ब्रजराज, लाज साज सब छाँडिकै ॥४॥
वे देखो आवत बल मोहन * सुबल सुदाम्म सुदामा गोहन ॥
मेघश्याम तनु गय्यन पाछे * शीसमुकुट कटि कछनी काछे ॥
कमलवदन कर बेणु बजावैं * गौरी राग तिले सुर गावै ॥
नयन बिशाल कमलते आछे * कोटिमदनकी छबिको बाछे ॥
कुँडल श्रवण बदन--छबि छाई * गोरजछबि कहुँ चंद्र छिपाई ॥
निरखि मुदित सब ब्रजकीबाला * पहुँचे आय सदन नंदलाला ॥
ब्रजजीवन बलमोहन भैया * निरखिजननि दोउ लेत बलैया ॥
ग्वाल कहत धनि यशुदा माता * धनि २ बलमोहन दोउ भ्राता ॥
नरतनु धरै देब ये कोऊ * ब्रजअवतार लियो इन दोऊ ॥

येहैं सब ब्रजके रखवारे * गायगोपके राखनहारे ॥
गर्दभरूप असुर इक भारो * ताहि आज हलधर बन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरछाये * तहाँ कान्ह सब मरत जिबाये ॥
दो०–अब हम काहू डरत नहिं, ये हैं हमैं सहाय ॥
बलमोहन के बल फिरत, बनबन चारत गाय ॥५॥
सो०–परत गाढ जब आय, तब तब होत सहायहरि ॥
चिरजीवौ दोउ भाय, यशुमतिये तेरे कुँवर ॥५॥
यशुमति सुन ग्वालनको बानी * कह्यो गर्ग सब सत्य बखानी ॥
नित नवचरित सुनत इनकेरे * हैं कोऊ ये बड़न बड़ेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये * धन्य धन्य हम सुत करि पाये ॥
अतुलित कर्म दुहुँनके जानी * दोउ जननी मनमाँझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नंदरानी * लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूँखे जानि तुरत अन्हवाये * षटरस व्यंजन परसि जिमाये ॥
भोजन करि अँचये दोऊ भाई * लीने पान संतसुखदाई ॥
पौढ़े सेज दास–हितकारी * ब्रजजन बसी हैं बलिहारी ॥
चिंतामणि हरिजन सुखदानी * कालीकी चिंता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित बनको जाहीं * दुख पावत कालीदहमाहीं ॥
विषधरको रहबो जलमाहीं * वृन्दाबन ढिंग नीको नाहीं ॥
कालिहि काढ़ि इहाँते दीजै * यमुनाको जल निर्मल कीजै ॥
दो०–यह विचार मनमें करत, भये नींद बश श्याम ॥
यशुमति हरि पौढायके, आप लगी गृहकाम ॥६॥
सो०–खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि ॥
बलमोहनके हेत, जागि परै मति नींदते ॥६॥
शिव सनकादिदिवसनिशिध्यावैं * कबहूँ जाको अंत न पावैं ॥
ब्रह्म सनातन आनँदखानी * नंदसदन सोवत सुख मानी ॥
देखो नंद कान्ह अतिसोवत * श्रमित जानि बनके मुख जोवत ॥
मानत नाहिं कहोकिन कोऊ * आप हठीले भैया दोऊ ॥
करसों पोंछत सुभग शरीरा * कहियत यहै प्रेमकी पीरा ॥

निजपलका तहँ लियो मँगाई * सोये हरिके ढिग नँदराई ।।
यशुमति हूँ पौढ़ी तहँ आई * निशिबीतें अधिकी अधिकाई ।।
जागि उठे तब कुँवर कन्हैया * कहाँ गई मोढिगते मैया ।।
सँग सोवत जान्यो बलभाई * अतिही श्याम उठे अकुलाई ।।
जागे नँद अरु महरि यशोदा * हरिको ऐंचि लियो नँद गोदा ।।
काहे झिजकि उठो अनियासा * तुरतहि दीपक कियो प्रकाशा ।।
सपने गिर्यो यमुनजल जाई * काहू मोंको दियो गिराई ।।
दो०—नितप्रति मैं बरजत रहौं, तू हठि यमुनाजाय ।।
सुधि रहगई अन्हानको, जिन हो लाल डराय ।।७।।
सो०—कोरै लै नंदराय, पौढाये निजसंग तब ।।
वृन्दाबन तूँ जाय, किंहिकारण जिततित फिरत ।।७।।
अब तू वृन्दाबन जनि जाई * तहाँ कौन धौं रहत बलाई ।।
सोये दंपतिबीच कन्हाई * तुरतहि गई नींद फिर आई ।।
सपनो सुनि जननी अकुलानी * कहत नंदसों यशुदारानी ।।
देख्योधौं कह सुपन कन्हाही * या ब्रजके जीवन दोउ भाई ।।
यहै यत्न इनको अब कीजै * गाय चरावत जान न दीजै ।।
गृहसंपति ह्वै तनक ढुटौना * इनहीलौं बल भोग ठटौना ।।
ये बन जात चरावन गैया * हँसी करत ब्रज लोग लुगैया ।।
दंपति आपसमें इहिभांती * करत बिचार बीति गई राती ।।
तारागण सब गगन छिपाने * गयो तिमिर अंबुज बिकसाने ।।
उठि यशुमति लागी गृहकाजा * भूल गायो निशिसोच समाजा ।।
प्रातःस्नान यमुन नित जाई * नंदहि तुरतहि दियो उढाई ।।
मथनहार ग्वालिनि सब जागीं * जिततित दही बिलोवन लागीं ।।
दो०—हरि प्यारी सुरभीनको, जम्योजुदधिबिलगाय ।।
सोहरि हित माखन लिये, मथति यशोदामाय ।।८।।
सो०—सदमाखन निजपानि, मथत तुरत मथनी धर्यो ।।
बड़भागिनि नंदरानि, माखन प्यारे लालहित ।।८।।
लगी जगावन हरिको जाई * उठहु तात माता बलिजाई ।।

प्रगट्यो तरणि किरण महि छाई * खोलि देहु मुखकमल कन्हाई ॥
सखा द्वार सब तुमहिं बुलावैं * तुम कारण सब धाये आवैं ॥
उठि तिनको मिलिकै सुख दीजै * होत अबार कलेऊ कीजै ॥
तब हरि उठिके दर्शन दीनो * मातानिरखि मुदित मन कीनो ॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकार्यो * नीलांबर गहि मुखते टार्यो ॥
मनु घनते शशि भयो नियारो * प्रगट्यो सुन्दरमुख उजियारो ॥
हँसत उठे सुन्दर दोऊ बीरा * गौरश्याम अति सुभग शरीरा ॥
शयन--भवनते बाहर आये * लखि दोउ जननि परमसुखपाये ॥
दँतवन लै दोउवन कर दीनो * चौकी बैठि मुखारी कीनो ॥
मानत निजनिजकरमुख धोयो * नैननको आरस सब खोयो ॥
अँचरनसो मुखकमल अँगोछे * उर लगाय सब अङ्गन पोंछे ॥
दो०--करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुँ बाहर जाउ ॥
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ ॥८॥
सो०--दई दुहुनको मात, रोटी अरु माखन मधुर ॥
हर्षि परस्पर खात, माता अन्तर हेत लखि ॥१॥

अथ कालीयदमन लीला ३१

ऋषि नारद हरिभक्त सयाने * प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने ॥
गावत गुण हरि परम हुलासा * गये तुरत मथुरानृपपासा ॥
देखि कंस आदर अति कीन्हो * करि दंडवत बरासन दीन्हो ॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई * कछू सोचबश परत लखाँई ॥
तव प्रताप मुनि कुशल सदाई * एक सोच मोहि बडो गुसाँई ॥
ये दोउ ब्रजमें नंदकुमारा * जानिपरत मोहिंकोइअवतारा ॥
कहत जिन्हे बलराम कन्हाई * तिनकी गति हम जान न पाई ॥
तृणावर्त से दैत्य पठाये * सोउन पल इकमाँहि नशाये ॥
बकी पठाय दई पहिलेही * ऐसिनको बल सब लैलेही ॥
उनते भयो नहीं कछु काजा * यह सुनिसमुझि होतमुहिंलाजा ॥
अब तुममुनिकछु कहहु बिचारा * जिहिं बिधि मारहुँ नँदकुमारा ॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने * सुनि नृपबचन मनहिं मुसकाने ॥

दो०–तब बोले मुनि नृपतिसो, सत्य कही तुम बात ।।
ये दोऊ अवतार है, इन गति जानिन जात ।। १ ।।
सो०–हैं ये तुह्मरे काल, प्रगट भये ब्रज आयके ।।
नंदगोप के बाल, तुमइनको राखौ मतिहि ।। १ ।।
एक बात मेरे मन आवै * करहु कंस तुमको जो भावै ।।
काली अहि रह्यो यमुना आई * तहाँ कमल फूले बिपुलाई ।।
फूल तहाँते माँग पठावहु * दूत पठै नंदहि डरपावहु ।।
यह सुनि ब्रजके लोग डरै हैं * यह बात वेऊ सुनिपैं हैं ।।
जैहै अवसि फूलके काजा * तहाँ घात करि है अहिराजा ।।
यह सुनि कंस बहुत सुख पायो * भलो मंत्र मुनि मोहिं बतायो ।।
धनि २ कहि पुनि २ शिरनावत * हर्षि चले मुनि हरिगुण गावत ।।
तबहिं कंस इक दूत बुलायो * ब्रजहिं नंदके पास पठायो ।।
दीनो ताको पत्र लिखाई * कहियो यहै नंदको जाई ।।
कोटि कमल कालीदहकेरे * पहुँचावौ लै काल्हि सबेरे ।।
कंसराज अति काज मंगाये * बनि है तुमको तुरत पठाये ।।
चल्यो दूत चातुर ब्रज धाई * जानि लई सब कुँवर कन्हाई ।।
दोहा–आप रहे तादिन घरहि, बनहि पठाये ग्वाल ।।
ब्रजबासी जनके सुखद, ब्रजजीवन नँदलाल ।।२।।
सो०–दूतहि आवत जान, आप गयो बहराय हरि ।।
सुन्दरश्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि ।।२।।
आये नँद यमुनाजल न्हाए * पैठत सदन छींक भई बाँए ।।
महरमलिनमनअशकुनजान्यो * आज कहा उर सोच सामन्यो ।।
तबहिं चल्यो दूत ब्रज आयो * नंद महर घरहीमें पायो ।।
बोलि लिये पाती कर राखी * नृपकी कही मुखागर भाखी ।।
कालीदह के फूल मँगाये * ताकारण अति डाट पठाये ।।
जो नहिं मोको फूल पठावहु * तौ कोउ ब्रज रहन न पावहु ।।
गोप नंद उपनंद जितेका * डारौ मारि न राखौं एका ।।
जोनहिं काल्हि कमल मैंपाउँ * तौ दोउ सुत तेरे बाँधि मँगाउँ ।।

यह सुनि नंद गये मुरझाई * और गोप सब लिये बुलाई ॥
तिन सबको सब बात सुनाई * परी आय अति यह कठिनाई ॥
कोटि कमल कालीदहमाहीं * कहौ कौनधौं काढ़न जाहीं ॥
कह्यो फूल जो काल्हि न पाऊँ * तो सुत तेरे बांधि मँगाऊँ ॥
दो०—मेरे सुत दोउ नृपतिउर खटकत हैं दिनरात ॥
आज कही यह बातसों, बलमोहन पर घात ॥३॥
सो०—चढि हैं ब्रज पर धाय, काल्हिकंस अति कोपकरि ॥
बन्यो मरण अब आय, को राखै कित जाइये ॥३॥
मुहिं अपने जियको डर नाहीं * सोच श्याम बलको उरमाहीं ॥
अबउबार दिखियत नहिं कोई * बलमोहनहिं राखिये गोई ॥
बरु मोहिं राखै बाँधि नृपाला * रहैं सदन बल मोहनलाला ॥
नंदबचन सुनि सब ब्रजबासी * भये दुखित मन परम उदासी ॥
काहूपै कछु बात न आई * अति भये त्रसित गये मुरझाई ॥
चकित महा ब्रजबासी ठाढ़े * मानहुँ चित्र किन्हू लिख काढ़े ॥
नंदघरनि ब्रजनारि बिचारैं * अतिव्याकुल नयनन जलढारैं ॥
ब्रजहिं बसत सब जन्म सिरान्यो * इहिविधिकंसन कबहुँरिसान्यो ॥
कालियदहके फूल मँगाये * कहौ कौनबिधि जात सुपाये ॥
अतिहि सोचबश सब नरनारी * भये कंसभय बहुत दुखारी ॥
को कह चलौ शरण सब जाहीं * शरण गये कहिये कछु नाहीं ॥
कोऊ कह देहु जितौ धन चाहैं * ऐसे सब मिल बुद्धि उपाहैं ॥
दो०—यहै सोच सब मिलिपगे, नहीं कहूँ निरबार ॥
ब्रजभीतर नंदभवनमें, घरघर यही बिचार ॥४॥
सो०—अंतरयामी जानि, खेलतते आये घरहिं ॥
देखतही नँदरानि, दृग भर लिये लगाय उर ॥४॥
चितवत माता कुँवर कन्हाई * बूझत कत रोवति दुख पाई ॥
बूझहु जाय तातसों बाता * मैं बलिजाउँ बदनजलजाता ॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई * बाहर मति कहुँ जाहु कन्हाई ॥
जाय तातको सोच मिटावो * अपने मधुरे बचन सुनावो ॥

आयो श्याम नंदपै धायो * जान्यो मातपिता दुख पायो ।।
बूझत नंदहि कुँवर कन्हैया * तात दुखित कत तुम अरु मैया ।।
मोसों बात कहौ किन सोई * कहा सोचबस हौ सब कोई ।।
नंदलाल कनियाँ बैठारे * कहा कहौं तुमसों मैं प्यारे ।।
जबते जन्म भयो सुत तेरो * करत कंस तुमसों अरझेरो ।।
केतीं करबर टरीं तुह्मारी * कुलदेवन कीनी रखवारी ।।
प्रथमहिं अधम पूतना आई * शकट तृणा पुनि आयो धाई ।।
बत्स बका अघ पुनि दुख दीन्हो * सबते तोहिं राखि विधि लीनो ।।
दो०—कालीदहके फूल अब, पठये भूप मँगाय ।।
सबते यह गाढ़ी परी, को करि लेत सहाय ।।५।।
सो०—जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कंस मोहिं डाटिकैं ।।
करौं ब्रजहि निरमूल, बाँधि मँगाऊँ तुम सुतन ।।५।।
बाबा तुम काहे दुख पाई * कहत कौन धौं करै सहाई ।।
सो देवता ब्रजहिके माहीं * रहत हमारे संग सदाहीं ।।
लीन्हो जिन सब ठौर बचाई * करि लेहैं सोइ देव सहाई ।।
सोई कंसहि फूल पठै है * ब्रजबासिनको सोच मिटै है ।।
कंस केश गहि सोई मारै * असुर मारि भूभार उतारै ।।
सब मिलि सोई देव मनावौ * अपने मनते सोच मिटावौ ।।
सुनत महर हरिमुखकी बानी * भये सुखी धीरज उर आनी ।।
इष्टदेवको शीस नवायो * जहाँ तहाँ तुम श्याम बचायो ।।
शरण शरण प्रभु शरण तुह्मारी * अबहूँ करहू सहाय हमारी ।।
जाते कंस--त्रास मिट--जाई * रहैं सुखी बलराम कन्हाई ।।
मातपितहि हरि इहिं ढँग लाई * आप चले खेलन हर्षाई ।।
सखन मध्य गये कुँवर कन्हाई * कह्यो खेलिये गेंद मँगाई ।।
दो०—श्रीदामा यह सुनत ही, गयो धाम निज धाय ।।
अपनी गेंद लै आयके, दीनी हरि आय ।।६।।
सो०—चलौ खेलिये धाय, बाहर घोष निकासके ।।
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनि है तहाँ ।।६।।

सखन सङ्ग लै बाहर जाई * रच्यो गेंदको खेल कन्हाई ॥
इक मारत इक भाजत जाहीं * रोकि लेत इक बीचहि माहीं ॥
आपसमाँझ परस्पर मारैं * नाना रंग करिकै किलकारैं ॥
भाजत मारग दूजो जाहीं * मारत धाय बहुरि सो ताहीं ॥
श्याम सखनको खेलत माहीं * यमुना तटतन लीन्हें जाहीं ॥
आपन जात कमलको लालन * सखा सङ्ग लीन्हे सब ख्यालन ॥
को जाने ये हरिखे ख्याला * यमुना निकट गये सब ग्वाला ॥
श्याम सखाको गेंद चलाई * अङ्ग मोरि सो गयो बचाई ॥
परो गेंद यमुना–जलमाहीं * व्है गयो खेलभंग तेहिठाहीं ॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा * मेरी गेंद देहु तुम श्यामा ॥
जानि बूझि तुम गेंद गिराई * बनि है दीन्हें गेंद मंगाई ॥
और सखा मोको मति जानौ * मोसों मतहि ढिठाई ठानौ ॥
दो०--सखासहित सब तारि दै, भली करी तुम कान्ह ॥
दीन्ही गेंद बहाय जल, देहु श्रीदामहिं आन ॥७॥
सो०--सकल लोक सिरताज, पार न पावै ब्रह्मशिव ॥
ताहि गेंद के काज, फेंट पकरि झगरत सखा ॥
छाँड़ि देहु मेरि फेंट सुदामा * रारि बढ़ावत थोरेहि कामा ॥
बदले गेंद लेहु तुम मोसों * फेंट न गहो कहौं मैं तोसौं ॥
छोटे बड़ो न जानत काहू * करत बराबर पकरत बाहू ॥
हम काहेको तुमहिं बराबर * तुम उपजे अब बड़े नंदघर ॥
ऐसे हम अव गये बिलाई * तुमहिं बराबर नाहिं कन्हाई ॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा * कहा भयो तुम नंद के ढोटा ॥
गेंद दियेही बने मँगाई * मोसों चलिहै नाहिं धुताई ॥
मुँह सँभारि बोलत नहिं मोसों * करि हों कहा धुताई तोसों ॥
पुनि पुनि करत बराबर आई * तैं नहिं जानत मेरि धुताई ॥
प्रथम पूतना शकटा मार्‍यो * कागासुर अरु तृणा पछार्‍यो ॥
बत्स बकासुर बनके माहीं * मार्‍यो सो कह जानत नाहीं ॥
अघ मार्‍यो पुनि देखत तोहीं * ऐसो धूत न जानत मोहीं ॥

दो०-तुम मारे सो साँच सब, कतही लाल डराहु ॥
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु ॥८॥
सो०-काल्हिहि परि है जानि, पकरि मँगै है कंस जब ॥
देत फूल किन आनि, वहुत अचकरी करिरहे ॥८॥
साँच कहौं मैं सुनौ श्रीदामा * आयो इहाँ फूलके कामा ॥
कितिक बापरो कंस बतायो * जाके भय तुम मोहिं डरायो ॥
केश पकरि महि ताहि पछारौं * देखहुगे तुम देखत मारो ॥
कोटि कमल तिहिं आज पठाऊँ * ब्रजते ताको त्रास नशाऊँ ॥
कालीदहँ जल पियत मरे सब * गहि ल्याऊँ सोई काली अब ॥
लीन्ही रिस करि फेंट छुड़ाई * चढ़े कदम पर धाय कन्हाई ॥
नीचे सखा हँसन सब लागे * श्रीदामाके डर हरि भागे ॥
रोय चले श्रीदामा घर को * जाय कहत मैं महरिमहरको ॥
टेरत कहि कहि सखा कन्हाई * लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई ॥
यह कहि नटबर मदनगुपाला * कूदि परे जलमें नँदलाला ॥
हाय हाय कहि सखा पुकारे * भगे श्यामबिन बहुत दुखारे ॥
रोवत चले ब्रजहिं सब धाई * श्रीदामाको दोष लगाई ॥
दो०-कोमल तनु अति साँवरो, साजे नटवर साज ॥
जलमें पैठिगये तहाँ, जहँ सोवत अहिराज ॥९॥
सो०-ईहिं अंतर हरि माय, भूखे व्है हैं जानि हरि ॥
खेलतसे अब आय, मोसों भोजन माँगि हैं ॥९॥
यशुमति चली रसोई कारन * तबही छीं उठी इक ग्वारिन ॥
ठिठुकि रही उर शोचति ठाढ़ी * भली नहीं कछु चिंता बाढ़ी ॥
आई अजिर निकसि पछिताई * चली बहुरि सो दोष मिटाई ॥
मंजारी तब पंथ कढ़ाई * बहुरि यशोमति बाहर आई ॥
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे * कहाँधौं खेलत मेरे बारे ॥
बाँये काग दाहिने स्वर खर * सुनिआईअतिव्याकुलफिरिघर ॥
खिन बाहर खिन आँगनमाहीं * टेरत हरिहिं शांत मन नाहीं ॥
तबहीं नंद चले घर आवत * देख्यो श्वाँन श्रवण फटकारत ॥

दहिने काहू रोय सुनायो * माथे पर व्है काग उडायो ॥
सन्मुख गररी करत लराई * डरे नंद अशकुन बहु पाई ॥
आये घर मन मलिन बिशेषी * व्याकुल मलिन बदन तियदेषी ॥
बूझत यशुदहि नंद डराई * काहे तुव मुख गयो झुराई ॥
दो०—चलो रसोई करन हौं, छींक भई मोहिं आज ॥
आगे व्है मंजारि पुनि, गई दूसरे भाज ॥१०॥
सो०—तबते मो जिय सोच, हरि धौं खेलत हैं कहाँ ॥
समुझ कंसकृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति ॥१०॥
नंद कहत पैठत धरमाहीं * मोहीं शकुन भये शुभ नाहीं ॥
आज कहा यह समुझिन जाई * हैं धौं कित बलराम कन्हाई ॥
महर—महरि मन त्रास जनाई * खोजत हरिहि चले अकुलाई ॥
सखा सकल इहिं अंतर धाये * रोवत ब्रजहि पुकारत आये ॥
महर महरिसों आय जनाई * यमुना डूबे कुँवर कन्हाई ॥
सुनि दंपति बूझत अकुलाई * कैसे कहाँ कहौ समुझाई ॥
खेलत कदम चढ़े हरि धाई * कूदि परे कालियदह जाई ॥
सुनतहि परी धरणि गिर मैया * कीन्हों सपनो सत्य कन्हैया ॥
रोवत नंद यमुनतट आये * बालक सब नंदहि संग धाये ॥
ब्रजघर जहाँ तहाँ इह बाता * ब्रजवासी धाये बिलखाता ॥
कहाँ परचो गिरि कुँवरकन्हाई * दई बालकन ठौर बताई ॥
त्राहित्राहि करि नंद पुकारे * गिरे धरणि नहिं अङ्ग सँभारे ॥
दो०—लोटत अतिव्याकुल धरणि, परनचलतजल धाय ॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोकों बैस बुढाय ॥
सो०—लोक उठे सब रोय, दीन बचन सुनि नंद के ॥
कहत बिकल सब कोय, हरि तुम ब्रज सूनो कियो ॥११॥
नंदहि गिरत सबहिं गहि राख्यो * ताक्षणको दुख जात न भाख्यो ॥
कहत गोप नंदहि समुझाई * बन्यो मरण सबही को आई ॥
हरिबिन को जीवै ब्रजमाहीं * कहौ कान्ह किहि जीवन नाहीं ॥
मोहमगन अति यशुमति मैया * टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥

आज कहाँ तुम बेर लगाई * माखन धरचो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू * जेंवहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धरचो औटाई * तुम निज कर दुहि गये कन्हाई ॥
सदमाखन अतिहित मैं राख्यो * आज नहीं तुमने कछु चाख्यो ॥
प्रातहिते मैं दिये जगाई * दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तुव पंथ कन्हाई * खेलत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय संग दोउ भैया * तुम जेंवहु मैं लेहुँ बलैया ॥
शोकसिंधु बूड़ी नंदरानी * तनकी सुधि बुधि सबै भुलानी ॥
दो०—ब्रजयुवती सुनि महरि के, वचन सप्रेम अधीर ॥
अकुलानी रोवत सबै, बढ़ी कठिन उर पीर ॥१२॥
सो०—बरजत यशुदहिं ग्वाल, यह कहिकहि हरि है भले ॥
सुत वियोग बिकराल, जात नहीं कहि मातको ॥१२॥
चौंकिपरी तनुकी सुधि आई * रोवत देखे लोग लुगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाई * पुत्र पुत्र कहिकै उठिधाई ॥
ब्रजबनिता सब संगहीं लागीं * श्यामबियोग व्यथा तन पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकरैं * तोडत लट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई * गिरी धरणि यशुदा अकुलाई ॥
मुरछि परी तनदशा भुलाई * प्राण रह्यो हरि सुरत समाई ॥
ब्रजबासी सब उठे पुकारी * जलभीतर कह करत मुरारी ॥
संकट मैं तुम करत सहाई * अब क्यौं नाहिं बजावत आई ॥
मातापिता अतिही दुख पावैं * रोय रोय सब कृष्ण बुलाबै ॥
आय गये हलधर तिहिं काला * देखी जननी बिकल बिहाला ॥
नाक मूँदि जल सींचि जगाई * जननी कहि कहि टेर लगाई ॥
बारबार जब हलधर टेरचो * भयो चेत कछु बलतन हेरचो ॥
दो०—कहित उठी बलरामसों, बनहितज्यो लघुभ्रात ॥
कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं, तुमसों क्यौं रह्यो जात ॥१३॥
सो०—मगन सोचस रमाँझ, कहत लै आवहु कान्ह कोउ ॥
भूखे व्है गइ साँझ, आज कछुक खायो नहीं ॥१३॥

कबहुँ कहति बन गये कन्हाई * कबहुँ बताबत घर समुहाई ।।
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै * कित खेलत कहि लाल बुलावै ।।
अतिही मोह बिकल नँदरानी * करत बोध हलधर मृदुबानी ।।
कत रोवत तू यशोदा मैया * नीके हैं धर धीर कन्हैया ।।
श्यामहिं नेक कहूँ डर नाहीं * तू कत डरपत है मनमाहीं ।।
तेरी सों मैं कहत पुकारे * वह काहूके मरै न मारे ।।
जिनि कालीभय होहु दुखारी * अपने मन देख बिचारी ।।
पहिले बकी कपट करि आई * तब दिन दशके हते कन्हाई ।।
शकटा तृणावर्त पुनि आयो * तो देखत हरि तिन्हैं नशायो ।।
वत्स बका अघ बन में मारे * बिषजलते सब सखा उबारे ।।
अव वे कालिनाथ लै ऐहैं * कमल पठाय कंसको दैहैं ।।
मोहिं भरोसो कान्हर केरो * मानो सत्य कह्यो सुनु मेरो ।।
दो०—मोहिं दुहाई नंद की, अबहीं आवत श्याम ।।
नाग नाथि लै आवही, तौ कहियो बलराम ।।१४।।
सो०—सुनि हलधर के बैन, अति उदार हरिके चरित ।।
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सुसोह सब ।।१४।।
बाँह पकरि बलको बैठाई * लै बलाय उर रही लगाई ।।
अतिकोमल तनु धरे कन्हाई * पहुँचे कालीके ढिग जाई ।।
हरिको देखि उगरकी नारी * रही चारु-मुख-चंद्र निहारी ।।
कहति कौन तू इत कित आयो * अति कोमल तनु काको जायो ।।
बारहि बार कहति अकुलाई * बेगभाजि इतते किन जाई ।।
देखै नाँग जागकै जबहीं * व्हैहैं भस्म छिनकमें तबहीं ।।
सुनत नागनारीकी बाणी * बोले हँसि हरि शारँगपाणी ।।
पठयो मोहिं कंस नृपराई * तू याको अब देहु जगाई ।।
कंस कहा तू इनहिं बतै है * एक फूँकमें तू जरि जैहै ।।
अजहूँ भाजि कह्यो करि मेरो * लगत छोह देखत मुख तेरो ।।
मरहु कंस जिन तोहिं पठायो * तू कत इहाँ मरनको आयो ।।
बालकजानिजानिदयाअनिमेरे * दुख पैहैं पितु माता तेरे ।।

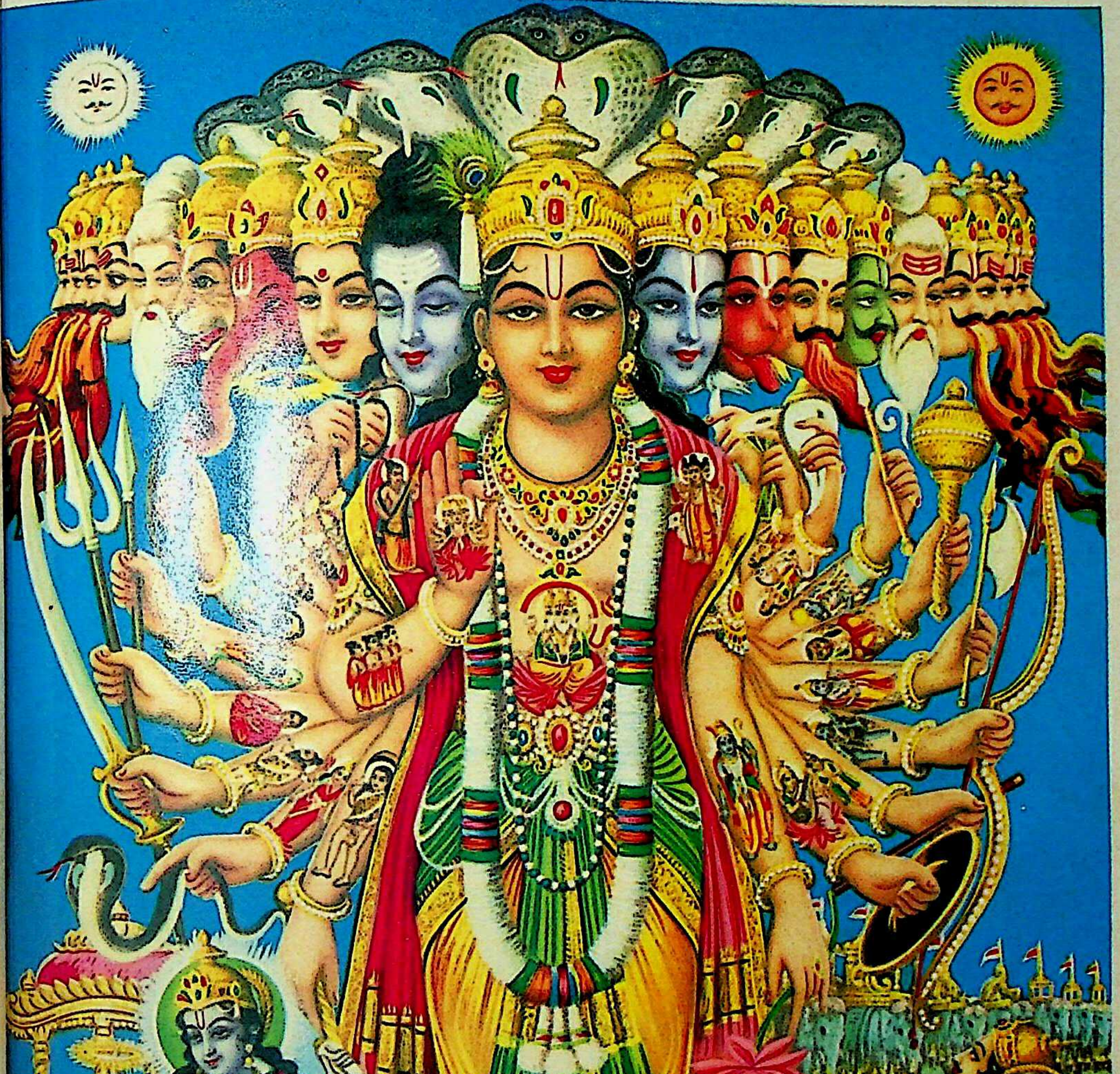

1126

VIRAT SWAROOP

Hem Chander Bhargava & Co.,
Delhi-6.

दो०–अरी बावरी सर्पसों, कहा डरावत मोहिं ॥
जैसो मैं बालक प्रगट, अबहिं दिखाउँ तोहि ॥१५॥
सो०–तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि ॥
यापर कमल लदाय, लै जैहौं इहि नाथि ब्रज ॥१५॥
सुनत बचन अहिनारि रिसानी * छोटे बदन कहत बड़बानी ॥
खगपतिसों सरवर जिन ठानी * ताहि कहत नाथन अज्ञानी ॥
देखतही व्है है जरि छारा * केतिक तू बपुरो सुकुमारा ॥
बपुरो मोहिं कहति अहिनारी * बोलति नाहिन बात सँभारी ॥
अबहिं तोहिं बपुरो करि डारौ * एकहि लात खसम तुव मारौं ॥
सोवत काहु मारिये नाहीं * चलि आई यह बात सदाहीं ॥
ताते तू पति देहि जगाई * देखों मैं याकी मनसाई ॥
जो पै तोहिं मरनबुधि आई * तो ताहो किन लेत जगाई ॥
तब हरि झरकि ताहि दै गारी * दाबी चरण पूँछ अहिकारी ॥
मसकी नेक धरणिसों लाई * काली उरग उठ्यो अकुलाई ॥
आयो जानि गरुडभय बाढ़ो * देख्यो बालक आगे ठाढो ॥
तबहिं क्रोध करि गर्ब बढ़ायो * झटकि पूँछ अरिसे करिधायो ॥
दो०–दाँव घात लाग्यो करन, सबसों फन फटकार ॥
बारबार फुँकारकर, डारत बिषकी झार ॥१६॥
सो०–जरत यमुन को नीर, जात फेन उतरात बिष ॥
परसत नाहिं शरीर, अहिमदमोचन श्यामके ॥१६॥
कियो युद्ध बहु उरग अघाई * तुमरे नहीं नेकहु यदुराई ॥
कहत परस्पर अहिकी नारी * देखहु यह बालक अतिभारी ॥
बिषज्वाला जलजरत यमुनाको * याके तन परसत नहिं तनको ॥
यह कछु यंत्र तंत्र धौं जानै * अतिकोमल बिष नेक न मानै ॥
सहसौं फनन करत अहि घाता * अबलग बच्यो पुण्य पितुमाता ॥
तब अहिराज श्यामतन हेरी * कहत पूँछ दाबी इन मेरी ॥
अतिहि क्रोध करि आतुर धाई * हरिके अंग गयो लपटाई ॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई * कहत करी इन बहुत ढिठाई ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

कौतुकनिधि हरि सब गुणखानी * दियो दाँव इहि अहिको जानी ॥
तिहि अवसर सुर मुनि गंधर्वा * अति व्याकुल आये ब्रज सर्वा ॥
उरगनारि मन मन पछताहीं * हरिको रूप समुझि मनमाहीं ॥
कहैगर्ब करि अति यह आयो * कालबिबश परि इतहिचलायो ॥
दो०—काली हरिसो लिपटिकै, गर्ब कियो मनमाँह ॥
कहत मोहिं जानत नहीं, मैं सर्पनको नाँह ॥१७॥
सो०—गंजन गर्ब गोपाल, गर्ब भरे सुनि अहिबचन ॥
कीन्हो बपुष विशाल, बिकल भयो अहिराजतन ॥१७॥
जबहिं श्याम तन अति बिस्तारो * टूटन लग्यो अंग तब सारो ॥
शरण २ तब उरग पुकारो * मैं नहिं जान्यो रूप तिहारो ॥
जीवदान प्रभु मोको दीजै * अब मैं शरण राखि मुहिं लीजै ॥
यह बाणी सुनतहि भगवाना * सकुचि गये हरि कृपानिधाना ॥
यहै बचन गजराज सुनायो * गरुड छांडिताके हित धायो ॥
यहै बचन सुनि द्रुपदसुताको * बसन बढ़ाय दियो पुनि वाको ॥
यहै बचन सुनि लाक्षाघरते * लीने राखि पांडवन जरते ॥
यह बानी सहिजात न श्यामहिं * दीनबंधु करुणा के धामहिं ॥
लीनो अंग सँकोचि कृपाला * देख्यो बिकलशिथिलजबव्याला ॥
पगसों चापि नाक धरि फोरी * लीनो नाथि हाथ गहि डोरी ॥
कूद चढ़े हरि ताके शीशा * मन मन करत बिचार अहीशा ॥
मैं यह सुन्यो हतो बिधिपाहीं * कृष्ण अवतार होहि ब्रजमाहीं ॥
दो०—ते गोकुलमें अवतरे, मैं जान्यो निरधार ॥
ये अबिनाशी ब्रह्म हैं, ब्रज कृष्णा अवतार ॥१८॥
सो०—कियो बहुत फनघात, बारबार पछितात मन ॥
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीन व्है सकुचि अति ॥१८॥
देखो व्याल बिहाल कृपाला * दियो दर्श निज दीनदयाला ॥
देखि दर्श मन हरष बढ़ाई * बोल्यो दीन बचन अहिराई ॥
मैं अपराध कियो अनजाना * क्षमौ नाथ तुम क्षमानिधाना ॥
तामसयोनि कीट विष जानो * कौन भाँति तुमको पहिचानो ॥

अब कीनो प्रभु मोहिं सनाथा * दीनों दर्श जगतके नाथा ।।
शरण शरण नाथ तुम बाना * कहत संत सब वेद पुराना ।।
ते अपराध क्षमा सब कीजै * अब प्रभु शरणराखि मोहिं लीजै ।।
आज धन्य यह मेरो माथा * जापर चरण दिये तुम नाथा ।।
अब ये चरण परस प्रभु तेरे * मिटे दोष दुख अघ सब मेरे ।।
जे पदकमल पुनीत तुम्हारे * निशिदिन रहत रमा उर धारे ।।
शिव विरंचि सनकादिकध्यावैं * जे पद योगी ध्यान लगावै ।।
जे पद पद्मसलिल सुरसरिता * तीनलोककी पावन करिता ।।
दो०—जिन पदपंकज परसते, गति पाई ऋषिनारि ।।
सुर नर मुनि बंदत तिन्हैं, संतन प्राण अधारि ।।१९।।
सो०—फिरत चरावत गाय, श्रीबृन्दाबन जे चरण ।।
भक्तनके सुखदाय, ब्रजवासी जन--दुखहरण ।।१९।।
जे पदपंकज परम सुहाये * प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये ।।
गरुडत्रास ते इत भजि आयो * भलो कियो मुहिं गरुडसतायो ।।
जाते दर्श भयो प्रभु तेरो * अब भयताप मिट्यो सबमेरो ।।
आज भयों मैं नाथ सनाथा * गहो हाथ मम प्रभु निजहाथा ।।
सुनत दीन कालियकी बानी * दीनबन्धु अतिशय सुख मानी ।।
फनप्रति चरणरोजस छुवाये * ताके सब सन्ताप नशाये ।।
तब ब्रजनाथ भक्तहितकारी * यह अपने मनमाहिं बिचारी ।।
कालीको ब्रजलोक दिखैये * कमलभार यापै लै जैये ।।
व्हैहैं ब्रजके लोग दुखारी * करौं जाय अब तिनहिं सुखारी ।।
कमक कांसको देहुँ पठाई * कालिह चढ़ैगो ब्रजपर आई ।।
लीने अहिपर कमल लदाई * चले ब्रजहिं ब्रजजनसुखदाई ।।
लियो नाथि गहि अहि उचकाई * फनपर ठाढ़े कुँवर कन्हाई ।।
दो०—उरगनारि सब जोरिकर, प्रभुके सन्मुख आय ।।
करति विनय अति दीन व्है, पतिहित हरिहिसुनाय ।।२०।।
सो०—इत यशुमति उरमाहिं, उठी लहर अति प्रेमकी ।।
कान्हर आयो नाहिं, कहति रोय बलरामसों ।।२०।।

कहत राम सुनु यशुमति मैया * अबहीं आवत कुँवर कन्हैया॥
नेक धीर धर मति अकुलाई * यह सुनिकै बलकी बलिजाई॥
पुनि यह कहतिकान्हनाहिन अब * झूठहिं मोहि प्रबोध करत सब॥
भई बिनासुत व्याकुल मैया * कहति कहाँ मेरो बाल कन्हैया॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई * रोय उठे सब लोग लुगाई॥
ब्रजबासी सब भये बिहाला * कहत कहाँ मोहन नँदलाला॥
तुम बिन यह गति भई हमारी * आवत नहीं धाय बनवारी।
प्रातहिते जलमाँझ समाने * तुमहिं बिना युग याम बिहाने।
अब को बसे जाय ब्रजमाहीं * धिक२जीवन तुमहिं बिनाहीं।
अतिव्याकुल रोवत नँदराई * बिकल मनहुँ फणिमणी गवाई।
यशुमति धाय चलति जलमाहीं * राखति ब्रजयुबती गहि बाहीं।
हलधर सबहिंनको समुझावैं * बिना श्याम कोउधीर न पावैं।
दो०—कहत यशोदा नंदसों, धिक धिक बारहिबार॥
और कितक दिन जियहुगे, मरत नहीं मोहिं मार॥१
सो०—कर देखहु मन ज्ञान, ऐसेदुखमें मरण सुख॥
नंदभये बिनप्रान, मुरछिपरे सुनि तियबचन॥२१
तबहिं धाय बल पिता जगायो * बारबार कहि कहि समझायो
वृथा मरत काहे सब रोई * कान्हहि मारनहार न कोई
हलधर कहत सुनहु ब्रजबासी * वे अंतरयामी अविनासी
सब—गुणसागरआनंदरासी * रमासहित जलहीके वासी
मेरो कह्यो सत्य करि मानौं * आवत श्याम धीर उर आनौ
यमुनाके भीतर तिहिकाला * उठो सलिलझकझोर बिशाल
बोल उठे आतुर बलरामा * वे देखो आवत घनश्यामा
सुनत बचन लखि जब उठि धाये * यमुनानीरतीर सब आ
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढ़े * दर्शातुर बिरहानल बा
प्रगट भये जलते तिहिंकाला * ब्रजजनजीवन नंदके लाल
कमल--भार काली पर लीने * नटवरबेष मनोहर कौ
भये सुखी सब ब्रजके बासी * लखि हरिबदन परम सुखरा

छंद-हरिबदन लखि २ रामसुखकी मुदितब्रजबासी भये ।।
मनहुँ बूडत नाव पाई परम उर आनंद छये ।।
मातपित लखि जो भयोसुख जात सो कापै कह्यो ।।
पुलक तन मनहर्षिगद्गद प्रेमजल लोचन बह्यो ।।१।।
चकितहरितन लखत इकटक मिलनको आतुर हिये ।।
श्याम निरतत अहिफननप्रतिखौर चंदन तनकिये ।।
श्रवण कुंडललोल लोचन चारु मुकुट बिराजही ।।
मनहुँ मरकत गिरिशिखर मणि मोर तापर राजही ।।
पीतपट कोट काछनी उर माल मणिभूषण सजे ।।
नृत्यतांडव करत फणप्रति व्योम दिवि दुंदुभि बजे ।।
भई जय ध्वनि गगन बर्षीहिं सुमन सुर आनंदभरे ।।
गगन गंधर्व गुणन गावत स्वरन तालन अनुसरे ।।३।।
उरगनारी श्यामसन्मुख करत अस्तुति आवहीं ।।
नाथ अब अपराध क्षमि करि कृपा मम पति पावहीं ।।
राखे चरण निजशीश याके अति बडाई इन लई ।।
ऐसो बडाई औरको प्रभु नांहि तुम कबहूँ दई ।।४।।
शेष इक ब्रह्मांड भरि शिर राखि मन गर्बित कियो ।।
कोटि कोटि ब्रह्मांडतुव तन अधिक इनयह भरिलियो ।।
सुर असुर नर नाग खग मृग कीट जन सब रावरे ।।
क्षमिय अब अपराध अहिके सुभग सुन्दर साँवरे ।।५।।
दो०-सुनि अहिनारिनके बचन, करुणामय यदुराय ।।
उतरि परे अहिशीशते, यमुनाके तट माय सदा ।।२२।।
सो०-तटपर कमल धराय, काली की आयसु दियो ।।
रमणद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय ।।२२।।
तब काली कह सुनहु कृपाला * तुमबाँहनडर डरत बिशाला ।।
धनि ऋषि शाप दियो है ताही * ताते आय सकत यहँ नाहीं ।।
तब मैं भाजि बच्यो इति आई * नातर लेत मोहिं सो खाई ।।
चरणचिह्न लखि तुव फण मेरे * परि है गरुड पाँय अब तेरे ।।

तू अब मत खगपतिहिं डराई * अपने द्वीप करहु सुख जाई ॥
याते बड़ो कौन सुरनाथा * अभय दान पद परस्यो माथा ॥
जे पद-कमल-भजन परतापा * जन प्रह्लाद मिटे संतापा ॥
ते पदचिह्न सीसपर धारी * जन्मजन्मको भयो सुखारी ॥
उरगिनसहित नाय पद माथा * गयो रमण द्वीपहि अहिनाथा ॥
जय २ ध्वनि नभ सुरन बखानी * धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥
शरण राखि काली अहि लीनों * जलते काढ़ि कृपा करि दीनो ॥
फनपर चरणचिह्न प्रगटाई * कठिन गरुडकी त्रास मिटाई ॥
दो०—धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित सुमन बरषाय ॥
गये देव निज निज सदन, हृदय परम सुख पाय ॥२३॥
सो०—द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुरलोकन पठै ॥
आये निकसि गुपाल, ब्रजबासीजन सुखकरन ॥२३॥
धाय मिले सगरे ब्रजबासी * बिरहताप तनुसो सब नासी ॥
माता दौरि कंठ लपटानी * पुलकि रोमतनु गद्गद बानी ॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा * उर लगाय मेटति उरपीरा ॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया * दुहूँ करनसों लेत बलैया ॥
धाय नंद उरसों लै आये * गये प्राण मानहु फिर आये ॥
गद्गद बैन नयन जल ढारो * कहत जन्म फिर भयो तुह्मारो ॥
बारबार उरसों लपटावत * दारुण उरकी ताप नशावत ॥
प्रेमाकुल देखी बलमाता * मिले रोहिणीसों सुखदाता ॥
निरखि बदन कह यशुमति मैया * मैं बरजौं नित तुम्हें कन्हैया ॥
यमुनातीर लाल मति जाहू * तुम बरजो मातन नहिं काहू ॥
मैं निशि सपनेमाँझ डरान्यो * सोई कछू आज प्रगटान्यो ॥
कंस कमल के फूल मँगाये * ब्रजबासी सब अतिहि डराये ॥
दो०--मैं गेंदहि खेलत यहाँ, आयो यमुनातीर ॥
मोहिं डारि काहू दियो, कालीदह के नीर ॥२४॥
सो०--देख्यो उरग विशाल, जाय तहां मैं डर्यो अति ॥
तब पूँछीमुहिं व्याल, किन पठयो तोको इहाँ ॥२४॥

जब ऐसे मैं ताहि बतायो * कमलकाज मोहिं कंस पठायो ।।
यह सुनतहि अति उठ्यो डराई * मोको फणपर लियो चढ़ाई ।।
कमल लिये निजपीठ लदाई * आपहि आय गयो पहुंचाई ।।
ऐसे जननी बोधि कृपाला * सुनत बचन सब ब्रजको बाला ।।
लै लै हरिको उरसों लावै * कठिन बिरहकी शूल मिटावै ।।
श्याम बिना बहुतै दुख पायो * सो हरि तिनको ताप नसायो ।।
लखे सखा सब आरत बाढे * प्रेमातुर मिलबेको ठाढे ।।
गये दौरि तिन पास कन्हाई * मिले धाय सब कंठ लगाई ।।
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया * जो तुमकह्यो कियो सोइ भैया ।।
तुम हौ सब ब्रजके सुखदानी * कंस मारिहौ तुम हम जानी ।।
कहा भयो जो तुम हौ बारे * हैं तुम्हरे गुण सबते न्यारे ।।
भलो यदपि सिंहनिको छोटो * कौन काज गज लाँबो मोटो ।।
दो०—तुम हम पर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय ।।
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हरषाय ।।२५।।
सों०—तब हलधर अरु श्याम, मिलिविलसे दोउ मनहिमन ।।
निरखि मगन नर बाम, भेद न कोऊ जानहिं ।।२५।।
सब कोउ कहत धन्य बलरामा * तुम जो कही करी सो श्यामा ।।
तब हरि कह्यो नंदसों जाई * मेरे मनहिं बात यह आई ।।
आज बसैं सब यमुनातीरा * अतिरमणीक सुगंध समीरा ।।
इहाँ कीजिये भोगबिलासा * होत प्रात सब चलहिं अवासा ।।
कमल पठाय कंसको दीजै * सुनहु तात अब बिलम न कीजे ।।
गोप जाय आवैं पहुँचाई * काल्हि चढै तनु ब्रजपर धाई ।।
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो * सब ब्रजवासिनके मन भायो ।।
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये * षट्रस भोजन बहुत मँगाये ।।
यमुना—तीर गोप—समुदाई * भोजन किये बहुत सुख पाई ।।
नंदराय तब शकट मँगाये * कोटि कमल तिन पर लदबाये ।।
बहुतभार दधि घृतके कीन्हे * ते अहिरन काँधे धरि लीने ।।
अपनी सर जे गोप सुहाये * तिनहिं संग करि नृपहिं पठाये ।।

दो०—बहुत बिनय करि कंसको, दीन्हो पत्र लिखाय ॥
कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥२६॥
सो०—गयो कमल के काज, कालीदह मेरो सुवन ॥
तुव प्रतापते राज, आय गयो पहुँचाय अहि ॥२६॥
कोटि कमल नृप माँगि पठाये * तीनों कोटि तहाँ तेहिं पाये ॥
सो राखे जलमाँझ सजाई * आयसु होय तौ देउँ पठाई ॥
तब गोपनसों कुँवर कन्हाई * ऐसे बोलि उठे मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो * यह कारज हम कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधिघृतके भारा * चले गोप लै नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई * जाय पौरियन खबर जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाये * समाचार सब नृपहिं सुनाये ॥
सुनत बात यह मनहिं डरानो * आप निकसि आयो अतुरानो ॥
देखि शकटभीर अतिभारी * भयोचकित सुधि बुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो बिशाला * लगे ताहि मानो व्यालकराला ॥
नंदबिनय तब गोपन भाखी * दीन्हों पत्र भेंट सब राखी ॥
गोपन बहुरि कह्यो नृपराई * नंदसुवन यह कह्यो कन्हाई ॥
दो०—हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम ॥
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम ॥२७॥
सो०—सुनतश्यामसंदेश, देखि कमल अति भय बिकल ॥
भीतर गयो नरेश, मान बाढो चिंता बिपुल ॥२७॥
मनहीं मन यह करता बिचारा * यासों मेरो नाहिं उबारा ॥
दैत्य गये ते सबहिं नशाये * कालीते ऐसे बचि आये ॥
ताहीपर कमलन लै आये * सहस शकट भरि मोहिं पठाये ॥
कबहुँ कहत गोपनको मारों * इनको यहाँते तुरत निकारों ॥
फेरि कछू मनमें भय पावै * करत बिचार न कछु बनि आवै ॥
पुनि सँभार धीरज उर कीन्हो * गोपन बोलि भीरतहि लीन्हो ॥
हृदय दुखीत ऊपर सुख मानी * पहिराये दीने सन्मानी ॥
शिरौ पाव नंदहुको दीनो * कहियो काज बड़ो तुम कीनो ॥

तेरे सुत बलराम कन्हाई * एक दिवस देखहौं बुलाई ।।
यह सुनि अति पुरुषारथ कीनो * कालीदहके फूलन लीनो ।।
यहकहि बिदा किये सब ग्वला * भयो कंस उर शोच बिशाला ।।
मनहीं मन सोचत हरिको गुन * रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन ।।
दो०—तब दावानल बोलिकै, कह्यो मरम सब ताहि ।।
देखौं मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि ।।२८।।
सो०—जार कीजियो छार, ब्रज सबब्रजवासिन सहित ।।
बचहि न नंदकुमार, ऐसो यत्न बिचारि उर ।।२८।।
दावानल सुनि नृपकी बानी * चल्यो रिसाय गर्व उर आनी ।।
करौं भस्म इक पलमहँ जाई * सहित गोप नंदसुवन कन्हाई ।।
नृपको काज आज करि आऊँ * जो कहुँ एक ठौर सब पाऊँ ।।
इहाँ गोप कमलन पहुँचाई * आये यमुनातीर हरषाई ।।
नंद तुरत सब निकट बुलाये * सुनत सकल ब्रजजन जुरि आये ।।
गोपन कही नंदसों आई * लिये कमल नृपअति सुख पाई ।।
दियो हर्षि तुमको पहिरायो * मुदित नंद लै शीस चढ़यो ।।
अपने सब पहिराव दिखाये * लखि सब ब्रजवासिनसुख पाये ।।
हरिको नाम सुन्यो जब राजा * हर्षि कह्यो कीनी उन काजा ।।
इक दिन बलमोहन दोउ भाई * देखहुँगो मैं इहाँ बुलाई ।।
यह सुनि नंद बहुत सुख पायो * हरषि भूप मों सुतन बुलायो ।।
करी कृपा अति नृप हरि पाहीं * सब नर नारी हर्षि मनमाहीं ।।
दो०—कहत श्याम बलरामसों, हँसि हँसिकैयह बात ।।
नृप हम तुम देखनलिये, कह्यो बुलाबन तात ।।२९।।
सो०—ब्रजजन परम हुलास, इकसुखहरि अहितेवचे ।।
मिटयो कंसको त्रास, दुतिय कमल पठाय नृप ।।२९।।
इहिविधिब्रजजनअतिसुखपायो * खान पान करिदिवस बितायो ।।
सोये सब निशि यमुनातीरा * राखि हृदय सुंदर बलबीरा ।।
तहाँ असुर दावानल आयो * चाहत है सब ब्रजहि जरायो ।।
देख सब ब्रजजन इक ठाहीं * कियो हर्ष अपने मनमाहीं ।।

प्रगटी दावानल चहुँओरा * अतिहि प्रचंड पवन झकझोरा ॥
दशहूँ दिशिते घेरत आवै * तृण तरु खग मृग जीव जरावै ॥
जागिपरे सब ब्रजनरनारी * कहूँदिशि लगी दवारी ॥
भये चकित सब अति मनमाहीं * काहू दिशि मग दीसत नाहीं ॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू * लेत सबै भरि सोच उसासू ॥
आयगई दव अतिहि निकटहीं * चले कहत सब यमुनातटहीं ॥
अब न देखियत कहूँ उबारा * बढी अनल पहूँची नभझारा ॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने * जरे सकल मनमाँझ डराने ॥
छं०—अतिबिकल सब डरे ब्रजजन देखि अनलभयावनो ॥
भई धरणिनभज्वाल पूरण धूमधुंध डरावनो ॥
लपट झपटत जरत तरुवर गिरत महि भहरायकै ॥
उठत शब्द अघात चहुँदिशि बढत झरझहरायकै ॥१॥
फटत फल फूटत पटकदल जरत बरत लता घनी ॥
काँस चटकत बाँस पटक अँगार उचटत नभतनी ॥
हरिण मोर बराह बनपशु बिकल पंथ न पावहीं ॥
जरत जहँ तहँ जीव खगमृगबिपुलजिततित धावहीं ॥२॥
दो०—दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँदिशिघेर ॥
उठी अनल ज्वाला प्रवल, मानहुँ अचल सुमेर ॥१॥
सो०—धूमधुंद बिकराल, भयो अंधेरो गगन सब ॥
बिचबिच चमकत ज्वाल, तडित माल जनु सघनघन ॥१॥
भये देखि ब्रजलोक दुखारे * तब सब हरिकी शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करहु सहाई * जरत सकल ब्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारै * कंस त्रासते तुमहिं उबारै ॥
जहँ जहँ परी गाढ हम आई * तहाँ तहाँ तुम करी सहाई ॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजै * हमहिं बचाय अग्निते लीजै ॥
व्याकुल गोप नंद मनमाहीं * करत बिचार बनत कछु नाहीं ॥
यशुमति सबहिन करत पुकारे * दई परयो है ख्याल हमारे ॥
नानारूप असुर बहु आये * कोउ खग कोउ पशुरूप बनाये ॥

काऊ पवनरूप व्है आयो * भयो तहाँ कोउ पुण्य सहायो ॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई * मरु कर मन नृपत्रास नसाई ॥
अब यह बाड़ी अग्नि अपारा * होत सकल ब्रजको संहारा ॥
किमि बचिहौं ये बालक दोऊ * मोहिं लखि परत उपायन कोऊ॥
दो०—सुनि जननीके बचन प्रभु, लखि सब ब्रज बेहाल ॥
—कह्यो सबन धीरज धरो, मति डरपो लखि ज्वाल ॥१॥
सो०—कौतुकनिधि गोपाल, को जानै तिनके गुणन ॥
दुख सुख निजको ख्याल, जनके हितकारक सदा ॥१॥
तब हरि कह्यो डरौ मति कोई * बिनवहु देव बहुरि सब सोई ॥
जिन सहाय कीनी अबताहीं * सोई करै सहाय सदाहीं ॥
हरि हँसि सबसों आँख मुँदाई * करि गये अग्निपान सुखदाई ॥
व्हैगई चहुँदिशि शीतलताई * रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई ॥
खोल देहु दृग सब हरि बोले * सुनतहि तुरत सबन दृग खोले ॥
देखि चकित सब ब्रजनरनारी * कहत धन्य धनि तुम बनवारी ॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला * लपट झपट अतिही बिकराला॥
नहिं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू * गयो बिलाय कहाँ धौं दाहू ॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी * हम यह कछू न काहू जानी ॥
तब हँसि बोले कुँवर कन्हाई * बह करनी यह कह न सुहाई ॥
तृणकी आग प्रथम बहु जागै * फिर तिहि बूझत बिलँब न लागै॥
सुनत श्याम की कोमल बानी * भये सुखी सब त्रास नसानी ॥
दो०—जीव जंतु खग मृग जिते, भये सुखी तत्काल ॥
द्रुमबेली तृण हरित सब, प्रफुलित बन सुखमाल ॥२॥
सो०—श्याम सहायक जाहि, ताहि कहौ डर कौन को ॥
यह न बडाई बाहि, पाँचतत्व उनके किये ॥३॥
कहत परस्पर ब्रजकी नारी * है सखि बड़ो बीर बनवारी ॥
देखत कोमल श्याम सलोना * यह सखि जानत है कछु टोना ॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई * लायो तापर कमल धराई ॥
माँगे कमल कंस नृपराई * कोटि कमल तिहि दिये पठाई ॥

दावानल नभँ-धरणि बराबर * घेर लिये ब्रजके नारी नर ॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हो * रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हो ॥
ये उत्पात मिटे इनहीपै * और न होंय सकै किनहीपै ॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारा * है यहही करता संसारा ॥
लखि हरिचरित यशोमति मैया * चकित निरखि मुख लेत बलैया ॥
लखि सुतचरित मुदित नंदराई * करत गोपगण सकल बड़ाई ॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा * हैं ब्रजबासिनके बड़भागा ॥
जिनके श्याम सङ्ग सुखशीला * करत रहत नित नवरसलीला ॥
दो०–एकदिवस निशि यमुनतट, बसि सब गोपीग्वाल ॥
होत प्रात निजनिज सदन, आये सहितगोपाल ॥४॥
सो०–हरिजन के सुखकार, बिलसत बिबिध बिलासब्रज ॥
संत प्राण आधार, ब्रजवासी जन जाँहि बलि ॥५॥
हरि ब्रजजनके दुख बिसरावन * करतचरित सुरमुनिमनभावन ॥
तुरत सकल ब्रजलोक भुलायो * कौन कंस कब कमल मँगायो ॥
कब हरि यमुनाजलहि समाये * कालीनाग नाथि कब ल्याये ॥
कब दावानल जारन आयो * एक दिवसनिशि कहाँ बितायो ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा * करत श्याम सोइ बालविनोदा ॥
माखन माँगत कुँवर कन्हाई * बारबार जननीसों जाई ॥
आतुर दधिहि मथत नंदरानी * सदमाखन हरिकी रुचि जानी ॥
कहत तनक तुम रहहु ललारे * तुम्है देऊँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी * बातन लावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकीं कान्हहि * कहत श्यामसों सुनत कानहिं ॥
छुठहि देत हुँकारी जननी * भूलि गई सब हरिकी करनी ॥
तबलों मथि दधि माखन कीनो * तुरतहि लै सुतके कर दीने ॥
दो०–लैलै अधरन परस करि, माखन रोटी खात ॥
करत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात ॥५॥
सो०–जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिवसनकादिकह ॥
धन्य नंदकी नार, ताको सुतकरि मानई ॥५॥

अथ प्रलम्बासुरवधलोला २३

नित नव लीला करत कन्हाई * तात मात ब्रजजन सुखदाई ।।
मुदित सकल ब्रजके नरनारी * निशिदिन मुखहरिचंद्र निहारी ।।
इक दिन श्याम राम दोउ भाई * खेलत सखनसङ्ग बन जाई ।।
नानाविधि सब करत कलोलैं * भाँतिभाँतिकी वानी बोलैं ।।
कबहूँ मोर हँसकी नाई * बोलत हँसत श्याम सुखदाई ।।
कबहूँ मधुरे सुर सब गावैं * मध्य श्यामघन बेणु बजावैं ।।
कबहूँ चढ़त तरुन पर धाई * कूदि परत गहि डार नबाई ।।
नानाविधिके खेलन खेलैं * बाल बिनोद मोदरस केलैं ।।
तहाँ प्रलंब असुर इक आयो * कंस ताहि दै पान पठायो ।।
सो छलरूप गोपबपुधारी * मिल्यो आप सब सखनमँझारी ।।
ताको ग्वाल न काहु न जान्यो * यह तो असुर श्याम पहिचान्यो ।।
बलदाऊको दियो जनाई * ताहि हतनको रच्यो उपाई ।।
दो०—सखा बुलाये निकट सब, तिन्हैं कह्यो नंदलाल ।।
फल बुझाय अब खेलिये भये मुदित सुनि ग्वाल ।।१।।
सो०—द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बाँटि सब ।।
आधे इकदिशि आय, आधे एक दिशा भये ।।१।।
निज २ जोट सखन जुरि लीनो * हलधर जोट दनुजसङ्ग कीनो ।।
आपसमें यह होड लगाई * जो हारै सो पीठ चढाई ।।
भाँडोर बनलौं लै लै नाहीं * फेरि इहाँ पहुँचावै ताहीं ।।
फलको नाम बुझावन लागे * बूझदियो बल सबते आगे ।।
चले सखा चढिचढि निजजोरी * चढ़े दनुजबल घींच मरोरी ।।
भाँडीरबन जब पहुँचे जाई * फिरे सखा सब ठाँव छुवाई ।।
असुर चल्यो लै बलको आगे * प्रगट्यो दनुजशरीर अभागे ।।
तब बलदेव कोप करि भारी * मुष्टि एक ताके शिर मारी ।।
बिकसिगयोशिरगिरच्यो अधीरा * उतरि परे तब श्रीबलवीरा ।।
भयो पलक में सो बिनप्राणा * देखत सुर मुनि चढे बिमाना ।।
भई गगनते जय जय बानी * फूलनकी बरषा बरषानी ।।

बहुविधि अस्तुति बलहि सुनाई * मुदित सकल सुरमुनिसमुदाई ॥
दो०—ग्वालबाल सुचकित सबै, दौरि गये बलपास ॥
मृतक असुरतन देखिकै, तब मन कियो हुलास ॥२॥
सो०—धन्य धन्य बलराम, धन्य तुह्मारे मातपितु ॥
बडो कियो यह काम, कपट रूप मार्‍यो असुर ॥२॥
यह शठ गोपबेष व्है आयो * हम काहू इहि जानि न पायो ॥
जो यह शठ नहिं जात निपातो * तौ काहू लरिकहिं लै जातो ॥
हौ तुम बड़े बीर दोउ भाई * जहँ तहँ हमको होत सहाई ॥
बनके दुष्ट सकल तुम मारे * हौ हम तुम सबके रखबारे ॥
ताहि कहौ काको डर भैया * जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बड़ाई * आय मिले तब हँसे कन्हाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहनलाला * आये सदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता * सुनत चकित ब्रजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बड़ाई * जननी मुदित लिये उर लाई ॥
बलमोहन दोउ बीर निहारी * दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जानि बनहिते आये * दोउ भैयन भोजन करवाये ॥
जो सुख लहत नंदकी रानी * सो शारद नहिं सकहिं बखानी ॥
दो०—सुतसनेहयशुमतिमगन, दिशदिन जातनजान ॥
करत चरित संतन सुखद, भक्तवश्य भगवान ॥३॥
सो०—नित नव परम हुलास, ब्रजवासी हरिसँग लहत ॥
बिलसत बिबिध बिलास, बाट घाट गृह बन सघन ॥३॥

अथ पनघट लीला ३२

पनघट यमुनाके तटमाहीं * ठाढ़े श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखावृंद चहुँ ओर बिराजैं * कोटिकामछबि निरखत लाजैं ॥
शीस मुकुटकी लटक सुनाई * सुरंग खौरि केसर छबि जाई ॥
कुंडल झलक अलक घुँघरारी * कंठ कनककंठी द्युतिकारी ॥
चटकीली लटक बनमाला * परसति चरणसरोज बिशाला ॥
मुक्तमाल मणिमाल सुहाई * उर बिशाल पै अति छबि छाई ॥

अरुण अधरदशनन द्युति नीकी ❋ मुरि मुसकानि मोहनी जीकी ॥
चटकीलो पट पीत बिराजै ❋ कटितट क्षुद्रघंटिका राजै ॥
भुज बिशाल भूषणयुत सोहैं ❋ कर मुद्रिका जटित मन मोहैं ॥
तनु घनश्याम रसीले नैना ❋ हँसि हँसि कहत सखनसों बैना ॥
कनकलकुटसों पग लपटान्यो ❋ भूषणसहित न जात बखान्यो ॥
गहि द्रुमडारि तिरीछे ठाढ़े ❋ अङ्ग अङ्ग अनुपम छबि बाढ़े ॥
दो०—कबहु बजाबत अधर धरि, करि मुरली धुनि घोर ॥
निकट बुलावत बनमृगन, कबहुँ नचावत मोर ॥१॥
सो०—रहे गगनघन छाय, सुखद छाँह शीतल किये ॥
वर्षाऋतुको पाय, निरखत सुत नँदरायको ॥१॥
हरित भूमि चहुँओर सुहाई ❋ मनहुँ काम मसनंद बिछाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई ❋ शीतल अधिक सुगंध सुहाई ॥
बहत यमुन बहु जलते पूरी ❋ परन भँवर जहँतहँ छबिरूरी ॥
उठत श्याम सुभग तरङ्गा ❋ छबितरङ्ग जिमि हरिके अङ्गा ॥
या छबिसों पनिघट हरि ठाढ़े ❋ संग गोप बालकहित बाढ़े ॥
यमुनाजल तिय भरन न जाहीं ❋ ग्वालभीर देखत सकुचाहीं ॥
हरिके गुण मन में सब जानैं ❋ रोकत टोकत शंक न मानैं ॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं ❋ दरशलालसा अति मनमाहीं ॥
सबको अंतर जानि कन्हाई ❋ युवतिनके मनकी गति पाई ॥
तब इक बुद्धि रची नंदलाला ❋ रसिकशिरोमणि मदनगोपाला ॥
सखन एक तरुतर बैठाई ❋ पनिघटते सब भीर मिटाई ॥
आप रहे द्रुमओट छिपाई ❋ हेरत युवतिन मग चित लाई ॥
दो०—ईहिं अंतर आवत लखी, युवती इकघनश्याम ॥
आप रहे द्रुम ओट दुरि, यमुनातट गइ बाम ॥२॥
सो०—नागरिजलहिंहिलोरि, भरिगागरि शिरधरि चली ॥
पाछे ते चितचोर, घट लै दियो लुढाय महि ॥२॥
गही चतुर ग्वालनिभुजहरिकी ❋ पाई कनकलकुटियाँ करकी ॥
सबसों तुम करि रहे ढिठाई ❋ तैसेहि मोसों लगत कन्हाई ॥

Digitization by Arya Samaj Chennai Foundation, Chennai

देन लगे तब हरिहँसि गागरि ✱ लेत नहीं ग्वालिनि अतिनागरि॥
कहति कि रीतो घट नहिं लैहौं ✱ जल भरि देहु लकुट तब दैहौं॥
कहा जो तुम नँदसुबन कन्हाई ✱ हमहूँ बड़े महरको जाई॥
एक गाँव बस बास हमारो ✱ मैं नहिं सहिहौं कह्यो तुह्मारो॥
एक कहौ तौ दश मैं कहिहौं ✱ मैं कछु तुमसौं डरपि न जहिहौं॥
यह सुनि हँसि दीनो नंदलाला ✱ लियो चोरि चितमदनगोपाल॥
कहत लकुटिया दे री मेरी ✱ मैं भरि देहौं गागरि तेरी॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी ✱ ग्वालिनि तनुकी दशाभुलानी॥
लागी हृदय मदनकी साँटी ✱ मन परि गयो प्रेम की घाँटी॥
करते लकुट गिरत नहिं जान्यो ✱ विवश भई चितचेत हिरान्यो॥
दो०—तब घट भरि हरिभावते, दीनों शीस उठाय॥
नेकहुँ सुधि तातन नहीं, चली ब्रजहिं समुहाय॥३॥
सो०—कियो दृगनमें धाम, सुंदर नट नागर सुखद॥
जित देखै तित श्याम, पंथ ताहि दीसै नहीं॥३
उतै अपर ग्वालिन इक आई ✱ कहति कहा तू रही भुलाई॥
सूधे पंथ चलति है नाहीं ✱ कहा सोच तेरे मनमाहीं॥
अबहीं हँसति भरन जल आई ✱ कहाँ चली इत आप गँवाई॥
ताको देखि कहति सुनु आली ✱ मोपर श्याम मोहनी घाली॥
मैं जल भरन अकेली आई ✱ मेरो गागरि कृष्ण लुढ़ाई॥
तब मैं कनकलकुट गहि लीन्हो ✱ उन मोतन लखिकै हँसि दीन्हो॥
वहै हँसनि मुहिं परी ठगौरी ✱ तबहींते मैं ह्वै गइ बौरी॥
कहौं तोसों अब आली ✱ मेरे चित वह चितवति साली॥
बस्यो कान्ह मेरे दृगमाहीं ✱ और कछू मोहिं दीसत नाहीं॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी ✱ आप बिलोकनको अतुरानी॥
ताहि बाँह गहि घर पहुँचाई ✱ आप गई जलको अतुराई॥
देख्यो जाय श्याम तहँ नाहीं ✱ इत उत लखि सोचत मनमाहीं॥
दो०—हरि देखत तरु ओट ह्वै, ग्वालिनि मन दुख पाय॥
चली नीर भरि गागरी, बारबार पछिताय॥४

सो०—मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति ॥
प्रगटे नंदकुमार, आय अचानक निकटही ॥४॥
गहि लीन्ही अंकम भरि ग्वारी * ताके तनुकी तपति निवारी ॥
तातन चितै कह्यो तू कोरी * तोहिं कबहुँ देख्यो नहिं गोरी ॥
मन हर लीनो रूप दिखाई * बहुरि भये तरुओट कन्हाई ॥
मिलि हरिसों सुख पायो ग्वाली * छकी प्रेमरस लखि बनमाली ॥
नहिं जानत को मैं कित आई * भई मगन मन तनु बिसराई ॥
घरको पंथ भूलि गइ नागरि * इत उत फिरतशोशलियेगागरि ॥
और सखी इत उतते आई * देखि दशा कित निकट बुलाई ॥
कहाँ फिरति भूली मगमाहीं * बूझति सखी सुनत कछु नाहीं ॥
चौंकि परैं सुपने ज्यों जागी * तासों बचन कहन तब लागी ॥
श्यामबरन इक मिल्यो ढुटोना * तिन मोको कछु कीनो टोना ॥
मैं भरि गागरि शीस उठाई * उन औचक मुहिं अङ्क में लाई ॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी * देखी नाहिं कबहुँ ब्रजखोरी ॥
दो०—ऐसे कहि चितयो बिहँसि, मैं लखि रही भुलाय ॥
तबहिं भयो अंतर कतहुँ, मेरो चित्त चुराय ॥५॥
सो०—कहो सखीसों बात, ग्वालनि लाज बिसारिकै ॥
निरखि नंदको तात, भई जलधिकी बूँद जिमि ॥५॥
सो सखि सावधान करि ताको * चली आप आतुर यमुनाको ॥
देखी श्याम युवति ढिग आई * ठाढ़े तरुकी ओट कन्हाई ॥
तासु अंगछबि रहे निहारी * गोरे बदन चूनरी कारी ॥
छूटी अलक बदनछबि छाई * मनहुँ जलज अलि अबहु सुहाई ॥
हाथन चूरी चारु बिराजै * कंकन मुंदरिन अतिछबि छाजैं ॥
सहज सिंगार उरोज उठो हैं * अंग अंग सुठि सुन्दर सोहैं ॥
ग्वालिन हरिको देख्यो नाहीं * जाने कहूँ गये बनमाहीं ॥
जल भरि चली मनहिंपछिताई * गागरि नागरि शीस उठाई ॥
औचक श्याम गही लट आई * यह कहि कहाँ चली अतुराई ॥
चिबुक परसि उरसों करलायो * ग्वालिनि मनहिं हर्ष अति पायो ॥

ऊपर कहति बंक करि भौंहन * छाँडि देहु मेरी लट मोहत ॥
उर परसत कछु सकुच न मानत * और ग्वालि सों मोको जनत ॥
दो०—छाँडि देहु लट देखि है, ब्रज युवती कोउ आइ ॥
हाहा मैं पाँयन परति, तुमको नंददुहाइ ॥६॥
सो०—इतनेहीको मोहिं, सोंह दिवावत बावरी ॥
पहिचान्यो नहिं तोहिं, ताते मुख देखत तनक ॥६॥
यों कहि श्याम छाँडि लटदीन्ही * मुरिमुसकनि नागरि बशकीन्ही ॥
चली भवन हरि मन हरिलीनों * जिय यह कहति कहा हरिकीनों ॥
पग द्वै चलत ठुठकि रहि जाई * भूलिगई मारग जिहि आई ॥
प्रेममगन तनुसुधि बिसराई * रहे दृगनमें श्याम समाई ॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई * तब कछु जियमें गई लजाई ॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृहमाहीं * उरते श्याम टरत क्षण नाहीं ॥
सखी संगकी बूझत आई * कह यमुनातट बेर लगाई ॥
और दशा भई कछु तेरी * कहति नहीं हमसों सखि हेरी ॥
कहा कहौं तुमसों री आली * मोह्यो मोहिं श्याम बनमाली ॥
सुनहु सखी री वा यमुनातट * मैं जल भरयो अकेली पनघट ॥
लै गागरि शिर मारग डगरी * कितहुंते आयो मो ढिग री ॥
औचक आनि गह्यो लट मेरी * कह्यो नेकु मुख देखन देरी ॥
दो०—मैं मृदु बचन अमोल सुनि, देखि बदन जलजात ॥
जकी चकी सी व्है रही, उन परस्यो मो गात ॥७॥
सो०—प्रमुदित हिये गुवारि, मनमोहन के रस बिबश ॥
कुलको लाज बिसारि, कही सखिनसों बात सब ॥७॥
सुनत बात सब सखी सयानी * श्याम बिलोकनको ललचानी ॥
इक क्षण कान्ह न बिसरत काहू * सुनत भयो यह अधिक उछाहू ॥
घरघरते धाई सब नागरि * लै लै आंई जलकी गागरि ॥
चलीं यमुनतट अति अतुराई * देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥
मोरमुकुट कटि कछनी सोहै * कुंडल चटक लटक मन मोहै ॥
पीतबसन लखि तडित लजाई * नयन विशाल अधर अरुणाई ॥

देखत कह्यो सखिनढिग जाई * ठगत फिरत हौ नारि पराई ।।
काहि ठग्यो कैसे ठग चीन्हौ * तुम्हरो कहौ कहा ठगि लीन्हौ ।।
कौन ठग्यो कहि कहा बखाने * औरहिके ठग तुमको जाने ।।
कहा ठग्यो सो हम नहिं मानैं * कहौ नाम धरि तब हम जानै ।।
सर्वस ठगत पलकके माहीं * कहा ठग्यो सो जानत नाहीं ।।
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु * कैसे मोको ठग ठहरावहु ।।
दो०—ठग लक्षण हमपै सुनहु, फाँसी मृदु मुसकान ।।
रूप ठगौरीते ठगत, ब्रजतिय मनधनप्रान ।।८।।
सो०—फिरत बिकलबेहाल, लोक लाज कुल कानि तजि ।।
ठगी नंद के लाल, भई बिदित तिहुँ लोक तिय ।।८।।
अपने लक्षण मोहिं लगावहु * जैसे तुम सब जितहि चुरावहु ।।
कहति कि प्रगटी तिहुंपुर बाता * ब्रजतिय ठगत नंदको ताता ।।
तुमनहि कहत कहत सब कोई * सुर नर मुनी बेदहु नहीं गोई ।।
तीनि लोकको ठाकुर जोई * ब्रजबनितन बश कीनो सोई ।।
यों सुनि सब ग्वालिनि मुसकानी * कहौ सखी सुनि हरिकी बानी ।।
हरितुम बात उलटि यह ठानत * तुमरी नागरता हम जानत ।।
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई * छाँडिदेहु अब यह लंगराई ।।
काहू को ढारतहौ गागरि * काहू लटगहि करत अचकरि ।।
काहूको अङ्कमें लै लावत * ब्रजलोकनपै सबन हँसावत ।।
तुमते मग कोउ चलन न पावत * बाट घाट डरपत सब आवत ।।
यमुना भरन देत नहिं पानी * बहुत अचकरी अब तुम ठानी ।।
कहौ तौ यशुदहि जाय सुनावैं * फेरि तुम्है ऊखल बँधवावैं ।।
दो०—यह सुनि हरि रिस करि उठे, इंडुरी लई छुडाय ।।
कह्यौ जाय सब मातसों, लीजौ मोहिं बँधाय ।।९।।
सो०—मोहिं कहति ठग चोर, आपे भई साहुनि सबै ।।
डारी गगरि फोर, कहत जाहु चुगली करहु ।।९।।
तब युवती सब हरि ढिग आई * कहति इंडुरी देहु कन्हाई ।।
नहिं तौ तुमको गहि लै जैहै * यशुमतिपास न नेक डरैहैं ।।

बाट घाट तुम करत ढिठाई * काहु न नेक डरात कन्हाई
इँडुरी लै फोरी सब गगरी * आज मिटावैं तुह्मरी ठगरी
तब हरि चढ़े कदँबपर जाई * इंडुरी दीन्हीं जलहि बिहाई
बदन सकोरत भौंह मरोरत * मुरिमुसकानिसबकेचितचोरत
कहत कहौ मैयासों जाई * सब मिलि लीजो मोंहिं बुलाई
तुम सब जुरि मोंहि मारन धाई * तब मैं इँडुरी जलहिं बहाई
ऐसो करि तुम मोकों पायो * मानहुँ मोकों मोल मँगायो
यह सुनि युवति कहति मुसकाई * कहति यशोमतिसों हम जाई
वे दिन बिसरिगये मनमोहन * बाँधे मात ओखरी गोहन
ह्याँई रहौ तौ बदहिं कन्हाई * जाउ कहौ तौ नंददुहाई
दो०—कान्है सौंह दिवायके, उरहन लै सब बाम॥
ऊपर रिस अन्तर सुखी, चलीं नँदके धाम॥१
सो०—मथति महरि निज धाम, दधिहरि के माखन लिये॥
तिहिं अन्तर ब्रजबाम, अवति देखी भीर अति॥१
मैं जानति हरि इनहिं खिजाई * ताते सब उरहन लै आई
कहति युवति सब रिस भरिआई * ऐसो ढीट कियो सुत माई
भरन देत नहिं यमुनापानी * रोकत घाट करत कलकानी
काहूकी गागरि ढरकावैं * इँडुरी लै जलमाहिं बहावैं
काहूको घट डारत फोरी * गारी देत सहैं नित खोरी
महरि कहति तुमसों सकुचाहीं * हरिके गुण तुम जानति नाहीं
अब नाहीं ब्रजबास हमारो * करत अचकरी सुवन तुह्मारो
नेक नहीं सकुचत मनमाहीं * महरिसुतहिं तुमबरजति नाहीं
यशुमति सबहिन कहत निहोरी * कहा करौं सो तुमहिं कहोरी
जो हरिको मैं ह्याँ गहि पाऊँ * तो तुम सबको अबहिं दिखाऊँ
तुमहू जानतिहौ गुण हरिके * ऊखलसों बाँधे मैं धरिके
मारन लगी साँटि लै जबहीं * बरजो मोहिं तुमहि तब सबहीं
दो०—अब घर आवै जबहिं हरि, तबहिं करौ सोइ हाल॥
लरकाईते अचगरो, मैं जानति गोपाल॥१

सो०—अब जो पकरनजाउँ, ताहि गहन पाऊँ कहाँ ।।
सुनतहि मेरो नाउँ, को जाने भजि जाय कित ।।११।।
यह अपराध क्षमो सब हमको * यहै कहति हौं मैं अब तुमको ।।
इहिबिधि युवतिन बोध कराई * महरि सबनको घरन पठाई ।।
इतते घरन चलीं सब ग्वारी * उतते घर आवत बनवारी ।।
व्है गइ भेंट बीच मग आई * तुरत नयन हरि गये लजाई ।।
मात बुलावति जाहु कन्हाई * बहुत बढाई करि हम आई ।।
निरखि बदन हँसि कह्यौ कन्हैया * मैं समझाय लैउँगो मैया ।।
सकुचत आये घर मोहन * द्वारहिते लागे हरि जोहन ।।
देखि जननि गृहकारज लागी * गोपिनके उरहन रिस पागी ।।
भीतर रोहिणि पाक बनावै * कहि कहि तिनसों बात सुनावै ।।
हरुवै-हरुवै तब हरि जाई * सुनत आप पाछे चित लाई ।।
यहै कहति यशुमति रिस पाई * गये कहाँ धौं भाजि कन्हाई ।।
पनिघट रोकत धूम मचावत * यमुना जलकोउ भरन न पावत ।।
दो०—गारि देत बेटिन बहुत, वे आवत ह्यां धाय ।।
हाहा मैं सबसों करति, क्योंहूँ खूट छुडाय ।।१२।।
सो०—इँडुरी देत बहाय, सबकी गगरी फोरिकै ।।
कित धौं गयो पराय, यह कहि धिरवत है सुतहिं ।।१२।।
जाति पाँतिसों कह लँगराई * मारेहु मानतनाहिं कन्हाई ।।
तब पाछेते हरि उठि बोलो * मधुरवचन कोमल अतिभोलो ।।
तू मोहीं को मारन जानै * उनके गुणन नाहिं पहिचानै ।।
कहति जमै मानति तू सोई * तिनके चरित न जानत कोई ।।
कदंबतीरते मोहिं बुलावैं * तातें ठगि ठगि आप बनावै ।।
मटकत गिरै शीसते गगरी * नाम लगाबत मेरो सिगरी ।।
फिरि चितई देखे हरि पाछे * सुंदर श्याम पीतपट काछे ।।
कह तू कहाँ रह्यो मों पाहीं * मैं कह तोको जानति नाहीं ।।
हरि मुख देखतही नँदरानी * तुरतहिभूलि गई रिस भारी ।।
कहति कि उरहन लै सब आवैं * झूँठहि खोरि कान्हको लावैं ।।

मैं जानत गुण इन सबहीके * बातन जोरि बनावति नीके
वे सब यौवनके मदमाती * फिरति सदा हरिसों अठलाती
दो०—कहाँ श्याम मेरो तनक, वे सब जोबनजोर ॥
अब उरहन लै आवहीं, तौ पठऊ मुखमोर ॥१
सो०—तू कत उनढिग जात, मैं बरजति मानत नहीं ॥
लावति झूँठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी ॥१
यह कहि चूमि सुतहिं उर लायो * मनमोहन मन हर्ष बढ़ायो
ब्रज घरघर यह बात जनाई * पनिघट रोकत कुँवर कन्हाई
श्यामबरन नटवर बपु काछे * मुरली मधुर बजाबत आछे
करत अचगरी जो मन भावै * यमुनाजल कोउ भरन न पावै
बैठत आप कदँबकी डारी * सबन बुलावत दै दै गारी
काहूकी गागरि गहि फोरैं * काहूकी इंडुरी जल बोरैं
काहूको अङ्कम गहि लाबै * काहूको घट भूमि लुढाबै
नयन सैन दे चितहि चुरावत * काहूसों मन अपनो लावत
ब्रजयुवती सुनि २ उठि धावैं * बिनहरिदर्श न क्षण कल पा
कोउबरजै कोउ कहै कोटिबिधि * सबके ध्यान श्यामसुंदरनिधि
दो०--यह लीला सब करत हरि, ब्रजयुवतिन के हेत ॥
कृष्ण भजै जो भाव जिहिं, तिह तैसो फल देत ॥१
सो०--चिंतामणि जिहिनाम, चिंतित फलदायक जनन ॥
सबहीको सब बाम, जैसे को तैसो सदा ॥१
मनक्रम बचन तिन्हैं रतिहरिसौं * नातो नेह मानति घरसौं
निशिदिन सोबत जागत माहीं * नँदनंदन क्षण बिसरत नाहीं
सुनि यह श्रीवृषभानुदुलारी * पनिघट ठाढे कुंजबिहारी
देखनको चित अति अतुराई * कह्यो सखिनसों कुँवरिबुला
चलहु यमुनतट ल्यावहिं पानी * तुरत बात यह हरषानी
इक २ कलश सबन गहि लीनो * सुनत गमन यमुनातट कीनो
देखे तहाँ कुँवर नंदलाला * सुंदर श्यामल नयन विशाल
प्यारी मन अति हर्ष बढायो * प्यारहिं देखि श्यामसुखपा

रहे रीझि हरि दीठि लगाई * भरयो नीर प्यारी मुसकाई ॥
चली घरहि यमुनाजल भरिकै * सखिन मध्यगागरि शिरधरिकै ॥
मंदमंद गति चलति सुनाई * मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे * बिबस भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै * गागरि शिरपै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीव लटकत नक बेसर * बंदनबिंदु आड़दिये केसर ॥
दो०–लोचनलोलविशाल अति, मुरिमुरि चितवत जायँ ॥
भृकुटी धनुषकटाक्ष शर, हरिदृग मृगन लगाय ॥१५॥
सो०–अङ्ग अङ्ग छबि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ॥
अञ्चलध्वज फहराय, ठिठुकि चलत हरिमनहरत ॥१५॥
रीझे श्याम निरखि छबि प्यारी * संगहि चले लागि बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई * कबहुँ रहत पाछे चित लाई ॥
नानाभाँतिन भाव बतावैं * प्यारिहिनिजअभिलाषजनावैं ॥
कनकलकुट लै करके माहीं * आगे पंथ सँवारत जाहीं ॥
देखत जहाँ प्रिया परछाँहीं * तहाँ मिलावत निज तन छाहीं ॥
छबि निरखत तब प्यार जनावैं * पीतांबर लै शीस फिरावै ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहिजाहीं * निरखत कबरी छबि ललचाहीं ॥
गागरि ताकि काँकरी मारैं * उचटि उचटि तिय अङ्गन पारैं ॥
ओट पीतपट शीस नवाई * ईहिं मिस निकसत ढिगव्है आई ॥
प्यारी अपने चित अनुमाने * मेरे हित हरिभावन ठाने ॥
सखितन मध्य नागरी जाई * नहिं पावत लग लगन कन्हाई ॥
कियोचरित तब रसिक बिहारी * सखिन सहित मोहिं सुकुमारी ॥
दो०–मिसकरि निकसे निकट व्है, निरखिवदन मुसिकाय ॥
मन हरलीनो सबनको, दियो काम उपजाय ॥१६॥
सो०--भईविवश सुकुमार, अङ्ग उमँग आँगी दरकि ॥
मोहे नंदकुमार, बुधि बिसरी देहकी ॥१६॥
सखिनसंग पहुँची घर आई * अटकि रह्यो मन हरिसङ्ग जाई ॥
पूनि २ उर यह करत बिचारा * कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा ॥

गागरि निज निज गृह पहुँचाई * बहुरि सखी प्यारी ढिग आई ॥
बार बार सब कहत निहोरी * चलिये यमुनाजलहि बहोरी ॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी * चित उरझो कित नब बनवारी ॥
ठगिसी रही मनहिं मन सोचै * प्रेमविवश दृग बारि बिमोचै ॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी * कहा भयो तोको री प्यारी ॥
सोचति कहा कहै किन सो री * काहू लियो चोर कछु चोरी ॥
उत्तर हमैं देति क्यों नाहीं * कहा ठगीसी है मनमाहीं ॥
गहि २ भुजा कहति सब गोरी * चलहि न यमुना आवाहि खोरी ॥
तब सखियन वृषभानुदुलारी * लीनी सबन निकट बैठारी ॥
जलजनयन जलभरिअनुरागीं * हरिके चरित कहन सब लागीं ॥
दो०—कहौ सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर ॥
गैल न छाँडत साँवरो, रसिया नंदकिशोर ॥१७॥
सो०--धरै न कोऊ नाँव, इह शंकनि डरपत हियो ॥
एक भाँतिको गाँव, वह चंचल माने नहीं ॥१७॥
मोको देखत जहाँ कन्हाई * मेरे सङ्ग लगत उठि धाई ॥
इतउत नयन चुराय निहारै * मोकों मगमैं आनि निहारै ॥
आगे चलत लकुट कर लाई * मेरो पंथ सँवारत जाई ॥
सो वह मोंहिं निहारो लाई * फिर चितवै मोतन मुसिकाई ॥
जब मैं यमुनाको जल भरिकै * चलति गागरी शिरपै धरिकै ॥
तब घटमें वह काँकरि मारे * उचटि लगति तब अंग निहारे ॥
मेरे उर अंचर फहराई * सो वह देखि देखि ललचाई ॥
कबहूँ पीतांबर शिर फेरै * बारबार करि मोतन हेरै ॥
कबहूँ आपनि छबि दरसावै * मेरे चितको आनि चुरावै ॥
जब देखौं तब मोतन हेरै * नेक नहीं दृग इत उत फेरै ॥
जहाँ जाति मेरी परछाँई * तहाँ मिलाय रहत निज छाँई ॥
जब लग लागन पावत नाहीं * तब वाकोजिय अति अकुलाहीं ॥
दो०—मोतन छूटे चले हरि, ताहि भरत है अंक ॥
हौं सकुचत बोलौ नहीं, लोकलाजकी शंक ॥१८॥

सो०-ब्रज घर २ यह शोर, को जानै कहियत कहा ।।
चितवत यह चिय चोर, बिकल होत सखि प्राण तनु ।।१८।।
कहिये कहा सखी जित जैसी * भइ गति साँप छछूँदर कैसी ।।
घरसे निकसत बन नहिं आवै * लोकलाज कुलकानि सतावै ।।
जो घर रहौं रह्यो नहिं जाई * तनु घरमें मन जहाँ कन्हाई ।।
कितो करो आवत इत नाहीं * बिंध्यो पीतपट आँचरमाहीं ।।
अब तौ मेरे मन यह राँची * करिहौं प्रीति श्यामसँग साँची ।।
ब्रजके लोग हँसौ किन कोऊ * कुलमर्याद जाउ किन सोऊ ।।
कहा लाभ सो कहहु सयानी * जामें होय जीवकी हानी ।।
सोना कहा कान जिहिं टूटै * अंजन कहा आँख जिहिं फूटै ।।
कहा काच संग्रहतें होई * जो अमोल मणि करते खोई ।।
बिष सुमेर कहु कौने काजा * सुखद बूँद इक औषधिराजा ।।
कुलकी कानि काँच किरकाई * चिंतामणिकी खानि कन्हाई ।।
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी * सिखवहु मोहिं सखी जियजानी ।।
दो०--मोहिं तौ अब सूझे नहीं, बिन वह मृदु मुसकानि ।।
कापै न्यारो होत रँग, हरदी चूनो सानि ।।१९।।
सो०-मेटिलोककी कानि, पतिब्रत राख्यो श्यामसों ।।
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहौ ।।१९।।
सुनत गोपिका राधाबानी * हरि अनुराग सिंधुमगनानी ।।
गद्गद कंठ पुलक तनु आये * लोचन जलज प्रेम तनु छाये ।।
भई प्रेमबश गोपकुमारी * लोक सकुच कुलकानि बिसारी ।।
बारहिंबार कहत ब्रजनारी * धन्य धन्य वृषभानुदुलारी ।।
हम सब तोसों सत्य बखानैं * तैं हरि भलो भाँति पहिचानैं ।।
यह मोहन सबको मन मोहै * तिय लखिविवश न होय सुकोहै ।।
अङ्गअङ्गप्रति अति छबि छाजै * समता कोटि कामद्युति लाजै ।।
सुभगश्याम दोउ पाणिपकरिकै * करत वेणुधुनि अधरन धरिकै ।।
तब यह दशा सबनकी होई * जडचेतन मोहत सब कोई ।।
बनमृग बिकट धाय सब आवैं * खग व्है मौनन अङ्ग डुलावैं ।।

तृण गहि दंत धेनु रहि जाहीं * थनते क्षीर पियत बछ नाहीं ॥
यमुना बहिबेते रहि जाई * जलचर प्रगटत बाहर आई ॥
दो०—जडचेतन चेतन जडहिं, सुनत होत कल बैन ॥
कैंबिष कै मद कै अमी, धिकौं भर्‍यो रस मैन ॥२०॥
सो०—गृहबन कछु न सुहाय, सुनत श्रवणवह मधुरधुनि ॥
गृहकारज बिसराय, चकित थकित रहियत सबै ॥२०॥
बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई * मोहत सुंदररूप दिखाई ॥
नई नई छबि क्षण क्षण माहीं * झलकावत सब अङ्गन जाहीं ॥
ऐसो को जु देखि नहिं मोहै * नंदसुवनसम सुन्दर को है ॥
वह सखि सबहीके मन भावै * सब कोउ वाहि देखि सुख पावै ॥
लोकलाज कुल कौने कामहिं * जो पावहि सुन्दरवर श्यामहिं ॥
पैं यह मोहिं अगम अति लागै * यह सुख मिलै नहीं बिन भागै ॥
इनको गर्ग कह्यो नंदपाहीं * बिना सुकृत ये प्रापति नाहीं ॥
तुमहूँ इनको तप करि पायो * ऐसे नंदहि गर्ग सुनायो ॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो * जो बर पावहिं नंददुलारो ॥
ताते मों मनमें यह आवै * कीजै जो सबके मन भावै ॥
तप कीजै हरिके हितलागी * पूजि गोरिपतिसों बर माँगी ॥
नंदसुवन सुन्दर बर पावै * और सकल कामना नशावै ॥
दो०—जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रगटत पापाण ॥
ताते सब तप कीजिये, और उपाय न आन ॥२१॥
सो०—कीजै यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुनानदी ॥
पूजहिं सब करि प्रेम, तो पावहिं पति करि हरिहिं ॥२१॥
तपकरि योगीजन हरि ध्यावैं * मनवांछित फल तप करि पावैं ॥
सकल कामनाके शिव दाता * कहत बेदविधि पंडित ज्ञाता ॥
हमको मनवांछिन सखि येहा * नंदसुवनपदकमल सनेहा ॥
सुनत सप्रेम सखीकी बानी * श्रीवृषभानुसुता हर्षानी ॥
यहै मंत्र सबके मन मान्यो * धन्य धन्य कहि ताहि बखान्यो ॥
कहत सबै कीजै सखि सोई * जाविधि नंदनंदनहित होई ॥

वृथा जन्म जग जान न दीजे * यशुमतिसुतसों हित करि लीजै ।।
यहै मन्त्र सबहिन दृढ कीन्हों * नंदनँदसों पतिब्रत लीन्हों ।।
धन्य धन्य ब्रजगोपकुमारी * जिनके हित पति कृष्ण मुरारी ।।
मनबच क्रम हरिसोंरति मानी * लोकलाज तिनका सम जानी ।।
इक क्षण श्याम न उरते टरहीं * नेम धर्म ब्रत हरिहित करहीं ।।
जिनको यश शारद श्रुति गावैं * ब्रजवासी जन कहा बतावैं ।।
दो०—जाग्रत स्वप्न सुषुप्त सम, ब्रजयुवतिन मनमाँहि ।।
सदा एक तुरिया रहित, और अवस्था नाँहि ।।२२।।
सो०—ऐसो कौन प्रबीन, चहै प्रेम ब्रजतियन को ।
हरि छबि जल मनमीन, बिछुरीसकतनहिंएकपल ।।२२।।

अथ चीरहरणलीला ३४

भवन रवन सबहिन बिसरायो * ब्रजयुवतिन हरिसों मन लायो ।।
यहै बासना सबउर जामी * होय गुपाल हमारो स्वामी ।।
कामबासना करि उर ध्यायो * हरिके हेत तपहिं मन लायो ।।
षट्दस सहस गोपकी कन्या * करन लगीं तप हरिहित धन्या ।।
रहति क्रियायुत तपको साधैं * छाँड़ दई सब भोग उपाधैं ।।
प्रातकाल यमुना जल न्हाहीं * प्रहर प्रयंत रहैं जलमाहीं ।।
जपहिं उमापति हर वृषकेतू * सुन्दर श्याम कृष्णपति हेतू ।।
शीतभीत मनमें नहिं ल्यावैं * नयन मूँदिकै ध्यान लगावैं ।।
बारबार यह कहैं मनाई * हम बर पावैं कुँवर कन्हाई ।।
जलते बहुरि निकसि सब आईं * पूजहिं गोपेश्वर शिव जाईं ।।
चंदन बिल्व पत्र जलधारा * अक्षत सुमन सुगंध अपारा ।।
प्रीतिसहित सब शिवहि चढावैं * धूप दीप करि अस्तुति गावैं ।।
छंद—करहिं अस्तुति गान बहुबिधि पाणिपंकज जोरहीं ।।
बारबार नवाय मस्तक प्रेमसहित निहोरहीं ।।
जय महेश कृपालु शिव आनंदनिधि गिरिजापते ।।
कैलासपति कल्याण अगजगनाथ सर्व नमामिते ।।
जटाजूट त्रिपुंडू शशिकल गंगयुत शोभित शिरे ।।

कमलनयन बिशाल सुन्दर चारु कुंडल श्रुति धरे ॥
नीलकंठ भुजंग भूषण भस्म अङ्ग दिगंबरे ॥
अर्द्धङ्ग गौरि बिशाल उर शिर मालधर करुणाकरे ॥ २ ॥
कर्पूरगौर प्रसन्न आनन पंचवक्त्र त्रिलोचने ॥
कामप्रद सुखधाम पूरण काम शोच बिमोचने ॥
भगवान भो भवभयहरण भूतादिपति शंभू हरे ॥
प्रणतजन पूरण मनोरथ जगतपति मन्मथ अरे ॥ ३ ॥
वृषभबाहन त्रिपुरअरि मृगराजबर छालांबरे ॥
शूलपाणि त्रिशूलमूलनिमूलकर शिव शंकरे ॥
सुर असुर नर नाग तव पद बंदि मनवांछित लहैं ॥
पूजते पदकमल प्रभु हम कृष्णपति चाहति अहैं ॥ ४ ॥
दो०—तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, ज़ानत जनमन पीर ॥
परमदान दीजै हमै, सुंदरबर बलबीर ॥ १ ॥
सो०—यह बरदान न आन, शिव तुमसों चाहति अहैं ॥
कृष्णकमलपदध्यान, रहै हमारे उर सदा ॥ १ ॥
इहिबिधि ब्रजतिय नेम निबाहैं * शिवको पूजि कृष्ण पति चाहैं ॥
नितप्रति प्रात यमुनजल खोरैं * प्रीतिरीतिसों मन नंहि मोरैं ॥
सवितासों बहुभाँति निहोरैं * गोद पसारि युगलकर जोरैं ॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी * जगतचक्षु सब अंतरयामी ॥
प्रणत-मनोरथ पूरणकारी * हम पर होहु दयालु तमारी ॥
काम हमारे तनुहि जरावै * नंदसुवन बर हमको भावै ॥
होय हमारो पति नंदलाला * करहु कृपा सो दीनदयाला ॥
ऐसे हरिहित गोपकुमारी * करै नेम व्रत तप तनु गारी ॥
गेहदेहकी सुरत बिसारी * कृशतनु भई परम सुकुमारी ॥
बरषदिवस यों करत बिहान्यो * प्रभु अन्तरयामी सब जान्यो ॥
मोहित शिव पूजति ब्रजनारी * और कामना सकल निबारी ॥
सकल भावके हरि हैं ज्ञाता * सकल देवद्वारा फलदाता ॥
दो०—देखि नेम यह प्रेममय, गोपिन को गोपाल ॥

भये प्रसन्न कृपालुचित, जनहित दीन दयाल ॥२॥
सो०—मोकारण जलन्हात, भये जलहि मैं प्रगट हरि ॥
सुंदर श्यामल गात, नवकिशोर बर बपु धरे ॥२॥
न्हात जहाँ युवती सब आछे * मींजत पीठ सबनके पाछे ॥
चकित सबन पाछे फिरि हेरो * देख्यो कान्ह कुँवर नंदकेरो ॥
मनमें हर्षित भईं सब नारी * व्रतफल प्रगटे कुंजबिहारी ॥
नवलकिशोर ध्यान मन लायो * सोई रूप प्रगट दरशायो ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी * लागीं अङ्ग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानें * हरिको सब अपने ढिग मानें ॥
कहति लाजलागति नहिं तुमको * बिना बसन देखति हौ हमको ॥
हँसि निकसे तब कुँवर कन्हाई * चीर हार लै चले पराई ॥
हाँक देति सब शपथ दिवावैं * फिरहु बसन भूषण हम पावैं ॥
डारि बसन भूषण तब दीन्हे * गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हे ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे * लेत न बनै तहाँ नहिं छूटे ॥
एक एक लीला जलमाहीं * बसन आभूषण पहिरति जाहीं ॥
दो०—लागे श्याम ढीठो करन, यह कहि कहि पछिताय ॥
अन्तरगति आनन्द अति, झूठहि खीझति जाय ॥३॥
सो०—लोगन कहति सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ॥
यशुमतिके ढिंग जाय, कहति चलो कहिये सवै ॥३॥
चलीं यशोमतिपै सब ग्वारी * प्रेमबिबश तनुदशा बिसारी ॥
पुलकि अङ्ग अंगिया दरकानी * टूटे हार लिये निजपाणी ॥
चीर चोरि नखघात बनाईं * यह मिस करि उरहन लै आईं ॥
देख्यो पहरि श्यामके ये गुन * ऐसे हाल किये सबके उन ॥
चोली चीर हार दिखराये * टेर करत इतको भजि आये ॥
और बान इक सुनहु न माई * ढीठ भयो अति कुँवर कन्हाई ॥
बिना बसन हम न्हातिजहाँसब * मींजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहति तुमसों सकुचावैं * उर उघारिकै तुमहिं दिखावैं ॥
महरि विचारतिकहतिकहासब * भयो श्याम इहिलायक धौं कब ॥

सुनि युवतिनके मुख यह बानी * बोली बिहँसि नंदकी रानी ॥
बात कहौ सो जो निबहै री * बिनाभीत नहिं चित्र लहै री ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति * चोरी लई छिनारो लावति ॥
दो०—तुम चाहत हौ गगनते, गहन तरैया बाम ॥
सो कैसे करि पायहौ, तुमलायकनहिं श्याम ॥४॥
सो०—मैं बूझी सब बात, तुम मोसों कहिहौ कहा ॥
वृथा फिरति इठलात, मष्ट करौ सुनि है जगत ॥४॥
इहिअंतर हरि आय गये घर * शीसमुकुट लीन्हे मुरली कर ॥
अति कोमल तनु भूषन सोहैं * बालबेष देखत मन मोहैं ॥
जननी बोली बाँह गहि लीनी * कहति सबनसों रसरिस भीनी ॥
देखहु री तुम सब इत आवो * इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहिं आवति * इन्हीके नख उरन दिखावति ॥
मेरो कान्ह अबहिं अति बारो * तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि युवति भई भोरी * कहतिमहरि कछुतुमहिं न खोरी ॥
देन उरहनो तुमको आई * नीकी पहरावन हम पाई ॥
आपस में सब हँसति सुनाई * देखहु री यह भाव कन्हाई ॥
यमुनातीर मिले जब आई * कहाँ गई तबकी तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसे को जानै * और करत औरै धरि ठानै ॥
घर आवत ही भये नन्हाई * ऐसे तनके चोर कन्हाई ॥
दो०—देखि चरित नँदलालके, भई बाल मति भोर ॥
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहति और को ओर ॥५॥
सो०--सकुचीं बहुरि सँभारि, बिबश देखि अपनी दशा ॥
चलीघरनब्रजनारि, हरिमुख कमल निहारिकै ॥५॥
गईं घरन ब्रजगोप--कुमारी * चित हरलीनो मदन मुरारी ॥
नेक न मन लागत घरमाहीं * धामकामकी कछु सुधि नाहीं ॥
मातापिताको डर नहिं मानै * गारि देत कोउ सुनत न कानै ॥
प्रात होत ही गोप—कुमारी * गइँ यमुनातट सबसुकुमारी ॥
देखे तहाँ जाय नँदनंदन * मोरमुकुट शोभित तनु चंदन ॥

मकराकृत कुंडल उर माला * पीतबसन दृगकमल बिशाला ॥
दरशे देखि अखियाँ तृहतानी * भईं सुखी उर तपत बुझानी ॥
कहति परस्पर मिलि सबग्वाली * यमुनातट ठाढ़े बनमाली ॥
कौनभाँति करि आज अन्हैबो * बनत नाँहि अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम वसन उतारैं * कान्ह हमारो ओर निहारै ॥
मींजत पीठ औचकहि आई * बसन आभूषण लै भजिजाई ॥
कहौ फेरि कैसे तब आवैं * अब नाँहि कालि घाटमहँ आवै ॥
दो०—कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनंद ॥
अन्तरगतिकी वृत्तिको, जानत सब नँदनंद ॥६॥
सो०—जानो जाननराय, लाजांतर युवती करति ॥
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलों न प्रेममें ॥६॥
और बात इक श्याम बिचारी * ये जलभीतर न्हात उघारी ॥
जो तिय जलमें नाँगी न्हाई * ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तब पावै * नाँगी परपति सन्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं * और लाज अन्तर निरबारौं ॥
करौ आज इनसों विधि सोई * इनको हित मम कौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई * आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै * भजै निरंतर जब हरि पावै ॥
अन्तररहित भक्ति हरि प्यारी * कहत वेद सब संत पुकारी ॥
तब हरि मन यह कियो बिचारा * इनके बसन हरौं इकबारा ॥
प्रभु सबको तब दृष्टि बचाई * कदँबवृक्ष चढ़ि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं * चकित बिलोकी इत-उतमाहीं ॥
जाने सदन गये नँदलाला * न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥
दो०—धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ॥
नग्न होय असनानहित, पैठीं यमुनानीर ॥
सो०—ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति अस्नान सब ॥
मुखछबि कही न जाहिं, कनककंज फूले मनहुँ ॥७॥
बारबार बूडत जलमाहीं * प्रेमसहित मन मुदित नहाहीं ॥

शिवसों बिनती करति निहोरी * कबहूँ रवि बंदैं कर जोरी ॥
यहै कामना करि सब ध्यावैं * नंदनंदनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी * धरैं ध्यान उर कुँजबिहारी ॥
मूँदहिं नयन दरश चित लावैं * शब्द बिचारि श्रवण सुख पावैं ॥
भुज जोरति अङ्कम हितलागी * मगन प्रेमरस तिय बड़भागी ॥
प्रभु अन्तरयामी सब जानैं * देख कदम्ब चढ़े सुख मानैं ॥
कहत धन्य धन धन ब्रजबाला * मेरे हित तप करति विशाला ॥
प्रीतिरीति सबको पहिचानी * क्षणक्षणकी सेवा हरि मानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै * मोहिं बिरद राखे बनि आवै ॥
कियो बहुत श्रम ममहितकारण * अब इनकौ दुखकरौं निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा * उतरे तरुते श्रीबलबीरा ॥
दो०—प्रेममग्न युवती सबै, रहीं ध्यान मन लाय ॥
हरि सब भूषण बसन लै, चढ़े कदंब पर जाय ॥८॥
सो०—भूषण बसन अपार, सोरह सहस बधून के ॥
हरे एकही बार, ले राखे तरु नीप पर ॥८॥
कर्‍यो नीपतरु अति बिस्तारा * फूले सुमन सुगंध अपारा ॥
लै लै बसन डार अटकाये * जहाँ तहाँ भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पाटम्बर सारी * श्वेत पीत चूनरिअरु कारी ॥
जहाँ तहाँ शाखन प्रति सोहे * देखत छबि बसंत मन मोहे ॥
ता तरुशाखा परम सुहाई * बैठे छबिकी राशि कन्हाई ॥
युवति सुकृत तरुतन धरि मानो * फर्‍यो सुकृतपूरणफल जानो ॥
देखत कदँब चढ़े नँदलाला * बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करततैं जब सब जागीं * तब जल बाहर निकसनलागीं ॥
जलते निकरि आय तट देख्यो * भूषण बसन तहाँ नहिं पेख्यो ॥
उतउत चितै चकित भइ भारी * सकुच गई फिर जलसुकुमारी ॥
नाभिप्रयंत नीर में ठाढ़ी * भुज लगाय उर चिंता बाढ़ी ॥
कँपति शीत में अति अकुलाहीं * बारबार कहि कहि पछिताहीं ॥
दो०—ऐसो को भूषण बसन, सबके एकहि बार ॥

तटते लये चुरायके, लगो न नेकहु बार ।।९।।
सो०—हम जानत यह बात, अम्बर हरि हरि लै गये ।।
और कौनको गात, जो ब्रजमें ढीठो करै ।।९।।
दीन होय तब युवति पुकारी * हौ कहुँ श्याम जाहिं बलहारी ।।
दरश दिखाय बिनय सुनि लीजै * अम्बर देहु कृपा अब कीजै ।।
थरथर अँग कंपत सुकुमारी * देखि श्याम नहिं सके संभारी ।।
बोलि उठे तब मदनगुपाला * कहा कहत मोसों ब्रजबाला ।।
कतहौ जलमें मरत जड़ाई * लेहु बसन भूषण इत आई ।।
तुम पट भूषण सुरत बिसारी * तब मैं लै कीनी रखवारी ।।
अब अपने पट भूषण लीजैं * रखवारी कछु हमको दीजै ।।
जब ऐसे हरि बोल सुनायो * तब सबके मन धीरज आयो ।।
सुनि हरिबचन सकल हर्षानी * लखे कदम ऊपर सुखदानी ।।
कहति सुनो सखि हरिकी बातैं * बसन चुराय करैं ये घातैं ।।
हम सब जलके बीच उघारी * माँगत है हमसों रखवारी ।।
तब हँसि बोलीं ब्रजकी बाला * सुनहु श्याम सुन्दर नँदलाला ।।
दो०—तनमन धन अर्प्यो तुम्हें, है जु तुम्हारे पास ।।
अब अम्बर दीजै हमें, जानि आपनी दास ।।१०।।
सो०—तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तनमन मोको दियो ।।
लेहु बसन यहँ आय, तो मानौ मेरो कह्यो ।।१०।।
सुनहु श्यामघन बात हमारी * नग्न कौनविधि आवैं नारी ।।
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई * बिना बसन क्यों देहिं दिखाई ।।
यह मति आप कहाँ धौं पाई * आज सुनी यह बात बनाई ।।
पुरुषजाति यह कहत न जानहु * हाहा ऐसी मन जनि आनहु ।।
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ * तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ ।।
जो तन मन दीन्हो तुम माही * तौ राखत कत लज्जा द्रोही ।।
यह अन्तर मौसों जनि राखौ * मानि लेहु तुम मेरो भाखौ ।।
शीत सहत कित नवल किशोरी * लाज देहु जलही में बोरी ।।
जलते निकसि बेगि इत आवो * हाथ जोरि मोहिं बिनय सुनावो ।।

ज्यों जलमें रविते कर जोरो * त्यों ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी * ऐसी बात न कहौ मुरारी ॥
हाहा लागहिं पाँय तिहारे * पाप होय है जाड़न मारे ॥
दो०—छाँडि देउ यह टेक हरि, बरभूषण तुम लेहु ॥
शीत मरति हम नीरमें, बसन हमारे देहु ॥११॥
सो०—दूषण होत अपार, जो तिय अङ्ग देखहि पुरुष ॥
ताते नंदकुमार, नाँगी नारि न देखिये ॥११॥
तुमको छोह होत नहिं राई * बड़े निठुर हो कुँवर कन्हाई ॥
सोइ करो जो तुमको सोहै * आज तिहारी पटतर कोहै ॥
आजहिते हम दासि तिहारी * कैसे अङ्ग दिखावहिं नारी ॥
अङ्ग दिखाये भूषण पैहौ * नातर जलमें बैठी रहिहौ ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो * थोरे मैं भी भले मनावो ॥
कत अन्तर राखति हौ हमसों * बारबार मैं भाषत तुमसों ॥
लेहु आय अपने पट भूषण * यह लागै हमको सब दूषण ॥
मोहित तुम कीन्हो तप भारी * अब कत लज्जा करति हमारी ॥
मैं अन्तरयामी सब जानी * करिहौं तुमरे मनकी मानी ॥
अब पूरण तप भयो तुम्हारो * अन्तर इतौ दूरि करि डारो ॥
सुनि यह मोहके मुखबानी * सब युवती मनमें हरषानी ॥
तब सबहिन यह बात बिचारी * अब तो टेक परे बनवारी ॥
दो०—कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छाँडत नाहिं ॥
बसन बिना कैसे बने, कौन भाँति घर जाँहिं ॥१२
सो०—चलौ लीजिये चीर, इनहीको हठ राखिकै ॥
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहौ सु कीजिये ॥१२
यह विचारि जलबाहर आई * बैठगई तट अतिहि लजाई ॥
बारबार हरि निकट बुलावैं * त्योंत्यों अधिक लाज को पावैं ॥
कहति श्याम अब अंबर दीजै * हाहा इतनो हठ नहिं कीजै ॥
बहत समीर शीत अति भारो * मानेंगी उपकार तुम्हारो ॥
हम दासी तुम नाथ हमारे * हम सबकी पति हाथ तुम्हारे ॥

कहत श्याम यह तजहु सयानी * छाँड़हु लाज करहु ममबानी ।।
अपने बसनहु ले यहँ आई * देहौ तुह्यको नंद दुहाई ।।
अबहूँ सकल लाजको त्यागे * करहु सिंगार आय मो आगे ।।
तब सबहिन यह मनमैं जानो * करि हैं श्याम आपनी ठानी ।।
कर कुच अङ्ग ढाँकि भइ ठाढी * बदन नवाय लाज अति बाढी ।।
गई कदमतट हरिके पासा * कहति देहु अब हमको बासा ।।
हरि बोले यों बसन न पावौं * हाथ जोरिमुँहि विनय सुनावौं ।।
दो०—जो कहिहौ करि हैं सबै, हँसि बोली ब्रजबाम ।।
लहैं दाँव हमहूँ कबहुँ, सुनो श्याम अभिराम ।।१३।।
सो०—उभय कमल कर जोरि, सलजहास निहारि हरि ।।
माँगति सकल निहोरि, कहति देहु अब बसन प्रभु ।।१३।।
लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई * रीझे भक्तनके सुखदाई ।।
धन्य धन्य बोले गोपाला * निश्चल प्रीति करी तुम बाला ।।
देखि निरंतर गोपकुमारी * दीन्हें बसन आभूषण डारी ।।
अति आतुर सब पहिरन लागीं * प्रेमप्रीति के रस मति पागीं ।।
तब हँसि बोले कुञ्जबिहारी * मैं पति तुम मेरी सब प्यारी ।।
अंतर सोच दूर करि डारौ * मेरो कह्यो सत्य उर धारौ ।।
शरदरात तुम आस पुरैहौं * अङ्कम भरि सबको उर लैहौं ।।
अब तप करि तुम मति तनगारो * मैं तुमते क्षण होत न न्यारो ।।
करसों परसि सबन सुख दीन्हों * बिरहताप तनुको हर लीन्हो ।।
बिदा करी हँसि नंदकेलाला * निजनिज सदन गईं ब्रजबाला ।।
गोपित उर अति हर्ष दढ़ायो * मन मन कहति कृष्ण बर पायो ।।
ब्रजबासी जनके सुखदाई * आये अपने सदन कन्हाई ।।
दो०—इहि विधि ब्रजसुन्दरिनको, हितकरि सुन्दर श्याम ।।
ब्रजबिलास बिलसत बिबिध, सकललोक अभिराम ।।१४।।
सो०—सुन्दरघन सुखरास, सबबिधि करि सबके सुखद ।।
नित नव करतबिलास, मुदित सकल ब्रजलोक लखि ।।१४।।

अथ बृन्दावनबर्णन लीला ३५

हरि लखि मात पिता सुख पावैं * बालभाव बहु लाड़ लड़ावैं॥
नवल किशोर सुभग तनु श्यामा * निरखतमुदित सकलब्रजबामा॥
ग्वाल बाल सब सम करि जानैं * सखा प्राणप्रीतम करि मानैं॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं * क्रीडा करैं विविध ब्रजमाहीं॥
इकदिन सोवत सदन कृपाला * आये द्वार बोलावन ग्वाला॥
चलहु श्याम बल धेनु चरावन * यह सुनि जननी लगी जगावन॥
उठहु तात मैया बलजाई * टेरत ग्वालबाल बलभाई॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ * दँतवन करि कछु करहु कलेऊ।
भई बेर बनकी नंदलाला * अब मति सोवहु मदन गुपाला।
सोवतमैं हरि जागत जाहीं * सुनत बात आलस मनमाहीं।
कबहुँ बसन ढाँपी मुख सोवैं * कबहुँ उघारि जननितन जोवैं।
खोलत नयन पलक झुकि आवैं * सो छबिनिरखि मातसुख पावैं।
दो०—उठौ लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मंद॥
प्रगटहि पुनि पुनि फेरि मुख, तबहिं उठे ब्रजचंद॥१
सो०—सबके टेरत ग्वार, बलदाऊ यह कहि उठे॥
बनको भई अबार, गईं गाय आगे निकसि॥१
यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई * यशुमति जलझारी भरिलाई।
दुहुँ भैयन करवाय मुखारी * पोंछे बदन जननि निज झारी।
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे * एक थार दोउ सुत बैठारे।
दधि माखन रोटी अरु मेवा * करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा।
परसत निकट बैठि मनमोदा * दृगसुख छूटत महरि यशोदा।
मातप्रेमते अति तृपताई * अचवन करत उठे दोउ भाई।
द्वारे टेरि उठो इक ग्वाला * बनकहँ चलहु बेगि नँदलाला।
बल मोहन आवहु दोउ भैया * आगे दूरि निकसि गइ गैया।
ग्वालबचन सुनि अति अतुराई * कछु अँचयो कछु नहिं दोउभाई।
मुरली मुकट लकुट पट लीन्हो * निकसे दौरि बनहिं मन दीन्हो।
केतिक दूर गईं चलि गैया * ग्वालहि बूझत जात कन्हैया।
कछु बन पहुँची व्है हैं जाई * कछुमग मिलिहैं कुँवर कन्हाई।

दो०—बन पहुँचत सुरभी लई, बलमोहन दोउ धाय ।।
कहत सबनसों जात कित, हमहूँ पहुँचे आय ।।२।।
सो०--तुम आये अतुराय, जेंबत पर लखिकै हमें ।।
तुम संग रहत बलाय, अब हम दूर चराय हैं ।।२।।
यह सुनि सखा धाय सब आये * हरिको भरि अङ्कम उर लाये ।।
तुमहौ सबहिन के सुखदाई * हमको तजि मति जाहु कन्हाई ।।
आज कुमुदबन चलहु चरावन * शीतल सुखद सघन अति पावन ।।
सुनत कह्यो हरषि कन्हाई * नीकी कही बात यह भाई ।।
अपनी अपनी गाय बुलावो * एक ठौर करि सबन चलावो ।।
यहसुनिग्वाल सुरभिगणघेरत * लै लै नाम गाय सब टेरत ।।
धौरी धूमरि राती कबरी * पियरी गोरी गैनो कजरी ।।
खैरो फुलहो रोची चौंरो * धूरी हमारी मुंडी भौंरी ।।
लीली कपनी सुबरन जेती * लाखी निकही रतनी तेती ।।
ऐसे सुरभी टेरि बुलाई * सब मिल चले कुमुद बन धाई ।।
तग बल कह्यो दूर मत जाहू * नंद रिसैहैं अरु यशुदाहू ।।
बलको कह्यो मानि सुखदाई * बोलि लिये सब सखा कन्हाई ।।
दो०—कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुदबन जाय ।।
बुरो मानि है नंद सुनि, और यशोदा माय ।।३।।
सो०—ल्यावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ।।
सुरभी चरत अघाय, बंसीबट यमुनानिकट ।।३।।
यह कहि श्याम चले अगुवाई * फेरी गाय ग्वाल सब धाई ।।
वृन्दाबनहिं मन चले मोहन * हर्षित सखावृन्द सब गोहन ।।
करत कुलाहल आनँद भारी * पहुँचे वृन्दावन बनवारी ।।
सुरभीगण चहुँदिशि बगराई * कहत सखा सब हरष बढ़ाई ।।
जादिन अघहतश्याम सिधाये * ता दिनते या बन अब आये ।।
देखत बन सब भये सुखारी * बहति मनोहरि त्रिविध बयारी ।।
विटपनकी शोभा चित दीन्हे * देखत श्याम सखन संग लीन्हे ।।
नवकिसलयदल सुमन सुहाये * मनहुँ बसंत शृगार बनाये ।।

मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी * फल के भार रही जे डारी ॥
मनहुँ देखि श्यामहिं सुख पाई * देत भेंट तरु शीस नवाई ॥
गुंजत भँवरपुंज छबि पावैं * अस्तुति मनहुँ मधुर सुर गावैं ॥
एक पाँव ठाढे सब आगे * जहँ तहँ थकित मनहुँ अनुरागे ॥
दो०–बेलिबिबिध लपटी ललित, फूलि रही बहुरङ्ग ॥
शोभित सहित सिंगार जिमि, नारि पतिन के सङ्ग ॥४॥
सो०–हालि उठत सब पात, मंद पवन लागत कबहुँ ॥
आनन्द उर न समात, बारबार पुलकत मनहुँ ॥४॥
कुंजपुंज मंजुल सुखदाई * शीतल सुमन सुगंध सुहाई ॥
हरि विश्राम हेत बन जानो * रचे बिचित्र सदन बहु मानो ॥
बोलत हैं कल खग बहुरंगा * कोर कपोत कोकिला भृंगा ॥
मनहुँ भरे आनन्द सब गावैं * जहँ तहँ बरही नृत्य दिखावैं ॥
तरुदल खरक पवनगति साजैं * मधुर सुरन बाजन ज्यों ताजैं ॥
क्रीडत मर्कट शुभगति लीने * करत कला ज्यों नट परबीने ॥
मृगगण चितवत आनँद बाढे * मनहुँ तमासगीर सब ठाढे ॥
पाय श्याम घनहित बनराई * करी मनहुँ आनँद बधाई ॥
बनशोभा कछु बरणि न जाई * ऋतु बसंत जहँ रहत सदाई ॥
जहाँ सुभाव काल गुण नाहीं * बैरभाव नहिं खग-मृग–माहीं ॥
सदा एक रस परम प्रकासी * परम सुखद आनँदकी रासी ॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन * कोमलबिमल सुभगअतिपावन ॥
दो०–शोभा वृंदाबिपिनकी, बरणि सकै अस कौन ॥
शेष महेश गणेशबिधि, पार न पावत तौन ॥५॥
सो०–महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावन धामकी ॥
जहँ नित रहत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि ॥५॥
देखि श्याम बन भये सुखारी * बैठे तरुतर बिपन बिहारी ॥
वृन्दावन कौं करत बढ़ाई * बलदाऊसों कहत कन्हाई ॥
मैं यह बन देखत सुख पाबत * वृन्दावन मोको अति भावत ॥
काम धेनु सुरतरु बिसरावत * रमा सहित बैकुण्ठ भुलावत ॥

यह यमुनातट यह बन जावत * ये सुरभी अति सुखद चरावत ।।
यह सुख त्रिभुवनकतहु नपावत * ताते मैं तनु धरि इत आवत ।।
दाऊजू तुम सचकरि मानों * यह वृन्दावन जड़ मति जानों ।।
चितवनमें आनंदकि रासा * प्रेमभक्तिको यहाँ निबाँसा ।।
परम धाम मम परम सुहावन * पावनहूते पावन पावन ।।
जे तरु वृन्दावनके माहीं * कल्पवृक्ष तिनकी सर नाहीं ।।
कल्पवृक्षके तर जब जाई * तब माँगे बाँछित फल पाई ।।
वृन्दावनतरु चितत जोई * प्रेमभक्ति मम पापत सोई ।।
दो०—जाके बस में रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ।।
प्रेमभक्तिसों लहत नर, वृन्दाबन अनुराग ।।६।।
सो०—श्रीमुख बरण्यो श्याम, श्रीवृन्दाबनको महत ।।
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके बचन बर ।।६।।
सखावृन्द सुनि श्रीमुखबानी * प्रेममगन तनुदशा भुलानी ।।
चितवत हरिमुख पलक बिसारी * जिमिचकोरगणशशिहिंनिहारी ।।
कहत चकित सब अतिसुखपावत * निजलीला हरि प्रगट जनावत ।।
पुनि २ पुलकि कहत शिर नाई * सुनहु श्यामघन कुँवर कन्हाई ।।
बारबार तुमको करि जोरे * हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरे
जहाँ जहाँ तुम तनु धरि आवो * तहाँ तहाँ जनि चरण छुड़ावो ।।
तब हँसि बोले कुँवर कन्हैया * ब्रजते तुम्हैं न टारौं भैया ।।
तुम मेरे मनको अति भावत * तुमते मैं बहुतै सुख पावत ।।
या ब्रजसम त्रिभुवन कहुँनाहीं * तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं ।।
मैं तुम हेत देह यह धारी * तुमते ब्रजलीला बिस्तारी ।।
है यह ब्रज मोको अतिप्यारो * ह्याँते कबहूँ होत न न्यारो ।।
ऐसे हरि ग्वालनके मन माहीं * गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ।।
दो०—मधुर बचन सुनि श्याम के सखावृंद सुख पाय ।।
प्रेमपुलकितनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाँय ।।७।।
सो०—धन धन धन तुम श्याम, धन ब्रज धनिवृन्दाविपिन ।।
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञन जानहीं ।।७।।

सुनहु श्यामघन नँददुलारे * तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे ॥
दुर्लभ यह सङ्ग तुम्हारो * कबधौं फेरि गोपतनु धारो ॥
ना जानिये बहुरि ब्रजनाथा * कब तुम फिरहौ सुरमिन साथा ॥
कब तुम छाक छीनके खैहौं * कबधौं फिर ऐसे सुख दैहौं ॥
बलि बलि जैये श्याम तुम्हारी * अब इक बिनती सुनहु हमारी ॥
सुन्दर मुरली नेक बजावो * अधर-सुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हैं नंदकी सौंह दिवावैं * मुरली धुनि सुनि हम सुख पावैं ॥
तुम्हरे मुख यह बाजत नीको * हम सबको जीवन है जीको ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी * प्रेम-सुधा-रससे लपटानी ॥
गुण गंभीर गुपाल कृपाला * भक्तवश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्तसुखदाई * चितये कमलनयन समुहाई ॥
करते लकुट निकट धरि दीन्हो * पाछे मुरलीको गहि लीन्हो ॥
दो०--पकरिदुहुँनकर अधर धरि, मधुर मुरलिधुनिगान ॥
मोहिलियोचर अचर नभ, जल थलश्लामसुजान ॥८॥
सो०--भई थकितगति पौन, यमुना जलकीन्होशयन ॥
ह्वै गये खग मृग मौन, रहे जहाँ तहँ चित्रसे ॥८॥
उपजावत गावत गति सुँदर * रागरागिनी ताल बिबिधबर ॥
सखावृन्द सुनि तन मन वारैं * निरखतमुखछबिपलकबिसारैं ॥
चलत नयन भ्रकुटी पुटनासा * करपल्लवमुरली सुरश्वासा ॥
मानहुं निरतक भाव बतावैं * शुभगति नायक सैन सिखावैं ॥
कुंचित अलक बदनछबि देहीं * मनहु कमलरस अंलिगण लेहीं ॥
कुंडल झलक कपोलन माहीं * मनहुँ सुधारस मकर भ्रमाहीं ॥
दशन--दमक मोतिनलर ग्रीवा * मनहुँ सकल शोभाकी सीवा ॥
तिलक बिचित्र भाव छबि छाजै * मनहुँ महाछबि दशनबिराजै ॥
चमकति मोरचंद्रिका चारू * मनहुसकल शृङ्गार सिंगारू ॥
श्यामगात उर गजमणिमाला * सङ्ग शोभित बनमाल विशाला ॥
मरकतगिरि सुर मनु सरिधारा * बैठी पंगति कीर किनारा ॥
कटि पट पीत तडित द्युतिहारी * पदपंकज नूपुर रुचिकारी ॥

दो०-ग्रीवालटकन मुरलिपर, शोभित छबि समुदाय ।।
प्रेममगन निरखत मुदित, गोपबाल सुख पाय ।।९।।
सो०-सुन्दर श्याम सुजान, देत परम सुख सखन को ।।
वारत तन मन प्रान, धन्य २ कहि ग्वाल सब ।।९।।
रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा * लेत मुरलिमें सबको नामा ।।
हँसत ग्वाल सब दै करताला * लेत हमारो नाम गुपाला ।।
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो * ऐसे हमको गाय सुनावो ।।
हँसि मुरली तिनके कर दीनी * अधरन धर अमृतरस भीनी ।।
लै लै निजकर सकल बजावत * हरिके स्वरको रूप न पावत ।।
आसपास सोहत सब बालक * मधि प्रभु प्रीतिरीतके पालक ।।
हँसिहँसि सबके चित्त चुरावैं * सब मिलि प्रेमानंद बढ़ावैं ।।
जैसे श्रीमुरलीधर गायो * काहूपै सो रूप न आयो ।।
हँसिहँसि कहत परस्पर भाई * हरि की सम को सकै इजाई ।।
चतुरानन पंचानन ध्यावैं * सहसानन नव नित गुण गावैं ।।
सुर नर मुनि कोउ पार न पावैं * सो ग्वालन सङ्ग वेणु बजावैं ।।
ब्रजबासी जनके प्रतिपाला * भक्तवश्य प्रभु दीनदयाला ।।
दो०-कारणकरण अनंतगुण, निगमनेति जिहिंगाव ।।
सो ग्वालन सङ्ग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव ।।१०।।
सो०- वृंदावनकीं रेणु, ब्रह्मादिक बाँछित सदा ।।
जहाँ श्याम सुख देनु, ग्वालन सङ्गचारत सुरभि ।।१०।।

अथ द्विजपत्नीयाचनलीला ३६

बिरहत वृंदाबन बनवारी * बिबिधभाँति लीला अनुसारी ।।
कबहूँ सखन सङ्ग मिलि गावैं * कबहूँ मुरली मधुर बजावैं ।।
कबहूँ गय्यन घेरत धाई * कबहूँ यमुनाके तट जाई ।।
करत कुलाहल आनन्दबारी * देत दिवावत रसकी गारी ।।
ऐसे लीला करत अपारा * भये क्षुधारय गोपकुमारा ।।
कहत भये तब हरिसों जाई * हमको क्षुधा लागि अधिकाई ।।
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी * अपने मन यह बात बिचारी ।।

सुनि २ मेरे गुणगन गान * करत रहत द्विजतिय मनध्याना॥
तिनको दर्शन आज दिखाऊँ * तिनके मनकी ताप नशाऊँ॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई * यज्ञ करत ह्याँ द्विजसमुदाई॥
तिनके निकट जाहु तुम धाई * प्रथम प्रणाम कीजियो जाई॥
कहियो हमको कृष्ण पठाये * तुमपै भोजन माँगन आये॥
दो०—यह सुनि ग्वाल गये तहाँ, जहाँ बिप्र--समुदाय॥
यज्ञ करत अहमिति लिये, विद्याको बल पाय॥१॥
सो०--ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर जोरिकै॥
हमैं पठायो श्याम, माँग्यो हैं भोजन कछू॥१॥
बनमें राम कृष्ण दोउ भैया * आये इतहि चरावन गैया॥
ते कछु आज भये हैं भूखे * यह सुनि बिप्र होइ गये रूखे॥
कह्यो यज्ञहित करी रसोई * अहिरन पहिले देय न कोई॥
यह सुनि ग्वालसकलफिरिआये * हरिसों तिनके बचन सुनाये॥
सुनि हलधरतन चितै कन्हाई * बोले बचन मंद मुसकाई॥
ये द्विज कर्मधर्म लपटाने * बिना भक्ति मोको नहिं जाने॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी * जाउ जहाँ इनकी सब नारी॥
उनको है दृढ़ भक्ति हमारी * वे मानेंगी बात तुम्हारी॥
उनसों भोजन माँगहुँ जाई * कहियो भूखे भये कन्हाई॥
तब द्विजनारिनके ढिग आये * हाथ जोरि तिनको शिर नाये॥
कह्यो राम अरु कुँवर कन्हैया * बन्न में भूखे हैं दोउ भैया॥
माँग्यो है कछु भोजन तुमसों * आज्ञा दे सो कहिये उनसों॥
दो०—ग्वालनके सुनि बचन सब, हरषि उठीं द्विजबाम॥
कहति हमारो भग्य धनि, भोजन माँग्यो श्याम॥२॥
सो०—ऋरति होनित ध्यान, सुनि २ जिनके गुण श्रवण॥
सुफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं॥२॥
षटरसके व्यंजन बिधिनाना * कोमल भाँति अमित पकवाना॥
खीर खाँड़ सिखरन दधि न्यारो * माखन लियो श्यामको प्यारो॥
कहँ लगि बरणि कहौ परकारा * प्रेमसहित लिये भरिभरि थारा॥

बहुते ग्वालन के कर दीन्हें * बहुते अपने शिर धरि लीन्हें ।।
नयनन दरश लालसा बाढ़ी * उपजी चाह हृदय अति गाढ़ी ।।
चलीं पतिनकी कानि निवारी * देखनको प्रभु गोपबिहारी ।।
ग्वालनसों पूँछत यह बाता * कित हैं हरि जनके सुखदाता ।।
जिनके पुरुष हते बरमाहीं * तिनको जान दीत सो नाहीं ।।
कहत जात तुम किस अतुराई * लोकलाज तनुदशा भुलाई ।।
तिनसों कहति भई ते नारी * हमको श्रीगोपाल हँकारी ।।
भोजन माँग्यो है हमपाहीं * तिनहिं देन ग्वालनसँघ जाहीं ।।
तिनको दरश देखि सुख पैहैं * बहुरि तिहारे घरमहँ ऐहैं ।।
दो०–यह सुनि निपति अति क्रोध करि, तिन्है दिखायो त्रास ।।
कहत भई तुम बावरी, बैठति नहिं अबास ।। ३ ।।
सो०–जिनके उर नंदलाल, बसे लकुट मुरली लिये ।।
तिनहिं न भययमकाल, कौन भाँति रोके रुकहि ।। ३ ।।
हरिपै हमैं जान पिय देहू * कहा रोकि अपयश शिर लेहू ।।
देखन देहु नंदके लालहि * त्रिभुवनपतिप्रभुमदनगुपालहि ।।
इतनी बात मानि पिय लीजै * हाहा हमैं दान यह दीजै ।।
वे हैं यज्ञ पुरुष भगवाना * अंतरयामी कृपानिधाना ।।
करत यज्ञ बिधि तिन्हैं बिसारी * कहा सरैगी बात तिहारी ।।
कहँलगि कहौं बात समुझाई * जात दरशकी अवधि विहाई ।।
जो तुम स्वामी मानत नाहीं * तौ हम सत्य कहैं तुमपाहीं ।।
मन तौ मिल्यो जाय नँदलालहि * करिहौ कहा रोंकिकै खालहि ।।
लेहु सँभारी देह यह सारी * जासौं पिय तुम कहत हमारी ।।
को राखे इतने जंजालहि * मिलि हैं प्राण यशोदालालहि ।।
जो निहचै नहिं श्याम सनेहा * तौ यह कौन काजकी देहा ।।
सब सखियलते आगे जाई * देखहुँगी छबि कुँवर कन्हाई ।।
दो०–ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निबारि ।।
पहुँची सबते प्रथमही, जो रोंकी द्विजनारि ।। ४ ।।
सो०–कठिन प्रेमकी पंथ, तहाँ, नेमकों मग नहिं ।।

कहत सकल सद्ग्रंथ, जहाँ नेम तहँ प्रेम नहिं ।।४।।
ऐसे भाजन लै द्विजबाला * पहुँची बन जहँ मोहनलाला ।।
नटबरवेष चित्र तन कीने * ठाढ़े सखा सबै भुज दीने ।।
मोर--मुकुट बैजंती--माला * कर मुरली दृग नयन बिशाला ।।
कुंडल अलक तिलकझलकाहीं * कोटिकामछबि पटतर नाहीं ।।
मुख मृदु हँसनि लसत पटपीरो * निरखत नयन ताप भयो सीरो ।।
भोजन लै हरिआगे राखे * अपने भाग्य धन्य करि भाखे ।।
तिन्है देखि हरि मनसुखमान्यो * बचननिकारि तिनको सनमान्यो ।।
तिनसों बहुरो कह्यो कन्हाई * गृहपति तजि तुम कित इत आई ।।
कहियत बिप्र बेदअधिकारी * हौ तिनकी तुम पतिव्रत नारी ।।
वे सब यज्ञ करत बनमाहीं * तुमबिन यज्ञ होयहै नाहीं ।।
पतिआयसु तिय पालै जोई * चारि पदारथ पावै सोई ।।
यह तुम कछू भलो नहिं कीनो * पतिको कह्यो मानि नहिं लीनो ।।
दोहा--पति देवता सुतीय कहँ, बेदबचन परमान ।।
जाहु बेगि तुम पतिनपँह, ताते यह जिय जान ।।५।।
सोरठा--सुनि हरिबचन प्रमान, कर्म धर्म साने सुखद ।।
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब करजोरिकै ।।५।।
सुनहु श्यामघन अंतरयामी * तुमहीं सकल जगतके स्वामी ।।
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा * तुमहीं सबके पूरणकामा ।।
बिबिध यज्ञ करि तुमको ध्यावैं * तुमते चारि पदारथ पावैं ।।
सकल धर्मते शरण तुम्हारी * है सब जीवनको सुखकारी ।।
यह हम सुनी पतिन मुखबानी * कहत वेद इतिहास बखानी ।।
ताते शरण तुम्हारी आंई * यह दूषण नहिं हमें गुसांई ।।
तुम माया सब सकल भुलाने * ताते पतित न तुम पहिंचाने ।।
तिनको दोष क्षमा प्रभु कीजै * हमको शरण आपनी दीजै ।।
चारि पदारथहूँते भारो * है प्रभु दरशन चरण तुम्हारो ।।
ताते नहीं निरादर कीजै * अपनी चरणशरण रखि लीजै ।।
सुनि प्रभु द्विजपत्नीकी बानी * भये प्रसन्न भक्तसुखखानी ।।

Digitization by Arya Samaj Foundation Chennai

धन्य २ प्रभु तिनको भाख्यो * हित करि तिनको भोजन राख्यो ॥
दो०—दे अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्है कह्यो घर जाहु ॥
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहु ॥ ६ ॥
सो०—हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति बर दानबर ॥
राखि हृदय ब्रजनाथ, चलीं हर्ष द्विजतिय सदन ॥ ६ ॥
नंदनँदनकी करत बड़ाई * द्विजपत्नी सब घरको आई ॥
देखत तिन्हें विप्रसमुदाई * भये पुनीत विमलमति पाई ॥
धन्य २ कहि तिनहि बखानी * आप कहत हम अति अज्ञानी ॥
जिनके हेतु यत्र हम कीन्हो * तिन माँग्यो भोजन नहिं दीन्हो ॥
हम बिद्याअभिमान भुलाने * अविगतिको गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभु जनसुखदाई * भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं * बारबार यह कहि पछताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बड़भागी * कृष्ण – चरणपंकज– अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको * देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे बहुविधि तिनहि सराहीं * आदर करि लीन्हीं घरमाहीं ॥
प्रेमप्रीति करि जो हरि ध्यावैं * सो नर नारी अभयपद पावैं ॥
नर नारी कछु नाहिं बिचारा * प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥
दो०—भाव तियनको धरि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखनसहित भोजन करत, रुचिसों प्रीतिसमेत ॥ ७ ॥
सो०—ब्रह्मलोकलौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ॥
छीनछीनकै कौर, करत परस्पर हासरस ॥ ७ ॥
अतिहित भोजनीतहँ हरि कन्हों * सखावृंदको अति सुख दीन्हों ॥
बनमें फिरत चरावत गैयाँ * बैठे आय कदमकी छैयाँ ॥
भये सखा सिगरे इकठाहीं * गैयाँ बगर रहीं बनमाहीं ॥
दुपहर घाम जान मनमाहीं * लोग चहन सघन बनछाहीं ॥
बैठे ग्वाल बाल चहुँउरियाँ * आगे धरी दूधकी घरियाँ ॥
मध्य श्याम सुन्दर नँदनंदा * उडगणमें जिमि पूरणचंद ॥
मोरमुकुट कटि कछनी काछें * कोटि कामको छविको बाछैं ॥

कबहूँ मुरली मधुर बजावै * कबहुँ सखन मिलि सारँग गावै ॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं * कोऊ ततकारी उच्चरहीं ॥
कोऊ ताल बजावत नीके * उपजावत आनँद अति जीके ॥
करत खेल ऐसे बनमाहीं * देखि देखि सुरवृंद सिहाहीं ॥
कहत धन्य ये ब्रजके बाला * बिहरत जिनसङ्ग कृष्ण कृपाला ॥
दो०—धन्य बिटप धनि भूमि यह, धनि वृंदावनचन्द ॥
धनि ब्रज कहि वर्षैं सुमन, रीझिरीझि सुरवृंद ॥८॥
सो०—मनमन देखि सिहाहिं, बनबिहार हरि को निरखि ॥
-श्रीवृंदावनमाहिं, हम न भये द्रुम ताल तृण ॥८॥
श्रीदामा तब कह्यो बुझाई * खेलहिमें सब रहे भुलाई ॥
गैयाँ कितहि चरति को जाने * यह सुनिकै सब खेल भुलाने ॥
जिततित हेरन को उठिधाये * गय्याँ जाय घेरि लै आये ॥
जे सुरभी आई नहिं जानी * चरत सघन बनमाँझ सयानी ॥
तिनको तरु चढ़ि कान्ह बुलाई * मुरलीटेर सुनत उठि धाँई ॥
ऐसे गय्याँ श्याम सधाईं * मुरली सुनि सब हरिपै आईं ॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं * हूँहूँ करि सब हरिपै आवैं ॥
तिन पर कर फेरत मनमोहन * पीतांबरसों झारत छोहन ॥
करत प्यार तिनपर बनमाली * हस्तकमलको सब प्रतिपाली ॥
हरिको निरखि गाय सुख पावैं * तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं ॥
जब हरि गय्यन करसों परसैं * लखि २ कामधेनु मन तरसैं ॥
कहत कहा जो कामद कीनो * हमको बिधि ब्रजजन्म न दीनो ॥
दो०--धनि २ ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवननाथ ॥
झारत पौंछत दुहित नित, हित करि अपने हाथ ॥८॥
सो०--मनहींमन पछिताहिं, कामधेनु ब्रजधेनु लखि ॥
हम न भईं ब्रजमाहिं, हरि करपंकज परसती ॥८॥
ऐसी लीला करत अनेका * बनमें ललित एकते एका ॥
वृन्दाबन सब दिवस बितायो * संध्यासमय निकट जब आयो ॥
तब हरि कह्यो चलौ अब गेहू * गैंयाँ सब आगे करिलेहू ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहुँची साँझ आय नियराई * बन में करहु अबेर न भाई ॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई * भलों बात यह कही कन्हाई ॥
बनते निकसि चले सब ग्वाला * ब्रज आवत नटवर गोपाला ॥
सुरभीवृंद गोपबालक सँग * अति भावत गावत नानारँग ॥
अधर अनूप मुरलिसुर कौरी * ऊँचे सुरन बजावत गौरी ॥
सुनत श्रवण ब्रजसुन्दरि धाईं * गृहकारज तजि २ सब आईं ॥
कहत परस्पर मोहन आवत * देखि २ छबि अतिसुख पावत ॥
पूरणकला उदित शशि जैसे * कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसे ॥
नयनचकोर रहे टक लाई * दिवसबिरहको ताप नशाई ॥
दो०—प्रेममगन आनंद अति, कहति सकल ब्रजधाम ॥
देखहु सखि यशुमतिसुवन, शोभित अति अभिराम ॥१०॥
सो०—श्यामल तन पटपीत, जलजमालि बरहीमुकुट ॥
लई मनो इन जीत, घनदामिनि बग धनुष छबि ॥१०॥
भ्रूकुटि बिकट दृग चंचलताई * अतिछबि देतिबरणिन जाई ॥
धनुष देखि बिच खंजन जानौ * उडन करत डरि उडत न मानौ ॥
प्रफुलित नयन शरद अंबुजसे * मनो कुंडल रविकरके परसे ॥
गो-पदरजपराग छबि छाई * तामधि अलि बैठो जनु आई ॥
एक कहति देखहु यह शोभा * अति सुख देत लेत मन लोभा ॥
कमलबदन मुरलीरस लेई * कुटिल अलक ऐसे छबि देई ॥
मानो अलिगण साजी सैना * सहि न सकत चाहत निजऐना ॥
अधरसुधालगि अति दुखपाई * मुरलीसों मनो करत लराई ॥
शोभित नासा परम सुहाई * तामें सखि उपमा यह पाई ॥
मनहुँ अनंग सहायक आयो * तिलप्रसूनशर ताहि चलायो ॥
सुनि यह युक्ति सकल हरषाई * निरखत हरि मुखछबिसुख पाई ॥
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी * आये ब्रजजनमन सुखकारी ॥
दो०—कहति मुदित मन युवतिजन, धनि धनि सखि वेमोर ॥
जिनके पंखनको मुकुट, कीनो नंदकिशोर ॥११॥
सो०--धनि धनि सखि वे, बाँस जाकी मुरली अधर धरि ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरि पूरत निज साँस, को पुनीत ताकी सदृश ॥११॥
निज २ सदन गये सब ग्वाला * आये घर हलधर गोपाला ॥
देखि दुहूँ मातन सुख पायो * हरषि दुहुँनको कंठ लागायो ॥
काहे आज अबार लगाई * यह कहि बारबार बलि जाई ॥
रोहिणिसों कहि यशुमति मैया * भूखे ह्वै हैं दोऊ भैया ॥
मैं दोउनको देत न्हबाई * तुम भोजन को करहु चढ़ाई ॥
निकट लये मुरलीकर लीन्ही * हरिकरते लकुटी धरि दीन्हो ॥
नीलांबर पीतांबर लीन्हो * मुकुट उतारि श्याम तब दीन्हों ॥
प्राणसमान यशोमति जानो * धरचो सँभारि सदन नँदरानी ॥
छोरति अङ्ग भूषण महतारी * मुक्तमाल बनमाल उतारी ॥
कटि किंकिणो अँगद भुज छोरे * निरखि गात आनन्द न थोरे ॥
पट लै दोउनके अङ्ग झारे * उर लगाय लीने अति प्यारे ॥
तुम दोऊ मेरे गाय चरैया * और न कोऊ टहल करैया ॥
दो०—लीन्हे तुमहि बिसाहि मैं, तब अति रहे न न्हाय ॥
सुनिहँसि हरिबलसों कहत, कहत झूँठही माह ॥१२॥
सो०—यह तो समुझिनजाय, साँच झूठकी बात कछु ॥
यशुमति लेत बलाय, मैं चेरी हँसि हँसि कहति ॥१२॥
सुमनासुत अङ्गन परसाई * तपत तरणिको जल लै आई ॥
परमप्रीति दोउ सुत अन्हवाये * सरसबसन तनु पोंछि सुहाये ॥
षटरसभोजन माय जिमाये * यशुमतिके सुख जाय न गाये ॥
शीतल-जल कपूर रस रचयो * लै झारो दुहुँ भैयन अँचयो ॥
चरू भरचो मुख जाय उठे जब * बीरे पान दिये जननी तब ॥
बीरा खात मुदित दोउ भाई * ब्रजवासिन जूँठनि सब पाई ॥
यशुमतिके सुख कौन गिनावै * शारदहू कहि पार न पवै ॥
धन्य नंद धनि यशुमति माता * महिमा कहि नहिं सकै बिधाता ॥
ब्रह्म स्नातन हैं प्रभु जोई * जिनके पुत्र कहाबत सोई ॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी * तीनलोकपति अन्तरयामी ॥
विश्वंभर निज नाम कहावैं * ताहि यशोमति माय खवावैं ॥

राति सुवावै प्रात जगावै * बालक ज्यौं फुसलाय लड़ावै ॥
दो०-रहत मगन गुणश्यामके, निशिदिन आठौयाम ॥
महरमहरि के प्राणधन, मोहन सुन्दर श्याम ॥१३॥
सो०-हरि क्षण बिसरत नाहिं, ब्रजके नरनारी जिते ॥
मगन प्रेमरसमाँहिं, निशिदिन जातन्नजानहीं ॥१३॥

अथ गोवर्धन लीला ३७

कृष्णप्रेम ब्रजलोक समाने * देव पितर सब काल भुलाने ॥
कातिक सुदि परिवा जब होई * इन्द्रहि पूजत ब्रज सब कोई ॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई * सबके मन में ध्यान कन्हाई ॥
सो तिथि अति समीप जब आई * तब यशुमति के उर सुधिआई ॥
कहति नंदसों नंदकि रानी * सुरपतिपूजा तुमहिं भुलनी ॥
जाको कृपा बसत ब्रजमाहीं * एकहु बस्तु कमी कछु नाहीं ॥
जाकी कृपा दूध दधि गाई * सहस मथानीं मथत सदाई ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये * जासु कृपा सबबिघ्न नशाये ॥
भई सकल ब्रजमाँझ बड़ाई * कुशल रहौ बलराम कन्हाई ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे * गोप गाय ब्रजके रखवारे ॥
तिनकी तुम सब सुरति भुलाई * रहे दिवस पाँचक अब आई ॥
कहौ सकल गोपन हँकराई * इंद्र-यज्ञकी करौ चढ़ाई ॥
दो०-भली दिवाई मोहिं सुध, कहत महरिसों नन्द ॥
भूलिगये हम देवको, काज मोहबश मंद ॥
सो०-हाथ जोरि नंदराय, बिनय करत सुररायसों ॥
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥१॥
तबहिं नंद उपनंद सुख पाये * श्रीवृषभानुहित सब आये ॥
सबको देखत नंद बुलाये * महरमहरि मिलिशील नवाये ॥
अति आदर सबहिनको कीन्हों * सादर सबको बैठक दीन्हों ॥
मनहीं मन सब सोंध कराहीं * कंस कछू माँग्यो कै नाहीं ॥
राज अंश उनको जो होई * बिनमाँगे हम दीन्हो सोई ॥
बूझत दंदहिं सब सकुचाये * कौन काज हम सबन बुलाये ॥

तबहिं नंद सबयो समझायो * मैं तुमको ईहिं काज बुलायो ॥
सुरपति--पूजाके दिन आये * सो तुम सब हिनमिलिबिसराये ॥
मोकहँ राजकाज लपटानो * निशिदिन लोभहि माँझभुलानो ॥
इंद्रयज्ञको सुरत भुलाई * अति समीप दिन पहुँचो आई ॥
ताते अब सब करहु चढ़ाई * इंद्र--यज्ञ कीजै सुखदाई ॥
इंद्रहिको हम सदा मनावै * तिनहींते ब्रजजन सुख पावैं ॥
दो०--यह सुनि मन हरषे सबै, देवकाज जिय जानि ॥
हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछितानि ॥२॥
सो०--भली करी नँदराय, तुम हमको दीन्ही सुरत ॥
सुरपतिको शिर नाय, क्षमा करावत पाप सब ॥२॥
बिदा होय सब गोप सिधाये * घरघर बाजन लगे बधाये ॥
पूजाकी बिधि करत सबै बलि * जिहिं२ भाँति सदा आई चलि ॥
अमित भाँति पकवान मिठाई * होत घरनघर बरणि न जाई ॥
नंदमहर घर बजति बधाई * गावत मंगल अति हरषाई ॥
नेवज करत यशोदा आतुर * आठौ सिद्धि घरहि अतिचातुर ॥
मैदाके अनेक पकवाना * बेसनके बहु करत बिधाना ॥
घृतमिष्टान्न सबै परिपूरण * मिश्री करत पाकको चूरण ॥
बिबिधभाँति पकवान मिठाई * कहँलगि नामक हौं सब गाई ॥
और नारि ब्रजकी सङ्ग लागीं * घृतपक करत सबै अनुरागीं ॥
जहाँ तहाँ बहु चढ़ी कढ़ाई * यशुमति सबन सराहति जाई ॥
जो सामा माँगति है जोई * रोहिणि ताहि देति है सोई ॥
महरि करति रचि और निरारे * धरत जोरि बिधि न्यारेन्यारे ॥
दो०--सैंति सैंति अती नेमसों, धरति अछूते जात ॥
श्याम कहूँ परसै नहीं, यह मनमाहिं डरात ॥३॥
सो०--शंक करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानि जिय ॥
यशुमति जानति नाहिं, सब देवन के देव हरि ॥३॥
खेलय ते संतन सुखदाई * भीतर आये कुँवर कन्हाई ॥
जननी कहति इहाँ जनि आवै * लरिकनको यह देव डरावै ॥

रहे ठिठकि आँगनहिं डराई * मनहींमन हँसि कहत कन्हाई ॥
मैया री मोंहिं देव दिखैहै * इतनो भोजन सब वह खैहै ॥
यह सुनि खीझ कहति है मैया * ऐसी बात न कहौ कन्हैया ॥
जोरि जोरि कर देव मनावै * बालकको अपराध क्षमावै ॥
बाहिर चले श्याम अनखाई * युवति कहति हरि गये रिसाई ॥
जानदेहु हरि अबहिं अयाने * देवकाज बालक कह जाने ॥
छूहै कहूँ श्याम यह भोजन * उनकी पूजा जाने को जन ॥
और नहीं हम काहू जानें * कै सुरपति कै गोधन मानें ॥
यह कहि २ इंद्रहि शिर नावैं * राम श्यामकी कुशल मनावैं ॥
और देव नहिं तुमहिं सरीसा * कहँ नहिं कृपा करौ सुरईसा ॥
दो०—ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति बिधान ॥
द्वार बैठे नंद जहँ, गये तहाँ को कान्ह ॥४॥
सो०—जुरे नंद ढिग आय, ब्रज के जे उपनंद सब ॥
बैठे अतिसुख पाय, करत बात बिधि यज्ञकी ॥४॥
दीपमालिका रचि रचि साजत * पुहुपमाल मंडली बिराजत ॥
ढोल निशान बाजने बाजैं * मुदितग्वालगण जिततित गाजैं ॥
गैंध्यन चित्र बिचित्र बनावैं * अंगन आभूषण पहिरावैं ॥
सात बरषके कुँवर कन्हाई * खेलत मन आनंद बढ़ाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं * मंगलगान मुदित मन गावैं ॥
सथिया रचि पुनि थापहिंहाथा * पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा ॥
मो आगे सुरपतिकी पूजा * मोते और देव को दूजा ॥
ब्रजबासी मोको नहिं जानै * मो अँच्छत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटो यज्ञ बिहाने * कीनो भोग बहुत दिन याने ॥
ब्रजबासिन पै आप पुजाऊँ * गिरगोबर्द्धन नाम धराऊँ ॥
यह बिचार मनमैं ठहराई * गए नंदढिग कुँवर कन्हाई ॥
हर्षि नंद कनियाँ बैठाये * बदन चूमि उरसों लपटाये ॥
दो०—तब हरि बोले नंदसों, मधुर मंद मुसकाय ॥
कत पूजा इत कौनकी, बाबा मोंहिं बताय ॥५॥

सो०—कौन देव सो आहि, काहे को पूजत तिन्हैं॥
मैं नहिं जानतां ताहि, कहौ मोहिं समझाय सब ॥५॥
नंद कह्यो तब सुनहु कन्हाई * इंद्र सकल देवनको राई॥
तिनको पूजैं गोप सदाई * कुलमें यहै रीति चलि आई॥
ताते तिन्है पूजिये ताता * जाते कुशल रहो दोउ भ्राता॥
या पूजाते सुरपति हरषैं * व्है प्रसन्न तब जल वे बरषैं॥
तृण अनाज उपजत है जाते * गाय गोप सुख पावत ताते॥
याते सदा यज्ञयह कीजै * जो गोधन कबहूँ नहिं छीजै॥
तब हरि कह्यो सुनहु नँदताता * ऐसे तुम जु कही यह बाता॥
जहाँ इन्द्र पूजत नहिं प्रानी * तहाँ कहा बरसत नहिं पानी॥
जब हरि ऐसे बचन सुनायो * तब नंदहि उत्तर नहिं आयो॥
सुनि हरिबचन रहे सकुचाई * मनहिं कहत अतिचतुर कन्हाई॥
है बालक अबहीं अति नान्हा * देवकाज कह जाने कान्हा॥
तब चुचुकारि कह्यो नंदराई * सदन जाहु तुम कुंवर कन्हाई॥
दो०—ऐसे में जनि जाहु कहुँ, भीर बड़ी है तात॥
को जाने किहिं भावको, कितधौं आवत जात॥६॥
सो०—सोय रहौ गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम॥
मैं हूँ आवत लाल, पाछेते तुम्हरे निकट॥६॥
तब हरि मन इक बुद्धि उपाई * बैठे और महर ढिग जाई॥
तिनको हरि यों कह समझायो * आज मोहि सपनो इक आयो॥
पुरुष पुनीत एक अति चारू * चारिभुजा तनु सुभग सिंगारू॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई * इंद्रहि पूजे कहा बड़ाई॥
मैं तुमको इक देव बताऊँ * गिरिगोबर्धन प्रगट दिखाऊँ॥
यह पूजा सब इनहिं चढ़ावौ * जाते मुँह माँगे फल पावौ॥
तुम आगे भोजन सब खैहै * प्रगट आपनो रूप दिखैहै॥
चारि—पदारथके ये दाता * अन धन गोधन केतिक बाता॥
ऐसे देव छाँडि घरमाहीं * तुम पूजत सुरपतिहिं वृथाहीं॥
कोटि इंद्र क्षण में वे मारैं * क्षणहीमें पुनि कोटि सँवारैं॥

गोबर्द्धनसम देव न दूजा * करहु जाय उनही को पूजा ।।
ताते सो मनमें यह आई * पूजहु गोबर्द्धन सब जाई ।।
दो०—चकित गोप हरि बचन सुनि, कहत अकथ यह बात ।।
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रगट होयकै खात ।।७।।
सो०—सुनी बात यह नंद, सोचत सब उपनंद मिलि ।।
कहा कहत नंदनन्द, समुझि परत नहिं सपन यह ।।७।।
सुनि यह बात सबन ब्रज पाई * देख्यो ऐसो सुपन कन्हाई ।।
सुरपतिपूजन देत मिटाई * गोबर्द्धनकी करत बड़ाई ।।
कोऊ कहत कान्ह कहै साँचो * कोऊ कहत बात यह काँचो ।।
बालक जाने कहा पुजाई * कोऊ कहत कहै को भाई ।।
कोऊ इंद्रहि कहत सकाने * हम तौ कछु यह बात न जाने ।।
हलधर कहत सुनो ब्रज बासी * को महिमा जानत अबिनासी ।।
इनको बालक करि मति जानों * जो हरि कह्यो सत्यकरि मानों ।।
नन्दनिकट जो गोप सयाने * हरिको बल प्रताप सब जाने ।।
कहत नन्दसों ते सुख पाई * कीजै सोइ जोइ कहत कन्हाई ।।
कहत नन्द तब सबन सुनाई * मेरेहू मनमें यह आई ।।
हरिको सुपन झूठ नहिं होई * है प्रतीति मेरे मन सोई ।।
कालिहिको सुपनो हरि देखो * भयो प्रात ही तासु विशेखो ।।
दो०—ताते सोई कीजिये, कान्ह कहै जोइ बात ।।
सब ब्रजबासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात ।।८।।
सो०—यही मंत्र ठहराय, बूझत हरिसों हर्षि सब ।।
कहौ कान्ह समुझाय, कौन भाँति गिरि पूजिये ।।८।।
हर्षि श्याम तब सबन बुलायो * इंद्रयज्ञहित तुम जो बनायो ।।
बहुव्यंजन पकवान मिठाई * सो सब शकटन लेहु भराई ।।
नाचत गावत सहित हुलासा * चलहु सकल गोबर्द्धनपासा ।।
तहाँ जाय गिरिबरहि मनाई * पूजहु बहुविधि भोग लगाई ।।
माँगिमाँगि तुमसों गिरि खैहै * मुँह माँगे तुमको फल दैहै ।।
मेरो कह्यो सत्य करि मानों * मेरो सपन झूँट जानि जानों ।।

यह परचो तुम आँखिन देखो * तबहिं मोहिं साँचो करि लेखो ॥
जो चाहौ ब्रजकी ठकुराई * तौ पूजो गोवर्द्धनराई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्ही * सबहिन बात मानि सो लीन्ही ॥
कहहिं परस्पर सब सुख पाई * चलहु गोबर्द्धन कहत कन्हाई ॥
ब्रज घरघर सब होत कुलाहल * फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अङ्कम दै लै * शकटन साजत भोजन लैलै ॥
दो०—बहुव्यंजन पकवान बहु, बहुत मिठाई पाक ॥
रस गोरस मेवा बिबिध, अमित भाँति के शाक ॥ ९ ॥
सो०—षटरसके सब भोग, कछु शकटन कछु काँवरन ॥
गृहगृहते ब्रजलोग, लै लै गिरिपूजन चले ॥ ९ ॥
नंदमहरके घरकी सामा * कहँलगि बरणि बताऊँ नामा ॥
सहस शकट पकवान मिठाई * रस गोरस बहु भार भराई ॥
नंदसदनते लै बहु ग्वाला * चले जाय उर हर्ष विशाला ॥
पट भूषण सब गोपन साजे * भाँति अनेक बाजने बाजे ॥
नंद महर अरु महर जितेका * और गोप बहु भीर अनेका ॥
बलदाऊ अरु कुँवर कन्हैया * सुभग सिंगार किये दोउ भैया ॥
सखावृंद सुन्दर सब लीन्हे * कोटि काम छविलज्जित कीन्हे ॥
शोभित नंद महरके साथा * चले सकल पूजन गिरिनाथा ॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी * नंदगाँवकी अरु जे नारी ॥
भूषण बसन सँवारि सँवारी * चलीं हर्षि उर आनँद भारी ॥
पुर वृषभानु आदि जे ग्रामा * चलीं सकल गोपनकी बामा ॥
श्रीराधा--वृषभानुदुलारी * ललितादिक सब गोपकुमारी ॥
दो०—नौसत साजि सिंगार अति, पट भूषण बहुरंग ॥
यूथयूथ जुरिकै चलीं, कीरतिजूके सङ्ग ॥ १० ॥
सो०—सबकै मन यह काम, देखनको हरि रूप दृग ॥
परम मुदित सब बाम, सबके मनमोहन बसे ॥ १० ॥
चन्द्रबदनसी सब मृगनयनी * सकल सुघरसब कोकिलबैनी ॥
नवयौवनतनु सबहि प्रवीना * सबको मनमोहन आधीना ॥

चलीं सकल गोबर्द्धन घाहीं * भई भीर अति मारग माहीं ।।
शकटवृंद अरु गोप--समूहा * जात चले युवतिनते जूहा ।।
कौतुक करत गोपगण राजैं * ताल मृदंग अनेकन बाजैं ।।
कोऊ गावत कोउ नाचत जाहीं * कोउ ठाडे मग पावत नाहीं ।।
कोउ शकटन साज संवारे * कोऊ एकन एक पुकारे ।।
गावति मंगल गोपकुमारी * निरखिश्यामछबिहोति सुखारी ।।
होत कुलाहल अति मगमाहीं * कोउ बात सुनत कछु नाहीं ।।
कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं * अति उत्साह सबन मनमाहीं ।।
सखन सङ्ग खेलत हरि जाहीं * सबकी सुरति श्याम के माहीं ।।
ब्रजबासिनकी भीर सुहाई * उपमा मोपै बरणि न जाई ।।
छंद--उपमा न मोपै जाति, बर्णों भीर अति सुन्दर भई ।।
बढ़्यो आनंदसिंधुको सुख बिबिध तनुधर सोहई ।।
छबि उजागर नगरके धौं सुकृतपुंज सुहावने ।।
तिन मध्य सबके श्याम नायक सबहिलायक पावने ।।
दो०--नंदमहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय ।।
पहुँचे गोबर्द्धननिकट, निरखिशिखर सुखदाय ।।११।।
सा०--उतरे सहित समाज, चहूँ ओर ब्रजलोग सब ।।
मधि शोभित गिरिराज, कटिकामशोभा सरस ।।११।।
जहुँदिश फेर कोस चौरासी * उतरे घेर सकल ब्रजबासी ।।
ब्रजबासिनकी भीर अपारा * लगे चहूँदिशि चारु बजारा ।।
बस्तु अनेक बरणि नहिं जाई * बिन मोलहि सब सोज बिकाई ।।
ठौरठौर ब्रजयुवतीं गावैं * जहँतहँ नटवा नाच दिखावैं ।।
कहूँ बिदूषक हाँस हँसावैं * हर्षमाँझ अति हर्ष बढ़ावैं ।।
नरनारी सब परम हुलासा * अति आनंद उमँग चहुँपासा ।।
बूझत पूजनबिधि नँदराई * अधिकारी तहँ कुँवर कन्हाई ।।
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलावौ * प्रथम यज्ञ आरंभ करावो ।।
पूँछि बेदविधि तिनसों लीजै * वाही बिधि गिरिपूजा कीजै ।।
तबहिं विप्र नँदराय बुलाये * आदर सहित गोप लै आये ।।

हरि को कह्यो मानितिन लीन्हो * प्रथमारंभ यज्ञको कीन्हो॥
परमरुचिर वेदिका बनाई * सामबेद धुनि द्विजबर गाई॥
दो०—देखनको धाये सबै, ब्रजके नर अरु बाम॥
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावत श्याम॥२१॥
सो०—बड़े महर उपनँद, नंद आदि ठाढ़े सबै॥
कहत जु कछु नँदनंद, करत सकल सोई तहाँ॥२१॥
पंचामृत बहुसकल भरायो * डारि शिखरते गिरिअन्हवायो॥
बहुरो लै गंगाजल ढारयो * चंदन बंदन तिलक सँवारयो॥
भूषण बसन बिचित्र चढ़ाये * सुमनसुगंध माल पहिराये॥
धूप दीप करि आरति साजी * घंटा शंख झालरी बाजी॥
करत वेदधुनि बिप्र सुहाई * चक्रित नभ लखि सुर समुदाई॥
सुरपतिपूजा कृष्ण मिटाई * थाप्यो गिरि ब्रततिलक चढ़ाई॥
देखि इंद्र मन गर्ब बढ़ायो * ब्रजवासिन के मन कह आयो॥
पूजत गिरिहिं मोहिं बिसराई * गिरिसमेत ब्रज देहुँ बहाई॥
पार्वाहि मम अपमान सजाई * देखों तब को करत सहाई॥
अब देखहुँ मैं इनकी करनी * उपजी है इनको बुधि मरनी॥
गिरिको पूजत प्रेम बढ़ायो * सपनेको सुख लेत मनाये॥
कितिक बार पुनि इनको मारत * ऐसे सुरपति मनहिं बिचारत॥
दो०—कह्यो कृष्ण तब नंदसों, भोजन लेहु मँगाय॥
गिरि आगे सब राखिकै, अर्पहु विनय सुनाय॥१३॥
सो०—यह सुनिकै नँदराय, ल्यावहु ग्वालनसों कह्यो॥
लीन्ही तहाँ मँगाय, सामग्री सब भोगकी॥१३॥
नानाभाँति जाति पकवाना * बिबिध मिठाई अमित सधाना॥
षटरस व्यंजन बहु तरकारी * दही दूध सिखरन रुचिकारी॥
मधु मेवा फल फूल अनेका * सुंदर स्वादु एकतेएका॥
खीर आदि बहुभाँति रसोई * कहँलगि बरणि सकै सब कोई॥
मूँग भात अरु बरा पकोरी * बहुतिक दधि बोरी अरु कोरी॥
कियो अन्नको कूट सुहावन * जैसो गिरि गोवर्द्धन पावन॥

परसि परसि गिरिआगेराखत * जैसी बिधिसों मोहन भाषत ॥
गिरिपूजत जिहिंभाँतिकन्हाई * तैसे सब ब्रजलोग लुगाई ॥
गिरिगोवर्धनके चहुँपासा * कीन्हों बहुबिधि सहित हुलासा ॥
ठौरहि ठौर बेदिका राजै * अन्नकूट चहुँफेर बिराजै ॥
तिनमधि गोवर्द्धनगिरिपावन * परम अनूप सरूप सुहावन ॥
चंदन केशर रोरी हाथा * शोभितअतिचहुँदिशिगिरिमाथा॥
दो०—गिरिगोवर्द्धनरायकी, छवि नहिं परत बखान ॥
ब्रजबासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदान ॥१४॥
सो०—महिमा अमित अपार, श्रीगोबर्द्धन अचलकी ॥
जिहिं पूजत करतार, शारद बिधि नहिं कहिसकै ॥१४॥
प्रातहिते परसत भोजन सब * गयो ढरकि युगयाम तरणि तब॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई * जेवहिं गिरिसों कहो कन्हाई ॥
तब हरि कह्यो सबन समुझाई * भोग समर्पहु घंट बजाई ॥
मनमें कछु खुटक जनि राखौ * दीनबचन मुखते नहिं भाषौ ॥
नयन मूँदिकै ध्यान लगावो * प्रेमसहित कर जोरि मनावो ॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं * अपनी पूजा आप करावैं ॥
जिनपर कृपा करत नँदनँदन * तिनसों आप करावत बंदन॥
सबनमानि हरि कह्यो जो लीन्हो * बहुबिधिगिरि आराधनकीन्हो॥
तब प्रगटे गोवर्धननाथा * यज्ञपुरुष प्रभु श्रुति के माथा ॥
सहसभुजा तनु श्यामतमाला * मोरन-मुकुट बैजंतीमाला ॥
नखशिख भूषण परम सुहाये * अङ्ग अङ्ग छबि झलकन छाये ॥
भये देखि ब्रजलोक सनाथा * दियो दरश गोवर्धननाथा ॥
दो०—जै जै जै कहि देव मुनि, बर्षत सुमन अकाश ॥
ब्रजबासी जय जय करत, भरे अनंद हुलास ॥१५॥
सो०--सहसौ भुजा पसारि, लागे भोजन करनगिरि ॥
देखत ब्रजनरनारि, अति अद्भूत हरिके चरित ॥१५॥
कहत मुदित सब लोगं लुगाई * कान्हहिकी शोभा गिरिराई ॥
जैसे कहा श्यामतनु सोहै * तैसोई गिरवरमन मोहै ॥

तैसेइ कुण्डल तैसिय माला * तैसेइ चंचल नयन बिशाला ॥
तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो * नखशिख रूप कान्हको जैसो ॥
द्वै भुज हरिके परम सुहाई * गिरिकी भुजा सहस अधिकाई ॥
देखि दरश गिरवरके रूरे * नंद--यशोदा आनंद-पूरे ॥
कहत कि बड़े देव हम पाये * पेखहु परगट दरश दिखाये ॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो * जीवनजन्म सुफल करिलेख्यो ॥
ललिता राधहि कहति बुझाई * मैं यह बात समुझि है पाई ॥
यह लीला सब श्याम बनावैं * आपहिं जेंवत आप जिवावैं ॥
मैं जानी हरिकी चतुराई * इंद्रहि मेटि आप बलि खाई ॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा * मेरी बात मान तू राधा ॥
दो०--इतहि नंदको कर गहै, गोपन सों बतरात ॥
उत आपहि धरि सहस भुज, रुचिसों भोजनखात ॥१६॥
सो०--श्रीराधा सुख पाय, मुदितविलोकति श्यामछबि ॥
भक्तनके सुखदाय, नित वन करत बिनोद ब्रज ॥१६॥
इत गोपन सङ्ग हरि बतराहीं * उत सबहिनको भोजन खाहीं ॥
ग्वालिनि एक बिलोकनहारी * परि वृषभानुसदन रखवारी ॥
तासु नाम बदरीला गायो * तिन घरहीते भोग लगायो ॥
प्रेमसहित बहु बिनय सुनाई * सबके अन्तरयामी कन्हाई ॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी * लई तासु बलि भुजा पसारी ॥
भोजन करत परम रुचि मानी * गुणसागर लीला यह ठानी ॥
कहत नन्दसों कुँवर कन्हाई * मैं जो बात कही सो आई ॥
अब तुम गिरि गोबर्द्धन जाने * मेरे बचन सत्य करि माने ॥
तुम देखत भोजन सब खायो * परगट तुमको दरश दिखायो ॥
तुम्हरी भक्ति भाव पहिचानी * गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी ॥
अब तुम माँग्यो चाहौ जोई * माँगिलेहु इनपै सब सोई ॥
नन्द कहत धनि धन्य कन्हाई * यह पूजा तुम हमहिं बताई ॥
दो०--प्रीतिरीतिके भावसों, भोजन सबको खाय ॥
ह्वै प्रसन्न अति नन्दसों, तब बोले गिरिराय ॥१७॥

सो०—लेहु नंद बरदान, अब जो तुम हमसों चाहौ ।।
मैं लीन्हो सुखमान, बहुत करीं तुम भक्ति मम ।।१७।।
भली करी तुम मेरी पूजा * सेबक तुमते और न दूजा ।।
तेरे सुत बल मोहन भाई * इनको कुशल अनंद सदाई ।।
मैंही इनको सुपन दिखायो * मैंही सुरपतियज्ञ मिटायो ।।
अब जो सुरपति तुम्हहिं रिसाई * जल बरषै ब्रज ऊपर आई ।।
तौ तुम अपने जिय मति डरियो * कान्ह कहै सोई तुम करियो ।।
अब तुम मम प्रसाद लै खाहू * अपने अपने घर सब जाहू ।।
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं * ओर कछू माँगौ हम पाहीं ।।
यह सुनि चकित सफल नरनारी * भोजन कियो प्रथम गिरधारी ।।
अब बोलत मुख बचन प्रमाना * ऐसे घरछत देव न आना ।।
नन्दकह्यो कह माँगौ स्वामी * देखि दरश भयो पूरणकामी ।।
सकल सिद्धि सुख तुम्हरो दीन्हो * कृपासिंधु मैं तुम्हरो कीन्हो ।।
मोह बिबश प्रभु तुमहिं बिसारे * भूलि फिर्यो देवनके द्वारे ।।
छंछ—फिरयो भूल्यौ देवद्धारननाथ तुमहिं बिसारिकै ।।
पूजा तुम्हारी कहा जाने हम अहीर गवाँर कै ।।
आपही करि कृपा दीन्हो स्वपन श्यामहिं आयकै ।।
दई बालकको बढाई नाथ यह अपनायकै ।। २ ।।
अब हमैं डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायकै ।।
इंद्र कह करि है हमारो नाथ ब्रज पप आयकै ।।
तुमहिं करता हौ सबनके तुमहिं मबके ईश हौ ।।
कोटिकोटि ब्रह्माण्ड तुम्हरे रोमप्रति जगदीश हौ ।। ३ ।।
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं ।।
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं ।।
सुसुत लै दोउ डारि गिरिपद आप नन्दचरणन परे ।।
बिहँसि गिर लखि प्रीतिपँकज पाणि दुहुमाथन धरे ।। ४ ।।
दो०—नन्द गोप उपनंद सब, श्रीवृषभानुसमेत ।।
बारबार गिरिराजके, चरण परत अति हेत ।।१८।।

सो०-करि सबको सनमान, दै प्रसाद निजपाणिसों ॥
सबन कह्यो घर जान, व्है प्रसन्न गिरिराज तब ॥१८॥
चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई * भये प्रसन्न देव गिरिराई ॥
भलीभाँति पूजा तुम कीन्ही * गिरिवरराज मान सब लीन्ही ॥
दोउ कर जोरि भये सब ठाढ़े * भक्तिभाव सबके मन बाढ़े ॥
हरि करि परकर्मा सब गिरिको * परसतचरण चलत ब्रजघरको ॥
देखि चकित गणगंध्रब सुरमुनि * कहत धन्य ब्रजबासी गुणगनि ॥
धन्य नन्दको सुकृत पुरातन * धन्य धन्य पर्वत गोबर्द्धन ॥
करैं प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि * बरषि सुमन करि जय२ धुनि२ ॥
निज निज लोकन देव सिधाये * ब्रजबासी सब ब्रजको आये ॥
मुदित सकल ब्रजलोग लुगाई * गोबर्द्धनकी करत बड़ाई ॥
कहत धन्य यशुमतिको जायो * बड़ो देवता कान्ह पुजायो ॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहैं * गाय गोप सब सुखसों रैहैं ॥
बरष बरष प्रति इन्द्र पुजायो * कबहूं प्रगट दरश नहिं पायो ॥
दो०-प्रगट देत है दरश गिरि, सबके आगे खात ॥
परम हर्ष नर नारि सब, सबके मुख यह बात ॥१९॥
सो०-खेलत नितनव ख्याल, भक्तपालनंदलाल ब्रज ॥
दुष्टन के उरसाल, सुर नर मुनि मोहत निरखि ॥१९॥
इंद्र देखि गोवर्द्धनपूजा * कियो क्रोध मोसम को दूजा ॥
ब्रजवासिन मोको बिसरायो * मेरो बलि लै गिरिहिं चढ़ायो ॥
नेक नहिं शंका उर आनी * कछू कानि मेरो नहिं मानी ॥
तेंतिस कोटि सुरनको नायक * मेघबर्त सब मेरे पायक ॥
कियो अहीरन मम अपमाना * काधौं इन अपने मन जाना ॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो * गिरिहिथापिशिरतिलकबनायो ॥
काहू उन्हें दियो बहँकाई * मरणकाल ऐसो बुधि आई ॥
तुरत इन्हें अब देहुँ सजाई * देखौं धौं को करत सहाई ॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊँ * ब्रजजन मारि पताल पठाऊँ ॥
फूलि २ भोजन जिन कीन्हों * नेक न राखो ताको चीन्हों ॥

सकल गोप यह नयनन देखैं * बड़े देवताको फल लेखैं ॥
तापाछे ब्रज देउँ बहाई * भुव पर खोज रहै नहिं राई ॥
दो०—ऐसे सुरपति क्रोध करि, मनमें गर्व बढ़ाय ॥
प्रलयकालके मेघ सब, लीने तुरत बुलाय ॥२०॥
सो०—तिन्हैं कह्यो सुरराय, ब्रजपर वर्षो जाय तुम ॥
पर्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु ब्रजलोग सब ॥२०॥
मोसों अहिरन करी ढ़िठाई * मेरी बलि पर्बतहि खवाई ॥
ताकरण मैं तुमहिं बुलाये * सैनसमेत जाहु सब धाये ॥
गिरिसमेत ब्रज देहु बहाई * भूतल खोज रहै नहिं राई ॥
सुरपति बचन सुनत घन तमके * कापर क्रोध करत प्रभु यमके ॥
केतिक गिरि ब्रज हरे आगे * तुम प्रभु क्रोध करत किहिलागे ॥
क्षणहीमें ब्रज खोदि बहावैं * डुंगरको धर नाम मिटावैं ॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी * रहत अक्षयबट तनक निसानी ॥
आप क्षमा कीजै सुरराई * हम करि हैं उनकी पहुनाई ॥
यह सुनि सुनासीर सुख पाये * हर्षि पान दै तिनहिं पठाये ॥
चले मेघ सब शीस नवाई * आये ब्रजके ऊपर धाई ॥
क्षणही मैं रवि गगन छिपाने * देखतही देखत अधिकाने ॥
कीन्हो शब्द गरजि घन मारी * अति ही घटा भयानककारी ॥
छन्द—अति घटा भयानककारी कज्जलहु पटतर नहीं ॥
घेरि लीनो ब्रज चहूँ दिशि पवन प्रबला झकोरहीं ॥
गरजत गगन घनघोर तड़पत तडित बारहिंबारहिं ॥
होत शब्द अघात ब्रजनरनारि चकित निहारहीं ॥ ५ ॥
गये बन जे गाय लै ते धाय फिर ब्रज आवहीं ॥
अंधधुंध अपार खोजत धाम पंथ न पावहीं ॥
संतत जहाँ तहँ बस्तु सब नरनारि मन सोचत महा ॥
बुरो सुरपतिसों कियो अब होन धौं चाहत कहा ॥ ६ ॥
दो०—उमडि घुमडि घहराय घन, परन लगे जल जोर ॥
टेरत सुतको मातपितु, व्रज गलबल चहुँओर ॥२१॥

सो०—ब्रजजन सकल बिहाल, बितरानेजिततित फिरत ।।
श्याम करत यह ख्याल, देखि २ मनमें हँसत ।।२१।।
अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी * कहत देत पुरुषनको गारी ।।
आये पूजि गोबर्द्धन जाई * सुरपति निजकुलदेव मिटाई ।।
दीन्हो गिरिवर यह फल भारी * लेहु सबै अब गोद पसारी ।।
चढ्यो प्रचारि कोप सुरराई * देत पलकमें ब्रजहि बहाई ।।
जोपै बड़े देव गिरराजू * तौ किन आयबचाबत आजू ।।
नन्दसुवन यह पूजा ठानो * ताते इंद्र चढ्यो रिस मानो ।।
कहति यशोमतिसों ब्रजबाला * कहा काम इह कियो गुपाला ।।
सुरपति हैं कुलदेव हमारे * ब्रजते मेट किये ते न्यारे ।।
चढ़ो आज ब्रजऊपर सोई * अब सहाय काहि न गिरि होई ।।
घन गरजत तरजत अति भारी * देखि देखि डरपत नर नारी ।।
सकल बिकलभय मन पछिताहीं * लरिकन दुरवत गोदनमाहीं ।।
भये सोचवस सब ब्रज लोगा * कहत बन्यो अब मरण संयोगा ।।
दो०—देखि देखि ब्रजकी दशा * नन्द महर पछतात ।।
कियो निरादर इंद्रको, मनमें बहुत डरात ।।२२।।
सो०—श्यामराम दोउ भाय, लिये निकट सोचत महर ।।
जुरे गोप तहँ आय, मनही मन मुसकात हरि ।।२
कहत कृष्णसों सब ब्रजवासी * सुनहुश्याम सुन्दर गुणरासी ।।
तुम तौ सुरपति यज्ञ मिटायो * ब्रजबासिन पै गिरिहि पुजायो ।।
तुम्हरे कहे अहो ब्रजमंडन * सुरपति मान कियो हम खंडन
ताहीते सुरराज रिसाई * दिये प्रलयके मेघ पठाई ।।
वर्षत ते मघवाके पायक * विषम बूँद लागत जनु सायक ।।
भीजत गोप गाय गोसुत सब * घरिकमाहिं बूड़त है ब्रज अब ।।
राखि लेहु अब ब्रज के नायक * तुमहीं यह दुख मेटन लायक ।।
दाबानलते राखे जैसे * अब जलते राखौ हरि तैसे ।।
बकोबिनाशन शकटसँहारन * तृणावर्त बत्सासुर मारन ।।
अघमर्दन बकबदनबिदारन * तुमहीं ब्रजजनके दुख टारन ।।

दीजै अभय बेगि नंदलाला * बर्षत मेघ महाबिकराला ॥
राखिलेहु बूड़त ब्रज खेरो * अब चितवत हरि सब मुखतेरो ॥
दो०—जब जब गाढ परी हमैं, तब तुम कियो उबार ॥
ईहिं अवसर अब राखियो, मोहन नंदकुमार ॥२३॥
सो०—ब्रजजनके सुखदान, देखि बिकल ब्रजलोग सब ॥
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उर डरहुमति ॥२३॥
चलहुसकल मिलिगिरिके पाहीं * उनको ध्यान धरहु मनमाहीं ॥
करि लै है ब्रजराज सहाई * रहिहै सुरपति मन पछिताई ॥
यह कहि हरि गोबर्धन आये * अभयबाह दे सबन बुलाये ॥
गाय बत्स ब्रजलोग लुगाई * गये सकल हरिके संग धाई ॥
सबहीके देखत गहि धरते * उचकिलिवोगिरिवर हरिकरते ॥
छिगुनी छोर बाम करि राख्यो * तब हरि ब्रजबासिनते भाख्यो ॥
करी सहाय देव गिरिराया * आवहु तुम सब इनकी छाया ॥
गाय गोप सुत बछ नर नारी * भये सकल क्षणमांहि सुखारी ॥
चकित देखि सब लोग लुगाई * कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥
प्रेम पुलकि उर आनँद भरिके * परसत चरण धाय सब हरिके ॥
कान्ह कहत देखहु गिरिराई * कीन्ही किहिधौं तुरत सहाई ॥
भक्तनहित हरि गिरिहिउठायो * तबते गिरिधर नाम धरायो ॥
छन्द—परचोतबते नाम गिरिधर बामकर गिरिधर धरयो ॥
देखि ब्याकुल सकल ब्रजजन सोच इक क्षणमें हरयो ॥
करत जय जय गोप गोपी सकल तन आनन्द भरे ॥
श्याम सबके मध्य ठाढ़े करजनख गिरिवर धरे ॥ ७ ॥
घन अखंडित धार मूसल सलिलकी वर्षा करे ॥
अंधधुंध आकाश चहुँदिशि पवन झक झोरत खरे ॥
ब्रजनीर गंभीर पुनि पुनि गरज पर्वतपर जिरे ॥
करत अति उतपात ब्रजपर मेघ परलयकर फिरे ॥ ८ ॥
दो०—बारबार चपला चमकि, चकचौंधति चहुँओर ॥
अरर अरर आकाशते, जल डारत घन घोर ॥२२॥

सो०—हरिजन के सुखदाय, गिरि कीन्हों बिस्तार अति ॥
सब ब्रज लियो बचाय, बूँद न आवत भूमि पर ॥२४॥
कहत गोप सब मनहिं डराई * गिरिवर नीके धरहु कन्हाई ॥
महाप्रलय पर्वत यह भारी * अति कोमल भुज तनक तुम्हारी ॥
नखते गिरे धौर को धारै * ऐसे बल बिन कौन सँभारै ॥
देखि नंद व्याकुल मनमाहीं * महाभार गिरि कोमलबाहीं ॥
दाबत भुजा यशोदा मैया * बारबार मुख लेत बलैया ॥
देखि भार अति मन दुख पावै * पुनि २ गोबर्धनहि मनावै ॥
नाथ आपनो भार सँभारी * करियो कान्हरको रखवारी ॥
पय पकवान मिठाई मेवा * बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥
मातपितहिं हरि देखि दुखारी * तब इक बुद्धि करी गिरधारी ॥
कह्यो नंदसों निकट बुलाई * तुमहूँ सब मिलि करहु सहाई ॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहू * मति राखौ उरमें संदेहू ॥
गोबर्धन गिरि भयो सहाई * आप कह्यो मुहिं लेहु उठाई ॥
दो०—यह सुनि जहँ तहँ गोप सब, रहे लकुट गिरि लाय ॥
कहत श्याम तब नंदसों, भलो लियो उचकाय ॥२५॥
सो०—ठाढे ढिग बलराम, देखि देखि लीला हँसत ॥
कौतुक निधि सुखधाम, करत चरित संतनसुखद ॥२५॥
सात दिवस बीते इहिंभाँती * वर्षत जल जलधर दिनराती ॥
कोपि कोपि डारत जलधारा * मिटी न ब्रजकी नेकु लगारा ॥
जलत जलदजल बीचहि अंबर * वैसोइ गिरि वैसोइ ब्रजसुन्दर ॥
धर जल पवन अनल नभजाको * सुरपति कहा करिसकै ताको ॥
भये जलद जलते सब रीते * रह्यो एक गुण द्वै गुण बीते ॥
कहत बात आपसमें बादर * पठयो इंद्र हमें दै आदर ॥
कह्यो देहु ब्रज जाय बहाई * कहि हैं कहा जाय अब भाई ॥
महाप्रलय जल बरषे आनी * ब्रजमें बूँद न पहुँचो पानी ॥
भये मेघ मनमें सब कादर * अब करिहै सुरराज निरादर ॥
अतिभय तनकी दशा भुलाने * गये इंद्रपै सबै खिसाने ॥

कहत मेघ सुरपतिके पाहीं * सुनहुदेव हम कहत डराहीं ॥
कै मारो कै शरण उबारो * ब्रजमें जोर न चलत हमारो ॥
दो०--सात दिवस परलयसलिल, हम बरषे ब्रज राय ॥
ब्रजबाषिन भाये नहीं, निदऱ्यो हमें बनाय ॥२६॥
सो०--निघट गये सब बारि, एक बूँद पहुँची न धर ॥
यह अचरज अति भारि, कहत लगत लज्जा हमें ॥२६॥
यह सुनि चकित भयो सुरराई * पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥
कहा भयो परलयको पानी * यह कछु ब्रजकी बात न जानी ॥
सुरपति मन यह करत बिचारा * पर्वतमें कोउ है अवतारा ॥
तब सुरेश सब देव बुलाये * आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सब शिर नायो * कौनकाज सुरराज बुलायो ॥
तबहीं देवनसों सुरराई * ब्रजबासिनकी बात सुनाई ॥
बीते बरष देत थे पूजा * सो अब देव कियो उन दूजा ॥
मोहिं मेटि पर्वतको थाप्यो * ताते मैं अति रिस करि काँप्यो ॥
दिये प्रलय के मेघ पठाई * आवहु ब्रज गिरि सहित बहाई ॥
ते बरषे परलयजल जाई * ब्रजमें नीर न पहुँच्यो राई ॥
आये मेघ हारि सब रोई * कारण कहो कहौ जो होई ॥
देवन कह्यो सुनौ सुरईशा * प्रगट्यो ब्रजहिं ब्रह्म जगदीशा ॥
दो०--तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारीं जाय ॥
कह्यो लेन अब अवतार तब, सो बिहरत ब्रज आय ॥२७॥
सो०--कहै इंद्र पछिताय, मैं भूल्यो जान्यो नहीं ॥
कीन्हीं बहुत ढिठाय, भय करि मन ब्याकुल भये ॥२७॥
मैं सुरपति जिनहींको कीन्हों * तिन आगे चाहौं बलि लीन्हों ॥
रवि आगे खद्योत उजेरो * तैसी बुद्धि भई यह मेरी ॥
कीन्हे बहुतै मैं अघ भाई * कहा करौं अब मन पछिताई ॥
सुरन कही सुनिये सुरराई * ब्रजहिं चलौ नहिं आन उपाई ॥
वे हैं प्रभु दयालु करुणाकर * क्षमा करैंगे श्री सुन्दरवर ॥
सुनिबिचार कीन्हो सुरराजा * यद्यपि बदन दिखावत लाजा ॥

तद्यपि वे स्वामी मैं दासा * करि हैं कृपा अवशिमोंहि आसा॥
अब नहिं बनत रहे मुख गोई * शरण गये जो यह सो होई॥
यह बिचार मनमें ठहराई * चल्यो शरण सुर सङ्ग लिवाई॥
कामधेनु करि अग्र सहाई * सोचत चल्यो ब्रजहि समुहाई॥
अतिसंकोच सुरपतिमनमाहीं * आगे धरत परत पग नाहीं॥
जगतपितासों करी ढिठाई * कहिहौं कहा बदन दिखराई॥
दो०—शरण शरण कहि चरणपर, परिहौं जाय उताल ॥
शरणागत पालन बिरद, तजि हैं नाँहि गोपाल ॥२८॥
सो०—दीनबचन सुनि कान, करि मैं कृपा कृपालु प्रभु ॥
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहि ॥२८॥
देखि सुरनकी भोर अहीरा * अति डरपे उर भये अधीरा॥
दौरि कृष्णसों जाय सुनायो * सुरपति आप सैन सजि आयो॥
कहतश्याम हँसिभतिहि डरावो * गिरिवर तजि कतहूँ मत जावो॥
ब्रजबाहर सैना सब राखी * बाहनते उतरयो सहसाखी॥
सकुचत चल्यो कृष्णके पासा * कछुक दुखितमनकछुकहुलासा॥
धाय परयो चरणन पर जाई * कृपासिंधु राखो शरणाई॥
बिसर्यो तुमहिं तुम्हारी माया * अब तुम बिन नहिं और सहाय॥
शरण २ पुनि पुनि कहि बानी * धोये चरण नयनके पानी॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई * मोते चूक परी अधिकाई॥
मैं अपराध कियो अनजानो * क्षमा करौ प्रभु जनसुखदानी॥
ज्यो बालक पितुसों बिरझाई * लेत पिता तिहिं गोद उठाई॥
ऐसेहि मोहिं करो जनत्राता * जैसे सुतहित पितु अरु माता॥
दो०—व्याकुल देखि सुरन अति, दीनबंधु यदुराय॥
अभयकियो करमाथधिर, भुजगहिलियो उठाय ॥२८
सो०—लीन्हो हृदय लगाय, देखि दीनता इंद्रकी ॥
शिर नहिं सकत उठाय, बारबार परसत चरण ॥२८
कहत इंद्रसों कुँवर कन्हाई * तुम कत सकुचतहौ सुरराई॥
हम तुमसों कीन्ही अधिकाई * तुम्हरी पूजा हम सब खाई॥

भूल करी ब्रज बरषे पानी * हम कछु तुमसों रिस नहिंमानी ।।
यह दीन्हो मेरी ठकुराई * तुम नहिं जानत करौ ढिठाई ।।
कहा भयो जो मेघ पठाये * मैं सब ब्रजके लोग बचाये ।।
तुम कछु उरमें सोच न आनौ * मैं तुमसों कछु बुरौ न मानौं ।।
भली करो ब्रज देखन आये * तुम मेरे मनमें अति भाये ।।
अब अपने मन सोच मिटाई * देवन सहित करौ सुख जाई ।।
सुनि हरिबचन देवगण हर्षे * जयजय करि कुसुमांजलि बर्षे ।।
पुलकि अङ्ग मुख गद्गदवानी * कहत धन्य प्रभु जनसुखदानी ।।
अशरणशरण तुम्हरो बानो * यह लीला सब तुमही जानो ।।
धन्य धन्य सब ब्रजके बासी * जिनके प्रेम बिबश अबिनासी ।।
दो०—प्रभुहिं देखि अनुकूलमन, धीर कियो सुरराय ।।
मिटी त्रास उरते तऊ, बारबार पछिताय ।।३०।।
सो०—कहत बारहीबार, तुम गति अगम अगाध प्रभु ।।
मैं भूल्यो संसार, जान्यो ब्रज अवतार नहिं ।।३०।।
प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा * मोते मंद और को दूजा ।।
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा * रवि आगे खद्योत प्रकासा ।।
मेरो गर्व कितक यह बाता * कोटिन इंद्र तुम्हारे गाता ।।
मैं अपराध कियो यह भारी * प्रभु राख्यो निजओर निहारी ।।
दीनवन्धु तुम जनहितकारी * बिरद बखानत वेद पुकारी ।।
कृपा करी प्रभुदर्शन पाये * भयो सुखी तनुपाप नशाये ।।
ये दिन वृथा गये बिनकाजा * तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा ।।
धन्य धन्य प्रभु गिरवर धारी * भंजन बिपति भक्तहितकारी ।।
दैत्यदलन प्रभु भार उतारन * संतधेनु द्विजहित तनु धारन ।।
अब प्रभु मोहिं कृपायह करिये * गिरिबरधरगिरिधरपर धरिये ।।
सुनि विनती हरि भये सुखारी * तब गिरि करते धर्यो उतारी ।।
सुरनसहित सुरराज अनंदे * कामधेनु लै प्रभुपद बंदे ।।
छन्द—करत अस्तुतिजोरि कर सुरधेनु आगे राखिकै ।।
बँदि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि नाम गोबिंद भाखिकै ।।

जयजय कृपालु मुकुँदमाधव कृष्ण अगतिनगतिहरे ।।
गोपपति राजीवलोचन करजनख गिरिवर धरे ।। ९ ।।
बसुदेव ब्रजेंद्र यदुपति कंस अरि सुररंजना ।।
हरण-भव भय भार-महि अहिराजविषमदगंजना ।।
बकी तिरणावर्त बत्सासुर बका अघनाशनम् ।।
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक असुर वंशबिनाशनम् ।।१०।।
चरि माखन खात ब्रजघर भंजि तरु जन दुखहरे ।।
योगिजन जपतप न पावत धन्य ब्रजजन बश करे ।।
धन्य गोकुल धन्य यमुना धन्य ब्रज वृंदावने ।।
धन्य गोपी गोप यशुदा नंद गिरिगोर्द्धने ।।११।।
फिरत चारत धेनु निजपदपद्म फणि अहिप्रति धरे ।।
शंकट भंजन भक्तरंजन रास निर्तन गुणभरे ।।
जनक सुरसह शिव सनक धन श्री नहीं छाँडति घरी ।।
परसते पद भयो पावन जयति जय जय जय हरी ।।१२।।

दो०—करि अस्तुतिमनहरषि अति, परचो शक्र प्रभु पाँय ।।
ह्वै प्रसन्न सुर धेनुयुत, बिदा कियो यदुराय ।।३१।।

सो०—पुनि पुनि प्रभु पदबन्द, सुलोकहि सुरपति गयो ।।
ब्रजजन परमानंद, चकित बिलोकत श्यामतन ।।३१।।

कहत गोप सब आपसमाहीं * इनसम और जगत कोउ नाहीं ।।
सातबर्षको बालक जोई * ताहि इतो बल कैसे होई ।।
हैं ये परब्रह्म भगवाना * करत चरित्र देह धरि नाना ।।
दैत्य किते छल करि-करिआये * ते सब इन कौतुकहि नशाये ।।
इंद्र मेटि गिरिवरहि पुजायो * तामें निजस्वरूप प्रगटायो ।।
इन्द्र प्रलयघन दिये पाठाई * सात दिवस ब्रज वर्षे आई ।।
अति बिस्तार बड़ो अति भारी * लीन्हो गिरिवर करपर धारी ।।
एक बूँद ब्रज में नहिं आई * लीन्हो सब व्रज लोक बचाई ।।
हारि मानि सुरपति भय पाई * आन परचो चरणन शिर नाई ।।
कामधेनु देवनको ल्यायो * ताहि अभय करि फेरि पठायो ।।

अचरज बात जात नहिं बरणी * मानुषसों यह होय न करणी ॥
परे गोप हरिचरणन आई * कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥
दो०—हम तुमको जानें नहीं, हौ तुम त्रिभुवनराय ॥
ब्रजवासिन सुख देनको, ब्रजमें प्रगटे आय ॥३२॥
सो०—तुम करि लेत सहाय, परत जहाँ संकट बिकट ॥
लीन्हों हमैं बचाय, बिषतै जलते अनलते ॥३२॥
करत बिचार युबति सब ठाढीं * प्रेम उमँगि मन आनँद बाढीं ॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई * अति कोमलतनु श्याम कन्हाई ॥
लेत धरत जान्यो नहिं काहू * धन्य धन्य हरिकी यह बाहू ॥
सात दिवस परलयजल डार्‍यो * इंद्र पर्‍यो चरणन जब हार्‍यो ॥
कहत सखा धनि धन्य गोपाला * कैसे गिरि कर धर्‍यो बिशाला ॥
यह करतूत करत तुम कैसे * हम सङ्ग सदा रहत हौ ऐसे ॥
गाय चरावत हौ मिलि हमसों * केतिक बल है बूझत तुमसों ॥
धाय चरण गहि यशुमति मैया * मुख चूँबति अरु लेत बलैया ॥
अति असनेह नयन भरि पानी * तनु पुलकित मुख गद्गद बानी ॥
कैसे कर धर्‍यो गिरि ताता * अति कोमल भुज तुमदिनसाता ॥
बिहँसि मातसों कहत कन्हैया * तेरी सौं सुनु यशुमति मैया ॥
मैं न उठावत री श्रम पायो * नेक छियो उठि आपहि आयो ॥
दो०—अब गिरिकौ पूजौ बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय ॥
बूड़तते राख्यो ब्रजहि, कीन्हो बहुत सहाय ॥३३॥
सो०—यह सुनि हर्ष बढ़ाय, बहुरौ गिरि पूज्यो सबन ॥
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल ॥३३॥
अक्षत रोरी पान मिठाई * पुष्पहार दधि दूध सुहाई ॥
यशुमति रोहिणि अरुब्रजनारी * सजि २ ल्याई कंचनथारी ॥
हरिको तिलक कियो दोउमाता * पुलकि प्रेम परिपूरण गाता ॥
बहुतक द्रव्य निछावर कीन्हों * भुज गहि लाय कंठसों लीन्हों ॥
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावैं * फूलमाल गरमें पहिरावैं ॥
ईहिमिस अङ्ग परसि सुख पावैं * निरखबदनछबिबिधिहिमनावैं ॥

होय हमारो पति गिरि धारी * मनमोहन सुन्दर बनवारी॥
यह कामना सकल उर धारी * हरिछबि निरखत गोपकुमारी॥
कह्यो नंदसों तब गिरिधारी * सुनहु तात अब बात हमारी॥
गोबर्धनको करौं प्रणामा * चलिये अब सब निज २ धामा॥
यहसुनिसबनगिरिहिंशिरनायो * चले ब्रजहि मन हर्ष बढ़ायो॥
आये सदन सकल ब्रजबासी * सहित श्याम सुन्दर सुखरासी॥
दो०-घरघर ब्रज आनंद सब, गावत मंगलचार॥
आये सुरपति जीतिहरि, गिरिधर नन्दकुमार॥३४॥
सो०-ब्रजमंगल ब्रजमोद, ब्रज आभूषण गिरिधरन॥
नितनव करत बिनोद, ब्रजबासी ब्रजदाससहित॥३४॥

अथ नंदएकादशीवरुण लोला ३८

इंद्रहि जीति श्याम घर आये * ब्रज घरघर आनंद बधाये॥
तादिन दशमी भई सुहाई * कार्तिक-शुक्ल-एकादशि आई॥
भुक्तिमुक्ति-दायक अतिपावन * पाप-शाप-संताप नशा-वन॥
नन्द एकादशि ब्रत प्रतपालैं * बेदविदित सब धर्म सँभालैं॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीन्हो * बहुरि इकादशिको ब्रत लीन्हो॥
निराहार निर्जल दृढ़ नेमा * नारायण--पदपंकज प्रेमा॥
और काज कछु मन नहिं लायो * भजन करत सब दिवस बितायो॥
निशिजागरणकरन बिधिठानो * प्रभु मंदिर लीप्यो निज पानी॥
पाटंबर बर दिव्य बिछाये * बिबिध पुनीत सुगन्ध सिंचाये॥
बाँधी बन्दनबार सुहाई * सुमन सुगंध माल लटकाई॥
चौक चारु बहुरङ्गन पूरयो * सिंहासन तहँ राख्यो रूरचो॥
शालग्राम तहाँ पधराये * भूषण बसन बिचित्र बनाये॥
दो०धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभुपर पुष्प चढ़ाय॥
करी आरती प्रेमसों, घंटा शंख बजाय॥ १॥
सो०--प्रभुपद नायोमाथ, करि परदक्षिण दंडवत॥
तुम त्रिभुवन के नाथ, जोरि हाथ अस्तुतिकरी॥ १॥
आदर सहित करी नंदपूजा * प्रेमभक्ति उर भाव न दूजा॥

करत कीरतन भजन सप्रीती * तीन याम यामिन जब बीती ॥
तबहिं महरि नँदराय बुलाये * कह्यो यशोमतिसों समुझाये ॥
एक दंड द्वादशी सकारे * पारणकी बिधि करो सबारे ॥
यह कहि नंद यशोमतिपाही * लै झारी धोती करमाहीं ॥
गये न्हान यमुनाके तीरा * संग नहीं कोउ तहाँ अहीरा ॥
झारी भरि यमुनाजल लीन्हो * बाहिर जाय देह कृत कीन्हो ॥
ले माटी करचरण पखारी * अति उत्तम सो करी मुखारी ॥
अचमन लै बैठे नँद पानी * बरुण दूत जल बाजत जानी ॥
नंदहि लै गए पकरि पताला * बरुणपास पहुँचे तत्काला ॥
जान्यो बरुण कृष्णके ताता * भयो हर्ष मन गुण यह बाता ॥
अंतर्यामी प्रभु घनश्यामा * नंदलेन ऐहैं मम धामा ॥
दो०–भयो बरुण अति हर्ष मन, पुनि २ पुलकित गात ॥
नंदहि ल्याये भृत्य मम, भली भई यह बात ॥२॥
सो०–जाही धरतमुनिध्यान, निगम नेति जिहि गावहीं ॥
सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि २ भाग्य मम ॥२॥
हर्षसहित नंदहि जलराई * भीतर महलन गये लिवाई ॥
सादर बिनयबचन बहु भाखे * धीरज दै नीके नँद राखे ॥
गनो सबन नंदको देख्यो * जन्म सुफल अपनो करिलेख्यो ॥
कहत कि धनि २ भाग्य हमारे * नँद हमारे सदन पधारे ॥
जिनके सुत त्रैलोक्यगुसाँई * सुर नर मुनि सबहींके साँई ॥
चितबत पन्थ बरुण मन लाये * करुणामय अब आवत धाये ॥
यशुमति सोच करत मनमाहीं * भई बेर आये नँद नाहीं ॥
खबरि लेन तब गोप पठाये * यमुनाटतहि नंद नहिं पाये ॥
झारी धोती तटपर देषी * भये शोच सब ग्वाल बिशेषी ॥
इतउत खोजिग्वाल फिरिआये * कहत महरिसों नंद न पाये ॥
झारी धोती तटपर पाई * सुनति महरि मुख गयो झुराई ॥
निशा अकेले आज सिधाये * काहू जलचर धौं धर खाये ॥
दो०–अति व्याकुल यशुमति भई, उठी रोय अकुलाय ॥

सुनि धाये ब्रज लोग सब, नंदहि खोजत जाय॥ ३॥
सो०—यमुनातट बनगाँव, नंद नंद टेरत सबै॥
ढुँढिफिरे सब ठाँव, भये बिकल ब्रजलोग तब॥ ३॥
सोवत ते हरि हलधर आये * रोवत मात देखि दुखि पाये॥
पूछत जननीसों दोउ भैया * कत रोवति है यशुमति मैया॥
बिलखि यशोमति बचन सुनाये * यमुनातट कहुँ नन्द हिराये॥
यह सुनि हरि बोले सुनु माता * अबहीं आवत हैं नँदताता॥
मोसों कहि गये अबहीं आवन * मत रोवे मैं जात बुलावन॥
प्रभु सर्वज्ञ सकल के स्वामी * जल थल व्यापक अन्तरयामी॥
जाने नँद बरुणके धामा * बरुणप्रीति पुनि लखिघनश्यामा॥
बरुणलोक हरि तुरत सिधाये * सुनत बरुण आतुर उठि धाये॥
देखत दरश परम सुख पायो * चरणसरोज आय शिर नायो॥
कहत आज धनि भाग्य हमारे * त्रिभुवनपति मम धाम पधारे॥
पाटम्बर पाँवडे बिछाये * महलन बँदनवार बँधाये॥
रत्न जटित सिंहासन धारयो * तापर सादर प्रभु बैठारयो॥
छन्द—बैठारि सादर धोवत कमलपद निजकरगहै॥
जे पदसरोज मनोज अरि उर सरसदा प्रफुलित रहै॥
जे पदपद्म पद्मालया उर रहत नित भूषण किये॥
नाय ते पद जलज जलपति प्रेम परिपूरण हिये॥
दो०—बिबिध भाँति प्रभु पूजिकै, बरुण कह्योगहिपाँय॥
कृपासिंधु हरि कृपा करि, दरश दियो मुहिं आय॥ ४॥
सो०—मैं कीनौं अपराध, सो प्रभु उर नहिं आनिये॥
क्षमासमुद्र अगाध, क्षमा करहु निज जानि जन॥ ४॥
जल रक्षक जे दूत कृपाला * ते लै आये नन्द पताला॥
यह कारज मैं उन्हको दीन्हो * तिन दूतन प्रभु नंद न चीन्हो॥
यदपि कियो उन्ह पातक भारी * हैं वे सकल दंड—अधिकारी॥
तदपि दूत वे मो मन भाये * जिनते प्रभुके दर्शन पाये॥
देखि नाथ शुभ दर्श तुम्हारा * मैं मान्यो उनको उपकारा॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब प्रभु हमसबशरण तुम्हारो * राखि लेहु श्रीगिरिवरधारो ॥
पाँयन परीं आय सब रानीं * बड़भागिनि आपनको जानी ॥
रानिन सहित बरुण अनुरागे * अस्तुति करत जोरिकर आगे ॥
धन्य नन्द धनि धन्य यशोदा * धनि २ तुमहिं खिलावत गोदा ॥
धनि ब्रज गोकुल नर नारी * पूरणब्रह्म जहाँ अवतारी ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी * ब्रजबिहार बिलसत सुखराशी ॥
शेष सहसमुख बरणि न जाई * सहज रूपको करहि बड़ाई ॥
दो०—करि अस्तुति रानिन सहित, पुनि २ धरि पद शीश ॥
लै प्रभुको नँदराय ढिग, तबहीं गयो जलेश ॥५॥
सो०—हरषि उठे नन्दराय, देखि श्यामको शशि बदन ॥
लखि प्रभुकी प्रभुताय, रहे मुदित चक्रित चितै ॥५॥
करत मनहिं मन नंद बिचारा * यह कोउ आहि बडो अवतारा ॥
भयो नंदमन हर्ष अपारा * ब्रह्म करत मो सदन बिहारा ॥
तबहिं कृपा करि जनसुखदाई * बरुणहि दै जल राज बड़ाई ॥
जाय नन्दको कर गहि लीन्हो * चलहु तात ब्रजकहि हँसिदीन्हो ॥
करयो प्रणाम वरुण सुख पाये * नन्दसहित हरि ब्रज गृह आये ॥
नन्द आय ब्रजको जब देख्यो * तब वह चरितर वप्नसों लेख्यो ॥
देखि नन्द को ब्रजनरनारी * गयो दुःख सब भये सुखारी ॥
बूझत नन्दहि गोपसयाने * कितहि गये तुम हम नहिं जाने ॥
हारे खोजि सकल ब्रजबासी * भये बहुत तुम बिना उदासी ॥
नन्द महर तब सबसों भाख्यो * काल्हि एकादशि व्रत मैं राख्यो ॥
आज एकादशि थोरिय जानी * रैन अछित गयो यमुना पानी ॥
कटिलौं गयो यमुनजलमाहीं * लै गयें वरुणदूत गहि बाही ॥
दो०--वरुणलोकते जायकै, ल्याये मोहिं गोपाल ॥
येप्रगटे ब्रजआय कोउ, उत्तम पुरुष बिशाल ॥६॥
सो०--महिमा कहीन जात, कोटिभाँति बरणी बरुण ॥
साँच कहत मैं बात, इनको नर मति जानिहौ ॥६॥
भयो अधीन बहुत जलराई * परयो चरणकमलनपर आई ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

रानिन सहित धोय पद पूजे * जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रजनरनारि सुनत यह गाथा * कहत भये हम सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत यह बानी * कहत कहा यह अकथकहानी ॥
प्रभुकी मायामें अरुझानी * कहत नंदसों यशुदारानी ॥
मैं बरजत निशि न्हान सिधाये * कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको चूमि लियो उर लाई * ल्यानें नँदहि खोज कन्हाई ॥
बिप्रन बोलि दियो बहु दाना * घरघर बटी मिठाई पाना ॥
गावत मंगल नारि सुहाई * बाजी नंद अबास बधाई ॥
नंद कहत यशुमति सुनु बौरी * तू अब कतहि करत मन भौरी ॥
जाको त्रिभुवनपतिसों ताता * ताहि सदा मंगल दिन राता ॥
कही गर्गमुनि बानी जोई * प्रगटत जात बात सब सोई ॥
दो०—इनते समर्थ और नहिं, ये हैं सबके नाथ ॥
ब्रजवासी आनन्द सब, सुनि २ हरि—गुणगाथ ॥७॥
सो०—धनि धनि धनि ब्रजनारि, कहत हमारे भाग्य सब ॥
हम सँग करत बिहारि, श्रीवैकुंठनिवास हरि ॥७॥

अथ वैकुण्ठदर्शनलीला ४०

कहत परस्पर सब ब्रजबासी * हरि हैं श्रीवैकुण्ठ निवासी ॥
सो वैकुण्ठ अहै धों कैसो * जन्ममरणभय जहाँ न है सो ॥
जाको बेदपुरान बखाने * हरि जहँ बसत सदा सुख माने ॥
जो हरि हमहि दिखावैं सोई * तौ बड़ भाग्य होउ सब कोई ॥
यह मनसा सबकै मन आई * जानि लई भक्तन सुखदाई ॥
तबहिं कृपा करि सबब्रजलोका * पहुँचाये वैकुंठ विशोका ॥
धर्मधाम जो वेदन गायो * दिव्यदृष्टि दै सबन दिखायो ॥
देखत भूलि रहे सब ग्वाला * पुर वैकुंठ अनूप विशाला ॥
भूमिबज्रमणि द्युति छबिछाई * परमप्रकाश बरणि नहिं जाई ॥
वापी कूप तड़ाग अमोंके * बिबिध नगन बाँधे तट नीके ॥
रत्नन की सोपान सुहाई * जहाँ देव मुनि रहत भुलाई ॥
दो०—कल्पवृक्ष के गाँवबन, सुमनसुगंध अपार ॥

खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य सरूप उदार ॥१॥
सो०—मंदिर बरणि नजानहिं, चिंतामणिमय खचित सब ॥
तामें ताहि लखाहिं, जैसो जाको भावना ॥१॥
सकल चतुर्भुज तहँके वासी ❋ शुद्ध सत्वगुणमय सुखरासी ॥
रामसहित तहँ प्रभु सुख शीरा ❋ शोभित नवजलँदान शरीरा ॥
भूषन बसन दिव्य परकाशी ❋ सुन्दर सकल सकल अविनाशी ॥
वदन प्रकाश हास सुखकारी ❋ कोटिचंद्र कीजै बलिहारी ॥
मणिनजटित शिर मुकुटबिराजैं ❋ भूषणबसन अनूपम राजैं ॥
दिव्य पारषद चँवर ढुलावैं ❋ नारद तुंबुरु गुणगण गावैं ॥
चकित बिलोकत सब ब्रजबाला ❋ जान्यो प्रभुप्रभाव तिहिंकाला ॥
चारिभुजा तहँ प्रभुहि निहारी ❋ शंख चक्र गद अंबुज धारी ॥
द्विभुज कान्हको रूप न देख्यो ❋ मुरली लकुट पाणि नहिं पेख्यो ॥
नहिं मुकुट शिर मोरपखौवा ❋ कटि काछनी न गुंज हरौवा ॥
नहीं बेष नटवर गोपाला ❋ भये बिरह बश तब सब ग्वाला ॥
ब्रजबासी सोइ रूप उपासी ❋ तास्वरूप बिन भये उदासी ॥
दो०—अकुलाने दृग सबनके, देखन को तिहि काल ॥
मोरपंखधर गुंजधर, मुरलीधर गोपाल ॥२॥
सो०—ब्रजवासिनके ध्यान, नटवरवेष गोपालको ॥
अमितरूप भगवान, तदपि उपासनरीति यह ॥२॥
विरहविवश हरि ब्रजजन जाने ❋ तबहीं तुरत सकल ब्रज आने ॥
कान्ह देखि सब भये सुखारी ❋ रहे चकित शशिवदन निहारी ॥
कहत सबै मन अचरज पाये ❋ कहाँ गये हम कैसे आये ॥
देख्यो सपन सबन इकबारा ❋ किधौं साँच यह करत बिचारा ॥
यह चरित्र सब मोहन करहीं ❋ पुर बैकुण्ठ दिखायो हमहीं ॥
धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी ❋ ब्रह्म हमारे संग विलासी ॥
हरिके चरण परे सब धाई ❋ करत गोप सब मुखन बड़ाई ॥
हँसिहँसि सबसों कहत कन्हाई ❋ रहे कहाँ तुम सकल भुलाई ॥
आज कहा ऐसो तुम देख्यो ❋ सो किन मोसों कहत विशेष्यो ॥

हम कह देखे नंददुलारे * तुम्हीं सकल दिखावन हारे ॥
भूतल नाग पताल निहारो * सकल जगत तुम्हरो विस्तारो ॥
यह सुनि श्याम मंद मुसकाई * दिये सकल पुनि मोह भुलाई ॥
दो०—करत चरित्र बिचित्र प्रभु, ब्रजवासिन के माँहि ॥
लखि २ शिव ब्रह्मादि सुर, मुनिजन मनहिं सिहाँहि ॥३॥
सो०—अति आनंदब्रजलोग, हरिके नितवन चरित लखि ॥
सबको सब सुख योग, ब्रजवासी प्रभु नंदसुत ॥३॥
सदा श्याम भक्तन सुखदाई * भक्तन हित अवतार सदाई ॥
संकटमें जन जहाँ पुकारैं * तहाँ प्रगट तिनको बिस्तारैं ॥
मुखभीतरजिन सुमिरन कीन्हों * तिनको तहाँ दरश हरि दीन्हो ॥
दुखसुखमें जे हरिको ध्यावैं * तिनको नेक न हरि बिसरावैं ॥
देव दनुज खग मृग नर नारी * भक्तिविवश सबते गिरधारी ॥
चित दै भजै भाव जो जैसे * ताको होत प्रकट हरि तैसे ॥
ब्रह्मा कोट आदि के स्वामी * प्रभु हैं निरलोभी निहकामी ॥
वेद पुराण साखी सब बोलैं * भावविवश सबके सङ्ग डोलैं ॥
कामभाव ब्रजगोपिन ध्यायो * मन वच क्रम हरिसों मन लायो ॥
इक क्षण हरिको नाहिं बिसारैं * भवनकाज चित हरिसों धारैं ॥
गोरस लै निकसैं ब्रजमाहीं * जहाँ श्याम तिहिं मारग जाहीं ॥
तिनके मन की प्रीति बिचारी * रीझे गोपीजन–मनहारी ॥
दो०—नवसत साज शृङ्गार तन, गोरस लै ब्रजनारि ॥
बेचन इहि मग आवहीं, मोसों प्रीति बिचारि ॥४॥
सो०—अब इन संग बिहार, करौं दान दधि लायकै ॥
यह मन कियो बिचार, हरिब्रज मोहन लाडिले ॥४॥

अथ दानलीला ४१

दधिको दान रचौं इक लीला * भक्तन की सुखदायक शीला ॥
दधिदानी निजनाम धराऊँ * ब्रजयुवतिनमन सुख उपजाऊँ ॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई * सबसों कहि यह बात सुनाई ॥
ब्रजयुवती नित गोरस ल्यावैं * या मारग ह्वै बेचन आवैं ॥

तिन्हैं खिझाय दान दधि लीजै * गोरस खाय जान तब दीजै ।।
यह सुनि सखा उठे हरषाई * भली बात तुम कान्ह सिखाई ।।
सबहिन मन अति हर्ष बढ़ायो * कहत श्याम दधिदान लगायो ।।
तबहिं जाय घेर्यो बनघाटा * आवतिनितग्वलनि इहि बाटा ।।
कह्यो श्याम सबसों समुझाई * रहौ तरुनकी ओट लुकाई ।।
जबहीं ग्वालिन दधि लै आवैं * घेरि लेहु कोउ जान न पावैं ।।
यह सुनि सखा घेरिकै बाटा * बैठे ठाट ठगनको ठाटा ।।
उतते बनिबनि ग्वालिनवेली * बेचन दधिहि चलीं अलबेली ।।
दो०—हँसत परस्पर आपमें, चली जाय जिहिं ओर ।।
पाय घातमें सखन सब, घेरलईं चहुँओर ।। १ ।।
सो०—देखि अचानक भीर, चकित रहींचहुँदिशिचितै ।।
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब ।। १ ।।
शंकित है ग्वालिनि भई ठाढीं * मनहुँ चित्र कैसी लखि काढीं ।।
हाथ पाँय अङ्ग भये अडोले * कछू वदनते बचन न बोले ।।
तहँ हँसि ग्वालिन दियोजनाई * मति डरपौ जिय कान्ह दुहाई ।।
इहाँ चोर ठग कोऊ नाहीं * अभय कान्हको राज सदाहीं ।।
आवत जात न भय कछु कीजे * दधिका दान लगै सो दीजै ।।
नाम कान्हको जब सुनि पायो * तब युवतिन मन धीरज आयो ।।
बोलीं बिहँसि तबहिं ब्रजबाला * कहाँ तुम्हरे प्रभु नन्दलाला ।।
चोरी करि नहिं पेट अघायो * अब मनमें दधिदान लगायो ।।
तब अतिबालक हुते कन्हाई * सही जु कछु कीन्ह लरिकाई ।।
होहु जो कछु वा धोखेमाहीं * परिहैं समुझि अबहिं क्षणमाहीं ।।
प्रगट भये तब कुँवर कन्हाई * देखि सबन बोले मुसकाई ।।
रहो युवति तुम पोच सदाई * करि आई हौं बहुत ढिठाई ।।
दो०—तब तौ हम लरिका हुते, सबहि बात अनजान ।।
सो धोखो अब मेटिकै, छाँडि देहु अभिमान ।। २ ।।
सो०—हम माँगत दधिदान, तुम उलटीपलटी कहत ।।
करत नन्दकी आन, दिये पाय हौ जान सब ।। २ ।।

तब बोलीं ग्वालिनि मुसकाई * अब तुम डर हम तजो ढिठाई ॥
नंदहुते कछु तुम्हैं कन्हाई * भयो जानिये तप अधिकाई ॥
काल्हिहिचोरिचोरि दधिखाते * घरघर देखतही भजि जाते ॥
रातिहि भयो स्वपन कछु आई * प्रातहि भई आज ठकुराई ॥
भली कही नहिं ग्वालनि बानी * तुम यह बात कछू नहिं जानी ॥
पिता–रचित धन धाम जु होई * पुत्रकाज आवत है सोई ॥
तुमसी प्रजा बसाई गावहीं * तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहीं ॥
कह्योतबहिं ग्वालिनि झहराई * बात सँभारे कहहु कन्हाई ॥
ऐसो को बहि गयो हमारे * जो परजा ह्वै बस्यो तुम्हारे ॥
कंसनृपति के सब कहवावै * कहाँ भयो जु बसत इक गाँवै ॥
जो तुम याते हौ गरुवाने * तो अब तजि हैं गाँव बिहानें ॥
यहसुनि बिहँसिकह्यो बनमाली * कहा बात यह कहत गुवाली ॥
दो०–गाँव हमारो छाँडिके, बसिहौ का पुरमाँहि ॥
ऐसो को तिहुँ लोकमें, जो मेरे बश नाँहि ॥ ३ ॥
सो०–का गनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं ॥
देहु दानको अंश, रारि करत बेकाज कत ॥ ३ ॥
बड़ी बात छोटे मुखमाहीं * आप सँभारि कहत हौ नाहीं ॥
तीन लोक अरु कंस भुवाला * भयो तुम्हारे बश किहिंकाला ॥
यह तुम बात कहौ तिनपाहीं * जो कोउ तुमको जानत नाहीं ॥
हम इन बात भय नहिं मानै * जैसे हौ तुम तैसे जानैं ॥
हमसों लीजो दान सवाई * पहिले थैलीं लेहु मँगाई ॥
पीतांबर बोझन फटि जैहै * तब पाछे पछितावौ ऐहै ॥
ऐसे कहि ग्वालिन मुसकानी * तब बोले हरि दधिके दानी ॥
तू ग्वारिनि हमको कह जानै * हम नहिं झूंठी बात बखानैं ॥
झूँठी हौ तुम ही सब ग्वारिन * सतर होति हौं बिनहीं कारिन ॥
अजहूँ मानि कह्यो किन लेहू * लेखो करौ दान मम देहू ॥
नंदसौंह यों जान न देहौं * बहुरो छोर दही सब लेहौं ॥
काहेको अठिलात कन्हाई * छाँडि देहु मोहन लरिकाई ॥

दो०—पहली परिपाटी चलौ, नई चलौ क्यों आज ॥
जान पाइ है कंस जो, तौ पुनि होय अकाज ॥ ४ ॥
सो०—हँसी घरी द्वै चारि, बीतन लाग्यो यामयुग ॥
बनमें रोंको नारि, बाढ़ि जाय है बात पुनि ॥ ४ ॥
कहाँ कंस कहि मोहि सुनावो * अबहीं बाको जाय जनावो ॥
लरिका कहि २ मोहिं बखानति * मेरी लरिकाई नहिं जानति ॥
मारि पूतना स्वर्ग पठाई * तृणावर्त महि दियो गिराई ॥
बत्सा बका अघासुर मारचो * गिरिगोवर्द्धन करपर धारचो ॥
ऐसी है मेरी लरिकाई * जानि बूझि तुम देत भुलाई ॥
तुमहों हँसी करत हौ ग्वारी * देति दिवावति हौ हठि गारी ॥
बात जानिकै भाषत नाहीं * आपहि बैठी हौ बनमाहीं ॥
चोरी सदा बेंचि दधि जाहू * बिनादान क्यों हू न निबाहू ॥
अब तौ आज पकरि मैं पाई * सब द्योसनको लेहुँ चुकाई ॥
सबै भली तुम करौ कन्हाई * बघे असुरसों सुनी बड़ाई ॥
गिरिधारचो बलिखाय हमारी * जाना हम सब बात तुम्हारी ॥
माँगलेहु अबहीं दधि खाहू * होत दान सुनि हमको दाहू ॥
दो०—हमैं कहत हौ चोरटी, आप भये जो साह ॥
बड़े भये चोरी करत, अब लूटत हौ राह ॥ ५ ॥
सो०—लेहु दही बलि जाऊँ, हमको होत अबार अब ॥
लिये दानको नाउँ, एक बूँद नहिं पाय हौ ॥ ५ ॥
यह तुम मोको कहा सुनाई * दधि माखन सब लेहु छिड़ाई ॥
यौवनरूप अङ्ग जो तुम्हरो * ताको दान लेउँगो सगरो ॥
कंचनभार युवति तुम सगरी * आवति जाति हमारी डगरी ॥
दहीमही मोको दिखरावो * नाहिन यौवनरूप बतावो ॥
अङ्ग अङ्ग को दान गिनावो * लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
यह सुनिसबग्वालिनि झहरानी * भये कान्ह तुम ऐसे दानी ॥
अङ्गअङ्गको दान चुकावत * यौवनरूप हि दीठ चलावत ॥
जानि परी प्रगटी तरुणाई * यशुमतिसों अब कहि हौं जाई ॥

उर आनन्द उपरि रिस कसिकै * चली सबै मटुकी शिर धरकै ॥
तब हरि पीतांबर कटि करिकै * धरचो धाय अंचरपट हँसिकै ॥
रिसकै मटुकी लई छिड़ाई * दुधि माखन सब दियो लुटाई ॥
गहि २ भुजा सबन झकझोरी * अँगिया फारि तनी गहि तोरी ॥
दो०—कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय ॥
दान देत झगरो करत, योवन रूप लदाय ॥ ६ ॥
सो०—जो कहि हौ घर जाय, जननो नहों पत्याय है ॥
आवहुगी पछिताय, निबहौंगी पुनि काल्हि किमि ॥ ६ ॥
भये कान्ह तुम निपट दुलारे * देखहु फारे बसन हमारे ॥
तापर माँगत यौवनदाना * यह अबलौं कहुँसुन्यो न काना ॥
दधि माखन सब दियो लुटाई * चलौ कहैं यशुमतिसों जाई ॥
यहकहिग्वालिचलींसबरिसभरि * अबहों तुझें मँगावति हैं धरि ॥
यह सुनि हरिहँसि भौंहसिकोरी * गई उरहनौ लै सब गोरी ॥
यशुमतिसों सब जाय सुनायो * कहामहरि सुतको सिखरायो ॥
अतिहीं कान्ह भयें अब ईतर * रोंकत युवतिनको बन भीतर ॥
दही दूध सब लियो लुटाई * माँगत यौवनदान कन्हाई ॥
चोली फारि हार सब तोरे * गहि गहि अंचरपट झकझोरे ॥
ऐसो को कुल भयो महरके * यौवनदान लियो जिन अरके ॥
नित उत्पात जात सहिनाहिन * कहँलगि पीपरबन दै दाहिन ॥
कैसे गोरस बेंचन जैये * हरिपै मारग चलनन पैये ॥
दो०—सुनत ग्वालिनिनके बचन, बोली यशुमतिमात ॥
मैं जानो तुम सबनिके, उर अन्तर की बात ॥ ७ ॥
सो०—आप फिरत इतरात, कहतश्याम ईतर भयो ॥
उरन लाय नखघात, उरहनको दौरी फिरत ॥ ७ ॥
दशहि बरषको कहाँ कन्हाई * कहँ तुम सब माती तरुणाई ॥
दोष लगावति श्यामहिं आनी * कैसे धौं कहि आवति बानी ॥
हरिपर फिरत सबै मँडरानी * यौवनमदमाती हठठानी ॥
तुमको लाज लगति है नाहीं * जाहु सबै बैठो नहिं घरमाहीं ॥

अहो महरि ऐसो नहीं कीजै * बिनबूझे गारी नहिं दीजै ॥
सुत वैसो मग चलनन दैहीं * माँगत दान लूटि दधि लैहीं ॥
तुमहूँ खीझ करत सुत औरी * ऐसे ब्रजमें बसि है कोरी ॥
तजि हैं आजहि गाँव तिहारो * बहुरि न सुनि हौ नाम हमारो ॥
ऐसे कहा कहत डरपाई * वसत कहीं किन अनतहि जाई ॥
मेरो कहा कछू घटि जैहै * झूठो बात नहीं कोउ सैहै ॥
यौवन दिन द्वै सर्बहिन बोरी * तुम बाँधति आकर्शहिं डोरी ॥
मोसों कहति आप तुम जैसी * को पतियाय बात सुनि तैसी ॥
दो०--बोलति नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गँवारि ॥
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढावति रारि ॥ ८ ॥
सो०--महरि मतहि रिसियाहु, हम झूठी भाषैं नहीं ॥
तो तुम नहीं पत्याहु, बूझि नदेखौ आनसों ॥ ८ ॥
तुम सुतके कर्मन नहिं जानौ * हठ करि टेक आपनी ठानौ ॥
दशगायन करि कहा बड़ाई * अहिर जाति सब एकहि भाई ॥
महा ढीट हरि मानत नाहीं * बनमें झगरत गहि गहि बाहीं ॥
सखाभीर सँग लीन्हे डोलै * वनकुंजनमें करत्न कलोलै ॥
नेक सकुच शंका नहिं आनै * सोइ करत जो कछु मनमानै ॥
यह सुनि कहति नंदकी नारी * कहत गैलकी बात इहाँ री ॥
और चली कह इहाँ जातीकी * मोहिंरिससुनिअनमिलतबातकी ॥
कहाँ बसत तुम कहाँ कन्हाई * कब हरि बाँह गही बन जाई ॥
कहति बात नहिं नेक लजाहू * सुनिहैं कहीं तिहारे नाहू ॥
मेरो कान्ह अबहिं अतिबारो * तुम नहिं अपनी ओर निहारो ॥
ऐसी बात कहति हौ आई * झूठो दोष सह्यो नहिं जाई ॥
नेकु नहीं डर करति ईशको * मानौ भयो हरि बर्ष बीसको ॥
दो०--धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज ॥
माखन माँगत रोय हरि, दोष देति बिनकाज ॥ ९ ॥
सो०--सुनहु महरि तुम बात, हरि सीखे टोना कछू ॥
बनहिं तरुण व्है जात, बलक व्है आवत घरहि ॥ ९ ॥

Digitization by Arya Samaj Chennai Foundation, Chennai

एक दिवस किन देखौ जाई * बनमें तरुकी ओट छिपाई॥
हैंहरि दश कै बीस बरषके * देखहु अपने नयन निखरके॥
जाहु चली मैं सब द्रेख्यो है * एकएक दिनकरि लेख्यो है॥
दश अरु बीस बताबन आई * दीठ लगावति है घर हाई॥
जरहिं बरहिं ये आँखि तुम्हारी * जो हरिको नहिं सकत निहारी॥
आप करत ढिग चाचर जाई * मोको साख दिखावन आई॥
अहो महरि कहिये कह तुमसों * कहे बिलग मानति हौ हमसों॥
सुतकी कानि मानि तुम लीनी * गारो कोटिक हमको दीनी॥
हमें कहा मोहन प्रिय नाहीं * जीबहु युगयुग हरि ब्रज माहीं॥
कहा करैं जब बहुत खिझावैं * तब हम तुमहिं कहन दुख आवैं॥
भलो बोध हमको तुम कीन्हो * उलटहि दोष हमारे दीन्हो॥
सुतको हटकत नेक न माई * हमहींसों रिस करति सदाई॥
दो०—कहा करौ तुम आय सब, कहति अटपटी बात॥
मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात॥१०॥
सो०—मन आपन गुन लेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं॥
समुझि उरहनो देहु, ऐसी मोसों मति कहौ॥१०॥
महरिबचनसुनिग्वालिनिसगरी * निरउत्तर व्है घरको डगरी॥
यह यशुमति गोपिनको झगरो * कृष्णप्रेमरस सागर सिगरो॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई * ब्रजबासी जन जीवन गाई॥
ब्रज घर २ सबहिन सुनि पायो * मोहन दधिको दान लगायो॥
सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई * जैये दधि लै जहाँ कन्हाई॥
यह अभिलाषसबन मन बाढ्यो * राख्यो गुप्त न बाहिर काढ्यो॥
श्याम सखनको लियो बुलाई * कह्यो सबनसों यों समुझाई॥
कालिह उठहु सब ग्वाल सबेरे * चलिकै वृंदावनमग घेरे॥
प्रातहि यमुना के तट जाई * तरु चढ़ि चढ़िसब रहौ लुकाई॥
ब्रजयुवती मिलि आपसमाहीं * नितप्रति दधि बेंचनको जाहीं॥
राजा–चंद्रावलिको यूथा * ललितादिक नागरी बरूथा॥
गोरस लै जबहीं सब आवैं * घेरि सबन तब दान चुकावैं॥

दो०—सुनि मन हरषे ग्वाल सब, भली कही हरि बात ॥
साँझ भई चलिये सदन, कालिह उठैंगे प्रात ॥११॥
सो०—निज २ घर सब आय, मात पिताको सुख दियो ॥
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खाय कछु ॥११॥
प्रात उठे सब गोपकुमारा * जहँतहँ बोले खुले किंवारा ॥
सुनी श्याम ग्वालिनिकी बानी * जागतहू सोवत पटरानीं ॥
नंद द्वार टेरे सब आई * आवहु उठि घनश्याम कन्हाई ॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदामाता * दिये जगाय श्याम सुखदाता ॥
तातबचन सुनि अति अतुराई * उठे सेजते कुँवर कन्हाई ॥
लै पट पीत मुकुट शिरधारी * मुरली कर लै चले मुरारी ॥
सखनसहित यमुनातट आये * कहत सबनसों अति सुख पाये ॥
भलीकरी उठि प्रातहि आये * मैं जानत जब तुमन बुलाये ॥
आवत व्है हैं अब ब्रजभामिनि * घरघरते दधि ले गजगामिनि ॥
हँसे सखा सब तारि बजाई * मनमें अति आनंद बढ़ाई ॥
कहत सबनसों हँसि नंदलाला * जाय द्रुमन तब चढ़ौ गुवाला ॥
मुँह मूँदे सब रहौ छिपाने * जिहिबिधि युवति न कोऊ जाने ॥
दो०—जबहीं जानो युवति सब, आई बनहिं मझाइ ॥
कूदि परौ तब द्रुमनते, दै दै नंद दुहाइ ॥१२॥
सो०—शंखशब्द घहराय, कीजै मुरली-भृङ्गधुनि ॥
उर न जाहिं अकुलाय, जैसे युवतीगण सबै ॥१२॥
घेरि सबन इहिंबिधि डरपाई * बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई ॥
नितहि हमारे मारग आई * दधिमाखन बेंचत हौ जाई ॥
हरिको दान मारि नित जावौ * आज दिये बिन जान न पावौ ॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत * अपने तनुकी प्रीति बढ़ावत ॥
ब्रजबनितन लखिकै सुख पाऊँ * तुमसों नहिन कछू दुराऊँ ॥
इहि मारग बेंचन दधि आवैं * अंतरगति मोसों हित लावैं ॥
आवति व्है हैं बन सब बाला * करत बात ऐसे नंदलाला ॥
प्रात उठे सब गोपकिशोरी * सबकी सुरत श्यामको ओरी ॥

अङ्ग अङ्ग आभूषण साजे * केश सँवारी चारु दृग आँजे।
अँगिया अङ्ग अनूप सँवारी * चित्र बिचित्र बसन तनु धारी।
बेंदी भाल माँग मोतिनकी * अङ्गअङ्ग छबि नगज्योतिनकी।
दशनदमक अधरन अरुणाई * चिबुक नीलकनको छबि छाई।
दो०–गोरे तन मुख छबि सदन, नवयौवन ब्रजनारि ॥
लै लै दधि निकसींसवें, सुषमा बढ़ी अपारि ॥१३
सो०–ब्रजके खेडे जाय, भई ग्वालि इकठौर सब ॥
निजनिज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपर धरे ॥१३
बेंचन दही चली ब्रजनारी * षटदश सहस गोप सुकुमारी।
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई * हो बन एकहि एक जनाई।
करत जाहिं गुणगान बिहारी * पगनूपुरकी धुनि अति भारी।
हरि जानी युवती आवत जब * कह्यो सखन दम जाय चढ़ो अब।
सुनत श्यामके मुखसों बैना * धाय चढ़ो दम बालकसैना।
पंचसहस्र सखा समुदाई * जहाँ तहाँ द्रुम रहे लुकाई।
कछुक ग्वालसङ्ग राखि कन्हाई * निकसि गये आपुन अगुवाई।
ठाड़े भये घेरि बनघाँटी * लै लै करन सुमनकी साँटी।
ईहिं अन्तर आई ब्रजनारी * देखत बन लाग्यो कछु भारी।
पाँछैंहींते लई हँकारी * कहत तिन्है अबही तुमहारी।
एक सङ्ग जुरि भई तरुणि सब * इतउतचकित चलीचितवत तब।
आगे दृष्टि परे नँदनंदन * मुकुट शीस तनु चित्रित चंदन।
दो०–लिये सखा संग मग गहे, ठाढे यमुनातीर ॥
ठिठुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर ॥१४
सो०–भयो हर्ष उरमाहिं, कहत वचन मुख भयसहित ॥
आगे कैसे जाहिं, मगमें ठाढो सांवरो ॥१४
कोऊ कहति चलति क्यों नाहीं * कोऊ कहति घरहि फिर जाहीं
कोऊ कहै का करैं कन्हाई * इनहूँसों कहँ जाहिं पराई
कोऊ बोलि उठी ब्रजवाला * लूट लई हम काल्हि गुपाला
अतिहीं ढीठ भयो है कान्हा * माँगत है गोरसको दाना

सुनि ऐसे मोहनके ख्याला * घरको फिरीं सकल ब्रजबाला ॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई * कूदहु बिटपतने झहराई ॥
जात फिरी युवती ब्रजगाँवहिं * घेरि लेहु कोउ जान न पावहिं ॥
तब ग्वालन बनमें पहुँधाई * झरझराय तरु डार हलाई ॥
शंख शृङ्ग मुरली करतारी * कीन्हें शब्द सबन इकबारी ॥
चकित द्रुमन चितई सब बाला * डारनि डारनि देखे ग्वाला ॥
कूदि कूदि तरुतरुते धाई * घेरिलई तरुणी सब जाई ॥
कहत नितहि दधि बेंचन जाहू * आज पकरि पायो सब काहू ॥
दो०—दान लगत ह्याँ श्यामको, सो सब लेहिं चुकाय ॥
अब तौ देहैं जान तब, तुमको नंददुहाय ॥१५॥
सो०—दधिल जात प्रभात, आवति हौ निशिबेंचिकै ॥
दान मारि नित जात, भली करत यह बात नहिं ॥१५॥
ठाढ़े यमुनातीर कन्हाई * जाहु चली निजदान चुकाई ॥
यहसुनिबिहसि कह्यो इकग्वाली * नई बात इक सुनहु री आली ॥
माँगत दधिको दान मुरारी * सिखै पठाये हैं महतारी ॥
सोये सखा लेन सब आये * यमुनातटते श्याम पठाये ॥
काहे को सब मिलि इतराहु * सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि मोखन कछु चाहत कोऊ * सूधे माँग लेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहौ सुख होई * बाँधत कहा अकाश खरोई ॥
दान बजार हाटमें पावौ * यह निज कान्हे जाय सुनावौ ॥
बोले सखा सुनहु री ग्वारी * हम जानीं अब बात तुम्हारी ॥
गाँव बसेको यह दुख होई * नहिं सकात चीन्हेसो कोई ॥
माँगत अपनो दान उगाहू * कहति माँगि किन हमपै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहिं उगहैं * अपनो दान तुमहुँ सों चैहैं ॥
दो०—लेखो करि सब कान्हको, दीजै दान जगात ॥
चली जाहु सुखसों डगर, फिर न कहै कोउ बात ॥१६॥
सो०—तुमको कैसो दान, कौन कान्ह माँगत कहां ॥
परिहै अबहीं जान, रोंकत हौं बनमें तियन ॥१६॥

आये तबहीं निकट कन्हाई * संग सखनकी भीर सुहाई ॥
बोलिउठी लखिनागरि सिगरी * कहा श्याम तुम करत अचगरी ॥
नारिनको रोकत हौं बनमें * जैहै बात दूरलौं क्षणमें ॥
आजहि दानप हरि तुम पाये * कहा छाप किन तुमहिं पठाये ॥
वैसी चाल चलौ नँदलाला * चलत बाप तुम्हरो जिहिं चाला ॥
वृथा रारि करहू बनमाहीं * छाँड़ि देहु दधि बेचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधि दान न देहौ * बिना दान दीन्हें नहिं जैहौं ॥
लैहौं छीनि दूध दधि माखन * देखतही रहि हो अब आखन ॥
मात पिता लौं उघटत बानी * नहिं जानत मोको दधिदानी ॥
जाति नितहि नित बेंचिचुराई * सब दिवसनको लेहुँ भराई ॥
माँगतिछाप कहा दिखराऊँ * काको तुमको नाम सुनाऊँ ॥
ऐसो को मोको नहिं जानत * एक नहीं मोको तुम मानत ॥
दो०—नीके हम जानत तुम्है, गोद खिलाये कान्ह ॥
वे दिन अब बिसराय सब भये जगाती आन ॥१७॥
सो०—करहु नहिं लगि बात, जो निबहै सुख पाइये ॥
ऐसी क्यों सहि जात, नितही हम दधि बेंचनो ॥१७॥
अजहूँ माँगिलेहु दधि दैहैं * तुम खाबहु सब हम सुख पैहैं ॥
दानबचन तुम हमैं सुनायो * यहै हमैं सुनिकै नहिं भायो ॥
होत अबार जान अब दीजै * नई रीतिमोहन नहिं कीजै ॥
गोरस लेत प्रात सब कोई * बहुरि धन्यो रहि है ऐसोई ॥
दान दिये बिन जान न पैहौ * जब दैहौ तबहीं सब जैहौ ॥
तुमसों बहुत लेन है हमको * सो नहिं अबहिं सुनावत हमको ॥
नितहि हमारे मारग आवति * मोको कबहूँ नाहिं जनावति ॥
दिनदिनको लेखो भरि लैहौं * अब तौ तुम्हें जान तब दैहौं ॥
ऐसो हठ कह करत कन्हाई * बनमें रोकत नारि पराई ॥
आये दानप हरि तुम कापै * चलहु न हम चलि हैं सब तापै ॥
तुम अपने घरहीके राजा * सबको राजा कंस बिराजा ॥
जो कहुँ सुनत नेकुसी पैहै * बहुरिसँभारि अबहिं परि जैहै ॥

दो०-हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गाँव ॥
ऐसीबिधि जो कहत हौ, क्यो रहि है इहिं ठाँव ॥१८॥
सो०-करत फिरत उत्पात, लिये सखा सँग सैंतिके ॥
नाहिन नेक डरात, कठिन कंसको राज है ॥१८॥
यह सुनि कान्ह उठे रिसियाई * लीन्हो कछु दधि दूध छिनाई ॥
बसन छोरि तरुसों उरझाये * कछु दधिभाजन भूमि लुढ़ाये ॥
कहत जात कंसहि गुहरावो * आजहिं मोहिं हजूर बुलावो ॥
मारों एक पलेकमें बाही * मोको कहा बतावति ताही ॥
अबतौ मोसों बैर बढ़ायो * लेहौं दान आपनो भायो ॥
मेरे हठ क्यों निबहन पैहौ * देखैं धौं अब कैसे जैहौं ॥
तुम देखत रहिहौ हम जैहैं * गोरस बेंचि बहुरि घर ऐहैं ॥
बोले ज्वाब न तुमको दैहैं * नेकहु तुमसों नाँहि डरै हैं ॥
सुनि गृहतै जन ऐहैं जबहीं * नँहि सँभारि सकिहौ हरितबहीं ॥
एक बुंद गोरस नँहि पैहौ * देखन ऐसेहि हरिही जैहौ ॥
धरिकै यशुमति पै लै जैहैं * तहाँ श्याम पुनि बचन ऐहैं ॥
मानो कह्यो हमारो अबहूँ * हमपै दान न पैहौ कबहूँ ॥
दो०-गृहजन कहा बताबहू, कंसहि लेहु बुलाय ॥
देखतही तुम सबनिके, पूजा करौं बनाय ॥१९॥
सो०-जैहौधौं किहि भाँति, अबतौ देखहुँगो तुम्हैं ॥
बात कहत अनखात, सूधे देती दान नँहि ॥१९॥
जो मानत नँहि कंसहि राजा * तो अब भये तुमहि ब्रजराजा ॥
तो सिंहासन बैठत नाहीं * गाय चरावत कत बनमाहीं ॥
मोरपखनको मुकट उतारौ * नृप-किरीट माथे पर धारौ ॥
पहिरत कहाँ गुंजके हारा * नृप--भूषण किन करत श्रृङ्गारा ॥
चत्र चमर शिर ऊपर राजै * तजहु मुरलि अब नौबत बाजै ॥
हमहूँ यह लखिकै सुख लीजै * संगहि संग काज कछु कीजै ॥
झगरत कहां दही के काजा * लखि हमको उरजति है लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तीकी * तुम्हरे चित रजधानी नीकी ॥

मेरो दासन दास कहावै * सपनेहूँ यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि शिर छत्र धराऊ * कहा तुच्छ यह साध पुराऊँ ॥
ब्रजमें मेरो राज सदाई * और इहाँ काकी ठकुराई ॥
तुम कछु राज बड़ो करि मानो * मेरी प्रभुता को नँहि जानो ॥
दो०—हमहूँ जानति हैं तुम्हैं, लरिकाईते कान्ह ॥
काहेको अपने बदन, कीजत बहुत बखान ॥ २० ॥
सो०—फिरत चरावत गाय, काँध कमरिया कर लकुट ॥
देखी है ठकुराय, कत बढ़ि बढ़ि बातें करत ॥ २० ॥
यह कमरी कमरी तुम जानौ, * जितनी बुधि तितनौ अमुमानौ ॥
यापर वारौं चीर पटंबर * तीन लोककी यह आडंबर ॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारी * सो कमरी कत निंदत ग्वारी ॥
कमरीके बल असुर सँहारौं * कमरीते संतन उद्धारौं ॥
या कमरीते सब सुख भोगा * जाति पाँति यहमम सब योगा ॥
सुनत हँसीं सब ब्रजकी बाला * यह तुम साँच कही गोपाला ॥
धनि २ यह कामरो तुम्हारी * सब विधि तुम्हैं निबाहनहारी ॥
यहै ओढ़िकै गाय चरावौ * लहै सेज करि भूमि बिछावौं ॥
याहींते वरषाजल टारौ * शिशिरशीत याते निर्बारौ ॥
याते ग्रीषम घाम बचावौ * यहै उठगनी शीश बनावौ ॥
यहै जाति है यह गृह ठाटी * यहै सिखावति सब परिपाटी ॥
हम जो कहत चहतही तुमसों * कहि सो तुम अपने मुख हमसों ॥
दो०—करी जात अपनी प्रगट, नीकै हमै हँसाय ॥
तापर मांगत दान दान दधि युवतिन रौकि कन्हाय ॥ २१ ॥
सो०—कामरि ओढनहारु, तुम्हैं न छाजत पीतपट ॥
कारे तन पर चारु, कारी कामरि सोहई ॥ २१ ॥
मोसों बात सुनौ ब्रजतिय अब * सत्यकहत उपमा न जगत सब ॥
बालक अरु तिय मुख नँहि दीजै * इनसों बहुत हेत नँहि कीजै ॥
मूढ चढ़त नेकहि चुचकारैं * जो मन करैं सोइ कर डारैं ॥
सोई गुण प्रगटत तुम जाहू * बात कहत मैं तुम अठिलाहू ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

जानहु कहा हमै तुम ग्वारी * सदा छाँछकी बेंचन-हारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं * नंद महरके सुत पहिचानैं ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखे * गाय चरावतहू वन पेखे ॥
चोरी करिबेहू पुनि जाने * फरका खोलत फिरत बिराने ॥
वे ढँग छाँड़ि भए अब दानी * यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति जब बाँधे * ऊखलसों दोऊ भुज साँधे ॥
तब सहाय करि हमहिं बचाये * करके बंधन जाय छुड़ाये ॥
जानत यहै रहत ब्रजमाहीं * हमते दूर बसत कछु नाहीं ॥
दो०-कहति कहा तुम बावरी, हँसी लगति सुनि बात ॥
कब जन्मत देख्यो हमै, कौन मात को तात ॥ २२ ॥
सो०-कबै चराई गाय, कत चोरी पकऱ्यो हमै ॥
कब बाँधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥ २२ ॥
तुम जानति मुहिं यशुमतिजाये * यशुमतिनंद कहांते पाये ॥
मैं पूरण अविगत अविनासी * बाँधे सब मायाकी फांसी ॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजबाला * ऐसेउ गुण जानत गोपाला ॥
जैसे निदऱ्यो तुम सब काहू * तैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति महरि न जाये * तौ तुम कहौ कहांते आये ॥
घरघर माखन चोऱ्यो नाहीं * बांधे मात न ऊखल-माहीं ॥
हा हा करि हम नहीं छुड़ाये * ग्वालन संग न बच्छ चराये ॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी * ये सब बातें झूँठ तुम्हारी ॥
भक्तनहित जन्मत जगमाहीं * कर्मधर्मके मैं बश नाहीं ॥
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊँ * दीन गुहार सुनत उठि धाऊं ॥
भावाधीन रहौं सब पासा * और नहीं कछु मोंको त्रासा ॥
ब्रह्माकीट-आदिके माहीं * व्यापक हौं समान सब ठाहीं ॥
दोहा-कहां कहांकी बात कहि, डरपाति हौ नारि ॥
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत बारहि बारि ॥ २३ ॥
सो०-इहां सुनावत काहि, जो लायक तौ आपको ॥
कौन प्रकृति यह आहि, बनमें रोकत हौ तियन ॥ २३ ॥

केतक दधि को दान कन्हाई * जिहिं कारण युवती अरुझाई ॥
दधिमाखन सबही तुम लेहू * रीति जान हमैं घर देहू ॥
जो तुम याहीमैं सुख पावौ * काहेको बहु बात बनावौ ॥
दधि माखन कह करों तिहारो * सकल बणिजको दान निवारो ॥
जोजोबणिजनितहि तुमल्यावो * लेखो करि सब मोहिं चुकावो ॥
अब ऐसे कैसे घर जैहौ * जबलग लेखो मुहिं न बुझैहौ ॥
करति बणिज तुम नये बनाये * नित उठि जात जगात बचाये ॥
सुनि बानी हरि नागर नटकी * दै दै सैन युवति सब मटकी ॥
मनहीं मन अति हर्ष बढ़ाई * बोलीं हरिसों तब मुसकाई ॥
ऐसे कहो बणिजको अटके * अबलौं श्याम कहाँ तुम भटके ॥
हमहूँ कहि मनमाँझ लजाई * कह माँगत दधिदान कन्हाई ॥
बणिजहेतु रोकीं अब जानी * तबहीं क्यों न कहो यह बानी ॥
दो०—हँसि बोली राधा कुँवरि, कहा बणिज हम पास ॥
कहौ श्याम सो नाम धरि, देहिं दान हम तास ॥ २४ ॥
सो०—भूले कहा कन्हाय, बणिज कहा युवती करत ॥
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये ॥ २४ ॥
कहौ तुमहिं बूझत कह हमहीं * लैलै नाम बतावौं तुमहीं ॥
तुम जानति मैंहूँ कछु जानौं * तुमते माल सु नाहिं छिपानौं ॥
डारिदेहु जापर जो लागै * फिर न कछू तुमसों कोउ माँगै ॥
इतनेही को लरत वृथाहीं * देखौ समुझि सबै मनमाहीं ॥
कहति परस्पर ग्वालि सयानी * समुझति हौ कछु इनकी बानी ॥
इनहीसों बूझौ सब कोऊ * कहा बतावत सुनिये सोऊ ॥
हरिकी गूढ मधुर रसबातें * सुनि २ सुख पावति जब जातें ॥
कोउ काहूको भेद न जानैं * लोकलाज डर सब कोउ मानैं ॥
मन मन हर्ष भईं सब सुन्दर * जानहिं हरि सब रसिकपुरंदर ॥
तब बोली हँसिकै ब्रजबाला * कहत नाहिंक्यों तुमहिं गुपाला ॥
कहा माल देख्यो हमपाहीं * जिहिं कारण रोकीं बनमाहीं ॥
बैल लदाये देख्यो हमको * कहौ हमैं बूझति हैं तुमको ॥

दो०-लाग जायफर लायचौ, गरी छुहारी दाख ॥
कहलादे हम जाति हैं, सो कहिये किन भाख ॥ २५ ॥
सो०-दीजै बणिज बताय, ताकी देहिं जगात हम ॥
तुमको नंददुहाय, जो अब बेग कहौ नहीं ॥ २५ ॥
कौन बणिज कहि मोहिं बतावो * लौंग मिरच कहि २ बहँकावो ॥
तुम तौ माल गयंद लदायो * महिषवृषभ कहि मोहिं सुनायो ॥
बड़े मोलको वस्तु जु होई * कैसे दुरत दुराये सोई ॥
मो आगे तुम कहा छिपावौ * देहौं दान जान तब पावौ ॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी * दधिको दान मटि यह ठानी ॥
देती दही कछुक हम छोहन * खातै लै ग्वालनसँग मोहन ॥
इन बातन अब खोयो सोऊ * यह कहि युवतिहँसी सब कोऊ ॥
श्याम कहौं मैं जानत तुमको * सूधे दान न देहौ हमको ॥
दधि माखन तौ लैहौं छोरी * उठिकर भुज गहि२ झकझोरी ॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी * कहति भये तुम ढीठ मुरारी ॥
हरिरिसकरि अंकमगहि लीन्ही * इहि मिस भेंट प्रेमकी कीन्ही ॥
टूट गई प्यारीउरमाला * तब घेरे युवतिन नँदलाला ॥
दो०-गहि २ अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढाय ॥
हँसत सखा सब तारि दै, पकरे गये कन्हाय ॥ २६ ॥
सो०-हाँक दई नँदलाल, तबहि सखन ललकारकै ॥
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हे श्याम छुड़ाय तब ॥ २६ ॥
रिसकरि बोले ग्वाल सयाने * भई ढीठ हरिको नहिं जाने ॥
हम भईं ढीठ भलो तुम कीन्हो * देहौ ज्वाब दई को चीन्हो ॥
बन भीतर रोंकी सब बाला * देखो हमैं कियो जंजाला ॥
बात कहनको एहू आवत * बड़े सुधर्मा आप कहावत ॥
ऐसी साख सखाको भरि सब * आवहुगे नृप जीत सबै तब ॥
जानी बात तुम्हारी सबकी * तजहु ख्याल लरिकाई तबकी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहौ * कियो आपनो तौ तुम पैहौ ॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं * मातापिता हमको कह कैहैं ॥

तोर्‌यो मुक्ताहार कन्हाई ❋ घरहिं कहा कैहैं हम जाई ॥
आपन भईं सबै तुम भोरी ❋ हरिको दोष लगावति गोरी ॥
जब तुम झटकी पीत पिछोरी ❋ तब उन मोतिनकी लर तोरी ॥
माँगत दान श्याम कबसेती ❋ तुम अठिलाती ज्वाब नहिं देती ॥
दो०–लेहि छोरि सबते अबहिं, देखत हो ररिजाहु ॥
झकझोरा झोरी करति, नँदनंदहि न डराहु ॥ २७ ॥
सो०–को त्रिभुवनके माहिं, मोहनकी सर दूसरो ॥
हम सब जानति नाहिं, नँदनंदन ब्रजराजसुत ॥ २७ ॥
कहा बड़ाई इनकी सरि मैं ❋ इनको जानति नीके करि मैं ॥
नृपतित्रास वसुदेव निकारे ❋ नंद–यशोमतिने प्रतिपारे ॥
आये हैं शुभ घरके माहीं ❋ काहू दबत ताहिते नाहीं ॥
पहिले जब उन भुजा झकोरी ❋ तब हम झटकी पीत पिछोरी ॥
याते ढीठ कही तुमको हम ❋ श्यामहि झिरकन हार भई तुम ॥
इतने पर मानत नहिं हारी ❋ तबते हमें देत है गारी ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी ❋ बणिजकरत अरुझगरति ग्वारी ॥
ब्रजऊ पर मनमोहन दानी ❋ अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
बोलि उठे तब कुँवर कन्हाई ❋ अब नहिं छोड़ौं नंददुहाई ॥
अब तौ दाँव आपनो लैहौं ❋ तबहीं जान सबको दैहौं ॥
कौन बात यह कहत कन्हाई ❋ माँगत कहा जात नहिं जाई ॥
फिर २ करि करि नंददुहाई ❋ डरपावति हौ हमको आई ॥
दो०–डरपावहु तुम जाय तिन, जो कोउ तुम्हैं डराहिं ॥
यहाँ डरावत कौनको, तूमते घटि हम नाहिं ॥ २८ ॥
सो०–जैहैं यशुमतिपाहिं, तोर्‌यो हार भली करी ॥
यहौ बनत पै नाहिं, इतनो धन कहँ पाइहौ ॥ २८ ॥
एक हार मोहिं कहा बतावौ ❋ सब अँग भूषण काहि दुरावौ ॥
मोती माँग जराऊ टीको ❋ कर्णफूल बेसर नग नीको ॥
कंठसिरी दुलारी तिलरी गर ❋ तापर और हार जो चौसर ॥
सुभग हमेल बिजोटा बाजू ❋ कंकण पहुँचिन मुँदरिन साजू ॥

कटिकिंकिणि नूपुर पग पेखौ * जेहरि बिछिया ये सब लेखौ ॥
शोभा साज और अँगमाहीं * सबको नाम लेति क्यों नाहीं ॥
याहीमें कछु बाँट तुम्हारो * अचरज आय सुनो री भारो ॥
भूषण देख न सकत हमारे * याही लिये भये घटवारे ॥
आपनहूँ कछु दई गढाई * महरि यशोमतिके नँदराई ॥
आईं पहिरि जितो हम जाहीं * याते दूनो है घरमाहीं ॥
देखि परत कछु बहुत लुभाने * बनधौं सूनो लखि ललचाने ॥
बाँट कहा तौलौं सब मेरो * जौलौं तुम नहिं दान निबेरो ॥
दो०—आभूषणको कह कहत, बहुत बस्तु तुम पास ॥
मानौं मैं जानत नहीं, सो किन कहत प्रकास ॥ २९ ॥
सो०—लैहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बाँटि पुनि ॥
पैहौ तबहीं जान, मैं तुमसों साँची कहत ॥ २९ ॥
भये श्याम ऐसे रसनागर * युवतिनमें अब होत उजागर ॥
काल्हिहि गाय चरावत जाते * छाकि माँगि ग्वालनसँग खाते ॥
काँधे कामरि लकुटी हाथा * बनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट कटि कसि आये * लै कर लकुटी बड़े कहाये ॥
भये कछू अब नवल सुजाना * माँगत युवतिनसों यह दाना ॥
देहौ दान कि झगरति हो तुम * बहुत तुम्हारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दान जंजाल निबरिये * तापाछे तुम हमहिं निदरिये ॥
कहत कहा निदरेसे हौं तुम * सहजहिबात कहति तूमसों हम ॥
आदिहिते तुमको पहिंचाने * दान कहा सो हम नहिं जाने ॥
ग्वालिनिचलीं सबै रिस करि२ * दधिमटुकी माथेपर धरि धरि ॥
तब हरि अंतर झझकारी * जाति कहाँ हौ री बनिजारी ॥
इतनो बणिज लिये तुम जाहू * बिना दान क्यों होत निबाहू ॥
दो०—नाम तुम्हारे बणिजके, सब मैं देहुँ बताय ॥
देहु दान तब मोहि तुम, देखहु सब ठहराय ॥ ३० ॥
सो०—सब क्यों छोड़्यो जात, एक होय तौ छोड़िये ॥
तुम विचार यह बात, देखहु अपने चित्त में ॥ ३० ॥

एती बस्तु लिये तुम जावो * दान देति मेरी खिजरावो ॥
मत्तगयंद तुरंगम तुमसों * कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हँस मोर केहरि मृग वारे * कनककलश मदरससों भारे ॥
चमर सुगंध कपोत कीर बर * कोकिल विद्रुमवज्र धनुष शर ॥
एतो धन खग मृग तुमपाहीं * कैसे निबहत दान बिनाहीं ॥
सुनि यह चकितकहतिब्रजबाला * कहा बतावत तुम नंदलाला ॥
तिनको नाम लेत हम पाहीं * जो हम सपने देख्यो नाहीं ॥
कहाँ तुरंगम गज हम पाये * कब हम कंचनकलश गड़ाये ॥
मानसरोवर हँस रहाहीं * चमर धनुषशर कहा कहाहीं ॥
ये सब हमपै कहां वतावो * जहाँ होय तहँ दान चुकावो ॥
इतनो सबै तुम्हारे पाहीं * करि विचार देखौ मनमाहीं ॥
अपने सब अँग अंग निहारो * यौवन रूप और है न्यारौ ॥
दो०–करहु निबेरो बेगिसब, काहे करति अबेर ॥
कहो तुमहुँ कछु हम कहैं, घरको जाहु सबेर ॥ ३१ ॥
सो०–दीजै दान चुकाय, अब जान्यो अपनो बणिज ॥
कहौं फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित ॥ ३१ ॥
चमर चिकुर भ्रू धनुष सँवारे * शरकटाक्ष मुगदृग कजरारे ॥
कंठ कपोत कोकिल बानी * रद हीरा शुक नाक बखानी ॥
अधर सधर बिद्रुमसों जानो * है मयूर घूँघटपट मानो ॥
कंचनकलश उरोज निहारो * यौवनमदरस भरे बिचारो ॥
कटि केहहिके रूप सुहाई * हंस गयंद चाल छबि छाई ॥
सौरभ अंग सुगंध सुहायो * यौवन रूप न जात बतायो ॥
इतनो है सब बणिज तिहारो * होय अंश सो देहु हमारो ॥
घेरि लिये निबहौगी कैसे * लेहौं दान देहुगी जैसे ॥
यह सुनि हँसि बोलीं ब्रजनारी * अबसमुझी हरिबात तुम्हारी ॥
माँगत ऐसो दान कन्हाई * जानि परी प्रगटी तरुणाई ॥
याही लालच अंक भरत हौ * पुनि २ गहि आंचर झगरतहौ ॥
अपनी ओर देख तो लीजै * तापाछे बरियाई कीजै ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो०—याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन सङ्ग ॥
घेरत हौ युवतीनको, प्रगटचो अङ्ग अनंग ॥३२॥
सो०—बैठ रहौ घर जाय, यह मति जित मैं मतिधरौ ॥
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातनसों लला ॥३२॥
यह सुनिबिहँसि कह्यो वनमाली * कत हमपर रिसकरति गुवाली ॥
सूधे हम इक बात बखानी * तुम शत शोर करति अनखानी ॥
बहुत घटावति हौ मर्यादा * कबहूँ जोइ सोइ करतिबिबादा ॥
प्रातहिते झगरति बिन काजे * दान निबेरि जाति नहिं साजे ॥
बेटी बहू बड़े घरकी हौ * कत बिलंब बनमें करती हौ ॥
हरि यों कबते भये सयाने * उलटहिं तुम हमपर सतराने ॥
बूझिय तुमसों हम जो बखाने * सो तुम कह आगे सतराने ॥
कहिये मोहन बात बिचारी * कहवावत सर्वज्ञ बिहारी ॥
परगट ऐसो दान सुनावत * हमरो ब्रज उपहास करावत ॥
परै बात महरानै जाई * तुमहिं लाजकै हमहिं कन्हाई ॥
ब्रजमें जो ये बात सुनेंगे * जातिपाँतिके लोग हँसेंगे ॥
जान देहु अब हमहिं गुपाला * कहियो प्रात फेरि नंदलाला ॥
दो०—बोल उठचो इक सखा तब, सुनहु ग्वालिनी बात ॥
प्रीति करत नँदलालसों, कत बावरी लजात ॥३३॥
सो०—हरिसंग करहुबिहार, नवल श्यामनवला तुमहु ॥
हँसन देहु संसार, भलौ मनानौ कान्हको ॥३३॥
सुनि बोलीं ब्रजयुवति रिसाई * कहवावत यह बात कन्हाई ॥
आपुन यौवनदान बताबत * तापरजोइ सोइसखनसिखावत ॥
बनमें सबन घेर बैठाई * करत श्याम तुम अति लँगराई ॥
भूलि गये बे दिवस कन्हाई * घरघर माखन खात चुराई ॥
खीझतही दृग नीर चुचाते * उर डरात गृहको भजजाते ॥
बाँधे ऊखल जबहिं यशोदा * हमहिं छुड़ाय लिये तब गोदा ॥
अब भये बड़े बढ़ी चतुराई * ताते यौवनदान सुनाई ॥
लरकाईकी बात बखाने * कैसी भई कहा हम जाने ॥

कब धौं खायो माखन चोरी * मैया धौं बाँध्यो कब डोरी ॥
नेकहु ताकी सुधि नहिं जाने * मान अमान न तब हम माने ॥
भले बुरेको ज्ञान न होई * अपनो कर कछु समझ न कोई ॥
खेलत खात हर्ष हियमाहीं * बालपनेके दिवस बिताहीं ॥
दो०-अपनी सुरत करत नहीं, न्हाति यमुनके तीर ॥
कदम चढ़ाये सबनके, जब मैं भूषण चीर ॥३४॥
सो०-जलमें रही छपाय, बिनावसन नाँगी सबै ॥
पुनि २ हहा कराय, दिये सबन मैं बसन तब ॥३४॥
बिना बसन बाहिर सब आईं * हाथ जोरि मोहिं बिनयसुनाई ॥
कैसी भाँति भई तब सबकी * सो सुधि भूल गई अब तबकी ॥
मोको कहति चोरि दधि खायो * ऊखलसों हम जाय छुड़ायो ॥
भेदबचन जब कहे बिहारी * सुनिकै हँसि सकुची ब्रजनारी ॥
कहत भये अति निलज कन्हाई * ऐसी कहत न सकुचत राई ॥
जाहु चले लोगनके आगे * झूँठी बात बनावन लागे ॥
करत हँसीं तुम सखन सुनाई * निजनिज गृह सब कहिहैं जाई ॥
झूँठो बात कहा हम जाने * हम तौ साँची सदा बखाने ॥
जैसो भाँति भजै मोहिं कोई * मानत मैं ताको तैसोई ॥
जो झूँठो मोको तुम जानौ * तौ कत मेरेहित तप ठानौ ॥
जो तुम अपने मनमें ठानी * मैं अंतर्यामी सब जानी ॥
अब क्यों इतो निठुरमन कीन्हो * काहे दान जात नहिं दीन्हो ॥
दो०-दान सुने रिस होति है, यह नहिं हमैं सुहाइ ॥
भलो बुरी अरु जो कहौ, सो सहिलेहिं कन्हाइ ॥३५॥
सो०-छाँड़िदेहु सब जाहिं, सुनिये मोहनलाल अब ॥
भई बेर बनमाहिं, मातपिता खिझिहैं हमैं ॥३५॥
काहेको तुम करति अबारी * दधि बेंचहु घर चाहु सबारी ॥
मैं कह करौं तुम्है यह भावत * लेखो करि नहिं दान चुकावत ॥
शुद्धस्वभा समुझि सब कोई * लेखो करि देहौ मोहिं जाई ॥
तब सोई तुमसों मैं लैहौं * तबहीं तुम्हैं जान पुनि दैहौं ॥

काहेको हमसों हरि लागत * जान न परत कहा तुम माँगत ॥
बातन कछू जनावत नाहीं * लेखो कहा करत हमपाहीं ॥
निपटहिं परे हमारे ख्याला * इन बातन कह पावत लाला ॥
अब तुम निपट करी बहुताई * सुनि हँसि हैं ब्रजलोग लुगाई ॥
मारग जनि रोकहु हम जाहीं * घरते लीजो दान उगाहीं ॥
अबलौं यह कीयो तुम लेखो * हम तुम्हरो बिचार सब देखो ॥
मोको ऐसी बुद्धि सिखाबत * करकंकण दर्पणहि दिखावत ॥
तुम्हरी बुद्धि दान हम लेहैं * काहिन जान तुम्हैं हम देहैं ॥
दो०—आप भई तुम चतुर सब, मोको करति गँवार ॥
उगहत फिरि हैं दान हम, ठाढ़े व्है हैं द्वार ॥३६॥
सो०—तुम्हैं देउँ घर जान, फेरि कहौ पाऊँ कहाँ ॥
जो नहिं पैहौ दान, नृपति ज्वाब कह देउँगो ॥३६॥
भली भई नृप मान्यो तुमहू * चलिहैं कंसहिं अब पै हमहूँ ॥
तबते लेन कहत हौ दानहिं * नन्दमहरकी करि करि आनहिं ॥
हमहूँ अबलौं ऐसी जानी * भये श्याम घरहींते दानी ॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये * नृपते दानप हरि तुम आये ॥
सुनि हरि ये गोपिनके बैना * हँसे कछू तिरछे करि नैना ॥
सो छबिनिरखिकहतिब्रजनारी * कहाँ हँसे मुख मोरि मुरारी ॥
सोइ कहौ मनहीं जो आई * तुमको यशुमति नंद दुहाई ॥
और सौंह तुमको गोधनको * साँची बात कहौ तुम मनकी ॥
हँसे कहा हमसों कछु रीझे * कैधौं कछु मनहीं मन खीझे ॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला * कहत श्रीदामासों नंदलाला ॥
यह अचरज इनको तुम हेरौ * कहति कहा तुम हँसि मुख फेरौ ॥
ऐसी बातन सौंह दिवावत * ताते अधिक हँसी मोहि आवत ॥
दो०—तब श्रीदामा तियनसों, बोलि उठो मुसकाय ॥
हँसत श्याम तुम समुझिकै, बूझति सौंह दिवाय ॥३७॥
सो०—हम न दिवावैं आन, हँसहुतुमहुनिजसंग मिलि ॥
यहैं अनैसीबान, थोरेमें खिसियात तुम ॥३७॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहज हँसत नाहिन सकुचैये * नाहिन लोगत सौंह दिवैये॥
वे हैं दानी प्रभु सबहीके * देहु दान माँगत कबहीके॥
हम जानति वे कुँवर कन्हाई * प्रभु तुम्हरे मुख अबसुनि पाई॥
होति नहीं प्रभुता ईहिभाँती * इही महीके भये जगाती॥
वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई * जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई॥
दधि खायो अरु भूषण तोरे * छाँड़ि देहु अब दई निहोरे॥
जो कुछ बचो सोउ अब लीजे * क्योंहू जन हमैं घर दीजै॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना * तुम घर जाहु देइकै दाना॥
आयो हौ पठ्यो मैं जाको * देउँ कहा लैके पुनि ताको॥
अबहीं पठवैं मोहिं बुलाई * तब ताके सन्मुख को जाई॥
तुम सुख करौ जाय घरमाहीं * नृपकी गारि मार को खाहीं॥
जब नृपबर मोको अटकावै * तब पुनि तुमबिन कौन छड़ावै॥
दो०—लेत नाम मुख नृपतिको, जा मुख निदऱ्यो जाहि॥
आपुन तौ नृप नृपनके, अब कहि समुझै ताहि॥३६॥
सो०--लियो कंसको नाँव, ऐसी तुम्हैं न बूझिये॥
भले श्याम बलि जाँव, जिहि निंदिय तिंहि बंदिये॥३७॥
जब हम कंसदुहाई दीनी * तब तो तुम नृपबरसिर कीनी॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई * जो तुम ऐसे डरे कन्हाई॥
कहा कह्यो कछु जान न पायो * कब हम कंसहि शीस नवायो॥
कब हम नाम कंसको लीन्हो * कंसत्रास कबधौं हम कीन्हो॥
निपट भई तुम ग्वारि गँवारी * बसत हमारे गाँवमँझारी॥
कितक कंस जाको हम मानैं * कहा त्रास ताको उर आनैं॥
तुम्हरे मने बात यह आवत * कंस नृपतिके हम कहवावत॥
तौ तुम कहौ कौन नृप जाके * आपुन कहवावत हौ ताके॥
ताको नाम हमहुँ सुनि पावै * हमहूँ पुनि ताके कहवावैं॥
या संसार-लोकत्रयमाहीं * दूजो कंस नृपतिते नाहीं॥
सो नृप बसत कहाँ सोउ जाने * तौ हम सब ताहीको माने॥
यह सुनि हम अबअति डरपायो * कैधौं झूँठहि हमहिं डरायो॥

दो०—जा नृपके हम हैं अरी, को नहिं जानत ताहि ॥
जड चेतन नर नारि सब, तिहूभुवन बश जाहि ॥३९॥
सो०—बसत सुमनपुरमाहिं, कहँलगि तिन्हैं प्रशंसिये ॥
सब मानत हैं जाहिं, तिन पठयरो मोहिं पानदै ॥३९॥
सुनत गूढ मोहनकी बानी * बोलौ ब्रजसुन्दरी सयानी ॥
जाति तुह्मारें नृपको पाई * अबलौं राखी कहाँ छिपाई ॥
जैसे तुम तैसे ओऊ हैं * एकरूप गुणके दोऊ हैं ॥
यह अनुमान कियो मनमें हम * एकहि दिन जन्मे दोऊ तुम ॥
जैसी प्रजा तैसेई राजा * बन्यो भलो अब सङ्ग समाजा ॥
चोरी ठगी निपुणगुण दोऊ * यापटतरके और न कोऊ ॥
बोलत नाहिन बात सँभारी * ठगति फिरतिठगनी तुम नारी ॥
भई ढीठ नहिं नेकु विचारौ * आवत मुख सोही कहि डारौ ॥
अपने गुण औरनपर डारी * जाति जनावति दै दै गारी ॥
हम भइँ ठगनी अरु बटपारी * तुम भये कान्ह सुधर्मा भारी ॥
अपने नृपको यहै सुनावौ * ऐसिय चुगली जाय लगावौ ॥
राजा बड़े जान यह पाई * ल्यावहु हमपर धौंस चढ़ाई ॥
दो०—तुम तौ ठग आछे बने, बनमें रोकी नारि ॥
हमैं कहौ काकौ ठग्यो, को हम डाऱ्यो मारि ॥४०॥
सो०—तुमही जानत श्याम, यंत्र मंत्र टोना ठगी ॥
ठगत फिरत सब वाम, अपने ढंग औरन कहत ॥४०॥
मौन गहौ बातैं सब पाई * यहै जानि हम पर चढ़ि आई ॥
जो चाहौ सोई कहि डारो * हम नहिं मानें बिलग तिहारो ॥
तुम मोहींको दोष लगायो * मैं तौ नृपको पठयो आयो ॥
यौवनरूप लिये तुम इतही * आवति हौ ईहिं मारग नितही ॥
लोचन दूतन जाय सुनायो * तब नृपरिस करिसोंहिं बुलायो ॥
शैशव महलनते नृपराई * बैठो सिंहासन तरुणाई ॥
तुरतहि मोहिं दान पहिरायो * दै बीरा तुम पास पठायो ॥
तिनको नाम अनुंगभुवाला * उनको दान देहु ब्रजवाला ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

तिनकी आन कहत हौ कोने * पैहौ ज्ञान दानके दीने ॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी * प्रेमसिंधु युवती मगनानी ॥
कामनृपतिकी फिरी दुहाई * अटक्यो यौवनरूपहि आई ॥
को हम कहाँ रहति कहँ आई * यह सुधि बुधि तनुदशा भुलाई ॥
दो०—त्रसत भईं डर मदनके, नयन मूँदि धरि ध्यान ॥
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजिय सरबसदान ॥४१॥
सो०—ऐसे कहि मनमाहिं, देहदशा भूलीं सबै ॥
लेहु श्याम बलि जाहि, यह धन तुमही संचियो ॥४१॥
यौवनरूप तुमहि नहिं लायक * सकुचत तुम्हें देति ब्रजनायक ॥
नवलकिशोररूप गुण आगर * अहो श्याम सुंदरबर नागर ॥
यह यौवनधन तुमढिग ऐसे * जलधिनिकट जलकणिका जैसे ॥
ध्यानमगन इहिबिधि ब्रजनारी * मनहीं मन बिनवति बनवारी ॥
अंतरयामी हरि सब जानैं * मनहींकी करनीं सब मानैं ॥
मनहीं सबन मिले सुखदाई * तनकी सुरत सबन तब आई ॥
खुलगये नयन ध्यानते तबहीं * देखे मोहन सन्मुख सबहीं ॥
तब जान्यो हम बनमें ठाढ़ी * सकुचगईं अति अचरज बाढ़ी ॥
कहति परस्पर आपसमाहीं * कहाँ हती हम जानि न जाहीं ॥
श्यामबिना यह चरित करै को * ऐसी बिधि करि मनहिं हरैको ॥
रहीं चकितसी सब ब्रजनारी * बोलि उठे तब कुंजबिहारी ॥
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला * परचो कहा उर सोच बिशाला ॥
दो०—कह्यो दान लेखौ कछू, रहीं जहाँ तहँ पोच ॥
प्रगट सुनावौ सो हमैं, दूरि करौं सब सोच ॥४२॥
सो०—बहुरि न रोंकै कोय, या मारगमें कोउ तुम्हें ॥
निशिवासर भय खोय, सुखसों आवहु जाहु नित ॥४२॥
हमैं और रोंकै सो को है * रोकनहार सुवन नंदको है ॥
टोना डारत शीस हमारे * आप रहत ठाढे व्है न्यारे ॥
जाके काम नृपतिको जोरा * ठगत फिरत युवतिन बरजोरा ॥
सुनहु श्याम बूझिय नहिं ऐसी * तुमको बानि परी यह कैसी ॥

कैसेहू अब कृपा करौ हरि * जाहिं सबै अपने अपने घरि ।।
दान मान घरको सब जाहू * बहुरि नहीं मैं रोकौं काहू ।।
मैं हूँ जानत हौं कछु लेखो * तुमहूँ आप समुझि मन देखो ।।
पिछलौ देहु निबेर आज सब * आगे पुनि दीजो आवौ जब ।।
अब मैं भली कहत हौं तुमकों * जो मानौ ग्वालिनि तुमहमकों ।।
को जाने हरि चरित तुम्हारे * अहो रसिकबर नंददुलारे ।।
हमरो सर्वस मन अपनायो * अजहूँ दान नहीं तुम पायो ।।
लेखो करि लीजो मन भायो * खाहु कछुक दधि हम सुख पायो ।।
दो०—सदमाखनलायक तुम्हैं, सखन सहित मिलिखाहु ।।
सुख पावैं हम देखिकै, लीजैं दान उगाहु ।।४३।।
सो०—अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रगट बखानि हैं ।।
खाहु दधी बलि जाउँ, ल्याई हम तुम्हरे लिये ।।४३।।
तब हरि हँसिसब सखन बुलाई * बैठे रचि मंडली सुहाई ।।
दोना बहु पलाशके लाये * शोभित सबके करन सुहाये ।।
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला * सुन्दर दधि परसति ब्रजवाला ।।
भक्तिभावके हाथ बिकाने * ग्वालनसंग खात रुचि माने ।।
निजनिज मटुकिनते सब ग्वारी * देति करति उर आनँद भारी ।।
श्यामपतुरियनसों मुख नावैं * निरखि २ ग्वालिनि सुख पावैं ।।
धन्य २ आपुनको जान्यो * सुफलजन्म सबहिनकरिमान्यो ।।
कहति धन्ययह दधि अरुमाखन * खात कान्ह जाको अभिलाषन ।।
जो हम साध करत रहि मनमें * सो सुख पायो हरिसङ्ग बनमें ।।
अति आनंदमग्न सब ग्वारे * नंदनंदनपर तन मन बारे ।।
प्यारीसों माखन हरि माँगत * देखै तुम्हरो कैसो लागत ।।
औरनकी मटुकी को खायो * तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो ।।
दो०—श्रीवृषभानुकुमारि तब, दधि ल्याई मुसकाय ।।
अपने कर अधरन परस, दीनोबिहँसि खवाय ।।४४।।
सो०—प्यारीको दधि खाय, अल्प चितै मोहन बिहँसि ।।
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठो है यह सबनते ।।४४।।

गोपिनके हित माखन खाहीं ❋ प्रेमबिबश नहिं नेक अघाहीं ॥
वैसिय गोरसभरी कमोरी ❋ परसत सबै होत नहिं थोरी ॥
ग्वालनलहित श्याम दधिखाहीं ❋ परमहर्ष सबके मनमाहीं ॥
हँसत परस्पर सखा सयाने ❋ मीठो कहि कहि स्वाद बखाने ॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावैं ❋ परमानंद सबन उपजावैं ॥
बिलसत ब्रजबिलास बनवारी ❋ दधिदानी प्रभु कुंज बिहारी ॥
सुरगण तियन सहित नभमाहीं ❋ निरखि २ मनमाँहि सिहाहीं ॥
धनि २ ब्रजकी युवती सभागी ❋ खात ब्रह्म जिनते दधि माँगो ॥
जाकर शिव ध्यान लगावैं ❋ शेष सहसमुख जाको गावैं ॥
मनबुधिवचन अगोचर जोई ❋ जाको पार न पावैं कोई ॥
नारदादि जाके गुण गावैं ❋ निगम नेति कहि अन्त न पावैं ॥
गुणातीत अविगत अबिनासी ❋ सो प्रभु ब्रजमें प्रकट बिलासी ॥

छन्द–प्रगट सो प्रभुब्रजविलासीजाहि मुनि जन ध्यावहीं ॥
योग जप तप नेम संयम करि समाधि लगावहीं ॥
रूप रेख न बरण जाके आदि अन्त न पाइये ॥
भक्तवश सो ब्रह्म पूरण गोपवल्लभ गाइये ॥ १ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जाके रोमप्रति श्रुतिगावहीं ॥
कीट ब्रह्म प्रयंत जलथल आप सब उपजावहीं ॥
आप करता आप हरता आपही पालन करैं ॥
खात सो प्रभु दान दधि लै गोपिकनिके मन हरैं ॥ २ ॥
धन्य ब्रज धनि गोप गोपी धन्य बन पालन मही ॥
धन्य मोहन दान माँगत दूध दधि माखण मही ॥
धन्य ब्रजइक पलककोसुख औंर यह त्रिभुवन नहीं ॥
कहत सुर मुनि हर्षि पुनि २ सुमन सुन्दर वर्षहीं ॥ ३ ॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वै नहिं एकहो बहुतन धरै ॥
भक्तजनहित बिरद जाको अमित लीला बिस्तरै ॥
ब्रजविलास हुलास हरिके नित्य निगमागम कहै ॥
दास ब्रजबासी सदा यह गाय आनंदपद लहै ॥ ४ ॥

दो०-दानचरित गोपालको, अतिबिचित्र रसखान ॥
वेद भेद पावै नहीं, कवि किमि सके बखान ॥४५॥
सो०-गावत सुनत सुजान, दधिदानी लीला रुचिर ॥
प्रेमभक्तिको दान, ब्रजवासो जन पावहीं ॥४५॥
ब्रजललना यों हरिहिं सुनावैं * दूध दही माखन अरु ल्यावैं ॥
मटुकिनते लै लै हम देहीं * खाहु श्याम तुम हम सुख लेहीं ॥
गोरस बहुत हमारे घरघर * लीजै दान पाछिलो भर भर ॥
यह तौ गोरस जो तुम खायो * सो तौ दान आजुको पायो ॥
लेहु सबै अपनो करि लेखो * फिरि न पायहौ माँगे सेखो ॥
श्याम कही अब भई हमारी * मनहिं भई परतीत तुम्हारी ॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब * लहैं माँगि चाहि है जब तब ॥
निधरक अब बेंचहु दधि जाई * घाटबाट कछु डर नहिं राई ॥
ग्वालिनि भईं श्यामबशमाहीं * घरको जात बनत है नाहीं ॥
चकित रहीं सब ब्रजकीनारी * कहत एकसों एक बिचारी ॥
सुनहु सखी मोहन कह कीनो * दान लियो कै मन हरि लीनो ॥
यह तो हम नहिं बदी सयानी * बूझौ धौं इनसों यह बानी ॥
दो०-बूझनको उमँगी सबै, मोहनसों यह बात ॥
निकट जाति रहि जातिपुनि, सकुचतिमन ह्वैजात ॥४६॥
सो०-मनहीं मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ॥
कहत बनत नहिं बात, प्रेमबिबश तरुणी सबै ॥४६॥
सुनौ मात मोहन इक हमसों * ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करौ सो चूक हमारी * अहो श्याम हम दासि तिहारी ॥
हँसि २ कही कटुक हम बानी * तुम्हें खिजावन हित मन मानी ॥
कछू हमारे उरसों नाहीं * अति आनँद तुमसों मनमाहीं ॥
दधिको दान और जो जान्यो * सबैं तुम्हारे करि हम मान्यो ॥
कहौ श्याम तुम यह कहकीन्हो * दान लियो कै मन हरि लीन्हो ॥
हम तुमते कछु भेद न राख्यो * कीनो सबै तुम्हारो भाख्यो ॥
यह करनी तुमहीं अब जान्यो * भली बुरी जो कछु करि मान्यो ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो जासों अंतर नहिं राखै * सो तासों क्यों अंतर भाखै ॥
नँदनंदन तुम अन्तरयामी * वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी * तुमहित करि राख्यो मोहिं घेरी ॥
तुमते दूरि होत मैं नाहीं * रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥
दो०–तुमकारण बैकुंठ तजि, प्रगटत हौं ब्रज आय ॥
वृंदावन तुम्हरो मिलन, यह न बिसार्‍यो जाय ॥४७॥
सो०–एक प्राण द्वै देह, अन्तर कहूँ न जानिहौं ॥
यह न नयो अब नेह, कत भूतल ब्रजबास बसि ॥४७॥
अब घर जाहु दान मैं पायो * जानत यह लेखो निबटायो ॥
हँसि हँसि जो भाषत बनवारी * कहत भईं तब ब्रजकी नारी ॥
घरतनमनहिं बिना किमि जाई * करत कहा मोहन चतुराई ॥
सब तनपर मनही है राजा * जो कछु करै होय सो काजा ॥
सो तौ मन राख्यो तुम गोई * घरको जान कौनबिधि होई ॥
इन्द्रियगण मनके आधीना * चलति नहीं पग नयनबिहीना ॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन * तौ दुबिधा क्यों लाई गोधन ॥
यह तौ तुम जानी ब्रजनाथा * घर हम जाहिं देहु मन साथा ॥
मनभीतर मैं बास बनायो * तुमही लै मोहिं तहाँ छिपायो ॥
कहत कहा यह दोष तुम्हारो * अजहूँ तजौ रहूँ मैं न्यारो ॥
लेहु आपनो मन घर जाहू * लोकलाज डर जो पछताहू ॥
तौ अब हमैं छाँडि किन देहू * हम करि हैं अन्तर निजगेहू ॥
दो०–जाके घटती होय निज, तजि दीजै सो बात ॥
दीनो मनमैं बास तब, अब मनको पछितात ॥४८॥
सो०–जब मन दीनो मोहिं, तबहीं लीनो मोहिं तुम ॥
जो लेहौ मन खोहि, तौ मैं हूँ जैहौ अनत ॥४८॥
सुनहु श्याम ऐसी नहिं कहिये * सदा हमारे मनमें रहिये ॥
तुमहिंबिनाधिकमनअरुधिकघर * तुमबिनधिककुलकान लाजडर ॥
धिक तुम प्रेमबिना पितुमाता * तुमबिहीनधिक सुत पतिभ्राता ॥
धिक जीवन तुमबिन संसारा * धिक सुख तुमबिन नंदकुमारा ॥

धिक रसना तुमगुण नहिं गावै * धिक श्रुतितुम्हरी कथानभावै ।।
धिक लोचन जिन तुम न निहारे * धिकबिचारजो तुम न बिचारे ।।
धिक दिनरात तुम्है बिन जाई * धिक श्वासा तुमबिना बिहाई ।।
सो सब धिक जामें तुम नाहीं * तन धन मन तुमबिना वृथाहीं ।।
ऐसे कहि तनुदशा बिसारी * भईं सनेहमगन सब ग्वारी ।।
कबहूँ घरतन जान बिचारैं * कबहूँ हरिकी ओर निहारैं ।।
दधिभाजन लै शिरपर धारैं * कबहूँ धरणी फेर उतारैं ।।
रीती मटुकिनमें कछु नाहीं * कबहुँ बिचारिरहति मनमाहीं ।।
दो०--बिहँसि कह्यो तब साँवरे, जाहु घरन ब्रजनारि ।।
सकुचत पिछले दान को, मैं लेहौं निरवारि ।।४९।।
सो०--ऐसे वचन सुनाय, सखनसहित हरि बन गये ।।
लै गये चित्त चुराय, युवतिन दान मनायकै ।।४९।।

इति श्रीब्रजबिलास-पूर्वार्द्ध समाप्त ।

अथोत्तरार्द्ध प्रारम्भः ।

अथ गोपियोंके प्रेमकी उन्मत्तावस्थालीला ४२

रीती मटुकी शिरपर धारी * चलीं सबै उठि गोपकुमारी ।।
एक एकको सुधि कछु नाहीं * जानति नहीं कहाँ हम जाहीं ।।
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानै * बन गृह कछू बिचार न जानै ।।
लोक-बेद--मर्यादा दोऊ * आपसहित भूलीं सबकोऊ ।।
बेंचति दधि बनहीमें डोलैं * लेहु दही कबहूँ कहि बोलै ।।
कहति दमन बोलत क्यों नाहीं * लेहौ दधि कै हम फिरिजाहीं ।।
तरुतरुसों पूछति इहि भाँती * बनमें फिरति प्रेमरसमाती ।।
मिलति परस्पर बिबशनिहारी * कहति फिरत क्यों बनमें नारी ।।
तिन्है कहति आपुनि सुध नाहीं * सो कछु नहि समुझति मनमाहीं ।।
दधिभाजन रीते शिर धारे * भरीं प्रेम तनुदशा बिसारे ।।
कबहूँ यमुनाके तट जाहीं * कबहूँ फिरति कुंजन के माहीं ।।
कबहूँ बंसीबटतट आवैं * ठाढ़ी ह्वै तहँ हरिहिं बुलावैं ।।
दो०--लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय ।।

डरन तुम्हारे जाति नहिं, हम दधि लेत छिड़ाय ॥ १ ॥
सो०—लेहु आपनो दान, पुनि रिसकरि उठि धाय हौं ॥
हमैं न देहौ जान, बनमें हम ठाढो सबै ॥ १ ॥
बैठि गईं मटुकी धरि सबही * जानति घरते आईं अबहीं ॥
सखा सङ्ग लीन्हें हरि ऐहैं * दधि माखनको दान चुकैहैं ॥
दधिहिं दुरावती अंचर धरिकै * पीठि गईं मटुकिनमैं परिकै ॥
रीती मटुकी सबन निहारी * गईं घबरि उरमैं सब नारी ॥
जहाँ तहाँ कहि उठीं गुवाली * गोरस ढरकि गयो कहुँ आली ॥
कोउ कोउ कहतिकान्ह ढरकायो * कोउकह सखनसंग हरि खायो ॥
भई सुरत कछु तब तनुमाहीं * गईं घरहि हम तबते नाहीं ॥
सकुचत भईं कछु गुरुजनडरते * प्रातहिते आईं हम घरते ॥
रही कहाँ तबते मनमाहीं * यह तौ सुरति हमैं कछु नाहीं ॥
जब हरि सखनसङ्ग दधि खोई * गये बहुरि बन कुँवर कन्हाई ॥
तबलौंकी तौ सुधि हमपाहीं * भई कहा पुनि जानत नाहीं ॥
जानपऱ्यो हमको तौ यह री * डारि गये शिर श्याम ठगौरी ॥
दो०—श्यामबिना यह को करै, लायो दधिको दान ॥
तनुसुधि भूलीं तबहिंते, बाकी मृदु मुसकान ॥ २ ॥
सो०—मन हरि लीनो श्याम, ताबिन निबहै कौन बिधि ॥
ऐसे कहि सब बाम, घरको चलन बिचारहीं ॥ २ ॥
मन हरिसों तनु घरहि चलावै * ज्यों गजमत्त चलनछबि पावै ॥
श्याम रूप-रस-मदसों भाऱ्यो * कुलमर्यादमहावत टाऱ्यो ॥
कर्म—नेह-बंधनसों तोऱ्यो * मुरै न लाज कुंजको मोऱ्यो ॥
गुरुजनडर अंकुशसुधि आवै * तब तनु घरको पाँव चलावै ॥
ऐसे गईं सदन ब्रजबाला * नहिं भावत क्षण बिननँदलाला ॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसों * औरहि बात बतावति तिनसों ॥
गारी देत सुनति नहिं कोऊ * श्रवणशब्द हरि पधरे दोऊ ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावै * नेक नहीं सो उरमें ल्यावै ॥
बार बार जननी समुझावति * कोहे को तुम हमहिं हँसावति ॥

जहाँ तहाँ काहे तुम जावो * नहिं अपनों कुलकानि लजावो ।।
दधि बेंचौं घर सूधे आवो * काहे इतनो बिलम लगावो ।।
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं * बसी कहा तुम्हरे मनमाहीं ।।
दो०--ऐसे शिखवत मातपितु, सो न करति कछु कान ।।
लागत हैं तिनके बचन, उरमें बाणसमान ।। ३ ।।
सो०—तिन्हें कहति मनमाहिं, धिक्धिक्इनकी बुद्धिको ।।
जिन्हें श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हें बने त्यागे भले ।। ३ ।।
जिनको हरिकी प्रीति न भावै * तिनकोमुखजनिविधि दिखरावै ।।
ऐसे विनय करति बिधिपाहीं * गुरुजनको निंदति मनमाहीं ।।
नेक नहीं घरसों मन लागत * बिसरत श्याम न सोवतजागत ।।
नयन श्यामदर्शनरस अटके * श्रवण बचनरसते नहिं भटकें ।।
रसना श्यामबिना नहिं बोलै * मनचंचल संगहि संग डोलै ।।
नासा अङ्ग-सुगंध-लुभानी * सुरत श्यामके रूप समानी ।।
चरण चलन चाहत दिशि तेही * जिहिंदिशि सुंदरश्यामसनेही ।।
लोकलाज कुलकान मिटाई * रँगी श्यामके रँग सुहाई ।।
प्रात चलैं दधि लैं ब्रजमाहीं * इंद्रियगण मन बुधि वश नाहीं ।।
तनु लै निकसीं बेंचन गोरस * रसनामें अटक्यो हरिको जस ।।
दधिको नाम भूलि गइँ बाला * कहति लेउ कोऊ गोपाला ।।
भीज रहीं मनमोहनके रस * व्यापि गई उरमाहिं दशा अस ।।
दो०—फँसी सबै खगवृंद ज्यों, हरिछबि लटकन जाल ।।
तरफराति तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ।। ४ ।।
सो०—बोलति मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी ।।
बिथरी अलक लिलार, पग डग मग जित तित धरैं ।। ४ ।।
दधि बैंचन ब्रजबीथिन डोलैं * अलबल बचन बदनते बोलैं ।।
गोरस लेन बुलावत जोई * तिनकी बात सुनत नहिं कोई ।।
क्षण कछु चेत करति मनमाहीं * गोरस लेत आजु कोउ नाहीं ।।
बोलि उठति पुनि लेहुगुपालहि * अटकिरह्योमनवाहरिख्यालहि ।।
लेहु लेहु कोऊ बनमाली * गलिन गली यौं बोलति ग्वाली ।।

कोउ कहै श्याम कृष्ण वनबारी * कोउ कहै लाल गोबर्द्धनधारी ॥
कोउ कहिउठति दान हरिलायो * कबहूँ भई कि तुमहिं चलायो ॥
देहगेटकी सुरति बिसारे * फिरतीं सीस मटुकि दधि धारे ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई * दधिको नाम लेति तब सोई ॥
ईहिबिधि दधि बेंचत सब डोलैं * आप बिकानी बिनही मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै * कोउ कितनो कहि २ समुझावै ॥
हरिदर्शनहित मति भइ भोरी * अंतर लगी सुरतिकी डोरी ॥
दो०प्रगटचो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ॥
समुझाई समुझैं नहीं, शिष दै थाक्यो ग्राम ॥ ५ ॥
सो०—ज्यों दीपक घरमाँहि, बाहिर नहिं देख्यो परै ॥
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृणसे दावा भयो ॥ ५ ॥
इहिबिधि मग्न सकल ब्रजनारी * कृष्ण--प्रेमरस--मद—मतवारी ॥
सकल प्रेमकी मूरति पूरी * कोऊ तिनमें नाहिं अधूरी ॥
एक दशा सबहोकी जानौ * कहँलगि सबको प्रेम बखानौ ॥
तिनमें श्रीवृषभानु-दुलारी * सकलशिरोमणिहरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी * तिनकी कथा कहत बिस्तारी ॥
दधिभाजन माथे पर धारै * लेहु श्याम कहि बचन उचारै ॥
बूझति तिन्है और ब्रजनारी * बेंचत कहा फिरत तुम ग्वारी ॥
प्रातहिते लीन्है दधि डोलै * मुखते नाम कान्हको बोलै ॥
कहा करत यह हमैं बतावो * कछु हमको निज बात सुनावो ॥
उफतन तक्र चुवत अङ्गमाहीं * ताकी सुरत तोहिं कछु नाहीं ॥
इतते उत उतते इत जाई * बुधिमर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानी यह बात बनाई * तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥
दो०—तिन्है कहति मोहिं नंदघर, कहाँ सु देहु बाय ॥
जहाँ बसत वह साँवरो, मोहन कुँवर कन्हाय ॥ ६ ॥
सो०—है धौं याहो गाँव, कीधौं कहु अन्ते बसत ॥
कान्हर जाको नाँव, मैं खोजत वाको फिरौं ॥ ६ ॥
बहुत दूरिते हौं मैं आई * मोहिं देहु नंदसदन बताई ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation Chennai

नंदहिके द्वारेपर ठाढ़ी * बूझत अति संभ्रमता बाढ़ी ॥
लोकलाज कुलकी सुधि नासी * मन बंधि गयो प्रेमकी फाँसी ॥
तब इक सखी परमहितकारी * हरिकी प्यारीको अति प्यारी ॥
प्यारीको निजढिग बैठाई * शिक्षाबचन कहत समुझाई ॥
अहो राधिका कुँवरि सयानी * क्यों ऐसी अब भई दिवानी ॥
ऐसे प्रेम प्रगट नहिं कीजै * देखि विचारि धीर उर दीजै ॥
हँसिहैं लखि सब ब्रजनरनारी * एकहि बार लाज तू डारी ॥
ऐसे कहा फिरत बिततानी * मात पिता गुरुजनहिं भुलानी ॥
जोपै कृष्ण प्रेम धन पैय्यै * रखिये गुप्त न प्रगट जनैय्यै ॥
ऐसी तुमहिं बूझिये नाहीं * समुझि देखु अपने मनमाहीं ॥
अजहूँ चेत बात सुनु मेरी * कहति कुँवरि तेरे हितकेरी ॥

दो०—कृष्णप्रेमधन पायकै, प्रकट न कीजै बाल ॥
राखिय उर यों गोपकै, ज्योंमणि राखत व्याल ॥ ७ ॥

सो०—तू अतिनागरि नारि, पायो नागर नेह ज्यौं ॥
तौ कत देति उघारि, कहिहैं तोहि गँवारि सब ॥ ७ ॥

मैं जो कहति सुनति कै नाहीं * देहै ज्वाब कछू मो पाहीं ॥
कहिहै बचन कि मौनहिं रैहै * घर अपने जैहै कि न जैहै ॥
लोगनमुख सुनि हैं पितु माता * ब्रजमें प्रकटी है यह बाता ॥
मानेगी मम बचन कि नाहीं * की फिरिहै ऐसहि ब्रजमाहीं ॥
जोपै प्रीति श्यामसों जोरी * लाज किये व्हैहै कह थोरी ॥
ध्यान श्यामको धर उरमाहीं * लाजछाँढ़ि कत भ्रमत वृथाहीं ॥
मुखते बोलि सुनहु तुम बानी * कैसी कहति परै कछु जानी ॥
कहा कहति मोसों तू आली * मन मेरो लीनो बनमाली ॥
तबते मोको कछु न सुहाई * जित देखौ तित कुँवर कन्हाई ॥
अबलौं नहिं जानति मैं कोही * कहा कहतिहै अब तू मोही ॥
कहाँ गेह को पितु अरु माता * कहँ दुर्जन को गुरुजन भ्राता ॥
कहाँ लाज कह कानि बडाई * तू का कहति कहाँते आई ॥

दो०—बार बार तैं कहत कह, मैं नहिं समूझति बात ॥

मेरे मन मैं घर कियो, वा यशुमति के तात ॥ ८ ॥
सो०—रहत न मेरी आन, अपनीसी मैं कर थकी ॥
तूतौ बड़ी सुजान, कहा देत सखि दोष मुँहि ॥ ८ ॥
मेरे हाथ नहीं मन मेरो * सुनै कौन सखि सिखवन तेरो ॥
इंद्रियगणको मन अनुगामी * सबइंद्रिनको मन है स्वामी ॥
सो मन हरि लीनो ब्रजनाथा * इंद्रिय गईं सबहिं मनसाथा ॥
अब मेरे यशमें कोउ नाहीं * रहे जाय सब हरि के पाहीं ॥
नयन दर्शके लोभ लुभाने * श्रवण शब्दके माँहि समाने ॥
अब यौं फिरत न मेरे फेरे * कहा होत सिखये सखि तेरे ॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं * कौन करै घूँघटपटछाँहीं ॥
अब तौ प्रगट भई जगजानी * वा मोहनके हाथ बिकानी ॥
मन मान्यो मोहनसों मेरो * जग उपहास करौ बहुतेरो ॥
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई * कै लघुता कै होहु बड़ाई ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोन्यो * नेह कछू नब घूँघट छोर्यो ॥
अब तौ मेरे मन यह मानी * मिल्यो श्यामसों ज्यों पयपानी ॥
दो०—मेरो मन हरि सँग बस्यो, लोकलाज कुल त्याग ॥
और ताहि सूझै नहीं, भो जहाजको काग ॥ ९ ॥
सो०—ऐसे सखिहिं सुनाय, मौन गही पुनि नागरी ॥
देहदशा बिसराय, मग्न भई रस श्यामके ॥ ९ ॥
जाय पर्यो मनवाही ख्यालहिं * बोलि उठै कोउ लेहु गुपालहिं ॥
कहति सखीसों तू को आली * कहँ वह दधिदानी बनमाली ॥
नंदसदन सखि मोहिं बतावो * नंदनंदन प्रिय बेगि मिलावो ॥
बिरहबिबशअतिव्याकुलबाला * मन हरि लीन्हो नंदके लाला ॥
दधिमटुकी लीन्हे शिर डोलै * द्वारे आय नंदके बोलै ॥
इत उत जाय तहीं फिर आवै * लेहुकान्ह दधि टेरि सुनावै ॥
भ्रम भ्रम बिबश भईमनग्वाली * चली बनहिं खोजत बनमाली ॥
बंसीबट यमुनातट जाई * कहति दान दधि लेहु कन्हाई ॥
फिरत बिकल बन२दधि लीन्हे * तन मन हरिको अर्पण कीन्हे ॥

कीन्हो दिनकर प्रेम प्रकाशा * लोक लाजडर तमकर नाशा ॥
तिनकी दशा बर्णि नहिं जाई * रोम—रोममें रमे कन्हाई ॥
प्रेम अधिक ब्रज गोपाकुमारी * गाबत बेद पुराण पुकारी ॥
दो०-कृष्ण राधिका के चरित, अति पवित्र सुखखान ॥
कहत सुनत भव भय हरण, रसिक जननके प्रान ॥१०॥
सो०-रसिक शिरोमणि राय, गोपी जन मनके हरण ॥
कहौ सुअब सुखदाय, रसलीला जो ब्रत करी ॥१०॥
देखि दशा राधा की ग्याली * शिक्षा करति हुती जो आली॥
चकित रही मनमाँझ बिचारी * या शिर श्याम ठगौरी डारी ॥
गई सखी सो हरिपै धाई * कहति सुनहु प्रभु कुँवर कन्हाई॥
ढूँढ़ति फिरति तुम्है इकनारी * अति सुन्दरी नवल सुकुमारी ॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै * मुखद्युतिचन्द निरखि मन मोहै॥
प्रातहिते लीन्हे दधि डोलै * लेहु गोपाल बदनते बोलै ॥
श्रमत श्रमत अतिबिकलभईहै * बंसीबटकी ओर गई है ॥
मन बच कर्म जान मैं पाई * तुममैं वाको प्राण कन्हाई ॥
ताहि मिलो कबहूं सुखदाई * कहति सखी करिकै चतुराई ॥
तुमबिनबिरह बिकलअतिबाला * मिलहु बेग ताको नन्दलाला ॥
सुनत श्याम मन हर्ष बढ़ायो * साँची प्रीति जानि सुख पायो॥
हरि हँसि बिदा सखीको कीनो * आप दर्श प्यारी को दीनो ॥
दो०-परम हर्ष दोऊ मिले राधा नन्दकुमार ॥
कुँजसदन सोहति मनो, तनु धरि छबि शृङ्गार ॥११॥
सो०-श्यामा अरु घनश्याम, कोटिकामरतिद्युतिहरण ॥
व्रजवासी उरधाम, युगल किशोर बसो सदा ॥११॥
सोहत कुँजकुटी सुखरासी * पिय घनश्याम नाम चपलासी॥
बिरहताप तनु दूरि निवारी * बोली मोहनसों तब प्यारी ॥
कहा कहो तुमसों सुन्दर घन * कहत लजात बात मनहीमन ॥
होत चवाव सकल ब्रजमाहीं * सुनत श्रवण सहिजात सुनाहीं ॥
जादिन तुम गैया दुहि दीनी * हाहा करि दुहनी मैं लीनी ॥

सहज गही बहियाँ तुम मेरी * मैं हँसि तनक बदनतनु हेरी ॥
ता दिनते गृह मारग जिततित * करत चवाव सकलब्रजजननित ॥
यहै कह ब्रजमें सब कोऊ * राधा कृष्ण एक हैं दोऊ ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुख पावैं * कटुक बचन कहि त्रास दिखावैं ॥
निकसत द्वार जबहिं तुम आई * रहत सबै तब देखि लुगाई ॥
निंदत तुमको मोहिं सुनाई * सो मोपै हरि सह्यो न जाई ॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजै * इन बिमुखन को संगन कीजै ॥
दो०-धिक धिक ते नरनारि हरि, जिन्हैं न तवपद प्रेम ॥
हित करि तुम जाने नहीं, कहा निबाहै नेम ॥१२॥
सो०-मैं लीनो दृढ़ नेम, सुनहु श्याम सुन्दर सुखद ॥
तुम पद पंकज प्रेम, यहैं पतिब्रत पालिहौ ॥१२॥
हरि तुम बिन कासों यह कहिये * ब्रज बसि काके बोल न सहिये ॥
ताते बिनय करति तुम पाहीं * वा पैंड़े तुम आवहु नाहीं ॥
जो आवौ तौ मोहिं न जनावौ * मुरली ध्वनि मोकौं न सुनावौ ॥
मुरली ध्वनि सुनि सुनहु कन्हाई * बिन देखे मोहिं रह्यो न जाई ॥
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी * बोले बिहँसि श्याम सुखदानी ॥
सांच कहत ब्रजके नर नारी * तुम नेकहु मोते नहिं न्यारी ॥
कहन देहु गुरुजन कह जानें * वे अपनी सब सुरत भुलानें ॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ * तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ ॥
उभय देह लीला हित ठानी * घट है भेद नहीं कछु पानी ॥
जल थल जहाँ तहाँ तनु धारी * तुम तजि कहौं रहत नहिं न्यारी ॥
देह-धरेको कहै बिचारा * मानिय कुल-कुटुम्ब-ब्यवहारा ॥
लोकलाज गृह छाँड़ि न दीजै * मात पितर गुरुजन डर कीजै ॥
दो०-प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम ॥
प्रकट न कीजै वात यह, कहत बिहँसिकै श्याम ॥१३॥
सो०-सुनत श्याम के बैन, हर्ष भई मन नागरी ॥
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय ॥१३॥
अति आनन्द भई मन प्यारी * तब जानी हरि पति मैं नारी ॥

भूल गई काहे पछितानो * यह महिमा हरिको जिय जानो॥
युग युग प्रभु लीला बिस्तारी * जान लई बृषभानु-दुलारी ॥
हरिमुख अलप चितै मुसकानी * रही परम आनन्द उर मानी ॥
कहत सुनहु पिय अन्तर्यामी * तुम कर्ता हर्ता जगस्वामी ॥
मात पिता गुरुजन हित भाई * कहा नाथ यह नई सगाई ॥
जो कर्ता औरै सुनि पाऊँ * तौ हे प्रभु तिनको पतियाऊँ ॥
अरु परतीत जगत को जानो * तौ परिमिति छूटत डर मानो ॥
जो जाको सो ताही जानै * कैसे औरनसों मन मानै ॥
अब नहिं तजौं कमल पद पासा * मन मधुकर कीनो जब बासा॥
यह सुनि हरि प्यारी उर लाई * बहुबिधि करि प्रबोध समुझाई॥
तनु धरि लोक बेद बिधि कीजै * प्रीति रीति उरमें धरि लीजै॥
दो०-कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार ॥
प्रीति पुरातन गोपिउर; करिये जग व्यौहार ॥१४॥
सो०-परम प्रेम उर लाय, घर पटई हरि भावती ॥
चली संग सुख पाय, फिरि फिरि चितवत श्यामतन ॥१४॥
चली संग सुख लूटि किशोरी * लसत अङ्ग मरगजी पटोरी ॥
गजगति जाति भवन सुख पाई * रहे रीझि छबि निरखि कन्हाई॥
प्यारी मन आनन्द बढ़ाये * सुख भरी चली लूटिसी पाये॥
मनहिं कहति अति उमँग उछाहू * यह धन प्रगट करौं नहिं काहू॥
सखियनहूँ नहिं भेद जनाऊँ * कृष्ण-प्रेम-धन गुप्त दुराऊँ॥
श्याम कह्यो सोई बर धरिहौं * प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं॥
ऐसे मनहि बिचारत जाहीं * तहँ इक सखी मिली मग माहीं॥
अङ्ग अङ्ग छबि लखि मुसकानी * कहति बिहँसि प्यारीसों बानी॥
कह फूलीसी आवति राधा * आज रूप कछू अङ्ग अगाधा ॥
वदन सिकोरति मोरति भौंहैं * कहति कछू मनही मन मोहैं॥
देखियम कछुक अङ्ग रसभीने * सुफल मनोरथ हरिसंग कीने ॥
हमसों सो सब बात उघारो * दुरत न गंध चुरावन हारो ॥
दो०-फिरत हुती व्याकुल अबहिं, जिनके दर्शन लाग ॥

कहाँ मिले नन्दनन्दन सों, धनि बनि तेरो भाग ॥१५॥
सो०-नहिं पावत हैं जाहि, योगीजन जप तप किये ॥
बश करि पायो ताहि, तै कैसे कहु नागरी ॥१५॥
कहा कहति सखि भई बावरी * करन कछु चाहति चवावरी ॥
तू हँसि कहति सुनै जो कोऊ * सो तौ साँच मानिहै सोऊ ॥
चकित होति सुनि अचरज तेरो * है चवाव पुनि घर कहँ मेरो ॥
ऐसे होति कहति तू जैसे * गुरुजन में निबहौं पुनि कैसे ॥
कहा भेद कछु तोसों मोसों * मैं दुराव करिहौ सखि तोसों ॥
को नन्दनन्दन कहति तू जिनको * मैं कबहूं देख्यौं नहिं तिनको ॥
कै गोरे कैं बर्ण सांवरे * रहत ब्रजहि कै अनत गाँवरे ॥
मैं तौ नहिं जानति वै जैसे * तू बहु बात मिलावति कैसे ॥
जाहिचली जानी मैं तोकों * कहा मुरावति है तू मोकों ॥
अबही फिरति हुती बौराई * आजहि पढ़ि लोनी चतुराई ॥
याही ब्रज हम तुम और वोऊ * दूर नहों जैहै कहुं कोऊ ॥
परिहौ कबहू फन्द हमारे * करिहै तबहिं जुहार तुम्हारे ॥
दो०-निपुण भई उनको मिले, वह सुधि गई भुलाय ॥
आवति है बन कुंजते, बातै कहति बनाय ॥१६॥
सो०-रिझये श्याम सुजान, कहे देत अङ्गको पुलक ॥
मोसों करति सयान, सगि बगि रही सनेह जल ॥१६॥
हँसति कहति कैधौं सत बानी * तेरी सों मैं कछु अनजानी ॥
कहा कह्यो मोहिं बहुरि सुनावै * तोहिं सोंह मेरी जु दुरावै ॥
कबहूं कछू भाव यह पायो * तैं देख्यो कै किनहुं सुनायो ॥
ऐसी कहत और जो कोऊ * सुनतो मोपै बत्तर सोऊ ॥
बूझहि मोहिं लगावति ताही * स्वप्नेहु मैं देख्यो नहिं जाही ॥
ऐसो मोहिं कहौ जनि कोई * झूंठी बातबिपर दुख होई ॥
उचटाये पैहै कछु मोसों * बहुरि नहीं बोलौंगी तोसो ॥
ताते और काहि हितु पैहौं * जाते हितकी बात जनैहौं ॥
यह परतीत न तोकों होई * मैं राखति तोते कछु गोई ॥

चतुर सखी मनमें जब जानी * मोते तौ कछु नाहिं छिपानी ॥
त्रास भई याके मनमाहीं * ताते तात कहति यह नाहीं ॥
तब यह कही हँसति मैं तोसों * जन मनमें दुख मानै मोसों ॥
दो०-मानी तेरी बात अब, कहँ तू कहाँ वे श्याम ॥
हमहुं उन्हें जानें नहीं, बसत कौन धौं गाम ॥ १७ ॥
सो०-हम आगेकौं आहिं, भई सयानी लाड़िली ॥
हँसति कह्यो घर जाहि, तैं नहिं हरि कबहूँ लखे ॥ १७ ॥
सकुच-सहित वृषभानु-दुलारी * गई सदन गुरुजनडर भारी ॥
जननी कहति कहां हुति प्यारी * डोलति फिरति अजहुं है बारी ॥
घर तुहिं तनक देखियत नाहीं * दधि लै जाति फिरति बनमाहीं ॥
श्यामसंग बैठति है जाई * आज तोहिं धिरवत हौ भाई ॥
काहेको उपहास करावति * दधिहि बेंचि सूधे किन आवति ॥
वृथा करति मैया रिस मोसों * को अब बात कहै री तोसों ॥
ऐसी को बहि गई बिधाता * श्यामसंग फिरि है सुनु माता ॥
कौने बात कही यह तोसों * ताको नाम लेही किन मोसों ॥
धन्य भ्रात धनि धनि तू माई * ऐसी बात कहति मोहिं लाई ॥
तू परघर क्षण क्षण कत जाई * मैं बरजति नहिं नेकु डराई ॥
श्यामा-श्याम सकल ब्रजमाहीं * व्है रहे लाज लगति तुहिं नाहीं ॥
बड़े महरकी सुता कहावति * काहेको पितु मात लजावति ॥
दो०-खेलनको मैं जाउँ नहिं, कहा कहति री मात ॥
मोपै जाति सही नहीं, यहै अनोखी बात ॥ १८ ॥
सो०-घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी ॥
तू मोहीं रिसियात, तिनके मात पिता नहीं ॥ १८ ॥
मनही मन समुझति महतारी * अबहीं तो मेरी है बारी ॥
कहा भयो तनुबाढ़ भई है * लरिकाई अबही न गई है ॥
झूँठहि बात उड़ी यह सारी * श्यामा श्याम कहत नर नारी ॥
खेलत देखि कहत सबकोऊ * अबहीं तौ बालक हैं दोऊ ॥
सुनत सुतामुख रिसकी बानी * मनहीं मन कीरति मुसक्यानी ॥

तब गहि उर लाई चुचकारी * परबोधति उरसों रिस टारी
खेलहु संग लरिकिनिनमाहीं * खेलनको मैं बरजति नाहीं
श्यामसंग सुनि होति दुखारी * झूँठहि लोग लगावत गारी
जाते कुलको दूषण होई * सुन प्यारी कीजै नहिं सोई
अब राधा तू भई सयानी * मेरी सीख लेहि जिय मानी
जननीके मुखको सुनि बानी * श्रीवृषभानु–सुता मुसकानी
मन मन बिनय करति हरिपाहीं * सुनहु श्याम तुम सबघटमाहीं
दो०-मात पिता मानत मनहिं, लोकलाज कुलकान ॥
नहिं जानत तुमको सुखद, जगतईश भगवान ॥१९
सो०-लेत तुम्हारो नाँव, सकुचत हौं इनके निकट ॥
यहै समुझि पछताँव, तुम विमुखनमें क्यों रहौं ॥१९
तुम मोहिंकह्यो कानिकुल राखे * क्यों बिष खाय सुधा जिन चाखे
जिन्है नाथ तुमपद दृढ़ प्रेमा * कैसे तिनसों निबहत नेमा
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी * नाथ तिहारे हाथ बिकानी
ऐसे कृष्णा हृदयमें आनीं * बोली जननीसों हँसि बानी
तू अब कहति कहा मोको री * अकथ बात है मा कछु तोरी
अब हरिसंग न खेलौं जाई * जाकारण तू मोहिं सुगाई
आवन दे बाबा घरमाहीं * यह सब बात कहौं उनपाहीं
देति गारि मुहिं श्यामलगाई * ऐसे लायक भये कन्हाई
रोंको मोको कालि गलींमें * सखिनसंगसे जाति चली मैं
लागे कहन बँसुरिया मेरी * तू लैगई चुराय सु देरी
छठिआठैं मोसों है जिनसों * मोहिं लगावति है तू तिनसों
सुनि सुनि करि राधाकी बानी * मुख निरकत जननी मुसकानी
दो०-कहति मनहिमन अबहिं लौं, नहिं गई लरिकाई ॥
बारेहीके ढंग सबै, अपनो टेंक चलाइ ॥२०
सो०-अब जैहै मचिलाय, कापै जाय मनाइ पुनि ॥
हारि मानि रहि माय, बालकबुधि जिय जानिकै ॥२०
बोलि लई हँसिकै दुलराई * पुनि पुनि कहि मेटी रिसहाई

कंठ लगाय लई अतिहितसों * रही चकित शोभा लखि चितसों ॥
चतुरशिरोमणि हरिकी प्यारी * परम-चतुर वृषाभानु-दुलारी ॥
बातनहीं माता बहराई * नीके राखि लई चतुराई ॥
कृष्णप्रेमधन पाय छिपायो * संगसखी तिनहूँ न जनायो ॥
जैसे कृपण महाधन पावै * घरत दुराय न प्रकट जनावै ॥
सखी मिली जो मारगमाहीं * कह्यो जाय नित सखियनपाहीं ॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं * कैसी आज करी उन घातैं ॥
वृन्दावनते अबहीं आई * हर्षसहित मैं लखि मग पाई ॥
औरै भाव अङ्ग छबि छाई * श्यामहिं मिली भई मनभाई ॥
मोको देखतही हसि दीनो * मैं हूं हर्ष मनहि मन कीनो ॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों * तब रिस करि फेर्यो मुख मोसों ॥
दो०-मोसों तब लागी कहन, को हरि काको नाँव ॥
कै गोरे कै साँबरे, बसत कौनसे गाँव ॥ २१ ॥
सो०-मैं तौ जानति नाहिं, लेति नाम तू कौनको ॥
लखे न स्वप्नेहुमाहिं, साँचिकहतिकैहँसति मुहिं ॥ २१ ॥
ऐसे कहि टेढी करि भौहैं * चितई नेकु मोतन करि सौहैं ॥
वह निधरक मैं सकुच गई री * और कहौं तौ करत खई री ॥
तब मैं यह कहि घर पठई री * मैं झूँठी तू साँचि भई री ॥
दोऊ एक भये अब जाई * हमहूँसों यह बात दुराइ ॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै * कैसो धौं तह बुद्धि उपैहै ॥
सुनिके बात सखी मुसकानीं * प्यारिहिं देखनको अतुरानी ॥
कहति सबै जबहीं हम जैहैं * तबहीं जाय प्रकट करि दैहैं ॥
कहा रहै यह बात छिपानी * दूध दूध पानी सो पानी ॥
आँखिन देखतही लख जैहै * कैसे हमसों बात छिपै है ॥
अपनो भेद नही वह कैहै * सुनिहो कैसे गाल बजैहै ॥
लखहु चरित्र जाय तुम वाको * राधा कुँवरि नाम है जाको ॥
मैं बूझौं करि बहु चतुराई * नेकहु थाह न वाको पाई ॥
दो०-बड़े गुरूकी बुद्धि पढ़ी, वह काहू न पत्याय ॥

एकै बात न मानिहै, सौ सौ सौहैं खाय ॥ २२

सो०-रहिहौ सब पछताय, सुनत बचन वाके बङ्न ॥
अब जैहै रिस पाय, बातन बैर बढायहै ॥ २२

कहा बैर हमसो वह करिहै * बातन कैसे हमहिं निदरि है ॥
औरनसों जो करति नटानी * तौ हमहूँ जानतो सयानो ॥
वाको जाति भले हम पाई * हमहींसों वह बात चुराई ॥
परिहै अब मेरे फँद आई * दूरि करौ वाको लँगराई ॥
जो नहिं हमसों भेद कहैगो * तो पुनि कैसे कै निबहैगो ॥
हमसों बैर किये कर पैहै * बहुरि लिये मटुकी शिर ऐहै ॥
चलौ सबै देखै घर ताको * है निधरक कै धौंडर वाको ॥
बूझे बात कहा धौ कैहै * हमसों मिलि है कै दुरि जैहै ॥
रिस करिहै कैधौं हँसि बोलै * बात छिपावै कैधौं खोलै ॥
सहज स्वभाव किधौं गरबानी * यह कहि चलीं अली सब स्यानी ॥
गई निकट राधाके जबहीं * जानि लई नागरि मन तबहीं ॥
ए सब मोपर रिस करि आई * तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥

दो०-काहूको कीनो नहीं, आदर करि चतुराइ ॥
मौन गही बोलहिं नहीं, बैठि रही निठुराइ ॥ २३

सो०-लखि सब सखी सुजान, बैठि गई ढिग आपही ॥
औरै बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥ २३

राधा चतुर चतुर सब आली * चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
उनतो गही मौन निठुराई * इन लखि लई तासु चतुराई ॥
मुहाँ चहो आपुसमें कीन्हो * याको बात सबै हम चीन्हो ॥
कहा भेद हमसों यह भाषै * उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बूझहु नहीं खुनस करि कोई * कहा आज इन मौन लयोई ॥
हमसों कहा ओट इन लीनो * साट सही हमही करि दीनो ॥
एक सखी तब बिहँसि सुनायो * कही मौनव्रत किन सिखरायो ॥
धनि वह गुरू मंत्र जिन दीनो * कान लगतही ऐसो कीनो ॥
कालिह और परभातहिं और * अबहिं भई कछु और कि और ॥

सुनि यह बात सबै हम धाईं * चकित भईं देखन तुहिं आईं ॥
कहा मौनका फल अब कहिये * सुनैं कछू तौ हमहूँ गहिये ॥
इकसंग भईं सबै तरुणाई * मंत्र लियो तब हम न बुलाई ॥
दो०-अब तुमहींको हम करै, गुरू देहु उपदेश ॥
हमहूं राखै मौनव्रत, करै तुम्है आदेश ॥ २४ ॥
सो०-हमको कियो अजान, चतुर चई तू लाड़िलो ॥
कहँ सीख्यो यह ज्ञान, ऐसो बिधि लागी करन ॥ २४ ॥
रहत एकसंग हम तुम प्यारी * आजहि चटकि भई तू न्यारी ॥
कहा भयो तोहिं किनहिं सिखाई * नई रीति यह कहा चलाई ॥
हमतौ तेरे हितकी कहिये * और कहै तासौं सब लरिये ॥
सुनत कुँवरि सखियनको बानी * टोली करत सबै यह जानी ॥
गुणआगर नागरी सयानी * बोली सहित निठुरईं बानी ॥
तुम प्रियतम कै बैरनि मेरी * बूझत तुम्है कहौ सखि हेरी ॥
वाको कहति जु गैल मिली री * नहीं कही उत मोहिं भली री ॥
कह्यो मोहिं तुहिं श्याम मिले री* मैं चकि रही सोंह मोहिं तेरी ॥
मेरे अंग छबि और बताई * तब मैं भई बहुत दुखदाई ॥
जिनको हम स्वप्ने नहिं जाने *फिरि फिरि तिनकी बात बखाने ॥
मेरो कछु दुराव है तुमसों * तुमहीं कहौं सखी सब हमसों ॥
कहाँ रहति मैं कहां कन्हाई * घर घर करत चवाव लुगाई ॥
दो०-और कहै तौ मोहिं कछु, नहिंव्यापहि मनमाहिं ॥
तुमहिं कहौ जो बात यह, तौ दुख होय कि नाहिं ॥ २५ ॥
सो०-तुम पर रिस मों गात, तातें आदर नहिं कियो ॥
सुनि प्यारीकी बात, रहीं सबै मुखतन चितै ॥ २५ ॥
बोली एक सखी तिनमाहीं * हम तौ तोहिं कह्यो कछु नाहीं ॥
ताहीपर होती रिसहाई * जिन यह तोसों बात चलाई ॥
प्रथमहिं हमैं प्रगट यह करती * हमहूं ताहीसों सब लरती ॥
क्यों सखि प्यारिहि दोष लगावैं* झूँठी बातन बैर बढावै ॥
तेरे श्याम कहाँ इन देखे * काहेको स्वप्नेहूं पेखे ॥

भेदहि भेद कहत सब बातैं * दै दै सैन करत सब घातैं ॥
प्यारी सबके मनकी जानै * सबसों रूखे बचन बखानै ॥
कौन कौनको मुख सखि गहिये * जाको जो भावै सो कहिये ॥
मनते गढि गढि बात बनावो * झूठोंको साँचो ठहरावो ॥
बिना भीतिही चित्र उकेरौ * बातन गहि आकाशहिं फेरौ ॥
नेक होय तो सबही सहिये * झूँठी सबै सुनत उर दहिये ॥
आवत बोलि न सुनि सुनि बातें * रहियत मौन सबनते यातें ॥
दो०-वृथा झेर मोसों करत, कहि कहि झूँठी बात ॥
भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिनरात ॥ २६ ॥
सो०-मिलै सखी जो श्याम, और कहा यातें भली ॥
सुनियत है अभिराम, नंदमहरको सुवन अति ॥ २६ ॥
कैसे हैं वे कुँवर कन्हाई * जिनको नाम लेति यह माई ॥
नयननि भरि मैं देखे नाहीं * सुनियत सदा रहत ब्रजमाहीं ॥
कहति लजाति बात इक तुमको * इकदिन मोहिं दिखावहु उनको ॥
देखहिं धौं कैसे हैं तिनको * तुम सब मोहिं कहतिहौ जिनको ॥
सुनि वृषभानुसुताकी बानी * हँसी सबै गोपिका सयानी ॥
सुनु प्यारी तैं सीख हमारी * कहन देहिं कहि करैं कहा री ॥
तोकों झूँठ कहे कह पैहैं * आपनको वे पाप कमैहैं ॥
यह काहूपै जात छिपायो * नेहसुगंध न दुरत दुरायो ॥
तैं काहेको कान्हहिं देख्यो * खरक दुरावनहू नहिं पेख्यो ॥
सुनहु सखी राधाकी बानी * कहति कछू यह अकथ कहानी ॥
रहति सदा ब्रजगाँव मँझारी * इन नहिं देखे री गिरिधारी ॥
जो हम सुनी रही सो नाहीं * ऐसेहि बायु बही ब्रजमाहीं ॥
दो०-सुनु प्यारी अब तोहिं हम, दिखरैहैं नँदनंद ॥
तब बदिहै यह राखिहौ, देखि उन्हें छलछंद ॥ २७ ॥
सो०-जब एहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बताय हैं ॥
तोहिं देखि हैं बाम, है उनहूं अभिलाष अति ॥ २७ ॥
तब तू चीन्हि लीजियो उनको * कहति नहीं देखे मैं जिनको ॥

हैं कैसे कारे कै गोरे * सुन्दर चतुर किधौं अतिभोरे ॥
तोहिं देखि बोऊ सुख पैहैं * तेरे हित बाँसुरी बजैहैं ॥
नाना भाव करैंगे जबहीं * हम सब तोहिं कहैंगी तबहीं ॥
तुम हौ चतुर राधिका जैसे * वेऊ श्याम चतुर हैं तैसे ॥
हँसति कहति सब गोप किशोरी * चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी ॥
कबहूं तौ फन्द परिहौ आई * तबहीं देंहि जिन्हाय कन्हाई ॥
सुनत व्यंग सखियन की बानी * मनमनबि हँसत कुँवरिसयानी ॥
चतुराई नीके गहि राखी * सखियनसों ऐसे हँसि भाषी ॥
जो तुम जियमें औरै जानी * मेरी बात प्रतीति न मानी ॥
जो अब मोहिं श्याम सँग पायो * तब कीजै अपनो मन भायो ॥
कान्ह पीत पट बेसर मेरो * लीजो छोरि तबहिं गहियेरो ॥
दो०-यह सुनिकै सब हँसि उठी, प्यारी बदन निहारि ॥
आई है अति गर्व करि, चली सखी घर हारि ॥२८॥
सो०-कहत परस्पर जात, निडर भई अति राधिका ॥
कबहूँ तौ हम घात, परि हैं दोऊ आयकै ॥२९॥
तोसहु दिन जो चोर चुरैहै * साह एक हू दिनतौ पैहै ॥
बोली एक सखी तब तिनसों * भेद लियो चाहति तुम उनसों ॥
दूरि धरौ मनते यह माई * बैठि रहो अपने घर जाई ॥
अतिबर बोल गई कह कीन्हो * कैसी निठुर भई कछु चीन्हो ॥
वह नहिं फन्द तुम्हारे आवै * छन्द बन्द वाके को पावै ॥
वह सबहिन में बड़ी सयानी * मेरी बात लेहु तुम मानी ॥
बोली अपर सखी सुन मोसों * लोक खैंचि भाषत मैं तोसों ॥
फरे फार देखौ हम धरिहैं * ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं ॥
अब तौ भेद कियो है प्यारी * हमहूँ को यह रिस है भारी ॥
तब लग मनमें धीर न लैहैं * जब लग चोर पकरिना पैहैं ॥
निशिबासर अब हम सब कोऊ * श्यामाश्याम देखि हैं दोऊ ॥

ताही दिन तिनसों हम लरिहैं * जादिन नीके पकरि निदरिहैं ॥
दो०-सब ब्रजगोपिनके बसी, बात यहै मन आन ॥
हरि राधा दोऊ मिलैं, निशिबासर यह ध्यान ॥२९॥
सो०-सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नहीं ॥
नन्द महर को तात, सुता महर वृषभानु को ॥२८॥
यहै चवाव करति सब गोपी * हमसों बात राधिका लोपी ॥
लरिकाई हम सब जानैं * कीन्हीं प्रीति श्याम यों मानैं॥
तब सतभांवत हुती झुठाई * अब हरिस सीखी चतुराई ॥
आज मौन धरि कियो दुराऊ * सदा होत किहि भांति बचाऊ॥
दिन द्वै चारि भोर अब टारौ* रहौ स्वभाव शोर जिन पारौ॥
करन देहु उनको लँगराई * आपहि बात प्रकट व्है जाई॥
तब इक सखी कही यों बानी * कहा कहत तुम बात अयानी॥
तुम जु कहति वह जानति नाहीं * हैं हम सब वाके मुखमाहीं ॥
सात बरसते प्रीति लगाई * तुम तौ आज जानि है पाई ॥
वाकी चतुराई किन जानी * मीन कबहि धों पीवत पानी ॥
हरिके ढँग सीखी सब वोऊ * हैं बारहबानी वे दोऊ ॥
देखहु काल्हि कहूं पतियानी * फिरि आँई हमसब खिसियानी॥
दो०-ऐसे सब ब्रज सुन्दरी, मिलिकै करति चवाय ॥
राधा हरि उरमें बसैं, और न बात सुहाय ॥३८॥
सो०-यह रस भजन अनूप, ब्रजबासी प्रभु प्रेम को ॥
करिकै कृष्णस्वरूप, होय रहीं ब्रजकी तरुणि ॥३८॥
श्रीराधा प्रातहि तहँ आई * जहाँ जुरी सब सखी अथाई॥
आवति लखि सब रहीं चुपाई * पेखत बदन गयो सकुचाई ॥
करति हुती उनही की बातें * सकुच गंई तरुणी सब तातें ॥
अति आदर करिकै बैठारी * काहे कहँ आई तू प्यारी ॥
कहाँ हमारी सुधि तैं लीनी * बड़ी कृपा कछु हमपर कीनी॥
मैं कहँ आज अनोखे आई * तुम जु करति आदर अधिकाई॥
पहुनी करि करिये पहुनाई * मैं तौ आवति जाति सदाई॥

Digitization by Arya Samaj Chennai Foundation Chennai

कैसी कहति बात तू प्यारी * बैठन को नहिं कही कहा री ।।
तू आई करि कृपा हमारे * हमहू कहा मौन ब्रत धारे ।।
तब हँसि बोली कुँवरि सयानी * करी तर्क मोसों तुम जानी ।।
ता दिनको बदलो यह कीनो * मोसो दाँव आपनो लीनो ।।
यह सुनि हँसी सकल ब्रजनारी * कहन लगीं सब सुन री प्यारी।।
दो०-दाँव घात जानति तुमहिं, हम तौ शुद्ध सुभाव ।।
तोहिं मानि आई सदा, तैसे मानति भाव ।।३१।।
सो०-तुम राखी मन लाय, तादिन बात भई जु वह ।।
हम डारी बिसराय, मानि लई तेरी कही ।।३१।।
चोर सबै चोरै करि जानै * ज्ञानी सब मन ज्ञानहि मानै ।।
सुनि यह कुँवरि मनहिं मुसकानी * कह्यो सखी यह साँच बखानी ।।
जैसी जाके मन में होई * बात कहत मुख तैसी सोई ।।
मैं तौ साँच कही तुम पाँहीं * कैसे धौं हरि जानति नाहीं ।।
हर्षि सखिन तब उरसों लाई * कहत कहा तू रिस भरि आई।।
हँसति कहति तोसों हम प्यारी * तूमन मानति बिलग कहा री।।
तुमहीं उलटी पुलटी भाषी * तुमहीं रिस करि उरमें राषौ।।
तुमहीं हरिको नाम बखानौ * तब मैं सुन्यो कछू तुम मानौ ।।
अब हरि संग मोहिं कहुँ लहियो * तब मनभावै सो कछु कहियो।।
अब कैसे हू न्हान चलौगी * कै मोसों कछु फेरि लरौगी।।
वहै बात गठबन्धन कीनी * नहिं भूलिहौ जान मैं लीनी ।।
गहि गहि सबकी भुजा उठाई * चलहु न्हान मैं कबकी आई ।।
दो०-इहिं बिधि हास हुलास करि, सखिन संग सुकुमारि ।।
चली न्हान यमुना नदी, श्रीबृषभानु कुमारि ।।३२।।
सो०-सकल रूपकी रास, नवनागरि मृगलोचनी ।।
भरि आनन्द हुलास, कृष्ण प्रेममें एक मति ।।३२।।

* अथ स्नान लीला ४३

चलि यमुना सब नवलकिशोरी * कनकबर्ण तन कोमल गोरी ।।
करति परस्पर सब सुकुमारी * हासबिलास कुतूहल भारी ।।

गई यमुन तट गोपकुमारी * सँग सोहति वृषभानुदुलारी ॥
देखि श्याम जललहरि सुहाई * पैठी सलिल न्हात अतुराई ॥
श्यामा सहित न्हाति सब नारी * बिहरति जलबिहार सुखकारी ॥
कण्ठ प्रमाण नीरमें ठाढ़ी * छिरकतिजल अति आनँदबाढ़ी ॥
करति बिबिधबिधिहासबिलासा * एक एक गहि करति हुलासा ॥
लै लै करसों नीर उछारैं * निरखि परस्पर मुखपर डारैं ॥
मानौ शशि सेना सजि आये * लरत जलज जलअस्त्र बनाये ॥
सुनि तहँ श्याम युवतिमनरंजन * आये कोटिकाम-द्युति-भंजन ॥
निरखत तट ठाढे छबि भारी * यमुनाजल बिहरतिब्रजनारी ॥
कबहुं मधुर कलबेणु बजावै * नान्हे मुरनमाहिं कछु गावैं ॥
दो०-काछे नटवर बेषबर, चित्रित चन्दन अंग ॥
ठाढे उमँगि कदम्बते, कीने अंग त्रिभङ्ग ॥ १ ॥
सो०-नव घन सुन्दर श्याम, ब्रज तिय मन चातक सुखद ॥
नख शिख अति अभिराम, ध्यान काम पूरण सकल ॥ १ ॥
पदनख इदुप्रभाद्युतिहारी * चरणकमल शीतल सुखकारी ॥
जानुजंघ अति सुभग सुहाई * करभ रंभ लखि रहत लजाई ॥
कटि पटपीत काछनी काछे * केसर कमल न पटतर आछे ॥
क्षुद्रावली कनक छबि छाई * नाभि गँभीर बर्णि नहिं जाई ॥
मनहूं मराल–बालकी श्रेनी * सरसमीप सोहति सुखदेनी ॥
बड़े बड़े मोतिनकी माला * बीच रुमावलिझलक बिशाला ॥
मनहूं गंग बिच यमुना आई * चली धार मिली नितहिंसुहाई ॥
बाहु दण्ड तट कमनीया * चन्दन अंग रेत रमनीया ॥
बनमाला तरुतीर सुहाये * फूल रहे पच रँग छबि छाये ॥
कम्बु कण्ठ त्रय रेख सुहाई * तीनभुवन शोभा जनु छाई ॥
चिबुक चारु गाढो मन मोहै * मुख छबि सिंधु भँवर जनुसोहै ॥
अधर दशनद्युति बर्णि न जाई * तड़िताबबकहि वह छबि छाई ॥
दो०-शुकनासा खंजननयन, भ्रुकुटि काम को दण्ड ॥
मणि कुण्डल रवि छबि हरत, सोहत सीस शिखण्ड ॥ २ ॥

सो०-उपमा गई लजाय, निरखि श्याम को रूप बर ॥
जहँ तहँ रहीं छिपाय, पटतर को पहुंची नहीं ॥ २ ॥
उपमा हरितनु देखि लजानो * दुरी भूमि कोऊ बन कोऊ पानो॥
कोटि मदन अपनो बलि हारे * मुकुट लटक भ्रूमटक निहारे ॥
कुण्डल निरखि भ्रमत रवि रहही*तपत हृदय क्षण धीर न गहहीं ॥
अलक नासिका कर पद नैनन * अलि शुककमलमीन खंजनगन॥
लषि सकुचाय रहत बन माहीं * कहत हमैं कबि कहत वृथाहीं ॥
दशनदमक दामिनी लजानी * क्षण प्रकटत क्षण रहति छुपानी॥
समुझत सधर अधर अरुणाई * विद्रुम बन्धू बिंब लजाई ॥
गगन रह्यो शशिवदन निहारी * घटत घटत नित शोचत भारी॥
चारु कण्ठ लषि अति सकुचानो * रहत शंख जलमाँझ छपानो ॥
बाहु देखि अहि बिबर समाने * केयरि कटि लषि वनहिं पराने॥
राजगति गुलफ निरखि सरमाई * ऊँची आँखि न सकत उठाई॥
निज इच्छा छबि हरिबपु धारी* दीनी पटतर मेटि परारी ॥
दो०-अनुपम छबिकबि क्यों कहैं, बिन उपमा आधार॥
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नन्दकुमार॥ ३ ॥
सो०-अधर मनोहर बैन, मन्द मन्द बाजत मधुर ।
उपजावत मन मैन, ब्रज सुन्दरि नव नागरिन ॥ ३ ॥
जलबिहार करि गोपकिशोरी * निकरि चलीं तटको सब गोरी॥
जानु जंघ जललौं सब आई * चुवत नीर अँचरनछबि छाई॥
परे दृष्टि मोहन तटमाहीं * ठाढे कदम विटपकी छाहीं ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी * पंगु भई मति गति बरहानी ॥
इतहिं लाज सखियन की आई * दर्शन हानि न उत सहि जाई ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुगामी * लेहै आज सखी सब जानी ॥
जानि गई यह अली सयानी * जानि बूझि सब भई अयानी ॥
बहुरी न्हान लगीं सब पानी * रही इतै करि आना कानी ॥
प्यारी गबहुं श्यामतनु हेरै * कबहू दृष्टि सखिनतन फेरै ॥
जानी सबै न्हात जलमाहीं * मेरीदिशि चितवतिकोउनाहीं ॥

तब मनमें यह बात बिचारी ✽ देखि लेहु अब छबि गिरिधारी ॥
यह दर्शन कब धौं फिर होई ✽ ललकि लगीं अँखियां हठि दोई ॥
दो०-निरखति श्यामाश्यामछबि, पारनिमेखनि भोर ॥
नयन बदन शोभित मनौ, है शशिचारु चकोर ॥ ४ ॥
सो०-करत मुदित दोउ पान, रूपमाधुरी अमियरस ॥
तृप्ति न क्योंहूँ मान, बिबश भये मन दुहुँनके ॥ ४ ॥
यद्यपि सकुच सखिनकी गाढ़ी ✽ तद्यपि रुँकी न चितवन बाढ़ी ॥
उमँगि गई सरिताकी नाहीं ✽ सनमुख श्यामसिंधुके माहीं ॥
भरी सलिलअनुराग अथाहा ✽ भँवर मनोरथ लहर उछाहा ॥
कुलमर्याद करार ढहाये ✽ लोकसकुच तरुतीर बहाये ॥
धीरज नाव गहो नहिं जाई ✽ रहे थकित पल पथिक डराई ॥
इकटक घोर अखंडित धारा ✽ मिली श्याम सब सिंधु अपारा ॥
कहति सखी सब आपुसमाहीं ✽ नैनसैन दैदै मुसुकाहीं ॥
देखहु री प्यारी उत अटकी ✽ ना जानिये कौन अँग लटकी ॥
काल्हि हमें कैसे निदरो है ✽ मेरे चित अब खुटक परो है ॥
बात कहत मेलै मुख तुलसी ✽ देखहु अब देखति किमि हुलसी ॥
सुन्दर पियके रूप लुभानी ✽ वे बातैं अब सबहि भुलानी ॥
इकटक रही नेक नहिं मटकी ✽ को जो जाने काहूके घटकी ॥
दो०-भई भाव भोरे कछू, देखतही सुखदाय ॥
चित्रपूतरीसी रही, देहदशा बिसराय ॥ ५ ॥
सो०-उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर बर ॥
प्यारीमुख दृग लाय, नैन नहीं मटकत कहूँ ॥ ५ ॥
औरै भाव भई सखि प्यारी ✽ बढ्यो प्रेम अंकुर तरु भारी ॥
गई तासु जर सप्त पताला ✽ पहुँच्यो अन्तर शिखरबिशाला ॥
बचन पत्र अवलोकनि शाखा ✽ सब जग छाँह छई अभिलाषा ॥
गुणबिधि सुमन सुगंध निकाई ✽ लगी जाइ आनंद सुहाई ॥
पूरण आसन बढ़ि भर भारा ✽ फल लाग्यो बर नंदकुमारा ॥
रहे रीझि तन मन धन वारे ✽ अरस परस दोउ रूप निहारे ॥

तब इक सखो कह्यो मुसकाई * प्यारी देखे कुँवर कन्हाई ॥
येई हैं सुन्दर सुखदाई * जिनको ब्रजमे होत बड़ाई ॥
हमें कहति हो मोहिं दिखावहु * देखि लेहु अब मन सुख पावहु ॥
बहुत लालसा है मन तेरे * ताहीते आये हरि नेरे ॥
प्यारी साधु दर्श अब पाये * हमहीं इनको बोलि पठाये ॥
राखौ चीन्हि इन्हैं अब नीके * ये हैं मन भावन सबहीके ॥
दो०-भले शकुन आई इहाँ, भयो तुम्हारो काज ॥
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हैं ब्रजराज ॥ ६ ॥
सो०-भयो नागरिहिं शोच, सुनिसुनिसखियनके बचन ॥
कहति करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब ॥ ६ ॥
मैं हरितनु लखि रूप लुभानी * सो ये देखि सबै मुसकानी ॥
काल्हि कही इनसों मैं वैसे * देखी आज मोहिं इन ऐसे ॥
इन आगे मो बात नसानी * अब ये करत मोहिं बिन पानी ॥
मोहीं पर मेरी चतुराई * परी उलटि उर अतिसकुचाई ॥
कहति सखिनसों ज्वाब न आयो * तब मनमें हरि प्रियको ध्यायो ॥
अहो श्याम सुन्दर सुखदानी * मैं प्रभु तुम्हरे हाथ बिकानी ॥
अब सहाय सुन्दर तुम कीजे * मेरी बात नाथ रखि लीजै ॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई * जातें मेरी पति रहि जाई ॥
ऐसे हरिको सुमिरी सयानी * तब इक बात मनहिं मन ठानी ॥
उरमें भयो बुद्धि परकाशा * तब कीनो मनमाहिं हुलाशा ॥
सखिन कह्यो अब घर चलप्यारी * भई यमुनतट बहुत अबारी ॥
कबकी न्हान इहाँ हम आई * ऐसे कहि कहि सब पछिताई ॥
दो०-कियो दर्श तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं ॥
चीन्हि रह्यो मिलियो बहुरि, यह कहि सब मुसकाहिं ॥ ७ ॥
सो०-तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी ॥
उरमें धरि ब्रजनाथ, प्रेममगन बोली नहीं ॥ ७ ॥
हँसि बूझत इक गोपकुमारी * कहौ श्याम कैसे हैं प्यारी ॥
भाये री तेरे मनमाहीं * हैं सुन्दर कछु कै धौं नाहीं ॥

कै हमसों फिरि बात लुकैहौ * कै अब मनकी साँच जनैहौ ॥
हम वर्णे जैसे तुहि पाहीं * कह तैसे हरि हैं कै नाहीं ॥
कहति मनहिं बृषभानु दुलारी * मेरे ख्याल परी सब ग्वारी ॥
बातन बातन करति उघारो * ये चाहति अबहीं निरवारो ॥
मोहूंते ये चतुर कहावैं * मोकों बातन मांझ भुलावैं ॥
ऐसे इनसों बचन बखानौं * इनकी चातुरता गहि मानौं ॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई * कह करिहैं मोसे चतुराई ॥
प्यारी प्रियके गर्व गहेली * अंग अंग सुख पुंज भरेली ॥
मन्द मन्द गति हंस सुहाई * पग द्वै चलत ठठकि रहिजाई ॥
मग्न श्यामरस मुख नहिं बोलै * धरणी चरण नखनकरि छोलै ॥
दो०-चितवत सूधे नेक नहिं, काहूतन खनखाय ॥
रही गर्ब पिय श्यामके, गरबीली गरबाय ॥ ८ ॥
सो०-सखिन कह्यो मुसकाय, क्यों प्यारी बोलत नहीं ॥
कै हमसों अनखाय, लियो मौन व्रत आजपुनि ॥ ८ ॥
कै कछु बात कही नहिं जाई * कै तेरो मन हरयो कन्हाई ॥
कबहुँ जान पहिचान न तेरी * देखतही दृग तिनहि ढरे री ॥
सांची बात कहौ अब प्यारी * शोच परयो मन तोहिं कहारी ॥
कहा रही हो हरिहि निहारी * इकटक नैननिमेष बिसारी ॥
सुनि सुनि सब सखियनकी बानी * बोली हरिभावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे * मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कै धौं नहिं देखे * तुम तौ बाहर जाकर पेखे ॥
तुमही हरिको रूप बताबो * मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे बर्ण बेष है कैसे * अंग अंग वर्णों तुम तैसे ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई * हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छन्द बन्द कछु हमहिं न आवै * सांची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नँदनंदन जैसे * वर्णि बतावहिं तोकों तैसे ॥
दो०-श्याम सुभग तनु पीत पट, चटकीली द्युति कारि ॥
शोभित घनपर दामिनी, मनु चपलई बिसारि ॥ ९ ॥

सो०-मन्द मन्द सुखदात, गरजति मुरली मधुर ध्वनि ॥
चितवत अरु मुसकात, वर्षंत परमानंद जल ॥ ९ ॥
बिबिध सुमनदलकी उर माला * इन्द्रधनुष मनु उदित विशाला ॥
मुक्तावली बीच मन मोहै * बालमराल पाति जनु सोहै ॥
अंग अंग छबि रूप सुहाई * कदम तरे ठाढे सुखदाई ॥
देखत मोहन बदन विभागा * उपजत है अँखियन अनुरागा ॥
लोचननलिन नये छबि छाजैं * तामधि पुतरी श्याम बिराजैं ॥
मनहु युगल अलि भाग निवारे * पियत मुदित मकरंद सुखारे ॥
तामहँ चितवत सैन सुहाई * गूढ़ भावसो चित सुखदाई ॥
अधर बिंब रद दाड़िमदाना * शुकनासिका देखि ललचाना ॥
भ्रुकुटीधनुष तिलक शिर धारी * मानहुँ मदन करत रखवारी ॥
मोरचंद्र शिर सुमन सुहाये * काम शरन मनु पक्ष लगाये ॥
गडत आनि युवतिनमनमाहीं * निकसत बहुरि निकासे नाहीं ॥
बाँरिज बदन मनोहर बानी * बोलत मनहु सुधा रससानी ॥
दो०-कुँडल झलक कपोल छबि, श्रम सीकर के दाग ॥
मानहु मनसिज मकर मिलि, क्रीडत सुधातड़ाग ॥१०॥
सो०-भरे रूप रस राग, ऐसे शोभा के उदधि ॥
बिन अँखियन को भाग, अबलोकत हरिको बदन ॥१०॥
अंग अंग सब छबिके जाला * हम देखे इहि भाँति गोपाला ॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जाने * जो देखे सो साँच बखाने ॥
साँचहिं झूँठ करै जो कोई * तो वह झूँठ आपही होई ॥
हम इतनिनमें नहीं दुराऊ * कहति यथारथ सब सत भाऊ ॥
यामहिं जो कोउ झूठो मानै * ताको बात बिधाता जानै ॥
हमतो श्याम निहारे ऐसे * तोहिं लगें प्यारी कहु कैसे ॥
तुम देखे मैं साँच न मानौ * अपनीसी गति सबकी जानौ ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं * द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं ॥
जो तुम सब अँग अंग निहारे * धनि धनि तौ ये नयन तिहारे ॥
मैं तौ लखि इक अंग भुलानी * भरि आयो दोउ आँखिन पानी ॥

कंडल झलक कपोलन छाँहीं * रहो चकित उतनेके माहीं ॥
रुँधे नीर नैन टक लाई * पहिचाने नहिं नेकु कन्हाई ॥
दो०-मैं तबते अपने मनहिं, यहै रहो पछिताय ॥
देखनको छबि श्यामको, चहियत नैन निकाय ।। ११॥
सो०-अँतिछबि अँखियाँ दोय, उमँगचलततापरसलिल ॥
कैसे दर्शन होय, सखी श्यामके रूपको ।। ११॥
द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे * तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे॥
तुम अति अंगबिलोकन कीन्हो * मैं नीके एकौ नहिं चीन्हो ॥
काहूको षटरस नहिं भावै * कोऊ भोजनको दुख पावै ॥
अपने अपने भाग्य निकाई * जो बोवै सोइ लुनै बनाई ॥
जैसे रंक तनक धन पाये * होत निहाल आपने आये ॥
मोहिं तुम्हे अन्तर है भारो * धनि तुम सब हरिअंगनिहारो॥
तुम हरिकी संगिनि ब्रजबाला * ताते दर्श देत नंदलाला॥
सुनहु सखी राधाचतुराई * आपहि निदति हमहि बड़ाई ॥
आपुन भई रंक हरिधनको * हमैं कहति धनवंत सबनको ॥
हम हरिकी संगिनि सब ग्वारी * आपुहि निर्मल होति नियारी ॥
धनि धनि धनि लाड़िलो पियारो * धिक्‌धिक्‌धिक्‌धिक्‌बुद्धिहमारी ॥
तू पूरण हम निपट अधूरी * हमहिं असंत संत तू पूरी ॥
दो०-धनि धनि तेरे मात पितु, धन्य भक्ति धनि हेत ।।
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ।।१२॥
सो०-धनि यौवन धनि रूप, धनि २ भाग सुहाग तुव ॥
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोरी अचल ।।१२॥
जैसो तैं हरिरूप बखान्यो * है तैसोई यह हम जान्यो ॥
देखनको हरिरूपउजेरी * आँखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहति लोचन भरि आये * सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अतिपुनीत अस्थल शुभ जानी * करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बास हरि तोदृगमाहीं * और बात दूजी कछु नाहीं ॥
ऐसे श्यामसंग ब्रजबाला * कहति परस्पर गुण गोपाला ॥

तहाँ अचानक हरि पुनि आये * कटि कछनी नटवेष बनाये ॥
मुरली अधरअरुणपर राजै * कलधुनि मंद मनोहर बाजै ॥
करति रही जो मनमें ध्याना * सोई अन्तर्यामी जाना ॥
आप गये तिरछे मगमाहीं * भावाधीन सकृत रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तर तरुण कन्हाई * ठाढ़े भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला * लगीं बिलोकन नंदको लाला ॥
दो०-रत्नजटित पगपाँवरि, नूपुर मंद रसाल ॥
चरणकमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल ॥१३॥
सो०-उदित चरण नखचंद्र, जनुनगिव्योमप्रकाश करि ॥
सुरनर शिवमुनिवृन्द, बिरहताप ब्रजतिय हरण ॥१३॥
जानु कामशतछबिन सँवारे * युवतिन कारि मन बुद्धि बिचारे ॥
युगलजंघछबि परम पुनीता * रंभाखंभ मनहुं बिपरीता ॥
ठाढ़े धरणि एक पद लाये * कंचनदंड एक लपटाये ॥
तन त्रिभंगकी लटक सुहाई * अटक रही युवतिन मनभाई ॥
ब्रजयुवती हरिपद मन लाये * निरखत मुनिदुर्लभ सचुपाये ॥
कुलिशांकुशध्वजचिह्न निकाई * इक टक रही चितै चितलाई ॥
अरुण तरुण पंकजदल चारू * मानहुं सुषमा करति बिहारू ॥
कटि केहरिकी कटिहिं लजावै * सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै ॥
तापर कनकमेखला सोहै * मणिनजटित सुन्दर मन मोहै ॥
मनहुँ बालकनसहित मराला * बैठे पंगति जोरि रसाला ॥
किधौं मदनके सदन सुहाई * बाँधी बंदनवारि बनाई ॥
ब्रजतिय निरखि २ सुख लेहीं * नैननि पलक परन नहिं देहीं ॥
दो०-शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदनतड़ाग ॥
रोमावलि तटपर लसत, सरसिंगारको बाग ॥१४॥
सो०-ब्रजतिय रही निहारि, शोभा नाभि गँभीरकी ॥
मन नहिं सकति निकारि, पर्यो जाय महरे खसकि ॥१४॥
उदर उदार बर्णि नहिं जाई * रोमावलि तापर छबि छाई ॥
रही अटकि छबि तासु निहारी * परखत बनत न निरखत नारी ॥

कोऊ कहति कामको सरनी * कोऊ कहति योग नहिं बरनी॥
कहति एक अलिबालक पांती * जुरि बैठ सब एकहि भाँती॥
कोउ कह नोरदनील सुहाई * सूक्षम धूमधारि छबि छाई॥
एक कहति यह रबिको जाई * मरकतगिरिउरते प्रगटाई॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा * जाति नाभिहृद अगम अपारा॥
दुहुंदिशि फेन स्वाति सुताला * उपजत सुखमझलहरि बिशाला॥
शोभा तरि न सकति ब्रजनारी * रहीं बिचारि बिचार बिचारी॥
उर मुक्तनकी माल बिराजै * तामधिकौस्तुभमणि छबि छाजै॥
निर्मल नभ मानहूं उडुराजो * शशिहिं घेरि बैठो छबि साजो॥
भृगुपदरेख श्याम उर माहीं * मनहुँ मेघ भीतर शशि छाँहीं॥
दो०-पीत हरित सित अरुण रँग, चटकोली बनमाल॥
प्रफुति व्है छबिकी बँवरि, मानहुं चढ़ी तमाल॥१५॥
सो०-छबि बर्णी नहिं जाय, कम्बु कण्ठ मणि कण्ठकी॥
ब्रजतिय रहीं लुभाय, हरि उरब्रर शोभा निरखि॥१५॥
वृषभकंध भुज दण्ड सुहाई * निंदति अहि गजशुँडनिकाई॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै * बाहु विभूषण लखि मन मोहै॥
जनु शृङ्गार बिटपको डारी * फूलि रही उपजति छबि भारी॥
हरिमुख निरखति गोपकुमारी * पुनिपुनि प्राणकरति बलिहारी॥
कहति परस्पर मन अति लोभा * देखहु सखी बदनको शोभा॥
चिबुक चारु अधरन अरुणाई * पानरेख तापर छबि छाई॥
मन्द हँसनि द्यु नि दशन निकाई * उपमा कापै जात बताई॥
अनुपम छबि चित लेति चुराये * जग मोहिनी हमारे भाये॥
गोल कपोल अमोल नबोने * मानहुँ मुकुर नीलमणि कीने॥
बाजत मुरली करको बेरनि * चंचल नयन चपलगति हेरनि॥
मणिनजडितकुण्डलकी डोलनि * प्रतिबिंबितसब मुकुरकपोलनि॥
सो छबि कापै जात बखानी * लखि ब्रजतियबिनमोलबिकानी॥
दो०-सुभग नासिका चपल दृग, कुटिल भृकुटिकी रेख॥
जनु युग खंजन बीच शुक, उडि न सकत धन देख॥१६॥

सो०-घुँघरारे कच श्याम, बारिज मुख ढिग भ्रमरजनु ॥
सीस मुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरन ॥१६॥
रूप सुधा निधि बदन बिराजै * दुहुँकर अधर मुरलिका बाजै ॥
मानहु युगल कमल पुट माहीं * लेत भराय सुधा शशिमाहीं ॥
हरि मुख निरखत नैन भुलाने * इकटक रहे तृप्ति नहिं माने ॥
घोषकुमारि लखति नन्दनन्दन * श्याम सुभग तनु चित्रित चंदन ॥
कनक बर्ण पट पीत बिराजै * देखि सखी उपमा यह छाजै ॥
निर्मल गगन शरद घन माला * तापर अस्थित दामिनिजाला ॥
अङ्ग अङ्ग छबि पुंज सुहाए * निरखत युवतीजन मन लाए ॥
कोऊ भालतिलकछवि अटको * मुकुट लटकछबिपरकोउलटको ॥
कोऊ अलख लखति चितलाई *कोउलखिभ्रुकुटिसुरतिबिसराई
कोउलोचनछबिलखिललचानो * चितवनिमें कोऊ अरुझानो ॥
कोऊ कुण्डल झलक लुभानो *कोउकपोलद्युतिनिरखिबिकानो ॥
कोउ नासा कोउ अधरनिकाई * कोउ रदचमकनिमाँझ भुलाई ॥
दो०-कोउ बोलनिकोउ मृदु हँसनि, कोउ मुरलोधुनिलीन ॥
कोउ मुरली पर ग्रीवको, लटकनपर आधीन ॥१७॥
सो०-चारु चिबुक दरग्रीव, कोऊ गडि तामेंरहो ॥
हरि मुख शोभा सींव, थको निरखि जहँ सो तहाँ ॥१७॥
कोउ सुन्दर उर बाहु बिशाला * निरखि थको कोउ भूषणजाला ॥
कोउ कटिकोउपट पीत निहारो * जघगुलफपर कोउ बलिहारो ॥
युगल कमलपदनखकी शोभा * ब्रजबासी जनमनकी लोभा ॥
हरि प्रति अङ्ग निरखि ब्रजनारी * गेह देहको सुरति बिसारी ॥
अति आनन्द मग्न मन भूली *शशिमुखलखिजनुकुमुदिनिफूली ॥
किधौं चकोर रहे टकुलाई * पियत सुधा छबि शीतलताई ॥
कै रवि कुण्ड छबिहिं निहारी * बिकसित कमलबदन बर नारी ॥
कै चकई गण मन सुख मानी * निरखि रहीं अति रति हर्षानी ॥
कै धौं नवघनतनु छबि देखी * भई चातकी मुदित बिशेखी ॥
किधौं मृगी मुरली ध्वनि मोहीं * श्याम लखत युवतीइमि सोहीं ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरि छबि अरुझनमें अरुझानी * सुरझिनसकतियुवतिबिततानी ॥
रूपराशि सुखराशि कन्हाई * प्रेम राशि जनके सुखदाई ॥
दो०-छबिसागर सुखको अवधि, गुण मन्दिर रसखान ॥
मोहि लियो मन तियनको, रसिकनरेश सुजान ॥१८॥
सो०-मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि ॥
अनुपम छबि दर्शाय, गये सदन आनन्द घन ॥१८॥
रहीं ठगोसीं गोपकुमारी * मन हर लैगये नवलबिहारी ॥
पुनि पुनि कहति भई सुखमानी * धनि धनि राधा कुँवरि सयानी ॥
बड़भागिनि तोसी नहिं प्यारी * तेरेही बश री गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा * धनि जोरी धनि प्रीति ललामा ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे * तोबिन रहि न सकत हरि न्यारे ॥
तोको देखि बहुत सुख पावैं * मुरली में तेरो गुण गावैं ॥
तेरी प्रीति साँच हरि जाने * तासे तेरे हाथ बिकाने ॥
मन बच क्रम निर्मल तू प्यारी * दुराचारिणी हम सब नारी ॥
जैसे घट पूरण नहिं डोलै * होय अबधलौं सो ढकढोलै ॥
परमसुजान नारि तैं धीरा * राख्यो परखि हृदय हरि हीरा ॥
धनी न अपने धनहिं बतावै * धरति छिपाय न प्रकट जनावै ॥
धन्य सुहाग भाग तुव प्यारी * कृष्ण सदा पति तू बर नारी ॥
दो०-सुनि सुनि बानी सखिनकी, प्यारीजिय अनुराग ॥
पुलकि रोम गद गद हियो, समुझि आपनो भाग ॥१९॥
सो०-बचन कह्यो नहिं जाय, प्रीति प्रकट चाहति कियो ॥
हरि उर रहे समाय, बाहर दुरत प्रकाश नहिं ॥१९॥
सुनहु सखी तुम करति बड़ाई * सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई ॥
मोहिं कहति श्यामहिं तैं जान्यो * हरिको भले परखि पहिचान्यो ॥
तबते यही शोच मनमाहीं * कैसे हरि पहिचाने जाहीं ॥
नयन होय छबि अमित अगाधा * तापर पलक करति है बाधा ॥
क्षणही में भरि आवत पानी * श्यामस्वरूप परै किमि जानी ॥
मेरु करम अङ्ग लखिये कोई * पलक परत औरै छबि होई ॥

क्षण क्षणमें शोभा पलटावै * कहौसखी उर किंहिंबिधिआवैं॥
देखने को दृग अति अलाही * प्रगट लखत पहिंचानि न जाहीं॥
यह सखि नहीं परति कछु जानी * बिरह सँयोग लाभ कै हानी॥
कै दुख सुख कै समरस होई * मुहिं समुझाय कहौ सखि सोई॥
घृतते होम अग्नि रुचि जैसे * मिटतति नहिं नयननिगति तैसे॥
उत छबि खानि नई छबि बाने * इत लोभी दृग तृप्ति न माने॥
दो०-बिनपहिंचाने कौन बिधि, करौ श्यामसों प्रीति॥
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति॥२०॥
सो०-यह जानी मैं बात, है आनन्दकी खानि हरि॥
पहिंचाने नहिं जात, कहा करौ द्वै लोचनन॥२०॥
बड़ो क्रूर बिधिना यह आली * समुझि परी देखत बनमाली॥
कर पद उदर ग्रीव कटि कीनी * मुख रद श्रुति नास शुभ दीनी॥
भाल शिखर नख केश बनाये * अधर जीभ अरु बचन सुहाये॥
रचि पचि रुचिर अङ्ग सब कीने * रोम-रोम-प्रति नयन न दीने॥
जो ब्रज दीनो जन्म हमारो * देखन को मनमोहन प्यारो॥
तौ कत नयन दिये शठ दोई * बिधिते निठुर और नहिं कोई॥
जो बिधना को बश करि पाऊँ * तौ अब पद्धति और चलाऊँ॥
रोम रोम प्रति नयन बनावै * इकटक रहैं पलक नहिं लावैं॥
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो * होय मनोरथ पूरण मेरो॥
हरिस्वरूप सखि जानि न जाई * वह छबि द्वै लोचन न समाई॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो * एकहु अङ्ग न नीके हेरो॥
जो देखो तौ प्रीति करो री * देखन ही के साथ मरौं री॥
दो०-दुरत दुराये कौन बिधि, सखि तुमसों यह बात॥
देखे बिन नन्दनन्द के, धीरज धरत न गात॥२१॥
सो०-उड़ो फिरत दिन रात, इन नयननके संग लगि॥
क्षण नहिं मन ठहिरात, आकरुई जिमि बातवश॥२१॥
सुनरी सखि दशा यह मेरी * जबते हरि मूरति मैं हेरी॥
संहि फिरौं दर्श नहिं पाऊँ * मनहीं मन पुनि २ पछिताऊँ॥

जब मैं अपने जिय यह आनौं * निकट जायहरि छबिपहिचानौं ॥
तब प्रति बिंब मेरोई आई * होत तहां मोको दुखदाई ॥
मेरे मन हरि मूरति भावै * सन्मुख दृष्टि तहाँ यह आवै ॥
मेरिय देह होत मुहिं वैरी * कितौ दुरावति दुरत न है री ॥
मैं अन्तर तजि लखति कन्हाई * यह अति अन्तर देत बढाई ॥
सखी दोष नहिं काहू केरो * करत श्याम यह सब झकझेरो ॥
नीके दर्शन कबहूं देहीं * नई नई छबि करि मन लेहीं ॥
चपलाहूते चपल घनेरो * दशन चमक चौंधत है ऐ री ॥
कबहूँ अंगन मुकुर बनावै * कबहूँ कोटि अनंग लजावै ॥
कैसे सब छबि देखन पैये * कौन भांति यह साध पुरैये ॥
दो०-मग्न दर्शरस लाड़िली, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
तृप्ति न मानति देखि छबि, कहति लखे नहिं जात ॥२१॥
सो०-लीनो सखियन जान, हरि रँगराती लाड़िली ॥
सुन्दर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे ॥२२॥
कहति धन्य प्यारी बड़भागी * नीके तू हरिसँग अनुरागी ॥
तू है नवल नवल हरि ओऊ * रूप अगाधसिंधु तुम दोऊ ॥
हम जानी यह बात अबाधा * तैं हरिकी अर्धांगिनि राधा ॥
मिले तोहिं करि कृपा कन्हाई * दिये सकल दुख दूर मिठाई ॥
कहु प्यारी हमसों अब साँची * कहे बनै यह बात न काची ॥
छाँड़ि देहु अब यह चतुराई * कहाँ मिले कहि तोहिं कन्हाई ॥
खरक मिले कै कुंजन माहीं * कै दधि बेंचन जाति जहाँहीं ॥
कै जब उरग डसनते बाची * कहि कैसे तू हरि रँग राची ॥
सुनि सखियन की बात सयानी * बोली परम नागरी बानी ॥
कब री श्याम मिले नहिं जानौं * सुनहु सखी मैं साँच बखानौं ॥
गृह बन कुंज सुरति नहिं मोही * दधि बेंचत कै खरक बिमोही ॥
आजकि कालि कहौ कहँ आली * कियौ बास उरमैं बनमाली ॥
दो०-नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात ॥
कहा कहौ तुमसों सखी, यह अचरजकी बात ॥२३॥

सो०-मिले मोहिं जब श्याम, सुनौ सखी तुमसों कहौं ॥
करिकै उरमें धाम, तबते मन मेरो हरयो ॥२३॥
मैं यमुना जल भरन सिधाई * ओचक लखि तहँ परे लखाई ॥
मोतन चितै रहे मुसकाई * कहा कहौं सखि नयन निकाई ॥
जीत आपने बल जनु कीनो * शरद सरोजन की छबि हीनो ॥
जीते सकल रूप गुण जाती * नीलकोकनद अरु सतपाती ॥
ये निशि मुद्रित दिवस प्रकासे * क्षणप्रति होतमलिन द्युतिनासे ॥
वे आनंदकंद सुख मूले * रहत दिवस निशि छविसों फूले ॥
निरखि नयन मैं दशा भुलाई * उन मुसकानि मोहनी लाई ॥
शिथिल अंग भये जैसे पानी * तबहींते उनहाथ बिकानी ॥
सूधो मारग गई भुलाई * ज्यों त्यों करि पहुंची घर आई ॥
तादिनते अँखियाँ ये मेरी * सुख दुख भूलि भई हरि-चेरी ॥
बसीं जाय वा चितवन माहीं * अबवह छबिक्षण बिसरतिनाहीं ॥
कै इन नयनन आय समानी * यहचितवनिकछुजात न जानी ॥
दो०-नहिं जानति हरि कह कियो, मन्द मधुर मुसकाय ॥
मन समुझत रीझत नयन, मुख कछु कह्यो न जाय ॥२४॥
सो०-तबते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह ॥
अमल परयो दृग आय, अवलोकन हरिबिधुबदन ॥२४॥
निकसे सखी एक दिन आई * द्वार हमारे कुंवर कन्हाई ॥
मैं ठाढ़ीहो आज अकेली * देखि रही वह छबि अलबेली ॥
चंचल नयन चितै चित चोरें * सुभग भ्रुकुटि बिब बंक मरोरैं ॥
कोटि मदन तनुद्युतिसम वाहीं * फेरत कमल कमल कर माहीं ॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढ़े * कियो भाब कछु आनँद बाढ़े ॥
लै कर कमल भावसों लायो * पीताम्बर निजसीस फिरायो ॥
मैं गुरुजन उर शंका आनी * बोलि न सकी कछू मुख बानी ॥
प्रेम सहित तेरे हरि आये * वैसेइ उनको फेरि पठाये ॥
तू तो चतुर हुती अति नारी * सेवा कछू करी नहि प्यारी ॥
गुप्तभाव तोसो हरि कीनो * बातन भुरै नहीं क्यों लीनो ॥

काहे कमल भावसौं छायों * काहे पीताम्बरहि फिरायो ॥
तैं कछु उत्तर तिन्है जनायो * घर आये काहे बिसरायो ॥
दो०-कहा करौं गुरुजन सखी, भये मोंहिं दुखदाय ॥
सकुचिरहीतिनकोसकुच, मुख कछु बचन न आय ॥२५॥
सो०-इतनो कियो सनाय, मैं तब बेंदी कर परसि ॥
उर लाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसो ॥२५॥
अन्तर्यामी चतुर कन्हाई * जानि लई मेरी चतुराई ॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी * रहे कमल हिरदेपर धारी ॥
रहे चितै अति हित चित लाई * मोतैं सखी न कछु बनि आई ॥
कहा करौ कछु दोष न मेरो * नयो नेह उत गुरुजन घेरो ॥
रही देखि मन आनन्द भरिकै * दियो कमल उर आसन करिकै ॥
आँचर फेरि निछाबरि कीनो * अर्घसलिल अँखियनसों दीनो ॥
उमँगि कलश-कुचप्रकट भयेरी * टूटि कंचुकीबन्द गये री ॥
अब मन होति लाज अतिभारी * सखी समुझि करणी वह सारी ॥
ऐसी मेरी अति अज्ञानो * सो प्रभु मंगल मैं करि मानो ॥
अति सुख मानि गये सुखदाई * तबते मोमन कछु न सुहाई ॥
कहति सुख राधा सुन ए री * सेवा मानी लई हरि तेरी ॥
अब काहे पछितात अँनेरी * तोहित श्याम जात करि फेरी ॥
दो०-नीके कीन्हे भाव सब, तैं अति नागरि बाम ॥
उन लीन्ही सब जानिकै, चतुर शिरोमणि श्याम ॥२६॥
सो०-भावहिको सन्मान, गुरुजनके मधि चाहिये ॥
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा ॥२६॥
तेरे बशहि भये दधि दानी * हम यह बात भले करि जानी ॥
तैं बेंदी उन पाग सँवारी * उनको तुम उन तुमहिं जुहारी ॥
मिली आरसी में तुम उनको * उनउर धरीकमलमिस तुमको ॥
जानै कहा भेद यह दोऊ * एक प्राण द्वै तनु तुम दोऊ ॥
सुनहु सखी मोहन सुखराशी * अँखियाँ रहति दर्शकी प्यासी ॥
मिकसत जब सुन्दर इत आई * कमलनयन कर बेणु सुहाई ॥

ना जानिये सखी तिहि काला * सबतन श्रवण कि लोचनजाला॥
सुनत शब्द प्रति रोमनमाहो * नखशिखज्योंचखदेख्योहिचाहो॥
इतनें पर समुझत नहिं बैना * चितै रहत ज्यों चित्रित नैना॥
सुनहु सखी यह साँच कि सपनो * कै सुख दुख कै संभ्रम अपनो॥
कहा करौं गुरुजन डर मानौं * मन मेरो उन हाथ बिकानौं॥
जबते द्वार दर्श मोहिं दीनो * तबते मन अपनो करि लीनो॥
दो०-भाग्य दशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान॥
मैं सेवा नहिं करि सकी, गुरुजनको डर मान॥२७॥
सो०-यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरि लै गये॥
अब लागो पछितान, फेर कौन बिधि पाइये॥२७॥
जबते प्रीति श्यामसों कीनो * तबते नींद दृगन तज दीनी॥
फिरत सदा चित चक्रचढ्योसो * रहत हिये अति शोचबड्योसो॥
मिलहिंकवनबिधिकुँवर कन्हाई * यहै बिचार बिचारत जाई॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये * पशु बेदनज्यों आपहि सहिये॥
सुन प्यारी तू हरि रंग राची * बात कही तोसों हम सांची॥
तोते चतुर और नहिं कोऊ * तुम अरु श्याम एक भये दोऊ॥
बाकी नहीं कछू अब बांची * कहौं बात में रेखा खांची॥
ऐसो भई आपनी भोरी * उनको मम तैं नाहिं लियो री॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो * तब उन तेरो मन अब पायो॥
अब काहे को करत सयानी * नँद नँदन बर तू पटरानी॥
तोसो और कौन बड़भागी * तेरे संग श्याम अनुरागी॥
बिलसौ श्यामसंग सुख मानी * अब कत वृथा रहित बौरानी॥
दो०-श्याम करी मोहि बावरी, मन करि लियो आधीन॥
बंसीज्यो वाकी पलक, अटके मो दृगमीन॥२८॥
सो०-अब मोहि कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं॥
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर॥२८॥
बार बार में तोहिं सुनाई * तेरे मन यह बात न आई॥
अपनीसीं बुधि जानति मेरी * मैं पाई इतनी कहँ ए रीं॥

देखति हो हरि रूप लुभानी * मोते सुधि बुधि सबहि हिरानी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी * गद्गद् बचनस्याम रसपागी ॥
पुनि पुनि कहति यहै मुख बानी * मन हरलियो छैल दधिदानी ॥
तब इक सखी सखीसों बोली * तू कत होति जानकै भोली ॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी * गुप्त बात तिन प्रकट बखानी ॥
तुम जानति स्यामा है छोटी * है यह ज्ञान बुद्धि की मोटी ॥
रहत सदा हरिके सँग माहीं * हमसों प्रकट करति सो नाहीं ॥
किये हरति हमसों हठ ओटी * बात कहति मुख चोटी पोटी ॥
भये स्याम याही के बश अबि * देखि छके बेंदी छोटी छबि ॥
भली बनी सुन्दर अब जोठी * वे खोटे उनते यह खोटी ॥
दो०-कहति सखी तू यह कहा, निपट गँवारी बात ॥
को प्यारी सम दूसरी, जाके बश बल भ्रात ॥ २८ ॥
सो०-रूपशील गुण धाम, यह सबमें ब्रज आगरी ॥
दृढ़ ब्रत लीन्हो स्याम, धन्य न याते और कोउ ॥ २९ ॥
प्रीति गुप्तही की है नीकी * कहौ बात सखि अपने जीकी ॥
मैं रीझी यापर अतिभारी * क्यों खोटी जो कृष्ण पियारी ॥
जो हरि कोटि मदनमन मोहैं * सो मोहन वाको मुख जोहैं ॥
जैसे स्याम नारि यह तैसी * भेद करै सो सखी अनैसी ॥
नागरि नवल नवल के नागर * सुन्दर यह जोरी छबिसागर ॥
सुनहु सखी ऐसे ये राजैं * एक प्राण द्वै तनु सुखकाजैं ॥
एकहु पलक कबहुं नहिं न्यारे * सोवत जागत जान हमारे ॥
पूरब नेह नयो यह नाहीं * देखहु सखी समुझ मनमाहीं ॥
मेरी कह्यो मानि यह लीजै * इनसों भाव प्रीति करि कीजै ॥
इनकी प्रीति प्रीति के माहीं * बिना प्रीति ये जान न जाहीं ॥
जब लग इनसों प्रीति न माने * तब लग इनको प्रीति न जाने ॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ * तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ ॥
दो०-सखी बचन सुनि सखिन के, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सु बैन ॥ ३० ॥

सो०-धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जान्यो भले ॥
हम सब निपट अजान, बात कहति औरै कछू ।३०॥
हम इनको ऐसो नहिं जाने * ये ब्रज आय गुप्त प्रकटने ॥
श्यामा-श्याम एक हैं ए री * तैं इनते उपहास सहे री ॥
वे दोऊ इक दूसरि तू री * तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी * तबते प्रीति पुरानत जानी ॥
धन्य श्याम धनि तू धनि श्यामा * हम सब वृथा भईं बिन कामा ॥
श्याम राधिका सहज सनेही * सहज एक दोऊ द्वै देही ॥
सहज रूप गुण पूरण कामी * सुन्दर सहज सहज बनधामी ॥
देखि दुहुँनकी प्रीति बिशाला * भईं बिवश सब ब्रजको बाला ॥
श्यामा श्याम-रंगरस-पागी * सोवति ते मानहुँ सब जागी ॥
उपजी प्रीति दुहुँनकी साँची * दूरि गई दुबिधा मति काँची ॥
भईं युगल रस बश सब गोपी * लाज-शंक-मर्यादा लोपी ॥
सबके नयन रूप रस अटके * श्रीश्यामाबर नागर नट के ॥
छंद-नवल नागर स्याम स्यामा प्रेम मन सबके फँसे ॥
नयन नासा श्रवण रसना अंग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत जगत निशिवासर घरी ॥
नाहिं बिसरत ध्यान कबहूँ सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥ १ ॥
दो०-गईं सकल निज निज सदन, युगल प्रेम रस लीन ॥
बिछुरति नहिं एकहु घरी, जैसे जल अरु मीन ॥३१॥
सो०-रहे स्याम उर छाय, बिन देख दृग कल नहीं ॥
गृह कारज न सुहाय, गुरुजन त्रास न सुरति कछू ॥३१॥
वे कछु कहैं करैं कछु औरै * सास ननँद तब मारब दौरे ॥
कहैं यही पितु मात सिखायो * ऐसोही ढँग तुम्हें बतायो ॥
कहा तुम्हारे मन यह आई * अपनी सुधि बुधि कहाँ गँवाई ॥
तुम कुल बधू लाज नहिं आवै * कहँ लगि कोउ तुम्हे समुझावै ॥
कबकी यमुना न्हान गई हौ * ऐसी अब तुम निडर भई हौ ॥
तुम राधाको संग करति हौ * हरिके पाछे वही फिरति हौ ॥

बड़े महरकी सुता कहावै * यह सब बात उन्हें बनि आवै ॥
उनको सब उपहास उठावत * ब्रज घर २ प्रति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहूं नाम धरैहौ * ब्रज लोगन पैं हमैं हँसैहौ ॥
हम अहीर ब्रजपुर के बासी * ऐसे चलौ होय नहिं हाँसी ॥
लोकलाज कुलकानहिं करिये * फूँकि फूँकि धरणी पग धरिये ॥
ऐसे कहि गुरुजन समुझावैं * लाजकाज मर्याद सिखावैं ॥
दो०-सुनि युवती गुरुजन बचन, बिहँसि रहीं धरि मौन ॥
हरि राधा उपहास को, महिमा जानै कौन ॥३२॥
सो०-कहति तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये ॥
सुख उलूकही रात, रविको तेज न मानहीं ॥३२॥
बिषको कीट बिषहि रुचि मानै * कहा सुधारस स्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन * नँदनंदन सुर श्रुति शिवकोमन ॥
तिनकी महिमा कहा ये जाने * जिनके गुण मुनि गर्ग बखाने ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी * श्यामहिं मिलि कर्म मन बानी ॥
श्याम काम के पूरण हारे * पूरण करि तिनको उर धारे ॥
धन्य धन्य श्यामा बनवारी * यह रसलीला ब्रजबिस्तारी ॥
ऐसे गोपीगण करि ध्याना * करत श्याम-श्यामा-गुणगाना ॥
श्याम रूप श्यामा अनुरागी * रोम रोग ताही रँग पागी ॥
गई सदन मन लागत नाहीं * मनमोहन बिन क्षण युगमाहीं ॥
मनही मन गुरुजन पर खीजै * इन बिमुखन को संग न कीजै ॥
कौन भाँति करि इनसों छूटौं * क्यों वह दर्श सरस सुख लूटौं ॥
बार बार जिय अति अकुलाही * कैसेहु हरिबिन रह्यो न जाही ॥
दो०-धिक गुरुजन कुल कानिधिकधिक लज्जाधिक धाम ॥
धिक जीवन बहु दिननको, बिन सुन्दर घनश्याम ॥३३॥
सो०-पलक कल्प सम जाय, ब्रजबासी प्रभु दर्शबिन ॥
सदन न नेक सुहाय, मन हरिलीनों साँवरे ॥३३॥

अथ बाटके मिलन की लीला ४४

श्रीवृषभानु-कुँवरि बर गोरी * कृष्ण प्रेम उन्मत्त किशोरी ॥

तनु विह्वल मन हरिके पासा * दुरत न हृदय प्रेमपरकासा ॥
चलि यमुना जल आप अकेली * रूपराशि गुणराशि नवेली ॥
दृगन श्याम दर्शन की आसा * तिन्हों मन यह करति हुलासा ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊँ * तौ उरको संताप नसाऊँ ॥
राखों बाँधि हृदयसों लाई * भुजकी दृढ़ करि दाम बनाई ॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो * तैसे लेउँ छोरि उनकेरो ॥
छाँड़ौ नाहिं करै जो कोरी * ऐसे जाति बिचारति गोरी ॥
इतते प्यारी यमुनहिं जाई * उतते आवत घरहि कन्हाई ॥
नीलजलजतनु शोभित आछैं * नटबरवेष काछनी काछैं ॥
दूरहिते देखतही जान्यो * जीवन प्राण तुरत पहिचान्यो ॥
रही मनोहर बदन निहारी * कोटि मदन जापर बलिहारी ॥
दो०-मन आनन्द हुलस्यो हियो, रोम पुलकि दृग बारि ॥
बोली गद्गद्बचन मुख, तनु विह्वल न सँभारि ॥ १ ॥
सो०-चित चोरे कहँ जात, मैं ढूँढ़ति तबते तुमहिं ॥
कहाँ सीखि यह बात, अहो नन्दके लाड़िले ॥ १ ॥
जानत जैसे माखन चोरी * तब वह बात हुती कछु ओरी ॥
बालक हुते कान्ह तब तुमहूँ * भोरी सहज हुती मन हमहूं ॥
मुख पहिचानि मानि मुख लेती * यशुमतिकानि जान तब देती ॥
बसो बास सब ब्रज इकठौरी * गोरस काज कानि नहिं तौरी ॥
अब भये कुशलकिशोर कन्हाई * भई सजग हम सम तरुणाई ॥
माखनते अब चितकी चोरी * लागे श्याम करन बरजोरी ॥
नखशिख अँगचितचोरतुम्हारो * लीनो मन-धन छोरि हमारो ॥
सो अब जात कहाँ तुम लीने * भुजा पकरि ठाढ़े हरि कीने ॥
तुमको नीके करि हम चीन्हे * बनिहै अब मेरो मन दीन्हे ॥
ब्रजमें ढीठ भये तुम डोलत * मोसों सूधे बचन न बोलत ॥
अबतौ मोहिं बूझि घर जैहौ * बिना दिये मन जान न पैहौ ॥
प्यारी यों झगरति पियपाहीं * देहगेहको सुधि कछु नाहीं ॥
दो० बीच करी कुललाज तब, सनमुख आई धाय ॥

बकसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समुझाय ॥ २ ॥
सो०-चित लै गये चुराय, चूक पड़ी हरिते बड़ी ॥
छांड़ि देहु डरपाय, बड़े महरकी कुँवरि तुम ॥ २ ॥
कुलकी लाज अकाज कियो री * कहा करौ अति जरत हियोरी ॥
तब यों कहति पीयसों प्यारी * सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी ॥
देखे बिना तुमहिं दुख पाऊँ * सो यह तुमबिन कहाँ सुनाऊँ ॥
गुप्त रहन मोको तुम भाख्यो * सो आयुस मैं शिर धरि राख्यो ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती * प्राणनाथ तुमहित बस माती ॥
तुमते बिसुख जननके माहीं * रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं ॥
मात पिता अतित्रास दिखावैं * निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं ॥
भवन मोहिं माटीसो लागै * इकक्षण शोच नहीं उर त्यागै ॥
कहँ लगि अपनो बिपति बताऊँ * तुमबिन सुखको अनत न ठाऊँ ॥
सुन्दर श्याम कमलदल लोचन * करहु कुसंगतिको दुख मोचन ॥
अब यह बिनय श्याम सुनलीजै * चरणनते न्यारी नहिं कीजै ॥
कुलकी कानि कहां लगि मानों * यह मन मोहन तुमहिं लुभानों ॥
छन्द-मन लुभानो तुमहिं मोहन और तेहि भावैं नहीं ॥
बिन लखे गिरिधरन सुन्दर कहूं सुख पावै नहीं ॥
लोकडर कुललाज गुरुजनकानि कहँ लौं कीजिये ॥
सिंहशरण कृपालु जंबुक त्रास क्यों सहि लीजिये ॥ १ ॥
दो०-निरखि श्याम प्यारी बदन, सुनि २ बचन सिहाय ॥
प्रेम अधीन बिलोकि अति, हर्षि लई उरलाय ॥ ३ ॥
सो०-शीतल पंकज पाणि, परसि हरयो तनु बिरह दुख ॥
प्रेम बिबश भगवान, बोले प्यारीसों हरषि ॥ ३ ॥
कत दुख पावतिहौ तुम प्यारी * यह लीला तुमहित बिस्तारी ॥
बसत सदा मैं तुम मन माहीं * तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्री बृन्दाबन धन-सुखकारी * है बिहारथल तुम्हरो प्यारो ॥
शीतल सघन कुंज छबिधामा * हम तुम संग मिलें तहँ भामा ॥
दीजो सैन मोहि कहुं आई * तब तुमपै ऐहो मैं धाई ॥

अब गृह जाहु आय है कोऊ * यों संकेत बढ़्यो हित दोऊ ॥
ब्रज यमुना मग बिच दोउ ठाढ़े * प्रेम संकोच अतिहि मन बाढ़े ॥
बिछुरत बनत न रहत तहाँहीं * चितवत चकितचपलचहुँघाहीं ॥
तबहिं युवति ब्रजते कछु आँई * कछु यमुनाते ब्रजको जाई ॥
दुहूं दिशि तरुणिन आवत जानो * मनहीं मन राधिका लजानीं ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई * मिले हांक दै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला * ऐसे टेर कह्यो नन्दलाला ॥
दो०-गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ॥
कहिहौं यहै सखीनसों, कीनो यह अनुमान ॥ ४ ॥
सो०-सखी मोहिं हरि संग, अबहिं आय सब बूझिहै ॥
जानति इनको रंग, मन मन शोचति लाडिली ॥ ४ ॥
उत युवतिन मोहनको देख्यो * जात राधिका ढिगते पेख्यो ॥
कहन लगीं आपुस में बातैं * देखहु सखि प्यारी घातैं ॥
बात करति मिलि संग बिहारी * हमहिं लखत दीन हैं टारी ॥
बूझतही कछु बुद्धि उपैहै * साँची एकहु नाहिं जनैहै ॥
इतहु उतहुते आई नारी * कहति कहाँ तू जात पियारी ॥
अबहिं लखे तोढिग बनवारी * कहाँ गये पछितात कहा री ॥
कहाँ दुराव बनत अब कीन्हे * हम ह्वांते तबहीं लखि लीन्हे ॥
कान्ह कहा बूझत है तुमको * साँची बात कहौ तुम हमको ॥
मन लैगये तुम्हारो चोरी * सो पायो अपनो तुम गोरी ॥
श्यामहिं मिलि अपनो मनलीनो * देखत हमैं टारि क्यों दीनो ॥
सदा चतुरई फबती नाहीं * अबतौ आय परी फँदमाहीं ॥
हमहिं बहुत तुम निदर रहीहौ * कहां रहत हरि कहि निबहीहौ ॥
दो०-कहत रही जब तबहिं तुम, हरि सँग देखहु मोहिं ॥
तब कहियो जो भावई, लीज बेसर खोहि ॥ ५ ॥
सो०-अब हम लेहिंडाय, बेसर दैहौ कै नहीं ॥
कै करिहौं चतुराय, और कछू हमसों अबहुँ ॥ ५ ॥
तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी * तुम सब भई अजान कहारी ॥

मैं मूरख तुम चतुर बड़े री * ऐसेहि बेसरि लेहौ मेरी ॥
यही कहन मोको तुम आँई * इत उतते सब मिल उठि धाई ॥
बेसर एक लेहुँगी कोको * पीताम्बर दिखरावहु मोको ॥
पीताम्बर अरु बेसर लीजै * प्रगट जाय तब ब्रजमें कीजै ॥
तारी एक बजति कर दोऊ * इतनो ज्ञान करो सब कोऊ ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी * धन्य धन्य तेरी महतारी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जानै * बश कीनो घनश्याम सुजानै ॥
अबहीं टारि पठाये तिनको * हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापर निदरत है तू हमसों * कहत न बने हमें कछु तुमसों ॥
अँग अँग बिरचि कपट चतुराइ * निजकर बिधिना तोंहि बनाई ॥
इतनी बुद्धि श्याम कै नाहीं * जितनी है प्यारी तोमाहीं ॥
दो०-श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घर जाय ॥
बेसर छोरति हो सखी, बिन काजै उठि धाय ॥ ६ ॥
सो०-जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परी मोपर सबै ॥
जो तुम हती सुजान, गहती बाँह दुहून की ॥ ६ ॥
कहु प्यारी साँची अब हमसों * कछु तो श्याम कहत हैं तुमसों ॥
हा हा बात कहो सोइ प्यारी * भेद करो तो सौंह हमारो ॥
तोढिगते मोहन हम हेरत * गये उतै ग्वालन को टेरत ॥
तू क्यों ठिठुकि रह मगमाहीं * कहा कह्यो मोहन तोपाहीं ॥
सहज होय हमसों हय भाखौ * उरमें कछू रोस जिनि राखौ ॥
मैं यमुना तट जात रही री * ब्रजते आवत तुम्हैं लही री ॥
मैं सुनि सन्मुख दीठि न खोली * हाँ नाहीं कछु मुख नहिं बोली ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई * तुम मेरी बेसर को धाई ॥
दो०-तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनु लाड़िली सुजान ॥
हम मानी तेरी कहो, तू मति रिस जिय आन ॥ ७ ॥
सो०-लीनो कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाड़िली ॥
झूँठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै ॥ ७ ॥
परखन लगी तुमहिं मग माहीं * तिरछे आय गये हरि पाहीं ॥

मैं तुमहों तन रहो निहारो * उन पूँछ्यो मोहिं ग्वालकहाँरो॥
सुनि यह बात युवति सकुचानो * कछु तो परति साँचसो जानो॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई * यह तो हमहूं श्रवण सुनि पाई॥
अब चलिहै यमुना के धामा * संग चलै हमहूँ सब श्यामा॥
चूक परी हमसों यह तेरी * नाम लियो वेसरिको ए री॥
अहो सखो तुम निपट अनैसी * जानति मोहिं आप हौ जैसी॥
झूँठहि धाई दोष लगावन * अब लागी मोको दुलरावत॥
क्षणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी * हौ तुम बड़ी पेटकी जैसी॥
यह सुनि हँसति चलीं ब्रजनारी * गंई यमुनते गृहको प्यारी॥
ऐसे सखियन को बहरायो * कृष्णा सनेह न प्रकट जनायो॥
नागरि श्यामा श्याम सनेही * चतुर श्याम श्यामा के नेही॥
श्यामा बसति श्याम तनु माहीं * बसत श्याम श्यामामनमाहीं॥
नन्द सँकेत गये घर दोऊ * मात पिता कछु जान न कोऊ॥
कैसेहू करि दिवस बितायो * निशि निघटे रसबिरह सतायो॥
अति आतुर दोऊ मनमाहीं * क्योंहूं नींद परति है नाहीं॥
दो०-बिरह नदो निशि तमसलिल, पैरत थके निहार॥
बूड़्यो मणि तमचर कढ़्यो, मिल्यो पार भिनुसार॥
सो०-सुनि तमचर को टेर, अति आनन्द दुहूँनमन॥
अतिही उठे सबेर, लगी चटपटी मिलनकी॥ ८॥

❁ अथ संकेतके मिलन की लीला ४५

श्याम उठत लखि जननी जागी *हरिमुखकमलनिरखिअनुरागी॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे * आज कहा तुम उठे सबारे॥
उत्तम जल भरि दीनी झारी * अति आतुर हरि करी मुखारी॥
बिबश श्याम प्यारी रस छाके * मग्न ध्यान बृषभानु सुताके॥
उत वृषभानु सुता सुकुमारी * उठी प्रात वह भाव बिचारी॥
ग्रीवासों मोतिन लर तोरी * आँचर बाँधि मातकी चोरी॥
यहै ब्याज अपने उर धारयो * कुंजधाम बन जान बिचारयो॥
आँगनगईभवनफिरिआँई आई * गई भवन फिरि आँगन धाई॥

जात बनै न रह्यो नहिं जाई * इत उत फिरत भुवन बितताई ॥
मनहिं कहतिकब मिलहिं कन्हाई * कालिह गये बन धाम बुलाई ॥
मात कह्यो क्यों उठी सबारी * जाति कहाँ प्रातहि तू प्यारी ॥
आज कहा इत उत तू डोलै * मुखते कछू बचन नहिं बोलै ॥
दो०-अति नागरि मोतीलरी, राखी प्रथम दुराय ॥
ताही मिसि करिकै सचुप, बोलति नाहिं डराय ॥ १ ॥
सो०-पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीव भूषण बिना ॥
तब जानी यह बात, खोई कहुँ मोती लरी ॥ १ ॥
जननी भई तबहिं रिसहाई * कण्ठसरी तैं कहां गँवाई ॥
मोतिनको गजरा छबिछायो * बड़े मोलको परम सुहायो ॥
तेरे लिये महर बनायो * मैं तोकों हितकरि पहिरायो ॥
कौने लियो कहाँ तैं गेरयो * कालहि तेरे तौ गर हेरयो ॥
बूझे तोहिं जवाब न आवै * कह शोचति फिर बेग बतावै ॥
सुनि राधिका मातकी बानी * मन बिहँसति ऊपर भय मानी ॥
बोलति नहीं हृदय हर्षाई * कहति भली बुधि मोकहुं आई ॥
अबहीं मोकों खीझि पठैहै * यामिस जान श्याम पै ह्वैहै ॥
कहति मातसों तब भय मानी * मोंहि नहीं सुधि कहां हिरानी ॥
कालिह सखिन सँग यमुनान्हाई * तहाँ कहूं धौं तिनहिं चुराई ॥
कैधौं गिरि कतहूं जलमाहीं * यह तौ मैं कछु जानति नाहीं ॥
कालहीते शोचति पछिताई * तेरे डरतें कह्यो न जाई ॥
दो०-नेकु नींद नहिं निशि परी, तेरी सौं सुन मात ॥
याही डरते आज हौं, उठी बड़े परभात ॥ २ ॥
सो०-सुनत सुताके बैन, महरिचकित मुख लखिरहीं ॥
कृष्ण प्रिया गुण ऐन, कोऊ पार न पावई ॥ २ ॥
तब जननी करि क्रोध कही री * मैं बरजत तुहिं हारि रही री ॥
फिरति नदी बन डगरनमाहीं * काहूको शंका तुहिं नाहीं ॥
बहुत तात तुहिं लाड़ लड़ाई * नोखी सुता महरके जाई ॥
बरजति मैं जु करति तू सोई * भली करी मोतिनलर खोई ॥

एक एक नग परमसुहायो * लाखटका दै मैं जु मँगायो ॥
जाके हाथ पर्‌यो सो दैहै * घर बैठे निधि पाय गँवैहै ॥
भरि भरि नयन लेति है माता * मुखते कछू न आवति बाता ॥
रीतो गरो निहारति जबहीं * हियो उमँगि आवत है तबहीं ॥
कहा करौं जो खोय गई री * तू कत खीझति बिकल भई री ॥
लैहौं और मँगाय बबासों * देति नहीं क्यों और डिबासों ॥
करिहै कहा सेंति जो राखे * तादिन तोहिं कितक धौं भाखे ॥
रोवति कहा औरही नाहीं * दे निकासि पहिरौं गरमाहीं ॥
दो०-सुनु राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहिं ॥
चौकी हार हमेल कछु, नहिं पहिराऊँ तोहिं ॥ ३ ॥
सो०-लाखटकाको हानि, करी आज तैं लाडिलो ॥
अब नहिं देहौं आनि, जबलौं वह ल्यावै नहीं ॥ ३ ॥
अबतौ घर पैठन तब पैहै * जलजसरी जो खोज लै ऐहै ॥
जा धौं देखि कहूँ जो पावै * तबहीं तोहिं भलाई आवै ॥
यमुना गई संग तब कोही * बूझति नहीं जाय किन ओही ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊँ * कहँलगि सबके नाम गनाऊँ ॥
चंद्रावलि ललितादिक नारी * हतीं सकल ब्रजगोपकुमारी ॥
देखहु जाय यमुनतट हेरी * जहाँ राखि मैं न्हात रही री ॥
युवती एक रही टक लाई * पूँछि देखिहौं वाको जाई ॥
जैहै कहाँ जलजसरि मेरी * तिनहीं लल भली सुधि ए री ॥
आज अबेर लगैगी मोहीं * ढुँढ़ोगी ब्रज घर घर ओहीं ॥
ऐसे करि मातामति भोरी * हर्षि चली वृषभानुकिशोरी ॥
निधरक चली सदनते प्यारी * मन अटक्यो बन कुंजबिहारी ॥
मनहीं मन यों शोचति जाई * कैसे हरिसों देहुँ जनाई ॥
दो०-बार बार नँदनंद इत, आतुर जोहत राह ॥
प्यारीमुख शशिउदयको, नयनचकोरन चाह ॥ ४ ॥
सो०-भरे बिरह रसमाहिं, क्षणमंदिर द्वारे क्षणक ॥
फिरि फिरि आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी ॥ ४ ॥

जननी करत रसोई आतुर * लखि २ जात श्यामघन चातुर ॥
कहा अबेर करत तू मैया * भूँख लगी मोहिं कहत कन्हैया ॥
यशुमति कह्यो तात बलिजाई * अब विलंब नहिं बैठहु आई ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई * बोलि लेहुं अरु हलधर भाई ॥
सादर कह्यो श्याम बलभैये * दाऊ जू जेवनको ऐये ॥
मोकों अबहिं नहीं रुचि भैया * सखनसंग तुम खाहु कन्हैया ॥
संग सखन लै तब मनमोहन * जेंवनको बैठे सब गोहन ॥
षरटस व्यंजन सरस सँवारे * परसि धरे रोहिणि पनवारे ॥
श्याम सखनको आयसु दीनो * आपनहूं कर कौरहि लीनो ॥
तबहीं कोकिलके सम बानी * बोलि उठी राधा सुखदानी ॥
नंदमहर पिछवारहि आई * झूंठहि ललिताको गुहराई ॥
वृन्दावनमग जाति अकेली * आवहु बेगि तुमहुं सँग हेली ॥

दो०-बिन जेयें मोहन उठे, करते कौर गिराय ॥
जेंबतही छोंडे सखा, चले बनहिं अतराय ॥ ५ ॥

सो०-देखि चकित दोउ मात, चौंकि रहे सिगरे सखा ॥
कहत कहाँ चलिजात, अतिआतुर गोपाल तुम ॥ ५ ॥

अबहीं ग्वाल गयो कहि मोहीं * बनमें गाय बियानी लोहीं ॥
मैं जेवन बैठ्यो बिसराई * सो सुधि मोहिं अबहिं व्है आई ॥
तुम जेंवहु मैं देखहुं जाई * करी श्याम तिनसों चतुराई ॥
लोही मेरी गाय बियानी * यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मनमनमाहीं * नहीं गाय बछरा व्हाँ नाहीं ॥
है प्यारी रानीही राधा * हम जानो यह बात अगाधा ॥
जननी नहीं कछू यह जानी * बार बार कहिकै पछितानी ॥
भूँखे श्याम गये उठि धाई * राज करौ यह गाय बियाई ॥
गई सैन दै बन श्रीश्यामा * पहुँचे तहाँ जाय घनश्यामा ॥
देखत हर्ष भये मन दोऊ * फूले अंग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अंकममाला * कनकबेलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुंज सुहाई * कोटिकामरतिछबिहिं लजाई ॥

दो०-नवल कुंज नव नागरी, नव नागर नँदनंद ॥
प्रेमसिंधुमर्याद तजि, मिले उमँगि आनंद ॥ ६ ॥
सो०-बिलसत मदनबिलास, कोटिमदन मनकेमथन ॥
युगल रूपकी रास, नित्य बिलास बिलासनिधि ॥ ६ ॥
नागर श्याम नागरी श्यामा * शोभित कुंजकुटी छबिधामा ॥
चितवत दुरिदुरि नयन लजो है * सो छबि बर्णि कहै कबि को है ॥
रीझे श्याम नागरी–छबिपर * नागरि निरखतश्याम सुभगबर ॥
देहदशाकी सुरत बिसारे * अरस परस दोउ रूप निहारे ॥
शोभित बदन महाछबि छाये * शिथिल अंग श्रमबिंदु सुहाये ॥
इंदीवर राजीव कमल जनु * फूलि रहे मकरंद भरे मनु ॥
बठे कुंजद्वार सुखदाई * कोमल किसलयसेज सुहाई ॥
लटकति चहुँदिशिकुसुमति बेली * फूलि रही तरुडारि नबेली ॥
हरितभूमिछबि बर्णि न जाई * बहत समीर सुखद पुरवाई ॥
आये उमहि मेघ सुखकारी * परत बूँद शीतल श्रमहारी ॥
भीजत सुरंग चूनरी सारी * मन सकुचत लखि रसिकबिहारी ॥
बूँद बरावत मोहन पातन * हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥
दो०-भीजे रस रग प्रेम जल, भीजे दोऊ गात ॥
भीजे अंबर कुंज गृह, श्यामा श्याम सुहात ॥ ७ ॥
सो०-यह अचरजकी गाथ, को मानै को कहिसकै ॥
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुमकुंजतर ॥ ७ ॥
इहिबिधि करि बिलासबनमाहीं * कह्यो श्याम श्यामाके पाहीं ॥
अब गृह जाउ साँझ नियराई * मात पिता करि हैं दुचिताई ॥
यह रसरीति गुप्तकी नीकी * तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥
करते कौर डारि मैं आयों * तुम्हरो बोल सुनत उठि धायों ॥
मेरो प्राण बसत तुममाहीं * इक क्षण तुमको बिसरत नाहीं ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी * कहति मनहिं मन आनंद भारी ॥
अतिसनेह बोली सकुचाई * सुनहु प्राणप्रियतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न घरको * मन अटक्यो नहिं मानत बरको ॥

दृग तुमको देखत सुख पावैं * गृह गुरुजन मुहिं नेकु न भावैं ॥
बरजहु अपनी चितवनि तुम हरि * और मंद मुसकानि मनोहरि ॥
तुम्हरी नेक सहज यह बानी * सहियत है हम सर्वसहानी ॥
बशीकरण है इनके माहीं * बिब्रश भयो मन मानत नाहीं ॥
दो०-ऐसी बिधि परगट करत, दंपति निज अनुराग ॥
भये परम आनंदरस, बदत आपने भाग ॥ ८ ॥
सो०-श्याम लई उरलाय, प्रिया बोधि पठई घरहिं ॥
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥ ८ ॥
करति जननि अवसरे ब्रिशाला * पहुँचे सदन श्याम तिहिंकाला ॥
लीने धाय जाय उर मैया * कहत लालको लेउँ बलैया ॥
करते कौर डारि उठि भागे * सुनत गाय ब्याई अनुरागे ॥
लीही गाय आपनी ब्यानी * ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वह तौ नाहिन मेरी गैया * वृथा भ्रम्यों मैं सुन री मैया ॥
गोवर्धन यमुनातट सारो * वृन्दावन ढूंढत सब हारो ॥
कोऊ सखा संग तहँ नाहीं * फिर्‌यो अकेलो बनके माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कौही * सो पहुंचाय गई घर मोही ॥
सुन यशुदा अति मन पछितानी * धोये पद लै तातो पानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीनो * निरखि मुखारविंद सुख लीनो ॥
लीलासागर कुँवर कन्हाई * सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
ब्रजबासीप्रभु सब–गुण आगर * नंदनंद सुन्दर सुखसागर ॥
दो०-तब श्रीकीरति नंदनी, रूपराशि गुणखान ॥
चली श्यामसुख दै भवन, नागरि नवल सुजान ॥ ९ ॥
सो०-लई खोलिकै हाथ, अंचरते मोतीलरी ॥
सखी मिली इकसाथ, बूझत कहँ तैं लाडिली ॥ ९ ॥
तासौं ब्योरा कछु समुझायो * गई हती यह काज बतायो ॥
कह्यो सखी तब सुन री प्यारी * ऐसो निधरक भई कहा री ॥
ब्रज घर घर तू फिरत अकेली * संग नहीं कोउ सखी सहेली ॥
मोको संग बोलि नहिं लीनी * ऐसे तैं करणी यह कीनी ॥

प्रातहि गई अबहिं तू आई * बीत्यो दिवस निशा नियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं * देखहुँ मोंहि साध मनमाहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानो * मिलवति है यह झूँठो बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा * आवति है करि भोगबिलासा ॥
कहु प्यारी किन हार चुरायो * कैसे जाय तहाँ तैं पायो ॥
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौ * कहै तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नाम लेहि किन लीन्हों * प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुम्हारे कुँवर कन्हाई * तिनसों जाय बिलसि तुम आई ॥
दो०-रसबश कीन्हो श्याम तैं, कहा बनावति बात ॥
कहे देत रसरँग भरे, अरु सोहैं सबगात ॥ १० ॥
सो०-कह बहँकावति मोंहिं, कहाँ हार कहँ ग्वालिनी ॥
तबते जानति तोंहिं, जबते तैंह रिसँग कियो ॥ १० ॥
इन बातन कछू पावति है री * तोंहिं यहै नित भानत है री ॥
देखति मोंहि अकेली जबहीं * नई बात उपजावति तबहीं ॥
बिनही देखे झूँठ लगावै * नाहक मोसों बैर बढ़ावै ॥
सोंह दिये बूझति मैं तोहीं * जोरि कहति कै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी बिरुझानी * तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी * तू जीती मैं तोसों हारी ॥
चली भवन वृषभानुदुलारी * अति अवसेर करति महतारी ॥
गई प्रात राधा नहिं आई * दिवस गयो निशि याम बिहाई ॥
हारकाज मैं त्रास दिखाई * ताते रूप रही कहुँ जाई ॥
ह्वैहै धौं काके घरमाहीं * कहाँ जाउँ मैं ढूँढ़न ताहीं ॥
जाहु हार यह कहि पछिताई * सुतासनेह अधिक अकुलाई ॥
सुनि है बात महर यह जबहीं * मोपर अति रिस करिहै तबहीं ॥
दो०-शोचति जननी बिकल अति, मननलहति विश्राम ॥
उर डराति ताही समय, गई कुँवरि निजधाम ॥ ११ ॥
सो०-देख नहीं उठि धाय, हरषि लई उर लायकै ॥
सुता मातु उर लाय, शोच मिट्यो धीरज भयो ॥ ११ ॥

ले री मात हार मैं पायो * जा कारण तैं मोहि त्रसायो ॥
मनहींमन कीरति सकुचाई * पोच करी मैं याहि रिसाई ॥
अतिपुनीत राधिका प्रवीनी *कृष्णमिलनहित यह मति कीनी ॥
अगम अगोचर हैं प्रभु जोई * ब्रजबनितन बश कीन्हे सोई ॥
जो प्रभु शिवसनकादिक ध्यावैं * ब्रजगोपिनसँग सो सुख पावैं ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी * निगमनहूं ते अगम न भारी ॥
प्रीति–बिबश सबते गिरिधारी * राजा रंक पुरुष कहँ नारी ॥
देवकि–उदर प्रीतिबश आये * प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये ॥
प्रीति–बिबश बन धेनु चराई * प्रीतिबिबश नँदकुँवर कन्हाई ॥
प्रीतिहि–के बश दही चुरायो * प्रीतिबिबश ऊखल बँधवायो ॥
प्रीति–बिबश गोवर्द्धनधारी * प्रीतिबिबश नटवर बनवारी ॥
प्रीति-बिबश गोपिनसँग कामी * प्रीतिबिबश बृन्दावन–धामी ॥
दो०-श्याम सदा बश प्रीतिके, तीनिभुवन बिख्यात ॥
बिना प्रीति नहिं पाइये, नंदमहरको तात ॥ १२॥
सो०-प्रीति करहु चितलाय, ब्रजबासी प्रभुपदकमल ॥
कहत संत श्रुति गाय, प्रभुहिं रीझ है प्रीतिकी ॥ १२॥

अथ प्यारी के घर मिलन की लीला ४६

भये श्याम नागरिवश ऐसे * फिरति छाँह संगहिं संग जैसे ॥
बदन कमल–रस रूप लुभाने * रहत शिलीमुख ज्यों मंडराते ॥
बचननादरस मृग ज्यो गीधे * नैन कटाक्षबंक शर बीधे ॥
कबहुं श्याम यमुनातट जाहीं * बिन प्यारी देखे अकुलाहीं ॥
कबहुं कदम चढि मग अवलोकैं * कबहुँ जाय बनकुंज बिलोकैं ॥
गृह बन लगत कहूँ मनमाहीं * मिलनप्रकान चहत चितमाहीं ॥
तब वृषभानु पुरातन आवैं * मुरली मधुर बजावैं गावैं ॥
प्यारी प्रकट श्यामगति देखी * मनहीं मनहिं सिहात बिशेखी ॥
अतिअनुरागभरे दोऊ नागर * गुण-सागर रसरूप–उजागर ॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे * शशि चकोर अंबुज अलि जैसे ॥
चलि यमुना वृषभानुदुलारी * शोभित संग नवल ब्रजनारी ॥

देखे नन्द सुवन तेहि खोरी * व्याकुल प्रेमबिकल मति भोरी ॥
दो०-सखिन संग लखि नागरी, मन डरपे सकुचाय ॥
श्याम परे फँद कामके, कौन कहै समुझाय ॥ १ ॥
सो०-सखियन के संकोच, बोलि सकति नहि बचन मुख ॥
हृदय भयो अति शोच, देखि बिरहव्याकुलहर्माँहि ॥ १ ॥
इतहि सखिनसों बात बनावै * उतहि श्यामको भाव जनावै ॥
मुख मुसुकाय सकुच पुनि लीने * सहजहि अलकनिरबारन कीने ॥
एक सखी यमुनासों आवति * ताहि भेटि यों बचन सुनावति ॥
मेरे सदन आइयो आली * हर्ष भये यह सुनि बनमाली ॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीनो * श्याम सुजान जान सो लीनो ॥
हर्षि गये तब निजगृह मोहन * प्यारी चली सखिन के गोहन ॥
चतुर सखी मनमें लखि लीनो * भाव कछू हरिसों इन कीनो ॥
हरुवे आपस में बतरानी * हरितन लखिकछु यहमुसकानी ॥
पुनि मुसकाय कमलमुख फेरयो * सदन बुलाय सखी को टेरयो ॥
गये श्याम उत हर्ष बढ़ाई * ये अति चतुर करी चतुराई ॥
और भाव कैसो गन कोऊ * आज रैनि मिलि हैं ये दोऊ ॥
लै यमुनाते जल अतुराई * सखियन सँग प्यारी घर आई ॥
दो०-भाव कियो निशि आय हैं, मेरे मोहन आज ॥
अति हर्षित अंगन सजति, भूषण बसन समाज ॥ २ ॥
सो०-सहज रूपकी खान, अंग सिंगारति लाडिली ॥
को करि सकै बखान, त्रिभुवन पति हरि वल्लभा ॥ २ ॥
अंग सिंगार कियो हरि प्यारी * वेणी रचि निजपाणि सँवारी ॥
मोतिन माँग जराऊ टीको * कियो बिंदु बंदन को नीको ॥
लोचन अंजनरेख बनाई * श्रवणन तरवन की छबि छाई ॥
नासा नथ अतिही छबि छाजै * नागबेलि रँग अधरन राजै ॥
सुभङ्ग अङ्ग सब नौसत साजैं * सुरँग सुगन्ध बसन शुभ भ्राजैं ॥
मनमोहन को पंथ निहारै * कबहुँक उत्कण्ठा जिय धारैं ॥
भयो वालशशि अस्त निहारी * कहति कि अब ऐहैं गिरिधारी ॥

आवन पैहै कै धौं नाहीं * कै आवत व्हैहै मगमाहीं ॥
कैधौं तात मात भय करिहैं * कै आवत मेरे घर डरिहैं ॥
आवैंगे कै धौं हरि नाहीं * यों शोचति प्यारी मनमाहीं ॥
कबहूं रचि रुचि सेज सँवारे * हरि एहैं मन हर्ष बिचारे ॥
सुमन सुगन्ध सेजपर धारै * पुनिपुनिकरिअभिलाषनिहारै॥
सो०-आवैं कबहुँ अचान कहिं, जो मोगृह घनश्याम ॥
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पाँवडे धाम ॥ ३ ॥
दो०-प्रकटे कृपानिधान, यो अभिलाषा करतही ॥
को कहि सकै बखान, भयो जु सुख लखि दुहुंनमन ॥ ३ ॥
वह छबि कापै जाति बखानी * वह रस झिझक मंदमुसकानी॥
वह मृदु मधुर परस्पर बानीं * वह संयोग प्रेम सकुचानी ॥
वह शोभा वह चितवनि बाँकी* वह रस प्रेम उमँग दुहुंधाँकी ॥
वह सुख श्रीराधा–माधव को * जो कहिसकै आहि जग कबिको॥
जाकी महिमा बेद न जानैं * कबि ताको किहिभाँतिबखानैं।
श्यामा श्याम सेजपर सोहैं * अरस परस दोऊ मन मोहैं॥
गुण आगर छबि सागर दोऊ * कोटिकामरतिसम नहिं सोऊ॥
मत्त प्रेमरस बिबश बिहारैं * युगल परस्पर अंग सँवारैं ॥
लटपटि पाग सँवारति प्यारी * अलक सुधारस श्रीगिरिधारी॥
रसबिलास दोऊ अनुरागे * आलिंगन–चुम्बन–रस पागे॥
हास बिलास बिबिध रस रीती * इहि सुख रैन याम त्रय बीती॥
अतिरस मत्त युगुल अलसाने * पुनि पौढ़े दोऊ लपटाने ॥
दो०-निशि निघटी तमता मिटी, उडुगण ज्योति मलीन ॥
गये कुसुम कुम्हिलाय कै, भई दीप छबि छीन ॥ ५ ॥
सो०-बिकसे सरस सरोज, भयो पबन शीतल सुरभि ॥
धरी उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते ॥ ४ ॥
सरस वचन बोली तब प्यारी * जागहु प्राणनाथ बनवारी ॥
भयो प्रातको समय कन्हाई * प्राचीदिशि पीरी पर आई ॥
चन्द मलिन चिरई चुचहानी * अलि छूटे कुमुदिनि सकुचानी॥

बोले तमचर जहँ तहँ बानी * मिले कोक कोकी सुख मानी ॥
उठहु प्राणपति सदन सिधारो * है ब्रज घर २ घेर हमारो ॥
लगी रहति परखति ब्रजनारी * जागहिं जनि गुरुजन भयभारी॥
सुनत उठे मोहन मुसकाई * चले सदन अपने अतुराई ॥
गृहते निकसत सखियन जानो * देखि दर्श तनुदशा भुलानो ॥
प्रकट दर्श दै गये कन्हाई * यह उनकी मनसाध पुराई ॥
सीस मुकुट मोतिन की माला * पीत बसन कटि नयनबिशाला॥
स्याम बर्ण तनु सुन्दरताई * अंग अङ्ग प्रति बर्णि न जाई ॥
देखि रूप मन रह्यो लुभाई * निकसि गये गृह कुँवर कन्हाई॥
दो०-बार बार जिय लाडिली, यहै शोच पछितात ॥
गये श्याम आरस भरें, नेकु न सोये रात ॥ ५ ॥
सो०-देखैं जनि सखि कोय, श्याम गये मोसदनते ॥
मैं राख्यौ है गोय, अब लगि यह रस सखिनसों ॥ ५ ॥
देख्यो जाय पँवरि है प्यारी * जहाँ तहाँ ठाढ़ी ब्रजनारी ॥
सकुचि गई चिंता उपजाई * बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी * सो इन आज प्रकट करि हेरी ॥
निकसे स्याम हमारे घरसों * इन जान्यो व्हैहै अटकरिसों ॥
नितही नित बूझति ये आई * मैं निढरयो इनको सतराई ॥
अबतो श्याम प्रकट इन देख्यो * करिहैं मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तो दाँव भलो इन पायो * अब कैसे करि जाय छिपायो॥
अबही बूझहिंगी सब आई * कह करिहौं इनसों चतुराई ॥
प्रकट करौं तौ होय न नीती * राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीति॥
शोच परयो कछु बात न आवै * बार बार मन प्रभुहिं मनावै॥
प्राण नाथ हरि होइ सहाई * नाते मेरी पति रहि जाई ॥
जैसे बोध सखिन को होई * दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥
दो०-ऐसे शोचति लाडिली, कबहूं प्रभुहिं मनाय ॥
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेम मग्न व्है जाय ॥ ६ ॥
सो०-भयो बोध उर आय, सुमर रही मन भावती ॥

कहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हर्षी नागरी ॥ ६ ॥
परम कुशल राधे हरि प्यारी * रच्यो सखिनको बोध बिचारी॥
अति आनन्द पुलकि तनु आयो * शोच मोह उरते बिसरायो ॥
जो छबि सुन्दर कुँवर कन्हाई * गये प्रात सखियन दरसाई ॥
उनसों सोई रूप बखान्यो * यह बिचार प्यारी उर आन्यो॥
प्यारी प्रियके गर्ब गहेली * अङ्ग अङ्ग छबि-पुँज-भरेली॥
बैठी सदन बिराजत रूरी * स्याम-सनेह-सुधारस-पूरी ॥
करति परस्पर सखि परहासा * कहत चलौ राधा के पासा ॥
व्हैहै निधरक घरमें वैसी * देखहिं चलौ बदन छबि कैसी ॥
कैसे अङ्ग अभूषण कैसी * कछु बदले कै धौं हैं ऐसी ॥
आज रैंन हरिसों रति मानी * कहिहैं कहा सुनैं चलि बानी ॥
राधागृह गवनी ब्रजनारी * गई जहाँ वृषाभानु-दुलारी॥
देखि नागरी मुख नहिं बोली * जान्यो आई करन ठठोली ॥
दो०-सहज रही बोली नहीं, कछू बदनसों बैन ॥
निकट बुलायो सखिनको, नयननहोंकी सैन ॥ ७ ॥
सो०-इत लीन्ही इन जान, परम चतुर आली सबै ।
यह कछु रचति सयान, देखि हमैं बोली नहीं ॥ ७ ॥
अपनो भेद कछू नहिं देहै * कहा बोध रचिकै धौं कैहै ॥
अपनि जाँघ बल चोर चुरावै * कैसेहु प्रकट न काहु जनावै ॥
निधरक भई स्याम सँग पाई * भूलहु मत याकी लरिकाई ॥
निरखौ भ्रुकुटी त्योर निहारी * कहै कहा धौं बात सँवारी॥
राखति गर्ब तुमहुं सब कोऊ * देखहुं बोलि नहो किनकोऊ॥
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजबारी * सुनौ अहो वृषभानु कुमारी॥
आज कहा मुख मूँदि रही है * कापर रिस करि मौन गही है॥
हमसों कहति नही सो ए री * हम तौ संग सखी हैं तेरी॥
क देवन को ध्यान धरयो री * कै सुभाव कछु यहै परयो री॥
जब आवति हम तेरे प्यारी * तब तव यहै धरनते धारी॥
तू दुराव कत राखति हमसों * हमहूँ कछु राखति हैं तुम सों॥

ऐसो शोच कहा मनमाहो * जो जबाब तोंहि आवत नाहीं ॥
दो०-कछु दिनते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधै मौन ॥ ८ ॥
सो०-अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति नहीं ॥
ऐसे कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी ॥ ८ ॥
मनहीं मन जानति सब प्यारी * मोसों हँसी करति ब्रजनारी ॥
परम प्रबीण सकल गुणखानी * बोली मधुर मनोहर बानी ॥
सुनहु सखी बूझति कह हमसों * कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों ॥
आज प्रात इक चरित नयो री * जात इतै कछु दृगन लख्योरी ॥
नीके नेकु न देखन पाई * तबहीते मन रह्यो भुलाई ॥
कै घनश्याम कि श्याम कन्हाई * यहै शोच उर रह्यो समाई ॥
वक पंक्ती कै हैं गजमोती * पीत दुकुल की दामिनिजोती ॥
इन्द्र शरासन कै बनमाला * सीस मुकुट कै धौं अरिब्याला ॥
मन्द मधुर जलधर की गाजत * कै पग धौं नूपुर धुनि बाजत ॥
देखे आज श्याम जबहीते * परयो यहै धोखा तबहींते ॥
कहा कहौं हरिकी चपलाई * ऐसो रूप गयो दरसाई ॥
भरी श्याम रस कुंबरि सयानी * कहति सखिनसों निधरकबानी ॥
दो०-सखी कहति सब आपमें, सुनहु न याकी बात ॥
प्रकट करन आई जु हम, आपहि प्रकटत जात ॥ ९ ॥
सो०-हम देखे जिमि श्याम, तेंसेही इनहूं लखे ॥
दोष देत बिनकाम, यह सूधी हमही कुटिल ॥ ९ ॥
इतनहिं रहौ और जनि भाखौ * जो चाहौ अपनो पति राखौ ॥
इनसों तुम चाहति हौ जीतो * मनते गर्ब करौ यह रीतो ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी * को याकी बुधि सकै बखानी ।
हम याको दासीसर नाहीं * देखहु सखी समुझ मनमाहीं ॥
हम देखति कछु और सुभाऊ * यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी अस्तुति कहा बखाने * इनहीं भले श्यामको जाने ॥
तबहँसिकह्योसखिन सुनप्यारी * तैं जो लखे सो हैं बनवारी ॥

प्रातहिते जो आज निहारे * गये कान्ह वे मेघन कारे ॥
मोर मुकुट सिर मोर न होई * कटि पट पीत न दामिनि सोई॥
मुक्तमाल बनमाल सुबेसू * नहिं बकपांति न धनुष सुरेसू ॥
पग नूपुर धुनि गरजनि नाहीं * मति राखौ धोखो मनमाहीं ॥
देखेते प्रातहि गिरिधारी * काहेको शोचति मन प्यारी॥
दो०-धनि २ ब्रजकी नारि तुम, हरि छबि लखति अनूप ॥
मोंहि होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥१०॥
सो०-तुम देखति हरिगात, कैसे दृग ठहराय सब ॥
मोपै लखे न जात, करि हारी केतौ जतन ॥१०॥
तुम दर्शन पावति री कैसे * मोहूँ श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तौ अति छबि चपल कन्हाई * तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसे रूप हृदय मैं राखौ * मोसों सखी सांच सब भाखौ॥
मैं देखन पावति नहिं नीके * रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू बृषभानु दुलारी * धनि तुव पिता धन्य महतारी ॥
धनि सो दिवस रैन सो बारा * जब तैं लीन्हो री अवतारा ॥
धनि तेरे बश कुंजबिहारी * धनि तू बश कीन्हे गिरिधारी॥
भाव भक्ति मति रति घन सोऊ * एक स्वभाव धन्य तुम दोऊ॥
तोहिं श्याम हम कहा दिखावैं * तू हरिको हरि तोको भावैं ॥
एक जीव द्वै देह तुम्हारी * वे तोमैं तू उनमैं प्यारी ॥
उनकी पटतर को तू दीजै * तेरी पटतर उनको लीजै ॥
सुधा सुधा गुण क्यों बिलगाई * गूँगे को गुरु कह्यो न जाई ॥
दो०-तू उनके उरमें बसी, वै तेरे उरमाहिं ॥
अरस परस ज्यों देखिये, दर्पण दर्पण छाहिं ॥११॥
सो०-कहो कौनपै जाहिं, तुम दोउ निर्मल गात अति ॥
वे तेरे रँगमाहिं, तू उनके रँगमें रँगी ॥११॥
नीलाम्बर श्यामा छबि तेरे * तुम छबि पीतबसन उरकेरे ॥
घनभीतर दामिनी विराजै * दामिनि घनके चहुंदिशि राजै ॥
तुम अनुपम दोऊसन जोरी * नन्द नन्दन बृषभानु–किशोरी ॥

सुनि २ सखियन के मुखबानी * बोली राधा कुँवरि सयानी ॥
सुनि ललिता साँची कहि मोसों * मैं बूझत सकुचति हौं तोसों ॥
मोसों मानत नेह कन्हाई * मेरी सौं कहु मोहिं सुनाई ॥
तुम तौ रहति श्याम सँग नितही * मिलति जाय उनसों जित तितही ॥
उनके मनकी सब तुम जानौ * हा हा मोसों सांच बखानौ ॥
सुनु राधा इतरात कहा री * तोते और कौन है प्यारी ॥
तेरे बश नँदनंदन ऐसे * रहत पबन पंखाबश जैसे ॥
ज्यों चकोर शशिके बशमाहीं * है शरीरके वश परछाहीं ॥
नाद बिबश मृग देखिय जैसे * मनमोहन तेरे बश तैसे ॥
दो०-मिली खरक तू श्यामको, दई धेनु दुहि तोहिं ॥
तेरे बश हरि तबहिते कहा, भुरावति मोहिं ॥ १२ ॥
सो०-बर्णौं कहा सनेह, नेकहु तुम न्यारे नहीं ॥
हौ तुम एकहि देह, वे दक्षिण तुम बाम अंग ॥१२॥

* अथ गर्वब्याज बिरह लीला ४७ *

सुनि प्यारी ललिता मुखबानी * मैं ऐसी जियमें यह जानी ॥
और नहीं कोऊ मोसरिकी * हौं राधा आधा अँग हरिकी ॥
अपनेही बश प्रियको करिहौं * अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं ॥
ऐसे गर्व कियो जब प्यारी * घर घर गई सकल ब्रजनारी ॥
ईहिं अन्तर आये गिरिधारी * गर्व बिभंजन जन-सुखकारी ॥
हरि अन्तर्यामी अविनासी * जानी प्यारी गर्व उदासी ॥
उझकि झांकि प्यारीतन हेरयो * प्यारी देखतही मुख फेरयो ॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं * उझकत फिरत घरन ब्रजमाहीं ॥
मिसही मिस युवतिनको हेरो * नेकु नहीं छाँड़त घन घेरो ॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर * तुम आवत मानत नाहीं डर ॥
ऐसे प्रेम गर्व करि प्यारी * प्राणनाथ तनु नाहिं निहारी ॥
जान्यो द्वारे लगे कन्हाई * बैठि रही अभिमान जनाई ॥
दो०-हृदय श्याम सुखधाम मैं, राख्यो गर्व बसाय ॥
ठौर तहाँ पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय ॥ १ ॥

सो०-जहाँ रहत अभिमान, तहां बास मेरो नहीं ॥
सो राधा उर जान, आप लगे पछितान हरि ॥ १ ॥
तुरतहि गवन तहाँ ते कीनो * नहीं दर्श प्यारी को दीनो ॥
चकित भई प्यारी मन माहीं * इहाँ श्याम आये क्यों नाहीं ॥
आपन आय द्वार पुनि देख्यो * तहाँ नहीं नन्दलालहिं पेख्यो ॥
झाँकतही फिरि गये कन्हाई * मनहीं मन श्यामा पछिताई ॥
मोते चूक परी अति भारी * ताते मोहन मोहिं बिसारी ॥
इकतौ बैठि रही गर्वानी * दूजे मैं हरिसों झहरानी ॥
मेरी बुद्धि जानिकै हीनी * मोसों श्याम निठुरता कीनी ॥
वे बहुनायक कुँज बिहारी * मोसौं उनकै कोटिक नारी ॥
कासों कहौं हरिहिं को लावैं * को अब मोको हरिहिं मिलावैं ॥
भई बिरह व्याकुल अकुलाई * बन्दन सरोज गयो कुम्हलाई ॥
तब आपुन को निठुर कहावै * सुमिरिप्रीतिउरभरिभरिआवै ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै * नयन सरोजनसों जल डारै ॥
दो०-भई बिकल अति नागरी, बिरह बिथाकी पीर ॥
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥ २ ॥
सो०-घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ॥
रह्यो शोच उर छाय, ब्रजवासी प्रभु मिलन को ॥ २ ॥
राधा सदन सखी पुनि आई * देखि दशा मन अति भरमाई ॥
अति व्याकुल तनु वदन मलीना * नीर बिहीन मीन जिमिदीना ॥
कर गहि गहि बूझत ब्रजनारी * कहा भयो तोकहुं री प्यारी ॥
ऐसे बिबश भई तू जाहै * हमैं सुनाय कहति नहिं काहै ॥
अति प्रसन्न देखयो तुहिं तबही * क्यों मुरझाय गई री अबहीं ॥
बहुरि लखे धौं कतहुं कन्हाई * उनही तोहिं ठगौरी लाई ॥
श्यामनाम सुनि श्रवणनि जागी * जान्यो हरि आये अनुरागी ॥
आतुर सखी कण्ठ लपटानी * चूक परी मोतै कहि बानी ॥
अब अपराध क्षमो रिस त्यागी * करुणा करि मुहिं करहु सभागी ॥
चकित भई सब ब्रजकी नारी * रही शोचि राधिकहिं निहारी ॥

शीतल जलते मुख पखरायो * पोंछि आंचरन बचन सुनायो ॥
आज भई कैसी गति तेरी * परम चतुर ब्रजमें तू है री ॥
दो०-भयो अलिनके बचन सुनि, कछुक चेत उर आय ॥
तब जानी एतो सखी, गई हृदय सकुचाय ॥ ३ ॥
सो०-क्यों तुव बदन मलीन, काह तू ऐसी भई ॥
कहु प्यारी परबीन, बार बार बूझति सखी ॥ ३ ॥
बोली तब सखियनसों प्यारी * तुमसों करौं दुराव कहा री ॥
मैं तौ हरिके हाथ बिकानी *उनमोंहितजोकुटिलमति-जानी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी * प्रकट कहौं तुमसों सब बरनी ॥
बैठी ही मैं सदन अकेली * झांके आय द्वार हरि हेली ॥
मैं मनमें कछु गर्ब बढ़ायो * आदर करि नहिं भवन बुलायो ॥
उन मेरे मनकी सब जानी * अन्तर्यामी शारंगपानी ॥
कमल नयन वे गर्ब प्रहारी * जात रहे सखि मोंहिं बिसारी ॥
तबते बिरह बिकल अति कीनो * अहंकार यह फल मोंहि दीनो ॥
चित न रहै कितनौ समुझाऊँ * अब कैसे करि दर्शन पाऊँ ॥
भयो भवन बन मोंकहुँ आली * नहीं सुहावत बिना बनमाली ॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊँ * अब हरिमिलैंसो करहु उपाऊँ ॥
बिन मनमोहन कुँवर कन्हाई * भये सुखद सब मोंहि दुखदाई॥
दो०-गिरि कन्या पति तिलक कर, दाहत अनल समान ॥
शिव सुत वाहन भखन को, भयो हलाहल पान ॥ ४ ॥
सो०-जलधि सुता सुतहार, भयो इन्द्र आयुध सखी ॥
मलयज मनहुँ अङ्गार, शाखा मृगरिपु बसनबर ॥ ४ ॥
सखी दशा मेरी यह है री * भयो काम अब मोको बैरी ॥
वारिज भव सुत प्रियकी चाली * अब नहिं हरिसोंकरिहौंआली॥
ऋतु बिचारि जो मानहिं करिये * सोउजरि जाहु न उरमेंधरिये॥
अब स्वभाव रहिहौं हरि साथा * मोंहिंमिलावहुसखीब्रजनाथा॥
सुनु राधे करनी यह तेरी * हमसों भेद कियौ तैं ऐ री ॥
उनके गुण जैसे नहिं जाने * अवहींते ऐसे ढँग ठाने ॥

एकहि बार मिलो तू धाई * नहिं राखो मर्याद बढ़ाई ॥
तैंही उनको मूंड़ चढ़ायो * तब नहिं हमको भेद जनायो ॥
भवन विपिन सँग डोलनलागी * वे बहुत रुणिरमण अनुरागी ॥
निजकर अपनों महत गँवायो * परवश परि कौने सुख पायो ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मनमाहीं * हित करि मानेगी धौं नाहीं ॥
धीरज धरि कत मरति वृथाहीं * तूहूँ मान करति क्यों नाहीं ॥
दो०-बात आपनी आपने, कर है देख विचार ॥
भई कहा ऐसी बिवश, एरी एकहि बार ॥ ५ ॥
सो०-पुरुष भवँर जिय जान, भोगी बहुत प्रसून को ॥
बिना किये कहुं मान, कौने पिय निजबश कियो ॥ ५ ॥
कहति सखो तुम तो यह बाता * कंप होत सुनि मेरे गाता ॥
मैं तौ मान श्याम को कीनो * ताते इतनो दुख मोहिं दीनो ॥
अबतौ भूलिमान नहिं करिहौं * श्याम मिलहिं तौपाँयनपरिहौं ॥
बिनती करि करि उनहिं सुनाऊँ * यह अपनो अपराध क्षमाऊँ ॥
चूक परी मोते मैं जानौ * उनको यह अपराध न मानौ ॥
वे आवत हैं मेरे नीके * मैंहो गर्व धरयो सखि जीके ॥
मेरे गर्बते कहा सरयो री * मिट्यो हृदय सुखदुःखभयोरी ॥
जाते हानि आपनी होई * कहौ सखी कोज क्यों सोई ॥
मान बिना नहिं प्रीति रहै री * प्रकट देखि मोहिं कहा कहै री ॥
धाय मिलेकी गति तेरोसी * भई अधीन फिरति चेरीसी ॥
अपनो भेद उन्हें तैं दीनो * तब दुराव हमहूंसों कीनो ॥
भयबिनप्रीति होति नहिं प्यारी * सच मानहि सखि सीख हमारी ॥
दो०-पुनि पुनि सिखबति तुम सखी, मानकरन को मोहिं ॥
मन तो मेरे हाथ नहिं, मान कौन बिधि होहिं ॥ ६ ॥
सो०-उमँग भरत दिन रात, श्याम गुणनि अभिलाषकरि ॥
मन नहिं मानत बात, मान सजौं कैसे सखी ॥ ६ ॥
मन मोसों अब बाम भयो री * कहा कहौं हरिसंग गयो री ॥
अब अपनो हित उनहीं जानौं * मुदित मूढ़ अपमान न मानौं ॥

इन्द्रिय सब स्वारथ रसपागीं * गंईं संग मनहीं के लागीं ॥
घर फूटे क्यो रह्यो परे री * मनहिं बिना को मान करे री ॥
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं * रही अकेली मैं तनुमाहीं ॥
तापर भयो काम अब बैरी * बिरह अग्नि तनु जारत है री ॥
इतने पर तुम मान करावति * कहौ कौन सखि यह कहनाबति ॥
मैं तौ चूक आपनी मानी * मोहि मिलाबहु श्यामहिं आनी ॥
अबतौ क्योंहूँ मान न करिहौं * ऐसी बात कहै तिहि लरिहौं ॥
अली मोहि नन्द नन्दन भावै * सोइ हितू जो आनि मिलावै ॥
अब जो मिलहिं श्याम बड़भागी * फिरति रहौं संगहि संग लागी ॥
ऐसे कहि प्यारी अतुरागी * दारुण बिरह बिथा उरलागी ॥
दो०-देखि दशा सहि नहिं सकीं, अली उठीं अकुलाय ॥
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये बेग उपाय ॥ ७ ॥
सो०-कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ॥
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी ॥ ७ ॥
सखिन कह्यो तबसुनरी प्यारी * मतहि होय व्याकुल सुकुमारी ॥
अबहिं जाय हम श्यामहिं लावैं * नेकु धीर धरि तोहिं मिलावैं ॥
पटसों पोंछि बदन बैठाई * तर्क बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै * बार बार मुख कान्ह उचारै ॥
सावधान करि सखी सयानी * गई दौरि हरिपहँ अतुरानी ॥
लखि हरिमुख ललितामुसकानी * हरि लखि हँसे दुहूं मन जानी ॥
तब हरि ललितासों मुसकाये * बूझत चितवन नयन चुराये ॥
अति आतुर आई कत धाई * काहे बदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललिता तब मुसकाई * सुनहु चतुर नन्दनन्द कन्हाई ॥
आज एक अचरज लखि पायो * परम बिचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी * बर्णत बनत भाँति नहिं ताकी ॥
रीझि रही मैं ताहि निहारी * रीझहु गे लखि कुंजबिहारी ॥
दो०-मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊँ नैन ॥
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मो बैन ॥ ८ ॥

सो०-एक अनूपम बाग, सुवरण बरण न जाय कहि ॥
उपजत लखि अनुराग, अति बिचित्र बानक बन्यो ॥ ८ ॥
युगल कमल अतिअमल बिराजैं * तापर राज हंस छबि साजैं ॥
द्वै कदली तरु तापर सोहैं * बिन दल फल उलटे मन मोहैं ॥
तापर मृगपति करत बिहारू * मृगपति पर सरवर इक चारू ॥
द्वै गिरिवर सरवर पर राजै * तिनपर एक कपोत बिराजैं ॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले * शोभित ते अधिदिशिको झूले ॥
फूल्यो पुनि कपोत पर नीको * एक सरोज भावतो जीको ॥
तापर एक अमोफल लाग्यो * कीर एक तापर अनुराग्यो ॥
तहाँ एक कोयल द्वै खंजन * तिनपर धनुष सुभग मनरंजन ॥
धनुपर शशि द्वै नागिनि कारी * मणिधर एक नागिनी भारी ॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो * घटत नेह जल कछु कुम्हिलायो ॥
चलि घनश्याम सींचि सो दीजै * शोभा देखि सुफल दृग कीजै ॥
करि बिचार देख्यो गिरिधारी * बनी ललित सब अंग पियारी ॥
दो०-सुनहु श्याम सुन्दर नवल, छैल छबीले लाल ॥
तुम्हैं मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है बाल ॥ ९ ॥
सो०-कहा भयो जो मान, कियो प्रेमके लाड़ते ॥
अति सुन्दरी सुजान, प्यारी जीवन जीवको ॥ ९ ॥
बर्णौं श्रीबृषभानु दुलारी * चित दैं सुनौ लाल गिरिधारी ॥
कहौं प्रथम बेनीरुचिराई * लसति पीठ पाछे छबिछाई ॥
अहिनो मनहुँ कुटिलगति त्यागी * शशिमुखसुधा चुरावन लागी ॥
रेखा अरुण सिंदूर सुहाई * शोभित सीस न जाति बताई ॥
मानहुँ किरण लाल रबिकेरी * तिमिरसमूह बिदारि उजेरी ॥
शोभितकुटिलभ्रुकुटिअतिनीकी * मन हरि लेति भावती जीकी ॥
जगतजीति करि निजबश चारी * मनहुँ मदन धनु धरेउ उतारी ॥
केसर आड़ ललाट सुहाई * मनहूं रूपकी बाढ़ बँधाई ॥
चपल नयन बिच नाक सुहाई * शोभित अधरनकी अरुणाई ॥
मनु युग खंजन बिच शुकशोभा * देखि एक बिंबाफल लोभा ॥

दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा * बर्णित न जातिमहाछबिसीवा।।
सुभग अंग सब भूषण सोहैं * कोटिकाम तिय निरखत मोहैं।।
दो०-अति कोमल सुकुमार तनु, सकल सुखन की सीर।।
तुम बिन मोहन लाल पिय, व्याकुल अधिक अधीर।।१०।।
सो०-भरि भरि लोचन नीर, श्याम २ मुख कहि उठति।।
चलहु हरहु यह पीर, मैं आई लखि धाय कै।।१०।।
प्यारिहिं बिकल सुनत सुखदाई * सहि नहिं सके उठे अकुलाई।।
चले बिहँसि ललिता के साथा * प्रेमहिं के बश श्रीब्रजनाथा।।
प्रेम बिबश प्यारी पहँ आये * देखि दशा मन अति पछिताये।।
परी बिकल तनुदशा बिसारी * प्यारी मुखि देखत गिरिधारी।।
नीलाम्बर निजकरते टारी * कीनो सन्मुख बदन सुधारी।।
जलद पटल मानहुँ बिलगाई * दियो चन्द निकलंक दिखाई।।
भयो चेत परसत पियपानी * सन्मुख दृष्टि परत सकुचानी।।
लई उमँगि भरि अंग कन्हाई * बिकल देखि अँखियाँभरिआई।।
युगल परस्पर लखि सकुचाये * इतनेंहिं बिरह दोउ मुरझाये।।
कंचन बेलि तमाल सुहायो * मनहुं प्रेम रस सुधा सिंचायो।।
हर्षि दुहुँ दिशि मुसकन फूले * परमानन्द फलन करि झूले।।
मुरछन बिरह तुरत बिसराई * लखि यह मिलन सखी हर्षाई।।
दों०-वह चितवनि वह हँसि मिलनि,वह शोभा सुखभार।।
भई बिबश ललिता निरखि, इकटक रही निहार।।११।।
सो०-रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छबिहिं।।
परन न देत निमेख, तृप्ति न क्योंहूं मानहीं।।११।।
ललिता कहति सखिनसों बानी * देखहु सखि राधा अतुरानी।।
कैसे अंग अंग छबि देई * मिले श्याम मन धीर न देई।।
तृषावन्त जिमि अँचबत नीरा * सोऊ तौ धारत पुनि धीरा।।
यह आतुर छबि लइ उर धारै * नेक नहीं दृग इत उत टारै।।
ज्यों चकोर चन्द्रहिं टक लावै * याकी सर सोऊ नहिं पावै।।
होम अग्नि घृत गति है जैसी * याकी दशा देखियत तैसी।।

यदपि श्यामसँग श्यामा प्यारी * छबिनिरखतिअतिआनंदभारी॥
हाव भाव करि पियमन मोहै * बिबिधविलास वदन छबिसोहै॥
बिरह विकल मतितदपिभ्रमावै * मिलहु प्रतीति न उरमें आवै॥
तृषामध्य जिमिसलिलहिं देखो * उपजति अधिकै प्यास विशेखो॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं * स्वप्न कि सत्य ईश यह आहीं॥
बुधि बितर्क बहु भाँति बनावै * देखेहु अन देखे ठहरावै॥
दो०-कबहुं कहति हौं कौन हौं, को हरि करति बिचार॥
यह सुख भावत कौन को, सचकित रहति निहार॥१२॥
सो०-निपट अट पटी बात, समुझि परति नहिं प्रेमकी॥
उरझि सुरझि उर जात, उरझनहीं में सुरझती॥१२॥
उत हरि रूप इतै दृग प्यारी * लखि सखि मनहुं करत है रारी॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ * नेकहुँ हारि न मानत कोऊ॥
इत सुदृष्टि करि काम सुहाई * सैन साजि साजि दृगन चलाई॥
उन उत भूषण जाल अपारा * अङ्ग अङ्ग रचि व्यूह सँवारा॥
इत कि कटाक्ष बाण अतिचोखे * बारहिं बार हनत रण रोखे॥
उत नहिं बदत बिथा अतिसूरे * पुलकि अङ्ग मानहुं शर पूरे॥
इत अनुराग उतहि छबिताई * क्षणक्षणअधिकअधिकअधिकाई॥
छबि तारँग सरिता अधिकानी * लोचन जलनिधि तृप्ति नसानी॥
उत उदार छबि अङ्ग श्यामके * इत लोभी अति नयन बामके॥
ललिता संग सखिनको लीने * दंपत्ति सुख देखति दृग दीने॥
लखि यह मिलनि सखीअनुरागो * कहतिकिधनिधनिदोउबड़भागो
धन्य नवल नवला यह जोरी * धनिधनि प्रीतिनहींरुचिथोरी॥
दो०-धन्य मिलनिधनि यह लखनि, धनिधनिधनिअनुराग॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग॥१३॥
सो०-धनि धनि पुनि पुनि भाषि, हर्षि चलीं सिगरीअली॥
युगल रूप उर राषि, एकहि थल राखे युगल॥१३॥

* अथ परस्पर अभिलाष लीला ४८ *

शोभित श्याम राधिका जोरी * अरस परस निरखत तृण तोरी॥

हरि रीझे प्यारी छबि देखी * भये बिबश उर हर्ष बिशेखी।।
कबहुँ पीतपट डारत बारी * कबहुँ मुरलिवारत गिरिधारी।।
कबहूं माल मुक्तकी वारैं * कबहूँ तन मन वारि निहारैं ।।
कबहुं सिहात देखि मनमाहीं * राधासम शोभा कहुं नाहीं ।।
इनको पलक ओट नहिं कीजै * रूप सुधा नयनन पुट पीजै ।।
कबहुंनिरखि मुखहरिसकुचाहीं* कोटि काम जिनके बशमाहीं ।।
चपल नयन दीरघ अनियारे * हाव भाव नानागति सारे ।।
कोटि कुरंग कुटिल बलिहारी * खंजन मीन डारिये वारी ।।
लोचन नहिं ठहरात श्यामके * कहूं अङ्ग मुख रंग वाम के ।।
भये श्याम प्यारी बश ऐसे * फिरति गुड़ी डोरीबश जसे ।।
इकटक नयन अंग छबि सोहैं * भयो बिबश लखि रूप बिमोहैं।।

दो०-उठे उठत हैं तुरतहीं, बठे बैठत पास ।।
चले चलत सँग वामके, ज्यौं तनु छाँह बिलास ।। १ ।।

सो०-रही सुरत कछु नाहिं, देह दशा भूली सबै ।।
अभिलाषा मनमाहिं, प्यारी होके रूपकी ।। १ ।।

मग्न श्याम श्यामा रसमाहीं * निजस्वरूपकी सुधि कछु नाहीं।।
राधारूप देखि सुख पावै * पुनि पुनि मन अभिलाष बढ़ावै।।
माँगि लेत भूषण प्रिय पाहीं * अपने अंग सँवारत जाहीं ।।
सजि तरिवन कुण्डलहिं उतारैं * बेसरि लै नासापर धारैं ।।
बेनी गूँथि माँग पुनि करहीं * सीस फूल अपने शिर धरहीं ।।
बेंदी भाल सँवारत तैसी * शोभित है प्यारी की जैसी।।
प्यारी दृगते अंजन लेहीं * अतिहित करि अपने दृग देहीं ।।
भूषण बसन सजत सब वैसे * प्यारी अंग बिराजत जैसे ।।
प्यारी को पियकी छबि भावै * हा हा करि यों बचन सुनावै।।
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊँ * मैं पिय तुम्हरो रूप बनाऊँ ।।
हँसतै हँसत माँगि सब लीनो * पियको वेष नागरी कीनो ।।
गोरे कान्ह साँबरी राधा * निरखि परस्पर पूरत साधा।।

दो०-कबहुँ मुरलि लै नागरी, अधर धरति मुसकाय ।।

मन्द मन्द पूरत सुरन, रिझवति मिर्यहिं बजाय ।। २ ।।
सो०-कबहुं बजावत श्याम, अर सपरस अधरन धरत ।।
पूरत हैं मनकाम, सकल काम पूरण युगल ।। २ ।।
हरिको अपने रूप निहारी * आपहिं हरिस्वरूप लखिप्यारी ।।
यह अभिलाषा उर तब धारी * कहतिसुनौ पियगिरिवरधारी ।।
तुम बैठो मानिनि ह्वग ह्वैकै * तुमहि मनाऊँ मैं पद छ्वैकै ।।
मोको यह अभिलाष बिशेषो * सुख पैहौं नयनन यह देषो ।।
सुनस श्याम मन मन मुसकाई * मुरि बैठे करि मानरुखाई ।।
तब प्यारी मन अति अनुरागी * हरिसों मान छुड़ावन लागी ।।
कहत मान तजु प्राण पियारी * मोते चूक परी कह भारी ।।
कहतहि मैं तुम रिस करि मानो * कहा प्रकृति तुव परी सयानो ।।
वृथा हठीलो मान न कीजै * अब करि कृपा मोहिं सुखदीजै ।।
बार बार कर गहि २ भाखै * सीस नवाय चरण पर राखै ।।
आनन आनन जोरि निहारै * पुनि पुनि बचनन अधीन उचारै ।।
क्यों इतनो हठ करत नबेलो * बोलति क्यों नहिं गर्बगहेली ।।
दो०-श्याम कियो हठ जानिकै, यह बिचार हठराय ।।
प्यारी के उर रस ब्रिरह, नेकु देहुं उपजाय ।। ३ ।।
सो०-बैठि रहे निठुराय, नहिं बोलत मानत नहीं ।।
पुनि पुनि परसति पाय, ह हा करि २ लाडिली ।। ३ ।।
नहीं हँसित नहिं मुख तनु जोवैं * बार बार नख भूमिक रोवैं ।।
लखियहचरितहँसतिमनप्यारी * चकित रहतिहरिबदननिहारी ।।
कहतिसुनहुपियअब हँसि बोलौ * तजहु मान यह घूँघट खोलौ ।।
मोहन अब यह खेल मिटावौ * कोटि चन्द्रछबि बदन दिखावौ ।।
नागरि हँसति हृदय दुख भारी * सूधे नहिं चितवैं गिरिधारी ।।
लखि त्रियरूप पीयको प्यारी * बदन बिलोकत चक्रित भारी ।।
अपनो रूप पुरुषको देखी * भई मग्न रस बिरह बिशेषी ।।
मैं नारी वे पुरुष बिहारी * कीधौं पुरुष मैंही वे नारी ।।
बड़ी बिरह-संभ्रमता भारी * भई बिकल तनुदशा बिसारी ।।

निरखत श्याम बिरहकी शोभा * बोलत नहीं अधिक मन लोभा ॥
कबहुं कहति यह ख्यालनत्यागत * मान करत नीके नहिं लागत ॥
कबहुं अंक भरि उरसों लावति * कबहुंकफिरि परि पाँय मनावति ॥
दो०-कबहूँ पाछे ह्वै रहति, कबहूं आगे जाय ॥
कबहूँ उठति बैठति कबहुं, कबहूं लेति बलाय ॥ ४ ॥
सो०-कबहुं कहति है पीय, कबहूं प्यारी कह कहति ॥
धीरज धरत न होय, भई समीपहि बिरहबश ॥ ४ ॥
भई बिरहव्याकुल जब बाला * हर्षि हँसे तब पिय नँदलाला ॥
लई तुरत प्यारी उर लाई * कहति ख्यालहीमें अकुलाई ॥
तुमहीं मान करन मुहिं भाख्यो * भई बिबश कत धीर न राख्यो ॥
मैं तो तुमको भाव बतायो * तुम काहे मनमैं डरपायो ॥
देखि बिरहब्याकुल मुरझाई * बार बार हरि अंकम लाई ॥
अमियबचन कहि शीतल कीनो * बिरहताप उरते हरि लीनो ॥
तब नागरिपिय लखि सुख पायो * मिट्यो बिरह मन हर्ष बढ़ायो ॥
कहति भलो पिय मान दिखायो * मेरो मन अभिलाष पुरायो ॥
त्रियके रूप श्यामछबि देखी * पुनि २ पुलकित मुदित विशेषी ॥
दंपति हर्ष मनहिं मन कीनो * तब नवकुंजचलन चित दीनो ॥
प्यारी मुकुर पाणि लै देख्यो * नटवर रूप आपनो पेख्यो ॥
हँसतहि हँसत मेटि सब डार्यो * सहजरूप अपनो पुनि धार्यो ॥
दो०-चलो हर्षि वनकुंजको, युगल नारिके रूप ॥
इक गोरी इक साँवरी, शोभा परमअनूप ॥ ५ ॥
सो०-अङ्ग अङ्ग छबिजाल, अतिबिचित्र भूषण बसन ॥
श्रीराधा नँदलाल, शोभा अवधि बिलासनिधि ॥ ५ ॥
जात चले ब्रजबीथिन दोऊ * लखि नहिं सकत नारि नर कोऊ ॥
नंदनंदन त्रियछबि तनु काछे * शोभित हैं राधासंग आछे ॥
बार बार पियरूप निहारी * मनही मन रीझति है प्यारी ॥
कहति सखी देखै जनि इनको * बूझे तै कहि हो कह तिनको ॥
तिहूंभवनशोभासुखकी निधि * करिहौं तिनको गोप कवन बिधि ॥

पगनूपुर बिछियाछबि छाजैं * गजगति चलत परस्पर बाजैं ॥
श्याम गौर सुन्दर सुख जोरी * मर्कतमणि कंचनछबि थोरी ॥
भुजभुज कंठ परस्पर राजै * या छबिको उपमा नहिं छाजै ॥
जात युगल बनको सुख पाई * उतते चंद्रावलि सखि आई ॥
दूरहिते लखि रही निहारी * इकटक नयननिमेष निबारी ॥
पुनि पुनि मन बिचार करि जोहै * एक राधिका दूसरि को है ॥
व्रजयुवतिन इक २ करि जान्यो * यह धौं कौन नहीं पहिचान्यो ॥
दो०-और गाँवते यह कहूं, आई है ब्रजमाहिं ॥
अतिहि सलोनी साँवरी, अबलौं देखी नाहिं ॥ ६ ॥
सो०-राधे मन सकुचाहिं, चंद्रावलि आवति निरखि ॥
रही श्याममुख चाहि, ब्रजहीको फेरति हरिहिं ॥ ६ ॥
कहति जाहु पियफिर मुखबाहीं * कहते कर छूटत है नाहीं ॥
उतआवतिलखि सखिहिंलजानी * उतहि श्यामके नेह भुलानी ॥
दुख सुख हर्ष न हरिरसमाती * उत चन्द्रावलि इत रँगराती ॥
कहति निकट देखहु धौं जाई * बूझौं याहि कहाँते आई ॥
देखि श्याममुखछबि मुसकानी * करी चतुरई इन पहिचानी ॥
इनते निधरक और न कोऊ * कैसी बुद्धि रची इन दोऊ ॥
ये दोऊ अति चतुर सयाने * निजकर इन्हे बिधाता बाने ॥
और कहा इनको कोउ जाने * मोसों नहीं परत पहिचाने ॥
सकुच छाँड़ि अब इनहिं जनाऊँ * जानि बूझि काहे निधराऊँ ॥
जो इनको मैं टोंकत नाहीं * जैहैं जोति मनहिं मनमाहीं ॥
ये चतुरई चले छबि दोऊ * प्रकट करौं इनके गुण सोऊ ॥
ऐसे बहुरि इन्हैं नहिं पाऊँ * आज प्रकट कहि लाज लजाऊँ ॥
दो०-कहु राधे यह कौन है, संग साँवरी नारि ॥
कबहुं इन्हैं देख्यो नहीं, अतिसुन्दरि सुकुमारि ॥ ७ ॥
सो०-को इनको नाथ, कौन गोपको ये सुता ॥
भलो बन्यो है साथ, जैसो ये तैसी तुमहु ॥ ७ ॥
मथुराते ये आजहि आई * है इनते कछु प्रति सगाई ॥

एकदिना ललितासँगमाँहों * दधिबेचन हम गई तहाहीं ॥
उनहोंके संग भई चिन्हारी * तबहों पहिचान हमारी ॥
वही सनेह जानिकै आई * ऐसी शील-स्वभाव-सुहाई ॥
मैं गृहते इत आवनलागी * येऊ संग आय अनुरागी ॥
सुन राधा यह सहजसुहाई * शील-सनेह-रूप-अधिकाई ॥
इनको ब्रजमें क्यों न बुलावो * अपने निकटहि आनि जुलावो ॥
कै वृषभानुपुरा कै गोकुल * राखहु इनहिं बुलायसहितकुल ॥
तुम हौ नवल नवल हैं येऊ * दोऊ मिलि श्यामहिं सुख देऊ ॥
ऐसी है यह नारि सुहाई * और-नारिमन लेति चुराई ॥
हमहूँको अब इनहिं मिलावो * नीके इनको बदन दिखावो ॥
हमहिं देखि सकुचत कत प्यारी * हमसों घूँघट करत कहा री ॥
दो०-ऐसे कहि चंद्रावली, गयो श्यामकर जाय ॥
यह कछु अबलौं नहिं सुनो, तियसोंतिय सकुचाय ॥ ८ ॥
सो०-आपहि बदन उघारि, घूँघटपट हाँ तौ कियो ॥
मुखछबि रही निहारि, माने करि लोचन सुफल ॥ ८ ॥
बारहिं बार कहति मुसकाई * चितवति क्यों नहिं बदन उठाई ॥
है मथुरामें बास तुम्हारो * कहा नाम मुख बचन उचारो ॥
कियो राधिका यह उपकारो * दुर्लभ दर्शन भयो तिहारो ॥
कछुइ न मैं पहिचानति तुमको * काहेको सकुचति हौ हमको ॥
कबहुं चिबुक गहि बदन उठावै * कबहुँ कपोल परसि सुख पावै ॥
कबहूं चुटकि कहति मुख फेरौ * नयन उठाय नेकु इत हेरौ ॥
नयन नयनसों हरि नहिं जोरैं * रहे लजाय भावसों भोरैं ॥
चद्राबली देखि मुसकानी * हँसि बोली राधासों बानी ॥
ऐसी सखी मिली ये तुमको * तौ काहे न बिसारौ हमको ॥
जबसों इनसों प्रीति लगाई * बहुत भई तुमको चतुराई ॥
अबलौं इनको कहाँ दुरायो * हमसों कबहूँ नाहिं जनायो ॥
त्रिभुवनकी सुषमा सबगुणनिधि * एकहि इन्हैं बनाई है विधि ॥
दो०-तुमहुँ कुशल येहू कुशल, क्यों न प्रीति दृढ़ होय ॥

जाने हौं चलि जाहु बन, आपस्वारथी होय ॥ ९ ॥
सो०-दंपति कियो बिचार, सुनि चंद्रावलिके बचन ॥
यासों नाहिं उबार, हर्षि मिले उर लाय तब ॥ ९ ॥
चले कुंजगृह हर्षि बिशाला * उभयबाम-बिच मदनगुपाला ॥
बामभाग प्यारी को लीने * दक्षिण भुजा सखीपर दीने ॥
दिवि दामिनिबिच नवघन मानो * रति समेत लखि मदन लजानो ॥
कैधौं कंचन-लता सुहाई * ललित तमालबिटप लपटाई ॥
गये कुंजबन घनछबि छाई * सुमनपुंज अलिगुंज सुहाई ॥
बर्ण २ कुसुमित तरु नाना * करती कोकिल मंगलगाना ॥
बहत समीर त्रिबिध सुखदाई * पावन मंजुल भूमि सुहाई ॥
लखि छबिपुंज कुंज अनुरागे * सहचरिसहित युगल बड़भागे ॥
नवदलकुसुमतल्प कमनीया * बैठे नवलरमण रमणीया ॥
करत बिलास बिबिध मनमाने * कोटि कोटि रति काम लजाने ॥
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी * निरख छबिहिं सखी तृण तोरी ॥
सने रसिक दोउ रसरसिकाई * बसे निशा बन कुंज सुहाई ॥
दो०-तैसोइ बिपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगंध ॥
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोई सुखसंबंध ॥ १० ॥
सो०-तैसोइ कुंजनिवास, तैसेई यमुनापुलिन ॥
सकल सुखनकी रास, तैसेइ रँगभीने युगल ॥ १० ॥
बनहिं धाम सुख रैन बिहाई * उठे प्रात दोउ छबि अधिकाई ॥
बैठे युगल रंगरसभीने * आलसयुत अंसन भुज दीने ॥
अरस परस दोउ छबिहिं निहारे * रीझि परस्पर तनु मन वारें ॥
अरुण नयन नखरेख सुहाई * बिनगुणमाल हृदय छबि छाई ॥
लटपटि पाल रसमसी भौंहें * कुंडलझलक कपोलन सोहें ॥
प्रियाबदनछबि श्याम निहारत * अरझी लट मुक्तन निरवारत ॥
आरत नयन सुरतरसपागे * नंदनंदन पियसंग निश जागे ॥
टूटे हार मरगजी सारी * नखशिखसुन्दर पिय अरु प्यारी ॥
चले कुंजते युगलबिहारी * ब्रजबासी लखि लखि बलिहारी ॥

सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा * जीते सुन्दर रतिपति कामा ॥
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि * सुन्दर चाल डगमगो डोलनि ॥
सबविधि सुन्दर सुखनिधि दोऊ * सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ ॥
दो०-अतिबिचित्र नंदलालकी, लीला ललित रसाल ॥
जो सुख दुर्लभ शिवसनक, सोबिलसति ब्रजबाल ॥ ११ ॥
सो०-गये युगल ब्रजधाम, सखीसहित निशिरसबिलसि ॥
बसतप्रिया उरश्याम, श्याम हृदय प्यारी सदा ॥ ११ ॥

अथ शृंगारभूषण बर्णनलीला ४६.

बैठी भवन सिंगार किशोरी * बहुरो अङ्ग सिंगारति गोरी ॥
मानहुँ सबन देति पहिराये * रतिरण जोति पियासों आये ॥
कटितट किंकिणि बसन नबीने * बाजूबंद भुजनको दीने ॥
नवकंकण उर हार सुहाये * तरुवलि चारु श्रवण पहिराये ॥
नकबेसरि अंजन दृग दीनो * बेंदा ललित भालपर कीनो ॥
रची माँग समभाग सुहाई * तामधि रेख सिंदूर बनाई ॥
प्रभुसों विमुख जानिकै कादर * बाँधति कच मनु किये निरादर ॥
दियो बिहँसि अधरनको बीरा * सन्मुख रहे प्रहार सधीरा ॥
शोभित सदन शृंगार सुहाई * श्रीवृषभानुकुँवरि छबिछाई ॥
नखशिख कुसुमविशिखकी सैना * किये कान्ह बश पंकजनैना ॥
सीसफूल शिर अति छबि छाजै * मनहु माँग मणि प्रकट बिराजै ॥
सुभी जराव फूल अरुणाई * हरति प्रातरविकी छबिताई ॥
दो०-चन्द्रबदन मृगशिशुनयन, भृकुटीकुटिल कलंक ॥
अलकझलक छबि देति जनु, शोभितरजनी अंक ॥
सो०-कुन्दकलीसम दाँत, तिलप्रसून नासा सुभग ॥
जीवबंधुकी भाँत, अधर अनूपम चिबुक निल ॥ १ ॥
लखि कलकंठ कपोत लजाहीं * पीकलीक झलकति जेहिंमाहीं ॥
बाहु मृणाल लाल छबिछाये * कोमल पाणिसरोज सुहाये ॥
कुचयुगचक्रवाक जनु नीके * लसति रोमावलि तट तटिनीके ॥
त्रिबली तरल तरंग सुहाई * अति गति नाभिमनोहरताई ॥

कृशकटि किंकिणियुत छबिछाई * पृथुनितम्ब शोभा अधिकाई ॥
रंभ खंभ युग जंघ निकाई * पग–नूपर–झनकार सुहाई ॥
चाल बिलोकि कामगज लाजै * मधुर मधुर धुनि पायल बाजै ॥
बर्णौं को पद–पंकज–शोभा * हरिमन भ्रमर रहत जहँ लोभा ॥
निगम नेति नित गावत जाको * राधा वश कीनो है ताको ॥
ज्यों चकोर चन्दाको आदर * त्यों नागरिवश गिरिधरचातुर ॥
देखे बिन क्षण रह्यो न जाई * सदा प्रेमबश त्रिभुबनराई ॥
उझकि झरोखा झाँके आई * करति भृंगार पियामनभाई ॥
दो०-अंग अंग भूषण वसन, रुचि रुचि सकल सिंगारि ॥
लै दर्पण देखति छबिहिं, श्रीबृषभानु दुलारि ॥ २ ॥
सो०-दीठ झरोंखा लाय, रहे श्याम इकटक निरखि ॥
उर आनन्द बढाय, देखत प्यारी की छबिहिं ॥ २ ॥
इक कर दर्पण इककर अँचरा * पुनिपुनिदृगन्हसँवारतिकजरा ॥
कबहूं सीसके फूल सँबारैं * कबहूं कुटिल अलक निरवारैं ॥
कबहूं आड़ रचति केसरि की * कबहूँ छबि देखति वेसरिको ॥
कबहूं रचति सुमनसों बेणी * कबहूं मांग मुक्तनकी श्रेणी ॥
कबहूं रिस करि भौंह सकोरै * कबहूँ नयन नयननसों जोरैं ॥
इकटक दर्पण ओर निहारै * नेकु बदन इत उत नहिं टारै ॥
लखी आपनी छबि सुकुमारी * रही गिबश प्रतिबिंब निहारी ॥
अति आनन्द भई मति भोरी * बिसरी सुरति देहकी गोरी ॥
कहति मनहिं मनमें सकुचाई * यह सुन्दरी कहाँ ते आई ॥
करते मुकुर दूरि नहिं टारै * कछु रोष करि हृदय विचारै ॥
कहूँ श्याम देखैं जो याहीं * तुरत होयँ याके वशमाहीं ॥
जो मोहन यासों अनुरागे * कहा चलै मेरी या आगे ॥
दो०-यह आई किहि लोकते, अति सुन्दर बर नारि ॥
ब्रजमें तो ऐसी नहीं, कोऊ गोप कुमारि ॥ ३ ॥
सो०-कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही ॥
सो बैरी मम आहि, जो ल्याई याको ब्रजहि ॥ ३ ॥

सुनी कहूँ इन हरिको शोभा * आई है ताही के लोभा ॥
जैसे सुन्दर कुँवर कन्हाई * तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई ॥
मनही मन पुनि धुनि पछिताई * पूँछति प्रतिबिंबहिं सकुचाई॥
तू है कौन कहां ते आई * इहां कौन तोको ले आई ॥
नाम कहा है सुन्दरि तेरो * तुम जहँ रहति कौन सो खेरो॥
कहौ न मुखते बचन सुनाई * मति सकुचो कहि सौंह दिवाई॥
हम तुम दिनन एक हैं गोरी * तू कछु रूप अधिक नहिं थोरी॥
इहाँ अकेली तू क्यों आई * काहू और संग नहिं ल्याई ॥
सुन्यो नहीं अन्याय यहाँ को * ऐसे कहि डरपावति ताको ॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी * लेत तियनके भूषण छोरी ॥
जो अपनी पति चहति सयानी * तौ घर जाहु मानि मम बानी॥
लेहु बसन ते अंग छिपाई * देखैं जिन कहुं श्याम कन्हाई॥
दो०-तेरे हितकी कहति हौं, मान चहै मतिमान ॥
आई है ब्रज आजही, तू उनको कहँ जान ॥ ४ ॥
सो०-ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवन में कोऊ कहूं ॥
जैसो ब्रज में कान्ह, मन भायो सबसों करत ॥ ४ ॥
नेक नहीं काहू डर माने * मथुरा पति जिंहि रहत सकाने॥
उनके गुण नीके मैं जानौं * तोसों अपनी दशा बखानौं ॥
हम मथुरा दधि बेंचन जाहीं * घेर लई उन मगके माहीं॥
गोरस लियो छोरि बरिआई * हार तोरि दीने बगराई ॥
हम अनेक तू एक किशोरी * ताते जाहु बेग गृह गोरी ॥
सुनि २ श्याम प्रियाकी बानी * मनहीँ मन बिहँसत सुखमानी॥
प्यारी चकित रूप निज देखी * श्यामचकितसुनिबचनबिशेखी॥
जानै दूसरि तिय प्रियपाहीं * जात निकट मोहन सकुचाहीं ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारैं * बोलत नहिं उर हर्ष बिचारैं॥
देखत मुकुर प्रियाकर माहीं * अंकम लेवेको ललचाहीं ॥
प्यारी के रसवश गिरिधारी * लेत दृगन भरि भरि छबिभारी॥
सुनि सुनि बचन हृदय सुख पावैं * पुलकि अंग आनन्द बढ़ावैं ॥

छंद-बचन सुनि आनन्द अति मन निरखिछबिसुखपावहीं ॥
धनि धन्य राधारूप धनि हरि नयन इकटक लावहीं ॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छबि मुकुर निहारहीं ॥
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण धन्य तन मन वारहीं ॥ १ ॥
धन्य सुख जिहिंलागि राधा कान्ह ब्रज तनु धारहीं ॥
रमासहित विलास नित वैकुंठवास बिसारहीं ॥
मिलन बिछुरनसुखबिरहरस क्षणहिंप्रतिउपजावहीं ॥
ब्रजबिलास हुलास हरिको नित नयो श्रुति गावहीं ॥ २ ॥

दो०-नवल प्रीतिनित नवल सुख, नित नवरूप परसाल ॥
नित नवरस बिलसत नवल, श्रीराधा नँदलाल ॥ ५ ॥

सो०-कहति रसीली बात, ज्यों ज्यों प्रिय प्रतिबिंबसों ॥
त्यों त्यों सुनि हर्षात, ब्रजबासी प्रभु रस भरे ॥

प्यारी नित प्रतिबिंब निहारै * भई बिवश नहिं सुरति सँभारै ॥
बार बार पूँछति तापाहीं * क्यों सुन्दरी तू बोलति नाहीं ॥
हँसे हँसति हेरति है हेरे * फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हमसो हाँसी * अपनो नाम न कहति प्रकासी ॥
परम चतुर तुमको मैं जानी * हमसों तुम कछु करति सयानी ॥
अतिही सुन्दर रूप तिहारो * देखि होत मन मुदित हमारो ॥
शोभित बेसरि-नाक-सुहाई * अति अनूप अधरन अरुणाई ॥
दशन दमकदामिनिहिंलजावति * चिबुकनीलकणअतिछबिपावति
काहे ऐसे मुखको बानी * हमें सुनावति नाहिं सयानी ॥
कहौ बचन काकी हौ घरनी * काको सुता सहज मनहरनी ॥
कै रिस कै रस कै इत हेरति * मेरे सन्मुख लोचन जोरति ॥
कछु रस कछु धरकौ मनमाहीं * धीर धरति नागरि जियनाहीं ॥

सो०-यह तो बोलति है नहीं, अति गरबीली बाम ॥
देखतही यहि रीझहैं, छैल छबीले श्याम ॥ ६ ॥

सो०-भई सौत यह आय, अब हरि याके बश भये ॥
यों बियोग उपजायो, उपजायो उर बिरह दुख ॥ ६ ॥

रही दीठ दर्पणहिं लगाई * ठरति नहीं छविकी अधिकाई ॥
उरमें भयो बिरह दुख भारी * देखि दशा रीझे गिरिधारी ॥
कबहुँ चलत तियढिगहिं कन्हाई * कबहुँ रहतलखिछबिहिंभुलाई ॥
औचक पाछेते सुखदाई * मूंदे नयन कमल कर लाई ॥
चौंकि चकित भइ मनमें प्यारी * जान्यो आये छैलबिहारी ॥
डरति रही मनमें मैं जाको * मिले आप सुन्दरि हरि ताको ॥
तब कछु सुरति भई मनमाहीं * वह तौ है मेरी परछाहीं ॥
सकुचि दुराव करत पियपाहीं * मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं ॥
जानि बूझिकैं पिय घनश्यामहीं * लेतिबिपुलसखियनको नामहिं ॥
श्याम प्रियालोचन कर ल्यायो * अतिहित बेनी उर परसायो ॥
शोभा कहा कहै कवि कोऊ * मेचकमणि सुमेरु अङ्ग दोऊ ॥
ताबिच मनहुँ पन्नगी आई * रही कनक गिरिसों लपटाई ॥
दो०-वेष्टित भुज मूंदे बरन, दीरघ खंजन नैन ॥
मनु भखलीनो धाय अहि, नहिं समात फणिऐन ॥ ७ ॥
सो०-करति सखिनसो रोष, मन हर्षत खीझत बदन ॥
भरी चतुरई कोष, लूटति मन कामन फलन ॥ ७ ॥
अति आनन्द भरे दोउ राजैं * उपमा कहत कवीश्वर लाजैं ॥
मरकतमणि कुन्दन संग जोरी * किधौंलिये घनतड़ित अँकोरी ॥
कै शोभा सुख तनुधर सोहै * ब्रजबासी-भक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नयन कन्हाई * रहे मूँदि छबि बर्णि न जांई ॥
अतिहिं बिशाल चपल अनियारे * नहिं समात पिय पाणि पसारे ॥
क्षण खोलत क्षण ढकत बिहारी * मुख रिस मनमुसकातिपियारी ॥
ज्यों मणिधरमणिप्रकट कन्हाई * फिरफिर फणतरधरतछिपाई ॥
श्याम-अंगुरियन-अंतरमाहीं * चंचल नयन दुरे दरसाहीं ॥
मरकतमणि—पिंजर मैं मानो * तरफरात बिबखंजन जानो ॥
कल कपोल ढिग तरल तरौना * शोभा सहज सुभाय करौ ना ॥
मनुयुग कमल मिलन शशि आये * बिब रवि संगसहायक ल्याये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक * उपमा काहि कहौं को लायक ॥

दो०-अपने कर पियकर पकरि, लीन्हे नयन छुड़ाय ॥
रबि शशि चार सरोज जनु, द्वै चकोर मिलि भाय ॥ ८ ॥
सो०-कीन्हे सन्मुख आन, पाणि पकरिकै लाडिली ॥
भले भले जू कान, मैं सखियन धोखे रही ॥ ८ ॥
भले आय औचक बिनजाने ✻ मूँदि रहे दृग अतिहि पिराने ॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये ✻ नेकहुं आवत जान न पाये ॥
तुमहौ तियमनहरन कन्हाई ✻ तुम्हरी गति कछु जानि न जाई ॥
तब हरि हर्षि प्रिया उर लाई ✻ मुकुरकथा सब भाषि सुनाई ॥
सुनि नागरि हरितनु मुसकानी ✻ चितै नयन कछु मनहिं लजानी ॥
मैं तौ अपने मदिरमाहीं ✻ सहज लखति दर्पणमें छाहीं ॥
तुम्हरी महिमा पिय को जाने ✻ इक सुन्दर अरु परमसयाने ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई ✻ रसिक-पुरन्दर जन-सुखदाई ॥
हर्षित गये सदन नंदलाला ✻ इत नागरि उर हर्ष बिशाला ॥
जब प्रतिबिंबसुरति जिय आवै ✻ समुझि सुदशा सकुचि तब पावै ॥
तिहिं अन्तर संग सखिन लिवाई ✻ चंद्रावलि राधाढिग आई ॥
लखि प्यारी आदर अति कीनो ✻ तुरत सबनको बैठक दीनो ॥
दो०-सादर सन्मानी सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
पियसंग सुख चाहति कहन, रहतिसकुचपुनिमान ॥ ९ ॥
सो०-गदगद स्वर मुख बैन, बार बार भाषति हरषि ॥
झलक प्रेम जल नैन, पुलकि गात पूरे सबै ॥ ९ ॥
कहति सखी सुनु राधा गोरी ✻ आज कहा अतिहर्ष किशोरी ॥
हम तेरे नितहीप्रति आवैं ✻ इतनो आदर कबहुं न पावैं ॥
पायो आज पर्‌यो कछु तैं री ✻ कै धौं मिलो श्यामकहँ है री ॥
उमँग्यो प्रेम हर्ष उरमाहीं ✻ हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके बचन सयानी ✻ बोली प्रिया हर्षिकै बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे ✻ कहे जात नहिं गुण उनकेरे ॥
जैसी भाँति मिले हरि हमसों ✻ सो हित कहौं सुनहु सखि तुमसों ॥
मैं अपने सब अंग सिगारति ✻ लिये मुकुर कर बदन निहारति ॥

पाछे आन भये हरि ठाढ़े * चतुरशिरोमनि छबि बाढ़े ॥
भाव एक भोरे मैं साजा * ताहि कहत सखि लागति लाजा ॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानो * जानि और तिय मनहिं डरानो ॥
पाछेते यह जानि कन्हाई * मूँदे नयन औचकहिं आई ॥
दो०-तबहीं चौंकि चकित भई, मैं समझो निजभोर ॥
लगी देन उरहनु तुम्हैं, भई फिरति हौ चोर ॥ १० ॥
सो०-सुनि राधामुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ॥
पुलकि प्रफुल्लितगात, कहति धन्य तू लाडिली ॥ १० ॥
श्यामसंग सुख लूटति है री * अब उनसों नहिं छूटति है री ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी * भली भई तू हरिरसपागी ॥
अब हरि तोते अतिरति मानैं * तेरो अन्तर-हित पहिचानैं ॥
आवत जात रहत घर तेरे * क्षण नहिं रहत तोहिं बिन हेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके * परम भावते हो सबहीके ॥
आज लाल मेरे गृह आये * बड़े भाग्य मैं हितकरि पाये ॥
देखि दर्श नयनन सुख पायो * करौं आज आनन्द बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली * मोहिं मनाय दिये बनमाली ॥
चतुर लाय हरि मोहिं मिलाये * मैं अपने अपराध क्षमाये ॥
नंदनंदन पिय नयन समाये * भावत नहीं नेक बिसराये ॥
सुनि यह राधाकी रसबानी * देखि असीस सखी हर्षानी ॥
नँदनंदन वृषभानु किशोरी * चिर जीवहु सुन्दर यह जोरी ॥
दो०-प्रेमभरे छबिसों भरे, भरे अनंदहुलास ॥
युगल माधुरीरसभरे, ब्रजमें करत बिलास ॥ ११ ॥
सो०-करत अनेक बिहार, रूपराशिगुणनिधि युगल ॥
राधा नंदकुमार, ब्रजबासी जनसुख करन ॥ ११ ॥

अथ नयनानुरागलीला ५०

हरि-अनुरागभरी ब्रजनारी * लोकसकुच कुलकानि बिसारी ॥
सासु ननँद गारी दै हारी * सुनत नहीं कोउ कहत कहा री ॥
सुतपतिनेह जगत यह छोर्यो * ब्रजतरुणिन तिनकासो तोर्यो ॥

बेद—लोक—मर्यादा डारी * ज्यों अहिं केंचुरि फिर न निहारी ॥
ज्यों जलधार परै तृणमाही * जैसे नदी समुद्रहिं जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावैं * जसे सती बहुरि नहिं आवैं ॥
तैसें भजीं नन्द—नन्दनको * नेकहुं डरीं नहीं गृहजनको ॥
तैसेहि प्रेमबिबश गिरिधारी * ज्यों गज पंक न सकहि निवारी ॥
ब्रजबनिता मन नहिं बिसरावैं * क्षणप्रति तिन्हें देखि सुख पावैं ॥
आये पुनि तिहिं ओर बिहारी * सखिनसहित बैठी जहँ प्यारी ॥
बीर देखि सकुचे मनमाहीं * तातें निकट गये हरि नाहीं ॥
ताही मग निकसे सुखदाई * सुन्दर नटवर—रूप दिखाई ॥
दो०-सीसमुकुट कुंडल श्रवण, उर चटकीली माल ॥
पीतबसन कटिकाछनी, तनुद्युति श्याम तमाल ॥ १ ॥
सो०-चलतलटकती चाल, बंक बिलोकनि मृदु हँसनि ॥
अङ्ग अङ्ग छबिजाल, रसिक नवलनागर छयल ॥ १ ॥
औचक देखि श्याम ब्रजनारी * भंई चकित तनुदशा बिसारी ॥
जात चले ब्रजखोर अकेले * कोटिकामकी छबिपर हेले ॥
पग है चलत बहुरि फिरि हेरैं * कमल सनाल कमल कर फेरैं ॥
मृगमदतिलक अलक घुँघरारी * तनु बनधातुचित्र रुचिकारी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं * नयनसैन दे दे मन मोहैं ॥
निरखत ब्रजयुबती बिथकानी * दुखसुखव्याकुल मन अकुलानी ॥
गये कल्पतरुछाँह कन्हाई * रूपठगौरी तियन लगाई ॥
लागीं कहन परस्पर बानी * लोचन मन अनुरागकहानी ॥
सुनहु सखी यह नंददुलारो * हठ करि यह मन लेत हमारो ॥
क्षणक्षणप्रति छबि और बनावै * शोभा कछू कहत नहिं आवै ॥
मन तौ इनहीं हाथ बिकान्यो * हम सखि यह कछु भेद न जान्यो ॥
नयननिसाट करी नयननसो * कियो मोल सैनन बैननसों ॥
दो०-बेंचि दियो मन आपुहो, मृदु मुसकन धन पाय ॥
परी रही हौं बीचहो, नैना बड़ी बलाय ॥ २ ॥
सो०-भये श्यामके जाय, अब रुचि मानी मन तहाँ ॥

मैं पचि रही बुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥ २ ॥
अब मन हित हरिहीसों कीनो * भेद हमारो सब कहि दीनो ॥
मन तौ गयो नयन है मेरे * तिनहूँ बोलि किये हरि चेरे' ॥
अब ये रहत वहाँ सेवकाई * सोई करत जु कहत कन्हाई ॥
जितहिं चलत वे तितहीं जाहीं * हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये वे जाय गुलाम श्यामके * रहे न काहू और कामके ॥
ताको कछु अपमान न जाने * फूले फिरत अधिक सुख माने ॥
जग उपहास सुनत बहुतेरो * लाजशंक दीनो सब डेरो ॥
आरयपथ मर्याद बडाई * लोक–वेद–कुल-कानि गँवाई ॥
मैं समुझाय रही बहुतेरो * नेकहुं कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छबिपर अटके * मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अब छोंडत तिनको नाहीं * बैठे रहत आप तिनमाहीं ॥
राखे बाँधि अलकको डोरी * भाजिजाहिंमतिकबहुकहो री ॥
दो०-अब ये लोचन श्यामके, सखो हमारे नाहिं ॥
बसे श्याम रस रूप ये, श्याम बसे इन माहिं ॥ ३ ॥
सो०-कहा करैं सखि श्याम, नयननहीं को दोष यह ॥
हठ करि भये गुलाम, तनिक मंद मुसकानिपर ॥ ३ ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी * सखि लोचन लोभी अतिभारी ॥
जबहिं लखन कमनीय कन्हाई * तबहिं संग लागत उठि धाई ॥
मेरे हटको नेकु न माने * लखत जाय वह छबि ललचाने ॥
ज्यों खग छूटत फंद बधिकते * भागि चलत उडि वेग अधिकते ॥
पाछे फेरि न फिरत डराई * जाय सघन वनमाँझ समाई ॥
त्यों दृग मोते छूटि पराने * हरिछबि बनघन जाय समाने ॥
अब वे इतको नाहिं निहारैं * वह छबि निरखि हरखि उर धारैं ॥
यदपि सुधाछबि पियत अघाई * तदपि तृप्ति नहिं मानत राई ॥
भई सखी नैननगति ऐसी * भरे भवन तस्करकी जैसी ॥
देखि श्याम छबितन अधिकाई * अतिलालची रहे ललचाई ॥
लेत न बने तजो नहिं जाई * चकित भये निजसुधि बिसराई ॥

रहे बिचारहि माँझ भुलाने * नहिं कछु लियो न त्यागि पराने ॥
दो०-नैन चोर हरि मुख सदन, छबिधन भाँति अनेक ॥
तजत बनत नहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक ॥ ४ ॥
सो०-सखि ये नैना चोर, हरिमुख छबि चोरन गये ॥
बाँधे अलकनि डोर, हरिको चितवन पाहरू ॥ ४ ॥
भलो भई हरि इनहिं बँधायो * निदरि गये तैसो फल पायो ॥
ये नहिं मानत कह्यो हमारो * सखि इनहीं अब काज बिगारो ॥
कहति एक अरु गोपकुमारी * सखि ए नयन कि धौं बटपारी ॥
कपटनेह हमसों करि भारी * करी हमैं गुरुजनते न्यारी ॥
श्यामदरश लड्डू कर दीनो * हमैं आपने बश करि लीनो ॥
प्रेमठगौरी शिरपर छाई * फिरत संगही संग लगाई ॥
बिरहफाँसि गर डारि हमारे * करी बिकल नहिं अङ्ग सँभारे ॥
कुललज्जा संपदा हमारी * सो इन लूटि लई सखि सारी ॥
कहरति परी मोहबनमाहीं * लग्नगाँठि दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहूं नेह जीव नहिं जाई * सुमिर नयन गुण मन पछताई ॥
कासों कहैं सखी यह बाता * भये नयन हमको दुखदाता ॥
हमको बिरहदुसह दुख देहीं * आप सदा दर्शनसुख लेहीं ॥
दो०-इहिबिधि निदरत दृगनको, भरी प्रेम ब्रजनारि ॥
होत मगन सुखबिरहरस, नयननि श्याम निहारि ॥ ५ ॥
सो०-यही भजन यह ध्यान, श्यामरूपरस गुणकथा ॥
नहिं जानतकछु आन, निशिदिनब्रजकी सुन्दरी ॥ ५ ॥
कोऊ कहति नयन खग मेरे * फँसे अलकफंदा हरि केरे ॥
छबिकणचारा लखि ललचाने * फंद गये चितवनि लपटाने ॥
हरिछबि अटकि परे दृग जाई * अतिहि बिलास भये बिबसाई ॥
रहत दीप सन्मुख टक लाये * दुखसुख समुझि सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बड़े सयाने * वह छबि लेन गये अतुराने ॥
सो तौ कछू हाथ नहिं आयो * आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसो को त्रिभुवन जो जाई * आवै सखी समुद्र अथाई ॥

हार जीत ये नयन न जानैं * मान पमान कछू नहिं मानैं ॥
परे रहत शोभा के द्वारे * नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥
जाको बान परो सखि जैसी * धरी टेक उरमें नित तैसी ॥
इन अँखियन यह टेक परी री * लुब्धत ज्यों कमलन भ्रमरी री ॥
ज्यों शुक नलिनी के बश आई * जिमि कपि मूठि छोंड़ि न जाई ॥
दो०-लोभै बश जिमि मीन मृग, आप बँधावत आय ॥
रूप लालची नयन तिमि, भये श्याम बश जाय ॥ ६ ॥
सो०-सकै न काहू छिंधु, लोंकलाज कुल कानगिर ॥
श्याम सलोने सिंधु, मिले त्रिवेणी व्है नयन ॥ ६ ॥
सखी नयन अब हरिसँग लागे * मन वचक्रम उनसों अनुरागे ॥
सन्मुख रहत सदा सुख पाये * भूलि गये मग दहने बाँये ॥
ज्योंमणि देखि उरग सुखपावै * ज्यों चकोर चन्दहिं टकलावै ॥
मुदित रंक जैसे धन पाई * तैसी इनकी गति अब माई ॥
अब ये नयन फिरत नहिं फेरे * किये सखी हम यत्न घनेरे ॥
देखे सुभग श्याम इन जवते * निठुर भये हमसों ये तबते ॥
जब मैं घूँघट पटहि घेरे री * तब ये शिशुको अरन अरे री ॥
हरि अँग सँग लागि उठि धाये * मनहुँ उनहिं प्रतिपाल कराये ॥
मृदु मुसकान रस पाय मिठाई * क्षणही में मतिगति बिसराई ॥
अतिहठ परे न नेक विचारैं * निमिष रुदनबल धीर न धारैं ॥
लाजलकुट उरमें डर पाये * वे सखि एकहु डर न डराये ॥
फिरे न मैं बहुभाँति बुलाये * गरे तनक हरिके फुसलाये ॥
दो०-अब हम तलफत उन बिना, मरत यही अपसोस ॥
गथ खोटो सखि आपनो, काह परखि अहिदोस ॥ ७ ॥
सो०-प्रेमबिबश त्रियवृन्द, ऐसे दोषति दृगनको ॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द, टेरि सुनाई बाँसुरी ॥ ७ ॥

* अथ मुरली लीला ५१ *

कृष्ण-प्रेमरस-पूरण तातें * करतहुती नयननकी बातें ॥
परी श्रवण ईहिं अन्तर जाई * हरिकी मुरली टेर सुहाई ॥

भई चकित सुनि सब ब्रजगोरी * परी आय मनु सीस ठगोरी ॥
भूलि गई सुधि अँखियनकेरी * व्है गईं मानौ चित्रउकेरी ॥
दुख सुख मनको बर्णि न जाई * इकटक रहीं पलक बिसराई ॥
देहदशा सब तुरत भुलानी * स्वेद चल्यो बहु मानहुं पानी ॥
भई बिबश मतिको गति भूलीं * प्रेमहिं डोर गोपिका झूलीं ॥
कबहूँ सुधि कबहूँ सुधि नाहीं * कबहूँ मुरलीनाद सुनाहीं ॥
कछुक सँभारि धीर उर धारी * कहति परस्पर गोपकुमारी ॥
अँखियनते मुरली हरिप्यारी * भै बैरिनि यह सौति हमारी ॥
ब्रजमें धौं कितते यह आई * भई कठिन हमको दुखदाई ॥
आवतही ऐसे ढँग जाके * भये श्याम तुरतहि बश ताके ॥
दो०-जारसको हम तप कियो, षट्‌ऋतु सब ब्रजबाम ॥
सो रस मुरली लेति अब, सहजहिं बश करि श्याम ॥ १ ॥
सो०-गावत मीठी तान, मुरलीसँग अधरन धरे ॥
अब जाके बश कान, औरन बिबश करी वही ॥ १ ॥
ऐसो त्रिभुवन कौन सयानी * जो न मोहि सुनि याकी बानी ॥
यह तौ भली नहीं ब्रज आई * भई सौति हरिके मन भाई ॥
अब याके बश गिरिबरधारी * नेक अधरते करत न न्यारी ॥
याहीके अब रंग रंगे री * मधुर बचन सुनि रीझि गए री ॥
करपल्लवन ताहि बैठाई * रहत ग्रीव तापर लटकाई ॥
बारहिं बार अधररस प्यावैं * तासों अति अनुराग जनावैं ॥
देखहु री याकी अधिकाई * पियत सुधारस हमहिं दिखाई ॥
परी रहति बनमें धौं कैसी * भई ढीठ आवतही ऐसी ॥
दिनहीं दिन अधिकाति जात री * सखी नहीं यह भली बात री ॥
आवतही हमरो धन लीनो * चाहत और कहा धौं कीनो ॥
मैं जो कहति सुनौ री गोरी * सजग रहौ सब नवल किशोरी ॥
मुरली दूर कराये बनिहै * कछू दिननमें हमहिं न गनिहै ॥
दो०-फिरिहै याके सँग लगी, लोकलाज गृह त्यागि ॥
जब जब यह वहँ बाजिहै, मोहनके मुख लागि ॥ २ ॥

सो०-करिहै नाना रंग, यह जानत टोना कछू ॥
या मुरली के संग, देखहु हरि कैसे भये ॥ २ ॥
यह सुनि कहति एक ब्रजनारी * सखी बात यह कहति कहा री ॥
अब यह दूरि होति है कैसे * जाके बश नन्दनन्दन ऐसे ॥
एक पांय ठाढे ताआगे * रहत त्रिभंग अंग अनुरागे ॥
अधर सेजपर शयन कराई * करपल्लव पलोटत पाँई ॥
कबहुँक मिलि गावत हैं तासों * होति बिबश पुहुमी सब जासों ॥
मुरली अति मोहनको भावै * ताके गुणन सखीको पावै ॥
जानत राग रागिनी जेते * हरि सँग मिलि गाबति हैं तेते ॥
नाना बिधि की गतिन बजावैं * तान तरंग अमित उपजावै ॥
जैसेही रीझत मनमोहन * तैसिय भाँति रिझावति गोहन ॥
रहति सदा मुखहीसों लागी * अधर पियूष-स्वाद-रसपागी ॥
मधुर मधुर कल बचन सुहाये * पुनि पुनि हरिकैं मनहिं चुराये ॥
ऐसो को अब हरिके करते * दूरि करै याको निज बरते ॥
दो०-अब मुरली छूटे नहीं, याके बश भये श्याम ॥
प्रकट कियो सब जगत में, मुरलीधर निजनाम ॥ ३ ॥
सो०-हरिको करि बश माहिं, मुरली लूटै अधररस ॥
उर डर माननि नाहिं, हम सबते बोलति निठुर ॥ ३ ॥
निठुर बचन अब हमहिं सुनावै * हरिको मन हमते उचटावै ॥
आरय पथ कुलकान छुड़ावै * हम सबहिन को निलज करावै ॥
ऐसे ढँग मुरली के आली * हमते निठुर किये बनमाली ॥
यह तो निठुर काठकी जाई * प्रकट किये अपने गुण आई ॥
अपनोई स्वारथ यह जाने * कपट राग हरिके सँग गाने ॥
मुरली निठुर किये बनवारी * मुरलीते हरि हमहिं बिसारी ॥
बनकी व्याधि कहाँ यह आई * ऐसे कहि कहि तिय पछिताई ॥
कहा भयो मोहन मुख लागी * अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे * मुरली प्रकट भई यह कैसे ॥
कहाँ रहति काकी है जाई * कौन जाति कैसे इत आई ॥

मात पिता हैं याके कैसे * जैसी यह तेऊ धौं ऐसे ॥
बोली अरु इक तिया सयानी * अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
दो०-सखि तुम अबलौं नहिं सुन्यो, मुरलीको कुलधर्म ॥
सुनो सुनाऊँ मैं तुम्हें, याकि जाति अरु कर्म ॥ ४ ॥
सो०-तुमसों कहौं बखान, मैं जानति याके गुणन ॥
सुनि सुख पैहौ कान, या मुरली को कुलकथा ॥ ४ ॥
बनमें रहति बाँस-कुल-जाई * यह तौ याकी जाति सुहाई ॥
जलधर पिता धरणि है माता * तिनके गुणन करौं बिख्याता ॥
बनहूँते तिनको घर न्यारो * निपटटि जहाँ उजाड़ अपारो ॥
गुणन एकते एक उजागरि * मात पिता अरु मुरली नागरि ॥
पर अकाज विश्वास न जाने * ये हैं इनके कुलहिं बखाने ॥
ना जानिये कवन फल आली * कृपा करी यापर बनमाली ॥
सुनहु सखी याके कुल धर्मा * प्रथम कहौं मेघनके कर्मा ॥
वे बर्षत जल सब जगमाहीं * गिरि बन सर सरिता सबठाहीं ॥
चातक सदा रहत करि आसा * एक बूँदको मरत पियासा ॥
धरणी सबही को उपजावै * आपन सदा कुमारि कहावै ॥
उपजत पुनि बिनशत जाहीमें * सो कछु छोह नहीं ताही में ॥
ताकुल सुता मुरलिका जानौ * अब आगे गुण प्रकट बखानौ ॥
दो०-तनही ते प्रकटत अनल, ऐसी याकी झार ॥
प्रकट भई जा वंश में, करति जारि तिहिं छार ॥ ५ ॥
सो०-ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बाँसकी ॥
आई निजकुल दाहि, और कौन याते निठुर ॥ ५ ॥
याकी जाति श्याम नहिं जानी * बिन जाने कीनी पटरानी ॥
कहिये चलौ श्यामसों जाई * सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई ॥
सखी कहा यह बात बखानौ * श्यामहिं कहा भलो तुम जानौ ॥
निजकुल जारति बिलम न लाई * व्हैहैं तासों कौन भलाई ॥
जको हम षट्ऋतु तप कीनो * सो फल तुरत मुरलि यहिं दीनो ॥
जे सन्मुख ते बिमुख कहावैं * बिमुख तुरत उत्तम फल पावैं ॥

घरके ब्रन बनके घर कीन्हे * कपट परम श्यामकी चीन्हे ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी * वे कपटी बहुतरुणि–बिहारी ॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानै * चन्दा नहीं नेक उर आनै ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै * जलको तनक दया नहिं लागै ॥
ज्यों पतंग उड़ि ज्योति जरै री * ज्योति नहीं कछु कृपा करै री ॥
चातक एक मेघको जानै * वह कछु ताकी प्रीति न मानैं ॥
दो०-इन सब हिनते हरि निठुर, तैसिय मिली सहाय ॥
अब मुरली अरु श्यामको, जोरी बनी बनाया ॥ ६ ॥
सो०-ये अहीर बन बैन, काहे न प्रीति बढ़ावहीं ॥
दुहुँवनको बन ऐन, जैसे वे तैसी वहू ॥ ६ ॥
मुरली ने हरिको पहिंचान्यो * हरिको मन मुरलीसों मान्यो ॥
निठुर निठुर मिलि घात बनावैं * वाही के बल धेनु चरावैं ॥
वाही को लकुटी कर धारी * वाही की बंसी अति प्यारी ॥
हमसों बैर सदा हरि कीनो * दधि ले मारग जान न दीनो ॥
पुनि भेदहि मन हरयो हमारो * कीन्हो कुल कुटुम्बते न्यारो ॥
बहुरिबोलिअँखियनको लीन्ही * तापर सौति मुरलिया कीन्ही ॥
सुनि सजनी बिनकाज जरौ री * कर्म करैं सो कोउ न करौ री ॥
यह महिमा कर्ता सब करई * कौने बिधि धौं कापर परई ॥
हम तप करि इतनो पचिहारी * सो घर कुलते भई नियारी ॥
बनकी घास इतो सुख पावैं * श्याम अधर शिर छत्र धरावैं ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी * और नारि हरिको न सुहानी ॥
बनते ल्याय सुहागिनि कीन्ही * जाति पाँति कुल कछू न चीन्ही ॥
दो०-तप तीरथ जो पूरबहिं, किये कठिन हरिहेत ॥
अब मुरली ता कष्ट को, बैठि अधर फल लेत ॥ ७ ॥
सो०-मेटति पिछलो दाग, जो तप करि तायों तनहिं ॥
धनि मुरली भाग, अब गरजति अधरन चढ़ी ॥ ७ ॥
मुरली कौन सुकृत पायो * सब कलंक हरि परसि गँवायो ॥
तनु कठोर मन जड रसहीनी * अन्तर सूनो सार विहीनी ॥

लघुता अंग न कछु गरुवाई * बास बंश कछु नाहिं निकाई ॥
छिद्र बिशाल बिपुल तन छाये * हरिहिं परसि सब भये सुहाये ॥
बिधिते प्रबल भई यह मुरली * हरि मुखकमल बरासन जुरली ॥
चारिबदनबिधिश्रुतिमतिभाखे * नीति सहित जड़ चेतन राखे ॥
आठ बदन मुरली करि नादा * उलटि दई बिधिकी मर्यादा ॥
जड़न चेत चेतन जड़ कीने * थिरचरकरिचर थिरकरि दीने ॥
एक बार श्रीपति सिखरायो * तबते ज्ञान विधाता पायो ॥
याके तौ नन्द सुवन कन्हाई * लगे रहत हैं कान्ह सदाई ॥
याते को अरु प्रबल प्रबीना * कियो सकल जग निजआधीना ॥
कहिये काहि और को ऐसी * भई श्याम सँग मुरली जैसी ॥
दो०-अब सुर नर मुनि सूर शशि, खग मृग सलिलसमीर ॥
या मुरलीके बश सबै, ध्वनि सुनि धरत न धीर ॥ ८ ॥
सो०-रही बिश्वभर जीति, मोहन मुख लगि बाँसुरी ॥
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी ॥ ८ ॥
सखि मुरली को दोष न देहौ * करि बिचार अपने मन लेहौ ॥
हरि हित इन कीनो श्रम जोई * सो श्रम और कौनपै होई ॥
जो अकुलीन तऊ बड़भागी * कियो कठिन ब्रत हरिहितलागी ॥
अब अति दृढ़याको हरि जान्यो * तब बन भीतरते गृह आन्यो ॥
जब याकी करतूत सुनौगी * तब धनिधनिकरियाहिगनौगी ॥
जन्मतही कीनी मति गाढ़ी * बनमें रही एक पग ठाढ़ी ॥
शीत उष्ण वर्षा सहि लीनी * नेकहु मनसा मलिन न कीनी ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी * पत्र मूल शाखा जब छाँटी ॥
राखी डारि धाममें आनी * शोच शोच सब देह सुखानी ॥
मुर्यो न मन तनु अंग दगाये * बिंधे बेह अँग अँग करवाये ॥
तायसुलाखि परखिहरि लीनी * तब मुरली पटरानी कीनी ॥
मुरली सही इती कठिनाई * तब पाई ऐसी ठकुराई ॥
दो०-मुरली तप फल भोग वै, वृथा करत तुम आर ॥
निजगुण रिझयेश्याम उन, गुपियन गुणी पियार ॥ ९ ॥

सो०-तुमते यह नहिं होय, जो करणी मुरली करी ॥
ताको सम नहिं कोय, अतिश्रम करि हरिबश करे ॥ ९ ॥
परमपुनीत प्रीत जब जानी * तब मुरली हरिके मन मानी ॥
देखहु री याकी अधिकाई * कहँलगि याकी करहिं बड़ाई ॥
जबहीं श्यामअधरको परसै * तब अति हर्षि नादरस बरसै ॥
तान--तरंग रंग उपजावै * अति आनंद सब जगत जनावै ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई * छूटत मौन रहत मुरझाई ॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको * अधरामृत जीवन है जाको ॥
मुरली जो हरिहित तप कीनो * परमचतुर पूरण तप लीनो ॥
तबलगि हरिको नहिं पतियानी * सहे कष्ट बोली नहिं बानी ॥
जबलगि जीवन करि नहिं पायो * अधरामृतरस मनको भायो ॥
जब हरिसों बांछित फल पायो * तब सबपर अधिकार जनायो ॥
यासम और चतुर को आली * जिन बश किये श्याम बनमाली ॥
क्यों नहिं त्रिभुवन को मन मोहै * जाके बश पति त्रिभुवन को है ॥
दो०-मुरलीकी सर मत करो, कह्यो हमारो मान ॥
धनिधनि ताहिबखानिये, सुन ताको यश कान ॥ १० ॥
सो०-अधरामृत करिपान, अमर भई अब मुरलिका ॥
तिहुँपुर होत बखान, शारदादि यश गावहीं ॥ १० ॥
हमहूं सब मिलिकैं तप कीनो * ताको फल हमको हरि दीनो ॥
लीन्हे भूषण सबन चुराई * युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई ॥
तब अंबर दे धन्य बखान्यो * हम भोरी इतनोइ सुख मान्यो ॥
अपनो अपनो भाग्य सखी री * मुरलीसों बिनकाज खिजौरी ॥
अब मुरलीसों हेत करौ री * नहिं जीतौंगी मतहिं लरौ री ॥
मुरली हमते तप अधिकाई * मुरलीके बश कुँवर कन्हाई ॥
तनक आश दर्शनकी है री * सोऊ पुनि करते जैहै री ॥
हैं बहुतरुणी रमत कन्हाई * यहू मिली इक तिनमें आई ॥
मुरलीको जनि डाह करौ री * तुम नहिं अपने प्रेम टरौ री ॥
प्रेमहिते हरि मानि रहैंगे * वे सुजान सब जानि लहैंगे ॥

सब तजि भज्यो जन्मते ताही * तजो जात कैसे अब वाही ॥
मुरलीसों कह काज हमारो * जोवहु मोहन नंददुलारो ॥
दो०-हमहित कीनो श्यामसों, मेटि लोककुलकानि ॥
ताहीसों हित चाहिये, जासों है पहिचानि ॥११॥
सो०-हमको है वह आश, वे हैं अंतर्यामी हरि ॥
करिहै नाहिं निराश, उर-अंतरकी जानिकै ॥११॥
कहा भयो मुरली हरि राखी * अपने करसों ताहि सुलाखी ॥
गुणके काज क्षणक दुख पाई * दे अधरामृत तुरत जिवाई ॥
हमते अधिक कियो उन नाहीं * करि बिचार देखहु मनमाहीं ॥
बर्ष पाँच सातहिको जबते * कियो सनेह श्यामसों तबते ॥
पुनि षटऋतु तपसों मन लायो * अबलौं बिरहानल तनु तायो ॥
कैसे ये सब फल न फलैंगे * क्यों नहिं हमको श्याम मिलैंगे ॥
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी * मुरली श्याम अधरपर धारी ॥
जो अवगुण होतो या माहीं * तो याको हरि छुवते नाहीं ॥
सुनौ सखी यह है इहि लायक * अतिहो भली श्रवण सुखदायक ॥
तुम जो कहति वृथा जोइ सोई * जैसी यह ऐसी नहिं कोई ॥
जो यह भली बुरी गुण के * तौ याको ढरि श्याम मिले री ॥
काहे न प्रीति करैं हरि ऐसी * है यह तिहूँ भवनमें जैसी ॥
दो०-एक युवति अरु गुणभरी, बोलति मधुरे बैन ॥
श्रवण सुधा प्यावत तहूँ, क्यों हरि अधर धरैं न ॥१२॥
सो०-हरि बरजो मति कोय, देहु बजावन बाँसुरी ॥
बिरह बिरससे होय, रस कोने रस होत है ॥१२॥
आप भले तो जगत भलोई * नातर सखी भलो नहिं कोई ॥
मुरली लगी श्यामके मुख री * तोहू है हमसों सन्मुख री ॥
सुनहु कान दै कहति कहा री * श्रीराधा श्रीराधा प्यारी ॥
तुम जानति हरि हमहिं बिसारी * तुम हरिसों नहिं नेकु नियारी ॥
जब जब मुरली श्याम बजावैं * तब तब नाम तुम्हारोइ गावैं ॥
मुरली भई सौति जो आई * तौ हरि तेरिहि टहल कराई ॥

तू अर्धांगिनि वह है दासी * मेरे मन यह बात प्रकासी ॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावै * वाके मुख हरि तुमहिं बुलावै ॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे * मुरली यह यश कहति पुकारे ॥
हर्षीं सकल सुनत यह बानी * हम मुरली ऐसी नहिं जानी ॥
वृथा बैर यासों हम मान्यो * याको शील अबै हम जान्यो ॥
मुरलीसों ऐसे सुख पाई * करति सकल ब्रजनारि बड़ाई ॥
दो०-धनि धनि बंसी बाँसकी, धनि याके मृदु बोल ॥
धनिल्यायेगुण चरचिकै, बनते श्याम अमोल ॥ १३॥
सो०-धनि धनि याकोबंश, धनि मुरली हरिमुख लगी ॥
सखिनसहित परशंस, श्रीमुख श्रीराधा कह्यो ॥ १३॥
मुरली श्री मुरलीधर केरी * महिमा कापै जात निबेरी ॥
जाको यश गुण गँधरव गावैं * बेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
सुनत नाद त्रिभुवनमन मोहैं * देव दनुज नर खग मृग जो हैं ॥
बाणी ललित श्रवणसुखदाई * बाजत हरिमुखलागि सुहाई ॥
ब्रह्मादिक मन मोह करावै * शिवसनकादि समाधि भुलावै ॥
मायायोग कृष्णकी जोई * शोभित अधर मुरलिका सोई ॥
हरिकी श्वास जासुकी बानी * ताके गुण को सकै बखानी ॥
जब मुरली नँदनंद बजावैं * ब्रजललना सुनिकै सुख पावैं ॥
चकित होत तनुदशा भुलावैं * प्रेमबिबश सुधि बुधि बिसरावैं ॥
जको थकी जहँ तहँ रहि जाहीं * मानहुँ लिखि चित्रकी आहीं ॥
कबहूं दुख कबहूं सुख मानै * कबहूं निंर्दहिं कबहुँ बखानैं ॥
ऐसो दशा होत घटघटकी * बाजत मुरली जब बर-नटकी ॥
छं०-जबहिं मुरली श्याम कर गहि अधरराखि बजावहीं ॥
तरलतान तरंग अगणित गति अमित उपजावही ॥
रहत सुनि ध्वनि मग्नजलथलजीव जहँ सो तहँसहीं ॥
कहत ब्रह्मानंद जासों पाय सँग पूजत नहीं ॥ १ ॥
सब सयान समान ज्ञान गुमान अबहीं लौ अहै ॥
लोक बेद म्रजाद पतिव्रत चार फल तबलौंचहै ॥

तबहिंलौं मनचपल बुधिबल सकल रुचिधनधामको ॥
सुनि न स्वप्नेहुँ नाहिं जबलौं श्रवण मुरलीश्यामको ॥ २ ॥
दो०-धनि धनि ते नरनारि जग, धनि धनि तिनकोभाग ॥
व्रजबासी प्रभु बाँसुरी, जिनके मनमें लाग ॥१४॥
सो०-राखत है यह आस, जन व्रजबासीदासहू ॥
करहु हिये संबास, मुरलीधर मुरली धरे ॥१४॥

* अथ रासलीला ५२ *

बन्दौं युगल चरण सुखदायक * श्रीरसरास नायका-नायक ॥
नन्द-नन्दन बृषभानु-नंदिनी * सुर-नर-मुनि-ब्रह्मानि बंदिनी ॥
रासरसिक रसरास-बिलासी * नित्य-धाम बृन्दावन-बासी ॥
रूपराशि आनन्द-निधाना * मंगल प्रद श्रीसुन्दर-श्यामा ॥
बहुरि रासपतिपद शिर नाऊँ * रासचरित मङ्गल अब नाऊँ ॥
बेदव्यास जो रास बखान्यो * सो गंधर्बब्याहबिधि जान्यो ॥
ब्रजगोपिन हरिहित तप कीनो * श्याम होयँ पति यह ब्रत लीनो ॥
नन्दनन्दन तिनको बर दीनो * चीर हरण लीला जब कीनो ॥
करिहौं तुह्मरे मनकी भाई * शरद रैनि शुभ लग्न धराई ॥
सो जब शरद सुखद ऋतु आई * राका रजनी परम सुहाई ॥
भक्त—मनोरथ—पूरणकारी * गावत बिरदबिदित श्रुतिचारी ॥
गये श्याम वृन्दावन माहीं * जहँ बसंत ऋतु रहत सदाहीं ॥
दो०-श्रीवृन्दावन धामको, शोभा परम पुनीत ॥
बर्णि सकै कबि कबन बिधि, मनबुधिबचनअतीत ॥ १ ॥
सो०-सब चैतन्यस्वरूप, भूमि लता द्रुम गुल्म तृण ॥
धारि रह्यो जड़रूप, सुन्दर श्याम बिहारहित ॥ १ ॥
जाको महिमा शिव मुनि गावैं * ब्रह्मादिक रज छुवन न पावैं ॥
जाको महिमा श्रीमुखबानी * संकर्षण प्रति श्याम बखानी ॥
चिंतामणि मय भूमि सुहाई * कोमल विमल रम्य सुखदाई ॥
सकल सुमङ्गलको जननीसी * कृष्ण-चरणपंकज-रमणीसी ॥
फिरत श्यामजू नाँगे पायन * चरण चिन्ह अंकित सबठायन ॥

पावनहूँकी पावनकारी * ब्रजबासो प्रभुको अति प्यारी ॥
बर्ण बर्ण वर बिटप सुहाये * परम अनूपम जाँहि बनाये ॥
सदा सुमन फल संयुत सोहैं * अमित सुगन्ध स्वाद मन मोहैं ॥
नवपल्लवदल परम सुहाये * जगमगात नग ज्योति लजाये ॥
बिपुल काँति शोभित बहुरंगा * अतिचित्रितछबि उठति तरंगा ॥
परम प्रकाश दशहुँ दिशिमाहीं * कोटि सूर शशि पटतर नाहीं ॥
पत्र पत्र प्रतिबिंब श्याम को * मोहित लखि मन कोटिकामको ॥
दो०-ठौर ठौर शोभित परम, तैसेइ लताबितान ॥
वृन्दावन तरुबेलि सब, नखशिख छबिकी खान ॥ २ ॥
सो०-और सकल सुखधाम, बैकुण्ठादिक श्याम के ॥
यह बिहार बिश्राम, ताते अति सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
बिपुल कुँज मंजुल छबि छाई * जिन्हैं सँचारत काम सदाई ॥
बहत समीर धीर सुखदाई * शीतल परम सुगन्ध सुहाई ॥
चित्रबिचित्र बिहँग मृग नाना * बोलत डोलत बिबिधबिधाना ॥
गुँजत भृङ्ग लुब्ध मकरंदा * छबि छबि पुँज कुंजबनवृन्दा ॥
तस्थि यमुना परम सुहाई * पुलिन पुनीत बर्नि नहिं जाई ॥
देति महा छबि झलकन रेती * मानहुँ परम कांतिकी खेती ॥
फूले बनज बिपुल बहुरंगा * गुंज करत मधुयाते भृंगा ॥
श्रीबृन्दावन छबि-समुदाई * सम्यक बर्णि कौन पै जाई ॥
जाकी पटतरको नहिं आना * बन अनूप अद्वैत बखाना ॥
ऐसो कछू परत है हेरो * है अस्थूल बपुष प्रभुकेरो ॥
गोपीजन इन्द्रियगण तामें * हैं चैतन्य आप हरि जामें ॥
नित्य धाम ताहोते गायो * यह पटतर मेरे मन भायो ॥
दो०-सुख निधिरसनिधि रूपनिधि, वृन्दाबिपिन उदार ॥
शारद नारद शेष शिव, वर्णत बिधि श्रुतिचार ॥ ३ ॥
सो०-सुखद न कोऊ आन, वृन्दावन सम दूसरो ॥
सकल विश्व सुखदान, सुख पावत मोहन जहाँ ॥ ३ ॥
तहँ वितस्ति इक शंख सुहायो * मणिमय सुभग श्रुतिनमें गायो ॥

तापर अद्भुत कमल विराजै * षोडशपत्र चक्रसम राजै ॥
योजन पंच तासु परमाना * रासस्थान सुबेद बखाना ॥
मध्य कर्णिका अतिरमणीया * बैठे तहां कान्ह कमनीया ॥
शोभा अमित नेत्र श्रुति वानो * ताते गिरा कहत सकुचानो ॥
कोमल श्यामल अंग सुहाये * निरखि कोटिशत काम लजाये ॥
नटवर वेष साज सब साजै * अंग अंग भूषण छवि छाजै ॥
शिखी शिखण्ड मनोहर माथे * बीच बीच मुक्तामणि गाथे ॥
जलजमाल बनमाल सुहाई * कुण्डल झलकअलकछबि छाईं॥
कटि पट पीत काछनी काछे * ललित शृंगारसुभट तनु आछे॥
मणिनजटित नूपर पग नीके * चरणकमल भावत जनजोके॥
रविशशि आदिक श्रुतिधर जेते * नख उपमा पूजत नहिं तेते ॥
दो०-अति अद्भुत लावण्यनिधि, श्रीबृन्दावन चन्द ॥
    निगम नेति किमि बर्णिये, रसिक नवल नन्दनंद ॥ ४ ॥
सो०-जिहिं गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूणानन्द हरि ॥
    सो पूरण अवतार, वृन्दावन, रस रासपति ॥ ४ ॥
देखि श्याम बनधामनिकाई * तैंसिय शरदरैन छबिछाई ॥
प्रफुलित कुमुदिन बनचहुँपासा * ललितमालती करति सुबासा ॥
तैंसोइ यमुना पुलिन सुहायो * तैंसिय पूरण शशि छबिछायो॥
तैंसिय जगमगज्योतिद्रु मनको * तैंसिय ललित सुगन्ध सुमनको॥
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई * हर्षि रासरुचि मन उपजाई ॥
तब कर लई सकल गुणजुरली * ललित योग मायासी मुरली ॥
नाद ब्रह्मकी उत्पति जासों * निगम अगम उपजे पुनि तासों ॥
बिश्व-विमोहनि मंत्रकलासो * हरिमुख कमल लति कमलासी ॥
राग-रंग-रस--रासबिलासी * सकल गुणन में आनन्दरासी ॥
श्याम अधर धर ताहि बजाई * त्रिभुवनमनमोहन ध्वनि छाई ॥
धरणि पतालजीव सब मोहे * नभ सुरगण सुन सुनत बिमोहे ॥
चकित चन्द मृग मारग भूले * बर्षंत अमृतकणन अनुकूले ॥
दो०-शिव बिरंचिसनकादिमुनि, तजि तजि ब्रह्मसमाधि ॥

भये नाद मुरली मगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥ ५ ॥
सो०-रहे सबै मन भूल, सिध चारण गंधर्व सुर ॥
तनु सुधि रही न मूल, सुनि मूरली नन्दनन्दकी ॥
थकित पवन गति गवन भुलानी * रह्यो प्रबाह नदिन थकि पानी ॥
झरना झरहिं पषाण कठोरा * नाचि उठे चहुँदिशि बन मोरा ॥
चकित बिलोकित मृग सबठाढ़े * खग रहे मौन मनहुं लिखिकाढ़े ॥
रहीं धेनु तृण गहि मुखमाहीं * थकित वत्स पय पीवत नाहीं ॥
सरकिसकतनहिंअहिध्वनिमोहे * उकठे बिटप हरित सब सोहे ॥
तरु बेली सब चंचल पाता * सब अंकुर दल प्रफुलित गाता ॥
सुनि ध्वनि शेष नाग अनुरागे * नाग सकल सोवतते जागे ॥
जड़ चेतन गति भइ विपरीता * हरिमुख मुरली सुनत पुनीता ॥
जे नर नारि तिहूं पुर माहीं * भये नादबश तनुसुधि नाहीं ॥
सुनिध्वनिचकितभईअतिभारी * जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी ॥
यदपिमुरलिध्वनित्रिभुवनपरसी * तदपियथाविधितिनहींदरसी ॥
यारसको तेई अधिकारी * नंदनँदन पियको अति प्यारी ॥
दो०-सुनतहि बौरीसी भई, बिसरी सबै सयान ॥
लगी ठगौरीसी मनहुं, मुरली की ध्वनि कान ॥ ६ ॥
सो०-रह्यो न उरमें धीर, बाजी बाजी कहि उठीं ॥
आकुल बिकल शरीर, सुनि मुरली ब्रजकी तरुणि ॥ ६ ॥
षटदशसहस गोपिका गोरी * मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गमन निहारैं * कोउ मनही बुद्धि बिचारैं ॥
घर घर तरुणि सबै बिततानी * आरयपथ गृहकाज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं * मुरली में हरि सबनि बुलावैं ॥
रही न सकीध्वनिसुनिअकुलाई * जो जैसे सो तैसेइ धाई ॥
लोकलाज गुरुजनडर डारयो * चलीं सकलगृहकाजबिसारयो ॥
काहू दूध उफनतै छांड़े * काहू दूध जमावत मांड़े ॥
काहू करति रसोई त्यागी * कोऊ पतिहिं जिमावति भागी ॥
बालक गोद सँभार न लीनो * दूध पियावतही तजि दीनो ॥

कोउ शृंगार करंति उठि धाई * उलटे भूषण बसन बनाई ॥
बाजूबंद पगनसो बाँधे * लै मंजीर उरनमें साँधे ॥
किंकिण डार लई गरमाहीं * हार लपेटति करसों जाहीं ॥
दो०-शीसफूल कर्णन धरे, कर्णफूल धरे भाल ॥
चलो सकल मुरली सुनत, बिभ्रम ब्रजको बाल ॥ ७ ॥
सो०-अंजन करि दृग एक, एक रह्यो अंजनबिना ॥
रह्यो न कछू बिबेक, भंई बिबश मुरली सुनत ॥ ७ ॥
मुरलीसों हरि टेरि बुलाई * उपजी प्रीति सकल उठि धांई ॥
मुरलीध्वनि मारग गहि लीनो * और कछू उर शोच न कीनो ॥
प्रेमस्वरूप सकल ब्रजनारी * पंचभूत अवगुणते न्यारी ॥
रोंकि रहे सुत पति पितु माता * ते किमि रुकहिं अगम यह बाता ॥
चलीं ध्यान धरि हरि उरमाहीं * गृह बन कुंज रुकीं कहुं नाहीं ॥
ज्यों प्रारब्धकर्मबश कोई * राखी रोंकि पतिन गृह सोई ॥
भयो बिरहदुख तिनको ऐसो * कोटिन कर्म जन्मफल जैसो ॥
पुनि धरि ध्यान हरिहिं उर लायो * कोटिस्वर्ग फल मानहुँ पायो ॥
यों करि भोग त्यागि तनु बाला * दिव्यदेह धरि मिलीं गुपाला ॥
इहिंबिधि बन सब चलीं किशोरी * लोक—बेद—मर्यादा तोरी ॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे * जरत भवन चलियत है जैसे ॥
एकएककी सुधि कछु नाहीं * झुंडन चली श्यामपहँ जाहीं ॥
दो०-गृह गुरुजन तजिलाज, तजि ब्रजसुन्दरी निकाय ॥
मुरलीध्वनिरसरँगरलीं, मिलीं श्याम बनजाय ॥ ८ ॥
सो०-नटवरबपु गोपाल, अधर सधर मुरली धरे ॥
सन्मुख सब ब्रजबाल, देखि दर्श आनँदभरी ॥ ८ ॥
ब्रजयुवतिन लखि मुदित बिहारी * मोर मनहुं छबिघटा निहारी ॥
कनकबर्ण शशिमुख सब बाला * पहुंची निकट जाय नँदलाला ॥
बिपिन सुहावन अतिछबि बाढ़ी * भई जाय सन्मुख सब ठाढ़ी ॥
रहे चकित हरिछबि अवलोकी * अटपटतनु न शृंगार बिलोकी ॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो * मनहीं मन अति हर्ष बढ़ायो ॥

अतिआदर करि कुँवर कन्हाई * बोले मंद मधुर मुसकाई ॥
बाँके बचन प्रेमरस माने * प्रेम–प्रतीति–कसोटी साने ॥
कहो अहो तिय ब्रजकुशलाई * निशि काहे बनको उठि धाई ॥
अर्धराति कछु डर नँहि कोनो * ऐसो कहा काज मन दीनो ॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं * निजपति तजि धांई बनमाहीं ॥
बेदपंथ निदर्‍यो तुम भारो * जाहु अजहुँ घर बेगि सबारो ॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं * बहुरौ तुमको त्रास दिखैहैं ॥
दो०-निजपति तजि परपतिभजे, तियकुलीन नँहिहोय ॥
मरे नरकजीवत जगत, भलो कहै नँहि कोय ॥ ९ ॥
सो०-युवतिनको पतिदेव, कहत बेद मैंहूं कहत ॥
करहु तिनँहिको सेव, जो तुम चाहतसुख लह्यो ॥ ९ ॥
और कछू जियमें जनि राखौ * करिये बेद बचन जो भाखौ ॥
तजिकै कपट करहु पतिसेवा * तियको पति तजि और न देवा ॥
क्रूर कपूत न्यायबिन रोगी * वृद्ध कुरूप कुबुद्धि बियोगी ॥
ऐसेहू पतिको तिय त्यागै * बड़ो दोष ताके शिर लागै ॥
ताते मानहु कहो हमारी * जाहु सकल घरको व्रजनारी ॥
मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं * ऐसे कहि कहि हरि पछताहीं ॥
कैसे उन तुम आवन दोनो * कैसो धौं यह बिधि तुम कीनो ॥
कैधौ कहि आई उनपाहीं * कैधौं बे जानत हैं नाहीं ॥
नवयौवन तुम सब सुकुमारो * निशिबसबो बन अनुचित भारी ॥
जो यह बात सुनै ब्रज कोऊ * हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ ॥
अब ऐसी कीजो मति कबहूं * करि बिचार देखौ मन तुमहूं ॥
बार बार युवतिन भरमाई * ऐसे सबसों कहत कन्हाई ॥
दौ०-निठुर बचनसुनि श्यामके, युवति उठीं अकुलाय ॥
चकित भईं मनगुन रहीं, मुख कछु बचन न आय ॥ १० ॥
सो०-बदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलन पर्‍यो ॥
शोचि रहीं शिरनाय, खोई निधि जनु पायकै ॥ १० ॥
बिरहबिकल चिंता अति बाढ़ी * रही चित्रपूतरिसी ठाढ़ी ॥

कपटखेल यह गिरिधर ठान्यो * प्रेमबिबश युवतिन नहिं जान्यो ॥
मनहींमन बिहँसत नँदलाला * भई बिरहव्याकुल ब्रजबाला ॥
सहि नहिं सकीं दुसह यह पीरा * बोलीं गद्‌गदगिरा अधीरा ॥
सुनहु श्याम सुन्दर बर नायक * यह जनि कहो नाहिं तुम लायक ॥
कोमल सुभग कमलमुख तातें * कैसे कहत कटुक ये बातें ॥
लै लै नाम बुलायो सबको * धर्म सिखावत हौ अब हमको ॥
छाँड़ि देहु पिय यह चतुराई * करहु हेत जिहिं भाँति बुलाई ॥
धर्म कर्म अति ताहि बखाने * जो कोउ धर्मकर्मबिधि जाने ॥
हम तौ लोकबेदबिधि त्यागी * चरणकमल तुम्हरे अनुरागी ॥
सकलधर्ममय चरण तिहारे * बसत सदा तो हृदय हमारे ॥
कहवावत हौ अँतर्यामी * काहे यह समुझत नहिं स्वामी ॥
दो०-अबयह तुमको उचितनहिं, सुनहुश्याम सुखरास ॥
मन हमरो अपनायकै, हमको करत निरास ॥ ११॥
सो०-पापपुण्य कह नाथ, यह तो हम जानें नहीं ॥
बिकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभलगि ॥ ११॥
अरु यह मृदुमुसकान तुम्हारी * सकल-धर्मकी मोहनहारी ॥
ऐसी को तिय ब्रजके माहीं * जाको मन इन मोह्यो नाहीं ॥
जसिय मुरली मिली सहाई * जिनि बिधिकी मर्याद मिटाई ॥
अब तो मृदुमुसकान मन मोहै * पाप पुण्य जानति नहिं कोहै ॥
हमतो पति इक तुमको जानैं * धिक जो और दूसरो मानैं ॥
कोटि करौ अब भवन न जाहीं * तुम तजि हमहिं और प्रियनाहीं ॥
जानत हौ सब अन्तर्यामी * काहे यह समुझत नहिं स्वामी ॥
मन बच कर्म तुम्हारी दासी * मृदुमुसकानि तुम्हारी प्यासी ॥
जरति सकल बिरहानलज्वाला * सींचहु अधरामृत नँदलाला ॥
दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो * हमतौ दीन न और बिचारो ॥
मृदुमुसकानिदान अब दीजै * दारुणविरह दूर पिय कीजै ॥
जो नहिं मानत बिनय हमारी * तौ यह तनु करिहै बलिहारी ॥
दो०-बिरह बिकल लखि गोपिकन, कृपा सिंधु भगवान ॥

उमँगि उठे दृगभरिलेय, दीनबचन सुनि कान ।। १२।।
धनिधनिधनि व्रजबाल, कहत मनहिंमन हर्षिहरि ।।
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुं कर जोरि तब ।। १२।।
बोले प्रभुता डारि गुपाला * धन्य धन्य तुम व्रजकी बाला ।।
तुम सन्मुख मैं बिमुख तुम्हारे * दूर करौ यह दोष हमारे ।।
मैं निर्दय बहु बचन बखाने * तुम अपने जिय एक न आने ।।
मोकारण गृह कुटुँब बिसारो * धनि धनि धनि यह नेम तुह्मारो ।।
लोकलाज शंका सब त्यागी * मनबचक्रम मोसों अनुरागी ।।
यों कहि बिहँसि मिले नंदलाला * अंकम भरि लीनी सब बाला ।।
यदपि अकाम सदा सुखरासी * तदपि भये रसप्रेमबिलासी ।।
एकहि बार युवति सब भेंटी * दुसह ताप बिरहानल मेटी ।।
कह्यो बिहँसि सबसों गिरिधारी * करहु रासरस मिलि सुखकारी ।।
कृपादृष्टि अवलोकन नैनन * हँसि हँसि सींचत अमृतबैनन ।।
चहुँदिशि हर्षभरीं सब ग्वारी * मध्य श्यामसुन्दर बनवारी ।।
बिहरत बन बिहार सुखदाई * नवल गोपिका नवल कन्हाई ।।
दो०-हँसत करत बहु रसचरित, युवतिवृन्द लिये संग ।।
गये यमुनतटश्याम तब, क्रीडन कोटि अनंग ।। १३।।
सो०-सोहति अतिकमनीय, कोमल उज्वल रेत तहँ ।।
परो परमरमणीय, यमुनाजी निजपाणिरचि ।। १३।।
कहत समीर त्रिबिध सुखदाई * कुसुम–धुरी–धुंधरछबि छाई ।।
उडत सुगंधलपट चहुंओरा * गुंजत भँवर चारु चितचोरा ।।
बैठे तहाँ श्याम सुखसागर * कोटिकाम मन मथन उजागर ।।
करत बिलास हासरसलीला * कोटि--अनंग–रंग सुखशीला ।।
परिरंभन चुंबन कुचपरसन * हिय हुलास आनँदरसबरसन ।।
कामभाव गोपिन हरि ध्यायो * कियो सबनके मनको भायो ।।
अस अद्भुत रस प्रेम बढायो * बहुरि रासरसरँग उपजायो ।।
सुनि पियवचन सकल अनुरागीं * भूषण बसन सँवारन लागीं ।।
लखि उलटे भूषण सकुचानीं * निरखि परस्पर तिय मुसकानीं ।।

नवसत साज भंई सब ठाढ़ीं * परम—प्रेम आनन्दरस-बाढ़ी॥
बंसीबट छबिधाम अनूपा * कोटि कल्पतरुसम सुखरूपा ॥
तहाँ रच्यो रसरास कन्हाई * भइ कपूरमय भूमि सुहाई ॥
छन्द-भई भूमि कपूर मय रज बर्षि जल कुम कुम सिंचो ॥
परम कोमल सुभगशीतलज्योति मणि कंचन खिंचो ॥ १ ॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुदर रासमण्डल बिधि रचो ॥
बर्णि कापै जात सो छबि निरखि शारद गतिलचो ॥ २ ॥
एक एकहि युवती के बिच मधुर मूरति श्यामको ॥
तिन मध्य जोरी रासनायक राधिका घनश्यामको ॥ ३ ॥
एक रूप अनेक बपु धरि सबन के बिच राजही ॥
करी यह लीला प्रगट प्रभु मर्म कोउ न जानहीं ॥ ४ ॥
भंई मण्डल जोरि ठाढीं जात नहिं मुखछबि भनी ॥
सहस बत्तिसउ दित शशि मनु मध्यघनदामिनिबनी ॥ ५ ॥
दो०-तिहि अबसर ललना सहित, आये सुर मुनि सर्व ॥
देवनटी किन्नर बधू, तुँबुरादि गंधर्व ॥१४॥
सो०-देखत चढे विमान, हर्षि हर्षि वर्षत सुमन ॥
करत मुदित मन गान, धन्य धन्य ब्रजजनन कहि ॥१४॥
सुरगण सब बाजंत्र बजावैं * निरखति ब्रज सुन्दरि छबिपावैं॥
नूपुर कंकण किंकिणि बाजैं * मन्द मधूर मुरलीस्वर गाजैं ॥
ताल मृदंग बीण मुरुचंगा * सुर मण्डल सारंगि उपंगा ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजैं * मिले एक सुरसों सब बाजैं॥
नर्तत पिय सँग चँचल बाला * जनु क्रीडत घन दामिनिजाला॥
बिच बिच श्यामबीच ब्रजगोरी * मरकतमणि-कंचन की जोरी ॥
सुभगत माल तरुण नँदलाला * कनकलतासम सब ब्रजबाला ॥
करसों कर जोरे छबि छाजैं * कोटि काम छबि निरखत लाजैं॥
वृन्दावन उर मनहु बिशाला * लसत रासमण्डल की माला ॥
हरि ब्रजनारि परस्पर सोहैं * कोटि—काम—रतिके मन मोहैं॥
सटकि चलत गति नागरनटकी * लटकन मुकुट लटक घूंघटकी॥

जनु नब घन दामिनी बरूथा * निरखि नचत मोरन के यूथा ॥
छन्द-नचत मानौ मोर यूथन मुकुट लटकनि यों फबै ॥
चलत गति नागरिन सँग श्याम नटनागर जबै ॥ ६ ॥
धरणिपग पटकनि झटकिकरभौंह मटक न कहि परै ॥
ग्रीव चालन हलनि कुँडल कर जु फेरन मन हरै ॥ ७ ॥
मणि कंठ मुक्तामाल उर बनमाल चरणनलौं बनी ॥
बदन पंकज अलक श्रमकणझलकछबिसक को भनी ॥ ८ ॥
पटपीत फरकन काछनी कटि लाल किंकिणि सोहई ॥
मलय चित्रित बाहुभूषण श्याम तनु मन मोहई ॥ ९ ॥
लखिरहततनुनँदलालतियछबिविविधविधिवेणीगुही ॥
सुभट पाटी माँग मुक्ता शीस फूलन छबि रही ॥१०॥
जटित भाल जराव बेंदी उदित द्युति भ्रू बंककी ॥
ललित बेसरनाक अंजननयन श्रुति ताटंकको ॥११॥
अधर दशन कपोल चिबुकन कंठभूषण अति बने ॥
करत रास बिलास अद्भुत हरत मनमोहन मने ॥१२॥
दो०-कबहुं ललित गतिते चलत, नवल सुघर नँदनंद ॥
निरखि हरखि तैसे चलत, नवल नागरी वृन्द ॥१५॥
सो०-कबहुँ बिचक्षण बाम, लटकि लेति नूतन गतिहिं ॥
रीझि रसिक घनश्याम, तापर तनु मन वारही ॥१५॥
निर्तत अरस परस पिय प्यारी * बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलधुनि पियके गुणगावै * कोउअभिनय करि भाव बतावै ॥
कोउ संगतकला-गुणधारीं * कोउ उघटत चटकत करतारी ॥
निर्तत ताल-भेद-गतिलीना * सुघर एकते एक प्रबीना ॥
जात रसिकपिय बिकिबिनमोलैं * जब थेइ ताथेइ थेई बोलैं ॥
तान—तरंग रंग उपजावैं * लेत उपज अतिरस वर्षावैं ॥
कबहुंक उघटत छैल कन्हाई * फिरत लुब्धजिमि बालसुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते * झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
लटकि लटकि नर्तति अलबेली * ग्रीद ग्रीव मंजुल भुज मेली ॥

कोऊ पियके सँग मिलकरिगावै * कोउमुरली को छीनि बजावै ॥
काहुहि श्याम लेत भुजभरिकै * तजैं कमल मुखचुम्बन करिकै ॥
रमत रास पियसंग छबीली * परम—प्रेमरसरंग—रँगीली ॥
छन्द-रस रँग रँगीली प्रेमके बश रास रस पियसँग करैं ॥
निरख देव प्रसून बर्षहि हर्षि उर आनन्द भरैं ॥१३॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजकी धन्य बन पुनि पुनि कहैं ॥
करत रासबिलास पूरण ब्रह्म जहँ परगट अहैं ॥१४॥
शम्भु अज सनकादि नारदमुदित गुणगण गावहीं ॥
निरखिछबिनिधिश्यामश्यामाब्रह्मसुखबिसराबहीं ॥१५॥
देबनारि बिसारि पतिगति परस्पर कह शोचहीं ॥।
ब्रजवधू बिधि हम न कीनी देखि सुखमन लोभहीं ।१६॥
कहा भयो जो ऊरधवसी अरु अमरपदबो जो लही ॥
करतसुख जो श्यामसँग ब्रजनारि सोत्रिभुवननहीं ॥१७॥
बार बार मनाय बिधना कहति यह बर दीजिये ॥
होंय दासी ब्रज वधुनकी कृष्णपदरसि कीजिये ॥१८॥
दो०-धनि धनि कहि बर्षहिंसुमन, मुदितसकलसुरनारि ॥
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रजगोपकुमारि ॥१६॥
सो०-धनि धनि रासबिलास, धनि सुन्दरता धन्य सुख ॥
धनि बृन्दाबनबास, सुरललना बिथ की कहत ॥१६॥
रमत रासरस गोपकुमारी * नँदनँदन पियकी सब प्यारी ॥
करति गान कोंकिला लजावैं * हाव भाव करि पियहिं रिझावैं ॥
राग रागिनी समय सुहाये * सहज बचन जिनके मन भाये ॥
गति सुगन्ध निर्तत सब गोरी * सहजरूपनिधि नवलकिशोरी ॥
पग महि पटकि भुजनलटकावैं * फंदा करन अनूप बनावैं ॥
निरखिलेत उपजति छबिभारी * रीझि रहतलखिछबिगिरिधारी ॥
बेनी छूटि सबै बगराहीं * अलकैं बेसरसों उरझाहीं ॥
श्रमजलबिंदु बदन द्युतिकारी * मनहुं सुधाकण चन्द मँझारी ॥
अतिबश होत निरखिमनमोहन * फिरत सबनके गोहन गोहन ॥

नारिनारि प्रति रूप प्रकासै * एकहि रूप सबनको भासै ॥
अद्भुत कौतुक प्रकट दिखायो * कियो सबनके मनको भायो ॥
निर्तत अंग थकित भईं नागरि * रूप-प्रेम-गुण-परम-उजागरि ॥
छन्द-भई निर्तत थकित तरुणी रूपगुणन उजागरी ॥
उमँगि तब उर लाय लीनो श्यामलखि नवनागरी ॥१९॥
गिरत उरते हार टूटे निरखि प्रेम जनाइहीं ॥
लेति बीचहि गहि तिन्है महिमाँझपरन न पावहीं ॥२०॥
अतिप्रीति श्रमजलपीतपटसों पोंछिपवन डुलावहीं ॥
उरझि बेसरसों रही लट कमलकर सुरझावहीं ॥२१॥
देखि विव्हलगात्र भूषण शिथिल अंग सँवारहीं ॥
कहिकहिबचनमृदुपरस्परनिजपाणिश्रमहिंनिबारहीं ॥
दो०-ऐसो बिधि ब्रज सुन्दरिन, देत परमसुख श्याम ॥
लखि पतिगति स्वाधीन अति, भईं गर्विता बाम ॥
सो०-परम प्रेमको खान, रूप शील गुण आगरी ॥
क्यों न करै अभिमान, जिनके बश त्रिभुवनधनी ॥१७॥
कहति भईं निजनिज मनमाहीं * हमसम और युवति जगनाहीं ॥
अब गिरिधर हमबशकरिपाये * करत हमारे मनको भाये ॥
अब हमते नहिं व्हैंहै न्यारे * रहिहै सदा समीप हमारे ॥
जोइ जोइ हमकहिहैंसोइ करिहैं * सदा हमारे सँग बिचरिहैं ॥
कोउ पियअंश भुजनको दीने * कहति बचन यों गर्वहि लीने ॥
सुनौ श्याम मैं अतिश्रमपायो * अबतौ मोपै जात न गायो ॥
एक कहति मम पायँ पिराहीं * मोपै नृत्य होत अब नाहीं ॥
एक कण्ठ भुज मेलि सयानी * रहो लटकि बोलति नहिंबानी ॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हे * हरि अन्तरयामी सब चीन्हे ॥
गर्व देखि मोहन मुसकाने * मैं अवगति मोको नहिं जाने ॥
करत सदा भक्तन मनभाई * एक गर्व श्यामहिं न सुहाई ॥
सौ युवतिन के मनमें जानी * दूरकरनहित यह जिय आनी ॥
दो०-प्रेम अभूषण कनक सम, मलिन गर्वते होय ॥

बिरह अग्नि ताये बिना, निर्मल होय न सोय ॥ १८॥
सो०-यह बिचार जिय आन, लै वृषभानु कुमारि सँग ॥
व्है गये अन्तर्धान, ब्रजवासी प्रभु संगते ॥ १८॥

अथ अन्तर्धान लीला ५३.

प्रेम-बढ़ावन-हित सुखदाई * अन्तर करि बन दुरे कन्हाई ॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं * चकित भंई तब सब मनमाहीं ॥
कहति एक कित कुँवर कन्हाई * उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई ॥
भंई बिकल कछु मर्म न पायो * पाय महाधन मनहुं गवाँयो ॥
खोजति जहँ तहँ दृष्टि पसारें * अतिआतुर चहुँओर निहारें ॥
तब सबहिन मिलिकै यह जानी * लैगइ हरिको कुँवरि सयानी ॥
कछू हर्ष कछु रिस उर धारी * देति भंई हँसि रसकी गारी ॥
इनसमान कपटी कोउ नाहीं * करत सदा दुबिधा हमपाहीं ॥
चलहु खोज कुँजनमें लैहैं * जान कहाँ हमते बन पैहैं ॥
ढूँढ़न चलीं सकलबनमाहीं * चरणचिन्ह खोजति सब जाहीं ॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा * कोउ बन घन कोउ यमुनातीरा ॥
कोउ कुंजन कोउ पुंजन हेरैं * श्याम श्याम करि कोउ टेरैं ॥
दो०-इहिबिधि सबखोजति फिरैं, बिरहातुर ब्रजबाल ॥
भंई बिकलपावति नहीं, कछू खोज नंदलाल ॥ १ ॥
सो०-यद्पि कियो हरि ख्याल, नेकु दुरेवन कुंजमहँ ॥
तदपि भंई बेहाल, युवति श्याम देखे बिना ॥ १ ॥
पलकांतर बिधिको दिन जिनको * बनअन्तर अति बड़ दुख तिनको ॥
भंई बिरहव्याकुल चित जबहीं * हरिपदचिन्ह लखति भइँ तबहीं ॥
कुलिशकमल ध्वज अंकुश जामें * जगमगात बनघन महि तामें ॥
निकट चिन्ह प्यारी चरणनके * अरुण कमल दलके बर्णनके ॥
बंदन करन लगीं रज सोई * शिव बिरंचि याचत जे होई ॥
कछु इक धीर धर्यो मनमाहीं * खोज लेति ताही मग जाहीं ॥
कुँवरि कान्ह प्यारीसँग लोने * फिरत सकल कुंजन रसभीने ॥
कबहुँ कुसुमबनमाल बनावें * निरखि हर्षि प्यारिहि पहिरावें ॥

कबहूँ सुमन सँवारत वेणी * परमसुभग शोभाकी श्रेणी ॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुँघावै * नागरि मन अभिलाष बढ़ावैं ॥
कंठ कंठ भुज दोऊ जोरैं * घनदामिनि छूटैं तहिं छोरैं ॥
अति प्यारीके रसबश मोहन * भौंह निहारत डोलत गोहन ॥
दो०-अति हित लखि अनुकुल अति, हरि हिलाडिलो होय ॥
ताते उपज्यो गर्व जिय मैं अति प्यारी पीय ॥ २ ॥
सो०-एक प्राण द्वै देह, तहाँ गर्व कहँ पाइये ॥
यामें नहिं संदेह, देह धरेको भाव यह ॥ २ ॥
तब प्यारीके मन यह आई * मेरेही बश कुँवर कन्हाई ॥
मेरे हित बाँसुरी बजाई * मेरेहित सब तियन भुलाई ॥
मेरे हित रस रास उपायो * सबहिन तजि मोसों मन लायो ॥
मोसम सुन्दरि चतुर उजागरि * और नहीं युवती कोउ नागरि ॥
ऐसे गर्वति मनहिं मनमाहीं * ठठकि रहति गहि पियकी बाहीं ॥
बठी जाति कबहूं मगमाहीं * कहति कि मेरे पाँय पिराहीं ॥
चलन कहत तुम जहाँ कन्हाई * मोपै पगन चल्यो नहिं जाई ॥
नृत्य करतमें अतिश्रम पायो * ताते पग नहिं जात उठायो ॥
सुनहु मित्र मोहन सुखदाई * कंध लेहु पिय मोहिं चढ़ाई ॥
ऐसे तिय जब बचन बखाने * गर्ब जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहाँ गर्व तहँ रहत न कबहीं * अन्तर्धान भये हरि तबहीं ॥
तुरतैं बिकल भई अति प्यारी * देखत दुरे चरित गिरिधारी ॥
दो०-चकित भई तब नागरी, गये कितै भजि श्याम ॥
मनहीं मन पछतात अति, भूली तन सुधि बाम ॥ ३ ॥
सो०-मैं कीनो अभिमान, नारि बुद्धि ओछी सदा ॥
वे पिय परम सुजान, जान लई मो जीव की ॥ ३ ॥
भई बिकल समझति निज करणी * सो वह दशाजाय नहिं बरणी ॥
बिरह बिथा बाढ़ी अति तनमें * परम अकेली रोवति बन में ॥
नैन सलिल भीजत तन सारी * श्वासि श्वासि पिय कहति पुकारी ॥
हा हा नाथ अनाथ न कीजै * बेगि श्याम मोहिं दर्शन दीजै

मैं तुम कृपा पाय गरबानी * ताते सखी समार न बानी ॥
सो अपराध क्षमाअब कीजै * यह दूषण मनमाहीं न दीजै ॥
बेगि कृपाकरि मिलहु दयाला * अहो कमलदल नैंन रसाला ॥
बिरह बिकल यों बदत अकेली * रोवत सुन खग मृग द्रु म बेली ॥
तहँ खोजति आईं सब नारी * दूरिहि ते देखी तिन प्यारी ॥
मुख शशि ज्योति रूपकी रासी * जनु घनते बिछुरी चपलासी ॥
द्रु म शाखा अविलंबिन ठाढ़ी * रुदन करति बिरहा दुख बाढ़ी ॥
ब्याकुल चकित चहूं दिशि जोवैं * कमल चरण नख भूमि करोवैं ॥
दो०-जित तित तै धाईं सबै, ब्रज सुन्दरि अकुलाय ।
ब्याकुल लखि अति लाड़िली, लीनो कंठलगाय ॥
सो०-कहाँ गये गोपाल, बार बार बूझत सबै ।
मुरछित तन भइ बाल, मुखते बचन न आवइ ॥
देखि दशा सब तिय अकुलानी * बैठारी अंकम गहि पानी ॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं * काहे मुरछि परी महि माहीं ॥
या बन में कैसे तू आई * कहाँ गये तजि तोहिं कन्हाई ॥
निरखि बदन सबहिन सुखकीनों * मानहुं असिनिधि अमृत दीनों ॥
कोऊ लगी सँवारन अलकै * कोउ अंचरते पोछति पलकै ॥
नैंन नीर कछु सुधि नहिं देहीं * अतिब्याकुल बिन श्याम सनेहीं ॥
बूझति युवति कहाँ बनवारी * चलिये तहाँ तोहि लै प्यारी ॥
सुनत मान पियको अनुरागी * बिरह मोह निद्रा ते जागी ॥
जान्यो आये कुँवर कन्हाई * नैंन उघारि मिलन को धाई ॥
जो देखै तौ सब ब्रजबामा * अतिही बिलखि उठी तब श्यामा ॥
कहति मोहिं त्यागी नँदनन्दन * तुमहूं नहीं मिले जगबन्दन ॥
मैं अपने जिय गर्ब भुलानी * नहिं उनकी महिमा कछु जानी ॥
दो०-बोलि पियसों मदमति, मैं अभिमान बढ़ाय ।
लीजैकंध चढ़ाय स्वाहिं, मोपै चल्यो न जाय ॥
सो०-वे प्रभु परम सुजान, बिहँसि कह्यो स्वाहिं चढ़नको ।
ह्वै गये अन्तर्द्धान अपनो चूक कहा कहौं ॥

गये श्याम धौं कित बन माहीं * मेरी दृष्टि परे कहुँ नाहीं ॥
कहति बिकल नैनन जल ढारी * मोको त्यागि गये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई * श्याम बिरह दुख सह्यो न जाई ॥
देखि दशा ब्याकुल सब नारी * कहति निठुर री अति बनवारी ॥
त्रिया पुरुषसों मानु जु करहीं * पुरुष नहीं ऐसी उर धरहीं ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे * नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिका सों ब्रजनारी * मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी ॥
चलीं आप खोजन सब बनमें * बिरह बिकल कछु सुधि नहि तनमें ॥
टेरत जहँ तहँ घोस कुमारी * अहो रासपति कुञ्जबिहारी ॥
कहाँ दुरे पिय हमते भजिकै * तुम बिन प्राण जातहैं तजिकै ॥
क्षमा करौ प्रभु चूक हमारी * मिलहु कृपा करि बेगि मुरारी ॥
तुम बिन हम को सुनहु कन्हाई * क्षण क्षण कल्प समान बिहाई ॥
दो०-जरत सकल तुमदरश बिन, बिरह अग्नि तन बाम ।
मंद मधुर मुसकान सुख, बरषि बुझावौ श्याम ॥
सो०-सकल बिश्वसुखधाम, गावत तुमको जगत सब ।
तिन्हैं होत कत बाम, जो दासी बिन मोलकी ॥
सदा हमारी रक्षा कीन्ही * गरल अनल जल तें रख लीन्ही ॥
अब कत निठुर होतहो प्यारे * बिरह जरावत गात हमारे ॥
कतहिं फिरत बन चरण उघारे * गड़िहैं कुश कंटक अनियारे ॥
तुम पद बसत हमारे हिय में * ते कंटक शालत हैं जिय में ॥
अहो नाथ यह जिय उर धारी * सुख दैकै दुख देत मुरारी ॥
ऐसे कहति सकल ब्रज डोलैं * अलबल बचन बदनते बोलैं ॥
अति अकुलाय गईं बन माहीं * जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं ॥
बूझति बन बिटपन सों धाईं * तुम कहुं देखे कुँवर कन्हाई ॥
अहो कदम अहो अम्ब तमाला * हमहिं बतावो कित नँदलाला ॥
अहो जुही मालती निवारी * लखे कहूं इत जात बिहारी ॥
हे चम्पक हे श्रीफल कदली * हे दाड़िम हे जामुन बदली ॥
तुम देखे मनमोहन लाला * श्याम कमलदल नैन बिशाला ॥

हे पलाश हम दासि तुम्हारो * कहो कहाँ सुखराशि बिहारी ॥
दो०-हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करौ निजधाम ।
लेतनहींयश हे पनस, क्यों न कहत कित श्याम ॥
सो०-हे मंदार उदार, हे पीपर हरु पीर मम ।
कहि कित नन्दकुमार, सुन्दरघन तनसाँवरो ॥
हे चन्दन तन जरत जुड़ावो * नंदनंदन पिय हमहिं बतावो ॥
हे अवनी चित चोर हमारे * कित राखे नवनीत पियारे ॥
तुमते दूर कहौं हरि नाहीं * क्यों न मिलाय देत हम पाहीं ॥
कहिधौं कुंद मुकुंद कहाँ हैं * हमको देउ बताय जहाँ हैं ॥
हे बट नट नागरहि बताओ * कहूं निकट नंदसुवन दिखाओ ॥
कहुधौं मृगी मयाकरि हमको * पूछति हम हा हा करि तुमको ॥
देखियत डहडहे नयन तुम्हारे * तुम कहुं मोहनलाल निहारे ॥
हे दुख दवन पवन सुखकारी * कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी ॥
जहाँ होयँ बलबीर बिहारी * कहति जाय कित ब्यथा हमारी ॥
हे तुलसी तुम तौ सब जानों * क्यों नहिं हरिसों प्रकट बखानों ॥
तुम तो सदा श्याम को प्यारी * कहत नहीं यह दशा हमारी ॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुन को * लै गये श्याम इनहुं के मनको ॥
दो०-इहि बिधि बन घन ढूँढ़ सब, ब्रजतिय बिरह उदास ।
इत उत में फिर आवहीं, कुँवरि राधिका पास ॥
सो०-मनहुँ नीर बिन मीन, अतिब्याकुलता लफत परी ।
श्याम बिरह अति दीन, कनक लतासी नागरी ॥
व्याकुल कहति सकल ब्रजबाला * अजहूँ नहिं आये नंदलाला ॥
कहा करैं अब कित को जैये * श्याम बिना कैसे सुख पैये ॥
तब सब बहुरि यमुन तट आईं * जहाँ रसिक पिय रास रमाईं ॥
बैठीं सब राधा ढिग धामा * कहन लगीं हरि गुणगण ग्रामा ॥
सब के ढिग हरि सोहत कैसे * दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे ॥
युवति नहीं कोउ उनको देखैं * हरि सब ही को लीला पेखैं ॥
देखि देखि मन अति सुख पावैं * परम रीति रसरीति बढ़ावैं ॥

करत चरित्र बिचित्र बिहारीं * सदा श्याम भक्तन सुखकारो ॥
बिरह अग्नि तन गर्व जरावैं * निर्मल प्रेम भक्ति उपजावैं ॥
गोपोजन सब हरि की प्यारी * नेक नहीं कहुँ हरिते न्यारी ॥
कहति श्याम ब्रज प्रकटे जबते * देत सबन को सब सुख तबते ॥
तिन में हम सब उनकी दासी * क्यों हम तजि हरि भये उदासी॥
दो०-व्याधहु ते करणी कठिन, हम तें कीनो श्याम ॥
बेणु बजाय बुलाय सब, बधत मृगो लों बाम ॥
सो०-कीजै कौन उपाय, मोहन मुख देखे बिना ॥
मरति मसोसा खाय, यह मन गोध्यो माधुरी ॥
सदा हमारे मन को भावै * तिरछी चितवन चितहि चुरावै॥
जब अति बालक हते मुरारीं * बाल बिनोद किये सुख कारी ॥
खेलत में बहु असुर सँहारे * बिघन अनेकन ब्रज के टारे ॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनों * गिरिवर धर ब्रजकोरख लीनों॥
हलधर सखन सङ्ग मुरली धरि * गोचारन बन जात जबहिं हरि॥
तब हमको बीतत दिन जैसे * जानत है हमरो मन तैसे ॥
कुण्डल मुकुट केश घुँघरारे * गोरज रंजित दृग अनियारे ॥
पीतबसन बनमाल बिशाला * बेणु बजाबत मधुर रसाला॥
सखन मध्य गौवन के पाछे * चन्दन चित्र सुभग तन आछे॥
सांझ समय आवत जब देखैं * तब हम जन्म सुफल करि लेखैं॥
ऐसे कहत सकल ब्रजनारी * हरिगुण रूप कथा बिस्तारी ॥
समुझत कहत श्याम गुण रूपा* उपजी उर अति प्रीति अनूपा॥
दो०-भूलि गईं सुधि देह की, भयो बिरह दुख औन॥
केबल तनमय ह्वै गई, नहिं जानति हमकौन ॥
सो०-भृङ्गी कीट समान, मगन ध्यान रस नागरी ॥
बिसरो सकल सयान, भईं आपुही कृष्ण तन॥
लागी करन चरित सब हरिके * पूरण प्रेम भईं गिरिधर के ॥
ये लीला उनहीं को सोहैं * नेक नहीं जानति हम को हैं ॥
एक भई दधि चोर कन्हाई * एक पकरि गहि भुज लै आई ॥

एक यशोमति को बपुधरिकै * बधति है ऊखलसौं हरिकै ॥
इक भइ गाय एक गोपाला * बोलति वैसेइ बचन रसाला ॥
कारी धौरी धूमरि कहि कै * हटकति फिरतिलकुटकरगहिकै ॥
कहती एक अमर गिरधारी * गाय गोप सब रहौ सुखारी ॥
कहति एक मूँदौ सब लोचन * मैं करिहौं दावानल मोचन ॥
एक यमल अर्जुन तरु भंजै * एक बकासुर बदन बिभंजै ॥
एक बस्त्र को नाग बनाई * तापर निरत करत हर्षाई ॥
एक दही को दान चुकावै * इक त्रिभंग ह्वै बेणु बजावै ॥
मगन भईं सब या रस माहीं * तन अभिमान रह्यो कछु नाहीं ॥

दो०-अन्तर नेक रह्यो नहीं, भईं श्याम ब्रजधाम ॥
तब अन्तर करि नहिं सके, भये निरन्तर श्याम ॥

सो०-प्रकट भये ततकाल, तिनहीं मधि नँद लाड़िले ॥
सुन्दर नैन बिशाल, गोपी जनबल्लभ सुखद ॥

प्रेम मगन अति आतुर ताई * श्रीवृषभानु कुँवरि उर लाई ॥
देखि प्रकट दरशन गोपाला * मिलीं धाइ आतुर ब्रजबाला ॥
ज्यों धनराशि परी कहु पावैं * लोभी जन लूटन को धावैं ॥
लपटी एक धाय उरमाहीं * एक मिलत ग्रीवा दे बाहीं ॥
कोऊ परी चरण पर धाई * कोऊ अंग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि कर पंकज लावैं * तपत विरह की ताप सिरावैं ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नबेली * जनु शृङ्गार बिटप छबि बेली ॥
कोऊ मुख छबि रही निहारी * कोऊ रही चरण उर धारी ॥
कोउअंकमभरि कहत भलेहरि * एक पीत पट छोरि रहीं धरि ॥
हरिसोंमिलीं लसतियोंभामिनि * जनु बन घनघेरयोबहुदामिनि ॥
कहुं अंजन कहुँ कुंकुम रेखा * कहूँ पानको लीक सुबेखा ॥
युवतिन मध्य लसे हरि प्यारे * कृपा दृष्टि सब ओर निहारे ॥

दो०-पुनि बैठे हरि हरषि तहँ, युवति वृन्द चहुँ ठाम ॥
सबके सम्मख राजहीं, सुन्दर छबि घनश्याम ॥

सो०-बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्याल हम ॥

कतहिं भई बेहाल, तुम प्राणन ते मोहिं प्रिय ॥
सकुची सुनि प्यारी यह बानी * मन जान्यो नहिं प्रकट बखानी॥
कहि कहि कोमल बचन कन्हाई * सबको दुख डार्‌यो बिसराई ॥
अति आनन्द सबन को दीनों * सुफल मनोरथ सबको कीनों ॥
जाके साध हती जिय जैसी * पूरण करी श्याम मन तैसी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले * बढ्यो अनंद सकल दुख भूले ॥
तबहरिसों सब नवल किशोरी * पूछन लगीं बिहसि कर जोरी ॥
प्रेम प्रीति की रीति सुहाई * हमें कहौ समुझाय कन्हाई ॥
इक जो प्रीति परस्पर कहिये * एक एकही दिशितें लहिये ॥
एक दुहुन को मानत नाहीं * ताको कहा कहत जग माहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति जोई * कहहु श्याम हम सों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं * तातें पूँछति हैं तुम पाहीं ॥
सुनि गोपिन के बचन रसाला * भये प्रेम बश परम कृपाला ॥
दो०-यदपि जगत गुरु अजित प्रभु, जान राय व्रजचन्द ॥
प्रेम विबश हारे तदपि, अपने मुख नँदनन्द ॥
सो०-कहत भये तब कान्ह, सुनहु प्राण बल्लभ प्रिया ॥
नहिं तुम समकोउ आन, निपुण प्रेमके पंथ में ॥
तद्यपि तुम पूँछति हौ जैसे * प्रकट करौं लक्षण सब तैसे ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई * स्वारथ हेतु करत सब कोई ॥
जैसे पशू पशू को जानै * आपुस में सब हित करि मानै ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावै * जासों सब संसार बँधावै ॥
दूजी प्रीति एक दिशि जोई * करनि धर्म अधिकारी सोई ॥
जैसे मात पिता चित धरिकै * रक्षत हैं सुतके हित करिकै ॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत * उत्तम गति तातें जन पावत ॥
जो यह दोउन को नहिं जानै * गुण दूषण कछु उर नहिं आनै ॥
तिन्हैं सुनो मैं कहत बखानी * कै कृतघ्न कै पुनि अज्ञानी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई * अनायास उपजत उर जोई ॥
दुहुँ दिशि हठ कर प्रीति बढ़ावैं * नहिं निमित्त तामें कछु आवैं ॥

अन्तर नेक परै नहिं कोई * प्रीति पुनीत जानिये सोई ॥
छन्द-नहीं अन्तर नेक जामधि नीति उत्तम सो कही ॥
करी मोसों तुम सबन सोइ मैं ऋणी तुम्हरो सही ॥
करहुं जो उपकार तुम प्रति कोटि कोटिन जगभरी ॥
कबहुं होहुं न ऊऋण तुमते हे प्रिया ब्रजसुन्दरी ॥
करै ऐसी कौन जैसी तुमन जो करणी करी ॥
लोक बेद मर्याद ममहित तोंरि तृणसम परिहरी ॥
करहु मनते दूर अब यह दोष मैं तुमते किया ॥
कियो अंतर परमसुख में बिरह दुख तुमको दियो ॥
दो०-ऐसे प्रेमाधीन व्है, कहि कहि बचन रसाल ॥
दूर करी युवतीन के, मन ते गाँस गुपाल ॥
सो०-बाढ़यो परमानन्द, ब्रजबासिन प्रभु बचन सुनि ॥
परम मुदित तिय बृन्द, प्यारो प्रिय नँदनंद को ॥

* अथ महामगल रासलीला *

सुनि पियके मुखकी रस बानी * गोपीजन सब मन हरषानी ॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाये * मनते सब सन्देह मिटाये ॥
देखि सबन की प्रीति कन्हाई * बहुरि रासरस रुचि उपजाई ॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो * वही भाव सबके मन आयो ॥
यह जान्यो सबहिन तबहींतें * करत रासरस पिय सबहींतें ॥
अंतर्द्धान चरित सब भूलीं * वैसेइ आनन्द के रस फूलीं ॥
वहै रास मण्डल विधि जोरी * बिचबिचश्यामबीचबिचगोरी ॥
वैसेइ मधि नायक हरि राधा * वहैं परस्पर प्रीति अगाधा ॥
वैसेइ मुरली श्याम बजाई * वैसेइ थकित भयो उडुराई ॥
वैसेइ सुर बिमान नभ सोहैं * वैसेइ सुर मुनि गन्धर्व मोहैं ॥
वैसेइ खगमृग नव द्रुम बेली * वैसेइ यमुना पुलिन सहेली ॥
वैसेइ पवन त्रिबिध सुखदाई * वही रासरस रूप निकाई ॥
छन्द-करैं वैसेइ रासरस पुनि युबती अति छबि छाजहीं ॥
गौर अंग किशोर बैस सुदेश मुख शशि राजहीं ॥ १ ॥

जोरि पंकज पाणि बाहु मृणाल मण्डल लाजहीं ।।
मध्य सबके श्याम श्यामा रूपराशि बिराजहीं ।।
मुकुट कुण्डल बसन भूषण बरण अंगन राजहीं ।।
अङ्ग अङ्ग अनंग रति लखि कोटि कोटिन लाजहीं ।।
चरण नूपुर किंकिणी कटि चलत नूपुर बाजहीं ।।
बोन ताल मृदंग चंग उपंग सुर सुख साजहीं ।।
दो०-अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनन्द ।।
नवल नागरी ब्रजबधू, नवनागर नँदनंद ।।
सो०-रहे निरखि सुरभूल, सहित सुन्दरी मगन सुख ।।
पुनि पुनि बरषत फूल, धन्य धन्य ब्रजकहि मुखन ।।
सोहति हरि मुख मुरलो कैसे * करि दिगबिजय नृपति बर जैसे ।।
बैठि पाणि सिंहासन गाजै * अधरछत्र शिर ऊपर राजै ।।
चँवर चहूँदिशि चिकुर सुहाये * बेतपाणि कुण्डल छबिछाये ।।
बलि बलि बरजत हैं सब काहू * कहत निकट कोऊ मति जाहू ।।
दूरिहि ते सब करत सुहारैं * सन्मुख आदर सहित निहारैं ।।
मधुकर पिक बन्दी गुण गावैं * मागध बदन प्रशंसि सुनावैं ।।
मान महीपति बल मथि मान्यो * युवतीयूथ जात गहि आन्यो ।।
बिर्नाहि पनच बिनहीं कोदण्डा * सुर सुर भेद कियो ब्रह्मण्डा ।।
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी * बोलत हैं सब जय जय बानी ।।
नारि पुरुष जड़ जङ्गम जेते * किये सकल अपने बश तेते ।।
थक्यो पवन जल अनल सिरानो * त्रिधिकृत मेटि आपनी जानी ।।
निज निज ठकुरायन को रेखा * बाँचि सकल बश भये बिशेखा ।।
दो०-रच्यो राजसू यज्ञरस, रास बिपिन शुभ धाम ।
तहँ अधिकारी साँवरो, मोहन सुन्दर श्याम ।।
सो०-सबही को सुख देत, दान मान रस प्रेम को ।
बढ़यो माधुरी हेत, परमा नन्दित लोक सब ।।
गावत गोपी सँग सब जुरली * बाजत मधुर मधुर सुर मुरली ।।
राग रागिनी प्रकट दिखावैं * जे सब रूप अनूहम गावैं ।।

अति प्रवीण पियको मन मोहैं * नृत्य करत सुन्दरि सब सोहैं ॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा * रीझत निरखि सकलब्रजबामा॥
लै गति चलत परस्पर दोऊ * सो छबि बरणिककै कहँ कोऊ ॥
होड़ा होड़ी रंग बढ़ावै * तरपि लेत शोभा अति पावै ॥
उरझी कुण्डल बेसरसों लट * पीत बसन बनमाल रही सट ॥
उरझे मन मन बैनन बैना * लटकोली छबि उरझे नैना ॥
नाचत युगल चपलगिरिधारी * प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी ॥
उरझीं गोपीजन लखि शोभा * नहिंनिरवारि सकत मनलोभा॥
अति रसरग बढ़यो सुख भारी * थेइ थेइबदति मुदित ब्रजनारी॥
मग्न सकल रससिंधु निहारैं * रीझि रीझि तनु मन धर वारैं॥

छन्द-मग्न सब रसरास सुखनिधि हर्षि तनु मन वारहीं ॥
हिय हुलास न जाय कहि छबि राज युगल निहारहीं॥
कीन्हो जु तप जिहिं हेतु बारह मास सों पति पाइयो ॥
तब मंत्र कीन्हो ब्याहको सब सखिन मंगल गाइयो॥
ललित कुँज बितान सुभग लतान मंडपद्युति बनी ॥
बहुरंग बंदनबार चहुंदिशि चारु सुमनन छबि घनी ॥
अति बिचित्र पवित्र यमुना पुलिन शुभ बेदी रची ॥
बर्णि सकै छबि कौन बिधि तिहुँलोक शोभा की सची॥ ४ ॥

दो०-तहँ नँदनंदन लाडिलो श्रीवृषभानु कुमारि ॥
दूलहैं दूलहिनि राजहीं, शोभा अमित अपारि ॥ ३ ॥

सो०-भरो परम उत्साह, ललितादिक ब्रज सुन्दरी ॥
प्रीति रीतिको चाह, लागीं करन बिवाह विधि॥ ३ ॥

मोर मुकुट रचि मोर बनायो * सो शिर धरिगिरिबरधरआयो॥
तनु घनश्याम पीतपट सोहै * घन दामिनि ताके ढिग मोहै॥
बनमाला उरमाहिं बिराजै * निरखत इन्द्रधनुषद्युति लाजै ॥
ललित अंग तनु भूषण जाला * कुण्डल झलकत नयन बिशाला॥
सकल कला-गुण-रूप-निधाना * त्रिभुबनसुन्दर परम-सुजाना ॥
जाके मन्मथसैन बराती * फूले विटप सुमन बहुभाँती ॥

करि कोलाहल पिक शुक बोलैं * मंजु मोर निर्तत सँग डोलैं ॥
नभ सुरपति दुन्दुभी बजावैं * नाचत किन्नर गंध्रब गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये * ब्रजतिय कहति सकल मनभाये॥
कुँवरि लाड़िली सुभग सँवारी * गोरे अँग चूनरी सारी ॥
नखशिख मणि भूषण छबिराजे * मुखशोभा लखि उडुपति लाजै॥
बीतिरीति जिहिंहितकरि गानी * सो शुभ घरी बिधाता बानी॥
छन्द-शुभ घरी सोबनी बिधाताहेत जिहिंदृढप्रतलियो ॥
शरद निशि पून्योविमल शशिनिरखिअतिप्रफुलित
हियो ॥ अधर मधुमधुपर्ककहिकै पाणिग्रहणसुबिधि॥
करी॥पढ़तनभविधिबेद बाणीसुरनजयधुनिउच्चारी॥ ५ ॥
तब अलिन हँसि गाँठि जोरो प्रेमगाँठि हिये परी ॥
सहस सोरह संग सखियाँ फिरत भांवरि रसभरी ॥
बढ्यो अति आनंद उरमधि साध सब पूरण भई ॥
मदनमोहनलाल दूलह राधिका दुलहिनि नई ॥ ६ ॥
दो०-निरखि देव बर्षे सुमन, हर्ष न हिये समात ॥
वृन्दावनरसरासमुख, लखि सुरबधू सिहात ॥ ४ ॥
सो०-हमतै यह सुख दूर, कहत परस्पर सुरनगण ॥
क्यों उड़ि लागे धूर, धनि ब्रजबासी धन्य ब्रज ॥ ४ ॥
सोहतियुवति वृन्द मधि जोरी * नवनागर बर नवल किशोरी ॥
शोभा अमित पार को पावै * निरखत बनै कहत नहिं आवै ॥
दूलह श्याम दुलहनी राधा * रूपसिंधु दोउ परमअगाधा ॥
राग-भीनि रँग भीने दोऊ * अतिआनंद उमँगि सब कोऊ॥
प्रेमरङ्ग-भीनी ब्रज-नारी * निरखियुगलछबिहोहिंसुखारी॥
भरी प्रीति रसगारी गावैं * लखि लखिपियप्यारीसुखपावैं॥
भाव विलास मोह उपजावैं * बार बार दंपतिगुण गावैं ॥
बिबिध भाँति दुन्दुभिनभ बाजैं * नृत्यकला रम्भादिक साजै ॥
हंस मोर पिक चातक बोलैं * बनि मृग निकट संग सब डोलैं॥
वारति तिय भूषण हर्षाई * बनके मृगन देत पहिराई ॥

तब इक सखी भई नन्दराई * इक वृषभानु रूप धरि आई ॥
अतिहित मिले महर दोउ धाई * तब बिनती वृषभानु सुनाई ॥
छन्द-तब जोरि कर बृषभानु विनयो सुनहु श्रीनँदरायजू ॥
हम भये सकल सनाथ अब किरपा तुम्हारी पायजू ॥
अति बड़े पुण्यनते मिले तुमसे सगे सुखसिंधु जू ॥
शिरमोर गोकुल चन्द आनन्दकंद सबजग बंद जू ॥ ७ ॥
तुम गेह मंजन हेत कन्या हम न तुमसम योग जू ॥
निजदास करि सब जानिये बृषभानु पुरके लोग जू ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि संपति तुम सकल सुखखानिजू ॥
ऐसे बिनय करि नंद के चरणन लगे बृषभानु जू ॥ ८ ॥
तब नन्द अति आनन्द भरि बोले सहित अनुराग जू ॥
सुनहु श्रीवृषभानु जू तुम धन्य अतिबड़भाग जू ॥
तुमने समुद्रन सों सुनहु संबंध भागिन पाइये ॥
परम निर्मल यश तुम्हरो लोक लोकन गाइये ॥ ९ ॥
अतिनेह कान्हरसों तुम्हारी प्रीति पलही पल नई ॥
दई कन्या करि कृपा गुण रूप सुख शोभा मई ॥
पूरे मनोरथ सकल अब हम बड़े सब भाँतिन भये ॥
बृषभानु नंद अनंद प्रमुदित परस्पर चरणन नये ॥ १० ॥
सो०-मन मन हर्षित नागरी, नागर नवल किशोर ॥
लखि रसरीति सखींनको, प्रेम प्रमोद न थोर ॥ ५ ॥
सो०-बिलसत अति आनन्द, ब्रजबिलास ब्रजनागरी ॥
प्रीति विवश ब्रजचन्द, को कहिसकै सुहाग सुख ॥ ५ ॥
करत मनोरथ सब मनभाये * त्रिभुवनपति दूलह करि पाये ॥
व्याहरीति करि सब ब्रजनारी * गावति यशुमतिको रसगारी ॥
तब कंकण छोरनबिधि कीनो * रचिपचि गाँठ चतुरतिय दीनो ॥
कहत श्यामसों छोरौ कंकन * परमानंद—मुदित गोपीजन ॥
बड़े चतुर तौ खोलहु गिरिधर * यह न होय धरबो गिरिकोकर ॥
कैं छोरौ कै दोउ कर जोरौ * दुलहिनि परि पाँय निहोरौ ॥

बड़े कहावतहौ ब्रजनाथा * काहे कँपन लगे दोउ हाथा ॥
छोरहु वेगि कि सुनहु कन्हाई * पठवहु यशुमति माय बुलाई ॥
दोउ परस्पर कंकण छोरैं * प्रेम उमँगि उर हर्ष न थोरैं ॥
पचिहारे कंकण नहिं छूटत * निरखि हर्षि ब्रजतिय सुखलूटत॥
कहति सहाय करहु जनि कोऊ* कंकण छोरहिं आपहि दोऊ ॥
दुलहनि दूलह कंकण खोलैं * कै बृषभानु—बबाको बोलैं ॥
दो०-कमल कमल पर सोह जनु, पाणि लाडिलो लाल ॥
लखि कबिकुल साँचे लगत, रोमकटीलो नाल ॥ ६ ॥
सो०-दूलह नन्दकुमार, दुलहिनि श्रीराधा कुँवरि ॥
संतन प्राण अधार, अबिचल यह जोरी सदा ॥ ६ ॥
यह रस रास चरित हरि कीनो * ब्रजयुबतिन बांछितफल दीनो॥
ब्रजतिय सुखहित कुँजबिहारी * करो मासनिशिषट उजियारी ॥
साध नहीं युवतिनमन राखी * श्रीभागवत कह्यो शुक भाषी ॥
बेद उपनिषद साख बतावैं * ब्रह्मा शम्भु सहस मुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषय अनन्ता * कहत सुनत गावत सब सन्ता॥
सोरहसहस गोप—सुकुमारी * तिनके संग लाल गिरधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा * पूरण करो सबनकी साधा ॥
हाव भावरस हास—बिलासा* नयनसयन मुख बचन प्रकासा॥
भुजभरिमिलनअधररसचाखन* नृत्य—गानरस रुचि—संभाषन॥
क्षण क्षण बढ़तिअधिकरसरीती* इहिबिधि रैन करत सुख बीती॥
भयो समय ब्राह्मोशुभकाला * रास रमत भइँ श्रम सब बाला॥
तब श्रीयमुना गे नँदलाला * सोहत संग सकल ब्रजबाला ॥
छन्द-सोहत सकल ब्रजबाल सँग नँदलाल तब यमुना गये ॥
शरदनिशि रसरास करि पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महामदमत्त गजवरयूथ करिणिन सँग लिये ॥
फिरत नव सरसरित क्रीडतनिदरिअतिनिर्भयहिये ॥११॥
तिमि नंदसुत जगबंद आनंदकंद रसनिधि श्यामये ॥
मेटि श्रुति मर्याद ब्रजतिय प्रेम सब आनन्द भये ॥

रमत बृन्दावन यमुन रसकेलि अति सुख मानई ॥
दास ब्रजवासी सु प्रभुगुण नाग नर सुर गानइ ॥ १२ ॥
दो०-धनि वृन्दावन धन्य सुख, धन्य श्याम धनि रास ॥
धनि धनि मोहन गोपिका, नित नवकरत बिलास ॥
सो०-नहिं सुरपुर समतूल, बृन्दावन सुख एकपल ॥
कहि कहि वर्षैं फूल, सुरगण मन आनँदभरे ॥ ७ ॥
यमुनाजल क्रीड़त नँदलाला * सोरहसहस संग ब्रजबाला ॥
मधि राजत दोउ बाँहाँ जोरी * दंपति गौर साँवरे गोरी ॥
कोउ कटिलौं जलमें सुख साजै * कोउ उर ग्रीवालौं छबि छाजै ॥
ताकी उपमा कबि किमि कहई * अतिअपार छबि पार न लहई ॥
छिरकत पाणि परस्पर सोहैं * नँदनंदन पियको मन मोहैं ॥
सलिल शिथिल सोहत नँदनंदन * सेंदुर भाल कुंकुमा चंदन ॥
पंचरंग भयो यमुनजल जाते * छबिमय लहरि उठतिहै ताते ॥
रूपछटासी तियगण तामहिं * करतिबिहार लिये घनश्यामहिं ॥
एक एक अङ्ग भरि भरि लेहीं * हासबिलास करति छबि देहीं ॥
एकन ले अथाह जल डारैं * सुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥
इक भाजति इक पाछे धावैं * एक श्याम ढिग पकरि लैआवैं ॥
कंठ लगाय लेत पिय ताही * सो सुख कविसों कह्यो न जाही ॥
दो०-करत केली यमुना सलिल, ब्रजललना संगश्याम ॥
निशिश्रम मिटि आलसगयो, भये सुखी सुखधाम ॥ ८ ॥
सो०-अलख लखीनहिं जाय, अबिगतिको गति को कहै ॥
योगी सकत न पाय, सो भोगी ब्रजतियनको ॥ ८ ॥
जलविहार बिहरत सुख पाई * रासरंग मनते नहिं जाई ॥
युवतीमंडल करि फर जोरे * श्याम श्यामा मध्य करि खोरे ॥
वहै भाव मनमें उपजावैं * निरखि निरखि मोहन सुख पावैं ॥
बिहरति नारि हँसत नँदनंदन * अंकम भरि भरि लेत अनंदन ॥
प्यारी श्याम अंजुली डारैं * सो छबि तिय सुख पाय निहारैं ॥
मानहुँ कमल और इंदीवर * छिरकत हैं मकरंद परस्पर ॥

जलक्रीडासुख करत कन्हाई * बर्षत सुमन देव झर लाई ॥
लीला-सागर परम-अपारा *कबि केहि बिधि करि पावै पारा ॥
करि जलकेलि संग ब्रजनारी * आये जलतट निकसि बिहारी ॥
भीजे पलट पटे तनुमाहीं * पटअन्तर लट चोर चुचाहीं ॥
ठाढे यमुनातीर कन्हाई * पुलिन पवित्र परमछबि जाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा * अरसपरस बिहँसत मन लोभा ॥
दो०-तब इक तरुको बिहँसिकै, आयसु दीनो श्याम ॥
नाना भूषण बसन बर, तिन बर्षे अभिराम ॥ ८ ॥
सो०-निज निज रुचि अनुहार, लै लै ब्रजकी सुन्दरिन ॥
कीनो नवल शृंगार, उर आनंद नहिं जाय कहि ॥ ८ ॥
करि शृंगार तनु नवल किशोरी * हरिसन्मुख ठाढ़ी सब गोरी ॥
निरखि श्यामछबि मन ललचाहीं* बिदा करत घरको सकुचाहीं ॥
हँसि बोले तब मदनगुपाला * जाहु सदन अब सब ब्रजबाला ॥
अतिआदर दैदै सुखदाई * पाणि परस सब सदन पठाई ॥
निशिसुख टरत न काहूमनते * चलीं सदन सब बृन्दाबनते ॥
अति आनंद रह्यो उर भरिके * भाँवरि दै आई संग हरिके ॥
मनके सुफल मनोरथ कीने * नंदसुवन हित पतिकरि लीने ॥
गईं सदन सब हर्ष बढ़ाये * घर घर लोगन सोवत पाये ॥
जगस्वामी हरि यह मति ठानी * ब्रजयुवतिन सबहिन घरमानी ॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे * निज निज कारजमें सब लागे ॥
नंदधाम गये नंदके लाला * काहू नहि जान्यो यह ख्याला ॥
यह रहस्य लीला बनवारी * संतजनन-मन-आनंदकारी ॥
छं०-यह रहस लीला श्यामकी सब संत सुरमन भावनी ॥
ज्ञान ध्यान पुराण श्रुति मतिसारपरम सुहावनी ॥
यह मंत्र यंत्र अनंत ब्रतफल ध्यान नंदपतिको रहै ॥
भाव करि नित भाव मन बिनु भावयहसुखही लहै ॥ १३॥
धन्य श्रीशुकदेव मुनि भागवत यह रस गाइये ॥
निगम नेति अगाध श्रीगुरुकृपा बिन नहिं पाइये ॥

सुरुचि करि जे सुनैं सोखैं प्रीति करी जे गावहीं ॥
ऋद्धि सिधि सब कहगनाऊँ भक्ति अनुपम पावहीं ॥ १४॥
उर बढे रस नेम दृढ़ पदप्रेम राधाश्यामको ॥
अहहि अचल बिनासवृन्दाबिपिन घन निजधामको ॥
यहै आशा राखिकै उर दास ब्रजबासी कही ॥
कृपा कीजै श्याम श्यामा शरणपदपंक जगही ॥ १५॥
दो०-चरित ललित गोपालके, रासविलास अनेक ॥
कापै बर्णेजात सब, इतनो कहां बिबेक ॥ १०॥
सो०-निकसीं तेरि अघाय, ज्यों पिपीलिका सिधुते ॥
कह्यो यथामति गाय, तिमि ब्रजबासी दासहू ॥ १०॥

अथ मानचरित लीला ५५.

नित्य श्याम श्याम सुखकारो *करत नित्य नव चरित बिहारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनासी * भक्तमनोरथ सदा बिलासी ॥
नित वृन्दावनधाम सुहायो * नित्य रासरस वेदन गायो ॥
भक्तनहेत विविध तनु धारैं * भक्तनहित लीला बिस्तारैं ॥
सदा भक्तबश कृष्ण कृपाला * दयासिंधु प्रभु दीनदयाला ॥
शरदरैनि रस रास उपायो * युवतिनप्रति निजरूप बनायो ॥
सुफल मनोरथ सबको लीनो *पतिहित करि सबको सुख दीनो ॥
तब कुपालु उरमें यह आनो * सदा भक्त बांछित फल दानो ॥
गोपिन गर्व रासमें कीनो * तो मैं अन्तर करि हरि लीनो ॥
रही साध इनको मनमाहीं * हमको श्याम मनायो नाहीं ॥
ते ब्रजभक्त परमहित मेरी * करौं साध पूरण इन केरी ॥
अब इक मानचरित्र उपाऊँ * पाँयन परि परि सबै मनाऊँ ॥
दो०-करि विभेद रसरीतिमें, देहुं मान उपजाय ॥
इनके मुख खंडित बचन, कहबाऊँ सुखदाय ॥ १ ॥
सो०-सकल गुणनके धाम, परम विलक्षण रसिकमणि ॥
नवरस सागर श्याम, एक प्रेम रसबश सदा ॥ १ ॥
श्रीराधा मनमोहन—प्यारी * नवनागरि नवरूप—उजारी ॥

रासनृत्य रिझये गोपाला * तारस मगन फिरत नँदलाला ॥
करत भवन शृंगार पियारी * औचक तहाँ गये गिरिधारी ॥
देखिप्रिया प्रियको हँसि दीनो * हरषि श्याम अंकमभरि लीनो ॥
रहे छकित छबि अङ्ग निहारी * जात कमलमुखपर बलिहारी ॥
इहि अन्तर पियके उरमाहीं * देखो तिय निज तनु परछाँहीं ॥
छझकि उठी प्यारी भइ न्यारी * अतिसनेहश्रम सुरति बिसारी ॥
और नारि पियके उर जानी * आपुनबिषय प्रीति घट मानी ॥
राखत सदा हियेमें याहीं * ल्याये मोंहि दिखावन ताही ॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई * कहत बचन पियसों अनखाई ॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी * ऊपरहीको प्रीति हमारी ॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत * यह प्यारी उरमाँहि बसावत ॥
दो०-धनि धनि याको भाग्य है, बसत तुम्हारे हीय ॥
याहीसों हित राखिये, अब मनमोहन पीय ॥ २ ॥
सो०-भली करी सुख मानि, मोंहि दिखाई आनिकै ॥
यह प्यारी सुखदानि, उरते जनि न्यारी करौ ॥ २ ॥
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी * कछु रिसकरि जिय भौंह सिकोरी ॥
चकित श्याम लखिसन्मुखबानी * कहत कहा नागरी सयानी ॥
साँच कहत कैधौं करि हाँसी * कत रिस करि तिय होति उदासी ॥
समुझो नहीं कहा जिय आई * झझकि उठी कत अतिश्रम पाई ॥
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन * बैठत क्यों नहिं प्रिय मम मोहन ॥
मोंहि छुवो जनि दूर रहौजू * बसत हिये किन ताहि गहौ जू ॥
तुम चतुरे सब और अयानी * हम दासी अरु ये पटरानी ॥
उरमें मनभावती बसाई * हँसी करनको हमहिं बनाई ॥
लखि लखि प्रियाबदन सुखकारी * हँसत मनहिं मन कुंजबिहारी ॥
कहति कहा भामिनि भइ भोरी * तोबिन उर को बंसत किशोरी ॥
तुम मन श्रवण नयन मुख बानी * जीवन-प्राण-अधार सयानी ॥
वृथा क्रोध करि जियमें आनै * मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै ॥
दो०-सुनहु श्याम हिरदे बसत, सो छिपये न छिपाय ॥

ज्यों शोशीके माँहि जल, परगट परत लखाय ॥ ३ ॥
सो०-बातैं कहत बनाय, वह देखत हमसों हँसत ॥
जैहै कहुँ अनखाय उरते तब पछितायहौ ॥ ३ ॥
जो वह कहै करौ तुम सोऊ * वह नागरि तुम नागर दोऊ ॥
मतहि खिझावौ मोहिं कन्हाई * भलो करी लै सौत दिखाई ॥
जाहु चले अब मैं सुख पायो * ऐसे कहि मान मन बढ़ायो ॥
रिस करि मौन गहि रहि प्यारी * देति मनहिं मन वाको गारी ॥
सोचति श्याम देखि मनमाहीं * बोलि सकत नहिं प्रियहि डराहीं ॥
कहत वृथा जिय मान न कीजै * नहि अपराध जानि जिय लीजै ॥
क्यों रिस करति प्रिया मनमाहीं * मेरे उर तेरो परछाँहीं ॥
यह सुनि कुँवरि राधिकारानी * बोली रिस करि पियसों बानी ॥
कहा बनावत बातें हमसों * जाहु चले बोलौं नहिं तुमसों ॥
यह कहि ओट गई ह्वै प्यारी * भये बिरहबश तब गिरिधारी ॥
अतिब्याकुल तनु मनअकुलाहीं * बार बार शोचित उरमाहीं ॥
गयो सरोजबदन कुम्हलाई * तहँ सखि एक दूतिका आई ॥
दो०-सो हरिसों बूझत भई कहहु न मोहिं सुनाय ॥
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय ॥ ४ ॥
सो०-क्यों तनु रहे भुलाय, अति ब्याकुल देखति तुम्हैं ॥
रह्यो वदन कुम्हिलाय, ऐसे शोच कहा पर्यो ॥ ४ ॥
बोले श्याम सखी हित जानी * बिरह बिकल कहि जात न बानी ॥
कियो मान वृषभानुकिशोरी * मैं कछु नहिं अपराध कियो री ॥
लखि मेरे उर निजपरछाहीं * रूसि रहि करि कोप वृथाहीं ॥
मैं कहिकै बहुभाँति मनाई * नहिं प्रतीति राधाउर आई ॥
बिन समुझे इतनो हठ कीनो * तबते मोहिं मदन दुख दीनो ॥
ऐसे कहि शोचत बलबीरा * लेत नयन भरि साँस अधीरा ॥
परमचतुर दूतिका सयानी * बिरहबिकलता पियजिय जानी ॥
कह्यो धीर धरिये बनवारी * चलिये बनको कुंजबिहारी ॥
मैं प्यारी लै तुमहिं मिलाऊँ * आज कहा तौ तुमसों पाऊँ ॥

गई सदनते लै बनधामहिं * तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहिं ॥
मैं लै आवति राधा प्यारी * कितक बात यह सुनहु बिहारी ॥
मेरे आगेकी वह बारी * कह मान करिहै सुकुमारी ॥
दो०-ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम ॥
श्रीवृषभानु ललीजहाँ, चपल चली ब्रजधाम ॥ ५ ॥
सो०-मन मन रचत सयान, नई बनाऊँ बात इक ॥
अबहीं छुडाऊँ मान, मोसों धौं कहिहै कहा ॥ ५ ॥
हरिसों रूसि मान करि बैसी * अबहीं कहा भई वह ऐसी ॥
करती बिचार यहै मनमाहीं * गई सखी राधाके पाहीं ॥
कुँवरि किशोरी परम सयानी * मुख देखतहि दूतिका जानी ॥
सहजहिं बोलि ताहि ढिग लीनी * सहजहिं कह्यो मया कित कीनी ॥
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो * तुमको बन घनश्याम बुलायो ॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई * काहेको मुहिं श्याम बुलाई ॥
तू आई याहींके लीन्हे * मैं अब श्याम भले करि चीन्हें ॥
कहा कह्यो तोकौ री आली * तुहूं भलीं अरु वे बनमाली ॥
उनकी महिमा कहत न आवै * अब इक नई नारि मनभावै ॥
ताको लै उरमाहिं बसाई * तोहि उहाँते टारि पठाई ॥
आज कहा कछु कलहु भयो री * कहि धौं कछु तैं मान ठयोरी ॥
तबहिं आज अनमनी बतानी * यह तौ मैं कछु बात न जानी ॥
दो०-मोसों नहीं कछु हरि कह्यो, सहज पठाई लेन ॥
कहि धौं कहा पुकारहू, तुम चलि देखहु नैन ॥ ६ ॥
सो०-कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरो नाम सब ॥
तैं धौं लियो छुडाय कहु काके काके गथहिं ॥ ६ ॥
काहेको गंध लियो परायो * अपनो नाम कुनाम धरायो ॥
डारि देहु जाको जो लीनो * तेरे बहुत दई को दीनो ॥
तबहीं ते उन शोर लगायो * ताकारण हरि तोहिं बुलायो ॥
हरि तेरी दिशिते झगरै री * तू कत उनसों रोष करै री ॥
यह कछु नोखो बात सुनाई * मैं काको धन लियो छँड़ाई ॥

काहूको हरि झगरत माई * इती मया मोमैं कहँ आई ॥
जैसे हैं तैसे हरो जाने * नहिं उनके गुण परत बखाने ॥
बैठु किधौं तू घर जा अपने * मैं उनपै अब जाउँ न सपने ॥
हौं कह तोहीं मनावन आई * मान करौ तुम और सवाई ॥
परधन ले सबको ब्रज बैठी * कहा करति बातें यों ऐंठी ॥
देति जवाब सबन किन जाई * मोपै कह इतनी सतराई ॥
तबते सबसों लरत कन्हाई * जब मैं तोहीं बुलावन आई ॥
दो०-बार बार तू कह कहति, तू मोकों डरपाय ॥
मैं नहिं काहूको लियो, झूठहिं दोष लगाय ॥ ७ ॥
सो०-लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार बन ॥
कहैं न तिनको नाम साँच तबही मैं मानिहौं ॥ ७ ॥
कहँलगि सबके नाँव बताऊँ * एक एक करि तोहिं दिखाऊँ ॥
नभ जल धारणि मनहुँमें आये * कहँलगि मोते जात सुनाये ॥
जो तिनको नहिं गथहि चुराई * तौ तू कत बन चलत डराई ॥
परी बान तोकों यह कैसी *भली करत अलि लगति अनैसी ॥
श्यामबिना क्यों न्याव चुकै री * तिनहीं सों तू रोष करै री ॥
कोटि करौ एकै पुनि व्हैहौ * वे अरु तुम कछु जियके द्वै हो ॥
मानु कही चलु श्याम बुलाई * श्रवणलागि हरि मोहिं पठाई ॥
जिनको यह सब सौज तुम्हारे * ते जन हरिपहँ जाय पुकारे ॥
इंदु कहत मों बदन बिगोयो * अलिकुल अलकनको दुख रोयो ॥
हरिण मीन छबि दृगन पुराई * खंजनहूं तहँ देत दुहाई ॥
शुकको छबि नासा हरि लीनी * बैनन करी कोकिला हीनी ॥
दो०-अधरबिंब दाडिम दशन, लुटे कंठ कपोत ॥
लई तरणि छबि छीनिकै, तरल तरौना जोत ॥ ८ ॥
सो०-चक्रवाक कुच दोय, कठि हरि कदली जंघलिय ॥
गज मरालगति जोय, चरण पाणि पंकज हरे ॥ ८ ॥
ये सब हरिसों करत लराई * तैं जु करी इनसों अधिकाई ॥
अति अनीति लखि कुँवर कन्हाई* पठई मोहिं लेन तोहिं आई

प्रति उत्तर अपनो करु चलिकै * इहाँ रही कह बैठि मचलिकै ॥
सुनिपियके गुण तियहँसि दीनो * कछु सकुची मन मान जो लीनो॥
चतुर सखी जियकी सब जानी * तब हिय हर्षि कही यह बानी ॥
बानि कहा अब तोहिं परी री * जबतब लखि निजछाँह डरी री॥
तादिन दर्पण लखि भ्रम कीनो * सो दृग मूँदि मेटि हरि दीनो ॥
आज देखि पिय निज उर छाँहीं * कियो इतो हठ कुँवरि वृथाहीं ॥
यह सुनिसमुझि मनहिंमुसकाई * सहचरिकंठ बिहँसि लपटाई ॥
रस करि तुरत मान बिसरायो * सुनि बलधाम श्याम सुख पायो॥
हँसिकै कह्यो सखीसों जा री * तू हरिसों कह आवति प्यारी॥
मैं अँग भूषण बसन सँवारी * आवति बनहिं जहां बनवारी ॥
दो०-यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहाँ घनश्याम ॥
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं विव्हल कीनो काम ॥ ८ ॥
सो०-बैठत उठत अधीर, क्यों हूं सुख पावत नहीं ॥
बढ़ति विरह को पीर, श्रीराधा राधा रटत ॥ ९ ॥
राधाबिरह-बिकल गिरिधारी * कहूँ माल कहुं मुरली डारी ॥
कहूं मुकुट कहुँ पीत पिछौरी * नहि कछु सुरति भई मति बौरी ॥
कबहूँ लोटत कुंजन–माहीं * कबहूं बैठि द्रुमनकी छाँहीं ॥
कबहुं मूँदि दृग ध्यान लगावैं * कबहूँ प्यारी के गुण गावैं ॥
ठाढ़े टेकि कबहुं द्रुमडारी * तकत प्रियापथ पलक बिसारी॥
देखि दशा दूतिका सयानी * कही श्यामसों आतुर बानी ॥
काहेको कदरात विहारी * मैं ल्याई वृषभानु दुलारी ॥
बिरह बिषाद दूरि करि डारौ * नेकु धीर अपने मन धारौ ॥
सुनि प्यारी को नाम कन्हाई * मिले दूतिकासों उठि धाई ॥
कहां प्रिया कहि अतिअकुलाये * नयनसरोज नीर भरि आये ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी * आवति प्रिया अबहिं बनबारी॥
मैं जु प्रतिज्ञा तुमते कीनी * बिधिना आज राखि सो लीनी॥
दो०-अब अपने मन हर्षि करि, दूरि करौ संदेहु ॥
भावति है वृषभानुजा, भुज भरि अंकम लेहु ॥१०॥

सो०-मुख शोभाकी खान, नहीं कुँवरि वृषभानुसो ।।
तुम सम धन्य न आन, बड़ भागिनि तुम बश भये ।।१०।।
रसिक पुरंदर प्रभु सुखदानी * सुनत सिहात दूतिकाबानी ।।
पुलकत अंग धीर नहिं धारैं * पुनि पुनि प्यारी पंथ निहारैं ।।
निजकर सुमन सुगन्ध लगावैं * कुंजभवन रुचि सेज बनावैं ।।
अतिकोमलतनु जानि पियारी * सेज कली चुनि करत नियारी ।।
जे द्रुम लता लटकि तनु लागैं * ते ऊपर धरि मन अनुरागैं ।।
प्रेम प्रीति-रसबश जगस्वामी * करत चरित मानहुं अतिकामी ।।
देखि श्याम की आतुर ताई * हँसति सखी मन हर्ष बढाई ।।
जानि प्रेमबश हरि सुखरासा * गई बहुरि प्यारीके पासा ।।
करि शृङ्गार नबल तनुगोरी * राजति श्रीवृषभानु किशोरी ।।
सहज रूपकी राशि कुमारी * भई अधिक भूषणछबि भारी ।।
अंग अङ्ग छबि पुंज बिराजै * निरखि मदन तिय कोटिक लाजै ।।
त्रिभुवनकी छबि मनहुंबटोरी * बिधि कीनो वृषभानु किशोरी ।।
दो०-देखि रूप मन मग्न सखि, बोली बचन सँभार ।।
धन्य धन्य राधा कुँवरि, तब गुण रूप अपार ।।११।।
सो०-तो समान नहिं तीय, तिहुंपुर सुन्दरि नागरी ।।
बसत सदा पिय जीय, तू मोहन मन भावती ।।११।।
चलहु बेगि अब सहित हुलासा * लागि रही पियकी इत आसा ।।
तेरोइ नाम जपत मन लाई * गावत तव गुणग्राम कन्हाई ।।
तुम तन परस पवन जो जाही * उठि आतुर परि रंभत ताही ।।
तेरो रूप आनि उर-अंतर * धरत ध्यान दृग मूँदि निरन्तर ।।
रमो श्याम तनु मन तू जाते * राधारमण नाम है ताते ।।
सुनि सहचरिके मुखकी बानी * पुलकि प्रफुल्लित मृदु मुसकानी ।।
पियको प्रेम समुझि सुख पाई * चली मिलन गजगति हर्षाई ।।
मुख शशि कनकलतासो गोरी * बालहरिण छबि नैन किशोरी ।।
भूषण बसन अनूप सुहाई * अङ्ग अङ्ग शोभित छवि छाई ।।
अङ्ग-सुगन्ध मनोहर ताई * भ्रमर भोर चहुं ओर सुहाई ।।

हँसि हँसि कहति सखीसों बातें * झरत सुमन जनु रूप लतातें ।।
ऐसे करत प्रकाश पियारी * गईं जहाँ पिय कुंजबिहारी ।।
दो०-परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नन्दनन्द ।।
गुण आगर नागर युगल, छबिसागर सुखकन्द ।।१२ ।।
सो०-जो प्रभु अगम अपार, वेद भेद जानत नहीं ।।
सो ब्रज करत बिहार, बर्णि पार को पावही ।।१२।।
कुँजन मंजु सुफल छबि छाई * भंवर गुंज सुख पुंज सुहाई ।।
फूलन सेज रुचिर रचि कीनी * चित्र बिचित्र रंगरस भीनी ।।
फूले खग गण करत कलोलैं * जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं ।।
फूलीं बृन्दाबन—तरु—डारी * तनु मन फूले पिय अरु प्यारी ।।
सहचरिसहित मनोहर जोरी * रजित युगल किशोर किशोरी।।
हाव भाव करि रस उपजावैं * हास विलास कर सुख पावैं ।।
सखी कह्यो तब कैं अब नीके * सकुचि हँसी प्यारी सँग पीके।।
नयन कोर पियको हिय ताको * तबहिं श्याम पीताँबर ढाँक्यो ।।
यहछबिनिरखिसखी बलिजाई * अचल रहौ जोरी सुखदाई ।।
धनि राधा धनि कुँवरिकन्हाई * धन्य मानरस केलि सुहाई ।।
धन्य कुंजबन धनि महि पावन * धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन।।
धन्य सखी धनि सब ब्रजवासी * निजसँग बिहरत प्रभुसुखरासी।।
दो०-गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहित सुख पाय ।।
मान चरित रस केलि करि, ब्रजवासी बलिजाय ।।१३ ।।
सो०-मान चरित्र अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं ।।
ते न परैं भव कूप, राधा कृष्ण प्रतापते ।।१३ ।।
करत चरित नाना गिरिधारी * सुखसागर भक्तन हितकारी।।
जाको शिव अज ध्यान लगावैं * सनकादिकमुनि जपकरि ध्यावैं।।
जा प्रभु को यशपरमबिशारद * गावत अहिपति नारद शारद ।
अखिल अनीह अकाम अभोगी * योग समाधि न पावत योगी ।।
सो प्रभु सबके अंतर्यामी * ब्रजतिय प्रेम भक्तिबश कामी।।
बहुनायक ह्वै करत बिहारा * ब्रजपुर घरघर नन्दकुमारा ।।

रसलीला नाना उपजावैं * काहु रुसावैं काहु मनावैं ॥
अरस परस तिय सब यह जानें * हरि हैं सबके धाम लुभानें ॥
अवधि वदत काहूसों जाई * काहूके घर बसत कन्हाई ॥
साँझ कहत जाके घर आवत * जांत प्रात ताके मन भावत ॥
व्रजगोपी तिनकी पति जानें * कोउ आदरहिं कोउ अपमानें ॥
खंडित बचन सुनत सुख पाई * यह लाला हरिके मन भाई ॥
दो०-व्रजमें करत बिहार हरि, व्रज बनितनके संग ॥
अखिल काम पूरण करन, भरे प्रेम रस रंग ॥१४॥
सो०-कोटि काम कमनीय, सुन्दर सुखसागर नवल ॥
रमणी मन रमणीय, व्रजभूषण व्रज लाड़िलो ॥१४॥
व्रजबीथिन नँदनंदन ठाढ़े * अङ्ग अङ्ग सुन्दर छबि बाढ़े ॥
ललिता आय गई तिहिं पैंड़े * मनमोहन रोकी मग बैंड़े ॥
देखति छबि ललिता ललचानी * बोली बिहँसि श्यामसों बानी ॥
कत रोंकत मनमैं बिन काजैं * जाहु चले चित हौ हित साजैं ॥
झूँठहि इतो सनेह जनावौ * कबहुँ हमारे धाम न आवौ ॥
हरिहँसि कह्योआजनिशिऐहैं * तेरीसों हम अनत न जैहैं ॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई * छांडि दई मग छैल कन्हाई ॥
ललिता गई सदन सुख मानी * ऐहै श्याम आज यह जानी ॥
सांझहिते हरिपंथ निहारै * धाम आपने सेज सँवारैं ॥
भूषण बसन नवल तनु साजै * खंजनसे तग अंजन आँजै ॥
सुमन सुगन्ध अनूप मँगाई * रचि रुचि राखति माल बनाई ॥
कबहूँ ठाढ़ी होति दुवारे * कबहूं लखति गगनके तारे ॥
दो०-कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात ॥
गये आश दे मोहीं पुनि, कहा धरी जिय गात ॥१५॥
सो०-वे बहुनायक श्याम, किधौं लुभाने अनत कहुँ ॥
मन मन शोचत श्याम, कारण कह आये नही ॥१५॥
कैधौं कछु ख्यालहिं चित दीनो * कैधौं मात पिता-डर कीनो ॥
कैधौं सोय रहे अलसाने * कैधौं घर आवत सकुचाने ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation Chennai

ऐसे शोचत रैन बिहानी * जहँ तहँ बोले तमचर बानी ॥
तब बैठी अपनो मन मारि * कछू शोच कछु रिस उर धारी॥
हरि निशि बसे सखी शीलाके* सुन्दर श्याम धाम लीला के ॥
तहँ सुख सोवत रैन गँवाई * प्रात होत ललितासुधि आई ॥
चले सहज शीलासों कहिकै * जिय सकोच ललिताको गहिकै॥
आये ललिता सदन बिहारी* चितै रही मुखकी छबि प्यारी॥
अंजनरेख अधर पर राजै * पीकलीक नयननछबि छाजै ॥
सोहत ललित कपोलन नीको * लाग्यो अंजन काहू तीको ॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी * दिखरायो हरिसन्मुख आनी ॥
कहति देखिनिजबदन सुधारौ * लाल कहूँ तब प्रात सिधारौ ॥
दो०-पीक पलक अंजन अधर, देखि श्याम सकुचाय ॥
रहे निचोहैं नयन करि, बचन कह्यो नहिं जाय ॥१६॥
सो०-ज्योंज्यों सकुचत श्याम, त्यों त्यों हठि नागरि कहति॥
देखहु छबि अभिराम, हाहा मुख कत फेरियत ॥१६॥
सकुचत कहा बोलके सांचे* आये तौ मोगृह रँगराचे ॥
रैन नहीं तौ प्रातहि आये * धनिधनिवह जिन स्वाँग बनाये॥
तुम जनि मानहु बिलग कन्हाई* मैं तौ करति आनन्द बधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहीं देखौ * सूधे मोतन काहे न पेखौ ॥
ठाढ़े कत बैठत क्यों नाहीं * कहु कछु चूक परी हम पाहीं॥
रहे मूक ह्वै कहा ठगेसे * सोहत हौं अलसात जगेसे ॥
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं * मैं तबहींते बकति वृथाहीं ॥
तब चितये दृगकोर कन्हाई * भाव अतिहि आधीन जनाई ॥
ग्वालि प्रबीण जानि सब लीनो * तुरत रोष उरते तजि दीनो ॥
हँसि करि मोहन कंठ लगाये * भले श्याम ऐसे ह्व आये ॥
श्रमित अङ्ग जागे निशि जाने * अतिसनेह मनहीं मन माने ॥
अंग सुगन्ध मर्दि अन्हवाये * बसन अभूषण दै बैठाये ॥
दो०-रचि भोजन दै सेज पर, पौढाये घनश्याम ॥
रस बश करि नव नागरी, किये सुफल मन काम ॥१७॥

सो०-सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजवासादास को ॥
प्रेम प्रीति बश आय, सो गोपीवल्लभ भयो ॥१७॥
कहतसौं करि रसिकबिहारी * तुम प्रिय मोहिं प्राणते प्यारी ॥
सदा बसत तुम मो मन माहीं * तुम बिनलहतअनत सुखनाहीं ॥
ऐसे कहि अति प्रोति जनावैं * चतुर बचन कहि चितहि चुरावैं ॥
यहै भाव युवतिनसों भाखै * सबहिनके मनको रुचि राखै ॥
कुल मर्याद लोक डर त्यागी * सब गोपी हरिसों अनुरागी ॥
बिन देखे रिस भाव बढ़ावैं * नयनन देखतही सुख पावैं ॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी * यह लीला ब्रजमें बिस्तारी ॥
ललिताको सुख दै सुखसागर * चले सदन अपने नटनागर ॥
उतते मग आवति चन्द्रावलि * देखि रही सुन्दर छवि सांवलि ॥
बने बिशाल कमल दललोचन * चितवनि चारु मारमदमोचन ॥
इत मुसकाय श्याम तिहिं हेरो * खोर सांकरी भइ भटभेरी ॥
बिहँसि कह्यो चन्द्रावलिप्यारी * कहाँ रहत हरि हमहिं बिसारी ॥
दो०-तुम कैसे बिसरति प्रिया, हँसि बोले घनश्याम ॥
आज आय सुख लेहिंगे, रैनि तुम्हारे धाम ॥१८॥
सो०-सुनि हर्षो जिय बाम, चली सदन मुसकाय कै ॥
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन ॥१८॥
चन्दावलि मन अधिक उछाहू * फूली फिरति कहति नहिं काहू ॥
सुखके करति मनोरथ नाना * बासर कल्पसमान बिहाना ॥
भये अस्त रबि निशि नियरानी * उडुगण ज्योति देखि हर्षानी ॥
हरि सुषमाके भवन सिधाये * चन्द्रावलिके भवन न आये ॥
सूने घर देखी सो ग्वाली * आतुर गये तहाँ बनमाली ॥
सुषमा लखि हरिको सुख पायो * अति आदर करि करि बैठायो ॥
कोककला-कोबिद बर नारी * हाव भाव मोहे गिरधारी ॥
बसे तहाँ मोहन सुख पाई * चन्द्रावलिकी सुरति भुलाई ॥
इत चन्द्रावलि सेज सँवारै * बार बार हरिपंथ निहारै ॥
कबहूँ भवन कबहुँ अंगनाई * कबहूं रहति द्वार टक लाई ॥

कबहूं शोच करति मनमाहीं ✻ आवहिंगे मोहन कै नाहीं ॥
कबहूं आलस कछु जिय जानो ✻ धोवति हैं नयनन लै पानी ॥
दो०-कबहुँ कहति हरि आहैं, उरमें हर्ष बढ़ाय ॥
कबहुं बिरह व्याकुल जरति, अति आकुल अकुलाय॥१९ ॥
सो०-कबहुँ कहति सुख पाय, बहु रमणीय पिय ॥
बसे अनत कहुं जाय, मोसों झूँठी अवधि वदि ॥१९ ॥
ऐसेहि ऐसे रैन बिहानी ✻ सुनी श्रवण बायसकी बानी ॥
भई कामदुख बाम उदासी ✻ जाने श्याम कपटकी रासी ॥
कहति बाम करि मनके माहीं ✻ श्यामनाम खोटे सब आहीं ॥
कोकिल श्याम श्याम अलिदेखौ ✻ श्यामजलदआदिश्यामबिशेखौ॥
तिनहोंकी करनी हरि लीनी ✻ मोसों प्रीति कपटकी कीनी ॥
ऐसे क्रोध-बिरह-बश बाला ✻ सुषमा सदन रहे नन्दलाला ॥
प्रात भये उठि चले तहांते ✻ आलस भरे नयन रँगराते ॥
चन्द्राबली सदन चलि आये ✻ ठाढ़े अजिर रहे सकुचाये ॥
मन्दिर ते रिसभरी गुवारी ✻ नखते शिखलौं रही निहारी ॥
मनमनकहतिकुटिलअतिगिरिधर ✻ प्रात होत आये मेरे घर ॥
कियो मान मनमें अतिभारी ✻ अङ्गनमें ठाढे बनबारी ॥
और नारिके चिन्ह बिलोकी ✻ रोंकति रिसहि रुकतिनहिंरोंकी॥
दो०-तब बोली करि मान तिय, कहा काम मम धाम ॥
ताहीके घर जाइये, बसे जहाँ निशि श्याम ॥२० ॥
सो०-प्रात दिखावन मोहिं, आये रङ्ग बनाय कै ॥
मैं सुख पायो जोहिं, भले बने हौ लाल अब ॥२० ॥
बिनगुण शोभित हैं उर माला ✻ बिच रेखा नखचन्द्र रसाला ॥
अधर दीप-सुत रेख सुहाई ✻ नागबेलि रंग पलक रँगाई ॥
लटपटि पाग महावर लाये ✻ आलस नयन अरुणछबि छाये ॥
चन्दन भाल मिल्यो कहुं बंदन ✻ यह छबि अधिक बनी नन्दनन्दन॥
बलय गाढ़ बर पीठ धरेहौ ✻ जान्यो नागरि अंग भरे हौ ॥
इतने पर डाहन मुहिं आये ✻ सौंह करनको इत उठि धाये ॥

जाहु तहीं जासो मन मान्यो * जैसे हौ तैसे मैं जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो तब लाल बिहारी * तुमते और कौन मुहिं प्यारो ॥
तुमबिन मोहिं कहूं कल नाहीं * बसत सदा मन तेरे माहीं ॥
यह चतुरई कहाँ ढिग आई * चीन्हे हौं गुण राशि कन्हाई ॥
यहि कहि गई भवनते भामिनि * रीझे श्याम देखि छबि कामिनि ॥
सन्मुख जाय भये बनि ठाढे * द्वारकपाट दिये तिन गाढे ॥
दो०-पौढ़ि रही तिय सेज पर, बदन मूंदि अनखाय ॥
हरि तन पुनि चितयो नहीं, उरमें मान दृढ़ाय ॥ २१॥
सो०-प्रभु गति लखी न जाय, जो चाहैं सोई करैं ॥
पौढि रहे सँग जाय, पौढी तिय जहँ मान करि ॥ २१॥
जो देखैं तौ संग कन्हाई * चली बहुरि तिय उठि झहराई ॥
खोलि किंवार अजिरमें आई * देखे ठाढे तहाँ कन्हाई ॥
बिनय करत नैननकी सैनन * चकित भई देखति तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पिय प्यारी * तहँ अंकम भर लई मुरारी ॥
नवनागरि रिस गई बुझाई * चेटक करि बश करी कन्हाई ॥
मान छुँड़ाय हुलास बढ़ायो * तियको सुख दीनो सुख पायो ॥
तब निजधाम गये गिरिधारी * चंद्रावलिउर आनंद भारी ॥
तहाँ सखी दश पाँचक आईं * चंद्रावलि बैठी जिहिं ठायीं ॥
औरै बदन और अँगशोभा * निरखि रही दृग दै मन लोभा ॥
कहति तिया कहँ हर्ष बढ़ायो * कहै न लूटि कहूं कछु पायो ॥
क्यों अङ्ग शिथिलमरगजो सारी * यह छबि कही न जात तुम्हारी ॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी * हम जानो तोहिं मिले बिहारी ॥
दो०-चंद्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह ॥
रही मूँदि मुख मंद हँसि, भीजी श्याम सनेह ॥ २२॥
सो०-रह्यो ध्यान उरछाय, वह लीला बिसरै नहीं ॥
मुखसों कह्यो न जाय, गूँगेको गुडसो भयो ॥ २२॥
तब बोली बूझति कह आली * युवती मन मोहन बनमाली ॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी * कहीन जात बात सखि तिनकी ॥

हा हा कहि चंद्रावलि हमसों * हमसूँ सुने श्याम गुण तुमसों ॥
कै तुहिं मिले यमुनके तीरा * कै तोहिं भवन मिले बलबीरा ॥
तब चंद्रावलि गद्गद् बानी * हर्ष सहित हरिकथा बखानी ॥
सुनिहरिचरितललितसुखकारी * भई प्रेमबश सब ब्रजनारी ॥
चंद्राबलि धनि धन्य कही तब * कहनलगी हरिके गुणगण सब ॥
नन्दनन्दन सब लायक हैं री * सबहिन के सुखदायक हैं री ॥
बसें रैनि काहूके जाई * काहू देत प्रात सुख आई ॥
काहूको मन आप चुरावैं * काहूसों अपनो मन लावैं ॥
काहूके जागत सिगरी निस * काहूको उपजावति हैं रिस ॥
ब्रजवासी प्रभुके मन भावै * तैसेइ तैसे चरित उपावैं ॥
दो०-यह लीला आनन्द भरी, सकल रसन को सार ॥
भक्तनहित हरि करत हैं, गाय तरत संसार ॥२३॥
सो०-घर घर करत बिहार, ब्रज युबतिन के संग हरि ॥
गावत हैं श्रुति चार, ब्रजवासी प्रभुके यशहिं ॥२३॥
श्रीराधा बृषभानु-दुलारी * नँदनन्दन पियकी अति प्यारी ॥
सहज रहै अपने मनमाहीं * नन्दसुवन निशि अन्त न जाहीं ॥
नन्दभवन को मेरे गेहा * रहैं सदा चित यहैं सनेहा ॥
श्याम बसे काहू नारी के * आये प्रात सदन प्यारी के ॥
रति रँग चिन्ह अङ्गपर बाने * सोहन नयन अरुण अलसाने ॥
प्यारी देखि रही मुख पियको * जान्यो रंग लख्यो कहुं तियको ॥
तब मन बिहँसि कह्यो श्रीराधा * आज बन्यो पिय रूप अगाधा ॥
पर उपकार हेत तन धर्यो * पुर बन सबकी साध बिचार्यो ॥
कहाँ पढ़ी यह नीति बतावौ * हमहूको सो ठाम सुनावौ ॥
कहौ कहाँ काको सुख दीनो * धनि धनि यह उपकार जु कीनो ॥
धनि यह बात आज मैं जानी * क्यों नहिंकहियतप्रकट बखानी ॥
धन्य मोहिं यह दर्श दिखायो * धनि धनि जासों नेह सगायो ॥
दो०-भली दिखाई आज यह, अद्भुत छबि अभिराम ॥
सूर उदय लोचन कमल, चंद्र उदय उर श्याम ॥२४॥

सो०-उर कुच कुँकुम दाग, अधर दशन छबि राजई ॥
रँगी महाबर पाग, यह शोभा अनुपम बनी ॥२४॥
क्यों उठि भोर इहाँ को आये * काहे को इतने शर्माये ॥
तुमहूँ भले भली हैं वोऊ * कीनो भलो भले मिलि दोऊ ॥
कीनो है इतनो हित जिनते * तौ अबकित बिछुरेहौ तिनते ॥
जाहु तहाँ वे सुनि दुख पैहैं * बहुरो तुमसों मन न मिलैहैं ॥
तिनहीं को सुख दीजै मोहन * जिनसों निशि बिलसे मिलि गोहन ॥
तियसन्मुख नहिं लखत कन्हाई * बदन नवाय रहे सकुचाई ॥
कबहुँ नैनकी कोर निहारैं * कबहुं चरणनख भूमि उखारैं ॥
प्रकट त्रसित अरु मन मुसकाई * खंडित बचन सुनत हर्षाई ॥
पियको सुख प्यारी नहिं जाने * रोष करतहूँ पिय मनमाने ॥
जोइ आबत सोइ बकत बदनते * जाहुजाहु पियकहति सदनते ॥
तुम जानत पिय हमहिं सयाने * और बसत सब लोग अयाने ॥
रैंनि बसत कहुँ भोर हमारे * आवत नहिं लजात लला रे ॥
दो०-तबहिं श्याम बाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय ॥
किन देख्यो कौने कह्यो, झूँठहि तुमसों आय ॥२५॥
सो०-कहति झूँठ यह बान, खोटी ब्रजनारी सबै ॥
तुमते प्रिय को आन, सौंह करौं जो मानिये ॥२५॥
बिनहीं बोले रहिये जू पिय * कत ऐसे बचन न देहिये हिय ॥
झूँठी सबै एक तुम साँचे * नीके लाज छाँड़िकै नाचे ॥
सौंह कहूं सुनिबो करि पायो * सो अब इहा काम है आयो ॥
ऐसे खीजत पियसों प्यारी * आई तहाँ और ब्रजनारी ॥
सखियन देखि कुँवरि मुसकाई * उरअंतर है रिस अधिकाई ॥
तिन्हैं कह्यो सैंननमैं प्यारी * देखिहू हरिकी छबिहिं निहारी ॥
मौनहिं रहे श्याम सकुचाई * युवति विलोक छबि अधिकाई ॥
कहति सबै हँसि हँसि ब्रजबाला * कहँ पाई छबि यह नँदलाला ॥
तबहिं सखिनसों कह्यो किशोरी * करत इते पर सौंह लखो री ॥
निशि औरनके चितहिं चुरावत * दर्शन देन प्रान इत आवत ॥

तुमहीं अंगचिह्न पहिंचानौ * सहो परै सो बात बखानौ ॥
कृपा करैं तहँहीं पग धारैं * नहीं काज इहँ बेगि सिधारैं ॥
दो०-प्यारी उर अति रोष लखि, अरु सखियन की भीर ॥
तब तहँते बहिरायकै, द्वार गये बलबीर ॥२६॥
सो०-शोच करत उर माहिं, भरे बिरह आनंद रस ॥
जाय सकत कहुँ नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत ॥२६॥

अथ मध्यम मानलीला ५६

जबहीं श्याम गये द्वारेतन * कियो मान प्यारी अपने मन ॥
कहति सखिनसों देख्योतुम सब * बहुरि दोष देतो मोको तब ॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर * चोरतचित्तफिरतअतिनागर ॥
ऐसे ख्याल मोंहिं दिखरावैं * जाने देहु यहाँ जनि आवैं ॥
इहाँ काज इनको कछु नाहीं * मैं बैठो अपने घरमाहीं ॥
जाहु तुमहुं अपने घर कामहिं * योंकहिप्रियागईउठिधामहिं ॥
नखशिख रोष भरी पिय प्यारी * यौबनरूप गर्ब उर भारी ॥
चली सखी यह दशा निहारी * द्वारे पर देखे बनवारी ॥
कहत सुनो मोहन पिय हमसों * प्रियारोषकीनोंअति तुमसों ॥
तुम्हरे आवत अति रिस पाई * यह तुम कहा करी चतुराई ॥
सुनत बात यह कुँवर कन्हाई * भये चकित अति गये झुराई ॥
जान्यो मान कियो फिर प्यारी * भये बिरहव्याकुलतनु भारी ॥
दो०-तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावत नाम ॥
करत फिरत ऐसे गुणन, अब कच्यात कत श्याम ॥ १ ॥
सो०-तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखायकै ॥
अब लागे पछितान, प्रथम विचार कर्‌यो नहीं ॥ १ ॥
यह सुनि धीरज कियो कन्हाई * तब इक युवती और बुलाई ॥
तासों कहि सब बात जनाई * दूती करि हरि ताहिपठाई ॥
कहत श्याम तासों यह बानी * बेग मिटे जिय मान सयानो ॥
दूती गई करति मन साधा * बैठी तहाँ जाय जहँ राधा ॥
प्यारी मान ठान दृढ़ बैठी * हृदय रोष भौहैं करि ऐंठी ॥

उरमें सौतिशाल अति शालै * नेक नही इत उत कहुँ हालै ॥
दूती कछू थाह नहिं पावै * बिना भोत कहँ चित्र बनावै ॥
मनहीं मन दूती पछिताई * अति आतुर मोहिं श्याम पठाई ॥
यह इत उत कहँ नाहीं निहारै * कहा करों मन-माँझ विचारै ॥
तब कहि उठी दूतिका नारी * मान कियो वृषभानु दुलारी ॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही * उनकी बात आज मैं चीन्ही ॥
ऐसे मैं उनको नहिं जाने * अब कैसे उनसों मन माने ॥
दो०-घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगत न लाज ॥
आय दिखाये प्रात मुख, नटके रति रँग साज ॥ २ ॥
सो०-मैं आई अब बाज, जित चाहो तितहि फिरो ॥
उनको यहाँ न काज, राज करौ ब्रजमें सदा ॥ २ ॥
दूती सुनि प्यारी की बानी * अन्तर प्रेम रोष लपटानी ॥
कह्यो यमुनते मैं गृह आई * सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सखी घरमाहीं * भली प्रकृति हरि की यह नाहीं ॥
अब द्वारेते हरि न टरत हैं * पर घर जानकि सौंह करत हैं ॥
मन पछितात कहत घनश्यामा * भूलेहु ऐसो करहुं न कामा ॥
तू जनि मान तजै मोसों * यहे कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावैं * परघर जानकि बात मिटावैं ॥
अब मोको यह बात लखाई * जाहिं न परघर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी * द्वारे हैं हरि तब यह जानी ॥
उमँगिउठ्योरस सुनि मनमाहीं * बाहर प्रकट कियो सो नाहीं ॥
काहेको हरिद्वार खरे री * कौने राखे जायँ घरे री ॥
तू रहि मान कितहि रिसपावति * यह हरिसों मैंही कहि आवति ॥
दो०-लई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान ॥
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥ ३ ॥
सो०-कहा मनाऊँ लाल, नेकु मरम नहिं पाइये ॥
दीठ न जोरति बाल, सूधे मुख बोलति नहीं ॥ ३ ॥
अपनोसी बहुतैं मैं भाषी * सुनि उन मौन हृदय धर राखी ॥

नेक नहीं उत्तर मुख बोलै * अति रिस कंपत इत उत डोलें ॥
मैं जु कही सो सुनहु कन्हाई * भई बूँद-बारूदकि नाँई ॥
भरि भरि लेति नयन दृग कोरैं * नहिं डरती बैठी मुख मोरैं ॥
तिरछी करि करि भौंहन तानैं * कोटि कोटि अवगुण मुखगानैं ॥
ऐसो है वह दीठ तुम्हारे * कहा बसीठि करै कोउ नारी ॥
सुनहु रसिकबर कुँवर कन्हाई * आपहि लीजै जाय मनाई ॥
याको नाम भयो गढ़बाई * लीजे ताहि सुरंग लगाई ॥
यह सुनि बिरह भरे बनवारी * मूर्छि परे धर सुरति बिसारी ॥
सखी उठाय लए अँकवारी * यों कत बिकल होत बलिहारी ॥
नागर बड़े कहावत हौ जू * धीर धरो दुख पावत हौ जू ॥
बातन नेकु ताहि गहि पाऊँ * तौ तबहीं मैं तुमहिं मिलाऊँ ॥
दो०-धीरज दे घनश्याम को, दूती गई उताल ॥
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल ॥ ४ ॥
सो०-मुख नाहिं बोलत बैन, अति व्याकुल तेरे बिरह ॥
भरि भरि डारत नैन, कहा कहौं न सँभार कछु ॥ ४ ॥
बारहिं बार कहति पछितानी * दे सुख जो तू कुँवरि सयानी ॥
तूही प्रिया भावती हरिकी * और नहीं कोऊ तोसरिकी ॥
तेरेहि रसवश कुँवर कन्हाई * तेरे तनक बिरह कुम्हिलाई ॥
तेरेहि रूप अधीन खरे री * तेरिय चितवनि के चेरे री ॥
तेरेइ रंग बसन तनु धारैं * तेरेइ रंगको तिलक सँवारैं ॥
चन्द्रवदन तेरो लखि गोरी * मोर चन्द्र शिर मुकुट कियो री ॥
तेरोइ चरित सुनै अरु गानै * तू मानै भावै जनि मानै ॥
अति अनुराग श्याम को तेरो * करि बिचार नीके मैं हेरो ॥
जो जाको नीके करि जानै * सो तासों तैसी हित मानै ॥
यह प्रीतिकी रीति पियारी * कहे तु बोलि लेहुँ गिरिधारी ॥
तू कहँ गई कहन कहँ आई * मैं जानति हरि तोहिं पठाई ॥
मानति कौन कही अब तेरी * जानतिहौं हरिचरित बड़ेर ॥
दो०-अबधौं को तिनसौं मिलै, जिन्हैं परी यह बान ॥

उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछु आन ॥ ५ ॥
सो०-हैं वे कपट निधान, बहुनायक पूरे गुणन ॥
तिनको करत बखान, जिन वामन व्है बलि छल्यो ॥ ५ ॥
मान किये अब नाहिं बनै री * देखु बिचार हिये अपने री ॥
जाके गुण गण सुर मुनि मोहैं * सो तेरे गुणगण मणि पोहैं ॥
सनकादिक जिहिं ध्यान लगावैं * सो तेरे दर्शन सुख पावैं ॥
शिव बिधि जाके द्वार खरे री * सो प्रभु तेरे द्वार परे री ॥
जाके पद कमला कर लीने * सो तुव पद चिंतन मन दीने ॥
अति आतुर नन्दलाल हिये री * सौंह करत हौं सीस छुये री ॥
सुनु प्यारी अति हठ नहिं कीजै * सर्वसु वारि श्याम पर दीजै ॥
यह जोबन बर्षा को पानी * गर्व न कीजै याहि सयानी ॥
सब सुख हरिके संग किये री * कृष्ण बिमुख कै काल जिरे री ॥
पूरब पुण्य सुकृत फल तेरो * भाभिनि मान कह्यो करि मेरो ॥
हरिके रस रँग जो मन भीजै * रूप सुधा जो नयनन पीजै ॥
सौंह चरण तेरे की कीजै * सुफल दशहु दिस तौ यों दीजै ॥
दो०-वृथा जान नहि दीजिये, हरिसों करिकै मान ॥
उठति बैसके दिननको, सुन तिय यहै सयान ॥ ६ ॥
सो०-हिलि मिलि करहि किलोल, मैं तेरे हित की कहति ॥
लेहिं श्याम को बोल, परे द्वार बिलपत दई ॥ ६ ॥
सोई चतुर सुलक्षण नीकी * सदा भावती जो पिय जीकी ॥
यौबनगुण द्युति अरु हित पीको * है सुन्दर तेरे शिर टीको ॥
तेरे हित सब ब्रजकी बाला * कियो बुलाय रास नन्दलाला ॥
नूतन श्याम प्राणकी प्यारी * परछाँही अरु सब ब्रजनारी ॥
तोसी और नहीं ब्रज गोपी * तेरेइ रूप बसे तिय ओपी ॥
सुन्दर श्याम सकल सुखदायक * कहा भयो रीं जो बहुनायक ॥
तो समान वृषभानु लली को * शशिहिं कहा डर कुमुदकलीको ॥
ऐसे जब दूती समुझाई * तब बोली तिय कछु मुसकाई ॥
बादहि बकति आय मेरे घर * बेधतिहै ऐसे बचनन शर ॥

उतकी इत इतकी उत आई * मिलवति झूँठी बात बनाई ॥
जो चहिहैं तौ आपै ऐहैं * सौंह करैं अरु हाहो खैहैं ॥
प्रीति रीति कछु समुझति नहीं * जो आवति सोइ कहतिबृथाहो ॥
दो०-जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जानि ॥
मान तज्यो अब लाडिली, श्याम मिलाऊँ आनि ॥ ७ ॥
सो०-कह्यो सखी मुसकाय, नहिं मानति मेरो कह्यो ॥
श्याम आय मनावैं, मैं जानी तब मानि हैं ॥ ७ ॥
अरी मानवे बहुतैं तेरे * लगत मान नोकोई हेरे ॥
हाँसी खेल आरको माई * तुलत न तेरे बिरस रुकाई ॥
ऐसेही रहि जौलगि जाऊँ * यह सुख हरिको आनि दिखाऊँ ॥
प्रियमन नूतन चोप बढ़ाऊँ * अति रस रूप अनूप उपाऊँ ॥
यह कहि गई श्याम पै आली * कहति आजु सुनिये बनमाली ॥
मानति नाहीं मनायो प्यारी * को जाने जियमें कह धारी ॥
हाहा करि मैं बहु समुझाई * सुनत न अधिक होतरिस आई ॥
तुम आतुर वैसी गतिबाकी * आवति जाति बीचमें थाकी ॥
आपहि चलि लीजिये मनाई * और भाँति नहिं बनत बनाई ॥
वह बयारि जैसी ये जबहीं * पीठि आडिये तैसी तबहीं ॥
मोसी जो पठावौ तुम कोरी * नहीं मानति वृषभानु-किशोरी ॥
हौं तौ कहति तुम्हारे हितकी * पाई है कछु वाके चितकी ॥
दो०-चले बनत है लाल अब और यत्न नहिं कोय ॥
काछ कछिये जौन हरि नाच नाचिये सोय ॥ ८ ॥
सो०-आपकाज महाकाज, बड़े कहि गये बात यह ॥
तजहु श्याम उर लाज, करि बिनती तियतेमिलहु ॥ ८ ॥
चलौ चले तुम्हारे हठ जैहै * देखत प्रेम उमँगि उर ऐहै ॥
सखी संग तब नवल बिहारी * गये भवन बैठी जहँ प्यारी ॥
आगे भये सकुचि कै ठाढ़े * अति आधीन प्रेम रस बाढ़े ॥
नेक नहीं इत उत कहुं डोलैं * चित्र लिखे से मुख नहिं बोलैं ॥
यदपि लाल गाढ़े अति जीके * सकल सयानप भूले नीके ॥

प्यारी देखि पियहिं मुसकानी * जिय डरपे मोते यह जानी ॥
अति आनन्द भयो मनमाहीं * चुपही रही कह्यो कछु नाहीं ॥
मन मन कहति न अब उचटाऊँ * आदर करि पियको बैठाऊँ ॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने * अब नहिं जैहैं धाम बिराने ॥
सहचरि कह्यो देख री प्यारी * कबके ठाढ़े हैं गिरिधारी ॥
मान मनायो प्यारी पियको * तू पिय जिय पिय जीवन जीको ॥
प्राणहिं तनहिं रूसबो कैसो * यह कहुँ भयो सुन्यो नहिं ऐसो ॥
दो०-करि आदर बैठारि पिय, हँसि लै कण्ठ लगाय ॥
घर आये नहिं कीजिये, ऐसो कित सकुचाय ॥ ९
सो०-है तू नागरि बाम, मनमें कह ऐसो धरी ॥
वे ठाढ़े हैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं ॥ ९ ॥
तब हँसि कह्यो भले पिय वैसो * अब जनि काम करहु कहूँ ऐसो ॥
अबकी चूक नहीं मैं मानी * और दिनाको रहिये जानी ॥
मेरी सौंह करौ मो आगे * तजि सकोच बोला डर त्यागे ॥
कह्यो सोंह करि मोहन तबहीं * और तियन पै जात न कबहीं ॥
नन्द भवनते अबही आयो * तुम्हरो रोष देखि सकुचायो ॥
ऐसो अब काहेको बोलौं * अबलौंको करनी नहिं खोलौं ॥
अब जु काल्हिते अनत सिधारे * तौ तुमहो जानोगे प्यारे ॥
तब हरि हँसि कर शिरपर राखैं * बारहि बार सौंह करि भाखैं ॥
सहचरि हँसि तब साखि रहीजू * सखी आजते बात यही जू ॥
पान दयो प्यारी तब लालहिं * आई सखी सकल तिहि कालहिं ॥
सौंह करी सबहिन यह जानी * हँसे श्याम श्यामा मुसकानी ॥
आदर कर सबको बैठायो * निरखियुगल सबहिनसुखपायो ॥
दो०-कह्यो सखिन सों हँसि प्रिया, भरि आनन्द उत्साह ॥
तुमहूं सब मिलके कह्यो, भये श्याम अब साह ॥ १० ॥
सो०-लखि लखि सखी सिहात, यह सुख लाडिलिलालको ॥
बसे श्याम तहं रात, प्रातः चले अपने सदन ॥ १० ॥
चले धाम निज श्याम सबारे * देखे ठाढ़े नन्द दुबारे ॥

सकुचि फिरे घर जात लजाने * प्रमदाके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे * कहति लाल ये ख्याल तुम्हारे ॥
कहाँ हुते गवने कितमाहीं * कबहूं दर्श देतहौ नाहीं ॥
रहत कहाँ हौ सदा लुभाने * आय परे इत कहाँ भुलाने ॥
कहौ कहा हौ कछुक डरेसे * आलस भरे जँभात खरेसे ॥
बसे कहूं निशि तियसँग जागे * नयन अरुण अति रस रँग पागे॥
मलयज उरज छाप उर धारे * द्वै शशि मनहु उदित उजियारे॥
नयन कछू सकुचत से ऐसे * शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतली अलि उड़ि सकै न जानौ * उरझि रहे अंग गात न मानौ॥
डगमगातसे डगमग डोलैं * रसमस गात भृङ्गार अमोलैं ॥
अंग अंग शोभाके सागर * धनि धनि जहाँ बसे रतिनागर॥
दो०-बिहँसि चले कहि श्याम तब, तक करो तुम बात ॥
समुझो सब हम आय हैं, आज तुम्हारे रात ॥११॥
सो०-सुनि हर्षी जिय नारि, पुलक गात आनन्द भरि ॥
ऐहैं आज मुरारि, साँझ परे मेरे सदन ॥११॥
प्रातहिं ते मन हर्ष बढ़ायो * नौ सत साज सिंगार बनायो ॥
बार बार दर्पण मुख देखै * भूषण बसन अंग अवरेखै ॥
कद्रू सुत छबि लाजत वेणी * माँग सँवारति दधि सुत श्रेणी॥
भुवन तीय सुत रेख सँवारै * धनपति-पुरिको नाम सुधारै ॥
हीरावलि उरपर लै धारै * श्याम मिलनसुखमनहिंबिचारै॥
रचि रचि सुमनन सेज बनावै * केशर चन्दन अगर मिलावै ॥
बहु नायक नन्दसुवन कन्हाई * गये अनत याको बिसराई ॥
बासर ऐसे करत बिहानो * एक याम निशिको नियरानो ॥
परयो शोच बिरहा अकुलानी * श्याम न आये कहधौं जानी ॥
गये साँझहो को कहि आवन * अजहुँ नहिं आये मनभावन ॥
कैधौं आवत है अब धाये * किधौं परे कहूं फंद पराये ॥
वे बहु रमणी रमण बिहारो * कैधौं मेरी सुरति बिसारो ॥
सो०-कुमुदाके घर हरि रहे, बढ़्यो अधिक उर हेत ॥

भीजे दोऊ प्रेमरस, अरस परस सुख लेत ॥१२
सो०-मुदित श्याम सँग बाम, क्षण सम बीतत याम तिहिं॥
याको युग सम याम, बीतत नभ तारे गनत ॥१२
बसे उहाँ याही इहि रीति * भयो भोर रजनी सब बीती॥
मनही मन युवती पछितानी * मोसों श्याम कुटिलई ठानी॥
गयो मदन दुख बदन झुराई * रही बैठि सदनहिं मुरझाई॥
आई तहाँ सहज इक आली * देखी बिरह बिकल तनु ग्वाली
लोचन जलज भरे जल ढारै * मन मारे महि नखन बिदारै
बूझन चली निकटसों जाई * कहा भयो ताको री माई
आनन्द रहित आजु मुख तेरो * देखत होत बिकल मन मेरो
सो तौ बात भई है कैसी * मोहिं सुनाय कहति किन तैसी
तब बोली मधुरी तिय बानी * अँचर पोंछि नयनको पानी
कहा कहौं तोसों री आली * कपटी कुटिल कठिन बनमाली॥
मोसों गये अवध बदि माई * अनतहिं लुब्ध रहे कहुँ जाई
कियो नहीं मेरे गृह आवन * भये सखी नैना दोउ सावन
दो०-ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपट की खान॥
अब उनसों मोसों कहा, बनै लिये पहिंचान ॥१३
सो०-तोहिं मिलैं जो आज, मेरी सों कहियो उन्हैं॥
गहौ कछू जिय लाज, बचननके सांचे बड़े ॥१३
उन्हैं गई मैं कछू बुलावन * आपहिं अजिर गये करि पावन
मोपै कृपा आप यह कीन्ही * तोसों कहौं तबहिं मैं चीन्ही
काल्हि कहूँ जागे तियगोहन * जात हुते अपने घर मोहन
द्वारे नन्दहिं देखि डराने * मेरे गृह आये सकुचाने
डगमग पग दृग नींद भरे री * बारहिं बार जँभात खरे री॥
जब मैं कही कहांते आये * तब मोतन सन्मुख मुसकाने॥
उत्तर नहीं दियो सकुचाई * श्याम करी तब यह चतुराई॥
कहयो धाम मेरे निशि आवन * आपहि श्रीमुख बचन सुनावन॥
रैन जागि मैं सेज सँवारी * ताते जरी रिसहिं की मारी॥

इतनी कहत द्वार हरि आये * ग्वालिनि भीतरते लखि पाये ॥
देखतही रिससे झहरानी * कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी बिधाता * आये मेरे जू सुखदाता ॥
दो०-ऐसे कहि चुप व्है रही, मुरि बैठी रिस गात ॥
मधुरे बचननसों कहति, निकट सखीसों बात ॥१४॥
सो०-आयेहैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ॥
इनसों मिलिहै कौन, फिरति कहाँ कोऊ बहो ॥१४॥
कृपा करहिं अब इतहिं न आवें * उतही जाहिं जहाँ सुख पावैं ॥
सखी लखे सब अंग श्यामके * जागे कहूँ निशि संग बामके ॥
कहुं चंदन कहुँ बंदनरेखा * कहुं काजर कहुँ पीक सुरेखा॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई * मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुँवर कन्हाई * परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी * मान कियो मोसों फिर बैठी ॥
तबहिं श्याम कीनी चतुराई * सैननहीं सों सखी बुलाई ॥
सो कहि चली जाति घर माई * तू जो बैठी मान दृढ़ाई ॥
अनतहिं ठाढ़े भये कन्हाई * तहाँ सखीसहजहिं चलि आई ॥
निरखिबदन दोउनहँसि दीनो * सखी कह्योतुमयह कहकीनो ॥
तबहँसिकह्योसखीसोंगिरिधर* मैं मनाय लैहौं तू जा घर ॥
यह सुनिबिहँसिगईकहिआली * जाय मनाय लेहु बनमाली ॥
दो०-रसिकनके मणि ज्ञानमणि, बिद्यामणि गुणराय ॥
आपनहूँ तहँते गये, तिनको दर्श दिखाय ॥१५॥
सो०-रही अकेली बाम, फिरिकै चितयो द्वारतन ॥
तहाँ न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो ॥१५॥
तब जानी फिरि गये कन्हाई * रही मनहिंमन तब पछिताई ॥
भई बिरहव्याकुल अति नारी * मिटिगयोमान हृदयदुख भारी ॥
कहति कहा मैं यह बुधि ठानी * आवतही हरिसों झहरानी ॥
भीतरलौं आवन नहिं दीनो * कहा क्रोध मोको यह कीनो ॥
जोकयोंहूँ करि मो घर आये * तौ मैं देखतही उचटाये ॥

बार बार ऐसे पछिताई * मनहीं रही मसोसा खाई ॥
श्याम गये निश्चय जब जानी * न्हान चली तब यमुना पानी ॥
अतिव्याकुलमन कछु न सुहाई * कोऊ सखी न संग बुलाई ॥
पहुंची यमुना तुरत अन्हाई * चली बहुरि घरको अतुराई ॥
भये श्याम मारगमें ठाढ़े * पाँच बर्षके व्है छबि बाढ़े ॥
आगे व्है नागरिसों बोलैं * सुंदर कोमल बचन अमोलैं ॥
कहाँ जातिहै री तू नारी * चल बोलत जाको तू प्यारी ॥
दो०-बनहिं बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं ॥
सुनत बचन चकित भई, रही बालमुख जोहिं ॥१६॥
सो०-श्यामनाम सुनिकान, अति आनँद उरमें भयो ॥
अगमचरित को जान, ब्रजवासी प्रभु कान्हके ॥१६॥
कर गहि लियो चली हर्षाई * गोपकुमार जान गृह लाई ॥
कहत श्याम बनधाम बुलायो * या बालकको लेन पठायो ॥
पूछौं याहि भेद बनको सब * कहा कह्यो है हरि यासों अब ॥
अतिआनंद भयो मन बालहिं * अंतःपुर लैगई गुपालहिं ॥
तहाँ चरित्र कियो नँदलाला * भये तरुण सुंदर ततकाला ॥
भुज गहि लई हर्षि उर लाई * चकित भई नागरि सकुचाई ॥
छाँड़िदेहु मनमुदितकहतितिय * ऐसेचरितकरत धनिधनि पिय ॥
ऐसे हरि भामिनी मनाई * सुख दै गये सदन सुखदाई ॥
परम हर्ष मन भई गुवारी * रैनि-बिरह-तनुताप निवारी ॥
समुझिसमुझिकै पियगुणमनमैं * पुनिपुनि हर्षति पुलकति तनमैं ॥
हरि ये चरित करत ब्रज डोलैं * यशुमतिढिगबालकजिमिबोलैं ॥
निजगृह रहे सदा नँदलाला * परम बिचित्र श्यामके ख्याला ॥
दो०-ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुख खान ॥
कहत सुनत गावत गुणत, हर्षत संत सुजान ॥१७॥
सो०-ब्रजबासी घनश्याम, नटनागर गुण आगरे ॥
ब्रजबासी सुखधाम, गोपीपति नँदलाडिले ॥

अथ गुरुमानलीला ५७.

सखिनसंग वृषभानु–किशोरी * चली न्हान प्रातहिं उठि गोरी ॥
जाके घर निशि बसे कन्हाई * ताघर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढ़ी भईं द्वारपर जाई * कढ़े तहाँते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ * रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनकोतुरतहिं प्यारी * न्हान जानकी सुरत बिसारी ॥
भई बिकलतनुरिसअतिबाढी * रहिगइँ सखीनिरखिसब ठाढी ॥
रहि गये ठाढ़े श्याम ठगेसे * सकुचाने उर शोचपगेसे ॥
जब देखे हरि अतिमुरझाये * तब सखियनभुजगहि समुझाये ॥
उलटि भई सब हरिको धाई * देके बाँह प्रिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आइ जहँ राधा * बैठी मान दृढाय अगाधा ॥
रिसहीके रस मग्न किशोरी * भईं श्याममति देखत भोरी ॥
ठाढ़े चित्त चकित अकुलाहीं * मुखते बचन कहे नहिं जाहीं ॥
दो०-व्याकुललखि नँदलालको, सखियन कियो बिचार ॥
अब दोऊ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥ १ ॥
सो०-अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासों कहौं ॥
इत ये धरत न चेत, परी उठावन बान इन ॥ १ ॥
प्यारीनिकट गई सब आली * ठाढ़े पौंरि रहे वनमाली ॥
कहति मान कीनो तैं प्यारी * न्हान जानते फिरी कहा री ॥
तोहिं लखतही री गिरिधारी * अतिहिं डरे तनुसुरति बिसारी ॥
मूर्छिपरे धरणो अकुलाई * तरु तमाल जनु गयो झुराई ॥
तैं ऐसे चितयो कछु उनकों * नेकहुं चैन रह्यो नहिं तिनको ॥
तेरे नयन अरी अनियारे * किधौं बान खरसान सँवारे ॥
भौंहकमान तानि यों मारे * क्योंकरि राखैं प्राणपियारे ॥
घायल जिमिमूर्छितगिरिधारी * अमीबचन अब सींच पियारी ॥
बहुनायक वे तू नहिं जानै * तिनसों कहा इतौ दुख मानै ॥
बाँह गहौ हरिको ढिग लावैं * अब वे निजअपराध क्षमावै ॥
गहति बाँह तुमही किन जाई * मोसों बाँह गहावन आई ॥
कालिहहि सोंह मोहिंउन दीनी * आजहि यह करनी पुनि कीनी ॥

दो०-देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुख पाय ॥
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बाँह गहावति आय ॥ २ ॥
सो०-मिलौं न तिनसों भूल, अब जौलौं जीवन जियों ॥
सहों बिरहको शूल, बरु ताकी ज्वाला जरौं ॥ २ ॥
मैं अब अपने मन यह ठानी * उनके पंथ न पीऊँ पानी ॥
कबहूं नयन न अंजन लाऊँ * मृगमद भूलि न अङ्ग चढ़ाऊँ ॥
हस्त वलय पट नील न धारौं * नयनन कारे घन न निहारौं ॥
सुनौ न श्रवणन अलि पिकवाणी * नीलजलज परसौं नहिं पाणी ॥
सुनत प्रियाकी बात सुहाई * हर्षंत ठाढ़े पौरि कन्हाई ॥
सखी कहति यों हठ नहिं कीजै * हरिसों ऐसे मान न कीजै ॥
तू है नवल नवल गिरिधारी * यह जोबन है री दिन चारी ॥
क्षण क्षण ज्यों करको जलछीजै * सुनु री याको गर्व न कीजै ॥
नन्दनन्दन मुखशशि सुखकारी * तू करि नयन चकोर पियारी ॥
हुतौ प्रेमधन तो यह भारी * सो अब कछु तै कियो कहा री ॥
कहति हुती रूसों नहिं कबहीं * सो अब रूसतहै जब तबहीं ॥
सुनिहै सुघर नारि जो कोई * करिहै हँसो प्रेमक सोई ॥
दो०-मान कियो जो भावते, सो न भावतो होय ॥
उरते रिसवत प्रेम कत, अन्त भाव तौ सोय ॥ ३ ॥
सो०-लाख कहौ किन कोय, पिय सनेह जो गोय है ॥
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचौ किनहुं ॥ ३ ॥
तुम वे एक न दोय पियारी * जलते तरंग होति नहिं न्यारी ॥
रस रूसनो ओसकण-जैसो * सदा न रहै चाहिये तैसो ॥
तजिअभिमानमिलहिपियप्यारी * मान राधिका कही हमारी ॥
चुप न रहति कह करति मनावन * तुम आई हौ बात बनावन ॥
बहुत सही घर आई यातें * सुरति दिवावति पिछली बातें ॥
मोसों बात कहति हौ काकी * जाहु घरन अब कछु है बाकी ॥
को उनकी यह बात चलावत * है वे अब तुमहीं को भावत ॥
तुम पुनीत अरु वे अतिपावन * आई हैं सब मोहिं मनावन ॥

यह कहि रही रोष भर भारी * गई सखी ये जहाँ बिहारी ॥
कह्यो जाय हरिसों हरुवाई * आज चतुरई कहाँ गवाँई ॥
बिननिज जाँघन चलहि ललारे * कैसे चहत कियो सुख प्यारे ॥
हो मनमोहन तुम बहुनायक * नागर नवलसकल-गुण-लायक॥
दो०-मान तजै नहिं लाड़िलो, थाकीं सबै मनाय ॥
बेगि यत्न कछु कीजिये, रचिये आप उपाय ॥ ४ ॥
सो०-रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही ॥
करि तिय स्वांग अनूप, गये जहाँ प्रिय मानिनी ॥ ४ ॥
बैठे निकट सखी मिस जाई * कहत श्रवण ढिग बात सुहाई॥
बन घनश्याम धाम तू प्यारी * करी बैठी हो मान कहा री ॥
मैं उत गई तोहिं नहिं पाई * हरिकी दशा देखि फिरि आई ॥
अति आरत बन कुँजबिहारी * इकले खड़े गहे द्रुमडारी ॥
तेरोइ नाम रटत मुखमाहीं * और कछु तिनको सुधि नाहीं ॥
देखत विथा भई मुहिं गाढ़ी * चल तू होहि नेक ढिग ठाढ़ी ॥
कुँज भवन ठाढे दोउ देखौं * तब मैं नयन सुफल करि लेखौं॥
अब हरि कहत कृपा मोहिंकीजै * जो बूझिये दण्डसो दीजै ॥
अति आतुर प्रीतम को ले री * हठ तजि यही कही सुन मेरी ॥
तुव-कारण वृषभानु–दुलारी * मेरे पांय परत गिरिधारी॥
अब मैं पांय परति हौं तेरे * कर अपराध क्षमा हरि केरे॥
चाहत कियो श्यामको जोई * उन्हें जानि मोसों करि सोई॥
दो०-क्षण क्षण परसत चरण कर, क्षण क्षण लेत बुलाय॥
कहत प्रिया अब मान तजि, पुनि पुनि हाहा खाय॥ ५ ॥
सो०-लखि २ सखी सिहाल, चरित ललिम नन्दलाल के॥
मनहीं मन मुसकात, भरो प्रेम आनन्द रस ॥ ५ ॥
तब चितयो प्यारी नयनन भर * आयो उघरि लाल लीलाधर॥
श्याम चतुरई मोसों माँड़त * वे गुण तुम अबहूं नहिं छाँड़त॥
इन छंदन में मानत हौं जू * नीके सब गुण जानत हौं जू॥
रसवादिनि मोको करि पाई * वे बातें अब देहु भुलाई ॥

यह कहि बहुरि भई रिसहाई * रहे श्याम ठाढे सकुचाई ॥
गहे ग्रीवपट अति आधीना * जलके निकट दीन जिमि मीना॥
फिर प्रौढी दै पीठ श्यामको * हृदय बिरहदुख अधिक बामको॥
कर आरसी अग्र लै धारै * पट अन्तर हरिबदन निहारै॥
रिसबश धरत नहीं मन धीरा* तलफत हिये बिरहको पीरा॥
इत नागरि उत नागर ओऊ * भली चतुरई बाढे दोऊ ॥
जितै जितै मुख फेरति प्यारी * तितहीं ढरि आवत गिरिधारी॥
जोइजोइ बात भाव तिहिं भावैं* सोइ सोइ बातैं श्यामचलावैं ॥
दो०-करि हारे छल छंद सब, छुवन न पावत छाँहि ॥
हठ छाँड़ति नहिं लाड़िली, हरि शोचत मनमाँहि॥ ६ ॥
सो०-देखि श्याम को दीन, बिरह बिबश प्यारी निकट ॥
सखियाँ परम प्रबीन, तब सब समुझावन लगीं ॥ ६ ॥
लखि री कमल नयन तो आगे * कबके हहा करत अनुरागे ॥
तेरे भयते कुँवर कन्हाई * आये तियके रूप बनाई ॥
मधुर मधुर बचनन बनवारी * तोहिं मनावत हैं री प्यारी ॥
हाहा करि अरु पाँयन लागे * कियो कहा चाहति है आगे ॥
लख हरि खड़े मलिन मुरझाये * आदर नहिं चुकिये घर आये ॥
बे तौ बनके भँवर बिहारी * तो सी और बेलि कौ प्यारी॥
करु सन्मान बिहँसिकर वैसो * कीनो कहा निठुर मन ऐसो॥
पावति कहा मानके कीने * कहा गँवावति आदर दीने ॥
होत कहा घूँघटपट खोले * कहा नसात तनक हँसि बोले ॥
ऐसी कहूँ कजियत है री * प्रीतम छाँड़ि राखियत बैरी ॥
निजबश मदनगुपालहिं जानी * ऐसी कहा अधिक इतरानी ॥
सुखकी कहति अनखसो आवै * कहा तोहिं कोऊ समुझावै ॥
दोहा-जो नहिं मानति श्यामसों, मानहिं रहिहै हाथ ॥
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ ॥ ७ ॥
सो०-ऐसो कहिहै कौन, मान प्रिया हम कहतिहैं ॥
त्रिभुवन ठाकुर जौन, सों तेरे बश ह्वै पर्यो ॥ ७ ॥

ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै * सुन री फिरि पाछे पछितैहै ॥
यह यौबन है धन सपने को * मनहिं मनायो पिय अपने को ॥
अब ये दिन रूसन के नाहीं * प्रिया बिचारि देखु मनमाहीं ॥
पावस ऋतु कियो री फेरो * गरजत गगन भयो घन घेरो ॥
बोलत दादुर चातक मोरा * चहुँदिशि करत पवनझकझोर ॥
बर्षत मेघ भूमि हित लागी * नारि सकल प्रीतम अनुरागी ॥
जे बेली ग्रीषम ऋतु दाहीं * ते हुलसी तरुसों लपटाहीं ॥
सरिता उमँगि सिंधुको जाहीं * मिलत सरी पर आपस माहीं ॥
भयो समय यह दिवस चारिको * नन्दनन्दन पिय सँग बिहारको ॥
सुनि सखियनके बचन किशोरी * उमँग्यो प्रेम रही रिस थोरी ॥
रिस करि कह्यो जाहु उठिताके * रस करि हाथ बिकाने जाके ॥
मुखसों भलो मनावत मेरो * रहत सदा अन्तर्हिं चित घेरो ॥
दो०-साँच बखानत जगत सब, बिरद तुम्हारो लाल ॥
गहे रहत मन तियनके, बिहँसि कह्यो यों बाल ॥ ८ ॥
सो०-भये प्रफुल्लित श्याम, बिरह ताप तनुको गयो ॥
हर्षि उठीं सब बाम, प्यारी मुख बिहँसत निरखि ॥ ८ ॥
तब बोले हरि दोउ कर जोरी * तेरी सौं बृषभानु किशोरी ॥
तुमहीं हित चित जीवन मोकों * सदा करत आराधन तोकों ॥
तुमहीं तिलक तुहीं आभूषण * पोषण तेरेइ बचन पियूषण ।
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊँ * अब तज मान हृदय सुख पाऊँ ॥
कर जोरे बिनती करि भाख्यो * कहत सीस चरणन पर राख्यो ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी * तब बोली उठि सखी सयानी ॥
सुनहु श्याम तुम हौ रससागर * रूप शील-गुण-प्रीति उजागर ॥
तुमते प्रिया नेक नहिं न्यारी * एक प्राण द्वै देह तुम्हारी ॥
प्यारी में तुम तुममें प्यारी * जैसे दर्पण छाँह बिहारी ॥
रसमें परै बिरस जहँ आई * होय परति तहँ अति कठिनाई ॥
अबकै हम सम देति मनाई * परसौ प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रूठाय हौ जो गिरिधारी * राम राम तौ बहुरि हमारी ॥

दो०-जब परशे प्यारी चरण, परम प्रीति नन्दनन्द ॥
छूट्यो मान हर्षी प्रिया, मिट्यो बिरह दुख द्वन्द ॥ ९ ॥
सो०-उर आनन्द बढ़ाय, प्रेम कसौटी कसि पियहिं ॥
अवगुण मन बिसराय, मिलो प्रिया उठि श्यामसों ॥ ९ ॥
हर्षि मिले दोउ प्रियतम प्यारी * भईं सखी सब निरखि सुखारी ॥
तब दोउ उबटि सखीअन्हवाये * रुचिर शृंगार शृंगारि बनाये ॥
मधुर मिष्ट भोजन मन भाये * दोअन एकै थार जिमाये ॥
दिये पान आचमन कराये * सुमन सुगन्ध माल पहिराये ॥
लै बीरा अपने कर प्यारी * दीनो बिहँसि बदन गिरिधारी ॥
तबहिं सुफलहरि जीवनजान्यो * परम हर्ष उर अन्तर आन्यो ॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी * तब सखियन आरती उतारी ॥
अति आनन्द भरे दोउ राजें * अरस परस निरखत छबि छाजें ॥
पाये बश करि कुँजबिहारी * बिहँसिकह्यो तबपियसोंप्यारी ॥
सुनहु श्याम बर्षा ऋतु आई * रचहु हिंडोरे शुभ सुखदाई ॥
है मन पिय यह साध हमारे * सब मिलि झूलहिं संग तुम्हारे ॥
सुन तिय बचन श्याम सुखपायो * ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ॥
छन्द-तिय मान हरि ऐसे छुडायो, भक्त हित लीला करी ॥
निगम नेति अपार गुण, सुख सिंधु नटनागर हरी ॥
यह मान चरिच पवित्र हरिकों, प्रेम सहित जु गावहीं ॥
करहिं आदर मान तिनको, सन्तजन सुख पावहीं ॥
दो०-राधा रसिक गुपाल को कौतूहल रस केलि ॥
ब्रजबासी प्रभु जननको, सुखद काम तरु वेलि ॥१०॥
सो०-सुफल जन्म हैं तासु, जो अनुदिन गावत सुनत ॥
तिहिंके सदा हुलासु, ब्रजबासी प्रभुकी कृपा ॥१०॥

* अथ हिंडोरा बर्णन लीला ५८ *

भक्त बश्य प्रभु कुँजबिहारी * भक्तनहित लीला अवतारी ॥
सदा सदा भक्तन सुखदाई * करत सदा भक्तन मन भाई ॥
प्रेम भक्ति दृढ़ ब्रजकी बाला * भये बश्य तिनके नन्दलाला ॥

जो जो सुख तिनके मन भावें * सो सो ब्रजमें श्याम बनावें ।।
समय समय के सुखद बिहारा * करैं तियनसँग नंदकुमारा ।।
ग्रीषम गत पावसऋतु आई * परम सुहावन जनसुखदाई ।।
श्रीराधामनकी रूचि जानी * तब हिंडोरलीला मन आनी ।।
यमुना पुलिन गये मनभावन * वृंदाबन घन परम सुहावन ।।
सखिनसहितसोहतिसँगप्यारी * कोटिक करत मनोजबिहारी ।।
अति आनंद उमँगि चहुँ ओरा * घुमड़ि रहे पावस घन घोरा ।।
जहाँ तहाँ बक पाँति उड़ाहीं * चपला चमक चपल घनमाहीं ।।
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई * तैंसिय बहत समीर सुहाई ।।
दो०-नाना रँग खग फूल फल, लगे नगन के चारु ।।
गजमुक्तनके झूमका, झालर झबा अपारु ।। १ ।।
सो०-शोभित लता बितान, अति उतंग तरू सुमन युत ।।
रहे पान मिलि पान, बिविध नगन मानहुँ जडे ।। १ ।।
कनक बर्ण मय भूमि सुहाई * छबि हिंडोर नहिं बर्णि सिराई ।।
तापर रसिक छबीले दोऊ * उपमाको त्रिभुवन नहिं कोऊ ।।
नँदनंदन वृषभानु-किशोरी * गौर श्याम सुंदर छबि जोरी ।।
चढ़े उमँग आनँद उर भारी * निरखत छबिनभ सुरनर नारी ।।
मोरमुकुट पीतांबर सोहै * श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहै ।।
प्यारी अंग बैंजनी सारी * शोभित चहुँदिशि चारु किनारी ।।
युगल अंग भूषण छबिछाये * रुचि रुचि सखिनशृँगार बनाये ।।
उर रतनन हार बिराजैं * सुमनहार अतिशय छबि छाजैं ।।
उत कुंडल इत तरवनकीछबि * रह्योलजायनिरखिछबिकोरबि ।।
सखिगणक्षण तृण तोरि निहोरैं * वारत प्राण रीझ रिझवारैं ।।
भरि उछाह ऊँचे स्वर गावैं * पियप्यारीको हर्षि झुलावैं ।।
ताल मृदंग बाँसुरी बीना * बाजत सरस मधुर स्वर लीना ।।
दो०-यह सुख सुनि ब्रज सुंदरी, अपर सकब नवबाल ।।
वृंदाबन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल ।। २ ।।
सो० चलीं सकल अतुराय, नव सत साजि शृँगारतनु ।।

गृह कारज बिसराय, मनमोहन के रस पगों ॥ २ ॥
चुनि करि पहिरि चूनरी सारी * अरुण चुहचहो कोर किनारी॥
यूथ यूथ मिलि हरिपै आवैं * तिन्हैं प्रिया प्रिय निकट बुलावैं॥
आदर बचन सप्रेम सुनावैं * स के मनकी साध पुरावैं ॥
एकन लेत निकट बैठाई * एकै चढ़त पींग पर धाई ॥
एक झुलावति अति सकुचाई * गावति मलार सुहाई ॥
राग रंग सुख बर्णि न जाई * रह्यो छाय सुर बन घन जाई॥
युवति वृन्द चहुँ ओर सुहाई * भूषण भीर बर्णि नहिं जाई ॥
बसन सुगन्ध सने बहु रंगा * भँवर भीर छाँड़त नहिं संगा ॥
हरिमुखशशिलखिसुभग अभंगा* उमँगि मनो छबि सिंधु तरंगा॥
देत चमव भरि जब झकझोरा* होति अधिकछबिबढतहिंडोरा॥
ऊँचो मिला द्रु मनसों जाई * लेत जहांते सुमन कन्हाई ॥
ज्योंज्यों पिंग बढ़ति अतिभारी * त्योंत्यों डरति कुँवरी सुकुमारी॥
दो०-राखि राखि सखियन सहित, सोंह दिवावति जाति ॥
जब नहिं सकत सँभारि तनु, तब पियसों लपटाति ॥ ३ ॥
सो०-हँसैं परस्पर बाल, तब हिंडोर राखत पकरि ॥
करत चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रसभरे ॥ ३ ॥
इक उतरत इक चढ़त हिंडोरे* इक आतुर चढ़िबेको दौरे ॥
एक कहति मोहिं देहु उतारो * एक चढनको बिनवति नारी ॥
सबके मनकी रुचि हरि राखैं* मधुर बचन सबसों हँसि भाखैं॥
कबहुं अकेले झूलत मोहन * गावति युवती सबमिलिगोहन॥
कबहूँ युवतिन देत चढाई * आप झुलावत कुँवर कन्हाई ॥
कबहूं मुरली मन्द बजावैं *कबहुँ संग सबन के गावैं ॥
बिच बिच देत कोकिला टेरैं * रहे सजल घन झुकि अति नेरैं॥
परत फुहार मन्द श्रमहारी *बहतित्रिबिधिअतिसुखदबयारी॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी* राधा नाम रटत बनवारी ॥
ऐसे गोपिन सों मनमोहन * करत केलि कौतूहल गोहन ॥
अति आनन्द सबन उपजावैं* निरखि सुमन सुरगणवरषावैं ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

जय जय जय ध्वनिबोलतबानी * धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी ॥
छन्द-कहत ब्रज धनि अमर अम्बर, सकलमन आनन्द भरे ॥
कहत मन मन इहै चाहत, हम न बिधि ब्रजद्रुम करे ॥
भक्तहित प्रभु अज सनातन, ब्रह्मतनु धरि अबतरे ॥
बर्णि कापै जात सो सुख, करत जो नित ब्रज हरे ॥ १ ॥
दो०-नित लीला आनन्द नित, नित नव मंगल गान ॥
धनि जिनके चित नित रहत, ब्रजवासी प्रभु ध्यान ॥ ४ ॥
सो०-हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत ॥
रहत सदा नन्दलाल, ब्रजबासी तिनके निकट ॥ ४ ॥

* अथ फाल्गुन बर्णन लीला ५९ *

जय जय जय श्रीनित्यबिहारी * नित्यानन्द भक्त हितकारी ॥
ब्रह्मरूप अवतरे मुरारी * नित नव करत बिहारबिहारी ॥
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा * नित्य रूप राधा ब्रजबामा ॥
नित्य रास जल केलि बिहारा * नित्य मान खण्डन व्यवहारा ॥
नित्य कुँज सुख नित्य हिंडोरा * नित्य प्रेम सुख सिंधु हिलोरा ॥
नित्य नवल हित हरिसँग जोरी * नित्य नवल छबि मन्मथचोरी ॥
नित बृन्दावन घन सुखदाई * सदा बसन्त रहत जहँ छाई ॥
सदा सुमन नव पल्लव डारी * सदा त्रिविध मारुत सुखकारी ॥
सदा मधुप मधुमाते डोलैं * कोकिल कीर सदा कल बोलैं ॥
सुनिसुनि नारि हृदय सुखपावैं * मनही मन अभिलाष बढ़ावैं ॥
बार बार कहि पिय सुख पावैं * ऋतु बसंत आई समुझावैं ॥
फागु चरित अति साध हमारे * खेलैं मिलि सब संग तुम्हारे ॥
दो०-ब्रजबनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहु ब्रजराज ॥
देखहु बन शोभा निरषि, अतिहि बिराजत आज ॥ १ ॥
सो०-खेलत हैं दोउ फाग, मानहुँ मदन बसन्त मिलि ॥
लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो ॥ १ ॥
द्रुमन—मध्य टेसू तरु फूले * करत प्रकाश अग्नि सम तूले ॥
मानहुं निज निज मेरु सुहाई * हर्षि सबन होलिका लगाई ॥

कुँज कुँज कोकिल सुखदानी * बोलत विमल मनोहर बानी ॥
निलज भई मनु कुलको नारी * गावति गृह प्रति चढ़ी अटारी ॥
नाना खग केकी शुक सारी * जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहुं परस्पर नर अरु नारी * देत दिवावत हैं सब गारी ॥
प्रफुलित लताविलोकत जितही * अलिमधुमत्त जातचलि तितही ॥
मानहुँ गणिका देखि-सुहाई * मतवारे लपटत हैं धाई ॥
पुष्पराग सु अबीर सुहाए * लिये समीर फिरति है धाए ॥
संयोगिन रस अनरस बिरहिन * करि छाँड़त मन भायो सबहिन ॥
नव पल्लवदल सुमन सुहाये * वर्ण वर्ण विटपिन छबि छाये ॥
जनु रतिराज संग छबि बाढ़े * बहु रँग भरे लसत जनु ठाढ़े ॥
दोहा-भवँर गुँज निर्झर शबद, बजत दुन्दुभी चारु ॥
रची मण्डली मदन जनु, जहँ तहँ बिबिध बिहारु ॥ २ ॥
सो०-वृन्दा बिपिन समाज, कहँ लगि बर्णि बखानिये ॥
कान्हा तुम्हारे राज, क्रीडत सब आनन्द भरे ॥ २ ॥
रचहु फागु सुख अब नन्दलाला * कर जोरे विनवति सब बाला ॥
सुनि गोपिन के बचन कन्हाई * रची फागुलीला सुखदाई ॥
बिहँसि कह्यो श्रीगिरिवरधारी * सजहु समाज जाय तुम प्यारी ॥
हमहूँ सखन संग लै आवैं * फाग रँग ब्रजमाँहि मचावैं ॥
यह सुनि मुदित भई ब्रजबाला * गये सदन को मदनगुपाला ॥
सखा वृन्द सब श्याम बुलाये * सुनत सकल आतुर जुरि आये ॥
हँसि हँसि तिन्हैंश्यामसमुझायो * आयो फागुन मास सुहायो ॥
भैया हो अब खेलें होरी * भरौ अबीर गुलालन झोरी ॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे * होरी साज सजन सब लागे ॥
कंचन कलश अनेक सुहाये * केसर टेसू रंग भराये ॥
अतर अरगजा बिबिधबिधाना * लिय सुगन्धभाजन भरि नाना ॥
पीत अरुण बर बसन बनाये * सूने सुगन्धन अति मनभाये ॥
दो०-अंग अंग भूषण ललित, उर सुमननकी माल ॥
मैन सैन-शोभाहरण, बनी मण्डली ग्वाल ॥ ३ ॥

सो०-पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झंगा ॥
फेंटन भरे गुलाल, पिचकारी कंचन करन ॥ ३ ॥
फेंटा पीत श्याम शिर सोहै * तुर्राको झलकन मन मोहै ॥
तापर मोर चन्द्र छबि न्यारी * कोटि चन्द्र रबिछबिबलिहारी॥
केशर खौरि भाल शुभकारी * बीच तिलकको रेख शृंगारी॥
भौंहैं कुटिल नयन रतनारे * कुण्डल झलक केश घुँघरारे॥
चारु कपोल मनोहर नासा * मन्द हँसन द्युति दशन प्रकाशा॥
अधरे अरुण चिबुक छबिसोवा * कटि अतिललित कबुकलग्रीवा॥
झँगा झीन रँग पीत सुहायो * शोभित तनु छबिसों लपटायो ॥
घेरदार संजाफ जरीकी * झमकि रही छबि उमँगभरीकी॥
तैसिय चरण कमल धर पनहीं * कंचन मणिमय मोहत मनहीं ॥
कर चूड़ामणि जटित अँगूठी * लसत अँगुरियन भाँति अनूठी॥
बाहु बजोटा जटित रतन को * चन्दन चित्रित श्यामल तनको॥
झलकत झीन झँगाके माहीं * सो छबि कहत बनत मुख नाहीं॥
दो०-कटिपर पट पीरो कसे, कनक किनारी चारु ॥
तापर खोंसे मुरलिया, उर मुक्तनको हारु ॥ ४ ॥
सो०-तापर ललिता बिशाल, माल गुलाब प्रसून को ॥
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नन्दलाडिलो ॥ ४ ॥
बन्यो यूथ सब रंग रँगीलो * मधि नायका नन्दनन्द छबीलो॥
खेलत श्याम चले ब्रज होरी * उड़त अबीर गुलाल न झोरी॥
बाजत ताल मृदंग सुहाई * डफ मुरचंग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी कल जोरी * बीच बीच मुरली सुर बोरी ॥
कोउ नाचै कोउ भाव बतावैं * होरी गीत मिले स्वर गावैं ॥
ब्रज बीथिन-बथिन सब डोलैं * होरी होरी मुखते बोलैं ॥
मिलन गलिन में जो नर नारी * बचत नहीं दीन्हे बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डालैं * भरि भरि पिचकारिन रँगमारैं॥
बोलत होरी बचन सुहाई * करि छाँड़त सब मनकी भाई॥
गोरस के रसमाते डोलैं * घरन घरन के फरका खोलैं॥

जो कोउ भाजि रहितघर बैठी * बरि आई आनत तिहिं पैठी ॥
अटन चढ़ी देखैं ब्रजनारी * छज्जनते छूटहि पिचकारी ॥
दो०-गावत होरी गतो सब, देंहिं दिवावहिं गारि ॥
डारत अबिर गुलाल को, झोरी भरि भरि नारि ॥ ५ ॥
सो०-इत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उड़ावहीं ॥
पिचकारिन के जाल, बर्षत भरि केशर ललित ॥ ५ ॥
होत कुलाहल आनन्द भारी * रँगे अबीरन महल अटारी ॥
व्है गई ब्रजकी बीथिन बीचा * अबि--गुलाल--कुँकुमा--कीचा ॥
ऐसे संग लिये सब ग्वाला * करत फाग कौतुक नन्दलाला ॥
भीजि रहे केशर रँग बागे * नखते शिख गुलालते पागे ॥
आनन्द भरे मुदित सब गावत * गुनी जनन के बाल नचावत ॥
बरसाने को चले कन्हाई * यह सुधि कुँवरि राधिका पाई ॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई * सुनत सकल आतुर उठि धाई ॥
नवशत सकल मनोहर साजै * बरन बरन बर बसन बिराजैं ॥
बेंदी भाल बिराजति रोरी * मुख तँबोल तनुकी छबि गोरी ॥
होरी खेल सुनत सब चौंपी * आई प्रिया निकट सब गोपी ॥
हँसिहँसिसबसोंकहतिकिशोरी * चलहु श्याम सँग खेलैं होरी ॥
पकरि आजु मोहनको लीजै * मन भाई तिनसों सब कीजै ॥
दो०-लतिता दिक ब्रजनागरी, मिलि सब सजो समाज ॥
तिनमें श्रीकीरति कुँवरि, सब हिनको सिरताज ॥ ६ ॥
सो०-परम रूप की रास, गुण आगर नव नागरी ॥
राजति भरी हुलास, मन मोहन मन भावनी ॥ ६ ॥
नखशिख-लों सब सुन्दरताई * रही छाय छबि पुंज निकाई ॥
भूषण जाल लाल नग केरे * शोभित अंगन सुभग घनेरे ॥
मुख छबि बर्णि सकै सो को है * जाहि देखि मोहन मन मोहै ॥
लसति नवल तनु सुन्दर सारी * केसरिया कीनी जरतारी ॥
गुलगुच को लहँगा चटकीलो * घेर घनो अति छबिन छबीलो ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजैं * होरी साज सजे सब राजैं ॥

रंग गुलाल संग सब लीनो * सोहन युवति यूथ रँगभीनो ॥
मृगमद केशर मलय मिलाई * मथि मंथि लीने कलश भराई॥
हाथन में लीने नवलासी * चलीं श्याम घनपै चपलासी॥
युवति यूथलै संग किशोरी * गही जाय आगे ब्रज खोरी ॥
उतते आये मदन गुपाला * सोहत संग भीर सब बाला ॥
देखि परस्पर आनन्द बाढ्यो * दुहुंदिशि गोलभयोरुकिठाढ्यो॥
दो०-भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल ॥
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उत बाल ॥ ७ ॥
सो०-भो भट भेरो आनि, परी मारु बिच रंग की ॥
करत न कोऊ कानि, मन भाई मुखते कहत ॥ ७ ॥
भरि भरि मुठी गुलाल चलावै * हो हो होरी बचन सुनावैं ॥
केसर रँग लै लै पिचकारी * तकितकि मारतपियअरुप्यारी॥
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी * भइ गुलाल की घटा अँधेरी॥
आय परत जाके जो पैंड़े * सो केशर के कलश उलेड़ैं ॥
लगि लगि रहे चीर अंगनसों * पहिचाने नहिं परत रंगनसों॥
मुखशोभा कछु कही न जाई * रही गुलालझलक छबि छाई ॥
कवि उपमा कहि कहा बखाने* शशि सरोज दोऊ सकुचाने॥
सकुच रहित गारी सब गावैं * दुहूं दिशि लै लै नाम सुनावैं॥
बाजत बीन रबाब तंबूरा * ताल पखावज ढोलक तूरा ॥
नवलासी चपलासी गोरी * मारत ग्वालिन कहि कहि होरी॥
इक भागे इक ढूँढन लागे * एक अबीर डार मुख भागे ॥
मच्यो खेल रंग रस अति भारी* सखियन बोल कह्यो तब प्यारी॥
दो०-छल बल करि कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय ॥
आँखि आँजि मुख मांडि तब, छांड़ौ हहाकराय ॥ ८ ॥
सो०-है अति लंगर कान्ह, ऐसे ये नहि मनिहैं ॥
बसन चुराये आन, लेंहि दांव सो आपनो ॥ ८ ॥
तबइकतियहलधरबपु काछुयो * चली ओढ़ि नीलाम्बर आछ्यो॥
निकरि यूथते व्है कै न्यारी * निकसी जित ठाढ़े बनवारी॥

हरि जान्यो आये बलदाऊ * चले अकेले लेन अगाऊ ॥
गये निकट ताके हरि जबहीं * धरे धाय औचक तिन तबहीं ॥
आँई धाय और सब नारी * लीने पकरि श्याम अँकवारी॥
हँसिहँसिकहतिसकल ब्रजबाला* ढीठो बहुत दई तुम लाला ॥
सो फल आजु तुम्हैं सब देहैं * दाँव आपनो नीके लेहैं ॥
ठाढे हँसत दूरि सब ग्वाला * कहत गये पकरे नन्दलाला॥
हँसति कुँवरि राधा दूरि ठाढ़ो * पियमुखनिरखिसकुचउरबाढ़ो॥
किनहूं लियो पीत पट छोरी * काजर दियो किनहुं बरजोरी॥
काहू बेनी सीस सँवारी * मुख गुलाल लावति कोउनारी॥
काहू उर अरगजा लगायो * काहू रंग शीश ढरकायो ॥
दो०-गये छुटि मोहन तबै, गोहन चले पराय ॥
आय मिले निज सखन में, रही नारि पछिताय ॥ ८ ॥
सो०-कर मींजति पछितात, कहति परस्पर बाल सब ॥
भली बनीथी घात, दाँव लेन पाई नहीं ॥ ९ ॥
गये आज तुम नन्दके लाला * जैहौ कहाँ कालिह गोपाला ॥
करि राखो जैसी तुम हमसों * सो हम दांव लेहिंगी तुमसों ॥
पीताम्बर अपनो यह लीजै * पठै ग्वाल काहूको दीजै ॥
कै आपही आय लै जाहू * अब हम नहीं पकरिहैं काहू ॥
हँसत सखा सब तारी दैकै * बेनी छोरत हैं कर लैकै ॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई* पीताम्बर लै आवहु जाई ॥
भाजत हार हियेते टूटे * पीताम्बर गहने दै छूटे ॥
तबहिं कह्यो हरि नन्ददुहाई * अबहिं पीतपट लेत मँगाई ॥
सखा एक हरि निकट बुलायो * युवति बेष करि ताहि पठायो॥
गयो सु मिलि युवतिनके माहीं* हँसत जाय ठाढ़ो पटपाहीं ॥
कहत देहु पट धरौं दुराई * अब नहिं पावहिं कुंवर कन्हाई॥
अब यह पट हरिको तब देहैं* दाँव आपनो जब हम लेहैं ॥
दो०-ऐसी कहि पट लै लियो, आयो चमकि गुवाल ॥
फेर्यो करसों श्याम लै, चकित भई सब बाल ॥१०॥

सो०-लखि हरिकी चतुराई, भई थकितब्रजबाल सब ॥
धिरवत कहत सुनाई, भली बनाई आज तुम ॥१०॥
गये आज बचि करि चतुराई * अब बदि हैं जो बचहु कन्हाई ॥
अब तौ लाग लगी है हमसों * जबलगिदाँवलेति नहिंतुमसों ॥
पकरि नचावहिंतुमहिंबिहारी * तब कहिहौ हमको ब्रजनारी ॥
कहत श्याम अब भये सयाने * इन बातन कछु भय नहिं माने ॥
जानि लियो मैं कपट तुम्हारो * अबतुमकहकरिसकति हमारो ॥
अबहों ग्वालन देहुं लगाई * छाँड़ौ अपनो बिनय कराई ॥
नेक कानि मानतहौ तिनकी * सखी कहावतिहौ तुम जिनकी ॥
यह सुनि सब युवती मुसकानी * कहा करतहो श्याम सयानी ॥
तुम्हें नंदकी सौंह कन्हाई * जो नहिं बिनय करावहु आई ॥
सखन सहित तब मोहन करषैं * लैलै पिचकारिन रँग बरषैं ॥
उत सब युवति होंय इकठौरी * लैलै नवलासी सब दौरी ॥
दियो सबनको मारि हटाई * भाजि चले तबकुँवर कन्हाई ॥
दो०-भाजे भाजे कहति सब, तारी दै ब्रजबाल ॥
जो तुम जाये नंदके, ठाढ़े रहौ गुपाल ॥११॥
सो०-फिरे बहुरि घनश्याम, सखा वृंद सब फेरिकै ॥
शिथिल करी ब्रजबाम, झोरिन मारि अबीरको ॥११॥
ऐसे खेलत मिलि रस झोरी * इत मोहन उत कुँवरि किशोरी ॥
गोपी ग्वाल संग सब लोने * मोहन सकल रंग रस भोने ॥
कबहुँ परस्पर गावत गारी * कबहुँ करत रसबाद बिहारी ॥
कबहुँ अबीर गुलाल उड़ावैं * कबहूँ रंग सलिल बरषावैं ॥
अरस परसछबिनिरखत दोऊ * परमानंद-मगन सबकोऊ ॥
चढ़े बिमानन नभ सुर देखैं * जन्म सुफल ब्रजको करिलेखैं ॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन बर्षावैं * जय जय करि प्रभुको यश गावैं ॥
ऐसे श्याम रंग रस राख्यो * ललिता आय बीच तब भाख्यो ॥
आजु श्याम तुम औचक आये * हम काहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई * भई साँझ अब कुँवर-कन्हाई ॥

काल्हि प्रात है बारि हमारी * देखेंगो मनसाय तुम्हारी ॥
ऐहैं नन्द गाँवलौं प्यारी * रहियो सजग लाल गिरिधारी॥
दो०-प्यारी कर ते पान लै, दीन्हे सखी सुजान ॥
प्रात अवधि बदि खेलकी राख्यो दुहुँ दिशि मान ॥१२॥
सो०-घर आये घनश्याम, सखन संग गावत हँसत ॥
गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनन्द भरि ॥१२॥
परमानन्द सकल ब्रजनारी * कृष्ण केलि सुखकी अधिकारी॥
लोकलाज को भय नहिं मानै * कृष्ण बिलास सदा उर आनै॥
श्रीराधिका कुंवरि सुखदाई * प्रात सखी सब बोलि पठाई॥
कियो बिचारसबनिमिलिगोरी* नन्द गाँव खेलैं चलि होरी॥
मिलि मोहनसों यह सुख कीजै* फगुआ नन्द महरसों लीजै॥
सामा सकल खेलकी लीनी * रंग गुलालनसों बहुकीनी॥
मथिमथि बिबिधसुगन्धन लीने* भाँति अनेक अरगजा कीने॥
भरि भरि भाजन कनक सुहाये* अमित सुगन्ध न जाहिं गनाये॥
लै काँवरन अनेक अपारा * चले सँग सजि सुभग शृंगारा॥
ग्वालिन यौवन गर्व गहेली * श्रीराधा सँग चलीं सहेली॥
कुंकुम उबटि कनकतन गोरी* रूपराशि सब नवल किशोरी॥
एक बैस सुन्दर सब राजैं * निरखत कोटि मदन तिय लाजैं॥
दो०-नवसत साज सिंगार तनु, अंग अंग सब ग्वारि॥
चन्द्रावलि ललितादि सब, अमित गोप सुकुमारि॥१
सो०-को कबि बरणै पार, प्यारी सब नन्दलाल की ॥
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवन नहीं ॥१३॥
सुमन सुगन्धन गूँथी बेणी * लटकत कनकछबी छबि श्रेणी॥
मोतिन माँग बनी नति नीकी * केशर आड़ जड़ाऊ टीको॥
कुटिल भौंह अलकैं घुँघरारी * मनसोहन मनमोहन हारी॥
खंजन नयन मधुप मृग हारे * अंजन रेख सुभग अनियारे॥
श्रवणन तरवन रबिसम जोती* नकबेसर लटकैं गजमोती॥
दशन कुन्द बिंबाधिर सोहैं * चिबुक नीलकण छबि मन मोहैं॥

कण्ठ कपोत मोतिउर हारा * जनुयुगगिरिबिचसुरसरिधारा।।
कुँच चकवा मुख शशि भ्रमभूले * बैठे बिछुरि मनहुँ दुहुँ कूले ।।
कर कंकण चूरो गजदन्ती * नख मणि माणिक मेटत कन्ती।।
नाभी हृदय कहा कवि वर्णै * कटि मृगराज लेत जनु निर्णै ।।
चरणन नूपुर बिछिया बाजैं * चाल मराल चलत कल राजैं ।।
लहँगा कसब पीत रंग सारी * चमकतचहुँदिशिलालकिनारी ।।

दो०-नखशिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम ।।
तिनमें श्रीराधा कुँवरि, राजति अति अभिराम ।।१४।।

सो०-लई सबन गहि हाथ, पीरे सुमननको छरी ।।
होरी हरिके साथ, नन्द गाँव खेलन चलीं ।।१४।।

प्रेम प्रीति के रसबश पागीं * नन्दनन्दन पियकी अनुरागीं ।।
बाजे सुघर बजावैं गोरी * गावहिं कोकिल कण्ठन होरी ।।
करत केलि कौतुक मनमाहीं * अबिर गुलाल उड़ावत जाहीं।।
लीने घेरि नन्द गृह जाई * बसत तहाँ मनहरण कन्हाई ।।
शोभित रूपलतासी गोरी * गावति फागुन नन्दकि पोरी ।।
सुनि सुन्दर रव बाहिर आये * हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये ।।
एकन एक भई सब न्यारी * होरी खेल मच्यो अति भारी ।।
मृगमद कुंकुम चन्दन घोरैं * लै लै पिचकारी कर दौरैं ।।
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी * अबिर गुलालन मारहिं गोरी।।
उड़त गुलाल घटाघन छाई * महिं केशरको कीच सुहाई ।।
बाजे सरस मधुर सुर बाजैं * गान सुनत गणगंधर्व लाजैं ।।
पकरत एक एक छुटि भाजैं * गारी पढ़त एक तजि लाजैं ।।

दो०-हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनन्द ।।
सखिन संग उत लाडिली, इते सखा नन्दनन्द ।।१५।।

दो०-औचक धाँई बाम, गहन हेत नँदनन्द तब ।।
गहि पाये बलराम, निकसि गये हरि भाजिकै ।।१५।।

अति निशंक सब ब्रजरी गोरी * तामें अबसर पायो होरी ।।
भरि भरि केशर रंग कमोरी * लै लै हलधर के शिर ढोरी ।।

अबिर उड़ाय अँधेरो कीनो * ललिता गहि दृग काजर दीनो ॥
व्यंग्य बचन सब कहति सुनाई * लेहु रोहिणी मातु बुलाई ॥
हास बिलासबिबिध कहि गावैं * इत उत बल कहुँ जान न पावैं ॥
फगुआ मन भावतो मँगाई * हलधर छाँड़े बिनय कराई ॥
हँसत सखन मिलिकुंवरकन्हाई * आये दोऊ आँखि अँजाई ॥
तब हलधर दुचिते हरि कीने * युवतिन धाय श्याम गहि लीने ॥
सिमिटे सखा छुड़ावन धाये * युवतिनते हरि छुटन न पाये ॥
लै लै नवलासी नव बाला * दिये हटाय मारि सब ग्वाला ॥
श्यामहिं जीति यूथमें लाई * भई सबन के मनको भाई ॥
रसलपट नन्दनंद कन्हाई * दीनो आपुन आनि गहाई ॥
दो०-ले आई प्यारी निकट, हँसित कहति ब्रजबाल ॥
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हौ गाल ॥१६॥
सो०-एक कहति मुसकाय, बसन हरेते आपुही ॥
हमहूं बसन छुड़ाय, लेहिं दाँव अब आपनो ॥१६॥
कान्ह कह्यो करिहौ कह मेरो * सोई पाय भयो अब नेरो ॥
ऐसे कहति रूप अनुरागीं * मुरली छोरि बजावन लागीं ॥
एकन लियो पीत पट छोरी * एक रंग गागरि लै दौरी ॥
हरिके हाथ गहे चंद्रावलि * कज्जल लै आई संजावलि ॥
ललिता लोचन आँजन लागी * एक श्रवण लगि कछुकहिभागी ॥
एके चिम्बुक गहि बदन उठावै * एक गुलाल कपोलन लावै ॥
घेरि रहों परिखाकी नाई * करति सबै निज निज मन भाई ॥
काहू वेणी गूँथि सँवारी * काहू मोतिन माँग सुधारी ॥
पहिरावति लहँगा कोउ सारी * काहू लै अँगिया उर धारी ॥
निरखि निरखि प्यारीमुसकाई * राखत आपन कृष्ण बड़ाई ॥
काहू बदन अभूषण कीन्हें * नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हें ॥
बधू बधू कहि सबहिन गायो * प्यारी निकट आन बैठायो ॥
दो०-निरखि बदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ॥
गहि प्यारी निजपाणि तब, दीनों पान खवाय ॥१७॥

सो०-सखियाँ करति कलोल, गाँठि जोरि आँचर दई ॥
ब्रजमें रहौ अडोल, यह जोरी युग युग सदा ॥१७॥
लीने मध्य श्याम सब ग्वारैं * मग्न भई अब वपु न सँभारैं॥
पिय प्यारी मुखकी छबि जोहैं * अरस परस दोऊ मन मोहैं॥
रंगन भरे रंगीले दोऊ * त्रिभुवन छबि पटतरघट सोऊ॥
एक नैनको नैन मिलावैं * एक युगलछबि लखि सुख पावैं॥
गावति एक महरि कों गारी * बजत मँजीरा डफ करतारी॥
भरि भरि मुठी गुलाल उड़ावैं * ग्वालनिकट कहुँ लगन न पावैं॥
रही गुलाल घटा छबि छाई * फूली मानहुं साँझ सुहाई ॥
तब ललिताको यशुमति माई * घर भीतरते बोलि पठाई ॥
हँसिकै महरि बहुत सन्मानी * बिनती करी बहुरि मृदुबानी॥
आजु भई भोजनकी बिरियाँ * देखहु अब राधाकी उरियाँ ॥
खान पान करि श्रमहिं निबारो * बहुरि खेलियो निकट सबारो॥
ल्यावहु अब लाड़िलिहि लिबाई* कीरति जूको सौंह दिवाई ॥
दो०-तब यशुमति पहँ राधिकहिं, ललिताचली लिवाय ॥
सकुच मानि मन श्याम अति, छूटे हाहा खाय ॥१८॥
सो०-हँसे ग्वाल मुख हेरि, तन शोभा देखत खड़े ॥
बलको लीनो टेरि, बन्यो आजु अति सांवरो ॥१८॥
कहत सखा सब दै दै सोहन * ऐसेहि चलौ नंदपै मोहन ॥
चले भुजा गहि तहाँ लिवाई * छबि अनूपवहवर्णि न जाई ॥
उत सब युवतिनके चित चोरे * चले लाल इत व्है अति भोरे ॥
अति छबि देखि हँसे नंदराई * जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरखि लीने उर लाई * अति आनंद हृदय न समाई ॥
बार बार कर लेत बलैया * किन यह कीनो हाल कन्हैया॥
ये ऐसी सब ब्रजकी बाला * सकुचत हँसत मनहिं नँदलाला॥
तुरत श्याम सोइ बेष उतारयो*कटि पट पीत मुकुट शिरधारयो॥
युबतिनसहित कुंवरिश्रीराधा * आईं नंद—महर के धामा ॥
भूषण बषन नवीन बनाये * यशुमति लै सबको पहिराये ॥

अति सनेह वृषभानु-दुलारी * अपने हाथ शृंगार सँवारी ॥
निरखि रूप प्रमुदित नन्दरानी * वारति राई लोन सिहानी ॥
सो०-बिबिध भाँति मेवा मधुर, और मिठाई पानि ॥
सादर सबकी गोदमें, भरे हर्षि नन्दरानि ॥१८॥
सो०-रह्यो नन्द गृह छाय, होरी को आनन्द अति ॥
कहति यशोमति माय, फगुआ कहौ सु दीजिये ॥१९॥
ललित कह्यो और कछु नाहीं * लेहैं कान्हर फगुआ माहीं ॥
देखेबिन रहि सकहिं जो उनको * तो माँगे देहैं हम तुमको ॥
बाढ़ै बंश महर नन्दराई * चिरजीवहु बलराम कन्हाई ॥
जिनते यह सुख ब्रजमें लीजति * यहआशीशसबहिंमिलिदीजति ॥
अति आनन्द-मग्न ब्रजबासी * अष्ट सिद्धि नवनिधि सब दासी ॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला * न्हान चले यमुना के कूला ॥
जहँ वर विटप विविधरँग फूले * गुंजत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
शीतल सुखद छांह छबि छाई * फूल डोल तहँ रच्यो कन्हाई ॥
झूलत रंग भरे पिय प्यारी * गावत मिले गोप अरु नारी ॥
ऐसे दूरि खेल श्रम कीनो * अति आनन्द सबनको दीनो ॥
तब यमुना जल श्याम नहाये * महि देवन शिर तिलक बनाये ॥
दियो दान तिनको नन्दलाला * वर्षत सुर सुमननकी माला ॥
छन्द-बर्षत माल प्रसून सुरगण, निरखि छबि आनन्द भरे ॥
श्रीनंद सुत सुखधाम पूरण, काम सब ब्रजजन करे ॥
लुटि सुखकरफागुको सब, मुदित निजनिज गृह गये ॥
गोप बाल गुपाल बल निज, धाम आये छबि छये ॥२०॥
दो०-कियोजु फागु बिहार हरि, शारद लहै न पार ॥
ब्रजबासी सो किमि कहै, लीला सिंधु अपार ॥२०॥
सो०-जनमन के सुखदान, चरित ललित गोपाल के ॥
गावत सुनत सुजान, ब्रजबासी प्रभु रति लहत ॥२०॥

* सुदर्शन शाप मोचन लीला ६० *

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना * ब्रजबिलास कीनो जो नाना ॥

शिव बिधि शारद नारद शेषा * कहिनहिं सकहिं गणेश अशेषा ।।
कीने चरित रहस्य अपारा * ब्रजयुवतिन मिलिरस शृंगारा ।।
साध नहीं काहू मन राखो * करी सकल जो जाने भाखो ।।
ब्रजबिलास रसकेलि बड़ाई * भाँति अनेक मुनीजन गाई ।।
ब्रजवासी प्रभु सब गुणनायक * जोकछुकरहिं सोसबहीलायक ।।
सखासंग सबको सुख दीनो * मनभायो गोपिनको कीनो ।।
महरि नंद पितु मात कहाये * तिनके हेत देह धरि आये ।।
बालकेलि रस सुखकरि भारी * दियो परम आनंद मुरारी ।।
गिरिकरधरिब्रजजन सबराखे * इंद्रादिक सुर जय जय भाखे ।।
गाय बत्स बनमाहिं चराये * कालियनाग नाथि लै आये ।।
करे चरित्र अनेक कृपाला * भक्तन हित प्रभु दीनदयाला ।।
दो०-भक्तनके हित लेत हैं, प्रभु युग युग अवतार ।।
असुर मारि थापत सुरन, हरण भूमि भवभार ।। १ ।।
सो०-गावत संत अपार, यश पुनीत पावन करन ।।
पूरि रह्यो संसार, करता कहता आप हरि ।। १ ।।
इकदिन प्रभु भक्तनसुखदाई * नंदहृदय यह मति उपजाई ।।
चलिये आज सरस्वति–तीरा * पूजन शंकर सकल अहीरा ।।
लिये संग बल मोहन दोऊ * गोपी ग्वाल चले सबकोऊ ।।
करत कुलाहल आनंद भारी * पहुंचे तहाँ सकल नर नारी ।।
सरित पुनीत कियो अस्नाना * महिदेवन दीनो बहुदाना ।।
देखि देवस्थल अतिसुख मानी * सादर पूजे शंभु भवानी ।।
पूजा करत साँज ह्वै आई * श्रमित भये सब लोग लुगाई ।।
खानपान करिसहित–हुलासा * कियो रैनि तहँ बनमें वासा ।।
सोये हरि हलधर सुखराशी * तब सोये सब ब्रजके बासी ।।
आधी निशि अजगरइकआयो * नंदमहरके पग लपटायो ।।
उठे पुकारि चौंकि नँदराई * आये ब्रजबासी सब धाई ।।
अजगर देखि डरे सब कोई * लागे छुड़ावन छुटत न सोई ।।
दो०-हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छाँडे पाँय ।।

कृष्ण कृष्ण करि नंद तब, गुहरायो अकुलाय ॥ २ ॥
सो०-अति व्याकुल गये ग्वाल, तबहीं श्याम जगायकैं ॥
कह्यो महा इक व्याल लपटानो पग नंदके ॥ २ ॥
सुनत उठे आतुर गोपाला * निकट जाय देख्यो सोइ व्याला ॥
परस्यो ताहि कमलपदपावन * पाप–शाप–संताप–नशावन ॥
छुवत चरण तिनलई जमुहाई * धरयो दिव्यतनु बर्णि न जाई ॥
लाग्यो हाथ जोरि गुणगावन * जय जय जगतईश जगपावन ॥
सब देवनके देव मुरारी * जय जय जय ब्रजगोपबिहारी ॥
ऋषि अंगिराशापमोंहि दीन्हो * सो वह बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥
जाते प्रभुको दर्शन पायो * जन्म–जन्मको पाप नशायो ॥
ऐसी बिनती प्रभुहि सुनाई * आयसु पाय चल्यो शिर नाई ॥
बहुरि नंदको शीश नवायो * देखि महर अतिअचरज पायो ॥
पूँछा ताहि नंद तब भेवा * तुम तौ दिव्यरूप कोउ देवा ॥
सर्पशरीर धरयो क्यों आई * सो सब हमसों कहौ बुझाई ॥
नंदबचन सुनि मन सुख पाई * तब उन अपनी कथा सुनाई ॥
दो०-हौं यश गायक श्याम को, नाम सुदर्शन होय ॥
सुदर बिद्याधरनमें, मोते और न कोय ॥ ३ ॥
सो०-इकदिन ऋषिके धाम, गयों धरे अभिमान मन ॥
कियो न तिन्हैं प्रणाम, रूपद्रव्यके गर्वते ॥ ३ ॥
ऋषि अंगिरा बड़े बिज्ञानी * जानिमोंहिजडअति अभिमानी ॥
दीन्हो शाप कोप करि एहा * जाय होहु शठ अजगरदेहा ॥
ऐसे कह्यो मोंहि ऋषिजबहीं * अजगर भयों तुरत मैं तबहीं ॥
देखिदुखितमोंहिपरमकृपाला * भये बहुरि मुनिराय दयाला ॥
तब करिकृपाकह्योयह मोहीं * कृष्ण–दरश ह्वैहै जब तोहीं ॥
परसि चरणरज पाप नशैहै * बहुरि आपनो तन तब पैहै ॥
ते पद आजु परसि सुखहाई * भयो पुनीत रूप निज पाई ॥
जो पदरज ब्रह्मा नहिं पावैं * शिव–सनकादिसदाचित लावैं ॥
मुनि–प्रसादसों रज मैं पाई * कहँलगि मुनिकी करौं बडाई ॥

दीन दयालु जगत–हितकारी * संत समान न कोउ उपकारी ॥
ऐसे बिद्याधर सुख मानो * नंदहिं अपनो कथा बखानो ॥
बहुरि कृष्णचरणन शिर नाई * गयो लोक निज उर हर्षाई ॥
दो०-नंदादिक आनंद सब, महिमा देखि पुनीत ॥
कहत परस्पर कृष्णगुण, गई तहाँ निशि बीत ॥ ४ ॥
सो०-आये सब ब्रज धाम, प्रात होत आनंदसों ॥
संग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजबासो दासके ॥ ४ ॥

॥ अथ शंखचूड बधलीला ६१ ॥

इकदिन सुंदर मदन गुपाला * श्रीबलदेव और सँग ग्वाला ॥
दिवसअंत निशिसमय सुहाई * उदित उडुप उडुगणछबि छाई ॥
प्रफुलित चारु मालतीसोहैं * कुमुद सुगंध पवन मन मोहै ॥
गुंजत भ्रमर मत्त रसलोभा * चले तहाँ देखत बनशोभा ॥
ग्वालनमिलिगावत दोउभाई * कबहुं बजावत वेणु कन्हाई ॥
ब्रज–बनितागणचहुंदिशिघेरैं * चलीं सुनत बंसीकी टेरैं ॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई * मग्नभई छबि लखि अधिकाई ॥
पहुंची श्रीवृंदाबन जाई * गोपी ग्वाल संग समुदाई ॥
बिहरत बनबिहार दोउभाई * गोपी ग्वाल साथ सुखदाई ॥
मंद मंद गति इत उत डोलैं * मृदु मुसकाय लेत मन मोलैं ॥
रूपराशिछबिनिधिदोउबीरा * बैठे जाय यमुनके तीरा ॥
पाछे सखावृंद सब सोहैं * सन्मुख गोपीजन मन मोहैं ॥
दो०-करत गान मिलि मुदित सब, भरे प्रेम रस माहिं ॥
भये मग्न उन्मत्त जिमि, रही देह सुधि नाहिं ॥ १ ॥
सो०-बाजत ताल मृदंग, बीन चंग मुरली मधुर ॥
छाय रह्यो रस रंग, उठति तरंगैं तानकी ॥ १ ॥
प्रेममग्न सब गोपकुमारी * हरिछबिनिरखतसुरतबिसारी ॥
शिथिलबसनकच शीस सुहाये * बिह्वल तनमन श्याम चुराये ॥
को हम कहाँ नहीं कछु जानें * नयन श्यामके रूप लुभानें ॥
रही श्रवण मुरलीध्वनि छाई * गृह बनकीकछुसुधिनहिं राई ॥
चन्द्रबदन चपलासी गोरी * हरिमुख नाद सुनत भइँ भोरी ॥

तहाँ यक्ष औचक इक आयो * शंखचूड़ नामी तिहिं गायो ॥
सो वह धनद-अनुग अभिमानी * प्रभु प्रभाव नहिं जान अज्ञानी ॥
देखत ही बलराम कन्हाई * सब गोपिन लीनो अगुवाई ॥
घेर लेत जिमि गाय अहीरा * उत्तर दिशि लै चल्यो अधीरा ॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं * भयो चेत कछु तब मनमाहीं ॥
कहाँ जाति हम काके साथा * भंई बिकल इमि परम अनाथा ॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं * महादुखित अतिभयसों पागीं ॥

दो०-सुनत श्रवण आरत बचन, उठि आतुर दोउ भाय ॥
अति समीप गोपीन के, तुरतहिं पहुंचे जाय ॥ २ ॥

सो०-मैं आयो हौं धाय, मति डरपो तिनसों कह्यो ॥
अबहीं लेत छुडाय, तुम्हैं मारि या दुष्टको ॥ २ ॥

शंखचूड फिरिकै तब देख्यो * काल मृत्यु सम दुहुंवन पेख्यो ॥
भयो त्रसित तब मूढ अभागो * युवतिन छाँड़ि जीव लैभागो ॥
गोपिन पास राखि बलभाई * ता पाछे पुनि चले कन्हाई ॥
अतिही निकट धायकै लीनो * मुक्का एक तासु शिर दीनो ॥
भयो प्राणबिन अधम अन्याई * प्रभु प्रताप उत्तम गति पाई ॥
हती एक मणि ताके सीशा * सो लै आये हरि जगदीशा ॥
दीनी सो बलको नन्दलाला * प्रमुदित भंई देखि ब्रजबाला ॥
गोपीग्वाल सहित दोउ भाई * बहुरि कियो सुख वनमें आई ॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो * परमानन्द सबन उपजायो ॥
करत बिबिधबिधिहासबिलासा * गृह आये पुनि सहित हुलासा ॥
नवल किशोर सुन्दर सुखदाई * ब्रजजीवन बलराम कन्हाई ॥
ग्वाल बाल गायन के साथा * क्रीड़ा करत ललित ब्रजनाथा ॥

दो०-देखि देखि हरिके चरित, परम बिचित्र उदारि ॥
निशिदिन सबप्रमुदित रहत, ब्रजबासी नर नारि ॥ ३ ॥

सो०-हरण सकल भव भीर, दुष्ट दलन जन हित करन ॥
नन्द नन्दन बलबीर, व्रजबासी प्रभु सांवरो ॥ ३ ॥

नँद—नंदन संतन-हितकारी * कमल नयन प्रभु कुंजबिहारी ॥
मुरली मुकुट धरे ब्रज राजैं * कोटि काम निरखत छबिलाजैं ॥

* अथ बृषभासुर बध लीला ६२ *

नित नव सुख ब्रजमें उपजावैं * सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं ॥
सुनि सुनि अगम कृष्णगुण गाहा * कंस असुर उर दारुण दाहा ॥
जो जिहिं भाव ताहि हरि तैसे * हितको हित जैसे को तैसे ॥
हित अनहित यह प्रभु की लीला * सदा श्याम सुन्दर सुखशीला ॥
रीझ खीझ हरिको जो ध्यावै * परमानन्द अभय पद पावै ॥
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं * नंद नंदन पल बिसरत नाहीं ॥
शत्रुभाव शोचत दिन राती * नंदसुवन मारौं किहिं भाँती ॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी * एक दिवस नृप लियो हँकारी ॥
तासों कहि सब मर्म बुझायो * बल सराहि ब्रज ताहि पठायो ॥
नदनन्दन मारन के काजा * चल्यो असुर करि गर्व समाजा ॥
दो०-नृप को सीस नवाय कै, कह्यो अरिष्ट सुनाय ॥
कितिक काज महाराज यह, मैं करि आवत जाय ॥
सो०-तुम असुरन के राज, इतने को शोचत कहा ॥
पलमें मारौं आज, बालक नंद अहीर के ॥ १ ॥
वृषभरूप सोइ असुर बनाई * आयो तुरत ब्रजहि समुहाई ॥
गिरिसमान तनुअति बिकराला * महा कठिन दोउ भृंगबिशाला ॥
पूँछ उठाय डकारत आवै * खोद खुरनसों छार उड़ावै ॥
दृग आरक्त फेन मुख डारै * कबहुँ भृंगसों भूमि बिदारै ॥
कबहूं तरुन उखारत जाई * इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहुं दिशि धावै * जहाँ तहाँ गायन बिड़रावै ॥
बार बार गरजत अतिभारी * सुनत डरे सब ब्रज नर नारी ॥
बिड़री गाय गोप सब भागे * कृष्ण कृष्ण हरि टेरन लागे ॥
काल स्वरूप वृषभ इक आयो * सबन कृष्णसों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिचान्यो * बृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो मोहन सबपाहीं * मति डरपौ चिंता कछु नाहीं ॥
चले असुर सन्मुख मनमोहन * गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥
दो०-आगे व्है हरि हाँकदै, तासों कह्यो सुनाय ॥
रे शठ कह तनु तरु धसत, फिरत बिडारत गाय ॥ २ ॥

सो०-मो सन्मुख इत आय, तो तनु उपजो कंडु जो ॥
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नंदको सौंह करि ॥ २ ॥
बृशभासुर सुनि हरिकी बानी * मनमें गर्व कियो यह जानो ॥
याही बालक के बध काजा * आदर दै पठयो मोहिं राजा ॥
भले शकुन मैं ब्रजमें आयो * जो याको तुरतहि लखि पायो ॥
अबहीं याहि पलकमें मारौं * नृपति काज करि जाय जुहारौं ॥
ऐसे अपने जिय अनुमानो * चल्यो श्यामसन्मुखअभिमानी ॥
टूटि परयो परि ऊपर आई * लिये शृंग गहि कुंवर कन्हाई ॥
यह आवत हरिकी दिशि धाई * हरि पाछे लैजात हटाई ॥
पाछे पेलि श्याम तिंहि दीनो * बहुरो वृषभासुर बल कीनो ॥
आवत जात असुर जब हायो * ग्रीव मोडितबधरणिपछारयो ॥
परयो असुर परबत आकारा * मुखते चलो रुधिर की धारा ॥
असुर मारि उत्तम गति दीनो * जय जयध्वनि देवन नभ कीनो ॥
भये सुखी सब सुरत सदाई * बर्षि सुमन अस्तुति मुख गाई ॥
दो०-चकित भये लखि परसपर, कहत सकल ब्रजग्वाल ॥
हम जान्यो कोउ बृषभ है, यह तौ असुर कराल ॥
सो०-दुष्ट दलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब ॥
भक्तन के रछपाल, ब्रजबासी नंद लाडिले ॥ ३ ॥
जब अरिष्ट मारयो गिरिधारी * भयो कंस सुनि बहुत दुखारी ॥
आये ऋषि नारद तिंहि काला * कह्यो कंससों सुनु भूपाला ॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे * ते नहिं होहिं नंदके बारे ॥
मैं जान्यो निश्चय यह भेऊ * हैं बसुदेव—पुत्र वे दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई * सो वह हुती यशोमति-जाई ॥
भयो कछू यह छल सुन राजा * को जाने करता के काजा ॥
पहिलो पुत्र भयो हो जबहीं * ही कहुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनो सो बहुतै तुम कीनो * सो क्योमिटै जुबिधिलिखिदीनो ॥
करहु यत्न तुम अबहुँ सबारे * यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे ॥
उठ्यो कंस सुनि मुनिकी बानी * भयो शोचवश मूढ़ अज्ञानी ॥
प्रथम देवकी अरु बसुदेऊ * छोंडे हुते बंदिते दोऊ ॥

बहुत बुरो मान्यो तिनपाहीं * राखे बहुरि बंदिके माहीं ॥
दोहा-कैसे मारौं कह करौं, निशिदिन यहै बिचार ॥
शालि रहे नृप कंस उर, हलधर नद कुमार ॥ ४ ॥
सो०-अब धौं पठऊँ काहि, मन ही मन शोचत खरे ॥
काहु न मारयो ताहि, असुर गये ते सब मरे ॥ ४ ॥

॥ अथ केशी बध लीला ६३ ॥

असुरनमाहिं बड़ो बलधारी * केशी असुर बीरअति भारी ॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो * अतिआदरकरिढिग बैठायो ॥
कहत कंस केशी सुन मोसों * जोकी बात कहत मैं तोसों ॥
मो-समान राजा कोउ नाहीं * मेरी आन सकल जगमाहीं ॥
ये सेवक मेरे नहिं ऐसे * जैसे मैं चाहत हौं तैसे ॥
जासो कहौं बात मैं जोई * करि आवै कारज बहु सोई ॥
ताते मोहिं यही पछितायो * तब केशी कहिबचन सुनायो ॥
ऐसो कहा कठिन प्रभुकाजा * जाको तुम शोचतहौ राजा ॥
तुम ही सब असुरनके नायक * और कौन दूजो तुमलायक ॥
जाहि क्रोधकरि चितवौ जबहीं * ताको नाश होय नृप तबहीं ॥
आयसु कहा मोहिं किन दीजै * सो कारज अबहीं हम कीजै ॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो * केशीको बहुभाँति बखान्यो ॥
दो०-असुरबंश सबही हते, काहि कहौं ब्रज जान ॥
नंद-महरके छोहरा, करि आवै बिन प्रान ॥ १ ॥
सो०-कियो न तिन कछु काज, आगे जे पठये असुर ॥
यह सुनिके अतिलाज, मारे सब नँदबालकन ॥ १ ॥
ताते कछु व्हैहै मैं जानत * बड़ो बीर तोको मैं मानत ॥
ताकारण ब्रज तोहिं पठाऊँ * बहुत और कहिकहासिखाऊँ ॥
जिहितिहि बिधिछलबलकरिकोऊ * मारि आव नँदबालक दोऊ ॥
कै लै आव बाँधि दोउ भैया * कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया ॥
यह सुनि गर्ब असुर भट कीनो * चल्योब्रजहिंनृपआयसु दीनो ॥
मनहिं कहत देखौं धौं ताही * कंस नृपति डरपतहैं जाही ॥
अश्वरूप व्है ब्रजमें आयो * अतिबलगरजहिंचहुँदिशिधायो ॥

बेगवन्त अति बपुष बिशाला * झारत ग्रीव पूँछ बिकराला ॥
बारहिबारहिसो ध्वनि करहो* ब्रजके लोगन मारत फिरहो ॥
जिततित भाजिचले नर नारी* भये बिकल सब अति भयभारी॥
कह्यो जाय आतुर हरिपाहीं* अश्व एक आयो ब्रजमाहीं ॥
अति बिकराल न जात बतायो* कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो ॥
दो०-ब्रज आयो केशी असुर, जानि लियो नन्दलाल ॥
सन्मुख ताके हर्ष कै, चले कंस के काल ॥ २ ॥
सो०-शीस मुकुट वनमाल, कटि कसि बाँध्यो पीत पट ॥
उर भुज नयन बिशाल, असुर विदारण सुर सुखद ॥ २ ॥
जब केशी देखे हरि आवत * भयो क्रोध करि सन्मुख धावत॥
अतिबल दोऊ चरण उठाये * प्रभुके उरकै चपल चलाये ॥
देखत डरे सकल ब्रजवासी * गहे बीचहो हरि अबिनासी ॥
छूटत असुर बहुत बल कीनो * ठेलि श्याम पाछे तब दीनो॥
गिरयो धरणिपर मूर्छित भारी* उठो क्रोध करि बहुरि सँभारी॥
दाँव घात करिकै बहु धावै * पुनि पुनि चरण चपेट चलावै ॥
अतिहि बेग हरि जात बचाई* करत युद्ध कौतुक सुखदाई ॥
देखत सुर मुनि चढ़े अकाशा * कछू हर्ष मन कछु इक त्रासा॥
तकत गोप गोपी भय बाढ़े * चकित चित्र लिखेसे ठाढ़े ॥
बदन पसारि असुर तब धायो * चाहत हरिको मुखमें नायो ॥
तबहिं श्याम यह बुद्धि उपाई* दियो हाथ ताके मुख नाई ॥
दाँतन दाबि सक्यो सो नाहीं * वज्र समान भयो मुख माहीं ॥
दो०-एक हाथ मुख नायकै, तुरत केश गहि धाय ॥
बली सुबन नन्दराय को, पटक्यो असुर फिराय ॥ ३ ॥
सो०-शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको ॥
नन्द महर के तात, जान्यो केशी को हत्यो ॥ ३ ॥
देखत सुरगण भये सुखारी * वर्षे सुमन सुमंगल कारी ॥
गावत जययश प्रभुहिं सुनाई * असुर निकन्दन जन सुखदाई ॥
प्रफुलित भये सकल ब्रजवासी* बढ़्यो हर्ष उर मिटी उदासी॥
धाय धाय हरिको सब भेंटे * धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटे ॥

बड़ो दुष्ट मोहन तुम मार्यो * ब्रजवासिनको प्राण उबार्यो ॥
कान्हहि सदा सहाय हमारो * धन्य धन्य मोहन गिरिधारो ॥
लिये लाय उर यशुमति मैया * पुनि पुनि मुखकी लेति बलैया ॥
नन्द देखि आनन्द अति कीनो * बहुत दान विप्रन को दीनो ॥
हरिको लै पुनि पुनि उर लावत * मुख चुंबतलखिछबिसुखपावत ॥
केशी मारि श्याम गृह आये * भये सकल आनन्द बधाये ॥
घर घर सब ब्रजलोग लुगाई * नन्दनन्दन को करत बड़ाई ॥
ब्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक * संतन सुखदअसुरकुलचातक ॥
दो०-धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तन के हित आय ॥
सुखसागर शोभा अवधि, बलनिधि त्रिभुवनराय ॥ ४ ॥
सो०-बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवौ जोरी युगल ॥
देत अशीस मनाय, ब्रजवासी प्रभु को सबै ॥ ४ ॥

* अथ व्योमासुर वध लीला ६४ *

दूजे दिन सुन्दर ब्रजनाथा * गये बनहि गायन के साथा ॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये * शोभित संग सुमन मनभाये ॥
गईं गाय बनमें अगुवाई * जहँ तहँ चरत लगी सुख पाई ॥
ग्वालन सङ्ग श्याम अनुरागे * चोर मिहिचनी खेलन लागे ॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं * दौरत दुरत फिरत मगमाहीं ॥
तबहिं कंस केशी वध सुनिकै * बार बार शोचक शिर धुनिकै ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना * माया चरित बहुत सो जाना ॥
पठ्यो ताको तब ब्रजमाहीं * मारन कह्यो श्यामको ताहीं ॥
गोप बेष धरि सो ब्रज आयो * ढूँढ़त हरिको बनमें पायो ॥
गयो समाय सखन के माहीं * ताको किनहूं जान्यो नाहीं ॥
व्योमासुर यह बुद्धि उपाई * प्रथम बालकन लेहुँ चुराई ॥
इकलो करि जब हरिको पाऊँ * तब मारौ कै गहि लैजाऊँ ॥
दो०-दुरन जायँ बालक जहाँ, तहाँ असुर सँग जाय ॥
आवहि एकहि एक लै, पर्वत माँहि दुराय ॥ १ ॥
सो०-रहि गये थोरे ग्वाल, जब यौं बहु बालक हरे ॥
तब जान्यो नन्दलाल, व्योमासुर के कपट को ॥ १ ॥

धरयो धाय तब कुंवर कन्हाई * हरिसों ताको कहा बसाई ॥
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो * प्राणदेहतजि स्वर्गहिसटक्यो ॥
असुर मारिकै दीनदयाला * बालकशोधन चले गुपाला ॥
ऋषि नारद आये तिंहि काला * देखिश्याममुखलख्योविशाला॥
उपजो प्रेम हर्ष उंर पावन * बीन बजाय लगे यश गावन ॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी * आदिपुरुष प्रभु अंतर्यामी ॥
अकल अनीह अनंत अपारा * को जाने प्रभु रूप तुम्हारा ॥
सकल सृष्टिके सिरजनहारे * पालन लयसब ख्याल तुम्हारे ॥
युग युग यह अवतार गुसाँई * भक्तनहित प्रभु लेत सदाई ॥
धरणी भार पाय भइ भारी * सुरन संग लै जाय पुकारी ॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी * राखिलेहु प्रभु शरण उबारी ॥
राजअनीति सुरन तब भाषी * शशिअरु सूर भये सबसाषी ॥

दो०-क्षीर सिंधु अहि शयन प्रभु, श्रवणन परी पुकार ॥
तब जान्यो सुर संत महि, दुखित दनुजके भार ॥ २ ॥

सो०-कह्यो भूमि अवतारि, सिंधु मध्य बाणी प्रकट ॥
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्राता दाता अभय ॥ २ ॥

मथुरा जन्मि गोकुलहि आये * मात-पिता सोवतही पाये ॥
पय पीवतहीं बकी बिनासी * भयो असुरसुनिकंस उदासी ॥
इहिं अंतर जे दनुज पठाये * ते प्रभु सबकौतुकहिं नसाये ॥
नंद यशोदा बालक जान्यो * गोपिनकामरूप करि मान्यो ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके वासी * निजवशकियेब्रह्म सुखराशी ॥
मन बुधि वचन तर्कते न्यारे * निगमहुंअगमनपरतबिचारे ॥
ते ब्रजयुवतिन वनहिं विहारे * कमलनयन प्रभु नददुलारे ॥
नीलजलज तनु सुंदर श्यामा * मोरमुकुट कुँडल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीतांबर--धारी * बनमाला-धरकुँज-बिहारी ॥
बसहु रूप यह उर वर पाऊँ * बहुरिनाथप्रभु बिनयसुनाऊँ ॥
यह अवतार जबहिं प्रभु लीनो * आयसु सुरन यहै प्रभु दीनो ॥
दैत्यदहन संतन--सुखकारी * अबमारहु प्रभु कंसप्रचारी ॥

दो०जब यह गाथा गायकै, नारद कही सुनाय ॥

बोले प्रभु तब करि कृपा, सुधा बचन मुसकाय ॥ ३ ॥
सो०-जाहु बेगि मुनिराय, करहु सुरन के काज यह ॥
पठवो मोहिं बुलाय, नृप आय सुते मधुपुरी ॥ ३ ॥
जब प्रभु हँसि यह आयुस दीनो * तब प्रणाम प्रभुको ऋषिकीनो ॥
हर्षि चले मुनि नृपके पासा * यहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥
यहै बात हलधर समुझाई * जो बाणी ऋषि गये सुनाई ॥
तुम प्रभु अखिल लोकके कारन * जन्मे हौ भवभार उतारन ॥
परम पुरुष अवगति अविकारा * अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिंधु रूप जनहित सुखकारी * त्रिभुवन पति श्रीपतिअसुरारी ॥
संकर्षण जब ऐसो भाख्यो * सुनिसुनिश्यामहृदयसबराख्यो ॥
तब हँसि कहा भ्रातसों बानी * जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंस निकंदन नाम कहाऊँ * केश गहौं पुहमी घसिटाऊं ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये * बालक बहुरि शोध सब लाये ॥
व्योमासुर मार्यो नन्दलाला * भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभु को भाखे * कहत आज तुम हम सब राखे ॥
दो०-गाय गोप हलधर सहित, भये परम आनन्द ॥
सांझ समय बने चले, ब्रजको श्रीनन्दनन्द ॥ ४ ॥
सो०-आये नन्द अबास, प्रभु ब्रजवासीदास के ॥
गये कंस के पास, ऋषि नारद मथुरा पुरी ॥ ४ ॥
नारद गये कंसके पासा * मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये * हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कैसो मुख ऋषि मन क्यों मारे * कह चिंता मन बढ़ी तुम्हारे ॥
नारद कही सुनौ हौ राऊ * कह बैठे कछु करहु उपाऊ ॥
त्रिभुवन में नाहीं कोउ ऐसो * देखो नन्दसुवन में जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी * उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहु भारी * हम सब हितकी कहत तुम्हारी ॥
तब बोल्यो नृप गर्वित बानी * यह नारद तुम कहा बखानी ॥
यदपि कहत हौ तुम हितकेरी * तदपि बराबर नहिं वर मेरी ॥
कोटि दनुज मोसम मो पासा * जिनको देखि सुरन मन त्रासा ॥

कोटि कोटि जिनके सँग योधा * जोति सकै को जिनके क्रोधा ॥
तिनको बल कह कहौं बताई * देखत जिनको काल डराई ॥
दो०-रहत द्वार संतत खरी, कोटि भटनको भीर ॥
अति प्रचण्ड को दण्ड धर, महाबली रणधीर ॥ ५ ॥
सो०-महामत्त गज एक, त्रिभुवन गामी गामी कुवलिया ॥
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गनै ॥ ५ ॥
कहा ग्वाल के बालक दोऊ * यदपि बली उपजे हैं कोऊ ॥
प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे * सेवा करत सदा रहे नेरे ॥
ताते सकुचत हौं उन काजा * बालक सुनत होत मोंहि लाजा ॥
भली करी यह बात बुझाई * मनको डारो खुटक मिटाई ॥
सुनहु और नारद मुनि हमसों * कहत मतेको बाणो तुमसों ॥
उनपर सैना कहा पठाऊँ * नन्द सहित सब सहज बुलाऊँ ॥
डारौं गज के चरण खुँदाई * और प्रजा ब्रज देउँ बसाई ॥
यहै बात मेरे मन आई * तब सुनि मुनि बोले मुसकाई ॥
जो तुम अपनो गर्ब सँभारो * तो जानौ अब तुम उन मारो ॥
त्रिभुवनमे को बलहि तुम्हारे * यह कहि मुनि बिधि धामपधारे ॥
कंस आपने जिय यह जानो * नारद हितकी बात बखानो ॥
अब मारौं नहिं गहरु लगाऊँ * मथुराजिहिंतिहिंभाँति बुलाऊँ ॥
दो०-यहै शोच उरमें परयो, नहिं बिचाह कछु और ॥
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहिं मन दौर ॥ ६ ॥
सो०-कबहुँ बिचारत हीय, आपहि चढ़िधाऊ ब्रजहि ॥
पुनि सकुचत है जीय, ब्रजबासी प्रभु गुण समुझि ॥ ६ ॥
जन्महिते वे हैं असुरारी * सातहि दिनले बकी सँहारी ॥
कागासुर बल गयो बढ़ाई * सो मुरझाय गिरयो फिरि आई ॥
शकट तृणा क्षणही में मारे * ख्यालहि और असुर संहारे ॥
गये प्रतिज्ञा करि जोई * आयो नहिं जीवत फिरि कोई ॥
अब उनको सहजही बुलाऊँ * ऐसो को जिहिं लेन पठाऊँ ॥
जाय नन्दसों कहैं बुझाई * श्याम राम सुन्दर दोउ भाई ॥
सुनि सुनि अति नृपके मन भाये * देखन को मधुपुरी बुलाये ॥

ऐसे करि जब वे यहँ ऐहैं * बहुरौ जियत जान नहिं पैहैं ॥
यह बिचार उरमें ठहरायो * तब आतुर अक्रूर बुलायो ॥
सुनि अक्रूर मनमें भय पायो * किहि कारणनृप बेगि बुलायो ॥
आतुर गयो पँवरिपर धाई * जाय पँवरिया खबर जनाई ॥
सुनतहिं बोलि महलमें लीनो * सकुच गवन सुफलकसुतकीनो ॥
दो०-कछु डर कछु जिय धीर धरि, गयो नृपति के पास ॥
देखि डरयो मुख शोकवश, ऊरध लेत उसाँस ॥ ७ ॥
सो०-हाथ जोरि शिरनाय, अनबोल्यो सन्मुखरह्यो ॥
लीनो ढिग बठाय, मर्म बचन कहि कंस तब ॥ ७ ॥
आपहिं और तहाँ कोउ नाहीं * बोल्यो नृप सुफलकसुतपाहीं ॥
कहि जु गये नारद ऋषिबानी * सो सब कहिकै प्रकट बखानी ॥
सुनि अक्रूर कहत सत तोको * श्यामराम शालत उर मोको ॥
ज्यहित्यहिबिधिअबउनकोमारौं * यह कछुदोषहृदयनहिं धारौं ॥
पठवौं काहि जाइ ब्रज जोई * कहै प्रीति करि नंदहिं सोई ॥
बल मोहन तुव--तनय सुहाये * तुमहिं सहित नृपराज बुलाये ॥
सुनि गुणरूपहिं अगमअगाधा * है नृपको देखनकी साधा ॥
कालो पीठ कमल लै आये * तबते अति नृपके मन भाये ॥
सो बकसीस इन्हें अब दहैं * इनके बचन सुनत सुख पैहैं ॥
यह कहिकै उनको लै आवै * भेद सु कोऊ जानि न पावै ॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो * तब अक्रूरहिं धीरज आयो ॥
मन मन कहत कहा यह भावै * आपुहिं अपनो काल बुलावै ॥
दो०-कियो विचार अक्रूर तब, कहत जु कछु मैं और ॥
तौ मारैगो मोहिं यह, अबहीं याही ठौर ॥ ८ ॥
सो०-कह्यो मानिहै नाहिं, काल याहि आयोनिकट ॥
यह बिचारिमनमाहिं, सुफलकसुत बोल्योहरषि ॥ ८ ॥
सुनहु नृपति नीको मन आनो * धनि धनि नारद सत्य बखानी ॥
बड़े शत्रु हमको वे दोऊ * उपजे नंद–भवनमें कोऊ ॥
कीजै वेगि नृपति यह काजा * तुमसमऔर कौन महिराजा ॥
मुखते आयसु जो करि पाऊँ * भोर बेगितिहिं ब्रजहि पठाऊँ ॥

सुफलकसुत यह कही सयानो * तब हर्ष्यो नृप सुनि यह बानो ॥
फिर फिर कहत हिये गरबाई * बात बोलि हारौं दोउ भाई ॥
आधी निशि लौं यह मनकीनो * तब अक्रूर बिदा करि दीनो ॥
परयोसजग आलसजियजानो * सेबा करन लगीं सब रानी ॥
नके पलक लागो झपकाई * लखे सपन बलराम कन्हाई ॥
कालसरिस दोउ देखि डरानो * झझकि उठ्योभर्म्यो ससकानो ॥
देखे जागि तहाँ नहिं दोऊ * चकित भई रानी सब कोऊ ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई * कह झझके सपने नृपराई ॥

दो०-महाराज झझके कहा, सपने आज सकाय ॥
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय ॥ ९ ॥

सो०-तब मनमें सकुचाय, सहजहिं रानिनसों कह्यो ॥
भेद न भयो जनाय, मन शंका उर धकधको ॥ ९ ॥

सावधान प्रतिपालक राये * जहँ तहँ योधा सकल जमाये ॥
श्याम राम भय पलक न लावै * अंतर शोच न प्रकट जनावै ॥
जाग्यो आप संग सब नारी * भई यामनिशि युगते भारी ॥
बैठत कबहुं उठत अकुलाई * ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥
घड़ियालीसों पूँछ पठाये * बार बार निशि खबर मँगाये ॥
शोचत सब प्रातहिं कह करिहै * क्रोधभरयोनृपका शिर परिहै ॥
कही घरी निशि,गणकन बाकी * इक इकक्षणयुगयहगति ताकी ॥
कहत ब्रजहिं धौं काहि पठाऊँ * जासों गहि नँद सुवन मगाऊँ ॥
पठवौं अक्रूरहिं को जाई * ल्यावैं ब्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नँदराई * बल मोहन कहुँ गये हिराई ॥
ग्वाल बाल रोवत पछताहीं * कहत श्याम तो अब ब्रज नाहीं ॥
संगहि खेलत रहे हमारे * निठुर होय कहुं अनत सिधारे ॥

दो०-दूत एक कोउ आयकै, सँग ले गयो लिवाय ॥
वाहीके दोउ व्है गये, ब्रजवासिन बिसराय ॥ १० ॥

सो०-अतिव्य कुल नँदराय; मूर्छिपरे धरणी सु तब ॥
विवश यशोदा माय, श्याम बिरह व्याकुल खरी ॥ १० ॥

व्याकुल नर नारी ब्रजबासी * पशु पक्षी सब परम उदासी ॥

रोवत गिरत धरणि दुखपागे * अति अकुलाय नंद तब आगे ॥
धकधकातउरस्रवतनयन जल * यत अँग पर्सन लागे शीतल ॥
सुसकतिसुनतअतिहिंअतुरानी * कह भरमें पूँछत नँदरानी ॥
नंद नहीं कछु भेद जनायो * श्यामहिं लखिधीरजउरआयो ॥
अतिप्रभातरविउगन न पायो * सुफलकसुत उत कंस बुलायो ॥
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो * सोवतते अक्रूर जगायो ॥
कह्यो बेग चलिये नृपपासा * समुझिमंत्रनिशि चल्योउदासा ॥
ठाढो नृपति द्वारही पायो * देखत दूरहिते शिर नायो ॥
अतिआदरकरिनिकटबुलायो * शिरपाव नृप तुरत मँगायो ॥
अक्रूरहिं निजकर पहिरायो * बहुत कृपा करिबचन सुनायो ॥
ल्यावहु नंदमहरसुत दोऊ * तुमसम और चतुर नहिं कोऊ ॥
दो०-मुख हरष्यो अक्रूरसुनि, हृदय गयो बिलखाय ॥
असुर त्रास जियमें परयो, बचन कह्यो नहिं जाय ।११॥
सो०-दीनो रथहिं चढाय, जाहु बेग व्रज नृप कह्यो ॥
लै आवहु दोउ भाय, अबही बिलम न कीजिये ॥११॥
तब अक्रूर कह्यो कर जोरी * सुनहु देव बिनती इक मोरी ॥
बल मोहन प्रातहिं दोउ भैया * बनको जात चरावन गैया ॥
जो उनको घरमें नहिं पाऊँ * ताते प्रभु यह बात सुनाऊँ ॥
आज नंदगृह बसिहौं जाई * प्रातहिं लै आवहुँ दोउ भाई ॥
ऐसे जब अक्रूर जनायो * कंस बात यह मानि पठायो ॥
शीस नाय तबरथचढ़ि हाँक्यो * सुफलकसुतब्रजसन्मुख ताक्यो ॥
बहु प्रशंसि सब मल्ल बुलाये * चाणूरादि सकल चलि आये ॥
तिनसों कह्यो सुनौ सबवीरा * ब्रजमें रहत जु नंद अहीरा ॥
कहियत बली तासु सुत दोऊ * रामकृष्ण जिन कह सब कोऊ ॥
बहुत असुर मेरे उन मारे * ताते हैं बे शत्रु हमारे ॥
उनको मैं मधुपुरी बुलायो * सुफलकसुतको लेन पठायो ॥
उनको मति जानौ तुम बारे * हैं वे महाकठिन बलभारे ॥
दो०-रंगभूमि ताते रचो, चित्र विचित्र बनाय ॥
सावधान ह्वैकै तहाँ, रहौ मल्ल सब जाय ॥१२॥

सो०-ऊँचो एक मचान, तहाँ और सुन्दर रचो ॥
तहाँ असुर पर आन, बैठैं सब मेरे निकट ॥१२॥
योधा और अनेक बुलावो * सावधान करि सब बैठावो ॥
ताते और पौरिके बाहर * रहै कुवलिया गज तिहिं ठाहर॥
राखो द्वार तीसरे जाई * गरू कठिन अति धनुष धराई॥
बहु भट तहाँ रहैं रखवारी * अस्त्र शस्त्र धारी बल भारी॥
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ * जब आवैं वे बालक दोऊ॥
प्रथम धनुष उनसों चढवावो * उन्हैं कहौं यह धनुष उठावो॥
जब वे धनुष उठावैं नाहीं * घेरि लेहु उनको तिहिं ठाही॥
ताही ठौर मारि दोउ लाज्यो * भीतरलौं आवन नहिं दीज्यो ॥
जो कदापि उहँ ते चलि आवै * तौ गजपै आवन नहिं पावैं॥
डारौ गजके चरण दबाई * तुमको राखत अबहिं जनाई॥
जो छल बल करिकै बचि आवै * रंग भूमि आवन नहिं पावैं ॥
तौ सब मल्ल मारि उन लेहू * मोसमीप आवन मति देहू ॥
दो०-ठौरहिं ठौर सजाय कै, सजग रहौ इहि भाँत ॥
जिहिं तिहिं बिधि मारौं उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥१३॥
सो०-मन मन मौज बढ़ाय, ऐसे आयसु दै सबन ॥
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥१३॥

* अक्रूर आगमन लीला ६५ *

सुफलकसुत मन शोच अपारा * है नृप कंस बड़ो हत्यारा ॥
मंत्र कियो मिलि मेरे साथा * पठयो मोहिं लेन ब्रजनाथा ॥
कैसे आनि देहुं मैं जाई * मो देखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथ कीनो ठाढो * परयोबिचारहृदयअति गाढो॥
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरि कै * आयो नीर लोचनन ढरिकै ॥
अति बालक बलराम कन्हाई * कहा करौ कछु नाहिं बसाई ॥
मोहिं मारि अरु बंदि करावै * यह बिचार करि रथ न चलावै॥
प्रभु कृपालु सब अन्तर्यामी * सुफलकसुत मन पूरण-कामो॥
सुमिरत कृष्ण हृदय यह आई* वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवनराई॥
अखिल जगत् के कारण कर्ता* उत्पति पालन अरु संहर्ता ॥

दो०-धन्य कंस जिन मोहिं ब्रज, पठयो लेन गुपाल ॥
जाय रूप वह देखि हौं, निगम नेति नँदलाल ॥ १ ॥
सो०-यह बिचार उर आनि, रथ हांको अक्रूर तब ॥
भयो शकुन शुभ बानि, मृगगण आये दाहिने ॥ १ ॥
दहिने देखि मृगनकी माला * सुफलकसुत उर हर्ष बिशाला ॥
कहत आज इन शकुनन जाई * भुजभरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई॥
श्याम सुभग तनु परसि सुहावन * इंदुबदन त्रयताप नशावन ॥
अङ्ग त्रिभंग किये गोपाला * सारसहूंते नयन बिशाला ॥
मोरमुकुट कुंडल बनमाला * कटि कछनी पट पीत बिशाला ॥
तन चंदनकी खौरि बनाये * नटवर वेष मनोज लजाये ॥
व्हैहैं गैयनके सँग ठाढे * ग्वालनमध्य महाछबि बाढे ॥
सो दर्शन लखि होब सनाथा * धरिहौं जाय चरणपर माथा ॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं * महिमा जिनको बेद बतावैं ॥
जिनचरणन कमला रति मानी * शंभु धर्‌यो शिर जिनको पानी ॥
सनकादिक नारद यश गावैं * जिन चरणन योगी चित लावैं ॥
बलि जिनकी मर्याद न पाई * हार मानि निजपीठ नपाई ॥
दो०-शिलाशाप मोचन करन, हरण भक्त उर पीर ॥
आज देखिहौं वे चरण, सकल सुखनकी सीर ॥ २ ॥
सो०-अरुणकंजके रंग, अंकित अंकुश कुलिशध्वज ॥
गोपबालकनसंग, गो चारत बन पायहौं ॥ २ ॥
परिहौं जाय चरणपर जबहीं * भुजन उठाय भेंटिहौं तबहीं ॥
परसत उर आनँद उपजै है * अङ्गन पुलकि तनूरुह ऐहै ॥
देखत दरश परश सुख व्हैहै * प्रेमसलिल लोचन भरि जैहै ॥
कुशल पूँछिहै मोहिं सुखदानी * कहि नहिं सकिहौं गद्गद बानी॥
बारहिं बार बचन मृदु कैहैं * सुनि सुनि श्रवण परम सुख पैहैं॥
यों अक्रूर ध्यानमे अटक्यो * भूल्यो पंथ फिरत रथ भटक्यो ॥
हरिअनुराग बढ़्यो उरमाहीं * रही देहकी सुधि कछु नाहीं ॥
साँझ भई गोकुल नहिं पायो * नहिं जानत को हौं कहँ आयो ॥
किन पठयो कहँ जात न जानी * रथ बाहनकी सुरति भुलानी ॥

भयो हर्ष उर प्रेम बिशाला * दशहू दिशि पूरण गोपाला ॥
इहि अन्तर्यामी सब जानी * भक्तबछल है जिनको बानो ॥
भक्ति भाव करि जो कोई ध्यावै * मिलत तिन्हैं नहिं बिलमलगावैं ॥
दो०-ग्वालन सँग वृन्दा बिपिन, चारत धेनु सुजान ॥
चले हर्षि हलधर सहित, भक्ति हेतु जिय जान ॥ ३ ॥
सो०-यमुनपार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ॥
गैय्यन तहाँ मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥ ३ ॥
गायन दुहन लगे सब ग्वाला * आपहु दुहत भये नँदलाला ॥
भक्त हेत यह सुख उपजायो * तहाँ दर्श सुफलकसुत पायो ॥
रनि सक्योरथपरसुख व्याकुल * उतरि परयो भूपर अतिआकुल ॥
भयो मनोरथ मनको भायो * दौरि श्यामचरणन शिर नायो ॥
पुलकगात लोचन जलधारा * हृदय प्रेम आनन्द अपारा ॥
कृपा सिंधु करि कृपा उठायो * भक्तहेतु मिलि कण्ठ लगायो ॥
भयो जो सुख सो सोई जाने * ब्रजबासी किहि भांति बखाने ॥
जो अक्रूर चरित मन कीनो * तैसिय भांति दर्श हरि दीनो ॥
मधुर बचन श्रवणन सुखदाई * पुनि पुनि पूँछत कुँवर कन्हाई ॥
आनन चारु निरखि सुखकारी * तब बोल्यो अक्रूर सँभारी ॥
कुशल नाथ अब दर्श निहारी * दैत्यदलन भक्तन हितकारी ॥
भेदहि भेद कंसकी बानी * सुफलकसुत सब प्रकट बखानी ॥
दो०-सुनत बचन अक्रूर के, मुसकाने ब्रजचन्द ॥
फरकि भुजा भूभार की, टारन असुर निकन्द ॥ ४ ॥
सो०-मिले राम पुनि आय, परम प्रीति अक्रूरसों ॥
उर आनन्द न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥ ४ ॥
कहि कहि उठत इहैं नन्दलाल * हमहिं बुलायो कंस भुआला ॥
लेबेको अक्रूर पठाये * कालहि करि अति कृपा मँगाये ॥
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला * कहा करत हैं मदनगुपाला ॥
भये प्रेमवश अति अकुलानी * भरि आयो नयननमें पानी ॥
निरखि सबन को सुखदानी * तब बोले करि श्याम सयानी ॥
चलहु कालिह देखहिं नृपकंसा * मति आनो जियमें कछु संसा ॥

यह कहि चले हर्षि ब्रजलालन * कछू हर्ष कछु संशय ग्वालन ॥
अतिकोमल बलराम कन्हाई * हंसि लीने अक्रूर उठाई ॥
सुमन हुते हरुये सुखदनियाँ * दोउ लसत सुफलकसुतकनियाँ ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी * पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहं तहं ब्रजलोग चकाने * कंसदूत सुनि नन्द सकाने ॥
सपनो समुझि शोच उर छायो * मन मन कहत कहा धौं आयो ॥
दो०-आतुर उठि आगे चले, लैन नन्द उपनन्द ॥
देखत धाये धरनते, सुनत नारि नर बृन्द ॥ ५ ॥
सो०-श्याम राम उरलाय, स्यंदन तजि सुफलक सुवन ॥
आवत लखि नन्दराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥ ५ ॥
सादर तिनको शीस नवाये * कुशल प्रश्न करि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीनो * विविधभांतिभोजनबिधिकीनो ॥
संकर्षण अरु कुँवर कन्हैया * मिल गये अक्रूरहिं दोउ भैया ॥
क्षणक होत नहिं वे कहुँ न्यारे * मनहुं दुलार उनहुं प्रतिपारे ॥
तब अक्रूर सँग लै दोऊ * भोजन कियो लखत सब कोऊ ॥
हरि इत उत फेरत नहिं आखैं * सब ब्रजलोग मनहिं मन भाखैं ॥
उठै अंचै तब पान खवाये * आदर सहित पलंग बैठाये ॥
पुनि कर जोरि नंद यों भाख्यो * कहा कृपाकरि मग इत राख्यो ॥
तब ऐसे अक्रूर सुनायो * बलमोहन को नृपति बुलायो ॥
तुमको कह्यो सँग लै आवैं * सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥
देखन को अभिलाष जनायो * ताते बेगहिं प्रात बुलायो ॥
ब्रजके लोग सुनत यह बानी * भये चकित सुधि बुद्धि हिरानी ॥
दो०-चकित नन्द यशुमति चकित, मनहीं मन अकुलाय ॥
हरि हलधर को सैंनदै, सबै बुलावत जात ॥ ६ ॥
सो०-मायारहित मुकुन्द, जाके योग वियोग नहिं ॥
सदा एक आनन्द, अविगत अविनाशी पुरुष ॥ ६ ॥
प्रेम भक्ति की कछु डर लाजा * कीन्हों चहैं भूमि सुरकाजा ॥
ताते नहिं काहू तन हेरत * बोलत नहिं नयनन नहिं फेरत ॥
जनु पहिंचान कबहुंकी नाहीं * लखि लखि सब डरपतमनमाहीं ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरि सुफलकसुतसों मन लायो * यहै कहत नृप हमहिं बुलायो ॥
हुती साध हमहूं मनमाहीं * कबहुँ नृपति बोल्यो क्यों नाहीं ॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी * यह सुनि बिकलसकलनरनारी ॥
श्याम नहीं कछु मन में आने * भये नेह तजि तुरत बिराने ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई * कितते आयो यह दुखदाई ॥
महाक्रूर अक्रूर नाम को * जैहै प्रात लिवाह श्याम को ॥
जान कहत या संग कन्हाई * कैसे प्राण रहैंगे माई ॥
बिशखि बचन शोचतिसबठाढ़ी * मनहूंबिचित्रचित्रलिखिकाढ़ी ॥
अब हम संग तुम्हारे जैहैं * भली भांति नृप देखन पैहैं ॥
दो०-ठौर ठौर ऐसी दशा, कहत न आवत बैन ॥
बढ़ी श्याम बिछुरन ब्यथा, ढरत उमँग जल नैन ॥ ७ ॥
सो०फिरत बिकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों ॥
चलन कहत नन्दलाल, मनमलीन ब्याकुल सबै ॥ ७ ॥
ब्रजके लोग बिकल सब देखैं * तब अक्रूर सबनि परितोखैं ॥
चिन्ता मतिहि करो मनमाहीं * इनको कछू और डर नाहीं ॥
भजन धनुष यज्ञ के काजा * मधुपुरि इनहिं बुलायो राजा ॥
व्याकुल महरि यशोमति धाई * आतुर परी चरण पर आई ॥
सुफलकसुत मैं दासि तुम्हारी * सुनौ कृपा करि विनय हमारी ॥
सन्तन धाम परम उपकारी * सुनियत कीरति बड़ी तिहारी ॥
बड़ दुखन में यह प्रतिपारे * राम श्याम प्राणनते प्यारे ॥
धनुष तोर कह जानैं बारे * इन कब देखे मल्ल अखारे ॥
राज सभा को यह कह जाने * कब इन नृपजुहार पहिंचाने ॥
राजअंश अपनो सब लीजै * और कहौ बरु अधिकै दीजै ॥
जाउ नन्द उपनन्दहि लैकै * मैं कह करौं सुतन को दैकै ॥
है अक्रूर तुम्हारो नामा * नगर कहा लरिकन को कामा ॥
दो०-कहा धनुष यह देखिहैं, बालक अति अज्ञान ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

कियो नृपति कछु कपट यह, परत मोहिं यों जान ॥ ८ ॥
सो०-देहुँ नहीं हौं जान, मो निधनी के श्याम धन ॥
लेहु कंस बरु प्रान, को जीवै नंदनंदबिन ॥ ८ ॥
कहति बिलखिहरिसों दुखभारी ❋ क्यों मोहन मम छोह बिसारी ॥
दुखित जान अपनी महतारी ❋ मथुरा जाहु न मैं बलिहारी ॥
ये अक्रूर क्रूर कृत रचिकै ❋ आये तुम्हैं लेन रथ सजिकै ॥
तिरछी भई कर्मगति आई ❋ यह धौं विधना कहा बताई ॥
मोसी मात महरसों ताता ❋ कहत रहत क्षण२ दोउ भ्राता ॥
तिहिं सुख जान कहत हो प्यारे ❋ कैसे रहिहैं प्राण हमारे ॥
मैं बलि ऐसे जिय मति धारो ❋ मथुरामें कह काज तिहारो ॥
निरखिरूप यशुमति अकुलाई ❋ व्याकुल परी धरणि मुर्छाई ॥
कहि अब लेवैं प्राण कन्हैया ❋ ह्वैकै निठुर तजत है मैया ॥
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो ❋ मेरे प्राण लेनको धायो ॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारो ❋ करिहौ सूनो भवन हमारो ॥
रोवत बदन रोहिणी मैया ❋ ब्रजके जीवन ये दोउ भैया ॥
दो०-भये निठुर अक्रूर मिलि, घरहू आवत नाहीं ॥
कहा करौं कासों कहौं, को राखै गहि बाहीं ॥ ९ ॥
सो०-अति व्याकुल ब्रजबाम, जहाँ तहाँ बिलखीकहैं ॥
चलन चहतघनश्याम, धिकजुरहैंसखिप्राणतन ॥ ९ ॥
कहँ वह सुख हरिके सँग सजनी ❋ विविधविलासशरदकीरजनी ॥
हरिसुखशशि शीतल सुखकारी ❋ चखचकोर लखिहरतसुखारी ॥
कहँ वह सुन्दर हरिगरबाहीं ❋ पियत अधररसमन न अघाहीं ॥
जग उपहास सह्यो जिहिंलागी ❋ कुलअभिमानलाजसब त्यागी ॥
छूट्यो चहत सो हमसों आली ❋ करी कठिन विधिकर्मकुचाली ॥
कहो सखी फिर कबहुँ ऐसे ❋ मिलिहैं अब मिलियतहैं जैसे ॥
कहिहैं बहुरि बात हँसि कबहीं ❋ लागत परमनिठुरसें अबहीं ॥
विरहानल अग्निहुँते ताती ❋ बिछुरत श्यामपीरअतिछाती ॥
न्यायहि सखी नागरी नारी ❋ जरतिविरहउरअमितप्रचारी ॥

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब सहिहैं ऐसो दुख प्राना * निशिदिनकरिउरबज्रसमाना ॥
एक कहति कैसे हरि जै हैं * यशुमतिपै सखि जान न पै हैं ॥
कह करि हैं अक्रूर हमारो * फिरिजैहैंकरि निजमुख कारो ॥
दो०—हम तजि हरि नहिं जायहैं, मोहिं जीय विश्वास ॥
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छाँड़ि यशोमति पास ॥१०॥
सो०—धरयो तनक जब धीर, सुनि ताको बात्तो सबन ॥
सो जाने यह पीर, जो रँगराती श्याम के ॥१०॥
करत नन्द उपनन्द विचारा * करिये कहा कौन उपचारा ॥
को जाने कह नृपमनमाहीं * नृपआयसु मेट्यो नहिं जाहीं ॥
अतिबालक बलराम कन्हाई * भये शोचबश अति नँदराई ॥
तब बोल्यो इक गोप पुरानो * प्रभुप्रभाव उर राखि सयानो ॥
कहत कि मो मन में यह आवै * सोई करैं जो श्यामहिं भावै ॥
इनको बालक करि मति जानौ * कहि गये गर्ग सोई परमानौ ॥
ये कर्त्ता हर्त्ता सबही के * भार उतारनहार महीके ॥
जिनगिरिकरधरिब्रजहिंबचायो * बहुरि हमैं बैकुण्ठ दिखायो ॥
जाहि गयो सुरपति सिर नाई * ल्यायो नाथि कालि अहि जाई ॥
वरुण धाम देखी प्रभुताई * करत हुते सब तुमहिं बड़ाई ॥
कहा कंस ताको भय माने * इनकी महिमा येही जाने ॥
कितिन धनुष हरि तुरत चढ़ैहैं * देखत इनहिं कस सुख पैहैं ॥
दो०—जो करिहै कछु कपट तौ, सब समरथ गोपाल ॥
हरि हलधर भैया उभर, ये कालहु के काल ॥११॥
सो०—हर्षे सबै अहीर, हरि प्रताप हिय मैं समुझि ॥
सबलायक बलबीर, धीर धरौ यह जानिकैं ॥११॥
बार बार यशुमति अकुलाई * कहत रहौ सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहीं तात बहुत तुम बारे * मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुन नाहीं * तुमबिन लाल मातमरि जाहीं ॥
कहत राम सुन यशुमति मैया * तू मति बारो जान कन्हैया ॥
मातिहिकस भय-व्याकुलहोहीं * एक भरोसो हरिको मोहीं ॥

प्रथमहिं बकी कपट करि आई ❋ अतिहिं प्रबल विषकुचलपरई ॥
चारहि दिनके तब कन्हाई ❋ तो देखतही ताहि नशाई ॥
शकट तृणावृत वत्स अन्याई ❋ अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमें सकल सँहारे ❋ बिष जलते सब सखा उबारे ॥
गोबर्धन जिन करपर धारो ❋ महाप्रलयको जल सब टारो ॥
हरिसम बली और कोउ नाहीं ❋ तू मति शोच करै मनमाहीं ।
हम बाल कह तुमहिं सिखावैं ❋ धीर धरौ हम फिरब्रज आवैं ॥
दो०–सुनि चरित्र गोपाल के, उर आयो अवरोहि ॥
जो कछु करे सो सत्यप्रभु, आवतैंह सब सोहि ॥१२॥
सो०–कह्यो नन्द तब आय, मैं लै जैहौं सङ्ग हरि ॥
धनुष यज्ञ दिखराय, ले ऐहौं तुरतहि बहुरि ॥१२॥

अथ मथुरा गमन लीला

ऐसेहि सबको रात बिहानी ❋ भयो प्रात चिरियाँ चुह चानी ॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई ❋ दधि घृत भार सजौ बहु जाई ॥
नृपति भेट इत करहु सँजोई ❋ हरिके सङ्ग चलौ सब कोई ॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने ❋ कहतश्याम मधुपुरि निजजाने ॥
पर्यो शोर ब्रज घर जहँ ताईं ❋ हरिमुखदेखनको सब धाईं ॥
सजत ग्वाल चलिबे को साजा ❋ गैया फिरति दुहनके काजा ॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं ❋ जोतहु ताततुरत रथ आबही ॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो ❋ सहित सकोचरथहि पलनायो ॥
सुफलकसुतते दोऊ भाई ❋ होत नहीं न्यारे कहूँ राई ॥
देखतही यशुमति अकुलानी ❋ परोधरणिबिलपतिबिकलानी ॥
बिकलकहति मोहिं तज्योदुलारे ❋ जात किये सूनो ब्रज प्यारे ॥
यह अक्रूर ठगौरी लाई ❋ मोहे मेरे बाल कन्हाई ॥
दो०–यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हैं हरैं मो बाल ॥
वृद्धसमैकी लकुटियाँ, मेरे मदनगुपाल ॥ १ ॥
सो०–देखहु मनहिं बिचारि, लाभ कछू यामें तुम्हैं ॥
दियो धर्मडर डारि, क्रूर भये इत अस्यकै ॥ १ ॥

चलत जानि चितवति ब्रजनारी * विरहबिकलतनुसुरतिबिसारी ॥
जहँ तहँ चित्र लिखीसी ठाढ़ी * नयनन नीर नदी जिमि बाढ़ी ॥
लगत निमेष कूल दोउ नाहीं * भ्रमति नाव पूतरि तामाहीं ॥
ऊरध श्वास समीर झकोरत * चित्र कपोल तोरतरु तोरत ॥
काजल कीच कुचील किये तट * अधर कपोल उरज अंचलपट ॥
रहे जहाँ तहँ पथिक जकेसे * चरण हस्त मुख बचन थकेसे ॥
श्याम विरह व्याकुल ब्रजबाला * नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सूखत अधर वदन मुर्झाने * मनुहिमपरसिकमलकुम्हिलाने ॥
कहति परस्पर वचन अधीरा * गद्गद् बचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवन धन प्राणनको प्यारो * लिये जात अक्रूर हमारो ॥
सुनहु सखी अब कीजै सोई * जाते बहुरि शूल नहिं होई ॥
गये दूर रथ रह्यो न जैहै * पुनि पाछे पछितायो ऐहै ॥
दो० परिहर यश आशा जियन, लाज पंचकी कान ॥
करिये बिनती श्यामसों, सखी समय पहिचान ॥ २ ॥
सो०—होनी सोय सुहोय, पाँय परसि हरि राखिये ॥
नातर मरिहैं रोय, समय चूकि उर सालिहै ॥ २ ॥
प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी * बिरहविकल गोपीजन जानी ॥
चितये नेक कमलदललोचन * सकल-शोचसंताप-विमोचन ॥
मृदु मुसकान ठगौरी डारी * श्याम ठगीं सब ब्रजकी नारी ॥
रहि गईं चितवत बचन न आयो * चढ़े श्याम रथ अवसर पायो ॥
हरिको नाम सुमिरि मनमाहीं * चढ़े अक्रूरहु तुरत तहाहीं ॥
देखति महरि यशोमति धाई * पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई ॥
मोहन नेकु देखि इत लेहौ * बिछुरत लाल भेंट मोहिं देहौ ॥
देखहु तात बोध करि मैया * बहुरौ चढ़हु विमान कन्हैया ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो * बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो ॥
यह कहि ग्वालसखनको फेरौ * अपनी गाय जाय सब घेरौ ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई * किये यत्न बहु प्राण न जाई ॥
विलपति बिकल राममहतारी * अति व्याकुलसब ब्रजकी नारी ॥

दो०—देखि दुखित ब्रजलोग सब, और यशोदा माय ।।
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय ।।
सो०—धरणी के हितकारि, मथुरातन चितये बहुरि ।।
कह्यो दृगन सनकारि, रथ हाँकन अक्रूरसों ।। ३ ।।
बार बार यशुदा यो भाखै * कोऊ चलत गुपालहिं राखै ।।
सुफलकसुत बैरी भयो आई * हरे प्राण धन बाल कन्हाई ।।
हरहु कंस वह गोधन सारो * कै करि मोहिं बंदिमैं डारो ।।
ऐसेहू दुःख श्याम सभागे * खेलहिं मो नयनन के आगे ।।
यह कहि महिलोटति अकुलानी * आतही दुःखित नन्दकी रानी ।।
गापीजन विरहानलडाढ़ी * रहिगइँ प्रेम वियोगनि ठाढ़ी ।।
जिमि कुमुदिनिगणनीर विहीना * रविहिं प्रकाश त्रासते दीना ।।
श्यामविमुखक्षण २ कुम्हिलानी * बहुरौ मिलनकठिन जियजानी ।।
बलबुधिथकितस्रवतजललोचन * चलि नहिंसको रहीपचिशोचन ।।
ग्वैड़ेलौं सब गईं बिहाला * ब्रज तजि गमनकियोगोपाला ।।
लैगये मधु अक्रूर निहारी * माखी ज्यों सब दीन बिडारी ।।
देखह रहीं थकीं टक लाई * जबलगि धुरी दृष्टिमें आई ।।
दो०—भये ओट सब दृगनते, मूर्छि परीं विलखाय ।।
कहति गयो रथ दूर अब, धूसर परति लखाय ।। ४ ।।
सो०—कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो साँवरो ।।
परत न आगे पाय, पाछेही लोचन लखत ।। ४ ।।
बदन बिकल विरहारसमाती * भई न पवन संग उड़ि जाती ।।
रजहूँ नहीं बिधाता बानी * जाती चरणकमल लपटानी ।।
भई नहीं इक रथको अङ्गा * जाती चली तहाँ लगि सङ्गा ।।
बिछुरे आज श्याम सुखराशी * तो परतीत दृगनकी नाशी ।।
उड़ि नहिं वये श्यामसंग लागे * कृष्णमयी नहिं भये अभागे ।।
रसिक प्रेमके जगत बखाने * रूपलालची सबकोउ जाने ।।
सो करनी कछु इन नहिं कीनी * वृथा मीनकी छबि हरि लीनी ।।
धनि धनि मीन प्रीति पथसाँचे * सखि ये नयन हमारे काँचे ।।

अब ये शूल सहत जिय शोचत * उँमगि२ भरि २ जल मोचन॥
हरिबिन अब लखिये ब्रज सूनो * समय चूंकि सहिये दुख दूनो ॥
भई अजान सबै मनमाहीं * काहू चलत गह्यो रथ नाहीं ॥
वृथा लाज करि काज बिगार्यो * सह्यो दुसह बिरहादुख भार्यो ॥
दो०–यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहिंदीन ॥
लै आई सब नन्दगृह, कृशतनु बदन मलीन ॥ ५ ॥
सो०–सब ब्रजपरम ऊदास, हरि बिन सुखसम्पतिपन ॥
रहे प्राण इहिं आश, श्याम कह्यो मिलि हौंबहुरि ॥ ५ ॥
खग मृग बिकल जहाँ तहँ बोले * गाय बत्स राँभत सब डौलें ॥
तरु बल्ली पल्लव कुम्हिलानी * ब्रजकी दशा न परत बखानी ॥
चले नन्द गोपनसङ्ग लैकै * ब्रजबासिनको धीरज दैकै ॥
ग्वाल सखा हरिके सुखदाई * दर्शनलागि चले सब धाई ॥
उत अक्रूर शोच मनमाहीं * कियो काज मैं नीको नाहीं ॥
बल मोहन भैया दोउ बारे * अतिकोमल नवनीत पियारे ॥
करिकैं जननी जनक दुखारी * व्याकुल सबै घोषकी नारी ॥
मैं लैं जात कंसपै तिनको * मोदेखत मारैंगो इनको ॥
धिकधिनधिककुबुद्धि यह मेरी * जाहुँ लिवाय इन्है ब्रज फेरी ॥
कंस आज मारे बरु मोहीं * हरिको जाय देहुँ नहिं ओहीं ॥
इहि अन्तर यमुना नियराई * ठाढ़ो कियो तहाँ रथ जाई ॥
अन्तर्यामी हरि भगवाना * भक्त-हृदय-संशय पहिचाना ॥
दो०–भूँख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देऊ ॥
करि यमुना अस्नान पुनि, तात तुमहु कछु लेहु ॥ ६ ॥
सो०–सुनत वचन मृदुकान, सुफलकसुत सुनितुरतहीं ॥
कछु मेवा पक वान, भोजन दुहुँ भैयन दियो ॥ ६ ॥
आप करन मज्जन मन दीनो * यमुना पैठि संकलप कीनो ॥
जबहीं शीश नीरमें डार्यो * तब अचरज इकभावनिहार्यो ॥
राम कृष्ण रथपर सुखदाई * जलभीतर शोभित दोउभाई ॥
चकित भयो जलतेशिर काढ्यो * देख्यो रथ बाहरिसो ठाढ़्यो ॥

बहुरो बूड़ि सलिलमें पेख्यो * वैसेहि फेरि तहाँ रथ देख्यो ॥
क्षण जलमें क्षण प्रकट निहारैं * पुनि पुनिसँभ्रमबुद्धि बिचारैं ॥
स्वप्न किधौं जाग्रत यह होई * कैधौं मोमतिमें भ्रम कोई ॥
कंधौं जलमें रथ को छाया * कंधौं यह हरिको कछु माया ॥
भयो बिकलमति थित कछुनाहीं * देखन लग्यो बहुरि जलमाहीं ॥
जब अक्रूर बहुत अकुलायो * निजस्वरूप तहँ श्यामदिखायो॥
देखत भयो तहाँ जलमाहीं * सकल देव ठाढ़े हरिपाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने * नमित कन्ध करसम्पुट कोने ॥
दो०—शेष सहसफणि मणिनयुत, जगमगज्योति अनूप ॥
श्वेतबर्ण पट नीलयुत, राजत हलधररूप ॥ ७ ॥
सो०—नवनीरद तनु श्याम, पीतबसन लाबण्यनिधि ॥
भुजप्रलंब अभिराम, शेष अङ्क हरि सोहहीं ॥ ७ ॥
चारु अरुण-पंकजदल—नैना * चितवनिचारुचारु मृदु बैना ॥
चारु तिलक भरिभाल बिराजै * चारु कुटिलकुंतलछबि छाजै॥
चारु तिलक नासिका सुहाई * चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा * चारुदशनबिहँसनि छबिसींवा॥
उर विशाल श्रीचिह्न बिराजें * उदर उदार रोमावलि राजैं ॥
नाभि गंभीर क्षीण कटिदेशू * भुज विशाल बर चारु सुबेसू ॥
जम्ब गुल्फ अतिचारु सुहाई * पदकमलननखशशिछबिछाई ॥
नख शिख अनुपम रूप बिराजे * दिव्याभरण सकल अङ्ग साजै॥
कुंडल मुकुट जटित मणिमाला * मुक्तमाल बनमाल—रसाला ॥
यज्ञोपबीत पीताम्बर काँधे * कौस्तुभ मणि अंगद कर बाँधे ॥
करपल्लवन मुद्रिका राजैं * शंख चक्र गद पद्म बिराजैं ॥
क्षुद्रवंटिका अति द्युतिकारी * मणिनजटित नूपुरछवि भारी ॥
दो०—नन्द सुनन्दादिक जिते, दिव्य पारषद आहिं ॥
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्याके माहिं ॥ ८ ॥
सो०—ठाढ़ी जोरे हाथ, माया निजमाया सहित ॥
भक्त भक्तके साथ, अम्बरीष प्रहलाद बलि ॥ ८ ॥

शिवअजसहित शिवा अरु बानी * सनकादिक नारद अरु ज्ञानी ॥
भक्तन सहित सुरासुर जेते * कर जोरे ठाढ़े सब तेते ॥
इन्द्र कुवेर बरुण दिक्पाला * मनु बिसुकर्म धर्म यम काला ॥
बन्दन करत चरण धरि माता * गावत वेद सकल गुणगाथा ॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो * कृष्णप्रभाव प्रकट सब जान्यो ॥
चिंता सकल चित्तकी नासी * जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनासी ॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो * तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो ॥
अति आनन्द बढ़्यो मनमाहीं * अस्तुतिकरनलग्योतिहिंठाहीं ॥
धन्य धन्य प्रभु अन्तर्यामी * नारायण त्रिभुवन के स्वामी ॥
सकल विश्व तुमहीं बिस्तारो * विश्वरूप है रूप तुम्हारो ॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी * लीला सगुण गुणनकी राशी ॥
प्रभु तुम सब देवन के देवा * जाने कौन तुम्हारो भेवा ॥

छन्द—को जान तुम्हरो भेव हरि तुम सकल देवमयी प्रभो ॥
अहिकारण सबहिं के तुम विश्व सब तुम्हरो प्रभो ॥
नाग नर सुर असुर अग जग दास सब तुम्हरो हरी ॥
रहति माया सब तुम्हरी जाहि तुम जिहिंविधिकरी ॥१॥
योग यज्ञ अनेक कर्मन करि तुम्हैं सब ध्यावहीं ॥
जैसो जाको भाव तैसो तुमहिंते फल पावहीं ॥
अति अगाध अपार तुमगति पार काहू नहिं लह्यो ॥
शम्भु शेष गणेश विधिना नेति निगमनहूँ कह्यो ॥२॥
भक्तहितधरि विविधतनुतुमचरित अद्भुतविस्तरौ ॥
मच्छ कच्छ बराहबपु धरि बेद गिरि महि उद्धरौ ॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि सुरन हित बागन भये ॥
भृगुबंशमणि अभिरामतनु धरि मानमय क्षत्री हये ॥३॥
रामरूप निपाति रावण नृप विभिषण को कियो ॥
कंस अरि यदुबंशभूषण कृष्णबपु छबिनिधि लियो ॥
बुद्धरूप दयालु कल्कि हिंसादि कर्म न भावहीं ॥
निष्कलंक मलेच्छहा दश रूप श्रुति तब गावहीं ॥४॥

दो०–तव गुण रूप अनंत प्रभु, हौं अजान जगदीश ॥
यों अस्तुति अक्रूर करि, नायो पदपर शीश ॥ ९ ॥
सो०–तबहिं श्याम सुखदाय, अन्तरहित जलतेभये ॥
निकऱ्यो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि ॥ ९ ॥
लखी कृष्णकी जब प्रभुताई * बढ़्यो हर्ष अति उर न समाई ॥
भूले नेम न कछु कहि जाई * मग्न ध्यान बलराम कन्हाई ॥
कहत मनहिं मन ये अविनासी * पूरण ब्रह्म सकलगुणराशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना * नाहिंन इनसमान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर संसा * ये करिहैं ताको निरबंसा ॥
चल्यो हाँकि रथ तब हर्षाई * नँद उपनंद मिले तहँ आई ॥
हरि अक्रूरहिं बूझत जाहीं * करि सयान मन मन मुसकाहीं ॥
कही तात तुम अब हर्षाने * प्रथमहिं कछुक बहुत मुरझाने ॥
कहौ साँच हमसों सोई बानी * तब अस्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धनि श्रीकंता * गुणन अगाध अनादि अनंता ॥
निगम नेति करि जाहि बखाने * सहसानन नित तव गुण गाने ॥
करिकै कृपा जानि निजदासा * दियो दर्श संशय सब नासा ॥
दो०–अबमोहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवन के नाथ ॥
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुह्मारे हाथ ॥ १० ॥
सो०–कहा बापुरो कंस, कहा मल्ल कह कुवलिया ॥
अब करिये निर्वंस, वेग नाथ ऐसे खलन ॥ १० ॥
सुनि मोहन सुफलक सुतबानी * भये प्रसन्न भक्तसुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई * सन्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणिकिरण महलन छबिछाई * जगमगात नभ सुन्दरताई ॥
अक्रूरहिं बूझत घनश्यामा * कहियत यहैं मधुपुरी नामा ॥
श्रवणन सुनत रहतहै जाही * देख्यो आज दृगनते ताही ॥
कंचन कोट कँगूरा सोहैं * बैठे मनहु मदन मन मोहैं ॥
बन उपवन पुरके पहुँपाहीं * अति भावत मेरे मनमाहीं ॥
लखि २ हरि मथुराकी शोभा * पुनि २ पुलकित करमनलोभा ॥

जहा जन्म जियमैं करि जानैं * ताते अधिक हर्ष उर मानैं ।।
बाजत नौबत नृपतिदुवारा * होत शब्द घरियाल उदारा ।।
सुनि सुनि मन आनंद बढ़ावैं * नगरशोर सुनि रुचि उपजावैं ।।
कनकखचित मणिजटितअटारी * धवल नवल अतिउँचि सँवारी ।।
दो०—ध्वज पताक तोरणकलश, जहँ तहँ ललित बितान ।।
मुक्ताझालरि झलमलै, को करि सकै बखान ।।११।।
सो०—निरखि निरखि हर्षात, मनमोहन अक्रूरको ।।
बलहिं दिखावत जात, ललित लालकर पल्लवन ।।११।।
कहै अक्रूर सुनौ यदुनाथा * भई आज मधुपुरी सनाथा ।।
तुमहिं विलोकि बिराजत ऐसी * पतिआगम सोहै तिय जैसी ।।
कसी कोट कट किंकिणी मानौ * उपबन बसन विविधरँगजानौ ।।
मंदिर चित्र बिचित्र सुहाये * जनु भूषण रचि अङ्ग बनाये ।।
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं * मनहु चरण नूपुरध्वनि साजैं ।।
धामन ध्वजा विराजत हैं इमि * संभ्रम गति अंचल चंचलजिमि ।।
उच्च अटन षट्ऋतुछबि छाजैं * जनुउर आनन्दउमंगि बिराजैं ।।
भूली अतिसुख संभ्रमतातें * प्रकटे कनक-कलश-कुच जातें ।।
मोखा द्वार दरीशों द्वारा * लागे विद्रुम कुलिशकिंवारा ।।
मनहुँ तुम्हारे दर्शनलागी * नयनन रहीं निमेषन त्यागी ।।
मुक्ताझालरि खिरकिन राजै * हँसति मनौ अनन्द न साजै ।।
जग मग ज्योति रहि छबि झूली * जनु तुमपंथ निहारति भूली ।।
दो०—नीके हरि अवलोकिये, पुरी परमरुचि रूप ।।
असुर कंसको जीतिकै, होहु इहाँके भूप ।।१२।।
सो०—सुनि बिहँसे नँदलाल, ललित बचन अक्रूर के ।।
पहुँच्यो रथ तत्काल, जाय निकट मथुरापुरी ।।१२।।
नगर निकट पहुँचे जब जाई * सुफलकसुवन सहित दोउभाई ।।
गौर श्याम रथपर दोउ राजैं * कोटि मनोजनिरखिछबि लाजैं ।।
कंसदूत लखि जहँ तहँ धाये * समाचार कहि नृपहिं सुनाये ।।
आये बल मोहन दोउ भाई * सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई ।।

गहि कर खड्ग चर्म लै धायो * रंगभूमिके मंचन आयो ॥
गज मुष्टिक चाणूर बुलाये * और सुभट सब बोलि पठाये ॥
तिनसों कह्यो सजग सब होऊ * ठाँवहिं ठाँव रहौ सबकोऊ ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये * धनुषपास बहु सुभट पठाये ॥
पठवत दूत दूत पर धाई * आये कहंलगि देख्यो जाई ॥
गर्जै कंस सैन सब साजै * द्वारे बिबिध बाजने बाजैं ॥
पीरो भयो हृदय डर मान्यो * सूखत अधरबदन कुम्हिलान्यो ॥
नंदमहरके सुत सुनि आवत * मन मन मारन गर्ब बढ़ावत ॥
दो०--पर्‍यो शोर मथुरा नगर, आवत नंदकुमार ॥
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काज बिसार ॥१२॥
सो०--लाजकानिडर डार, कोउ खिरकिन कोउ अटनपर ॥
कोऊ खडी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥१३॥
कियो प्रवेश नगरमें जाई * असुर--निकंदन जन-सुखदाई ॥
इंद्रबरण रथ पर दोउ बीरा * सुभग श्याम बर गौर शरीरा ॥
शीस मुकुट कुंडलछबि छाजै * कुंडल एक रामश्रुति राजै ॥
नील पीत बर बसननिकाई * मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे * धाय धाय रथके संग लागे ॥
युगल रूप लखि होहिं सुखारे * इकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
चढ़ीं अटारिन देखहिं नारी * बढ्यो प्रेम आनंद उर भारी ।
निशिदिनसुनिगुणगणअभिलासी * अतिआरतिदरशनकीप्यासी ॥
शशिआनन मृदु बेष किशोरी * भये निरखि दोउ नैनचकोरी ॥
पुलकि गात दग आनँदपानी * कहत सप्रेम परस्पर बानी ॥
येई सखि बलराम कन्हाई * सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई ॥
नंदगोपके ये दोउ ढोटा * गौरश्यामतनु सुन्दर जोटा ॥
दो०--मणि कंचनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ॥
कै प्रकटे ब्रज देन सुख, त्रिभुवनके अवतंस ॥१४॥
सो०--धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि ॥
धनि धनि ब्रजकी बाम प्रकट प्रीति पालीजिन्नह ॥१४॥

Digitization by Arya Samaj Foundation Chennai

सुनति हुती पुरुषारथ जिनके * देखहु रूप नयन भर तिनके ॥
अतिहि अनूप बेष नट सोहैं * कहहु सो को छबिदेखि न मोहैं ॥
पूरब जन्म सुकृत कोउ कीनो * सो बिधि यहनयननफल दीनो ॥
अति अभिराम श्याम छबिधारो * इनही प्रथम पूतना मारी ॥
शकटा तृणा इनहिं संहारे * बत्स बका अघ पुनि इन मारे ॥
इँद्र कोपि बर्षन ब्रज कीनो * इनहींगिरिकरधरिरखि लीनो ॥
जलते काली इनहिं निकाऱ्यो * पुनि अरिष्ट केशी इन माऱ्यो ॥
गौर शरीर नाम बल सोई * धेनुक और प्रलँबहा बोई ॥
अब अक्रूर पठै नृपराई * इहाँ बोलि पठये देउ भाई ॥
रंगभूमि रचि कियो अखारो * कहाँ कान्ह धौं हृदय बिचारो ॥
जननी धीर धऱ्यो धौं कैसे * अतिबालक पठये हैं ऐसे ॥
देहिं अशीस माँगि बिधिपाहीं * न्हातहुँ बार खसहु तन नाहीं ॥
दो०—लेत बलैया वारिकै, आँचर यह कहि नारि ॥
करिहैं इनसों कपट नृप, तौ व्हैहै जरि छारि ॥१५॥
सो०—सफल भये मन काम, देखि दर्श इनको सखी ॥
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीस सुनाय सब ॥१५॥
कहति युवति इक सुनहु सयानी * मैं जो सुन्यो सु कहति बखानी ॥
ये बसुदेवकुँवर सखि दोऊ * ऐसे लोग कहत सब कोऊ ॥
कंसत्रासकरि मात पठाये * नंद सखा—गृह जाय दुराये ॥
करि दुलार यशुमति पय प्याये * हितकरि तिनके बाल कहाये ॥
गोरे अङ्ग नयन रतनारे * जो प्रलम्बके मारनहारे ॥
कुंडल एक बाम श्रुति धारी * ते रोहणीसुवन सुखकारी ॥
अति अभिराम महाबलधामा * ताते नाम धऱ्यौ बलरामा ॥
श्याम सुभगतनु उर बनमाला * शीस मुकुट दृग नयन विशाला ॥
जिन्है हेत करि सङ्ग ब्रज बामा * मान्योनेह सकल सुखधामा ॥
जिनके चरण छुवत बड़पापी * पाईं सुगति सुदर्शन शापी ॥
अमित प्रभाव कृष्ण सब कहहीं * जिनके नाम अधमगति लहहीं ॥
कहत देवकी सुत सब तिनसों * कंसराज भय मानत जिनसों ॥

दो०–आये हैं अक्रूरसंग, तात–मातः–सुख–दैन ॥
रंगभूमि रिपुजीतिकै, करिहैं यदुकुल चैन ॥१६॥
सो०–सुनि २ मुदित सुनारि, अति प्रिय बानी तासुकी ॥
माँगति गोद पसारि, बिधिसों ऐसो होहु सब ॥१६॥
देत सबन सुख यो मनभावन * उतरे जाय बाग इक पावन ॥
गोपनसहित नंद तहँ राख्यो * तबसुफलकसुतसों हरिभाख्यो ॥
कहहु तात आगे तुम जाई * आये श्याम राम दोउ भाई ॥
बहुरि नृपति जब हमैं बुलैहैं * करि विश्राम हमहुँ तब ऐहैं ॥
तब अक्रूर जोरि युगपाणी * बोल्यो सुनत श्यामकी बाणी ॥
मुहिं न्यारो क्यों करत गुसाँई * राखौ निकट दासकी नाँई ॥
कंसदूत मोको जनि मानौ * निजसेवक अपनो करि जानौ ॥
अरु मेरे मनमैं यह आसा * चलि पावन कीजै मो बाँसा ॥
तब हँसिकै बोले घनश्यामा * ऐहौं काहुदिना तुव धामा ॥
ऐसे कहि अक्रूर पठाये * बिदा होय नृपपास सिधाये ॥
रथते उतरि परे दोउ भाई * ग्वाल बाल सब लिये बुलाई ॥
सखा भ्रात संग सहज हुलासू * गे यमुनातट नगर निकासू ॥
दो०–बालबयस शोभित सुभग, बाल सखन के संग ॥
गौरश्याम शोभा निरख, लज्जित कोटि अनंग ॥१७॥
सो०–अति विचित्रको जान, ब्रजबासी प्रभुके चरित ॥
अमित गुणनकौ खान, जनरंजन दुष्टनदलन ॥१७॥

अथ रजक बध लीला ६७

नृपतिरजक अंबर नृप धोवै * आवत देखि श्यामतनु जोवै ॥
हँसत सगर्ब बात यों चालै * कंसराज के उर ये शालै ॥
लघु लघु बयस गोपके जाये * बहुत अचगरी करि ये आये ॥
तृणावर्त प्रभु रह्यो हमारो * इनहीं ताहि शिलापर मारो ॥
अतिखोटो जिहिं नाम कन्हाई * प्रथम ताहि डारौं मरवाई ॥
है बलभद्र तैसोई खोटो * गोरो अङ्ग महाबल मोटो ॥
ताहू को मारेगो राजा * बोले हैं याहीके काजा ॥

ऐसे कहत परस्पर बानी * प्रभु अंतर्यामी सब जानी ॥
ग्वालनसहित गये तिंहिपाहैं * कह्यो कछू अम्बर हम चाहैं ॥
तिनको पहिरि नृपतिपै जैहैं * देहैं बहुरि तुम्है जब ऐहैं ॥
जो पहिरावन नृपसों पैहैं * तामैं कछु तुमहूको देहैं ॥
कँ पहिलेही लेहौ हमसों * बूझत हैं तैसो हम तुमसों ॥
दो०–हँस्यो बचन सुनि श्यामके, कह्यो गर्व करि बैन ॥
बलिके बकरा व्है रहे, आये हैं पट लैन ॥ १ ॥
सो०–राखैं धरी बनाय, व्है आवहु नृपद्वारलौं ॥
तब लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो ॥ १ ॥
बन बन फिरत चरावत गैया * अहिरजाति कामरी उढैया ॥
नटको बेष साजिके आये * नृपअंबर पहिरन मनभाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा * पहिरावन लेबेकी आसा ॥
नेक आस जीवनकी जोऊ * खोवन चहत अबहिं पुनि सोऊ ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई * देहु बसन है तुमहिं भलाई ॥
हम मांगत हैं सहजहि तुमसों * तुम कस करतइती रिस हमसों ॥
सहज बातको रिस नहिं कीजै * माँगे देहु मान गुण लीजै ॥
भौंह ऐंठि तब रजक रिसानो * ये नृपबसन नहीं तुम जानो ॥
अबहीं सुनत क्षणकमैं मारै * नंदहिं पकरि बंदिमैं डारै ॥
जाहु चले यहिते अब नीके * कै व्हैहौ अबहीं बिनजीके ॥
करत अचगरी मोसों आई * दुहुंन मारिहौं कंसदुहाई ॥
यह सुनिकियो श्यामसोख्याला * भुजा पकरि पटक्यो तत्काला ॥
दो०--तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कौनोरजक बिहाल ॥
जन्ममरणते रहगयो, ऐसो गुण गोपाल ॥ २ ॥
सो०--लखिकै गये पराय, संगी ताके सब रजक ॥
लीने बसन लुटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके ॥ २ ॥
रजक मारि सब बसन लुटाये * आप पहिरि ग्वालन पहिराये ॥
बिबिधरङ्ग बहु भाँति नवीने * निज २ रुचि ग्वालन सबलीने ॥
चले तहाँते सब हर्षाई * मिल्यो एक दर्जीपुनि आई ॥

प्रभु को देखि बहुत सुख पायो * चरणकमलको माथ नवायो ॥
घाट बाट जे बसन सुहाये * ते उन सम करि तुरय बनाये ॥
ताको कृतहिं मान प्रभु लीनो * अभयदान दैं निजपद दीनो ॥
पुनि इक माली हुतो सुदामा * ताके द्वार गये घनश्यामा ॥
तुरत आय तिन पद शिर नायो * हरि हलधर लखि हर्ष बढ़यो ॥
आदरसहित सदनमें आने * चरण धोय निजभाग्य बखाने ॥
नृपतिहेत जे हार बनाये * ते सप्रेम प्रभुको पहिराये ॥
हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई * जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई ॥
मोको बहुत अनुग्रह कीनो * दीन जानि अपनो करि लीनो ॥
दो०—सुनि सप्रेम ताके बचन, रीझे श्याम सुजान ॥
माली पूरण काम करि, दियो भक्त बरदान ॥ ३ ॥
सो०—सखन सहित दोऊ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले ॥
तहाँ पंथ में आय, कुब्जा लै चंदन मिली ॥ ३ ॥
निरखिश्यामछबितनु सुधिभूली * बोली हर्षि प्रेमरस-फूली ॥
हो प्रभु दीनबंधु सुखदाई * तुम्हें नाथ चंदन मैं ल्याई ॥
मोहिं कल्पना यह जगबंदन * चर्चौं अंग तुम्हारे चंदन ॥
दासीकुल कुब्जा मम नाऊँ * नृपके उर चन्दन नित लाऊँ ॥
तुम्हें जानिकै प्रभु तिहिं ठाहीं * अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं ॥
आज दर्श प्रकटहिं प्रभु पायो * मोजियको संताप नशायो ॥
अब यह मलय कृपा करि लीजै * पूरणकाम नाथ मम कीजै ॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी * भाव भक्ति कुब्जा पहिचानी ॥
भावहिके वश त्रिभुवनराई * हित करि कुब्जा निकट बुलाई ॥
चंदनकरि पूजे दोउ भाई * रही श्यामछबि निरखिलुभाई ॥
तब हरि हँसिहलधरसों भाख्यो * हेतु बहुत इन हमसों राख्यो ॥
हमहूँ कछु याको हित कीजै * सूधे अङ्ग नेक करि दीजै ॥
दो०—पग राखे पग पीठ पर, धऱ्यो शीस कर श्याम ॥
नेक उठाई चिबुक गहि, भई सुन्दरी बाम ॥ ४ ॥
सो०—को करिसकै बखान, जाहि बनाई आप हरि ॥

भई रूप गुण खान, कुब्जा मन आनन्द अति ॥ ४ ॥
महाकुरूप कूबरी कैसी * पर्सत भई तुरत रति जैसी ॥
तब कुबजा अपने मन मान्यो * मिले मोहिं मोहन पति जान्यो ॥
पुनि २ कमल चरण शिरनाई * हाथ जोरि बहु बिनय सुनाई ॥
जिमि कीनीमोहिं कृपा कृपाला * तिमिममसदन चलहु नँदलाला ॥
अपने चरणकमल तहँ धरिये * सुफल मनोरथ मेरो करिये ॥
तासों बिहँसि कह्यो घनश्यामा * कंस देखि ऐहौं तब धामा ॥
अपनी करि तिय सदन पठाई * चले धनुष देखन दोउ भाई ॥
ग्वाल सखा संग सुभग सुहाये * कामसेन बर रूप बनाये ॥
पुरजनभीर चहूँदिशि भारी * चढ़ीं अटारिन देखहिं नारी ॥
निरखि श्याममुखइंदु उदारा * जनु पुरउदधि तरंग अपारा ॥
जहँ तहँ कहत सकल पुरबासी * भई सुन्दरी कुबजादासी ॥
श्याम कछू चेटकसो कीनो * अंग सुधारि रूप बर दीनो ॥
दो०--रजक मारि लुटे बसन, करी कूबरी चारु ॥
बालभाव मोहत मनहिं, हैं कोउ देव उबारु ॥ ५ ॥
सो०--सुनत रहे दिन रैन, पुरुषारथ इनको भवन ॥
तैसे देखे नैन ब्रजबासीप्रभु नंद सुत ॥ ५ ॥
गये धनुषशाला दोउ बीरा * देखत चकित भये भटभीरा ॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई * देखि थके सुन्दर दोउ भाई ॥
धनुषसमीप असुर सब ठाढ़े * अतिबलवंत धीर नर गाढ़े ॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया * बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया ॥
सुनियत अतिबल भुजनतुम्हारी * यह कोदंड चढ़ावहु भारी ॥
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखराशी * कहा करत हमसों यह हाँसी ॥
कहाँ बाल हम बयस किशोरा * कहाँ धनुष अति गरुवकठोरा ॥
शूर बीर ठाढ़े सब लहिये * तिनसों धनुष चढ़ावन कहिये ॥
खेलन कहौ खेल कछु हमको * सो हम खेल दिखावै तुमको ॥
ऐसे श्याम हंसत तिनमाहीं * अरु अक्रूर गये नृपपाहीं ॥
समाचार सब जाय सुनाये * नंदसहित बल मोहन आये ॥

यह कहि घर अक्रूर सिधारे * रजक जाय तिहिं काल पुकारे ॥
दो०—मारे बिन दूषण हमैं, नन्दगोपके बाल ॥
लीने बसन लुटायकै, पहिराये सब ग्वाल ॥ ६ ॥
सो०—सुनतहिं उठो रिसाय, बोल्यो सबनि बुलाय नृप ॥
करी प्रथमही आय, देखौ इन ढोठे बड़े ॥ ६ ॥
अब मारिहौं अवशि दोउ भाई * लेहुँ आज सब ब्रजहिं लुटाई ॥
देहुँ बंदिमें नंदहिं ल्याई * गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहिं बुलायो * आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखहु कोऊ जाय न पावै * असुर जाय सबको गहिल्यावै ॥
ऐसे कंस कहत रिसियाई * तबहीं दूतन खबर जनाई ॥
कुबजासों चंदन हरि लीनो * ताको रूप अनूपम दीनो ॥
धनुषनिकट पहुँचे दोऊ भाई * यह सुनतहिं कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये * ते यह कहत श्यामपहँ आये ॥
पहिले तोरु धनुष गोपाला * बहुरि बुलायो निकट भुआला ॥
सुनि असुरनके बचन कन्हाई * बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याही को नृप हमहिं बुलायो * जोर्‍यो बैर जानि यह पायो ॥
गहन लगे ते बालक जानी * तबहिं श्याम कछु रिसउरआनी ॥
छन्द—उर आनिरिसगहिपाणितुरतहिं असुर लै मारे सबै ॥
अतिहि बेग उठाय धनुषहिं तोरि महि डारयो तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा मार मार पुकारहीं ॥
नंदसुत रणबीर हो धर धीर असुर संहारहीं ॥ १ ॥
एक झटकत एक पटकत ते न भटकत फिर तहीं ॥
एक अटकत एक लटकत एक सटकत जहिं तहीं ॥
ताल चटकत चमकिछटकत देखि भटकत नट भले ॥
एक पकरि फिराय पटकत जात तेनृपतपहिंचले ॥ २ ॥
दो०—ख्यालहिं मारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ॥
चले सामुहे पँवरि तकि, जहाँ कुबलिया व्याल ॥ ७ ॥
सो०--देखत चढ़े विमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि ॥

डारत सुमन सुजान, ब्रजबासीप्रभुपर हरषि ।। ७ ।।
रंगभूमि हरि हलधर आये * संग सखा नव ग्वाल सुहाये ।।
आप आपनी छबि सब छाये * रबिशशि उडुगण उदितसुहाये ।।
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढो * मनहुँ गर्बको गिरिवर गाढ़ो ।।
कंध केसरी--गर्ब-प्रहारी * बलतन हँसे गयंद निहारी ।।
ता क्षणकी छबि कही न जाई * कसत पीत पट कटि लपटाई ।।
श्याम सुभग लट घूँघरिवारी * पाग पेंच मिलि पाग सँवारी ।।
मधुपुरकी युवती सब बाढ़ी * कहति परस्पर महलन ठाढ़ी ।।
लखहु सखी अङ्ग अङ्ग लुनाई * रूपराशि मनहरण कन्हाई ।।
कोटिमदनछबिबिधि लुनिलीनी * तब यह मूरति साँवरि कीनी ।।
अतिहिं कुशल ये लखिसुखदाता * हम अभागिके क्रूर बिधाता ।।
धनि ब्रजतिय इनके संग लागी * निशिदिन रहित प्रेमरसपागी ।।
बनबीथिन कुंजन--बिच डोलैं * राम हास रस करति किलोलैं ।।
दो०—होंय हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज ।।
जैसे तोऱ्यो धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज ।। ८ ।।
सो०—सुरन मनावत जात, अति कोमल नँदलाल सखि ।।
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिता के पुण्य ते ।। ८ ।।
देखि मतंग द्वार मतवारो * गजपालहिं बलराम हँकारो ।।
सुनहु महावत बात हमारी * लेहु द्वारते वारण टारी ।।
जान देहु हमको नृपपासा * नातर द्वैहै गजको नासा ।।
कहे देत नहिं दोष हमारो * मति जानै हरिको तू बारो ।।
त्रिभुवन--पति दुष्टन--संहारी * धरणी--भार--उतारनकारी ।।
सुनत बोल गजपाल रिसानो * रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो ।।
त्रिभुवनपति अब गमय चराये * गाँड़े खान गजनसों आये ।।
बादत बड़े शूरकी नाईं * जैहैं प्राण अबहिं क्षणमाईं ।।
तोऱ्यो धनुष भयो अति गारो * नहिंजानत यह गजअतिभारो ।।
दशसहस्र गजको बल याही * डरपत है ऐरावत जाही ।।
जबलगि यासों लरि नहिं लैहौ * तबलगि कैसे भीतर जैहौ ।।

ऐंहि कहि अंकुश कर लीनो * गज गजपाल सामुहे कीनो ॥
दो०–तबहिं कोपि हलधर कह्यो, सुनरे मूढ़ कुजात ॥
गज समेत पटकौं अबहिं, मुख सँभारि कहु बात ॥ ९ ॥
सो०–नेक न लगिहै बार, बारण मरिजैहै अबहिं ॥
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो ॥ ९ ॥
यह सुनि गज गजपाल चलायो * झटकि शुंड बहुरो गज धायो ॥
लीनो लपकि शुंडके माहीं * देखत शूर बीर चहुँघाहीं ॥
तब बलराम कोप करि भारी * बज्र समान थाप इक मारी ॥
तब समेटि कर करि सकुचान्यो * दई कूक मदरंध्र सुखान्यो ॥
तबहीं उचटि भये बल न्यारे * असुरसैन देखत हिय हारे ॥
हँसत निकट ठाढ दोउ भाई * देखि महावत रह्यो लजाई ॥
थकित रह्यो हाथी जब जान्यो * तब मनमें गजपाल डरान्यो ॥
जो ये बालक बधे न जाहीं * मारै कंस मोहिं पलमाहीं ॥
अंकुश मसकि सीसपर दीनो * बहुरि गयंदहिं तातो कीनो ॥
भयो क्रोध हाथी मनमाहीं * गंडस्थल मदअंबु चुचाहीं ॥
पवनबेगते आतुर धायो * गर्जि घुमड़ि दुहुँवनपर आयो ॥
महाकोप करि गहे कन्हाई * पऱ्यो दशन दै धरणि धसाई ॥
दो०–डरपि उठे तिहिं कालसब, सुरमुनि पुर नरनारि ॥
दुहूँ दशनबिच ह्वै कढे, बलनिधि प्रभु दै तारि ॥ १० ॥
सो०–उठे गजहिके साथ, बहुरि ख्यालहीं हाँक दै ॥
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके ॥ १० ॥
हाँक सुनत अति कोप बढायो * झटकि शुंड बहुरो गज धायो ॥
रहे उदरतर दबकि मुरारी * गये जानि गज रह्यो निहारी ॥
पाछे प्रकटि बहुरि हरि टेरचो * बलदाऊ आगेते घेरचो ॥
लागे गजहिं खिलावन दोऊ * चकित भये देखत सबकोऊ ॥
चहुँघाँ फिरत चक्रकी नाईं * सूँडि पूँछ क्षणक्षण व्है जाई ॥
नेक नहीं अवसर गज पावै * चारौ दिशि हरि कितउन पावै ॥
घात करत मनहीं मनमाहीं * गज रिसबिकल इन्हैं रिसनाहीं ॥

कबहूँ पूँछ पकारिकै झेलैं * ज्यों बालक बछरनसंग खेलैं ॥
कबहूँ इतउतते दोउ बीरा * भजत मारिकै मुष्टि गँभीरा ॥
कबहुँ उदरतर व्है कढि जाहीं * नेक छुवन पावत गज नाहीं ॥
नील पीत पट कटि फहराहीं * चपल नयन दीरघ बर बाहीं ॥
खेलत गजसंग चंचल राजैं * निर्तत मदन मनहुँ गति साजैं ॥
छन्द—जनु मदन निर्तत साजि गति, इमि श्याम अरु गज-खेलहीं ॥
कबहुँ खेलत पूँछ कर गहि कबहुँ आगे पेलहीं ॥
द्विरद लखिपुर नारिनर सब बिकलबिधिहिंमनावहीं ॥
बेगि मारैं श्याम गजकों हम निरखि सुख पावहीं ॥ ३ ॥
दीनों महाबत बहुरि अंकुश क्रोध करि हाथी चल्यो ॥
तबहिं हरि गहि पूँछ पटक्यों नेक नहिं भूपर हल्यो ॥
लये खैंचि मृणाल ज्यों रद सुमनझर देवन करी ॥
दासब्रजबासी हरषि सब असुरको सेना डरी ॥ ४ ॥
दोहा—हँसत हँसत मार्‍यो प्रबल, द्विरद कुवलिया श्याम ॥
सखन सहित ठाढे मुदित, छबि निरखत पुर बाम ॥ ११ ॥
सो०—मार्‍यो गज बल भ्रात, जहाँ तहाँ सब कोउ कहत ॥
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजवासीदासके ॥ ११ ॥

अथ मल्लयुद्ध लीला ६८

चले जहाँ सब मल्ल गुपाला * द्विरददंत धरि कंध बिशाला ॥
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई * श्रमशीकर मुखकमल सुहाई ॥
छबि अपार बलनिधि गंभीरा * संग गोपबालनकी भीरा ॥
सुनत कंस जिय अति भयमान्यो * नव नख ज्यों पिंजरअकुलान्यो ॥
भाजनको मनमाँझ बिचार्‍यो * भाजि न सक्यो लाजकोमार्‍यो ॥
गये रंगमहि मोहन जबहीं * यथाभाव दर्शे तहँ सबहीं ॥
उठे शङ्कि सब मल्ल अधीरा * बलसमूह देखे दोउ बीरा ॥
दुष्टो दैत्य हुते तहँ जेते * रूप भयानक दर्शे तेते ॥
कंससमीप भूप जे आये * तिन्हैं राजवंशी दरशाये ॥
साध सिद्ध देखहिं शुभ धामा * इष्टदेव पूरण सब कामा ॥

देखत सुरगण गगन सुखारी * सब देवनके देव मुरारी ॥
ग्वाल बाल देखत सब ऐसे * सदा संग खेलत व्रज जैसे ॥
दो०—महललते देखै प्रभुहिं, सकल सुन्दरी बाम ॥
कोटिकाम शोभाहरण, नव किशोर सुखधाम ॥१॥
सो०—देखत अति बिपरीत, कंस नृपति नँदलालको ॥
कंपि उठो भयभीत, प्रकट काल दर्शत भयो ॥१॥
सर्व-भाव-पूरण भगवाना * अबलहिं अबलबलहिंबलवान ॥
ललितहिं ललित साधुको साधू * छलन छली सबगुणन अगाधू ॥
जो जन जैसे ध्यान लगावै * ताको तिहिंबिधिदर्श दिखावै ॥
कहत देखि सब सुन्दर जोटा * येई नंद-महरके ढोटा ॥
रजक मारि नृपबसन लुटाये * कीन्हे कुब्जाअंग सुहाये ॥
इनहीं असुरसमूह सँहार्यो * धनुष तोरि हाथी इन मार्यो ॥
धरे कंध गजदंत बिराजै * बालक गोप सखा सँग राजै ॥
देखत असुर बीर चहुँ पासा * जिनके बश सब भूमि अकासा ॥
लीने घेरि कंस भय मानी * तब चाणूर कही हँसि बानी ॥
आवहु श्याम इतहिं पग धारो * सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो ॥
सबकोउ तुम्हरे बलहिं बखाने * हारि जीत काको को जाने ॥
कहा भयो जो गज तुम मारो * लरहु आज हम संग अखारो ॥
दो०—कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम ॥
हम बालक भोरे अबहिं, हमैं खेलसों काम ॥२॥
सो०—कहिये बात बिचार, हमैं तुम्हैं लरिबो कहा ॥
अयुगत यह ब्यौहार, आप देखि देखहु हमैं ॥२॥
जान देहु हमको नृपपाहीं * काहेको रोकत मगमाहीं ॥
नृप हमको करि हेत बुलायो * तुम यह हमको कहा सुनायो ॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे * तुमको बालक कहिये कैसे ॥
किये कर्म ब्रजमें तुम जैसे * देखे सुने नहीं कहुँ तैसे ॥
गिरि गोबर्द्धन करपै धार्यो * जलते काली नाग निकार्यो ॥
औरौ असुर बीर बलभारे * सुनियत खेलतहीं तुम मारे ॥

सो बल आज देखि हम लैहैं * आगे जान तुम्हैं तब दैहैं ॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई * त्यों त्यों भयव्याकुल अकुलाई ॥
कहि कहि बारहिं बार पठावै * मल्लनको बहु त्रास सुनावै ॥
क्यौंरे सकुच करत मनमाहीं * मारत बेगि शत्रु क्यो नाहीं ॥
ये दोउ बालक आज न मारो * करौं सकुल तौ नाश तुह्मारौ ॥
नृपसँदेश सुनि मल्ल डराने * कहत परस्पर मन सकुचाने ॥
दो०—लोन नृपतिको मानिक, नंद सुवनसों आज ॥
लरि मरिये कै मारिये, करैं कंसको काज ॥ ३ ॥
सो०—लेहु सुयश नृपपास, अब बिलंब नहिं कीजिये ॥
कछुक क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब ॥ ३ ॥
हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं * घाटि न कछु हमते बलमाहीं ॥
पशुपालक तुम कुँवर कन्हाई * जीते बहुतक पशुन खिलाई ॥
अबलगि नहीं मल्ल कोऊ भेंटो * अब तौ हम सङ्ग परचो चपेटो ॥
मल्लयुद्ध तुमसों हम लरिहैं * अब नरपतिको कारज करिहैं ॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहिं सुनावैं * भुजा ऐंठि रज अङ्ग चढावैं ॥
ठोकैं ताल गाज ज्यों गरजैं * गहैं गाँस हरितन तकि तरजैं ॥
आपुस में सब करत बिचारा * डारहु मारि उभय सुकुमारा ॥
सुनि २ हरि हलधर मुसकाहीं * बोले बहुरि बिहँसि तिहिंपाहीं ॥
सुनिये सकल मल्ल समुदाई * यहै तुम्हारे मन अब आई ॥
नृपपै हमैं जान नहिं देहौ * बड़ो सुयश हमसों लरि लेहौ ॥
निपट खोज अब परे हमारे * यह न बसी उर भली तुम्हारे ॥
हम न कहैं तो तुम चित जैसी * कहत कहा कीजै अब तैसी ॥
दो०—जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखिउठीं सब नारि ॥
देखो री मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमारि ॥ ४ ॥
सो०—अतिकोमल अति चोर, बाचैं कै सेहू दई ॥
कहत नयन जल ढार, क्यौं जननी पठये इहाँ ॥ ४ ॥
अतिहि निठुर उर जाति अहीरा * लोभ लागि पठये दोउ बीरा ॥
ये तौ बालक अतिहि अजाना * कियो कहा उन यह अज्ञाना ॥

होन चहत अब धौं यह कैसी * करत कंस यह बात अनैसी ।।
कहति सबै सबको यह भावै * करि सहाय बिधिइनहिंबचावै ।।
तोर्यो धनुष हत्यो गज जैसे * जीतहिं श्याम इनहुँको तैसे ।।
जोरि जोरि कर बिधिके आगे * आँचर छोरि छोरि सब माँगे ।।
तब चाणूर कृष्णपै आयो * सहज श्याम कटिपट लपटायो ।।
भुज भुज जोरि भये भिड़ ठाढ़े * तकि तकि दाँव चलावत गाढ़े ।।
ऐसेई मुष्टिक बलरामा * भिड़े उठाय बाद बलधामा ।।
दाऊ बीर लरत अति सोहैं * देखत सुर--नरके मन मोहैं ।।
दीर्घ नयन कमलनते आछे * ललित लालकछनी कटि काछे ।।
तनु चंदनचित्रित छबिजाला * वृषभकंध उर बाहु बिशाला ।।
दो०—शिरसों शिर भुजसों भुजा,दृष्टि दृष्टिसों जोर ।।
चरण चरण गहि झपटिकै, लपट झपट झकझोरि ।। ५ ।।
सो०—गहे न पावत घात, छुटि जात लपटात पुनि ।।
शिवबिधिपै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहत ।। ५ ।।
श्याम सहज मल्लनसों खेलैं * पकरि पकरि भुजदंडन पेलैं ।।
भये प्रथम कोमलतनु ताहीं * शिथिलरूप पर्णवत मनमाहीं ।।
तब चाणूर मनहिं गरबान्यो * हरिकेबलहिं तुच्छकरि जान्यो ।।
कोटिकुलिशसमतनु तिहिंकाला * तुरतहिं होय गये नंदलाला ।।
करिकैं कोप मुष्टि इक मारी * फूलसमान श्यामउर पारी ।।
पुष्पहुते कोमल तिहिं मान्यो * तिनमार्यो अपने जिय जान्यो ।।
भयो बेगि अति हर्षि नियारो * कहनलग्यो मुरि अहिरपछारो ।।
देख्यो हँसत गुपालहिं ठाढ़ो * पर्यो शोच प्राणन अति गाढ़ो ।।
नंदसुवनमहिमा तब जानी * निश्चय मीच आपनी मानी ।।
तब मोहन करि कोप हकार्यो * जनु गजको मृगराज पुकार्यो ।।
सुनत हाँक सब दाँव भुलानो * थर थराय चाणूर डरानो ।।
धर्यो धाय तब झपटि कन्हाई * पटक्यो महिगहि चरणफिराई ।।
छन्द—पटक्यो चरण गहि फेरि महि चाणूर अति बल साँवरे ।।
धसि गयो धरणी मसकि अंग सब विकट भूल्यो दाँवरे ।।

भयो शब्दाघात सुनि नृप कंस उर धसको पर्‍यो ।।
निरखि पुर नर नारि नभ सुर हर्षि हिय आनंद भयो ।।
पकरि ऐसिय भाँति तब बलराम मुष्टिक मारियो ।।
कहत धनि २ लोग सब जय जयति सुरन उचारियो ।।
मल्ल अरु अति मल्ल आदिक मल्ल तहँ जितने हते ।।
डपटि झपटि पछारिकै पुनि नंदसुत मारे तिते ।। २ ।।
दो०–जब मारे हरि मल्ल सब, परचो कटकमे शोर ।।
जिमि तारागण रबि उदय, छिपे असुर चहुँओर ।। ६ ।।
सो०–सखन सहित दोउ बीर, रंगभूमि राजत खरे ।।
हरण भक्त भय बीर, ब्रजबासी प्रभु नंद के ।। ६ ।।

अथ कंसासुरबध लीला ६९

जबहीं श्याम मल्ल सब मारे * चपे असुर सब लखि हिय हारे ।।
देखि कंस अति भयो दुखारी * सेनापतिन कहत दै गारी ।।
काँपत लिये खड्ग बहु क्रोधा * कहत गये कित रे सब योधा ।।
ले तलवार ढाल सबकोऊ * डारहु मारि नँदसुत दोऊ ।।
डारे मारि बीर सब मेरे * तनक छोहरा अहिरनके रे ।।
डर नहिं करत चले इत आवैं * देखहु जीवन जान न पावैं ।।
असुरवीर अपने सर जेते * लैलै नाम पठाये तेते ।।
कहा द्वारपालहिं भय बाढ़ो * करहु कपाट पौरिको गाढ़ो ।।
नृपभय मानि असुर सब धाये * अस्त्र शस्त्र लै हरिपर आये ।।
भये विकल लखि पुरनरनारी * मन मन देत कंसको गारी ।।
कहत कि भई कठिन यह बाता * बचहिं श्यामसोइकरहुविधाता ।।
आवत लखी असुरकी भीरा * भिरे हाँक दै दै दोउ बीरा ।।
छन्द–अवलोकि असुर समूह आवत हाँक दै दोऊ भिरे ।।
मनहुँ गजगण निरखि केहरि धाय तिन ऊपर परे ।।
सुनत शब्द गंभीर हरिको हहरि सेनापति गये ।।
लपकि गहि महि पटकि जहँ तहँ क्रोधकरि बलजु हये ।। १ ।।
श्याम गौर किशोर सुन्दर असुरगण बिच यों लरैं ।।

जनु शांत अरु शृङ्गार धरि तनु बीरकी करणी करैं ।।
जात नहिं बरणी चटक गहि पटक इत उत धावहीं ।।
भूमिभार अपार अघनिधि असुर निकर नशावहीं ।। २ ।।
दो०—पर्यो नगर खलभल सकल, अतिभय व्याकुल कंस ।।
पुनि पुनि मंत्रिन सों कहत, बढ्यो अधिक उर संस ।। १ ।।
सो०—कीजै कछू उपाय, जियत जात नहिं बन्धु दोउ ।।
मारहु नंद बुलाय, ब्रज कोउ रहन न पावहीं ।। १ ।।
पुनि वसुदेव देवकी दोऊ * मारहु कठिन बंधते सोऊ ।।
बहुरो उग्रसेनको मारौ * पितादोष कछु उर नहिं धारौ ।।
ऐसे पुनि पुनि बचन उचारे * कंपित रिसन खड्ग कर धारे ।।
क्षण बैठत क्षण उठत अधीरा * मारे असुर सकल दोउ बीरा ।।
अति बलवंत नंदके बारे * तब सकोप नृपओर निहारे ।।
गए मचान मचकि चढ़ि दोऊ * बाज झपट देखत सबकोऊ ।।
व्है गयो चकित नृपतिभयमान्यो * आयो काल निकट यह जान्यो ।।
रहि गयो लिये खड्ग करमाहीं * हरिको मारि सक्यो सो नाहीं ।।
तबहीं श्याम लात इक मारी * गिरि गयो मुकुट शीशते भारी ।।
दीनों ठेलि मंचते भूपर * कूदिपरे हरि ताके ऊपर ।।
तहाँ चतुर्भुज रूप दिखायो * सो स्वरूप दै स्वर्ग पठायो ।।
मार्यो कंस कहत सब बानी * जयध्वनि सुरगणगगनबखानी ।।
छन्द—जय ध्वनि गगन सुरगण बखानी सुमनकी वर्षाभई ।।
कहत सब हरि कंस मार्यो हाँक यह त्रिभुवन गई ।।
ब्रह्मादि सुरमुनि सिद्ध गंधर्व मुदित मन अस्तुति भनी ।।
भूमिसुर उपकार हित अवतार धरि त्रिभुवन धनी ।। ३ ।।
धन्य गज धनि मल्ल मारे धन्य कंसासुर अनी ।।
परसि तनु अनुपम लही गति जात नहिं महिमागनी ।।
धन्य अखिल ब्रह्मांडनायक भक्त हित नर तनु धर्यो ।।
धन्य ब्रजबासी सकल जिन प्रेम करि तुम बश कर्यो ।। ४ ।।
दो०—करि अस्तुति पुनि २ हरषि, सुमन बर्षि सुरवृँद ।।

सुदिल बजावत दुँदुँभी, कहि जय जय नँदनंद ।। २ ।।
सो०—मथुरा पुरनरनारि, अति प्रफुलित सबको हियो ।।
मनहुँ कुमुद बन चारि, बिकसत हरिशशिमुख निरखि ।।२।।
मार्‍यो कंस जबहिं भगवाना * भ्राता अष्ट तासु बलवाना ।।
करि २ कोप युद्धको धाये * ते पुनि सब बलदेव नशाये ।।
बहुरि केश गहि कंस मुरारी * दियो घसीटि यमुनजल डारी ।।
कीन्हो कछुक तहाँ विश्रामा * भयो विश्रामघाट तिहि नामा ।।
सुनि पति मरण कंसकी नारी * और सकल भ्राताकी प्यारी ।।
रोदन करि २ बिबिध बिलापा * सुमिरि भूपगुण रूप प्रतापा ।।
निजहित समुझि भयो दुखभारी * चहत मरण पतिनेह बिचारी ।।
गये तहाँ बहुरौ दोउ भ्राता * करुणामय कोमल सुखदाता ।।
करि प्रबोध बोलीं सब रानी * रहीं मस्त ते सुनि प्रभुबानी ।।
बहुत भाँति तिनको समुझाई * आये महलद्वार दोउ भाई ।।
कालनेमिको बंश सुहायो * उग्रसेन सुनिकै उठि धायो ।।
तिन प्रभुचरण आय शिर नायो * त्राहि २ कहि बचन सुनायो ।।
छन्द—त्राहि २ सुनाय आरत बचन प्रभु चरणन गिर्‍यो ।।
अब करहु करुणानिधि क्षमा अपराध यह हमतेपर्‍यो ।।
असुर मारे कंस भाइन सहित सो उचितै करी ।।
परद्रोहरत खलदलन हित अवतार यह तुम्हरो हरी ।।
करिकै कृपा अब प्रजा पालन हेतु प्रभु चित दीजिये ।।
बर बैठि सिंहासन सुभग यह राज मधुपुरि कीजिये ।।
सुनि दीन बचनन हर्षि हरि तब उग्रसेन उठायकै ।।
बहुभाँति करि सन्मान पुनि २ लिये हृदय लगायकै ।। ६ ।।
दो०—श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महाराज ।।
यदुबंशिनको शाप है, हमैं उचित नहिं राज ।। ३ ।।
सो०—करहु देव तुम राज, दूरि करौ संदेह सब ।।
हम करिहैं सब काज, जो आयसु देहौ हमैं ।। ३ ।।
जो नहिं माने आन तुम्हारी * ताहि दंड करिहैं हम भारी ।।

और कछू चित शोच न कीजै * नीतिसहित परजन सुख दीजै ।।
यादव जिते कंसके त्रासा * गृह तजि २ भजि गए प्रबासा ।।
तिन सबको अब खोजि बुलावो * सुख दै मथुरामाँझ बसावो ।।
विप्र धेनु सुर पूजन कीजै * इनकी रक्षामें चित दीजै ।।
यों प्रभु उग्रसेन समुझाये * राजसिंहासन पुनि बैठाये ।।
शिरपर मंजुल छत्र फिराई * निजकर चंवर लिये दोउ भाई ।।
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई * राखत जिनकी सदा बडाई ।।
बर्षि सुमन सुर कहत सुखारी * जय जय जय भक्तनहितकारी ।।
उग्रसेन नृप करि बैठायो * लखि मथुरालोगन सुख पायो ।।
धनि धनि कहत सकल नर नारी * अब करिहैं पितु मातु सुखारी ।।
यहै बात सब घरघरमाहीं * इनसम और जगत कोउ नाहीं ।।
छन्द--नर नारि सब यह कहत घर घर और नहिं इनते बियो ।।
धनि मातुपितु दिन रातिधनि सोजन्मजग जबहरिलियो ।।
गहि कंस सहित हाय मार्‍यो मरण नहिं रानिन दियो ।।
उग्रसेन नरेश करि पुनि चंवर कर अपने कियो ।।७।।
बिबुध हर्षे सुमन बर्षे सुथिर सब यदुकुल भयो ।।
अब लहहिं पितु मात सुनि सुख सकल दुख उनकोगयो ।।
हम जिए सब निरखि मुख छवि जन्मको फल जगलह्यो ।।
जियहु युग युग भ्रात दोऊ, हरषिपुर बासिन कह्यो ।।८।।
दो०--कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप ।।
कहाँ हमारे मात पितु, तब बोले सुखरूप ।।४।।
सो०--संगहिं चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब ।।
राम कृष्ण दोउ भाय, ब्रजबासीजन दुख हरन ।।४।।
उत वसुदेव सपन निशि आयो * हृदय हर्षि देवकिहिं सुनायो ।।
राम कृष्ण जनु मधुपुरि आये * सुफलकसुतसंग नृपति बुलाये ।।
असुर सैन हति कंसहिं मार्‍यो * उग्रसेन नृप करि बैठार्‍यो ।।
सुनि तिय कहै नयनभरि पानी * कहत कहा पिय ऐसी बानी ।।
सुनिहैं दूत कोऊ दुखदाई * कहिहैं अबहिं कंससों जाई ।।

हम करि पाप जन्म जग लीनो * सो फल हमहिं बिधाता दीनो ॥
बधे सात देखत हम आगे * बच्यो एक दुरि ब्रज लै भागे ॥
तापर बंदि करे हम दोऊ * धिक जीवन परबश जग जोऊ ॥
हमको नीच मीच विधि भूल्यो * होहु कंसको बंश निमूल्यो ॥
कहै वसुदेव रोव मति नारी * धोवौ बदन दीन्ह जल झारी ॥
कहियतहैं दुखहरण गोपाला * गर्ब–प्रहारी दीन दयाला ॥
व्है हैं प्रकट कबहुं सुखदाई * तात तुम्हारे त्रिभुवनराई ॥
दो०–अब जनि होउ अधीर तिय, धरिहु धीर सुख पाय ॥
आयु तुलानो कंसकी, देखत जाय बिलाय ॥ ५ ॥
सो०–स्वप्न वृथा नहिं जाय, मान प्रिया मेरो कह्यो ॥
आज काल्हिमें आय, तोहिं मिलै तेरे सुवन ॥ ५ ॥
इहि अंतर द्वारे हरि आये * ब्रज कपाट जहाँ जड़ि लाये ॥
करुणाकरि हरि तिनहिं निहारा * गये सहज सब उघरि किंवारा ॥
लखि वसुदेव सामुहे पाये * कहत कुँवर काके दोउ आये ॥
दयो दर्श तिहिं प्रेम सुहायो * जन्मसमय जो दर्श दिखायो ॥
मिले धाय पितु मात निहारे * कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे ॥
रोवत मधुर निरखि सुत दंपति * सुनहि कंस मनही मन कंपति ॥
तबहीं कृष्ण कह्यो सुन ताता * मार्यो कंस असुर हम माता ॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे * द्विरद कुवलिया दंत उखारे ॥
यह कहि करि पितु मात सुखारे * तुरत तोरि पगबंधन डारे ॥
तब जननी निश्चय करि जानी * रोवन लगी कंठ लपटानी ॥
बारहिं बार कहत उर लाये * मैं कहिं कबहूँ गोद खिलाये ॥
द्वादश बर्ष कहाँ रहे प्यारे * माता पिता जाहिं बलिहारे ॥
दो०–सुनि जननीके वचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय ॥
भये प्रेमबश दुखित लखि, बोले अति सकुचाय ॥ ६ ॥
सो०–लिख्यो न मेट्यो जाय, मति कर मात बिषाद चित ॥
अब पुरवै दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब ॥ ६ ॥
पुत्रजन्म जगमें सुखकारी * तुम पायो हमते दुख भारी ॥

मात पिता जाते दुख पावैं * वृथा जन्म सुत तासु बलावैं ॥
सो अब दोष न मनमें दीजै * होनहार ताको कह कीजै ॥
अब जननी सब शोच निवारो * तजौ शोक आनँद उर धारौ ॥
सकल मनोरथ तुम्हरे करिहौं * स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं ॥
अष्टसिद्धि नवनिधि लै आऊँ * घर घर मथुरामाँझ बसाऊँ ॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुख पायो * बार बार यहि कंठ लगायो ॥
अति आनन्द भयो मनमाहीं * सो कर्हिसकत शारदा नाहीं ॥
कहत तात तुमबदन निहारो * सुफल भयो अब जन्म हमारो ॥
सुतहित स्त्रवत पयोधर क्षीरा * मिटी सफल उरअन्तर पीरा ॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो * सिद्धिलाभ साधक जनु पायो ॥
पूरबपुण्य फल्यो सुखकारी * पायो सुत हित करि दैत्यारी ॥
तब देवकी कह्यो पतिपासा * भरी परम-आनन्द हुलासा ॥

अथ वसुदेव गृह उत्सव लीला ७०

दो०--तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीति सहित परि पाँय ॥
प्रथमहिं संकल्पी हुती, दई लक्ष ते गाय ॥ १ ॥
सो०--और दियो बहु दान, बंदीजन आये सुन ॥
परितोषे सन्मान, अति उछाह बसुदेव मन ॥ १ ॥

प्रकटे आज सुवन मम धामा * करहुँ जन्म--उत्सवकी सामा ॥
सुनि वसुदेव परम सुख पाई * हर्षद्वार दुंदुभी बंजाई ॥
यदुबंशी सिगरे जुरि आये * ध्वज पताक मंदिरन बधाये ॥
रोपे कदलीखंभ रसाला * बाँधी रुचि रुचि बंधन माला ॥
लखि हरिजन्म--अनंद--बधाई * निर्धि सिधि प्रकटीं सबहीआई ॥
हाटककलश अनेकबिधाना * मंगलद्रव्य रचे बिधि नाना ॥
गजमुक्तनके चौक बनाये * मंदिर सलिल सुगंध सिंचाये ॥
सुनि सब मथुरा पुर नर नारी * उमँगि उठीं आनँद उर भारी ॥
घर घर सबहिन मंगल साजे * द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे ॥
नवसत साजि सकल नर नारी * सजि सजि मंगल कंचनथारी ॥
गान करत कलकंठ लजावैं * श्रीवसुदेव--धामको आवैं ॥

दो०-जाति पाँति पुरजन प्रजा, बंधु हितू सब लोग ।।
लै लै आवत भेंट सजि, हर्षत निज २ योग ।। २ ।।
सो०-भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी ।।
धरि धरि मनुज शरीर, मानहुँ सुर आये सकल ।। २ ।।
तब जननी मन अति सुख पाये * उबटनकरि दोउसुत अन्हवाये ।।
निजकर अंग अंगोंछि सुहायो * तनुद्यु तिलखि सबतापनशायो ।।
केशर मलय मिलिय रुचिकारी * कियो तिलक बरभाल सुखारी ।।
भूषण बसन शृङ्गारत तैसे * राजकुँवर बर पहिरत जैसे ।।
कंचनमणिमय खचित नवीनो * क्रीटमुकुट शोभित शिर कीनो ।।
कलँगी ललित जड़ाव जड़ाई * तुर्रा मध्य अनूप सुहाई ।। ।।
गजमुक्तनके कुंडल कानन * अतिबिलाससबशोभितआनन ।।
कंठ पदकके हार बिराजै * उरविशाल पर अतिछबिछाजै ।।
पंचरत्नके अंगद नीके * शोभित भुजन भावते जीके ।।
कर चूरा नवरत्न निकाई * पाणिपल्लवन छाप सुहाई ।।
किंकिणिकलितललित रवकारी * कटिकेहरिपर वलित सँवारी ।।
चूरा चारु मनोहर पाँयन * चरणकमल भक्तनसुखदायन ।।
दो०-नील पीत बर बसत तन, दोऊ सुतन शृङ्गार ।।
चारु अलक मुख शशि झलक, निरखि जात बलिहार ।। ३ ।।
सो०-हुते श्याम के साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी ।।
पहिराये निजहाथ, जानि कृष्ण प्रियतम सबै ।। ३ ।।
ग्वाल बाल सब चकित निहारे * कहिनसकतकछु मनहिंबिचारे ।।
ए तो कृष्ण देवकी जाये * झूँठहि यशुमतिसुवन कहाये ।।
करत शोच मनहीं मनमाहीं * अब हरि ब्रज चलिहैं कै नाहीं ।।
तब दोउ कुँवर चौक बैठारे * बिप्रवृंद वसुदेव हँकारे ।।
विधिबत पूजि तिलक करवाये * दान बहुत हरिहाथ दिवाये ।।
बहुरि आरती मातु उतारी * लखिछबिमुदितसकल नरनारी ।।
बेदध्वनि महिदेवन कीन्हो * द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हो ।।
बधुनसहित सुर नभ यश गावैं * बर्षि कुसुम दुँदुभी बजावैं ।।

परमानंद सकल पुरबासी * निधिसिधि सब गृह २की दासी ॥
बहुरो सुखसहित दोउ भैया * निजकर परसि जिमाये मैया ॥
पूरो सकल कामना जीको * मिटी कल्पना दारुण हीको ॥
इहिबिधि मारि कंस यदुराई * मातुपिताको बंदि छुड़ाई ॥
छन्द—इहि भाँति कंसनिपाति यदपतिमातुपितुको सुखदयो ॥
हर्षि अति नर नारि मथुरा घरन घर आनंद छयो ॥
परम पावन यश सुहावन पलहिमें त्रिभुवन गयो ॥
जीव जल थल नाग नर सुर सरस रस जहँ तहँ भयो ॥
यह कंस हतन पुनीत नित नर सुनहिं जे पुनि गावहीं ॥
ते न भव बंधन परहिं फिरि अघ समूह नशावहीं ॥
मिटहिं दारिद दोष दुर्मति बिपति निकट न आवहीं ॥
सकल मनबांछित लहैं फल भक्ति अबिचल पावहीं ॥
दो०—कठिन शूल संकट हरण, मंगल करण अशेष ॥
राम कृष्णके चरितबर, गावत सुनत विशेष ॥ ४ ॥
सो०—नरतनु पाय सुजान, अनुदिन गावहिं हरिकथा ॥
सकल सुखन को खान, ब्रजबासी प्रभुको सुयश ॥ ४ ॥

अथ कुब्जा गृह प्रवेश लीला ७१

श्रीयदुकुल—कुलकमल—तमारी * दीनबंधु भक्तन—हितकारी ॥
करिकै जननी जनक सुखारी * तब कुब्जाकी सुरत सँभारी ॥
नृपतिभवन तजिके अभिरामा * चले वसन कुब्जाके धामा ॥
कृष्णकृपा सबहींपैं न्यारी * भाव भजन कुब्जा भइ प्यारी ॥
साँचो भाव हृदय जहँ जाने * बिवश होय तिहिं हाथ बिकाने
नारि पुरुष कछु नाहिन भेदा * नीच ऊँच नहिं करत निषेदा ॥
प्रथमहिं आइ मिली मग पाँई * सोहित मान लियो यदुराई ॥
चंदन चर्चि तनक तनु दीन्हो * मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हो ॥
अतिअकुलीन कंस की दासी * परसत पावन भई रमासी ॥
आये प्रभु सुनि ताके धामा * भक्तबत्सल है जिनको नामा ॥
जब कुबजा जान्यो हरि आये * पाटंबर पाँवड़े बिछाये ॥

अति आनंद लये उठि आगे ✻ पूरण पुण्यपुंज सब जागे ॥
दो०-टेढ़ीतैं सूधी करी, दियो रूप अभिराम ॥
दासी तैं रानी भई, पूरे सब मनकाम ॥ १ ॥
सो०-को करिसकै प्रकाश, अति बिचित्र हरिके गुणन ॥
सदा दासकेदास, भये रहैं प्रभुजननको ॥ १ ॥
पुरबासिन सबहिन यह जानी ✻ राजा हरि कुब्जा पटरानी ॥
घर घर कहत सकल नर नारी ✻ कियो कहा धौं इन तप भारी ॥
मिली तनक चंदन दै मगमैं ✻ भई बिदित पावन सब जगमैं ॥
यह महिमा कछु कहत न आवै ✻ को ताकी पटतर अब पावै ॥
भूलि कहत कुब्जा जो कोऊ ✻ ताहि रिसाय उठत सबकोऊ ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी ✻ दासी कहत डरत नर नारी ॥
करत त्रास मनमैं सब प्रानी ✻ डारहि मारि सुनै जो रानी ॥
जाहर कृपा करैं यदुराई ✻ ताहि नहीं कछु यह अधिकाई ॥
सदा सदा हरिकी यह रीती ✻ मानत एक भक्तासों प्रीती ॥
धनि धनि कुब्जा हरिकी रानी ✻ धनि २ कृष्ण प्रीति कर मानी ॥
धनि २ चंदन अङ्ग लगायो ✻ धनि २ भवन जहाँ हरि आयो ॥
कहि २ सब सुरनारि सिहाहीं ✻ आज कूबरीसम कोउ नाहीं ॥
दो०-बसे श्याम कुब्जासदन, तहं करि कछु बिश्राम ॥
पुनि आये वसुदेवगृह, जनमन पूरण काम ॥ २ ॥
सो०-तब श्रीनंदकुमार, ब्रजबासिनकी सुरति करि ॥
मनमें कियो बिचार, अब सब चलिये नंदपै ॥ २ ॥
लै वसुदेव संग दोऊ भाई ✻ गये जहँ उग्रसेन नृपराई ॥
तहाँ बहुरि यादव सब आये ✻ अरु अक्रूर उद्धवहिं बुलाये ॥
तब हरि ऐसे बचन सुनाये ✻ मम हित ब्रजबासी सब आये ॥
नंदादिक सब गोप जितेका ✻ रह्यौ नहीं ब्रजमें कोउ एका ॥
गाय बत्स सब तजे अनेरे ✻ हैं सूने मंदिर सबकेरे ॥
व्हैहै दुखित यशोमति मैया ✻ जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया ॥
बहुत हेत उन सों हम कीनो ✻ बिबिधभाँतिअबलौं सुख दीनो ॥

सकुचतहौं अपने मनमाहीं * उनसों उऋण कबहुँ मैं नाहीं ।।
पलटो नहीं जो उनको दीजै * अब चलि बिदाउन्हैंब्रज कीजै ।।
सुनि हरिबचन परमसुख पाई * सब मिलि चले जहाँ नँदराई ।।
सुनो नंद गोपन यह बाता * मारचो कंस जाउ दोउ भ्राता ।।
साँच नहीं मनमैं कछु माने * प्रजाभाव सब रहे सकाने ।।
दो०—मनहींमन शोचत खरे, नहिं आये बलराम ।।
ब्रजते आये व्हैगयो, तिन्हैं आयबो बाम ।। ३ ।।
सो०—अब कैसे ब्रज जाहिं, बल मोहन दोऊ बिना ।।
अति व्याकुल उरमाहि, कब धौं नयनन देखिहौं ।। ३ ।।

अथ नंद बिदा लीला ७२

आये तबहीं कुँवर कन्हाई * नृप वसुदेवसहित दोउ भाई ।।
देखत नंद मिले उठि धाई * लिये लगाइ कंठ सुख पाई ।।
अब चलिहैं ब्रजको यह जान्यो * अति आनंद हृदय हर्षान्यो ।।
लखि वसुदेव बहुत सुख पाई * मिले नंदसों सादर धाई ।।
उग्रसेन तब नंद जुहारे * आदरसहित सकल बैठारे ।।
उग्रसेन बसुदेव उपँगसुत * सुफलकसुत अरु यादवगणयुत ।।
बैठे मिलि हरि हलधर भाई * नंदहिं लिये निकट बैठाई ।।
औंर गोप ठाढ़े सब पेखैं * यशुमतिसुतको भाव न देखैं ।।
नंद मनहिं मन अति अकुलाहीं * चलत बेगि अब ब्रज क्यों नाहीं ।।
सबहींके मनमें यह आई * हरि अब हमसों प्रीति घटाई ।।
करत बिचार श्याम मनमाहीं * प्रीतिबिबश बोलत सकुचाहीं ।।
तब हरि यों मुख बचन उचारो * बहुत कियो प्रतिपाल हमारो ।।
दो०—उझकि परे नँदराय सुनि, कहा कहत गोपाल ।।
मोसों कहत कि आनसों, किन कीन्हो प्रतिपाल ।। १ ।।
सो०—चौंकत जिय नंदराय, मति ऐसे मोसों कहौ ।।
गहबर हिय भरि आय, ढारि सकत नहिं नयनजल ।। १ ।।
तब हरि मधुर कह्यो नँदपाहीं * सुनहु तात हम कहत लजाहीं ।।
कही गर्ग तुमसों जो बानी * सो तुम तब निश्चय नहिंजानी ।।

पुत्रहेत हमको प्रतिपारे * तात मात जिमि अधिक दुलारे ॥
खेलत हँसत बसत ब्रजमाहीं * जात इते दिन जाने नाहीं ॥
हमको तुम दीन्हो सुख जितनो * कह्यो न जात बदनते तितनो ॥
तुमसम मातपिता न हमारे * तुम्हरे हेत होत सुखकारे ॥
बिछुरन मिलन मोह अरु माया * यह प्रपंच जग बिधि उपजाया ॥
व्हैहै दुखित यशोमति मैया * मोबिन ब्रजतिय अरु सब गैया ॥
ताते गवन बेगि ब्रज कीजै * जाय सबनको धीरज दीजै ॥
यशुमतिसों विनती मम कहियो * माने सदा पुत्रहित रहियो ॥
मेरी सुरति न उरते टारो * मैं तुमते कबहूँ नहिं न्यारो ॥
हरि यों नंदहिं बचन सुनाई * बहुरो रहे सकुचअरगाई ॥
दो–निठुर बचन सुनि श्यामके, भये बिकल अति नंद ॥
उमँगि नीर नयनन चल्यो, परिगये दुखके फंद ॥ २ ॥
सो०–दुखित सखा अरुगोप, चकित रहे हरि मुख निरखि ॥
करत मनहिं मन कोप, ये चरित्र अक्रूरके ॥ २ ॥
परे नंद तब चरणन धाई * कहत न ऐसे कबहुँ कन्हाई ॥
हौं मोहन तजि चरणन जैहौं * तुमबिनु जाय कहा ब्रज लैहौं ॥
मधुबन तुमहिं छाँड़ि जो जाऊँ * यशुदहिं उत्तर कहा सुनाऊँ ॥
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहै * तुमबिन काहि गोदकरि लैहै ॥
पंथ निहारत व्हैहै मैया * चलहु बेगि तुम कुँवर कन्हैया ॥
सद माखन मति कीन्हो व्हैहै * कहो सो तुमविनु काहि खवैहै ॥
क्यों जोहै बिन दर्शन पाये * होत निठुर कत मथुरा आये ॥
बारह बर्ष कियो हम गारो * नहिं जान्यो परताप तुम्हारो ॥
अब प्रकटे वसुदेवकुमारा * कीन्हौ बचन गर्ग निर्धारा ॥
कत हमकाज महारिपु मारे * कत दरिद्र दुख हरे हमारे ॥
डारि न दियोकमलकरगिरिवर * दबि मरते ब्रजजन ताके तर ॥
कहैं नन्द यों बिकल अधीरा * भई कठिन बिछुरनकी पीरा ॥
दो०–देखि प्रीति अति नन्दकी, मन वसुदेव सिहात ॥
सकुचि रहे सब प्रेमबश, कहि न सकत कछु बात ॥ ३ ॥

सो०—व्याकुल सबै अहीर, मानहुँ पन्नगके डसे ॥
हरिमुख लखत अधीर, ठाढ़े काढे चित्रसे ॥ ३ ॥
तब हलधर नन्दहिं समुझावत * कहत तात तुम कत दुखपावत ॥
कहि कछु काज बहुरि ब्रज आवैं * तुमबिन और कहाँ सुख पावैं ॥
हरि प्रकटे भूभार–उतारन * कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन ॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ * तुम्हरेइ सुवन कहावैं दोऊ ॥
हमैं तुम्है सुत पितुकौं नातो * और पऱ्यो अब होत न हाँतो ॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो * जाय कहाँ उर ध्यान तुम्हारो ॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै * तुम्हैं गये धीरज कछु पैहै ॥
व्याकुल नंद सुनत यह बाणी * पुनि २ कहत जोरि युग पाणी ॥
अबकै चलहु श्याम मम गोहन * ब्रजमैं मिलि आवहु फिरमोहन ॥
माऱ्यो कंस कियो सुरकाजा * दीन्हो उग्रसेनको राजा ॥
सुख वसुदेव देवकी पायो * भयो सकल यदुकुल मन भायो ॥
तदपि यशोमतिबिन गिरधारी * को जाने प्रभु टेंव तुम्हारी ॥
दो०—ऐसे कहि अति बिकल ह्वै, रहे नंद गहि पाँय ॥
भई क्षीण द्युति हीन मति, नयनन जल न रहाय ॥ ४ ॥
सो०—मायारहित मुकुंद, नहीं विरहसंयोग तिहिं ॥
ब्रह्म पूरणानंद, सबघटबसी एकरस ॥ ४ ॥
देखि बिरह अति कातर नंदहिं * सखावृंद अरु सब उपनंदहिं ॥
बिछुरत तजन चहत हैं प्राना * तब यह चरित रच्यो भगवाना ॥
मेरी अतिदुस्तर निजमाया * जिनकरि जीवबिमुखभरमाया ॥
तिन कछु द्वंद कियो मानमहीं * तब हरि बोध कहत नंदपाहीं ॥
कत पछतात तात हौ एतो * ब्रज अरु मथुरहिं अन्तर केतो ॥
कहा दूर तुम तौ कहुँ जाहीं * करि बिचार देखौ मनमाहीं ॥
हैं ब्रजके नर नारि दुखारी * ताते कीजत बिदा तुम्हारी ॥
ऐसे बोध कियो ब्रजनाथा * तब नंद कह्यो जोरि युगहाथा ॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई * तौ अब मेरो कहा बसाई ॥
हैं ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे * जात बचन मोपै क्यों टारे ॥

बहुत करी तुम मम प्रभुताई * नीचदशा लै ऊँच चढ़ाई ॥
परमगवाँर ग्वाल पशुपाला * भयो धन्य सब जगत बिशाला ॥
दो०—मेटि पापसंताप सब, कियो सुकृतकी खान ॥
भरो साख चौदह भुवन, सुर मुनि बेद पुरान ॥ ५ ॥
सो०—ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरि के चरण ॥
लीन्हें श्याम उठाय, कह्यो जान सन्मानि तब ॥ ५ ॥
तब वसुदेव बिनय बहु भाषी * आगे बहुत संपदा राषी ॥
कियो जो हमप्रति तुम उपकारा * ताको बदलो नहिं संसारा ॥
बालक ये अपनेहीं जानौं * इहाँ उहाँ कछु भेद न मानौं ॥
सुनि २ नंदमहर पछिताई * रहे ठगे तनुदशा भुलाई ॥
ऊर्ध्व श्वास नयनन बह पानी * कंपित तनु कहि जान नबानी ॥
सो कछु संपति नंद न लीन्ही * बितनी बहुरि श्वाससों कीन्ही ॥
माँगतहौं प्रभु यह कर जोरी * ब्रजपर कृपा होय नहिं थोरी ॥
तब सब गोप नृपतिपहँ आये * बहुत बोध करि ब्रजहिं पठाये ॥
गोप सखा बोधे हरि सबहीं * बिदा किये आदर दै तबहीं ॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी * हारे सर्बस मनहुँ जुवाँरी ॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं * लपटत चरण परत मगमाहीं ॥
ब्रजतन जात बिलोकत मधुबन * बिरहबिथा बाढ़ी व्याकुल तन ॥
दो०—भये बिरहबारिधिमगन, अति अचेत अकुलाय ॥
श्याम राम तजि मधुपुरी, आये ब्रज नियराय ॥ ६ ॥
सो०—उतहिं गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेवयुत ॥
ब्रजबासिनको नेह, पुनि २ श्रीमुखते कहत ॥ ६ ॥
पुनि २ नंद कहत पछताई * चूक परी हरिकी सेवकाई ॥
कहँलगि गनिये यह अपराधू * किये कर्म हम परम असाधू ॥
कोमल पद बन अति कठिनाई * तहँ हरिपै हम गाय चराई ॥
रंजक दधिके काज रिसाई * बाँधे यशुमति ऊखल लाई ॥
इंद्रकोप ब्रजलोग बचाये * बरुणलोक मम हित उठि धाये ॥
हम मतिमंद न उनहीं जाने * निकट बसत नाहिंन पहिचाने ॥

तनु धन लोभ कंसभय पाई * करि दीने आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नंद निजकरणी * परे मूर्छि व्याकुल अति धरणी ॥
बार बार जोवत मग माता * व्याकुल बिन मोहन बल ताता ॥
आवत देखि गोप ब्रजओरी * हर्ष हृदय आतुर उठि दौरी ॥
धाई धेनु बत्सको जेसे * माखनप्यारे . हैं धौं कैसे ॥
कनियाँ लेबेको अतुरानी * आये बल मोहन यह जानी ॥
दो०—धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी माय ॥ ॥
दर्शआश धाईं सबै, ब्रजतिय हिय हुलसाय ॥ ७ ॥
सो०—तिहिंक्षण अति आनंद, ब्रजबासीब्रजतिय सबै ॥
अतिसकोच बश नंद, सो दुख जात कह्यो नहीं ॥ ७ ॥

अथ ब्रजकी की बिरह लीला ७३

आतुर सकल गईं नँदपासा * मनमोहनदर्शनकी आसा ॥
देखे नंद गोप सब देखे * श्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई * कहँ मेरे श्याम राम दोऊभाई ॥
सुनत बचन व्याकुल नँदराई * नयन नीर भरि नारि नवाई ॥
देखत सूखि गईं ब्रजनारी * जनुप्रफुलितकुमुदिनहिममारी ॥
जान्यो आनि भई विधि सोई * कहि गये बचन गर्गमुनि जोई ॥
अति व्याकुल सबबिन ब्रजनाथा * मनमहँ गुनि २ हरिगुणगाथा ॥
परे भूमि सब टेर लगाई * कौन दोष प्रभु हम बिसराई ॥
यशुमतिअतिबिलपतबिलखानी * कहत सरोष नंदसों बानी ॥
धिक धिक महर कहा यह कीन्हो * मथुरातजि सुत ब्रजपग दीन्हो ॥
मारग सूझि पर्‍यो किहिं भाँती * बिदा होत फाटी नहिं छाती ॥
अर्धबचन सुनतहिं उठि धाये * कहा लेन सुख ब्रजमें आये ॥
दो०—कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँदकंद ॥
सुनी नहीं दशरथकथा, कहूँ श्रवण मतिमंद ॥ १ ॥
सो०—मैं मधुपुरिही जाय, रहिहौं हरिकी धाय व्है ॥
लीजै ठोंकि बजाय, अब अपनो ब्रज नंद यह ॥ १ ॥
यह सुनि नंद परे मुर्झाई * अति व्याकुल ब्रज लोग लुगाई ॥

पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे * कहँ छाँड़े दोऊ सुत मेरे ॥
जीवनप्राण सकलब्रजप्यारो * छोरि लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलकसुत बैरी भयो भारो * लै गयो जीवनमूरि हमारो ॥
हौं न गई हरिसंग अभागी * सिखये इन लोगनके लागी ॥
जो मैं जान पावती गोहन * तो क्यों छाँड़ि आवती मोहन ॥
ऐसे रोवत करत बिलापू * कहि न जात यशुमतिपरितापू ॥
हरिबिन नर नारि उदासी * आये ब्रजहिं सकल ब्रजबासी ॥
नहीं श्यामबिन सदन सुहाई * मनहुँ मसानभूमि धरि खाई ॥
पूँछत बिलपि यशोमति मैया * कहौं नंद कह कह्यो कन्हैया ॥
तुमको बिदा ब्रजहिं जब कीन्हो * हरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हो ॥
तुम कछु हरिमों बिनयन भाषी * कहा श्याम मनमें यह राषी ॥
दो०—मैं अपनोसो बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ ॥
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ ॥ २ ॥
सो०—कहिकै तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो ॥
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसो आय ब्रज ॥ २ ॥
पुनि बोले ऐसे बल भैया * दुखी होन पावै नहिं मैया ॥
धीरज देहु तात तुम जाई * कछु दिनमें हम मिलिहैं आई ॥
पठयो मोहिं तोहिंहितलागी * ताब मैं बचन सक्यों नहिंत्यागी ॥
सुनि सँदेश यशुमति दुखपागी * रहे प्राण हरिचरणन लागी ॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं * गहि रहि मिलनआ शमनमाहीं ॥
ब्रज घर घर सब कहत गुवाला * किये कृष्ण मथुरा जो ख्याला ॥
मार्यो रजक जाय हरि जबहीं * नहिं निबहैं जान्यो हम तबहीं ॥
चंदन बहुरि कंसको लीन्हो * रूप अनूप कूबरिहिं दीन्हो ॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डार्यो * फिरि दोउभाइनगजको मार्यो ॥
रंगभूमि सब मल्ल पछारे * असुर अनेक युद्ध करि मारे ॥
कहत हुते ब्रजमें हरि जैसे * कियो जाइ कंसहिं पुनि तैसे ॥
केश पकरि महि तुरत गिरायो * मारि यमुनजलमाहिं बहायो ॥
दो०—उग्रसेन राजा कियो, निजकर चमर ढुराय ॥

मथुरा नर नारिन सबै, आनंदे सुख पाय ।। ३ ।।
सो०—पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेवसों ।।
कह्यो परम सुख पाय, तात मातु कहि भ्रात दोउ ।। ३ ।।
तहाँ भयो उतसव अति भारी * दियो दान बहु विप्र हँकारी ।।
हरिहिं बसन भूषण पहिराये * मंगल सब नरनारिन गाये ।।
मथुरा घर घर बजी बधाई * बहु संपति वसुदेव लुटाई ।।
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं * वासुदेव सब नाम चलावैं ।।
यदुकुलकमल सकलजगनायक * बिरद बान वर्णत गुण गायक ।।
भये कृष्ण मथुराके राजा * अहिरन देखि लगतअति लाजा ।।
पुनि ग्वालन यह बात सुनाई * बसे श्याम कुब्जागृह जाई ।।
भये तासुबश अति हित मानी * कीन्ही ताहि आपनी रानी ।।
राजा हरि कुब्जा भई रानी * गोपिन सुनी जबहिं यह बानी ।।
गई विरहतनुतपनि सिराई * सौतिसाल साल्यो उर आई ।।
भयो दुसह दुख ऊरध-श्वासा * मिटी श्याम आवन की आशा ।।
नयनन जलधारा अति बाढ़ी * रहीं शोच बैठी कोउ ठाढी ।।
दो०—जुरि आईं ब्रजतिय सबै, सुनि कुब्जाकी बात ।।
लागीं आपुसमें कहन, मन दुख मुख हर्षात ।। ४ ।।
सो०—करी सुहागिन श्याम, कुब्जा दासी कंसकी ।।
आपुनपति वह बाम, कियो नाम तिहुँपुर बिदित ।। ४ ।।
लै श्रीखंड मिलो मग आई * सुनिअत ताते अति मन भाई ।।
बुरी भली कछु जात न चीन्ही * बहुत रूप दै सम करि लीन्ही ।।
वै बहुरमण नगरकी सोऊ * बन्यो संग अब नीको ओऊ ।।
कहत जु वह सोई अब मानैं * निशिदिन वाके गुणहिं बखानैं ।।
जानि अनोखी नेह बढ़ावैं * अब नहिं सखी श्याम ब्रजआवैं ।।
अपर कह्यो कछु रोष जनाई * श्याम सदाके ऐसेइ माई ।।
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो * कानलागी तब इहै सुनायो ।।
इन्हैं कूबरी नारि बताई * तबहिं गये ताके सँग धाई ।।
बोली एक और तिनमाहीं * कुब्जा तुम देखी कै नाहीं ।।

दधिबेचन जब जात तहाँ री * तब नीके हम ताहि निहारी ॥
अतिटेढ़ी मालिनकी जाई * हँसत जाहि सब लोग लुगाई ॥
वसत ढिगन नृपमहलन जोई * सुनियत करी सुन्दरी सोई ॥
दो०—कोटि बार दाहौं अनल, कोटि कसो किन सोय ॥
तो कत पीतरते कहूँ, कैसेहु सोनो होय ॥ ५ ॥
सो०—हरि तजि दीन्हो लाज, हमैं होत सुनिकै हँसी ॥
जाय कूबरीकाज, मथुरा मार्‍यो कंस नृप ॥ ५ ॥
बोली सखी और इक बानी * अलि यक बात नहीं तुम जानी ॥
कुबजा सदा श्यामकी प्यारी * वे भरता उनकी वह नारी ॥
तैसे तहाँ ताहि करि दासी * राखी ये अविगति गुणरासी ॥
रूप रत्न कुबरीमें राख्यो * जिमि मोती सीपनमें भाख्यो ॥
कंस मारिकै सो अब लीन्हों * ताकी प्रभुता प्रकट न कीन्हों ॥
ब्रजबनिता त्यागी अब तातें * बूझी सकल श्यामकी बातें ॥
कहत एक तब सुनि सखि ऐ री * वे दिन हरिको बिसरि गए री ॥
लियेफिरतही जब सब कनियाँ * पहिरावन सिखए हम तनियाँ ॥
घर घर डोलत माखन खाते * यशुदहिं उरहन देत लजाते ॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने * बाट घाट अवगुण बहु ठाने ॥
जो जो उन हमसों गुण ठान्यो * हम सब ताहीमें सुख मान्यो ॥
जिमि भजि आप गोकुलै आये * गोपबेष करि रहे छिपाये ॥
दो०—देव मनावत दिन गये, बड़े होनेकी आस ॥
बड़ेभये तब यह कियो, बसे कूबरीपास ॥ ६ ॥
सो०—यशुमति लाड़ लड़ाय, बारेते सेवा करी ॥
ताहूको बिसराय, भये देवकीपुत्र अब ॥ ६ ॥
सुनौ सखी अब कह्यो हमारो * नहिं कीजै तिनको पतियारो ॥
जे जन जगमें कृतहिं न मानैं * निजस्वारथलगि बहुगुण ठानैं ॥
ज्यों भौंरा कल कुंज सुहाई * बैठत चाहि सुमन पर आई ॥
रसहिंचाखि पुनि हितनहिं मानैं * तहीं जात जहँ नूतन जानैं ॥
पालत काग पिकहिं हित माने * मिलत कुलहिं जब होत सयाने ॥

सोई भई हमहिं अरु नंदहिं * कहिये कहा सखी गोविंदहिं ।।
जे खोटे मन कपट सयाने * अवसरपरे परैं पहिँचाने ।।
बैठत अब नृपआसनमाहीं * सुनियत मुरली देखि लजाहीं ।।
मोरपंख देखे नहिं भावैं * ब्रजको नाम लेत बहरावै ।।
सुरभी चित्रहुमें जो हेरत * तौ लजाय इत उतमुख फेरत ।।
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं * सुरत करत ग्वालनकी नाहीं ।।
वे कह जानैं पीर पराई * जिनकी प्रकृति परी यह आई ।।
दो०—भयो नयो अब राज व्हाँ, नये मात पितु गेह ।।
नई नारि कुब्जा मिली, भए सखा नव नेह ।। ७ ।।
सो०—बिसरी ब्रजकी बात, कुंजकेलि रस रासको ।।
गये आपनों घात, दिन दिन सुख दूनो लहैं ।। ७ ।।
कौन बातको करैं परेखो * सखि अपनेजियशोचि न देखो ।।
ना हरि जाति न पाँति हमारी * तिनको दुख मानिये कहा री ।।
गोपीनाथ नंदके लाला * अब न कहावत कान्ह गुवाला ।।
बासुदेव अब उहाँ कहावत * यदुकुलदीप भाटबर गावत ।।
नहिं बनमाल गुंज उरमाहीं * मोरपक्ष माथे पर नाहीं ।।
गृहबनकी सब प्रीति भुलाई * वा मुरलीसंग गई सगाई ।।
अब वह सुरत्ति होत कत राजन * दिनदशप्रीति करी निजकाजन ।।
सबै अजान भई तिहिं काला * सुनि मुरलीको शब्द रसाला ।।
अब मन जलनिधि खगज्योंथाकै * फिरि २ शरण जहाँ जहि ताकै ।।
कहत एक सुन री ब्रजनाथा * ब्रज अब मानहुँ कियो अनाथा ।।
तब वह कृपा हुती ब्रजपाहीं * राख्यो गिरिवर करतलमाहीं ।।
बहुरौ और प्रताप कियो री * हमहित दावानल अँचायो री ।।
दो०—अब अति दोष लगै हमैं, समूझत सकुचत जीय ।।
भयो बज्रहूते कठिन, बिछुरत फट्यो न हीय ।। ८ ।।
सो०—अबलागे दिन जान, सुन सखि मोहन लाल बिन ।।
रहत देहमें प्राण, बिन वह मूरति साँवरी ।। ८ ।।
रहत बदन देखे बिन नैना * श्रवण न रहत सुने बिन बैना ।।

रहत हियौ बिन हरि कर परसे * बेधत बाण मनोभव बरसे ॥
अब सखि यों सहियत दुख भारो * मनहुँ नयन तन प्राण हमारो ॥
जब विधि बालक बत्स चुराये * तब हरि तैसेइ और बनाये ॥
जनु वैसेई कुँवर कन्हाई * बिरहवृष्टि ब्रजओर चलाई ॥
ऐसे मन गुण गुणि गोपाला * भईं बिरहबश सब ब्रजबाला ॥
अतिही कठिन भयो दुख मनमें * व्यापी दशम अवस्था तनमें ॥
कोउ कह लोचन दीन हमारे * क्यों जीवहि बिनश्यामनिहारे ॥
ज्यों चकोरबिन चंद दुखारी * जैसे बारिज बिन बारी ॥
बिवरण जिमि ग्रीषमके खंजन * जैसे दुखी भ्रमर बिन कंजन ॥
श्याम सिंधुते बिछुर परे री * तरफरात ज्यों मीन खरे री ॥
भरत ढरत पुनि २ अकुलाहीं * हरि बिन-धरत धीर दृगनाहीं ॥
दो०—देख्यो नाहिं सुहात कछु, गृह बन बिन नँदनंद ॥
बिरहव्यथा जारत नहीं, भयो तपन अति चँद ॥ ६ ॥
सो०—बिनश्वासाकी देह, और रूप हो जात जिमि ॥
तिमि लागत ब्रज गेह, हरिबिन सखी भयावनो ॥ ६ ॥
इहि बिरियाँ बनते हरि आवत * दूरहिते कल बेणु बजावत ॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला * गावत ऊँचे स्वरन रसाला ॥
कबहुँक लै लै नाम सुनावत * धौरी धूमरि धेनु बुलावत ॥
देत दृगन सुख बनते आई * वह मनमोहन रूप दिखाई ॥
और सखी बोली इक ऐसे * बहुरौ कबहुँ देखिये वैसे ॥
बैठे ग्वालबालकन साथा * बाँटत खात अशन ब्रजनाथा ॥
इक दिन दधि चोरत मम धामा * मैं दुरि देखि रहीं छबिश्यामा ॥
वे भाजे मम लखि परछाँहीं * तब मैं धाय लही गहि बाहीं ॥
मुखकर पोंछिलिये गहि कनियाँ * प्रेम प्रीति रसके सुखदनियाँ ॥
रहे लागि छातीसों जैसे * सो वह कह्यो जात सुखकैसे ॥
जिन धामन वे सुख अविलोके * ते अब धरि धरि खातविलोके ॥
सुमिरि २ वे गुणगण नाना * हरिबिन रहत अधम तन प्राना ॥
दो०—कहँलगि कहिये ए सखी, मनमोहन के खेल ॥

उन बिन अब गोकुल भयो, ज्योंदीपक बिन तेल ।।१०।।
सो०—रहत नयन जल छाय, सुमिरि २ गुण श्याम के ।।
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब ।।१०।।
एक प्रलाप करति तिनमाहीं * कहै जाय कोऊ हरिपाहीं ।।
लेहु आय निजगायन घेरी * फिरत नाहिं ग्वालनकी फेरी ।।
बिडरी फिरत सकल बनमाहीं * तुम बिन नाहीं काहि पतियाहीं ।।
अपनी जानि सम्हारहु आई * मति बिसरो ब्रजहेत कन्हाई ।।
बिलखत गाय बत्स सब ग्वाला * नेक सुनावहु बेणु रसाला ।।
बूड़त बिरहसिंधुमें नारी * लेहु आइ गहिभुजा निकारी ।।
कोऊ कहत कहै कोउ जाई * बसौ फेरि ब्रज कुँवर कन्हाई ।।
अब नहिं तुमसों गाय चरावैं * नहिं जगाय बन प्रात पठावैं ।।
माखन खात बरजिहैं नाहीं * नहिं उरहन यशुदहिं लै जाहीं ।।
नहिं दाँवरि यशुमतिको दैहैं * नहिं अब ऊखलसों बँधवैहैं ।।
चोरी प्रकट करैं नहिं काहू * नहीं जनावहिं अवगुण ताहू ।।
बेनी फूल गुहन नहिं कैहैं * नहीं महावर चरण दिवैहैं ।।
दो०—माँगत दान न बरजि हैं, हठ नहिं करिहैं मान ।।
आय दश अब दीजिये, रहत न तुम बिन प्रान ।।११।।
सो०—ऐसे कहि गहि पाँय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि ।।
बसहिं बहुरि ब्रज आय, तौ नँदनंदन साँवरो ।।११।।
एक कहति अब हरि नाहीं आवै * नृपपद तजि क्यों ग्वाल कहावै ।।
वहँ गज रथ चढ़ि चलत कन्हाई * इहँ क्यों गाइ चरावहिं आई ।।
उहाँ पटंबर पहिरि दिखावै * इहँ अब क्यों कामरि मन भावै ।।
अब उन यशुमति मातु बिसारी * कौन चलावै बात हमारी ।।
बोली अपर सखी बिलखाई * भये निठुर अब कुँवर कन्हाई ।।
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी * सुनु सखि सलिल मीनकी जैसी ।।
तलफत मीन निकट अकुलाने * नीर कछू उर पीर न जाने ।।
इतनी दूर दया नहिं कीन्ही * बीती अवधि खबर नहिं लीन्ही ।।
दैगये बिहँसि चलत परतीती * मिलिहौं आइ बहुरि रिपुजीती ।।

Digitization by Arya Samaj Foundation, Chennai

हारे नयन उतहिं मग जोवत * रोय रोय उर कंचुकि धोवत ।।
जैसो दिन निशि तैसी जाई * पलभर नींद परत नहिं आई ।।
मंद समीर चंद्र सुखदाई * इनते जरत सेज अधिकाई ।।
दो०—सपनेहूँ तौ देखिये, नींद परै जो नैन ।।
कीने बिबिध उपाय मन, क्यों हूँ लहत न चैन ।।१२।।
सो०—बोलि उठी इक बाम, सुनुसखिहौतोसों कहौं ।।
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वप्नमैं ।।१२।।
आये जनु मम सदन गुपाला * हँसि भुज पाणि गही नँदलाला ।।
कहा करौं अतिनींद गई री * एकहु क्षण नहिं और रही री ।।
ज्यो चकई लखि निजपरछाँहीं * पतिहिं जानि हर्षी मनमाहीं ।।
तबहीं निठुर विधाता आई * दियो पवनमिस सलिल डुलाई ।।
मेरी दशा भई सखि सोई * जो जागौं तौ ढिग नहिं कोई ।।
देखहु कहा अधिक अकुलाई * विरहजरा अरु काम जराई ।।
कहा कहौं किहिं दोष लगाऊँ * अपनी चूक समुझि पछिताऊँ ।।
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा * समुझि परी तबहीं यह पीरा ।।
महादुखित अब अंग हमारे * भये सखी दोउ नयन्न पनारे ।।
अतिही भ्रममाते बिन देखे * चाहत रूप श्यामको पेखे ।।
रसना यहै नियम गहि राख्यो * हरिबिन और न चाहत भाख्यो ।।
जबते बिछुरे कुँवर कन्हाई * तबते भये सबै दुखदाई ।।
दो०—वोई निशि वोई दिवस, वोई ऋतु वोई मास ।।
बदले सबै सुभावजनु, बिन हरिमदन बिलास ।।१३।।
सो०—चली औरही चाल, अब या ब्रजमें ए सखी ।।
विमुख भये गोपाल, भयेदुखद जे सुखद सब ।।१२।।
गृह कंदरा सेज भइ शूली * शशिको किरण अग्निसमतूली ।।
सींचत अली मलय घसि नीरा * होत अधिक ताते उर पीरा ।।
फूली अरुण फूल बन डारी * झरत देखियत मनहुँ अँगारी ।।
हरिबिन फूल लगत सब कैसे * मनहुँ त्रिशूल शूल उर जैसे ।।
तब इन तरुन अमृत फल लगे * अब ते फल सब विषरस पागे ।।

त्रिविध समीर तीरसम लागे * कोकिलशब्द अग्नि जनु दागे ॥
तप्त-तेल-सम बारिद–पानी * उठत दाह सुनि चातक बानी ॥
सुनि सखि चातकदोष न दीजै * जोये या पक्षीके जीजै ॥
जैसे पिय पिय हम रटलावत * तैसे ही कहि २ वह गावत ॥
अतिसुकंठ प्रियतम हित मानी * क्षण नहिं रहत रटत पियबानी ॥
आप सुधारस पी सुख पावै * टेरि-टेरि बिरहनको ज्यावै ॥
जो यह खग नहिं करत सहाई * लहत प्राण तौ दुख अधिकाई ॥
दो०—या पक्षीसम और को, सुन सखि सुकृत समाज ॥
सुफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥१४॥
सो०—मग्न सकल ब्रजबाल, ऐसे हरिके बिरहरस ॥
नहिं बिसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवस निशि ॥१४॥
पथिक जात मधुवन तन हेरैं * ताहि धाय ब्रजतिय सब घेरैं ॥
कहत परहिं हम पाँय तुम्हारे * सुनहु बटोही बचन हमारे ॥
उत हैं बसत कृष्ण ब्रजनाथा * कहियो तिनसों ब्रजकी गाथा ॥
तुम जु इंद्रको यज्ञ नशायो * पुनिगिरिकरधरिब्रजहिंबचायो ॥
सो अब वह बिरहा ह्वै आयो * चाहत है ब्रज फेरि बहायो ॥
बर्षत निशिदिन दृगघनकारे * बहत कुचनबिच सलिलपनारे ॥
ऊर्ध्वश्वास पवन झकझोरैं * गर्जत शब्द पीर घन घोरैं ॥
महा बज्र दुख सुख द्रुम डारैं * व्याकुल अङ्ग सकल अति मारैं ॥
व्यथाप्रबाह बढ़्यो अति भारी * बूड़त बिकल सकल ब्रजनारी ॥
चितवत मग सबनाथ तुम्हारो * जानि आपनो आइ उबारो ॥
गये मिलन कहि श्रीमुखबानी * अबधि बदी सो सबहि सिरानी ॥
तुमबिन तलफत प्राण हमारे * जैसे मीन सलिल तजि न्यारे ॥
दो०—एकबार फिरि आयके, देहु सुदर्शन श्याम ॥
तुमबिन ब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपकबिन धाम ॥१५॥
सो०—मिलते बेणु बजाय, अब वह कृपा गई कहाँ ॥
पुनि कह करिहौ आय, प्राण गये ब्रज भावते ॥१५॥
सुनहु पथिक तोहिं रामदुहाई * कहियो यह मोहनसों जाई ॥

तुमबिन राधेके तनु आई * भई सबै विपरीत बनाई ।।
बदनक्षपाकर ज्योति छपानी * अब रहिगई कलंक निशानी ।।
अँखियाँ हुतीं कमलपँखुरीसी * सो अब मनहुँ रंगनिचुरीसी ।।
आँच लगे कँचन जिमि काचो * तिमि तन विरहानलको ताचो ।।
कदलीदलसी पीठ सुहाई * सो अब मानौं उलटि बनाई ।।
सुखकी संपति सकल नशानी * जारत भई कोकिलाबानी ।।
अब सब साध मानकी नासी * व्है रहि तुम्हरे दर्शपियासी ।।
चातक पिक मृग अलिकुलजाती * अब इनको देखत अनखाती ।।
अब तिनसों पूँछत है धाई * तुम्हरे चरणकमल कुम्हलाईं ।।
ललितादिक सखियन लखि धाई * जाति अँटा चढ़ि गर्ब बढ़ाई ।।
अब कहि सखी तिन्हैं अकुलाई * मिले रोयके कंठ लगाई ।।
दो०—सुधि बुधि सब तनुकी गई, रह्यो विरहदुख छाय ।।
होन चहत दशईं दिशम, बेगि मिलहु तिहिं आय ।।१६।।
सो०—ऐसे निज निजहेत, कहत सँदेशो श्यामसों ।।
पथिकहिं चलन न देत, होत साँझ ताकी तहाँ ।।१६।।
विरहविकल सब ब्रजकी बाला * हरिवियोग उरपीर विशाला ।।
हरि दर्शन बिन कल नहिं पावैं * जिहिंतिहिंकहिउरव्यथाजनावैं ।।
जब पपिहा बोलत निशि आई * कहत ताहि कोऊ अनखाई ।।
हौं तौ बिरहजरो संतापी * तू कत जारत रे खग पापी ।।
पिय २ कहि अधरात पुकारै * मूढ़ मृतक अबलन कत मारै ।।
तू नहिं सखी दुखित बिन नीरा * तेउ न समुझत शठ परपीरा ।।
करत कहा इतनी कठिनाई * हरिबिन बोलत ब्रजपर आई ।।
उपजावत विरहिनि उरआरत * काहे अगिलो जन्म बिगारत ।।
एक कहत चातकसों टेरी * हैं साँरँग हम चेरी तेरी ।।
पौढ़े होंहि जहाँ सुखदाई * ऊँचे टेरि सुनावहु जाई ।।
गइ ग्रीषम पावसऋतु आयो * सब काहू चित चाव चढ़ायो ।।
तुमबिन ब्रजतिय डोलत ऐसे * नाव बिना करियाकी जैसे ।।
दो०—मानेंगे तेरो कह्यो, तेरो हित घनश्यामा ।।

लेहु सुयश चातक बड़ो, ले आवहु सुखधाम ।।१७।।
सो०—सुनि चातकक बने, कोऊ सखि ऐसे कहत ।।
यह बिहंग सुखदैन, सखि मोहिं प्यारो पीवत ।।१७।।
निशिदिन पिय २ रटत बिचारो * पियके बिरह भयो जरि कारो ।।
स्वातिबूँदलगि रहत दुखारो * तज्यो सिंधुको जलकरि खारो ।।
आप पीर परपीरहिं पावैं * जियको जीवन नाम सुनावैं ।।
प्रेमबाण लाग्यो जिहिं होई * जानै व्यथा प्रेमकी सोई ।।
कोऊ कहत कोकिलहिं टेरी * सुन री सखी सीख इक मेरी ।।
बसत जहाँ हित कुँवर कन्हाई * फिरि आयहि बारे कत जाई ।।
तू कुलीन कोकिला सयानी * सबहिं सुनावति मीठी बानी ।।
तोसम कोऊ नहिं उपकारी * जानत हैं बिरहिनि दुख भारी ।।
उपवन बैठि श्यामको टेरी * कहियो अबलन मन्मथ घेरी ।।
श्रवण सुनाय मधुर कल बानी * ब्रज लै आव श्याम सुखदानी ।।
प्राणहु पलट मिलत नहिं येरी * सेंत सु बिकत सुयशकी ढेरी ।।
व्है हैं बिन मोलन हम चेरी * गावहिं गोकुल कीरति तेरी ।।
दो०—कोऊ ऐसे कहि उठति, बरजहुबोलत मोर ।।
रह्यो परत नहिं टेर सुनि, बिन श्रीनंदकिशोर ।।१८।।
सो०—बोलत करत बिहाल, मोरहु सखि बैरी भये ।।
बसे बिदेश गुपाल, ये बनते न टरैं मरैं ।।१८।।
बिरहमग्न यों ब्रजकी नारी * नहीं कृष्णसों पलभरि न्यारी ।।
रही कृष्णछबि दृगन समाई * रसना कृष्णनाम रट लाई ।।
मनमें गुणहिं सदा गुण हरिको * श्रवण रहे हरिको यश भरिको ।।
बसी श्याममूरति उरमाहीं * बिसरत सुरति एक पल नाहीं ।।
बैठत उठत चलत घर बाहिर * श्यामसनेह गुप्त अरु जाहिर ।।
सोवत जागत दिन अरु राती * प्रियतम—कृष्णप्रीति रसमाती ।।
सब अङ्ग कृष्णप्रेमरस पागी * भई कृष्णमय सकल सभागी ।।
धनि सो प्रीति कृष्णसों लागी * धनि सो सुरत कृषणरसपागी ।।
धनि सो सुख हरिसंग बिहारी * धनि सो दुखहरि बिरहदुखारी ।।

धनि सो परेखो हरिसों जोई * धन्य सरेखो हरिको होई ॥
धनि सो ज्ञान ध्यान धनि सोई * जप तप धन्य जो हरि हितहोई ॥
धन्य जन्म जो हरिके दासा * सबबिधिधन्य जिन्है हरिआसा ॥
दो०—नंद यशोमति गोपिकन, निशिबासर हरि ध्यान ॥
ब्रजबासीप्रभु दासकी, आश रहे लगि प्रान ॥१९॥
सो०—बिसरे सब व्यवहार, और न दूजी गति कछु ॥
अंध लकुट आधार, एक सुरति नँदनंदनको ॥१९॥

श्रीकृष्णजीकी यज्ञोपवीत लीला ७४

रहे जाय मथुरा घरि सबते * नित नव मोद होत तहँ तबते ॥
देवकि घुनअभिलाष पुरावै * निरखि २ दोउ सुत सुख पावै ॥
परमानंद-मग्न वसुदेऊ * सुखी सकल यादवगण तेऊ ॥
मुदित सकल मथुरापुरबासी * देत सबन सुख प्रभु सुखराशी ॥
एक दिवस वसुदेव सुजाना * बोले जे कुलमध्य प्रधाना ॥
करि आदर मानता बड़ाई * तिनसों कहि यह बात सुनाई ॥
राम कृष्ण अबलौं दोउ भाई * ग्वालनमध्य रहे ब्रज जाई ॥
यदुबंशिनकी रीती न जाने * हैं अबहीं कुलधर्म अयाने ॥
ताते यह बिचार अब कीजे * यज्ञोपवीत दुहुँनको दीजै ॥
सुनि ये बचन सबन मन भाये * गर्ग आदि सब विप्र बुलाये ॥
पूँछि सुदिन शुभ लगन धराई * यज्ञकाज सब सौंज मँगाई ॥
सकल तीरथनते जल आये * राम कृष्ण तासों अन्हवाये ॥
दो०—सकल बेदविधि मंत्र पढ़ि, कार अभिषेक पुनीत ॥
दोउ भाइन तब गर्गमुनि, दियो यज्ञ उपवीत ॥ १ ॥
सो०—अन्त न पावै शेष, बेद श्वास जाको सकल ॥
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्गमुनि ॥ १ ॥
दियो दान वसुदेव अनेका * पूजे सब द्विज सहित विवेका ॥
सब नरनारिन मंगल गायो * बंदीजनन द्रव्य बहु पायो ॥
लखि कौतुक सुरगण सुखपावैं * बर्षि सुमन दुंदुभी बजावैं ॥
अतिआनंद भयो सबकाहू * तातमातउर परम उछाहू ॥

पुनि इक दिन वसुदेव सज्ञानी * यह इच्छा अपने मन आनी ॥
पंडित भलो कहूँ जो पैये * तौ विद्या अब सुतन पढ़ैये ॥
काहूँ तब यह बात बखानो * सांदोपिनि पंडित बड़ज्ञानी ॥
रहै अवतीपुरिके माहीं * तासम जग पंडित कोउ नाहीं ॥
यह सुनि कृष्ण सकलगुणखानी * पितुके मनको रुचि पहिंचानी ॥
व्हैकै नियमसहित दोउ भाई * बिद्या पढ़न गये यदुराई ॥
बेदविदित सेवा हरि कीन्ही * अल्पकाल विद्या सब लीन्ही ॥
लखिप्रभाव गुरु अति सुखपायो * जानि जगत्पति अतिहर्षायो ॥
दो०—तब हरि गुरुसों जोरि कर बोले सहित सनेहु ॥
गुरुदक्षिण कछु चाहिये, माँगि सो हमसों लेहु ॥ २ ॥
सो०—तब गुरुकह्यो बिचारि, तुम प्रभु करता जगतके ॥
बूझि लहु मम नारि, जो वह कहै सो दीजिये ॥ २ ॥
तब सांदीपनि तियपै आये * बचन कृष्णके ताहि सुनाये ॥
देनकहत हरि दक्षिण हमको * मागैं कहा सो बूझैं तुमको ॥
मरेहुते ताके सुत दोई * तिन माँगे हरिसों पुनि सोई ॥
कृष्ण सकलजीवनके स्वामी * जल थल सब जिनके अनुगामी ॥
गये बहुरि भक्तनदुखहारी * जगउत्पत्ति—पालन-लयकारी ॥
चाहैं कियो होय सब कोई * आनिदिये गुरुके सुत ओई ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विजनारी * सुख संताप मिटे दुख भारी ॥
व्है प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हो * नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हो ॥
गुरुआयसु लै पुनि दोउ भाई * आये मधुपुरि जनसुखदाई ॥
तात मात लखि अतिसुख पायो * भयो मनोरथ सबमनभायो ॥
राजकाज पुनि प्रभु सब करईं * उग्रसेन—आयसु अनुसरईं ॥
हितजन परजन नर अरु नारी * सुखी सकल हरिबदननिहारी ॥
दो०—उद्धव अरु अक्रूर ये, सखा श्याम के साथ ॥
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥ ३ ॥
सो०—व्रजबासिन को ध्यान, व्रजबासी प्रभुके सदा ॥
यदपि ब्रह्मसुखखान, तदपि भक्तबश प्रेमरस ॥ ३ ॥

अथ उद्धवजी की प्रेषण लीला ७५

उद्धव यदुपतिसखा सज्ञानो ❋ एक ब्रह्म सुखसों रति मानो ॥
हरिको त्रिगुणरूप करि मानैं ❋ प्रेमकथा कछु उर नहिं आनैं ॥
जब हरि ब्रजकी बात चलावैं ❋ तब उद्धव हँसिकै उचटावैं ॥
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं ❋ भली बानि याकी यह नाहीं ॥
रूपरेख जाको नहिं कोई ❋ धन्यो नेम उरमैं इन सोई ॥
निर्गुणकथा योगकी गावैं ❋ जामैं कछु रसस्वाद न आवैं ॥
मानत एकब्रह्म अविनाशी ❋ ज्ञानगर्बमैं रहत उदासी ॥
बिछुरनमिलन दुःख सुख जाहीं ❋ नहीं प्रेम उपजत तामाहीं ॥
कनककलश पानीबिन जैसे ❋ याको रूप बन्यो है तैसे ॥
जो हौं कहौं कहा यह मानै ❋ निंदा ओर हमारी ठानै ॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा ❋ बन्यो हंसबायसको साथा ॥
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे ❋ प्रेमभजन याके नहिं नेरे ॥
दो०—कहाँ यशोदा नंदसे, सुखद तात अरु मात ॥
कहँ वह सुख ब्रजधामको, नहिं बिसरत दिन रात ॥ १ ॥
सो०—कहाँ सखनको संग, कहाँ केलि वृन्दाबिपिन ॥
कहँ वह प्रेम तरंग, बंशीबट यमुनानिकट ॥ १ ॥
कहाँ नवल ब्रजगोपकुमारी ❋ कहु राधा वृषभानुदुलारी ॥
कहँ वह प्रीतिरीति सुखसङ्गा ❋ कहाँ रास–रस–हास–तरङ्गा ॥
कहाँ कुंजबन–केलि–निकाई ❋ कहाँ मानलीला सुखदाई ॥
कँहलगि ब्रजके सुखन सम्हारौं ❋ जिहिं लगि पुर बैकुंठ बिसारौं ॥
कहिये यह रस काके आगे ❋ उद्धव सुनत प्रेमके भागे ॥
कैसे प्रेम होय या माहीं ❋ मेरे कहे मानिहै नाहीं ॥
ब्रजको याको देहुँ पठाई ❋ पैहै प्रेम तहाँ यह जाई ॥
याके मन अभिमान बढाऊँ ❋ कहि युवतिनकी प्रीति सुनाऊँ ॥
यहै बात यदुपति उर आनी ❋ पठऊँ ब्रज इहिं थापि सज्ञानी ॥
कहौं बोध तिनको करि आवो ❋ प्रेम मिटाय ज्ञान समुझावो ॥
जैहै तुरत सुनत यह बाता ❋ कहिहै जानत मोहिं ज्ञाता ॥

करि अभिमान तुरत ब्रज जैहै * व्हाँते जाय साधु व्है ऐहै ॥
दो०-ऐसे हरि बैठे करत, अपने उर अनुमान ॥
उद्धवके उरते करौं, दूर ज्ञान अभिमान ॥ २ ॥
सो०-आय गये तिहिंकाल, उद्धवजी हरिके निकट ॥
बिहँसि मिले नँदलाल, सखा सखा कहि अंकभरि ॥ २ ॥
अति सुन्दरिसाँवलि छबिछायो * जनु हरिको प्रतिबिब सुहायो ॥
अंस भुजा दैके यदुराई * उद्धवसों ब्रजबात चलाई ॥
उद्धव सुनौ कहौं तुमपाहीं * ब्रजको सुखमोंहि बिसरतनाहीं ॥
नेकहु नहीं इहाँ मन लागत * उठि २ पुनि उतहींको भाजत ॥
यह मन होत नहीं पुनि जैये * गोपीग्वालन मैं सुख पैये ॥
कहँ वह हेत यशोमति मैया * दै दै माखन लेत बलैया ॥
नहिं बिसरत मनते बिसराई * वह राधाकी प्रीति सुहाई ॥
गोप सखा वृंदाबन गैयाँ * नहिं भूलत बंसीबट छैयाँ ॥
त्यागत तिन्हैं बहुत दुख पायो * मिटत नहीं मनते पछतायो ॥
उद्धव सुनि बोले मुसकाई * कहा कहत हरि यों अकुलाई ॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं * जग व्यवहार सकल मिथ्याहीं ॥
मोसों सुनौ बात यदुराई * एकै ब्रह्म सदा सुखदाई ॥
दो०-जब उद्धव ऐसे कही, बिहँसि ज्ञानकी बात ॥
तब यदुपति सुख पायकै, पुनि बोले हर्षात ॥ ३ ॥
सो०-भाई मोमन माहिं, उद्धव कहि जो बात तुम ॥
तुम समानकोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू ॥ ३ ॥
उद्धव तुम ब्रज बेगि सिधारो * करि आवहु यह काज हमारो ॥
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई * मात पिता ताको नहिं कोई ॥
रूप न रेख जाति कुल नाहीं * व्यापि रह्यौ सब घटघटमाहीं ॥
हौ ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी * गोपी सकल प्रीतिरस सानी ॥
यह मति तिन्हैं बोध करि आवहु * प्रेम मेटिकै ज्ञान दृढ़ावहु ॥
मेरे प्रेमबिबश वे बाला * सहत बिरहदुख दुसह बिशाला ॥
कामअग्नि तनु तूलसमाना * शोचश्वास मारुत बलवाना ॥

भस्महोन पावत सो नाहीं * भीजि रहत नयननजलमाहीं ॥
इहै आजलों पै इहि भाँती * विरहव्यथा व्याकुल दिन राती ॥
ऐतेपै कैसे वे न्यारे * समाधान बिन धीरज धारे ॥
ताते सखा बेगि तुम जाहू * मेटौ तिनके उरको दाहू ॥
पठऊँ नारिनके ढिग सोई * जो तुमहींसों लायक होई ॥
दो०—यह प्रवीण अरु सखा मम, तुमते ज्ञानी कौन ॥
सो कीजै जिहिं ब्रजबधू, साधन सीखैं पौन ॥ ४ ॥
सो०—जिहिं सुख पावैं नारि, ज्ञानयोग उपदेशते ॥
डारैं मोहि बिसारि, ब्रह्म अलखपरचौ करै ॥ ४ ॥
उद्धव सुनौ कहत मैं तुमको * तुमसम हितू और नहिं हमको ॥
कैसहु उन गोपिनसों मोहीं * उऋण कीजियो बिनवत तोहीं ॥
निशिदिन भक्ति मेरियै उनको * नाहिं आन रुचि कैसिहु तिनको
सर्बस तिनन मोहिं सब दीन्हो * तन मन प्राण समर्पण कीन्हो ॥
मुक्ति तीन तिनको मैं दीनी * सो उन हित एकहु नहिं कीनी ॥
रही एक सो योजन कहिये * सो वह ज्ञानबिना नहिं लहिये ॥
सो अब देहु तिननि तुम ज्ञानू * जिहिं पावैं वह पद निर्बानू ॥
जो अंगीकृत करैं न तासू * तो मैं हौं उनको ऋणदासू ॥
गाय चरावत उनकी रैहौं * ब्रज तजि नहीं अनत कहुं जैहौं ॥
यहै बात मेरे मन भावै * और कछु मोपै बनि आवै ॥
उद्धब जाहु बिलंब करौ जिन * उनको युगबीतत मोबिनछिन ॥
समाधान तिनको करि आवौ * ब्रजमें जाय बिलंब न लावौ ॥
दो०—उद्धव ब्रजमें जायकै, बिलम न रहियो जाइ ॥
तुम बिन हम अकुलाय हैं, श्याम करत चतुराइ ॥ ५ ॥
सो०—तुम हो सखा प्रबीन, बार बार शिखऊँ कहा ॥
जिय ज्यों जलबिन मीन, सोई मतो विचारियो ॥ ५ ॥
कही श्याम ऐसे जब बानी * तब उद्धव अपने जिय जानी ॥
यदुपतियोग साँच अब जान्यो * ज्ञानगर्व अपने मन आन्यो ॥
बोल्यो अति अभिमान बढ़ाई * तुम आयसु शिरपर यदुराई ॥

तुम पठवत गोपिनके माहीं * मैं केस प्रभु करौं कि नाहीं ।।
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं * ज्ञान कथा ब्रज लोगन कहिहौं ।।
जो मानि हैं ब्रह्मउपदेशू * तौ कहिहौं मुझाय सँदेशू ।।
दिन द्वै रहि ब्रजजन सुख दैहौं * बहुरौ आय चरण पुनि गैहौं ।।
यह सुनि बिहसि कह्योहरितबहीं * जाहु उपँगसुत ब्रजको अबहीं ।।
ज्ञान दृढ़ाइ खबरि तिन दीजो * एक पन्थ द्वै कारज कीजो ।।
आए भ्रात इतै हम दोऊ * तबतें ब्रज पठयो नहिं कोऊ ।।
जाय नंद यशुमति परितोषौ * ज्ञानकथा कहि युवतिन पोषौ ।।
सकुचौ मतिहि जानि ब्रजनारी * कहियो ज्ञानयोग बिस्तारी ।।
दो०—बचन कहतही समुझिहैं, परमप्रवीण नवीन ।।
ह्वैहै शीतल बिरहत, क्यों जल पाये मीन ।। ६ ।।
सो०—पठवत थापि महंत, उद्धवको इहिं काज हरि ।।
ह्वै है आवैंगे संत, ब्रजभक्तनके दर्शते ।। ६ ।।
अपनोही रथ तुरत मँगायो * दियो उपङ्गसुतको पलनायो ।।
अपनेइ भूषण बसन सुहाये * निजकर उद्धवको पहिराये ।।
अपनोइ मुकुट आपनी माला * पहिराई उर बिशद बिशाला ।।
उद्धव तब हरिरूप सुहाये * इक भृगुपद को चिह्न बराये ।।
लिख्यो पत्र तब श्रीयदुराई * नंदबबाको बिनय बड़ाई ।।
पालागन दोउ कर जोरी * यशुमतिपै यहि भाँति करोरी ।।
बालक ग्वाल सखा समुझाई * लिख्योमिलनसबहिनउरलाई ।।
अरु नर नारि सकल ब्रज जेते * प्रीति जनाय लिखे सब तेते ।।
लिखि गोपिनको योग पठायो * भाव जानि काहू नहिं पायो ।।
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला * यह आनी उरमें नँदलाला ।।
लिखि पाती उद्धव कर दीन्हीं * और मुखागर विनती कीन्ही ।।
नीके रहियो यशुमति मैया * कछु दिनमें ऐ हैं दोउ भैया ।।
सो०—कहा कहौं जादिवसते, जननी बिछुर्यों तोहिं ।।
तादिनते कोऊ नहीं, कहत कन्या मोहिं ।। ७ ।।
सो०—कह्यो सँदेश न जात, अतिदुख पायो मात तुम ।।

अब मोकौं निजतात, वसुदेव अरु देवकि कहत ।। ७ ।।
कहियो नंद बबासों जाई * कह मन धरौं इतो निठुराई ।।
जबतैं दियो इतै पहुँचाई * बहुरौ सोध लयो नहिं आई ।।
बारक बरसानेलौं जैयो * समाचार तहँके सब लैयो ।।
ग्वाल बाल सब सखा हमारे * ह्वैहैं वे मम विरहदुखारे ।।
तिन्हैं जाय मम दिशितें भेंटौ * कहि सँदेश तिनको दुख मेटौ ।।
ब्रजबासी जेते नर नारी * गाय वत्स खग मृग बनचारी ।।
जोजिहिबिधिताको तिहिं भाँती * अरसपरस कहियो कुशलाती ।।
मित्र एक मम दर्शन पैहौ * देखन ताहि परम सुख लैहौ ।।
वृंदाबनमें रहत निरंतर * होत नहीं कबहूँ उर अंतर ।।
सघन कुंज तरु लता सुहाई * मिलियो ताकौ सीस नवाई ।।
इहिबिधि उद्धवसों यदुराई * कहि सब मनकी बात सुनाई ।।
बलकरि ताको प्रेम जनायो * ज्ञानगर्ब ताके उर छायो ।।
दो०—ऐसे उद्धवसों करी, प्रकट श्याम ब्रजप्रीति ।।
उद्धव तिनको ज्ञान लै, चले करन बिपरीति ।। ८ ।।
सो०—लखि उद्धवको जात, हलधर लियोबुलायढिग ।।
समुझत ब्रजकी बात, आयो जल भरि नयनयुग ।। ८ ।।
कहा कहौं उद्धव मैं तुमसों * यशुमति करत हेत जो हमसों ।।
एकदिवस खेलत मोसाथा * खेल कियो झगरो यदुनाथा ।।
मोको दौरि गोद तब लीन्हो * करसों ठेलि श्यामको दीन्हो ।।
नंदबबा तब बनते आये * इन्हैं गोद लै मोहिं खिजाये ।।
लगे कहन नान्हो तेरो भाई * तोको छोह लगत नहिं राई ।।
वह हित नहिं भूलत है हमको * कहत सँदेश बनत नहिं तिनको ।।
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई * अरु दोउ भैयनकी कुशलाई ।।
कहियो हम हैं तनय तुम्हारे * मातपिता नहिं आन हमारे ।।
मिलि हैं आय धायकै तुमको * कारज कछुक और है हमको ।।
नहिं बिसरत क्षण गोकुल गाई * तुम तजि सुख को हमें देखाई ।।
सुनि वसुदेव देवकी पायो * उद्धव ब्रजको जात पठायो ।।

दो०—नंद यशोमति हित समुझि, लिखि पाती वसुदेव ॥
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव ॥ ९ ॥
सो०—मनि सकुचो जियमाहीं, रामकृष्ण तुम्हरे तनय ॥
हम कहिबेको आहिं, मात पिता तुम दुहुनक ॥ ९ ॥
बालपने तुम पालनहारे * बालकेलिरस तुम्हैं दुलारे ॥
हम तौ पाये बंसकुमारा * सो यह सब उपकार तुम्हारा ॥
मति कलपौ अपने मनमाहीं * हरिसों मिलिकिन जात इहाँहीं ॥
श्याम राम नँहि तुम्हैं भुलावैं * दिवस रैनि तुम्हरो यश गावैं ॥
ऐसे लखि पाती सुखदाई * उद्धवकर वसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव बेगि पठायो * तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसु लियो बिदा हरि कीन्हो * चल्यो उपँगसुत ब्रजपथ लीन्हो ॥
उद्धव चले गर्व मन धारी * कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी ॥
देखौं धौं ब्रजलोगन जाई * मानत इतो जिन्हैं यदुराई ॥
चले उपङ्गसुत जब हर्षाई * गोपिन मन तब गयो जनाई ॥
पुनि २ भ्रमर श्रवणलगि आई * भयो कछुक दुख कछु हर्षाई ॥
समुझि सो सगुन दर्श अनुरागी * जहँ तहँ काग उड़ावनलागी ॥
दो०—जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उड रे काग ॥
दधि ओदन तोहि दाहगी, अरु आँचरकी पाग ॥१०॥
सो०—सुनि गोपिनके बन, उठि बैठत बायस अनत ॥
लखि पावति सबचैन, कहत परस्पर आपमें ॥१०॥
सखी आज गोकुल हरि आवैं * कधा काहू ब्रजहि पठावैं ॥
नीकी बात सुनावहु कोऊ * फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयार अम्बर फहराई * टूटि टूटि कंचुकि बँदजाई ॥
उठि उठि बैठत काग कहेते * उमँगत मन आनंद लहे ते ॥
भ्रमर एक चहुँदिशि मड़राई * पुनि २ कान लगत है आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ माला * आवनहार भये नंदलाला ॥
जानत भाग दशा विधि फेरी * दूर करौ अब दुख मनते री ॥
बहुरि गोपाल मिलैं जो आई * सुख सनेह करि लीजै माई ॥

आसन हृदयकमलमें दीजै * नयनन निरखिबदनछबि लीजैं ॥
देखत रूप मान तजि दीजैं * प्रेमभजन अपनो करि लीजैं ॥
आवै जो ब्रज कुंजबिहारी * बड़भागिनी सबै ब्रजनारी ॥
नंदयशोमति सखि सुख पावैं * अतिबड़भागिन बहुरि कहावै ॥
दो०-घर घर सगुन बिचारहीं, ब्रजकी तिय बड़भाग ॥
ब्रजबासी प्रभु दर्शको, सबके मन अनुराग ॥११॥
सो०-मथुरातन टकलाय, अनुदिन पंथ निहारहीं ॥
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब ॥११॥

अथ उद्धवजी को ब्रजागमन लीला ७६

उद्धव चले ब्रजहिं समुहाय * मथुरा तजि गोकुल नियराये ॥
रथपर बैठे शोभित कैसे * दूजे नंदनँदन मनु जैसे ॥
चहै मुकुट पीतांबर काछे * श्याम रूप शोभित अंग आछे ॥
दूरहिते रथकी उजियारी * देखत हर्षीं ब्रजकी नारी ॥
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई * आतुर जहँ तहँते उठि धाईं ॥
कहत परस्पर देखहु आली * मधुबनते आवत बनमाली ॥
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं * तैसो रथ आवत मग ताहीं ॥
तैसोइ मुकुट मनोहर राजै * तैसेइ पट कुंडलछबि छाजै ॥
रथतन सब देखत अनुरागीं * स्वप्ने को सुख लूटनलागीं ॥
ज्यों ज्यों रथ आतुर चलिआवै * त्यों त्यों पीतांबर फहरावै ॥
भईं सकल सुखव्याकुल नारी * प्रेमबिबश आनँद उर भारी ॥
ज्यों २ रथ आवत नियराई * त्यों लगि मानहु अल्प बिहाई ॥
दो०-यहै शोर ब्रजघर घरन, आवत हैं नँदलाल ॥
देखनको निकसे हरषि, तरुण बृद्ध अरु बाल ॥ १ ॥
सो०-सुनत यशोदानंद, लेन चले आगे हरषि ॥
भये परम आनंद, तिहिं क्षण ब्रजके लोग सब ॥ १ ॥
जब कछु रथ आगे नियरायो * तब संदेह सबन मन आयो ॥
श्याम अकेले रथके माहीं * हलधर संग देखियत नाहीं ॥
कोऊ कहत नाहिं ब्रजनाथा * जोपै हलधर नाहिन साथा ॥

इतना कहत निकट रथ आयो * उद्धव निरखि नयन जलछायो ।।
रहीं ठगीसी सब ब्रजबाला * नूतन बिरह भईं बेहाला ।।
मनहुँ गइ निधि कैहूँ पाई * बहुरि हाथते तुरत गवाँई ।।
ह्वैगइ सपनेकी रजधानी * जागत कछू नहीं पछितानी ।।
जबहीं कह्यो श्याम तौ नाईं * जहाँ सो तहाँ रहीं मुरझाईं ।।
परी विकल यशुमति जिहिं ठाईं * ब्रजतिय धाय तहाँ सब आईं ।।
श्यामबिनारथ लखि अकुलानी * जहाँ सो तहाँ रहीं मुरझानी ।।
रुदन करत व्याकुल अतिभारी * लईं उठाय पोंछि दृगवारी ।।
यशुदहिं बोध करत सब बाला * उद्धवको पठयो गोपाला ।।
दो०—भलो भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम ।।
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम ।। २ ।।
सो०—सुफलघरी है आज, करहु जानि यह मन हरष ।।
आवनको ब्रजराज, इनके कर ह्वैहै लिख्यो ।। २ ।।
यह सुनि उठीं कछुक सुख पाई * उद्धव निकटहिं पहुँचे आई ।।
हरिको रूप निरखि सुख पायो * श्यामसखा कहि सबन सुनायो ।।
उद्धव निरखि रहत ब्रजनारी * सुन्दर सलज सुशील महारी ।।
ताहीते हरि याहि पठायो * लै संदेश मोहनको आयो ।।
नीके नीके बचन सुनैहै * सुनि २ श्रवणन हियो सिरैहै ।।
यह जानिये बेगि हरि ऐहैं * याके मुख अब यह सुनि पैहैं ।।
चहुँदिशि घेर लियो रथ जाई * नंदगोप ब्रजलोग-लुगाई ।।
गये लिवाय नंद निजद्वारे * उद्धव रथते हर्षि उतारे ।।
अर्घ देय भीतर घर लीन्हो * धनि २ तिन कहि आदर कीन्हो ।।
चरण धोय आसन बैठाये * बहुप्रकार भोजन करवाये ।।
बिबिधभाँति करिकैं पहुनाई * नंद श्यामकी बात चलाई ।।
उद्धव कह्यो कुशल दोउ भैया * अरु वसुदेव देवकी मैया ।।
दो०—करत हमारी सुधि कबहुँ, हे उद्धब बलवीर ।।
पुलकितगात गदगद बचन, पूँछत नंद अधीर ।। ३ ।।
सो०—चूक परी अनजान, कह पछिताने आजके ।।

घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर करि ।।
प्रथम गर्ग मुँहि कह्यो बखानी * भूल्यो संगदोष हित जानी ।।
अब उद्धव बिछुरे गिरिधारी * मरियत समुझि शूल सोइ भारी ।।
कह्यो यशोमति दृग भरि पानी * उद्धव हम ऐसी नहिं जानी ।।
सुतको हित करिकै हम माने * हरि व्है वासुदेव प्रकटाने ।।
जेहिबिरंचि शिव ध्यान लगावैं * निशिदिन अङ्ग बिभूति चढ़ावैं ।।
सो बालक हम अतिहि अयानी * ऊखलसों बाँध्यो गहि पानी ।।
फाटत नाहीं ब्रजकी छाती * अब यहसमुझि हृदयपछिताती ।।
वैसे भाग कबहुँ अब पैहौं * बहुरि श्यामको गोद खिलैहौं ।।
जबते हरि मधुपुरी सिधारे * तबते उद्धव प्राण हमारे ।।
तलफत मीन नीरबिन जैसे * देख्यो श्याम मनोरथ तैसे ।।
उठिकै प्रात जात हौं खरिका * देखत दुहत और के लरिका ।।
उठत शूल उद्धव मनमाहीं * क्यों ये प्राण निकसि नहिं जाहीं ।।
दो०—ग्वाल सखा सँग जोरि अब, को गैया लै जाइ ।।
को आवैं संध्यासमय, बनते गाय चराइ ।। ४ ।।
सो०—काहि लेहुँ उर लाय, आँचरसों रज झारिकै ।।
काको लेहुँ बलाय, चूमि मनोहर कमलमुख ।। ४ ।।
मैं बलि साँची कहियो ऊधो * कैसे श्याम रहत तहँ सूधो ।।
दही मही माखन नित जाई * खात कौनके धाम कन्हाई ।।
कौन ग्वालबालनके साथा * भोजन करत तहाँ ब्रजनाथा ।।
कौन सखा लीन्हे सङ्ग डोलैं * खेलत हँसत कौनसों बोलैं ।।
काके माखन चोरत जाई * देन उरहनो को अब आई ।।
बनमें यमुनातीर कन्हाई * किन गोपिनको रोकत जाई ।।
किनको दूध दही ढरकावैं * किनसों दधिको दान चुकावैं ।।
इतनी बूझत यशुमति माई * भई बिकल गुणसुमिरि कन्हाई ।।
बोले नंद बिलखि तब बानी * कहियो उद्धव साँच बखानी ।।
श्याम कबहुँ बहुरो ब्रज ऐहैं * ब्रजबासिनकी तपन नसैहैं ।।
मोहिं तात यशुमतिको माता * सदा कहतहैं हरि सुखदाता ।।

कहिगये चलती बार मुरारी * मिलिहौं बहुरि तात इकबारी ॥
दो०—करि हैं सो अपनो बचन कबहुँ श्यामप्रतिपाल ॥
कह उद्धव तुमसों कछू, कह्यो कि नाँहि गुपाल ॥ ५ ॥
सो०—भईं सकल कृश गात, श्याम बिरह ब्रज नारि नर ॥
युगसम दिवस बिहात, उद्धव हमको हरिबिना ॥ ५ ॥
लखि उद्धव ब्रजरीति सुहाई * रह्यो कछुक मनमें सकुचाई ॥
सुनत नंदयशुमतिको बानी * बोल्यो हृदय परम सुखमानी ॥
कहि दोउ भाइनकी कुशलाती * दई श्याम दीन्ही जो पाती ॥
हरिको कह्यो सँदेश सुनायो * हलधरको सब कह्यो सुहायो ॥
पाती बाँचि नंद उर लाई * भेंटे मानहुँ कुँवर कन्हाई ॥
लिखो श्यामके करकी पाती * यशुमति लै लै लावति छाती ॥
दुसह बिरहको ताप नशावै * हरिसँदेश सुनि २ सुख पावै ॥
पुनि वसुदेव लिख्यो है जोई * उद्धव दियो नंदको सोई ॥
बाँचत नयन नीर भरि आये * कहत श्याम अब भये पराये ॥
पुनि वसुदेव लिखी जो बाता * बोलीं बिलखि यशोदा माता ॥
यद्यपि हरि वसुदेव कुमारा * उदर देवकीके अवतारा ॥
तदपि मोहिं धायहुके नाते * बार एक मोहन मिलि जाते ॥
दो०—उद्धव यद्यपि हम सबै, समुझावत ब्रजलोग ॥
उठत शूल यद्यपि निरखि, माखन हरिमुख योग ॥ ६ ॥
सो०—रोटी अरु नवनीत, नित माँगत उठि प्रातहीं ॥
को देहै करि प्रीत, तिन्हें बानि जाने बिना ॥ ६ ॥
यदपि देवगृह सब सुखभोगा * है वसुदेवसदन सबयोगा ॥
हम पशुपाल ग्वाल ब्रजबासी * दही मही धन घोषनिबासी ॥
राजसुखन कोउ कोटि लड़ावै * तौ माखन नहिं हरि सुख पावै ॥
निशिदिन रहत यहै जिय शोचू * व्है हैं हरि व्हाँ करत सँकोचू ॥
एक बार गोकुल फिरि आवैं * मन करि माखन भोग लगावैं ॥
सपदि रहैं गोकुलमें नाहीं * उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई * उद्धव चरण रही बिसराई ॥

तब उद्धव बोले सुख पाई ✻ धन्य यशोमति धनि शिर नाई ॥
धन्य धन्य हैं भाग तुह्मारे ✻ जिनके कृष्ण प्राणते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी ✻ जगतआतमा सबघटबासी ॥
हैं व्यापक पूरण सब ठाईं ✻ जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मति जानौ हरि हमते न्यारे ✻ वे हैं सब जनके रखवारे ॥
दो०—मति जानौ सुत करि तिन्हैं, बे सबके करतार ॥
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥ ७ ॥
सो०—हम हैं सब अज्ञान, प्रभुमहिमा जानै नहीं ॥
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्मकर्म करकै रहित ॥ ७ ॥
हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने ✻ नरसमान हरिको करि जाने ॥
ज्यों शिशु आप चक्रबश फिरई ✻ ताको फिरत जाने सब परई ॥
ताते प्रभुहिं जानि हरि ध्यावो ✻ जाते मुक्ति- पदारथ पावो ॥
उद्धव जो तुम हमैं सिखावत ✻ हमहुँ बहुत मनहिं समुझावत ॥
यद्यपि वह मृदुरूप कन्हाई ✻ देखे बिना रह्यो नहिं जाई ॥
सब ब्रजके जीवन हरि बारे ✻ उद्धव कैसे जात बिसारे ॥
जादिन मोहन बन नहिं जाते ✻ तादिन बन खग मृग अकुलाते ॥
नहिं अघात देखे वह मूरति ✻ रूपनिधान साँवरी सूरति ॥
सो मृग तृण भरि उदर न खाहीं ✻ भये रहत कृश श्याम बिनाहीं ॥
मुरलीध्वनि खग मोहे जोई ✻ सो अब मुख फल खात न कोई ॥
जे बन सदा नवल सुखदाता ✻ ते अब सूखे जीरण पाता ॥
कोकिलकीरभीर नहीं बोलैं ✻ व्याकुल भये सकल बन डोलैं ॥
दो०—जिन्हैं चरावत श्यामजू, फिरत दुखारी गाय ॥
जहँ तहँ गोदोहन कियो, सूँघत तहँ तहँ जाय ॥ ८ ॥
सो०—सब ब्रज विरह अधीर, युगसम बीतत पलहुमैं ॥
धरैं कौन विधि धीर, उद्धव मनमोहन बिना ॥ ८ ॥
ऐसेहिं कहत सुनत गुण हरिके ✻ बैठेहि बीति गई निशि भरिके ॥
ठाढ़े यशुदहिं रैन बिहानी ✻ भरि भरि लोचन ढारत पानी ॥
ब्रज घर घर सब होत बधाई ✻ कहत कान्हकी पाती आई ॥

निपट समीपी सखा सुहायो * उद्धवको हरि ब्रजहिं पठायो ।।
कंचनकलश दूब दधि रोरी * नंदसदन लै आवत गोरी ।।
गोपसखा सब कृष्णउपासी * आये धाय सकल ब्रजबासी ।।
उद्धवको हरिरूप निहारी * भये सुखी सब नर अरु नारी ।।
ब्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं * करि परदक्षिण शीश नवावैं ।।
कहत पाय कै दर्श तुम्हारो * भयो जन्म अब सुफल हमारो ।।
बूझत कुशल सकल नर नारी * नंदअबास भीर भइ भारी ।।
उद्धव लखि ब्रज प्रेमजकेसे * बोलि सकत नहिं रहे थकेसे ।।
हकबकात चहुँ दिशि सब ठाढ़े * उद्धव रहे मान गहि गाढ़े ।।
दो०—उद्धवकी लखि सब दशा, ब्रजजनमन अकुलात ।।
क्यों उद्धव तुम कहत नहिं, राम कृष्णकुशलात ।। ९ ।।
सो०—इक क्षण युगसम जाहि, हमैं सुने बिन प्रीति हरि ।।
आवन कह्यो कि नाहिं, ब्रजहिं कृपा करि साँवरे ।। ९ ।।
तब उद्धव बाल धरि धीरा * सदा कुशल हरि हलधर बीरा ।।
दिये तुम्हें लिखि पत्र सँदेसु * अरु श्रीमुख यह कह्यो सँदेसू ।।
करि समाधिअन्तर मोहिंध्यावो * गोप सखा करिमतिचित्तलावो ।।
हौं अनादिअविगति अविनाशी * सदा एकरस सबघटवासी ।।
निर्गुण ज्ञानि बिन मुक्ति न होई * बेद पुराण कहतहैं सोई ।।
ताते दृढ़ करि यह मन धारौ * सगुणरूपतजि अगुण विचारौ ।।
तुरत तापत्रय टरि दुखदाई * मिलिहौ ब्रह्मसुखहिं सब जाई ।।
उद्धव कही जबहिं यह बानी * गोपीजन सुनिकैं बिलखानी ।।
इतनी दूर बसत सुनि आली * अब कछु और भये बनमाली ।।
रहीं बिरहकी बात बिचारी * बूड़ी सकल मनहुं बिन बारी ।।
मिलनआश गइ सुनत संदेशू * उपजो उर अतिकठिन अंदेशू ।।
फैलिगई जहँ तहँ यह बानी * कहत परस्पर सब अकुलानी ।।
दो०—यह सब दोष लगै हमैं, कर्मरेख को जान ।।
प्रेमसुधारस सानिकै, अबलिखि पठयो ज्ञान ।।१०।।
सो०—इक ऐसे यह देह, रहीझुरसि बिरहा अनल ।।

क्वैलाहूते खेह, अब आयो उद्धव करन ॥१०॥
रूपराशि जो सब सुखदाई * ब्रजकी जीवनमूरि कन्हाई ॥
बिछुरे जिन्हैं इतो दुख पायो * सो इन हिरदेमाहिं बतायो ॥
तिन्हैं कहत चितवो मनामाहीं * वे हैं पूरण भरि सब ठाहीं ॥
जाको यत्न करत हैं योगी * निर्गुण निराकार निर्भोगी ॥
सो करि कृपा आइकै ऊधौ * बीथिनमाँझ बहायो सूधौ ॥
अबलन कारण श्याम पठायो * व्यापक अगह गहावन आयो ॥
भयो आय विरहन सबकोई * गायो निर्गुण निगमन जोई ॥
जो समदृष्टि एकरस मोहन * तौ कत चित चुरायो गोहन ॥
उद्धव यह हित लागै काहै * जो पै इष्ट कृष्ण हियमाहै ॥
निशिदिननयनदर्शहित जागत * कलनहिंपरत पलकनहिंलागत ॥
चहुँदिश चितवनिबिरहअधीरा * बिलखि २ भरि डारै नीरा ॥
ऐसेहु दुःख प्रकट जो नाहीं * जो है श्यामहिं कहत इहाँहीं ॥
दो०—रहन देहु ऐसहि हमहि, अवधि आशकी थाह ॥
फिरि चाहैं नहिं पाय हैं, डारे अगुण अथाह ॥११॥
सो०—ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ॥
हमतनु भरेउ वियोग, भयोअधिकदुख श्रवण सुनि ॥११॥
एक कहत दूषण नहिं याको * यह आयो पठयो कुब्जाको ॥
वाने जो कहि याहि पठायो * सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुब्जा जो जाहि सिखावै * सोई ताको गायो गावै ॥
कवहूँ श्याम कहैं नहिं ऐसो * कहौ आय ब्रजमें इन जैसी ॥
ऐसी बात सुने को माई * उठै शूलसुनि नहिं मोहिं जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो * ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जप तप संयम नेम अचारा * यह सबबिधि बाको व्यवहारा ॥
युग युग जीवहु कुँवर कन्हाई * सीस हमारे पर सुखदाई ॥
अक्षत बसन भस्म किन लाई * कहौ कहाँ की रीति चलाई ॥
हमरे योग नेम व्रत ऐहा * नंदनंदनपद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोष को लावै * यह सब कुब्जा नाच नचावै ॥

जब युवतिन यह बात सुनाई * उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ।।
दो०—योगकथा युवतिन कही, मनही मन पछिताय ।।
प्रेमबचन तिनके सुनत, रहि गयो सीस नवाय ।।१२।।
सो०—तब जान्यो मनमाहिं, ये गुण हैं सब श्यामके ।।
मुहिं पठयो इहि ठाहीं, याही कारणके लिये ।।१२।।
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी * गुरु करि तिन्हैं प्रथमही मानी ।।
मन मन करि प्रणाम हर्षाने * उद्धव चले बहुरि बरसाने ।।
श्रीवृषभानुकुँवरि हरि-प्यारी * सकल ब्रजगोप कुमारी ।।
जिनके मनसोहन नँदलाला * सुनी सबन यह बात रसाला ।।
कोऊ है मधुबनते आयो * हितकरि श्रीनँदलाल पठायो ।।
यूथ यूथ मिलि अति अतुराईं * पियसंदेश सुनत उठिधाईं ।।
मिले उपंगसुत पंथमँझारी * रथ लखि कहत परस्पर नारी ।।
बहुरि सखी सुफलकसुत आयो * वैसोई रथ परत लखायो ।।
लै गयो प्रथमहिं प्राण हमारो * अब धौं कहा काज जिय धारो ।।
तिहिं क्षण उद्धव दर्श दिखायो * तब धीरज सबके मन आयो ।।
संगी सखा श्यामको चीन्हो * सबनि प्रणाम जोरि कर कीन्हो ।।
उद्धवजी लखि भये सुखारी * मनहुँ विकल झष पायो बारी ।।
दो०—तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाँहि ।।
भई भीर गोपीनकी, अति आनंद मनमाहिं ।।१३।।
सो०—अतिप्रिय पाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी ।।
करिकै अति सन्मान, प्रेमसहित पूजें सबन ।।१३।।
हाथ जोरि पुनि बिनय सुनाई * कहिये ऊधो निजकुशलाई ।।
बहुरि कहौ मधुवन कुशलाता * हैं वसुदेव देवको माता ।।
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ * अरु अक्रूर कुशल कुबजाऊ ।।
बूझत श्याम कुशल अकुलानी * नयन नीर मुख गद्गद बानी ।।
लखि गोपिनको प्रीति सुहाई * प्रेममगन भय उद्धव-राई ।।
पुलकि गात अँखियाँ जल छाई * गयो ज्ञानको गर्ब हिराई ।।
पुनि पुनि यहै कहत मनमाहीं * ऐसी हरिको बुझिये नाहीं ।।

ब्रजनारिनको योग पठावैं * चितते ब्रजको प्रीति मिटावैं ॥
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा * बोले सोधि नयनको नीरा ॥
सबबिधिकहि हरिकोकुशलाती * दीनी प्रथम श्यामकी पाती ॥
लै लै करन मिलति सब पाती * कोउ नयनन कोउ लावत छाती ॥
काहू लै कर सीस चढ़ाई * बूझत आपन लिखी कन्हाई ॥
दो०—अतिहित पाती श्यामको, सब मिलि २ सुख पाय ॥
उद्धवकर दीनी बहुरि, दीजै बाँचि सुनाय ॥१४॥
सो०—उद्धव सबन संमोध, बाँचि श्यामको पत्रिका ॥
लागे करन प्रबोध, ज्ञानकथा विस्तारकै ॥१४॥
मोको हरि तुमपास पठायो * आत्मज्ञान सिखावन आयो ॥
जाते पाप नहीं नियराई * मनते बिषय देहु बिसराई ॥
हरि आपहि नर आपुहि नारी * आपहि गृही आप ब्रह्मचारी ॥
आपहि पिता आपही माता * आपहि पुत्र आपही भ्राता ॥
आपहि पंडित आपहि ज्ञानी * आपहि राजा आपहि रानी ॥
आपहि धरती आप अकासा * आपहि स्वामी आपहि दासा ॥
आपहि ग्वाल आपही गाई * आपहि आप दुहावत गाई ॥
आपहि भ्रमर आपही फूला * आपहि ज्ञानबिना जगमूला ॥
राव रंक दूजा नहिं कोई * आपहि आप निरंतर होई ॥
ज्यों बहुदीप ज्योति है एकू * तैसेइ जानौ ब्रह्मबिबेकू ॥
इहिप्रकार जाको मन लागै * जरा-मरण-संशय-भ्रम भागै ॥
योगसमाधि ब्रह्म चित लावै * ब्रह्मांनद-सुखहिं तब पावै ॥
दो०—सुनतहिं उद्धवके बचन, रहीं सबै शिर नाय ॥
मानहुँ माँगत सुधारस, दीन्हौ गरल पिलाय ॥१५॥
सो०—रहीं ठगीसी नारि, हरिसँदेस दारुण सुनत ॥
बोली बहुरि सँभारि, उद्धवसों कर जोर कै ॥१५॥
भले भले तुम उद्धव-राई * भली आय कुशलात सुनाई ॥
कछु इक हती मिलनकी आशा * कियो आय ताको तुम नाशा ॥
इन बातन कैसे मन दीजै * श्याम बिरह तनु पल २ छीजै ॥

बिन देखे वह मूरति प्यारी * कुंडल मुकुट पीतपट-धारी ।।
उद्धव कहौ कौनविधि जीजै * योग मुनि लैकै कह कीजै ।।
छाँड़ि अछत नँदनँदन प्यारो * को लिखि पूजै भीति पगारो ।।
हम अहीर गोरसरसभोगी * योगमुक्ति जाने कोउ योगी ।।
उद्धव तुमसों साँच बखानैं * प्रेम भक्ति हमरे मन मानैं ।।
हमको भजनानंद पियारो * ब्रह्मनंदसुख कहाँ बिचारो ।।
व्यावरिव्यथा न बंध्या जानैं * ये कैसे हरिदर्शनसुख मानैं ।।
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै * कृष्ण रूपबिन और न भावै ।।
नवकिशोर कौने न निहारै * कोटि ज्योति ताऊपर वारैं ।।
दो०-अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल ।।
क्यों विसरत उद्धव हमैं, मोहन मदनगुपाल ।।१६।।
सो०-सजलमेघतनुश्याम, रूपराशि आनँदभरचो ।।
मोहीं सब ब्रजबाम, और न जानत ब्रह्म हम ।।१६।।
उद्धव सुनि गोपिनकी बानी * बोले बहुरो साजि सयानी ।।
ज्योंलगि हृदय ज्ञान नहिं नीके * तौलौं सब पानीकी लीके ।।
बूझे बिन सपनो सब होई * बिन विवेक सुख पाव न कोई ।।
रूप रेख वाके कछु नाहीं * नयन मूँदि चितवौ मनमाहीं ।।
हृदयकमलमें ज्योति बिराजै * अनहद नाद निरंतर बाजै ।।
इड़ा पिंगला सुखमन नारी * सहजशून्यमें बसत मुरारी ।।
नासाअग्र ब्रह्मका बासा * धरहु ध्यान तहँ ज्योतिप्रकासा ।।
क्रमक्रम योगपंथ अनुसरहू * इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू ।।
उद्धव हम गोपाल-उपासी * ब्रह्मज्ञान सुनि आवै हाँसी ।।
जोपै रूप रेख नहिं बीना * हाथ-पाँव-मुख नयनबिहीना ।।
तौ यशुदाकरि काको जायो * काको पलना घालि झुलायो ।।
कैसे ऊखल हाथ बँधायो * चोरि चोरि कैसे दधि खायो ।।
दो०-कौन खिलाये गोद करि, कहे न तुतरे बैन ।।
उद्धव ताको न्याव है, जाहि न सूझै नैन ।।१७।।
सो०-नटबरबेष प्रकाश, श्रीवृन्दाबनचंद्र तजि ।।

को खोजै आकाश, शून्य समाधि लगायकै ॥१७॥
जानि बूझि मति होहु अयानी * मानहु सत्य हमारी बानी ॥
भजो ब्रह्म ब्रह्ममैं सब होहू * छाँड़ि देहु ममता अरु मोहू ॥
माया नित आँधरी न बूझै * ज्ञान अनंत नयन सब सूझै ॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाषी * देखहु बूझि बेद सब साषी ॥
लगे आगि घर घूर जरावै * को निजगृह तजि घूर बुझावै ॥
घरो करौ बल योग सबारो * भक्तिबिरोधी ज्ञान तुह्मारो ॥
योग कहा सब ओढ़ि बिछावैं * दुसहबचन हमको नहिं भावैं ॥
अबलन आनि सिखावत योगू * हम भूली कैधौं तुमलोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी * मनमैं श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो * सहज निकट ह्वै बचनसुनायो ॥
तासों कहि सब बात सुनावैं * उद्धवप्रति बहु व्यङ्ग बतावैं ॥
बचनस्वभाव त्रिगुण अनुसारी * लागीं कहन सकल ब्रजनारी ॥
दो०—कोऊ उद्धवसों कहत, कोउ अलीप्रति बात ॥
निज निज मनकी उक्ति करि, अपनी २ घात ॥१८॥
सो०—उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोल न आवहीं ॥
रहे मौनसों मान, सुनत बचन नारीनके ॥१८॥
बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी * आय सुनो री सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पद नीको * लीन्हें सीस सुयशको टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा * सुतपति बंधू स्वजन सनेहा ॥
सीस जटा अरु भस्म लगावौ * सगुण छाँड़ि निर्गुणमन लावौ ॥
आयो करन तियनपर छोहा * बस्ती छाँड़ि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरु बाला * ये मधुपुरि दोउ बसत मराला ॥
वे अक्रूर और ये ऊधो * निरवारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गाँसकी बाता * इनहीं कंस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई * प्रकट उजागर बंश सदाई ॥
अब करि कृपा ब्रजहिं उठि धाये * अबलन योग सिखावन आये ॥
ऐसे एक कहत अरु ग्वालो * ये दोउ इक मन सुन री आली ॥

तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो * ब्रज आखेट कियो इन सूधो ।।
दो०—बचन फाँसि फँसि हरिहरिन, उन लिय रथ बैठाय ।।
हर लीनो इन गोपिका, हती ज्ञानशर आय ।।१९।।
सो०—देखहु दीन्हो लाय, चहुँदिशि दावा योगको ।।
भई कठिन अति आय, अबधौं कह चाहत कियो ।।१९।।
लागी कहन और इक ग्वारी * मधुकर जानी बात तुम्हारी ।।
तुम जो हमैं योग यह आन्यो * करी भली करणी सो जान्यो ।।
इक हरिबिरह रही हम जरिकै * सुनतहिअधिकउठी अब बरिकै ।।
तापर अब जनि लोन लगावौ * मर्तिहिं पराई बात चलावौ ।।
दई श्याम तुम्हरे कर पाती * सुनिकै बहुत सिरानी छाती ।।
कीन्हो उलटो न्याव कन्हाई * बहे जात माँगत उतराई ।।
यह हम दुसह बिरहदुख पावैं * दूजे लिखि लिखि योग पठावै ।।
मधुकर श्यामभेद अब पायो * नेहरत्न उन कहूँ गँवायो ।।
पहिले अधरसुधारस प्यायो * कियो पोष बहु लाड़ लड़ायो ।।
बहुरो शिशुको लेख बनायो * गृहरचना रचि चलत मिटायो ।।
साँपकँचुकी ज्यों लपटाई * ऐसी हितको रीत दिखाई ।।
बहुरो सुरति लई नहिं जैसे * तजी श्याम हमको अब ऐसे ।।
दो०—करहुराज जहँ जाहु तहँ, लेहु अपन शिर भार ।।
दीजत सबै असीस यह, न्हातहु खसौ न बार ।।२०।।
सो०—बहुरंगी सुखतूल, जितहि जात ततही सदा ।।
इकरंगी दुखमूल, चातक मीन पतंग गति ।।२०।।
मधुप कहा कहि तुम्हैं सुनैये * करिकै प्रीति सबै पछितैये ।।
निबहैगी ऐसे हम जानी * उन लैकै कछु औरै ठानी ।।
कारे तनको कहा पत्यारो * मृदुमुसुकानि मन हऱ्यो हमारो ।।
तब काहू मन हरत न जान्यो * हंसि२सब लोगन सुख मान्यो ।।
बरु वहि कुब्जा कीन्हो नीको * सुनि२मधुपमिटत दुख जीको ।।
चंदन तनक श्याम उर धरिकै * श्रीसर्वस्व पियो सब भरिकै ।।
जैसो छल हमसों हरि कीन्हो * ताको दाँव कूबरो लीन्हो ।।

बोली और एक यों बानी * भाग्यदशा उद्धव किन जानी ॥
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी * कुब्जा भई श्यामकी प्यारी ॥
खात बच्यो असुरनको जोई * अब कुलबधू कहावत सोई ॥
राजकुँवरि कोऊ हरि बरते * तौ कछु हम चितमें नहिं धरते ॥
बन्यो साथ अब अतिही सागर * कागो और मराल उजागर ॥
दो०—अब खेलत दोउ लाज तजि, बारहमासी फाग ॥
लौंडीकी डौंडी बजी, हाँसी अरु अनुराग ॥२१॥
सो०—हमैं देत बैराग, आपन दासीबश भये ॥
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बड़ो ॥२१॥
उद्धव हरि ऐसे काजनकरि * सुयश रह्यो त्रिभुवनमाहीं भरि ॥
आये असुर जिते ब्रजमाहीं * मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं ॥
विषजलसों सब ग्वाल जिवाये * कालियनाग नाथि लै आये ॥
इंद्रमान हलि ब्रजहि बचायो * गोबर्धन कर बाम उठायो ॥
जब विधि बालक बत्स चुराये * करिकै यत्न आप उपजाये ॥
धनुष तोरि गज प्रबल सँवाऱ्यो * मल्लनसहित कंस नृप माऱ्यो ॥
कीन्हो उग्रसेनको राजा * भये सकल देवनके काजा ॥
ऐसी कीरति करि सब नासी * कीन्ही नारि कूबरी दासी ॥
कहँ श्रीपतित्रिभुवन सुखदायक * अखिललोकब्रह्माण्डके नायक ॥
ब्रह्मा शिव इंद्रादिक देवा * करत निरंतर जाकी सेवा ॥
उद्धव कहाँ कंसकी दासी * यह सुनि होत सकल ब्रजहाँसी ॥
कत मारत यदुकुलको लाजन * अब करिकै हरि ऐसे काजन ॥
दो०—गावत जग सब गीत अब, वा चेरीके काज ॥
उद्धव यह अनुचित बड़ो, चेरीपति ब्रजराज ॥२२॥
सो०—उद्धव कहियो जाय, अबहूँ चेरी परिहरैं ॥
यह दुख कह्यो न जाय, सौति कहावति कूबरी ॥२२॥
बोली और बाम इक ऐसे * उद्धव हरि रीझे धौं कैसे ॥
इक चेरी अरु कूबर पाछे * सोवत नहीं उताने आछे ॥
कुटिल कुरूप जातिकुलहीनी * ताको श्याम सुहागिनि कीनी ॥

कहा सिद्धि धौं कूबरमाहीं * हमको लिखिपठवत क्योंनाहीं ।।
हमहूँ कूबर यत्न बनावैं * चलिकैं टेढी चाल दिखावैं ।।
कहैं श्याम सोई अब कीजै * लोकलाज भामिनि तजि दीजै ।।
होहिं आय गोकुलके बासी * तजैं निगोडी कुब्जा दासी ।।
मधुकर जो हरि हमैं बिसार्यो * गोपीनाथ नाम क्यों धार्यो ।।
जो नहिं काज हमारे आवत * तौ कलंक कित हमहिं लगावत ।।
जोपै प्रीति करो कुब्जाको * तौ अब बिरद बुलावहिं ताकी ।।
करतहि सुगम सबन करि पाई * प्रीति निबाहन अतिकठिनाई ।।
अब परतीत कवनबिधि माने * क्षणमें हो गये श्याम बिराने ।।
दो०—ज्यों गज को रद त्यों करी, हरि हमसों पहिचान ।।
दिखरावनको आनहीं, काज करनको आन ।।२३।।
सो०—बिषकीरांविष खात, छाँडि छुहारा दाख फल ।।
मन मन कीज बात, उद्धव कहिये काहिसों ।।२३।।
उद्धव कहि कह तुम्हैं सुनावैं * जैसे हरिबिन हम दुख पावैं ।।
बरु रहते मथुरा घनश्यामा * कत आये यशुदाके धामा ।।
कत करि गोपबेष सुख दीन्हों * कत गोवर्धन करपर लीन्हों ।।
कतहिं रासरस रचि बनमाहीं * किये बिबिधसुख बर्णि न जाहीं ।।
करिके ऐसे प्रीति कन्हाई * अब मन धरी इती निठुराई ।।
जबते तजि ब्रज गये बिहारी * तबते ऐसी दशा हमारी ।।
घटे अहार बिहार हर्ष हिय * भोगसँयोग आश आवन जिय ।।
बाढ़ी निशावलय आभूषन * लोचन जल अंचलप्रति अंजन ।।
उर चिंता कंचुकी उसासा * जीवन रह्यो अवधिकी आसा ।।
बीतत निशा गनत नभतारे * दिवस तकत पथ लोचन हारे ।।
रही नहीं सुधि बुधि मनमाहीं * विरहानल तनु जरत सदाहीं ।।
सुमिरि २ कै हरिगुणग्रामा * दुख अधिकात सुहात न धामा ।।
सो०—कहँलगिकहिये निजव्यथा, अरुहरि की निठुराय ।।
तापर लाये योग अलि, अबलन करन सहाय ।।२४।।
सो०—कठिन विरह की पीर, जिहिंव्यापै सो जानही ।।

क्यों धरिये मन धीर, सुनि अलि बचन भयावने ।।
जे कच फूल फुलेल सँवारे * निजकर हरि गूँथे निरवारे ।।
कहि पठयो तिनको मनभावन * भस्म सानिकै जटा बनावन ।।
रत्नजड़ित ताटङ्क सुहाये * निज कानन मोहन पहिराये ।।
तिनको अब मुद्रा माटीके * ल्याये हैं उद्धव गढ़ि नीके ।।
भाल तिलक अंजन नकबेसर * मृगमद मलयज कुंकुम केसर ।।
उर कंचुकी मणिनके हारा * सब तजि कहत लगावहु क्षारा ।।
जिहि गर श्याम सुभगभुजमेली * पठई तिहिं आँगी अरु सेली ।।
पहिरे जात न चीर सुहावन * ताहि भगौं हौं कहत रँगावन ।।
जामुख पान सुगंध सुहाये * निजहाथन ब्रजराज खवाये ।।
रसबिबाद बहु तान तरङ्गा * गावत कहत रहत हरिसङ्गा ।।
मदनविलास हासरस भाष्यो * हरिमुख अधरसुधापुनि चाख्यो ।।
तिन मुख मौन कौन विधिकीजै * ऊरधश्वास घूँटि किमि जीजै ।।
दो०—वे तौ हरि अतिही कठिन, जानी तिनकी घात ।।
मधुप तुम्हैं नहिं चाहिये, कहत कठिन यों बात ।।२५।।
सो०—तब बजाय मृदु बैन, अधरातन बोल बनहिं ।।
किए रासरस ऐन, अब कटु बचन सुनावहीं ।।२५।।
मधुकर मधु माधवकी बानी * हमसब जिमिमाखी लपटानी ।।
उड़ि नहिं सकी फँसीही तामें * आवत शोच कहैं अब कामें ।।
जिमि अहारबश मीन बिचारे * कंटक गिलत कठिन अनियारे ।।
अटकत कुटिल हृदय दुख बाढ़ै * बहुरि कौनविधि तिनकोकाढ़ै ।।
जैसे बधिक सुनाद सुनावैं * मृगमन मोहि समीप बुलावैं ।।
बहुरि करत धनुशरसंधाना * तुरतहि मारि हरत है प्राना ।।
जिमि सनेहबल दीप प्रकाशै * रजनीके तमको दुख नाशै ।।
रूपलोभ शलभहिं न दिखाई * क्षणमें तिनको देत जराई ।।
जिमि ठग मद मोदकन खवावै * पथिकजननसों प्रीति जनावै ।।
रसविश्वास बढावत भारी * प्राणसहित गथ हरत पछारी ।।
तिमि मृदुमुसकनि मनहिंचुराई * खग जिमिहम ब्रजनाथ बुझाई ।।

पाछे अब करनी यह कीनी * योगछुरी अबके गर दीनी ॥
दो०—हरि हमसों ऐसी करो, कपटप्रीति विस्तार ॥
भई बिरह बिषबेलि ब्रज, रसकी ऊंख उखार ॥२६॥
सो०—कहिये कहाबखान, जिनसों हितयह मत्ति तिन्हैं ॥
हरिजु हमरे प्रान, हम हरिके भावैं नहीं ॥२६॥
यह सुनि कह्यो और इक ग्वाली * कहत कहा मधुकरसों आली ॥
उनहोंको सङ्गी यह जोऊ * चंचल चित्त श्यामतन दोऊ ॥
वे मुरली धुनि जगमनमोहन * इनकी गुंज सुमनदल जोहन ॥
वे निशि अनत प्रात कहुँ आनैं * ये बसि कमल अनत रुचिमानैं ॥
वे द्वै चरण सुभग भुज चारी * ये षट्पद दोउ बिपिन बिहारी ॥
वे पट पीत मंजु तनु काछे * इनके पीत पंख दोउ आछे ॥
वे माधव ये मधुप कहावत * काहूभाँति भेद नहिं आवत ॥
वे ठाकुर ये सेवक उनके * दोउ मिले एकही गुणके ॥
कहा प्रतीति कीजियें इनकी * परी प्रकृति ऐसी ये जिनकी ॥
निरस जानि भाजत पलमाहीं * दया धर्म इनके कछु नाहीं ॥
मन दै सरबस प्रथम चुरावैं * बहुरौ ताके काम न आवैं ॥
इनकों प्रीति किये यों माई * ज्यों भुसपरकी भीत उठाई ॥
दो०—कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इकसार ॥
इनसों प्रीति न कीजिये, कपटिन की चटसार ॥२७॥
सो०—देखो करि अनुमान, कारे अहि कारे जलद ॥
कविजन करत बखान, भ्रमर काग कोयल कपट ॥२७॥
राखि पिटारे जो जो अहि कारो * पय पियाइ अतिहित प्रतिपारो ॥
कुलस्वभावसों डसि भजिजाहीं * यद्यपि तिन्हैं लोभ कछु नाहीं ॥
जलद सलिल बर्षत चहुँघाँहीं * भरत सकल सरसरितामाहीं ॥
निशिदिन ताहि पपीहा ध्यावै * भाँवरि दै दै प्रीति बढ़ावै ॥
एक बूँदको तिहिं तरसावैं * भ्रमर मालतीसों मन लावैं ॥
जब रसहीन होत वा माहीं * निर्मोही तजि जात पराहीं ॥
सुनियत कथा काक पिककेरी * अंडन सेव कुरावत हैं री ॥

बड़े होत निजकुल उड़ि जाहीं * बैठत निज माता पितु पाहीं ॥
ये सब कारे हरि पर वारे * सबहिनमें अतिही अनियारे ॥
सबको उपमा अरु गुणयोगू * न्याय देत पटतर कबिलोगू ॥
अलिकुल अलक कोकिलाबानी * भुज भुजंग तनु जलद बखानी ॥
समुझो बात आज यह सारी * खानि कपटकी कुंज बिहारी ॥
दो०—मृदु मुसकानि विष डारके, गसे भुजगलौं भाग ॥
नंदयशोदा यों तजी, ज्यों कोकिलसुत काग ॥२८॥
सो०—गए प्रीति यों तोर, जिमि अलि रस लै सुमनसों ॥
धनले भये कठोर, चातकसों हम रटत सब ॥२८॥
उद्धव सुनौ एक उपखानो * बाजी ताँत राग पहिचानो ॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी * क्यों नहिं दुख पावैं ब्रजनारी ॥
कहत सुनत लागत हो ऐसे * मीठो कहत गरलसों जैसे ॥
पायो छोर लपटको तबहीं * लिखि आयो निर्गुणपद जबहीं ॥
योग जहाँ अधिकारहिं पाये * क्यों नहिं तूँबा तहाँ बोवाये ॥
सुनि लीजै उद्धवजी हमसों * राजकाज चलिहैं नहिं तुमसों ॥
करिये पोष आपनी काया * आये इतौ करी बड़ि माया ॥
जो तुम हौ हमरे हित आन्यो * सोहम शिर चढ़ाय सुख मान्यो ॥
सुनिकै सब ब्रजलोग अनंद्यो * नर नारी परच्यो कर बंद्यो ॥
अब सँभारि अपनो यह लीजै * जिन तुम पठये तिनहीं दीजै ॥
उनहीमें यह योग समैहै * इहाँ न काहूपैं निरबैहै ॥
हम ब्रज बसत अहीर गँवारी * योगसोग को नहिं अधिकारी ॥
दो०—अंधआरसी बधिर ध्वनि, रोगग्रसित तन भोग ॥
उद्धव तिनको न्याव है, हमैं सिखावत योग ॥२९॥
सो०—हमैं योग जो योग, सोई योग सिखाइये ॥
कहै न जानै रोग, कहा कीजिये बैद सों ॥२९॥
उद्धव जाउ भले तुम ओऊ * अपने स्वारथके सब कोऊ ॥
निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो * कौनै या ब्रज तुम्हें पठायो ॥
और कह्यो सँदेशो कोऊ * कहि निबरौ अब सुनिये सोऊ ॥

तब अक्रूर आय वह कीन्हों * सिगरे ब्रजको सुखहरि लीन्हों ॥
तुम आयो उद्धव यह ठाटो * अन्न छुटाय खवावत माटी ॥
जोपै हुती ज्ञानकी गाथा * तौ कत रास रचो ब्रजनाथा ॥
मन हरि लीन्हों बेणु बजाई * आधीनिशि सब नारि बुलाई ॥
रसलीला वृन्दावन ठानो * अब मथुरा व्है बैठे ज्ञानी ॥
तब ममता क्यों नहिं उर धारी * मातुल मार्‍यो कंस पछारी ॥
बूझि परे नीके सबकोई * हुती कछुक आशा सोउ खोई ॥
पढे सबै एकै परिपाटी * अधिक एकते एक न घाटी ॥
हम बाबरी चली नहिं त्योंहीं * जो जग चलत आपनी गौंहीं ॥
दो०-मनकी मनहीमें रही, कहिए काहि बिचार ॥
हम गुहारि जितते चही, तितते आई धार ॥३०॥
सो०-जानत है सब कोय, जैसी तुम हमसों करी ॥
हम सहिलीनी सोय, पावोगे अपनो कियो ॥३०॥
उद्धवजी पूँछत हम तुमको * जो हरि योग सिखावत हमको ॥
तौ करि कृपा आप किन आवै * योग ज्ञान कहि प्रकट जनावै ॥
जो उपदेशी निकट न आवै * तौ श्रोता किहिबिधि मन लावै ॥
अब लगि सुनी न काहू आनन * मंत्र देन लागे बिन कानन ॥
जबलग युक्ति न सिद्ध बतावै * तबलगि साधक कैसे पावै ॥
हम गोकुल वे मथुरामाहीं * खेती होती सँदेशन नाहीं ॥
जोपै करी श्याम यह माया * करैं और तौ तो इतनी दाया ॥
दर्शन प्रथम दिखावे आई * करहि पवित्र चरण पखराई ॥
योग जानिकै नगर तियागैं * सघन कुंजबन मन अनुरागैं ॥
आसन मौन नियम आचारा * जप तप संयम व्रत व्यवहारा ॥
योग अङ्ग कहियतहैं जेते * बनहीमें बनिआवैं तेते ॥
करि प्रबोध कर माथ छुवावैं * होंहिं सिद्ध फल तौ सुख पावैं ॥
दो०-तब तौखेलत सोंह करि, राख्यो कछु न सुहाय ॥
अब यह योग सिल्यो कहाँ, उद्धव कहियो जाय ॥३१॥
सो०-हमको निर्गुण ज्ञान, जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं ॥

लिखि पठयो निर्वान, चाटैं सहत लगायके ॥३१॥
बोली और एक रिस मानी * मधुकर समुझिकहतकिनबानी॥
परमधु पिये जात नहिं दीजै * मुख देखे क्यों न्याव न कीजै॥
बीचहि परै सत्य सो भाषै * रावरंकको शङ्क न राषै॥
सूझि न परत दिवस औ राती * बात करत हौ ठकुरसुहाती॥
ब्रजयुवतिनको योग सिखावत * वृषभजोति सुरीभी न गनावत॥
रे कृतघ्न लंपट व्यभिचारी * कीरति इहै आनि विस्तारी॥
हम जान्यो अलि है रसभोगी * कत सीख्यो यह योग कुयोगी॥
जे भयभीत होइँ लखि माला * ते क्यों छुवैं भयानक व्याला॥
क्यों शठ बकत छाँड़ि लज्जा डर * कहँ अबला कहँ दिशा दिगंबर॥
साधु होय तौ उत्तर दीजै * कहा तोहिं कहि अपयश लीजै॥
भई बायसी देखियत तोहीं * इन बातन डर लागत मोहीं॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै * तापाछे औरन सिख दीजै॥
दो०—कत श्रम करि बक २ करत सुनत कौन तुव बात॥
बन कारों यों होतहै, उठि किन ह्याँते जात॥३२॥
सो०—देखि मूढ चित चाहि, कहँ परमारथ कह बिरह॥
राजरोग कफ जाहि, ताहि खवावत हौ दही॥३२॥
बोली और एक कोउ नारी * उद्धव सुनिये बात हमारी॥
प्रथमहिं ब्रजको दशा बिचारौ * पाछे योगसिद्धि विस्तारौ॥
जाकारण पठये हैं माधो * सो बिचार कछु जियमें साधो॥
केतिक बीच विरह परमारथ * देखौ जियमें समुझि यथारथ॥
परमचतुर हरिके निज दासा * रहत सदा संतनके पासा॥
जल बूड़त पुनि पुनि अकुलाई * कहा फेन परकत हौं धाई॥
सुन्दर श्याम कमलदललोचन * सबबिधिसुखदसकलदुखमोचन॥
ब्रजको जीवन नंद दुलारो * कैसे उरते जात बिसारो॥
योगयुक्ति किहिं काज हमारे * वाकी मुरलीपर सब वारे॥
तुम निर्गुणको कीरति गाई * करै कहा सो बहुत बड़ाई॥
अति अगाध पैहैं नहिं पारा * मन बुधि कर्म सबनके मारा॥

Digitization by eGangotri/Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूप रेख बपु बर्ण न जासों * कैसे नेह निबाहै तासों ॥
दो०—बिनही तोय तरङ्ग अरु, बिन चेतन चतुराय ॥
अबलौं ब्रजमें नहिं हुती, मधुपकरी तुम आय ॥३३॥
सो०—कहौं विविधविधि कोय, नहिं सुहात नंदनंदबिन ॥
अन्नक्षुधारत जोय, स्त्रक चदन क्यों सुख लहै ॥३३॥
लायी कहन और इक ग्वाली * कत बेकाज बकतहै आली ॥
कहिये तिहिं जो होय विवेकी * यह अलि निजबातनको टेकी ॥
बकियासों को मूड पचावै * फटकै भुसी हाथ कह आवै ॥
तजि रसगेह नेह हरि पीको * सिखवत नीरस निर्गुण फीको ॥
देखत प्रकट नयन कछु नाहीं * ज्योति २ खोजत तनुमाहीं ॥
श्रवण सुनत जाकी मुरलीधुन * भूलि रहे शिवसे योगजन ॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी * बन बन लाज छुड़ाय बिहारी ॥
रासविलास विविध उपजायो * संग हमारे नाच दिखायो ॥
लोकलाज कुलकानि न शाई * हम सब तिनके हाथ बिकाई ॥
काटि सुहाग प्रेमको हेली * बोवत योग जहरकी बेली ॥
चौपद होय ताहि समुझैये * कौनभाँति षटपदहिं सिखैये ॥
लागे कौन कहे अब याके * छाँछौ दूध बराबर जाके ॥
दो०—हम विरहिनी बिरहा जरी, जारी और अनंग ॥
सुख तौ तबहीं पाइये, जब नाचैं फिर सङ्ग ॥३४॥
सो०—छाँडि जगतउ पहास, दृढब्रत कीनो श्यामसों ॥
सोइ हमैं सुख आश, और मुक्ति चाह नहीं ॥३४॥
सुनरे मधुप कुटिल कुविचारी * ये ब्रजलोग कृष्णव्रतधारी ॥
सुन्दर श्यामरूप रससाने * श्रीगुपाल तजि और नजाने ॥
जो तजि श्याम औरको ध्यावैं * व्यभिचारी ते भक्त कहावैं ॥
विद्यमान तजि सुरसरितीरा * चाहत कूप खोंदिकै नीरा ॥
सुनै कौन यह सीख तुम्हारी * अति अनन्य मंडली हमारी ॥
योग मोट तुम शिरधरि आनी * सो नहिं ब्रजबासिन मन मानी ॥
इतनी दूर जाहु लै कासी * चाहत मुक्ति तहाँ के बासी ॥

हम कह कहैं मुक्ति लै रूखी * अबला श्यामसंगकी भूखी ।।
ओसन प्यास कौनविधि जाई * जबलगि नीर न पियैं अघाई ।।
ऐसे बात कहो अलि हमसों * तजहु शोच मिलिहैं हरि तुमसों ।।
हेत हमारे जो पग धारे * तौ हित करि दुख हरौ हमारे ।।
करहू सो यतनश्याम जिमि आवैं * प्रकट देखि छबि हम सुख पावैं ।।
दो०—साँचो ज्ञान औ ध्यान अलि, साँचो योग उपाय ।।
हमको साँचो नँदसुत, गग कह्यो समुझाय ।।३५।।
सो०—बश कीन्हीं मृदुहास, हम चेरो नँदनंदकी ।।
नखशिख अंग बिशाल, तिनही देखे जीजिये ।।३५।।
इतनेहीसों काज हमारो * मिलहि फेरि ब्रजचंददुलारो ।।
और अनेक उपाय तिहारो * राजकरहु अलिहमहिं न प्यारो ।।
तुम तौ मधुर प्रीतिरस जानो * हमकाजै कत होत अयानो ।।
सर्व सुमनमें फिरि २ आवत * क्यों कमलनमें आप बँधावत ।।
जिहि बल काठ फोरि घरकरहू * क्यों न कमलदल टारत तबहू ।।
रंगे श्यामरंग जे पहिले से * चढ़त और रँग तिनपर कैसे ।।
पारसपरस जो लोह सुहायो * सोकिमि बहुरि चिबुकलपटायो ।।
सुनो जिनन मुरली ध्वनिकानन * सो किमि सुनत कीगरीतानन ।।
बसे जासु उर सगुण कन्हाई * कैसे निर्गुण तहाँ समाई ।।
यह मन श्यामस्वपरू लुभानो * कहा करै लै योग बिरानो ।।
सिंह सदा आमिष रुचि मानैं * तृण न भखै बरु तजै परानै ।।
हरि तजि हमैं न और सुहाई * कोटि भाँति कोउ कहै बुझाई ।।
दो०—द्वै दृग रूप विराटके, कहियत एक समान ।।
ताहूमें हित चंद्रमा, नहीं चकोरहिं भान ।।३६।।
सो०—लोचन रूप अधीन, सगुण ब्रह्म बैराजके ।।
क्यों सच पावे मीन, जलबिन डारे दूधमें ।।३६।।
नहिं मानत ये नयन हमारे * सुखन लहत बिन कान्ह हमारे ।।
भये श्याम छबि जलके मीना * मुरलीधुनिके मृग आधीना ।।
अलि लोभी पंकजपद करके * कोकि कोकनद द्युति दिनकरके

बदनइंदुके कुमुद चकोरा * तनुघनछवि वे चातक मोरा ।।
यहै रूप परगट जब देखें * जीवन सुफल तबहिं करि लेखें ।।
बिगरि परे मन मधुप हमारे * ज्ञानबचन नहिं सुनत तुम्हारे ।।
ललित त्रिभंगरूप रससाने * खरे चकित ताते जग जाने ।।
श्वानपुच्छलों सम नहिं होई * जो सौ यत्न करै पचि कोई ।।
सो मन गयो श्यामके साथा * सुनै कौन अब निर्गुणगाथा ।।
एकै मन एकै वह सूरति * अटक्यो ताहि न तजै महूरति ।।
जो होतो दूजो मन कोऊ * तौ हम लै धरतीं तहँ सोऊ ।।
उद्धव हरि हैं ईश हमारे * ते अब कैसे जात बिसारे ।।
दो०--योग दीजिये लै तिन्हैं, जिनके मन दस बीस ।।
कित डारत निर्गुण इतै, उद्धव ब्रजमें खीस ।।३७।।
सो०--गुण करि मोही श्याम, को निर्बाहै निर्गुणहिं ।।
किये जन्म के काम, क्यों तजिये नँदनंद अब ।।३७।।
कहत मधुप तुम बात सुहाई * कहतहिं सुगम करत कठिनाई ।।
प्रथम अग्नि चंदनसी जानी * सती होन उमहैं सुख मानी ।।
जाकी तपत और सियराई * कहै कौन पाछे पुनि आई ।।
पैठत सुभट यथा रण जाई * कुसुमलतासम खड्ग सुहाई ।।
दियो अपनपौ शूर उदारा * को अब करै तासु निर्बारा ।।
ये मन मोहनसों उरझानैं * सुख दुख लाभ हानि नहिं जानैं ।।
प्रेमपंथ सूधो अति ऊधो * मति निर्गुण कंटक लै रूँधो ।।
नेह न होइ पुरानो क्योंही * सरित प्रवाह न योंनित ज्योंही ।।
निरखहि आनँदरूप छकी जल * रविप्रतीति नहिं मीन चढ़ै थल ।।
बूड़त उमहि सिंधुके माहीं * येतउ नीर न पियत अघाहीं ।।
दिन दिन बढ़त कमलजल जैसे * हरिछबि दृगन लालसा तैसे ।।
बसे गुपालहृदय अंबुज अलि * निकसत नाहिं सनेहरहे रलि ।।
दोहा--योगकथा अब मति कहौ, उद्धव बारहिं बार ।।३८।।
भजै आन नँदनंद तजि, ताकी जननी छार ।।३८।।
सो०--यहै हमारे भाव, अब कोऊ कछुनै कहौ ।।

जैबो होय सुजाव, रहौ प्रति नंदलालको ॥३८॥
रहे प्राण तनु प्रेमहिं खोई * कौन काज आवै पुनि सोई ॥
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै * निशा गये जिमि शशिन सुहावै ॥
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे * चातकयश गावत सब टेरे ॥
प्रेमसहित मीननकी करनी * नयन अछत देखहु जग बरनी ॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो * दुहूँभाँति हम तौ यह लीन्हो ॥
मिले श्याम तो अधिक सुहायो * नातर सकल जगत यश गायो ॥
कहँ हम या गोकुलकी ग्वारी * बर्णहीन घटि जात गँवारी ॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा * बैठे पाँति हमारे साथा ॥
निगम ज्ञान मुनिध्यानअतीता * सो ब्रज भये हमारे मीता ॥
तिन्हैं संग लै रासविलासी * मुक्ति इत्तेपर काकी दासी ॥
यह सुनि बोलि उठी इक आनै * मेरो बुरो न कोऊ मानै ॥
रसकी बात रसिकही जानै * निरस कहा रसकी पहिचानै ॥
दो०—दादुर कमलनढिग बसत, जन्म मरण पहिंचान ॥
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आन ॥३९॥
सो०--जानै कहा मिठास, गूँगो बात सवादको ॥
मानहु काटो घास, इनको कहिबो प्रेमरस ॥३९॥
धनि धनि उद्धव तुम बड़भागी * हरिसों हित नहिं मन अनुरागी ॥
पुरइनि बसत यथा जलमाहीं * जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं ॥
गागरनेह नीरमैं जैसे * अपरस रहत न भीजत तैसे ॥
पैरत नदी बूँद नहिं लागी * नेक रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब ब्रजकी नारि अयानी * ज्यों गुड़सों चींटी लपटानी ॥
अब कासों वह लगत बखानैं * लागे बिन उद्धव को जानैं ॥
हृदय दहै नित शोचत रहिये * पशु बेदन ज्यों मन २ सहिये ॥
सबते पीर लगनकी भारी * यत्नरहित दुखसुखते न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावै * बैद कहाँलगि ताहि बतावै ॥
घायल पीर जानिहै सोई * लाग्यो घाव जिसीके होई ॥
प्रेम न रुकत हमारेहूते * गज कहुँ बँधत कमलके सूते ॥

कैसे विरहसमुद्र सुखाई * योग अग्निकी तनक लुकाई ॥
दो०—यद्यपि समुझाय बहुत, हम करि मनहिं कठोर ॥
तदपि न ज्योंहूँ भूलई, उद्धव नंदकिशोर ॥४०॥
सो०—क्यों सुख पावैं प्रान, पलक लगत तब सहत नहिं ॥
लागे बर्ष बिहान, अब बिन देखे श्यामके ॥४०॥
तब षटमास रासके माहीं * एक निमिषसम जाने नाहीं ॥
अब औरै गति बिना कन्हाई * एक एक पल कल्प बिहाई ॥
तब बन बन हरिसङ्ग बिहारी * अब ब्रजमें यह दशा हमारी ॥
ज्यों देवी उजारपुर माहीं * को पूजै कोउ मानत नाहीं ॥
कहत और जो बन अब ऐसो * चित्र अँधेरे घरको जैसो ॥
तब शशि अतिशीरो अब तातो * भयो सकलसुख करि तन हातो ॥
कत करि प्रीत गये मनभावन * जासों हम लागीं दुख पावन ॥
फिर २ यहै समुझि पछिताहीं * कह्यो हुतो आवन हमपाहीं ॥
याही आश प्राण तनुमा हैं * बारक बहुरि मिल्योही चाहैं ॥
उद्धव हृदय कठोर हमारे * फटे न बिछुरत नंददुलारे ॥
हमते भली जलचरी होई * अपना नेह निबाहत जोई ॥
जो हम प्रीतिरीति नहिं जानी * तौ ब्रजनाथ तजी दुखमानी ॥
दो०—कहँलगि कहिये आपनी, उद्धव तुमसों चूक ॥
हम ब्रजबासी बसी मनहुँ, सबै दाहिने शूक ॥४१॥
सो०—उद्धव कह्यो न जाय, मोहन मदन गोपालसों ॥
नयनन देखो आय, एकबार ब्रजकी दशा ॥४१॥
बोली एक और ब्रजबाला * उद्धव भली करी गोपाला ॥
अब ब्रज कबहूँ आवै नाहीं * मथुरहिं रहैं सदा सुखमाहीं ॥
इहाँ चली अब उलटी चाली * देखत दुख ऐहैं बनमाली ॥
तपत इंदु सूरजकी भाँती * चंदन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण बसन अनलसम दागे * गृह बन कुंज भयानक लागे ॥
जित तित मार द्रुमनकी डारन * धनु शर लिये करत है मारन ॥
हमतो न्याय सही दुख एतो * ब्रजबासिनी ग्वाल जड़ तेतो ॥

वे प्रभु भोगसँयोग भुवाला * क्यों सहिहैं कोमलतनुज्वाला ॥
उद्धव कह्यो सँदेस सिधारो * जान्यो सब परपंच तिहारो ॥
बातन कहा हमैं भरमावत * जलमथिसुन्योनमाखनआवत ॥
सगुण निकट दर्शत है जिनको * निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जोपै निज तुम यहै बखानो * प्रभु पूरण सबमैं सम जानो ॥
दो०—तो तुम कापै करत हौ, उद्धव आवा गौन ॥
को नेरे को दूर है, वहाँ कौन यह कौन ॥४२॥
सो०—खोजेहु पावत नाहिं, योगी योग समुद्रमैं ॥
इहाँ बँधावत बाँहिं, सो यशुदाके प्रेमबश ॥४२॥
हम गुवाल गोकुलके बासी * गोप-नाम गोपाल-उपासी ॥
राजा नंद यशोदा रानी * यमुना नदी परमसुखदानी ॥
गिरिवरधारी मित्र हमारे * वृन्दाबन मिलि संग बिहारे ॥
अष्टसिद्धि नवनिधि सब दासी * इहाँ न योग-बिराग-उपासी ॥
अहैं प्रेम रस की सब भूखी * कोजे कहा मुक्ति लै रूखी ॥
निर्गुण कहा प्रेमरस जानै * उपदेशहु जे लोग सयानै ॥
हम ऐसहि अपनी रुचि मानै * रहि हैं बिरहवायु बौरानै ॥
निशिदिन सपने सोवत जागे * वहै श्यामछबिसों दृग पागे ॥
बालचरित्र किशोरी लीला * सुधासमुद्र सकल सुखशीला ॥
सुमिरि सुमिरि सोई सुखग्रामा * रटि २ मरिहौं माधव नामा ॥
विरहा मधुप प्रेम को करई * ज्यों पटपुटन तरंगहिं धरई ॥
ज्यों घट प्रथम अनलतनु तावै * बहुरिउमहि रसभरिसुख पावै ॥
दो०—सन्मुखशर सहि शूर जब, रबिरथ बेधत जाय ॥
प्रथम बीज अंकुरत महि, पुनि फलफरत अघाय ॥४३॥
सो०—को दुख सुखहिं डराय, कृष्णप्रेमके पंथ चलि ॥
और न कछू उपाय, उद्धव मीन न नीरबिन ॥४३॥
बोलीं एक सखी सुनि लीजै * अपने काज कहा नहिं कीजै ॥
दिनाचारि यह हू सब करिये * जो हरि मिलैं योगहू धरिये ॥
जटा बनाय भस्मतनु माँजैं * मूँदे रहैं नयन बिन आँजैं ॥

सींगी दंड लेहि मृगछाला * पहिरें कंथा सेली माला ॥
धरि धीरज सन्मुख सरसइये * भाजे आज उबार न लहिये ॥
बिरहज्ञानबिज बिनहीं काजै * मरियत हैं यह दुसह दुराजै ॥
एक सखी ऐसे कहि दीनो * उद्धव तुम जु कह्यो सब कीनो ॥
नयन मूँदके ध्यान लगायो * इत उत मनको बहुत चलायो ॥
उरझ रह्यो नंदलाल प्रेमरस * नेक न चलत गयो गाढ़ो फँस ॥
जो हरि मिलत जानिहूँ परते * तौ लैं योग सीसपर धरते ॥
पहले देहु तिनहिं फिर जाई * जिन पठये तुम इतहिं सिखाई ॥
लेहिं न वेऊ जान हमारे * देखियत माथे पऱ्यो तुम्हारे ॥
दो०—भूले योगी योग जिहिं, तुमते कियो बखान ॥
जान्यो गयो न पचिमुए, ब्रह्मरंध्र तजि प्राण ॥४४॥
सो०--ममउर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योतिसो ॥
निपटहिं छूँछो ज्ञान, उद्धव कहा सुनावहीं ॥४४॥
उद्धव जबते श्याम निहारे * तबते योगी नयन हमारे ॥
शिखा सीख गुरुजनकी टारी * धऱ्यो जनेऊ लाज उतारी ॥
पलक बसन घूँघट गृह त्यागे * दिशा दिगंबर मन अनुरागे ॥
सजत समाधि रूप टक लाये * भए सिद्ध नहिं डिगे डिगाये ॥
ताके बीच बिघ्नके करता * पचि २ रहे मात पितु भरता ॥
अब थे और योग नहिं जाने * वही श्यामछबिसुधा भुलाने ॥
भये कृष्णमय नयन हमारे * नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे ॥
हमसों कहत कौनकी बातें * गयो कौन हमको तजि घातें ॥
मथुरा जाय रजक किन माऱ्यो * धनुष तोरि किन द्विरदपछाऱ्यो ॥
किन मल्लन मथि कंस बहायो * उग्रसेन किन बंदि छुड़ायो ॥
को वसुदेव देवकी जाये * तुम किनके पठये ब्रज आये ॥
कुंडल मुकुट गुंज उर राजैं * गोकुल यशुदा नन्द बिराजैं ॥
दो०--को पूरण को अलखगति, को गुण रहित अपार ॥
करत वृथा बकवाद कत, इहिं ब्रज नंदकुमार ॥४५॥
सो०—जात चरावन धेनु दिन, उठि ग्वालनसंग मिलि ॥

मधुर बजावत बेनु, आवत संध्याके समय ॥४६॥
जिन उद्धव मथुरा तब देख्यो * ब्रजबसिजन्मसुफलकरिलेख्यो॥
लेहौ कहा जाय प्रभुतामें * परिहौ जाइ राजविपतामें ॥
निरखौ गोकुल बाल कन्हाई * घर घर माखन खात चुराई ॥
जन्म कर्म गुण गावौ नीके * परम मधुर सुखदायक जीके ॥
नंदराइ उत्सव किमि कीनो * कैसे दान द्विजनको दीन्हो ॥
कैसे गोपीजन सुनि धाईं * कैसे सब भूषण पहिराईं ॥
कैसे गोप ग्वाल सब आये * निरखत बेष विचित्र बनाये ॥
कैसे दधिकी कीच मचाई * ब्रज सब भई अनंदबधाई ॥
बालिबिनोद कौनबिधि कीनो * कैसे गोबर्द्धन कर लीनो ॥
कैसे दधिको दान चुकायो * शरदरास सुख किन उपजायो ॥
यह रसप्रेमकथा चित लावो * अपनी नीरस कथा बहावो ॥
निगम नेति निर्गुण क्यों ध्यावो * क्यों नहिं प्रकटदर्शचित लावो ॥
दो०भावतहैं जो कृष्णको, योग सो हमको देखि ॥
उद्धव सबतनु खेलकरि, सुमति होयके पेखि ॥४६॥
सो०—सब अङ्ग करिकै कान, बैठो मनहिं बटोरिकै ॥
तजहुज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं ॥४६॥
नहिं जटा नहिं भस्म लगावैं * रूंधैं श्वास न शृङ्ग बजावैं ॥
नहीं बेद नहिं पढ़ैं पुराना * शमदम नियम न संयमध्याना॥
हम श्रीगोकुलचंद अराध्यो * प्रेम योग तप तिनसों साध्यो ॥
मन बच कर्म और नहिं जानै * लोक बेद दुख सुख भ्रम मानै ॥
मानपमान निंद कुल करसी * अग्नि आँच गुरुजनबच सरसी॥
हनति तापि चहुँदिश तिन देखो * पियत म धूउपहास विशेखो ॥
करि सुप्रेम बंदन जगबंदन * कर्म—धर्म कामना—निकन्दन ॥
हम जु समाधि प्रीतिबानिकहरि * अङ्गमाधुरी हृदय रही धरि ॥
निरखत रहत निमेष न त्यागत * यह अनुराग योग नित जागत ॥
रस गुण रूप रङ्ग रस रागे * भ्रकुटि नयन नयनन लगिलागे॥
हफनिप्रकाश सुमुखकुंडलश्रुति * शशि अरु सूर देखेयेऊ द्युति ॥

मुरली अधर मधुर स्वर गाजै * शब्द अनाहद ध्वनि सोइ बाजै ।।
दो०—वर्षत मन रुचि मन अचै, रह्यो परम सच्च मान ।।
अति अगाध सुखसंग को, पद आनंदसमान ।।४७।।
सो०—मंत्र दियो रतिप्रान, भजन ज्ञान हरिकोहमै ।।
गुरू करै अब कौन, कौन सुने फीको मतो ।।४७।।
उद्धव ब्रजकी रीत निहारी * भये विवश निजनयन बिसारी ।।
लाग्यो कहन धन्य ब्रजबाला * जिनके सरबस मदनगुपाला ।।
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारे * भक्ति सिखाय मोहिं निस्तारे ।।
तुम मम गुरु मैं दास तुम्हारो * धन्य कृष्णपद दृढ़ ब्रत धारो ।।
मैं जड कीनो और उपाई * अब तुम दर्श भक्ति निज पाई ।।
उद्धव आये योग सिखावन * सीखे प्रेम भक्ति अति पावन ।।
भए मग्न रसप्रेम बिशाला * लागे गावन गुण गोपाला ।।
लोटत कबहुं कुंजमें जाई * कबहूँ विटपन भेंटत धाई ।।
कबहूँ ब्रजरज सीस चढ़ावैं * कबहूँ गोपिन पद शिर नावैं ।।
पुनि पुनि कहत धन्य ब्रजनारी * धन्य ग्वाल गैया बनचारी ।।
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन * धन्य नाम वृन्दावन पावन ।।
ऐसे प्रेम—मग्न मन फूल्यो * को हौं कित आयों सुधि भूल्यो ।।
दो०—उद्धवमन आनंद अति, लखिकै प्रेमविलास ।।
आयो हौं दिन दोयको, बीत गये षट मास ।।४८।।
सो०—तब उपज्यो उर शोच, बचन कृष्ण के सुरति करि ।।
मनमें भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु बेग मुहिं ।।४८।।
तब उपंगसुत रथहिं पलान्यो * मथुरा आवेको अतुरान्यो ।।
उद्धव जात गोपिकन जानी * आई धाय सकल अकुलानी ।।
नब उद्धव सबको शिर नाई * हांथ जोरिकै विनय सुनाई ।।
अब मुहिं देवि अनुग्रह कीजै * जाउँ कृष्णपैं आयसु दीजै ।।
मैं सेवक जैसो उनकेरो * त्यों जानिये आपनो चेरो ।।
कह्यो जो मैं कछु तुमसों आई * कृष्ण कहेते करी ढिठाई ।।
सो अपराध क्षमा अब कीजै * जाउँ कृष्णपै आयसु दीजै ।।

करौ बड़ाई कहा तुम्हारी * ऐसी विमल न बुद्धि हमारी ।।
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं * जाको अंत बेद नहिं पावैं ।।
कबहुँक सुरति करत मय रहियो * जानि आपनो जगहितगहियो ।।
सुनि उद्धवकी निर्मल बानी * भई विवश ब्रजतिय सुख मानी ।।
दो०—क्यों नहिं उद्धवजी कहौ, ऐसे बचन विचारि ।।
अन्त बड़े सब भाँति तुम, हम निदान जड़ ग्वारि ।।४९।।
सो०—होय न शीलसमान, लघु दीरघ ताते भये ।।
भृगु कीन्हो अपमान, श्रीपति करि भूषण लियो ।।४९।।
कहाँ गरलसे बचन हमारे * कहँ अति शीतल मृदुलतुम्हारे ।।
तुम हित कह्यो हमैं सुख मानी * तरन उपाय बेदबिधि बानी ।।
हम गवाँरि उलटो सब बूझी * कही कटुक तुमसों जो सूझी ।।
लोक बेद छोड़ो हम जैसो * ताको फल भुगतत हैं तैसो ।।
कहा करैं मन बहु समुझावै * श्यामदर्शबिन सुख नहिं पावै ।।
दुर्लभ दर्श तुम्हारो हमको * कहिए जान कौनविधि तुमको ।।
करिकै कृपा कीजियो सोई * जैसे दर्श श्यामको होई ।।
देखत हौं या तनको दहिबो * समय पाय हरि आगे कहिबो ।।
घोष बसतकी चूक हमारी * मन नहिं धरैं लाल गिरिधारी ।।
जानि हमैं अति दीन दुखारी * करहिंकृपा मनगुणहिं बिचारी ।।
आवन-अवधि कहीही जोई * धरिहैं सुरत बचनकी सोई ।।
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहिं * करिये बाँह गहेकी लाजहिं ।।
दो०—प्रभु दीननपति दीनहित, यही हमारे आस ।।
कबहुँक दर्श दिखायकै, हरिहैं लोचनप्यास ।।५०।।
सो०—ऐसे कहि ब्रजबाम, भईं विरहसागरमगन ।।
उद्धव करि परणाम, आये यशुमतिनंदपै ।।५०।।
माँगि बिदा जोरी कर दोऊ * तुमसम धन्य और नहिं कोऊ ।।
राम कृष्ण करि सुत जिन पाये * बालभाव करि गोद खिलाये ।।
धनि गोकुल धनि गोकुलबासी * किये प्रेमबश जिन अविनासी ।।
कृपा करी मोहिं कृष्ण पठायो * जाते दर्श सबनको पायो ।।

अब तुम मोको देहु निदेशू * जाय कृष्णसों कहौ सँदेशू ।।
सुनि सप्रीत उद्धवको बाता * नंद बबा अरु यशुमतिमाता ।।
उमँग्यो प्रेम नयन जल बाढ़ें * भये जोरि कर आगे ठाढ़ें ।।
उर बेर श्यामविरहकी पीरा * कहत सँदेश बहत दृग नीरा ।।
उद्धव हरिसों कहियो जाई * यशुदाकी आसीस सुनाई ।।
कमलनयन सुन्दर सुखदाई * कोटियुगन जीवहु दोउ भाई ।।
कहियो बहुरि इती समुझाई * तुमबिन दुखित यशोदा माई ।।
इतनी दया मातकी लीजै * एकबार दर्शन फिरि दीजै ।।
दो०—नंददोहनी भरि दई, कह्यो नयन भर नीर ।।
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलबीर ।।५१।।
सो०—दई यशोमति माय, मुरली ललित गुपालकी ।।
उद्धव दीजोजाय, प्यारीहि अतिलालकी ।।५१।।

अथ उद्धवजीकी बिदा लीला ७७

उद्धव लै माथेपर लीनी * लखि शुभ प्रीति दंडवत कीनी ।।
चल्यो योगकी नाव बुड़ाई * ह्वैगयो आप गोप ब्रज आई ।।
जाय कृष्णपद सीस नवायो * प्रभु सादर उठि कंठ लगायो ।।
कहिये सखा कुशलसों आये * ब्रजमें जाय बहुत दिन लाये ।।
नंदबबा अरु यशुमति माई * कहा कौनविधि देखें जाई ।।
बसत प्राण मोहींमें जिनके * कैसे दिन बीतत हैं तिनके ।।
कहा दशा ब्रजगोपिन केरी * जिनके प्रीति निरंतर मेरी ।
उद्धव समुझत ब्रजकी बाता * भये प्रेमबश पुलकित गाता ।।
भूल्यो यदुपति नाम बड़ाई * कह्यो सुनो गोपाल गुसाँई ।।
कहौं कहा प्रभु तुम्हैं सुनाई * ब्रजकी रीति कही नहिं जाई ।।
कृपा करी मुहिं तहाँ पठायो * ब्रजबासिनको दर्श दिखायो ।।
तादिन गयो तुम्हैं शिर नाई * पहुँचों साँझ गोकुलै जाई ।।
दो०—दूरहिते लखि रथ ध्वजा, अरु पट पीत रसाल ।।
जानि तुम्है आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल ।। १ ।।
सो०—रथपर मोहिं निहारि, रहे ठगेसे थकि सबै ।।

चली दृगन बहि धारि, परे मुर्छि व्याकुल धरणि ॥१॥
भये विकल सब आशा टूटे * बिरहघाव सुरझे फिरि फूटे ॥
जब तुम्हरो पठयो मुहिं जान्यो * लैं नँदसदन मोहिं सन्मान्यो ॥
तुमबिन यशुमति परम दुखारी * बूझी कुशल सराम तुम्हारी ॥
तृषित चातकीलौं अकुलानी * कृष्ण कृष्ण लागीं जक बानी ॥
बारहि बार यहै पछिताहीं * प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं ॥
बाँधे ऊखल तनक दहीको * अब कसकत कसनी सोहीको ॥
ब्रज अब शून्य बिना मनमोहन * परम अभागी गईं न गोहन ॥
ठाढ़ी रहीं ठगोरी लाई * बिरधबैस तजि गये कन्हाई ॥
दशरथ प्राण तजे सुतलागी * मैं देखतही रहौं अभागी ॥
अब जनु ऐसे हीं मरि जैहौं * बहुरि न श्यामहिं कनियाँ लैहौं ॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता * अतिहीं दीन दुखित बिलखाता ॥
नंदहु सुमिरत तुमगुणग्रामा * बीती निशा चारहू यामा ॥
दो०—यद्यपि मै बोधे बहुत, तुमबिन कछु न सुहात ॥
तिनकी दशा विलोकि मुहिं, युगसम बीती रात ॥२॥
सो०—नंद यशोदहिं पाय, गयो प्रात वृषभानुपुर ॥
सुनि सब आईं धाय, धामकाम तजि बाम तहँ ॥२॥
मोहिं तुम्हारो निजजन जानी * सन्मान्यो सबही सुख मानी ॥
लखि पट भूषण चिन्ह तुम्हारे * भईं प्रेमवश सुरत सह्मारे ॥
शिथिल अंग भरि आये नैना * पूँछी कुशल सुगद्गद बैना ॥
जब मैं कह्यो सँदेस तुम्हारो * सुनतहि आयो सबन पत्यारो ॥
बीती घरिक धीर उर आन्यो * मेरो कह्यो साँच नहिं मान्यो ॥
दूषण सब कुब्जाको दीन्हो * कछुक परेखो तुमसों कीन्हो ॥
तिनकी बात न जात बखानी * प्रेमपंथ ते सकल सयानी ॥
वह रसरीति देखि उनकेरी * कटुक कथा लागी मुहिं मेरी ॥
यद्यपि मैबहुविधि समुझाई * ग्रंथउक्ति सब कथा सुनाई ॥
कहिवे मैं न कछू शक राख्यो * भयो पवन ज्यों भुस मैं भाख्यो ॥
ज्ञानपंथ जो श्रीमुखबानी * सो सब तिनके भई कहानी ॥

कैइक कही बनाइ अनेका * उनके हढ़ व्रत पतिव्रत एका ॥
दो०—गही एकही गहनी उन, मेटि वेदविधि नीति ॥
गोपवेष भजि साँवरे, रहीं विश्व वर जोति ॥३॥
सो०—नहिं शीखै शिख आन, जो विधि जाहि सिखावहीं ॥
तुमहूँ बडे सुजान, उहाँ जोउ तौ जानहूँ ॥३॥
क्षमा करौ आयसु जो पाऊँ * तौ अपनी सब बिपति सुनाऊँ ॥
योगकथा कहि अबलनपाहीं * होवै इतो दुःख क्यों नाहीं ॥
मैं निर्गुण गुण एक बखानौं * सोऊ पूरो कहि नहिं जानी ॥
वे सब उमँगै बारिधि ज्योंही * जामैं थाह न पाऊँ क्योंही ॥
कहौं एक मैं पहरेकमाहीं * वे कोटिक क्षणमैं कहि जाहीं ॥
कौन कौनको उत्तर आवै * सुनत सबै उनहीके भावै ॥
प्रेम प्रीति उनकी लखि बाको * धरी रही सब बात इहाँकी ॥
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलै * जैसे हरन चौकरी भूलै ॥
वे पारत पटिये मों सीसा * सिखवों काहि योग जगदीसा ॥
वे षट्वेत्ता सकल सुभाऊ * मैं शठ बारह खरी पढ़ाऊ ॥
अबला बचन सुनतही मेरे * भईं अग्नि ज्यों घृतके गेरे ॥
बहुतभाँति करि मैं सब जाची * एकै अंग न कोऊ काची ॥
दो०—सगुण प्रेम दृढ़ उन गह्यो, यथा पपीहा पैंद ॥
जानिलेहु प्रभु तुम यहै, कहा निरोगहि बैद ॥४॥
सो०—तिन्हैं निरंतर ध्यान, श्याम राम अंबुजनयन ॥
लागत फीको ज्ञान, अवलोकत उनको भजन ॥४॥
मैं देख्यो षट्मास खोजकर * एकै रीत सबै ब्रज घर घर ॥
ज्यों कुरुखेत दिये बादत धन * त्यों अधिकात प्रेम नित तुमतन ॥
प्रकट तुम्हारे गुण चित दीन्हे * देह गेह अर्पण सब कीन्हे ॥
कोऊ कहति गये गोचारन * कोउ कहै गये अघासुर मारन ॥
कोऊ कहत इंद्र जल जाई * गोबर्द्धन कर लियो कन्हाई ॥
कोऊ कहत यमुन सुनि काली * नाथन गए ताहि बनमाली ॥
घर २ दुहत कहत कोउ बाला * कोउ कहै बन खेलन नंदलाला ॥

कोऊ कहत कुटिल लपट हरि * बसे जाय री धौं काके घरि ॥
एक कहत बन बेणु बजावैं * चलौ सुनन यों कहि उठि धावैं ॥
ऐसी लीला प्रकट बखानै * मेरो, कह्यो न कोऊ मानैं ॥
हरि मान्यो निजमति घनज्ञानी * सुनि लीन्ही उनकी मैं बानी ॥
प्रीतिरीति ललि तहाँ डुलान्यो * नाथ तुम्हारी सुरत भुलान्यो ॥
दो०—तुमसों आवन कहि गयो, बेगहि ब्रजतें नाथ ॥
उन लखि उनसों व्है लग्यो, गावन उनके साथ ॥ ५ ॥
सो०—बीति गये षट्मास, समुझि परी आयो कहाँ ॥
तब उपज्यो जिय त्रास, भाजि चलौ दै आनकहि ॥ ५ ॥
बहुरि कहा मोको सुख वैसो * रस लीला बिनोद ब्रज कैसो ॥
कबत न बनै देखतही भावै * यह सुख बड़भागी सोइ पावै ॥
बस्यो न पाँचौ दिन उनमाहीं * तासु जन्म जगमाहिं वृथाहीं ॥
नहिं श्रुति शेष ब्रह्म सुख पायो * जो रस ब्रज गोपिन मिलिगायो ॥
निरखत यदपि इहाँ यह मूरति * तदपि जाय उतही मन पूरति ॥
बरही मुकुटगुंजको माला * मुख मुरली धुनि बेणु बिशाला ॥
आगे धेनु रेणुमंडित तन * तिरछी चितबनचारु हरत मन ॥
गोपी ग्वालनसों हरि बोलत * खेलत खात हँसत ब्रज डोलत ॥
तब वह सुख समुझत मन भावै * इत यह लखिकछुकहत न आवै ॥
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानो * मैं कह समुझौं मूढ़ अयानो ॥
ऐसे मोहिं बहुत यह सालय * तुम तौ प्रभु करुणाके आलय ॥
होल कठोर कठिन मन काहे * बनत कौनविधि बिना निबाहे ॥
दो०—निगम कहत बश भक्तके, पूरण सब सुखसाज ॥
करी सुदृढ ब्रज पेखिये, गहौ बिरदकी लाज ॥ ६ ॥
सो०—अतिहि दुखी तनुक्षीन, ब्रजबासी तुम विरहबश ॥
तुम तन धन मन लीन, रटत चातकीलौं सबैं ॥ ६ ॥
कहौंकहा गति प्रभु राधा की * जैसी व्यथा विरहबाधा की ॥
भूषणविन अतिक्षीण शरीरा * बसन मलीन स्रवत दृग नीरा ॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं * रहत बावरी ज्यों घरमाहीं ॥

कबहुँक कृष्ण कृष्ण रट लावैं * कबहुँक नाम आपनो गावैं ।।
विवदिशिअग्नि काठ कृमि जैसे * सहत बिरहदुख दुहुँ दिशि तैसे ।।
लहत न क्योंहू शीतलताई * कबहुँ रहत मौन शिर नाई ।।
गृहजन पेखि देखि दुख पावैं * नहिंकछुसुनत कोटि समुझावैं ।।
सुखीन जिमि नलिनी बिनपानी * जुगवत यत्न न खसी सयानी ।।
तृण कि अग्र ओसकण जैसे * आशा अवधि प्राण तनु तैसे ।।
अचरज मोहिं बड़ो यह आवै * प्रभु तुमको कैसे यह भावै ।।
करुणामय प्रभु अंतरयामी * भक्तनहित धार्‍यो तनु स्वामी ।।
वेगि कृपा करि दर्शन दीजै * ब्रजजन मरत ज्याय सब लीजै ।।
दो०—यह मुरलीदै बिलखिकै, कह्यो यशोमति माय ।।
एकबार हित नंदके, दर्श दिखावहिं आय ।।७।।
सो०—जिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि ।।
बहुर न आईं धाम, बिडरीं कुंजनमें फिरत ।।७।।
सुनिकै प्रभु उद्धवके बैना * उमँगेउ प्रेम भरे दोउ नैना ।।
ब्रजजनप्रीति आइ उर साली * भए बिबश जनप्रणप्रतिपाली ।।
लै उठाय मुरली उर लाई * धरि ब्रजध्यान रहे अरगाई ।।
सहज स्वभाव कृपालहि ऐसे * होत तुरत जैसनको तैसे ।।
पुनि हा ब्रज कहि छाँदि उसासू * पोंछि पीतपट जलसों आँसू ।।
उद्धवसों यों बचन सुनाये * भले सखा सिख दै ब्रज आये ।।
मनमें यों प्रभु कियो बिचारा * ब्रजभक्तन मम रूप अधारा ।।
मेरे मुक्ति बड़ी निधि जोई * सो वे नहीं आदरत कोई ।।
ताते जो जनके मन भावै * सोई मोहिं करत बनि आवै ।।
भक्तधीन सो पणहि हमारे * ब्रजबासी मोको अति प्यारे ।।
सदा बसत ताते ब्रजमाहीं * इनसम मोहिं और हितु नाहीं ।।
सब समरथ प्रभु सबगुणनागर * ब्रजबासी जनके सुखसागर ।।
दो०—मन करिहरिब्रजमें रहैं, मिलिब्रजजन मन साथ ।।
तनकहि देवनकाजहित, भये द्वारका नाथ ।। ८ ।।
सो०—सदा बसत ब्रजश्याम, नटवर बपु मुरलीधरे ।।

ब्रजजनपूरणकाम, कोटि कामलावण्यनिधि ।। ८ ।।
बसत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई * ब्रजबासी जनक सुखदाई ।।
कृष्ण-प्रेम-मूरति ब्रजनारी * कबहूँ नहिं कृष्णते न्यारी ।।
नित्य नवल नित बर्नहिं बिहारी * ब्रजबिलास नित नवलउदारी ।।
नित्यधाम वृन्दाबन पाबन * नित्य रास रस परमसुहावन ।।
शिव सनकादि शेष जिहिं गावैं * सुरनरमुनि सब ध्यान लगावैं ।।
ब्रजगोपिनकी महत बडाई * एक--समय ब्रह्मासन गाई ।।
भृगु नारदआदिक हरिभक्ता * पूँछत भये बिनयसंयुक्ता ।।
तिनसों विधि इहिं भाँतिबखानो * बेद ऋचा सब ब्रततिय जानो ।।
इनसम सत्य कहौ तुम पाहीं * मैं शिव शेष लक्ष्मी नाहीं ।।
नहीं कृष्णते इक क्षण न्यारी * इनते और न कोउ अधिकारी ।।
इनके भाव कृष्ण जो ध्यावै * प्रीतरीति दृढ करि मन लावै ।।
नारी पुरुष कोऊ किन होई * वेद--ऋचा--गति पावै सोई ।।
दो०--परशे इनकी चरणरज, वृंदावन महिमाहिं ।।
सोऊ गति इनकी लहै, यामें संशय नाहिं ।। ९ ।।
सो०--यों विधि कही बुझाय, महिमा ब्रजगोपीनकी ।।
व्यास कहीं सो गाय, पावन बृहद पुराणमें ।। ९ ।।
ताते भृगआदिक नारद मुनि * इंद्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि ।।
अरु हरिभक्त जगत जे अहहीं * वृंदाबन--रज वाँछत रहहीं ।।
ब्रजरज अतिदुर्लभ श्रुति गावैं * बड़भागी जन तेई पावैं ।।
हिय धरि सोई ब्रजरजरासा * ब्रजबिलास गायो ब्रजदासा ।।
कृष्णचरित ब्रजबननिकुंजको * सार सकल सुखसुकृतपुंजको ।।
सार ध्यान विज्ञान ज्ञानको * बेद शास्त्र अस्मृति पुराणको ।।
सार बहुरि इतिहास भजनको * योग जाप अरु यज्ञ यजनको ।।
सार अमित मुनि सन्तनमत को * हरि--पदपंकज--प्रेमयतनको ।।
सार जन्म औ सुगति मुक्तिको * परमानँद अरु बिमलभक्तिको ।।
सार सकल सरसी काईको * परम--मधुर सुन्दरताईको ।।
सार सारको परम सुहायो * ब्रजबिलास भक्तनमनभायो ।।

सहित सुभाव प्रीति जे गैहैं * ते जन गति गोपिनकी पैहैं ॥
छन्द—यह ब्रजबिलासहुलाससों, नर नारि सुनि जेगायहैं ॥
सीखैं सिखावैं पढ़ैं रुचि करि, प्रेम मन उपजाय हैं ॥
धरि भाव भरता कृष्णसों, उर कमलपद चितलायहैं ॥
हरिराधिकापरसादते, ब्रजगोपिकागति पाय हैं ॥ १ ॥
पूरण सकल मनकाम, सबसुखधाम यशनँदलालको ॥
दलन मारिद दोष दुख भव, भयहरण यमकालको ॥
यह जानि गावहिं सुजन गायो, जिवन आनँदपद लह्यो ॥
तिनको कृपाबल पाय कछुकइक, दासब्रजबासी कह्यो ॥
दो०—ब्रजबिलास ब्रजराजको, को कहि पावै पार ॥
भक्तभाव गावत भगत, भजनप्रभाव विचार ॥१०॥
सिगरे दोहा आटसौ, और नवासी आहि ॥
हैं इतनेही सोरठा, ब्रजबिलास के माहिं ॥११॥
दशसहस्र षटसौ अधिक, चौपाई विस्तारु ॥
छंदएकशत षट अधिक, मधुर मनोहर चारु ॥१२॥
सबकोऽनुष्टुप छंदकरि, दशसहस्रपरिमान ॥
खंडित होन न पावई, लिखियो जानि सुजान ॥१३॥
विधिनिषेध जानैं नहिं, कछु ब्रजबासीदास ॥
ज्यों जानैं त्यों राखिहैं, नँदनंदनकी आस ॥१४॥
नहिं तप तीरथ दान बल, नहीं कर्मव्योहार ॥
ब्रजबासी के दासको, ब्रजबासी आधार ॥१५॥
ब्रजबासी गाऊँ सदा, जन्म जन्म करि नेह ॥
मेरे जप तप ब्रत यहै, फल दीजै पुनि येह ॥१६॥

इति श्रीब्रजविलाससे सब सुखरासे भक्तिप्रकाशे
कृतब्रजबासीदासे उत्तरार्द्ध समाप्तम् ॥

* * *

दो घंटे रोजाना काम करके ५००) माहवार कमाइये

दुर्गा व्यापार दस्तकारी

(उर्फ व्यापार कला दर्पण)

व्यापार और दस्तकारीकी यह पुस्तक खजाने की कुंजी और सोने की खान है। यदि आप ये रहस्य जानना चाहते हैं जिससे तुच्छ मनुष्य भी लखपती बन गये, तो इस पुस्तक कोअवश्य पढ़िये इसमें सैकड़ों छोटे-२ उद्योग धन्धे व फारमूले दिये गये हैं, जो आपका भाग्य पलट सकते हैं। तेल साबुन, रँगाई, बुनाई, दवा, इत्र, जर्दा, टूथपेस्ट, आतिश बाजी, पेन इंक, पालिस, क्रीम आदि अनेक कारीगरी आप इससे, सीखें बेकारी को मार भगायें। मू० केवल रु० ६-०० डाक खर्च रु०२-५०

प्रेम पत्र बड़ा (लव लेटर्स)

जब पति पत्नी एक दूसरे से दूर होते हैं और दिन काटे नहीं कटते और रातें तारे गिन-२ कर काटी जाती हैं, उस समय यह पुस्तक अवश्य पढ़ें मू० रु० ७-५० डाक खर्च अलग।

छप गई ! छप गई !! छप गई !!!

भारतीय कुण्डली दर्पण

आज तक आप जिसकी खोज में व्यग्र थे, वह "भारतीय कुण्डली दर्पण" पुस्तक छप गई है, जिसके लेखक पं०कौशल किशोर त्रिपाठी ज्योतिषाचार्य हैं। इसी एक पुस्तक में कुण्डली बनाने की सम्पूर्ण गणित क्रिया का वर्णन एवं फल कहने का तरीका सविधि वर्णित है—जैसे शरीर की ऊँचाई वर्ण एवं सुख दुख का ज्ञान, धन प्राप्त होनेके योग भाई बहन, गृह, विद्या, सन्तान, शत्रु, स्त्री, आयु भाग्य का विचार, इन सभी बातों की जानकारी इसी एक पुस्तक से करें। मूल्य कपड़ा जिल्द रु० ८-२५, डाक व्यय अलग।

दुर्गा सप्तशती भाषा

अनुवादक—श्री पंडित रामजी शर्मा

हिन्दीमें मोटे-मोटे अक्षरोंकी यह दुर्गा पाठ की बड़ी सुन्दर पुस्तक है। मूल्य अच्छे सफेद कागज की पुस्तक रु० ७-०० दुर्गा प्रेमियों के सुविधार्थ रु० ५-०० डाक खर्च अलग।

शनि उपासना

सभी प्राणियों पर कभी न कभी शनि की साढ़े साती तथा ढैया आती ही है। महाराज शनि का प्रकोप महाप्रतापी रावण तथा महाराज नल पर भी हुआ था, जो किसी से छिपा नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक की सहायता से उनके प्रकोप को उनकी महान प्रसन्नता में बदल सकते है। जहाँ शनिदेव कोप करके प्राणी का सत्यानाश कर देते हैं, वहीं उनकी विधिवत पूजा, जप और पाठ करने से मनुष्य को वह मालोमाल करके निहाल कर देते हैं। यदि आप पर शनि की दशा आये तो शीघ्र ही इस पुस्तक को मँगाकर इसका लाभ उठायें, शत प्रतिशत लाभ की गारन्टी है। शनिदेव मनोवांछित कामना पूर्ण करके प्राणी को निहाल कर देते हैं। मूल्य केवल रु० ६-२५ मात्र, डाक व्यय अलग है।

श्री हनुमद् उपासना

(हनुमद रहस्य)

लेखक डा० दीनानाथ शुक्ल 'दीन' एम०एस-सी० (एजी०)

इस पुस्तक में श्रीहनुमानजी का जीवन चरित्र तथा गूढ़ रहस्यों की जानकारी एवं यंत्र, मंत्र, तंत्र, के साथ ही अनेकानेक स्तोत्रों हनुमद् का समावेश किया गया है। यह पुस्तक हनुमानजी के उपासकों के लिये अत्यन्त उत्तम तथा उपादेय है। इस पुस्तक की सहायता से हनुमान जी को प्रसन्न करके मनोवांछित कामनायें प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य केवल रु० १०-२५ मात्र, डाक व्यय अलग।

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार, ५२७ए/२, कक्कड़नगर, इलाहाबाद

श्री दुर्गा पुस्तक भंडार
इलाहाबाद